तेत्तिरीय

ब्राह्मणम्

Colophon

This document was typeset using XaMTeX, and uses the Siddhanta font extensively. It also uses several MTeX macros designed by H. L. Prasād. Practically all the encoding was done with the help of Ajit Krishnan's mudgala IME (http://www.aupasana.com/).

Acknowledgements

The initial ITRANS encodings of some of these texts were obtained from http://sanskritdocuments.org/ and https://sa.wikisource.org/. Thanks are also due to Ulrich Stiehl (http://sanskritweb.de/) for hosting a wonderful resource for Yajur Veda, and also generously sharing the original Kathaka texts edited by Subramania Sarma. See also http://stotrasamhita.github.io/about/

| अनुऋमणिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|------------------|---|---|--|---|---|--|--|--|--|---|--|---|---|---|---|--|---|---|--|---|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| गष्टकम् १ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 1 |
| प्रथमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | • | | | | | | | | | • | • | | | | 1 |
| द्वितीयः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 29 |
| तृतीयः प्रश्नः | | | | • | • | | | | | | | | • | • | • | | | | | | • | | • | • | | • | | 47 |
| चतुर्थः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 70 |
| पञ्चमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 94 |
| षष्टमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 116 |
| सप्तमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 142 |
| अष्टमः प्रश्नः | • | • | | | | | | | | • | | • | | | • | | • | • | | • | • | • | | | • | | • | 166 |
| गष्टकम् २ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 180 |
| प्रथमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 180 |
| द्वितीयः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 200 |

| ानुऋमणिका | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | ii |
|------------------|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|--|---|---|---|---|---|---|---|-----|
| तृतीयः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 225 |
| चतुर्थः प्रश्नः | | • | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | • | | • | | 245 |
| पञ्चमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 273 |
| षष्ठमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 291 |
| सप्तमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 328 |
| अष्टमः प्रश्नः | • | | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | • | | • | • | | | • | • | | • | | • | 353 |
| मष्टकम् ३ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 383 |
| प्रथमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 383 |
| द्वितीयः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 408 |
| तृतीयः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | 439 |
| चतुर्थः प्रश्नः | | | • | | | | | | | • | | | | | • | | | | • | | | | | | | 467 |
| पञ्चमः प्रश्नः | | | | | | | | | | | | | • | | | • | | | | | | | | | | 473 |
| चन्याः शहाः | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| नुऋमणिका | |
|----------------|-----------------------------|
| सप्तमः प्रश्न | |
| अष्टमः प्रश् | |
| नवमः प्रश्न | |
| त्तिरीय आ | ग् कम् |
| प्रथमः प्रश्न | _ अरुणप्रश्नः |
| द्वितीयः प्रश | |
| तृतीयः प्रश् | |
| चतुर्थः प्रश्न | |
| पञ्चमः प्रश्न | |
| षष्ठः प्रश्नः | |
| सप्तमः प्रश्न | — <mark>श</mark> ीक्षावल्ली |
| अष्टमः प्रश् | — ब्रह्मानन्दवल्ली |
| ⊒तम∙ पश | – भृगुवल्ली |

| अनुऋमणिका | | iv |
|----------------------------------|----|----|
| द्शमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत् | 8 | 16 |
| कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम् | 8 | 67 |
| प्रथमः प्रश्नः | 80 | 67 |
| द्वितीयः प्रश्नः | 88 | 34 |
| तृतीयः प्रश्नः | 90 | 05 |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |
| | | |

॥ अष्टकम् १॥

॥प्रथमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

ब्रह्म सन्धंत्तं तन्में जिन्वतम्। क्षत्र सन्धंत्तं तन्में जिन्वतम्। इष् सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। ऊर्ज् सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। रिय सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। पृष्टि सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। पृजा सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। पृश्रून्थ्सन्धंत्तं तान्में जिन्वतम्। स्तुतोऽस् जन्धाः। देवास्त्वां शुक्रपाः प्रणंयन्तु॥१॥

सुवीरौः प्रजाः प्रंजनयन्परीहि। शुक्रः शुक्रशोचिषा। स्तुतोऽसि जनंधाः। देवास्त्वां मन्थिपाः प्रणंयन्तु। सुप्रजाः प्रजाः प्रंजनयन्परीहि। मन्थी मन्थिशोचिषा। सञ्चग्मानौ दिव आपृंथिव्यायुः। सन्धंत्तं तन्मे जिन्वतम्। प्राण सन्धंत्तं तं में जिन्वतम्। अपान सन्धंत्तं तं में जिन्वतम्॥२॥

व्यान र सन्धंत्तं तं में जिन्वतम्। चक्षुः सन्धंत्तं तन्में जिन्वतम्। श्रोत्र र सन्धंत्तं

तन्में जिन्वतम्। मनः सन्धंत्तं तन्में जिन्वतम्। वाच् सन्धंत्तं तां में जिन्वतम्। आयुंः स्थ आयुंर्मे धत्तम्। आयुंर्य्ज्ञायं धत्तम्। आयुंर्य्ज्ञपंतये धत्तम्। प्राणः स्थः प्राणं में धत्तम्। प्राणं यज्ञायं धत्तम्॥३॥

प्राणं युज्ञपंतये धत्तम्। चक्षुंः स्थश्चक्षुंर्मे धत्तम्। चक्षुंर्य्ज्ञायं धत्तम्। चक्षुंर्य्ज्ञपंतये धत्तम्। श्रोत्रं स्थः श्रोत्रं मे धत्तम्। श्रोत्रं युज्ञायं धत्तम्। श्रोत्रं युज्ञपंतये धत्तम्। तौ देवौ शुक्रामन्थिनौ। कल्पयंतं दैवीर्विशंः। कल्पयंतं मानुंषीः॥४॥

इष्मूर्जम्समास् धत्तम्। प्राणान्पशुषुं। प्रजां मियं च यजंमाने च। निरंस्तः शण्डंः। निरंस्तो मर्कः। अपंनुत्तौ शण्डामर्कौ सहामुनाँ। शुक्रस्यं समिदंसि। मुन्थिनंः समिदंसि। स प्रथमः सङ्कृतिर्विश्वकर्मा। स प्रथमो मित्रो वरुंणो अग्निः। स प्रथमो बृह्स्पतिश्चिकत्वान्। तस्मा इन्द्रांय सुतमा जुंहोमि॥५॥

न्यन्त्वपान सन्धेत्तं तं में जिन्वतं प्राणं युज्ञायं धत्तं मानुषीर्प्रिर्द्धे चं॥ (ब्रह्मं क्षुत्रं तदिषुमूर्जरं रुघिं पुष्टिं प्रजां तां पुश्नतान्थ्यन्थत्तं तत्प्राणमपानं व्यानं तं चक्षुः श्रोत्रं मन्स्तद्वाचं ताम्। इषादिपश्चंके वाचं तां में पुश्न्थ्यन्थत्तं तान्में प्राणादित्रित्येय वं मेऽन्यत्र तन्मैं।। [१] कृत्तिंकास्वृग्निमादंधीत। एतद्वा अग्नेर्नक्षंत्रम्। यत्कृत्तिंकाः। स्वायांमै्वैनं

देवतांयामाधार्य। ब्रह्मवर्चसी भेवति। मुखं वा एतन्नक्षंत्राणाम्। यत्कृत्तिंकाः। यः कृत्तिंकास्वग्निमांधत्ते। मुख्यं एव भेवति। अथो खलुं॥६॥

अग्निन्क्षत्रमित्यपंचायन्ति। गृहान् हु दाहुंको भवति। प्रजापंती रोहिण्यामग्निमंसृजत। तं देवा रोहिण्यामादंधत। ततो वै ते सर्वात्रोहांनरोहन्। तद्रोहिण्यै रोहिणित्वम्। यो रोहिण्यामग्निमांधृत्ते। ऋध्नोत्येव। सर्वात्रोहाँत्रोहति। देवा वै भद्राः सन्तोऽग्निमाधिंथ्सन्त॥७॥

तेषामनाहितोऽग्निरासीत्। अथैभ्यो वामं वस्वपाँकामत्। ते पुनर्वस्वोरादेधता ततो वै तान् वामं वसूपावंर्तत। यः पुराऽभुद्रः सन्पापीयान्थ्स्यात्। स पुनर्वस्वोर्ग्निमादंधीत। पुनर्वेवनं वामं वसूपावंर्तते। भुद्रो भंवति। यः कामयेत् दानकामा मे प्रजाः स्युरितिं। स पूर्वयोः फल्गुन्योर्ग्निमादंधीत॥८॥

अर्यम्णो वा पृतन्नक्षंत्रम्। यत्पूर्वे फल्गुंनी। अर्यमेति तमांहुर्यो ददांति। दानंकामा अस्मै प्रजा भंवन्ति। यः कामयंत भगी स्यामिति। स उत्तंरयोः फल्गुंन्योर्ग्निमादंधीत। भगंस्य वा पृतन्नक्षंत्रम्। यदुत्तंरे फल्गुंनी। भृग्येव भंवति। कालकुञ्जा वै नामासुरा आसन्॥९॥

ते सुंवर्गायं लोकायाग्निमंचिन्वत। पुरुष इष्टंकामुपांदधात्पुरुष इष्टंकाम्। स इन्द्रौं ब्राह्मणो ब्रुवाण इष्टंकामुपांधत्त। एषा में चित्रा नामेति। ते सुंवर्गं लोकमा प्रारोहन्। स इन्द्र इष्टंकामावृंहत्। तेऽवांकीर्यन्त। येऽवाकींर्यन्त। त ऊर्णावभंयो-ऽभवन्। द्वावुदंपतताम्॥१०॥

तौ दिव्यौ श्वानांवभवताम्। यो भ्रातृंव्यवान्थस्यात्। स चित्रायांमग्निमादंधीत। अवकीर्येव भ्रातृंव्यान्। ओजो बलंमिन्द्रियं वीर्यमात्मन्धंत्ते। वसन्तौ ब्राह्मणौं-ऽग्निमादंधीत। वसन्तो वै ब्रौह्मणस्युर्तुः। स्व एवैनमृतावाधायं। ब्रह्मवर्च्सी भेवति। मुखं वा एतदंतूनाम्॥११॥ यद्वंसन्तः। यो वसन्ताऽग्निमांधत्ते। मुख्यं एव भंवति। अथो योनिंमन्तमेवैनं प्रजातमार्धत्ते। ग्रीष्मे राजन्यं आदंधीत। ग्रीष्मो वै राजन्यंस्युर्तुः। स्व एवैनंमृतावाधायं। इन्द्रियावी भंवति। श्रिद वैश्य आदंधीत। श्रिद वैश्यंस्युर्तुः॥१२॥

स्व पृवैनंमृतावाधायं। पृशुमान्भंवति। न पूर्वयोः फल्गुंन्योर्ग्निमादंधीत। पृषा वै जंघन्यां रात्रिः संवथ्सरस्यं। यत्पूर्वे फल्गुंनी। पृष्टित पृव संवथ्सरस्याग्निमाधायं। पापीयान्भवति। उत्तरयोरा दंधीत। पृषा वै प्रथमा रात्रिः संवथ्सरस्यं। यदुत्तरे फल्गुंनी। मुख्त पृव संवथ्सरस्याग्निमाधायं। वसीयान्भवति। अथो खलुं। यदैवैनं यज्ञ उपनमेत्। अथादंधीत। सैवास्यर्ष्टिः॥१३॥

खल्वंधिथ्सन्त फल्गुंन्योर्ग्निमादंधीतासन्नपततामृत्नां वैश्यंस्युर्त्रुक्तरे फल्गुंनी पर्दं॥
[२]

उद्धन्ति। यदेवास्यां अमेध्यम्। तदपंहन्ति। अपोऽवौक्षिति शान्त्यै। सिकंता निवंपति। पृतद्वा अग्नेर्वैश्वानुरस्यं रूपम्। रूपेणैव वैश्वानुरमवंरुन्धे। ऊषां निवंपति। पुष्टामिव प्रजनेनेऽग्निमाधेत्ते। अथो संज्ञाने पुव। संज्ञानु ह्येतत्पंशूनाम्।

यदूषाः। द्यावांपृथिवी सहास्तांम्। ते वियती अंब्रूताम्। अस्त्वेव नौ सह

पुष्टिर्वा एषा प्रजनंनम्। यदूषाः॥१४॥

यज्ञियमिति। यद्मुष्यां यज्ञियमासीत्। तद्स्यामंदधात्। त ऊषां अभवन्॥१५॥ यद्स्या यज्ञियमासीत्। तद्मुष्यांमदधात्। तद्दश्चन्द्रमंसि कृष्णम्। ऊषांन्निवपंत्रदो ध्यांयेत्। द्यावांपृथिव्योरेव यज्ञियेऽग्निमाधंत्ते। अग्निर्देवभ्यो निलायत। आखू रूपं कृत्वा। स पृथिवीं प्राविंशत्। स ऊतीः कुंर्वाणः पृथिवीमनु समंचरत्। तदांखुकरीषमंभवत्॥१६॥ यदांखुकरीष संम्भारो भवंति। यदेवास्य तत्र न्यंक्तम्। तदेवावंरुन्थे। ऊर्जं

वा एत र रसं पृथिव्या उपदीका उद्दिहिन्त। यद्वल्मीकम्। यद्वल्मीकव्पा संम्भारो भवंति। ऊर्जमेव रसं पृथिव्या अवंरुन्धे। अथो श्रोत्रंमेव। श्रोत्रङ् ह्यंतत्पृथिव्याः। यद्वल्मीकः॥१७॥ अबंधिरो भवति। य एवं वेदं। प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। तासामन्नमुपाँक्षीयत। ताभ्यः सूदमुपप्राभिनत्। ततो वे तासामन्नं नाक्षीयत। यस्य सूदंः सम्भारो भवंति। नास्यं गृहेऽन्नं क्षीयते। आपो वा इदमग्रें सिल्लमांसीत्। तेनं प्रजापंतिरश्राम्यत्॥१८॥

कथमिद इस्यादितिं। सोंऽपश्यत्पुष्करपणं तिष्ठंत्। सोंऽमन्यत। अस्ति वै तत्। यस्मिन्निदमधि तिष्ठतीतिं। स वराहो रूपं कृत्वोप न्यमञ्जत्। स पृथिवीमध और्च्छत्। तस्यां उपहत्योदंमञ्जत्। तत्पुंष्करपर्णें ऽप्रथयत्। यदप्रंथयत्॥१९॥ तत्पृंथिव्यै पृंथिवित्वम्। अभूद्वा इदिमतिं। तद्भम्यै भूमित्वम्। तां दिशोऽनु वातः समंवहत्। ता शर्कराभिरदृ शहत्। शं वै नों ऽभूदितिं। तच्छर्कराणा शर्कर्त्वम्। यद्वंराहविंहत सम्भारो भवंति। अस्यामेवाछंम्बद्धारमग्निमार्धत्ते। शर्करा भवन्ति भृत्यै॥२०॥

अथों शुन्त्वायं। सरेता अग्निराधेय इत्यांहुः। आपो वर्रुणस्य पत्नंय आसन्।

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १) ता अग्निरभ्यंध्यायत्। ताः समंभवत्। तस्य रेतः परांऽपतत्। तद्धिरंण्यमभवत्।

यद्धिरंण्यमुपास्यंति। सरेतसमेवाग्निमाधंत्ते। पुरुष इन्नै स्वाद्रेतंसो बीभथ्सत इत्यांहुः॥२१॥

उत्तरत उपाँस्यत्यबींभथ्सायै। अति प्रयंच्छति। आर्तिंमेवाति प्रयंच्छति। अग्निर्देवेभ्यो निलायत। अश्वी रूपं कृत्वा। सौंऽश्वत्थे संवथ्सरमंतिष्ठत्। तदेश्वत्थस्यौश्वत्थत्वम्। यदाश्वत्थः सम्भारो भवति। यदेवास्य तत्र न्यंक्तम्। तदेवावं रुन्धे॥ २२॥

देवा वा ऊर्जुं व्यंभजन्त। ततं उदुम्बर् उदंतिष्ठत्। ऊर्ग्वा उदुम्बरंः। यदौदुंम्बरः सम्भारो भवंति। ऊर्जमेवावंरुन्थे। तृतीयंस्यामितो दिवि सोमं आसीत्। तं गांयत्र्या-ऽहंरत्। तस्यं पर्णमंच्छिद्यत। तत्पर्णोऽभवत्। तत्पर्णस्यं पर्णत्वम्॥२३॥

यस्यं पर्णमयः सम्भारो भवंति। सोमपीथमेवावंरुन्थे। देवा वै ब्रह्मंन्नवदन्त। तत्पर्ण उपाश्रिणोत्। सुश्रवा वै नामं। यत्पर्णमयः सम्भारो भवति। ब्रह्मवर्चसमेवावं तच्छम्यै शमित्वम्। यच्छंमीमयंः सम्भारो भवंति। शान्त्या अप्रंदाहाय। अग्नेः

सृष्टस्यं यतः। विकंङ्कतं भा आँच्छ्त्। यद्वैकंङ्कतः सम्भारो भवंति। भा एवावं

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

रुन्धे। सहंदयोऽग्निराधेय इत्यांहुः। मुरुतोऽद्भिरग्निमंतमयन्। तस्यं तान्तस्य हदंयमाच्छिन्दन्। साऽशिनिरभवत्। यद्शिनिहतस्य वृक्षस्यं सम्भारो भवंति। सहंदयमेवाग्निमा धंत्ते॥२५॥

उषां अभवन्नभवद्वल्मीकौंऽश्राम्यदप्रंथयद्द्वं बीभथ्यत् इत्यांहू रुन्धे पर्ण्त्वमंशमयदच्छिन्द्र् स्रीणि च॥———[3]

द्वादशस्ं विक्रामेष्वग्निमा दंधीत। द्वादंश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरादेवैनंमवरुद्धा

र्धत्ते। यद्वांदशस्ं विकामेष्वा दधीत। परिमितमवं रुन्धीत। चक्षुनिमित आदंधीत।

इयद्वादंश विकामा(३) इतिं। परिमितं चैवापिरिमितं चार्व रुन्धे। अनृतं वै वाचा

वंदति। अर्नृतं मर्नसा ध्यायति॥२६॥ चक्षुर्वे स्त्यम्। अद्रा(३)गित्यांह। अदंर्श्मितिं। तथ्सृत्यम्। यश्चक्षुंर्निमिते- ऽग्निमांधृत्ते। सृत्य एवैन्मा धंत्ते। तस्मादाहिताग्निर्नानृतं वदेत्। नास्यं ब्राह्मणो-ऽनांश्वान्गृहे वंसेत्। सृत्ये ह्यंस्याग्निराहितः। आग्नेयी वै रात्रिः॥२७॥

आग्नेयाः प्रावंः। ऐन्द्रमहंः। नक्तं गार्हंपत्यमा दंधाति। प्रात्नेवावं रुन्धे। दिवांऽऽहवनीयम्। इन्द्रियमेवावं रुन्धे। अधींदिते सूर्यं आहवनीयमा दंधाति। एतस्मिन्वे लोके प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। प्रजा एव तद्यजंमानः सृजते। अथों भूतं चैव भंविष्यचावं रुन्धे॥२८॥

इडा वै मान्वी यंज्ञानूकाशिन्यांसीत्। साऽशृंणोत्। असुंरा अग्निमादंधत् इति। तदंगच्छत्। त आहवनीयमग्र आदंधत। अथ् गार्हंपत्यम्। अथान्वाहार्यपचनम्। साऽब्रंवीत्। प्रतीच्यंषा्ड् श्रीरंगात्। भद्रा भूत्वा परां भविष्यन्तीति॥२९॥

यस्यैवम्ग्निरांधीयतें। प्रतीच्यंस्य श्रीरंति। भुद्रो भूत्वा परांभवति। साऽशृंणोत्। देवा अग्निमादंधत् इतिं। तदंगच्छत्। तेंंऽन्वाहार्युपचंनुमग्र आदंधत। अथ गार्हंपत्यम्। अथांऽऽहवनीयम्ं। साऽब्रंवीत्॥३०॥ प्राच्येषा १ श्रीरंगात्। भुद्रा भूत्वा सुंवुर्गं लोकमेंष्यन्ति। प्रजां तु न वेंष्ट्यन्त् इतिं। यस्यैवम्ग्निराधीयतें। प्राच्यंस्य श्रीरंति। भुद्रो भूत्वा सुंवुर्गं लोकमेंति। प्रजां तु न विन्दते। साऽब्रंवीदिडा मनुम्। तथा वा अहं तवाग्निमाधांस्यामि। यथा प्र

प्रजयां पशुभिंमिथुनैर्जनिष्यसें॥३१॥

प्रत्यस्मिँ होके स्थास्यसिं। अभि सुंवर्गं लोकं जेष्यसीतिं। गार्हंपत्यमग्र आदंधात्। गार्हंपत्यं वा अनुं प्रजाः पृशवः प्रजांयन्ते। गार्हंपत्येनैवास्मैं प्रजां पृश्चन्प्राजनयत्। अथान्वाहार्यपर्चनम्। तिर्यिष्टिंव वा अयं लोकः। अस्मिन्नेव तेनं लोके प्रत्यंतिष्ठत्। अथांऽऽहवनीयम्। तेनैव सुंवर्गं लोकम्भ्यंजयत्॥३२॥

यस्यैवम्ग्निरांधीयतें। प्र प्रजयां पृशुभिंमिंथुनैर्जायते। प्रत्यस्मिँ ह्योके तिष्ठति। अभि सुंवर्गं लोकं जयित। यस्य वा अयंथादेवतम्ग्निरांधीयतें। आदेवतांभ्यो वृश्च्यते। पापीयान्भवति। यस्यं यथादेवतम्। न देवतांभ्य आवृंश्च्यते। वसीयान्भवति॥३३॥

भृगूंणां त्वाऽङ्गिरसां व्रतपते व्रतेनादंधामीतिं भृग्वङ्गिरसामादंध्यात्। आदित्यानौं त्वा देवानौं व्रतपते व्रतेनादंधामीत्यन्यासां ब्राह्मणीनां प्रजानौम्। वर्रणस्य त्वा राज्ञौ व्रतपते व्रतेनादंधामीति राज्ञः। इन्द्रस्य त्वेन्द्रियेणं व्रतपते व्रतेनादंधामीति राज्ञन्यंस्य। मनौस्त्वा ग्रामण्यौ व्रतपते व्रतेनादंधामीति वैश्यंस्य। ऋभूणां त्वां देवानौं व्रतपते व्रतेनादंधामीतिं रथकारस्य। यथादेवतमग्रिराधीयते। न देवतौभ्य आवृंश्च्यते। वसीयान्भवति॥३४॥

ध्यायति वै रात्रिश्चावंरून्थे भविष्यन्तीत्यंब्रवीजनिष्यमेंऽजयद्वसीयान्भवति नवं च॥———[४] प्रजापंतिर्वाचः सृत्यमंपश्यत्। तेनाग्निमाधंत्त। तेन् वै स आर्फ्नोत्। भूर्भुवः सुविरित्याह। एतद्वे वाचः सृत्यम्। य एतेनाग्निमाधत्ते। ऋष्नोत्येव। अथो सृत्यप्रांशूरेव भवति। अथो य एवं विद्वानंभिचरंति। स्तृणुत एवैनम्॥३५॥

भूरित्यांह। प्रजा एव तद्यजंमानः सृजते। भुव इत्यांह। अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठति। सुवृरित्यांह। सुवृर्ग एव लोके प्रतिं तिष्ठति। त्रिभिरक्षरैर्गार्हंपत्यमा दंधाति। त्रयं इमे लोकाः। एष्वेंवैनं लोकेषु प्रतिं-

ष्ठितमार्थत्ते। सर्वैः पश्चभिराहवनीयम्॥३६॥

ऽपतत्। तदश्वोऽभवत्। तदश्वंस्याश्वत्वम्॥३८॥

सुवर्गाय वा एष लोकायाधीयते। यदांहवनीयः। सुवर्ग एवास्मैं लोके वाचः सत्य सर्वमाप्नोति। त्रिभिर्गार्हंपत्यमा दंधाति। पश्चिभिराहवनीयम्। अष्टौ सम्पंद्यन्ते। अष्टाक्षेरा गायत्री। गायत्रौऽग्निः। यावांनेवाग्निः। तमाधत्ते॥३७॥ प्रजापंतिः प्रजा असृजत। ता अस्माथ्सृष्टाः परांचीरायन्। ताभ्यो ज्योतिरुदंगृह्णात्। तं ज्योतिः पश्यंन्तीः प्रजा अभि समावंतन्त। उपरीवाग्निमुद्गृह्णीयाद्व

ज्योतिरेव पश्यन्तीः प्रजा यजमानम्भि समावर्तन्ते। प्रजापंतेरक्ष्यंश्वयत्। तत्परा-

एष वै प्रजापंतिः। यद्ग्निः। प्राजापत्योऽश्वंः। यदश्वं पुरस्तान्नयंति। स्वमेव चक्षुः पश्यंन्प्रजापंतिरनूदेति। वृज्जी वा एषः। यदश्वंः। यदश्वं पुरस्तान्नयंति। जातानेव भ्रातृंव्यान्प्रणुंदते। पुन्रा वर्तयति॥३९॥ जनिष्यमाणानेव प्रतिनुदते। न्यांहवनीयो गार्हंपत्यमकामयत। निगार्हंपत्य

आहवनीयम्। तौ विभाजं नाशंक्रोत्। सोऽश्वंः पूर्ववाङ्गूत्वा। प्राश्चं पूर्वमुदंवहत्। तत्पूर्ववाहंः पूर्ववाद्भम्। यदश्वं पुरस्तान्नयंति। विभक्तिरेवैनंयोः सा। अथो नानांवीर्यावेवैनौ कुरुते॥४०॥
यदुपर्युपरि शिरो हरैत्। प्राणान् विच्छिन्द्यात्। अधोऽधः शिरो हरति। प्राणानां गोपीथायं। इयत्यग्रे हरति। अथेयत्यथेयंति। त्रयं इमे लोकाः। एष्वेवैनं लोकेषु

प्रतिष्ठित्मार्धत्ते। प्रजापंतिर्ग्निमंसृजत। सोऽिबभेत्प्र मा धक्ष्यतीति॥४१॥
तस्यं त्रेधा मंहिमानं व्यौहत्। शान्त्या अप्रदाहाय। यत्रेधाऽग्निरांधीयते॥
महिमानंभेवास्य तद्यूहिति। शान्त्या अप्रदाहाय। पुन्रा वर्तयति। महिमानंभेवास्य
सन्देधाति। पृशुर्वा एषः। यदर्श्वः। एष रुद्रः॥४२॥

यद्गिः। यदश्वंस्य प्रदेंऽग्निमांद्ध्यात्। रुद्रायं पृश्न्नपिंदध्यात्। अपृशुर्यजंमानः स्यात्। यन्नाकृमयेंत्। अनंवरुद्धा अस्य पृशवंः स्युः। पार्श्वत आक्रंमयेत्। यथाऽऽहितस्याग्नेरङ्गारा अभ्यववर्तेरन्। अवंरुद्धा अस्य पृशवो भवंन्ति। न रुद्रायापिदधाति॥४३॥

त्रीणि ह्वी १ षि निर्वपति। विराजं एव विक्रांन्तं यजंमानोऽनु विक्रंमते। अग्नये पर्वमानाय। अग्नये पावकायं। अग्नये श्चये। यद्ग्रये पर्वमानाय निर्वपति। पुनात्येवैनम्। यद्ग्नये पावकायं। पूत एवास्मिन्नन्नाद्यं दधाति। यद्ग्नये श्चये। ब्रह्मवर्चसमेवास्मिन्नुपरिष्टादधाति॥४४॥

पुन्माहुवनीयं धत्तेऽश्वत्वं वंतियति कुरुत् इति रुद्रो देधाति यद्यये श्वंय एकं च॥———[५] देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवा विज्यमुप्यन्तः। अग्नौ वामं वसु सं न्यंदधत। इदमुं नो भविष्यति। यदिं नो जेष्यन्तीतिं। तद्ग्निर्नोध्सहंमशक्नोत्। तत् त्रेधा विन्यंदधात्। पृशुषु तृतीयम्। अपसु तृतीयम्। आदित्ये तृतीयम्॥४५॥

तद्देवा विजित्यं। पुन्रवारुरुथ्मन्त। तैंऽग्नये पर्वमानाय पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निरंवपन्। पुशवो वा अग्निः पर्वमानः। यदेव पुशुष्वासींत्। तत्तेनावारुन्थत। तैंऽग्नये प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

तें ऽग्नये श्चंये। असौ वा आंदित्यों ऽग्निः श्चिंः। यदेवाऽऽदित्य आसींत्।

पावकार्य। आपो वा अग्निः पावकः। यदेवापस्वासीत्। तत्तेनावारुन्धत॥४६॥

तत्तेनावांरुन्धत। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। तनुवो वावैता अंग्र्याधेयंस्य। आग्नेयो वा अष्टाकंपालोऽग्र्याधेयमितिं। यत्तं निर्वपेंत्। नैतानिं। यथाऽऽत्मा स्यात्॥४७॥ नाङ्गांनि। तादृगेव तत्। यदेतानिं निर्वपेंत्। न तम्। यथाऽङ्गांनि स्युः। नाऽऽत्मा। तादृगेव तत्। उभयांनि सह निरुप्यांणि। यज्ञस्यं सात्मत्वायं। उभयं वा एतस्येन्द्रियं वीर्यमाप्यते॥४८॥

यौंऽग्निमांधत्ते। ऐन्द्राग्नमेकांदशकपालमनु निर्वपेत्। आदित्यं चुरुम्। इन्द्राग्नी वै देवानामयातयामानौ। ये एव देवते अयातयाम्नी। ताभ्यामेवास्मां इन्द्रियं वीर्यमवं रुन्थे। आदित्यो भंवति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। धेन्वै वा एतद्रेतः॥४९॥

यदाज्यम्। अनुडुहंस्तण्डुलाः। मिथुनमेवावंरुन्धे। घृते भंवति। युज्ञस्यालूँक्षान्तत्वार

चत्वारं आर्षेयाः प्राश्ञंन्ति। दिशामेव ज्योतिषि जुहोति। पृशवो वा एतानिं हुवी १ षिं। पुष रुद्रः। यदुग्निः॥५०॥

यथ्सद्य एतानि हवी १ षि निवंपैत्। रुद्रायं पृश्निपे दध्यात्। अपृशुर्यजंमानः

स्यात्। यन्नानुंनिर्वपैत्। अनंवरुद्धा अस्य पृशवंः स्युः। द्वादृशसु रात्रीष्वनु निर्वपेत्। संवृथ्सरप्रतिमा वै द्वादंश रात्रयः। संवृथ्सरणैवास्मै रुद्र शंमियत्वा। पृशूनवंरुन्थे। यदेकंमेकमेतानि हुवी १ षि निर्वपैत्॥५१॥
यथा त्रीण्यावपनानि पूरयेत्। तादक्तत्। न प्रजननमुच्छि १ षेत्। एकं निरुप्यं। उत्तरे समस्येत्। तृतीयंमेवास्मै लोकमुच्छि १ षति प्रजननाय। तं प्रजयां पृशुभिरनु

प्रजायते। अथो युज्ञस्यैवैषाऽभिक्रांन्तिः। रथ्युकं प्रवंतियति। मुनुष्युर्थेनैव देवर्थं

प्रत्यवंरोहति॥५२॥ ब्रह्मवादिनों वदन्ति। होत्व्यंमग्निहोत्राँ(३) न होत्व्या(३) मितिं। यद्यजुंषा जुहुयात्। अयंथापूर्वमाहुंती जुहुयात्। यन्न जुंहुयात्। अग्निः परां भवेत्। तूष्णीमेव होतव्यम्। यथापूर्वमाहुती जुहोति। नाग्निः परांभवति। अग्नीधं ददाति॥५३॥

अग्निम्ंखानेवर्त्न्प्रींणाति। उपबर्हणं ददाति। रूपाणामवंरुद्धै। अश्वं ब्रह्मणें। इन्द्रियमेवावंरुन्थे। धेनु १ होत्रें। आशिषं पृवावंरुन्थे। अनुङ्गाहंमध्वर्यवें। विह्नवां अनुङ्गान्। विह्नेरध्वर्युः॥५४॥

वहिंनेव वहिं यज्ञस्यावंरुन्थे। मिथुनौ गावौं ददाति। मिथुनस्यावंरुद्धै। वासों ददाति। सर्वदेवत्यंं वै वासंः। सर्वां एव देवताः प्रीणाति। आ द्वांदशभ्यों ददाति। द्वादंश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सर एव प्रतिं तिष्ठति। कामंमूर्ध्वं देयम्। अपंरिमित्स्यावंरुद्धै॥५५॥

आदित्ये तृतीयम्पस्वासीत्तत्तेनावांरुन्यत् स्यादांप्यते रेतोऽग्निरेकंमेकमेतानि ह्वी १षि निविपेतप्रत्यवरोहति ददात्यध्वर्युर्देयमेकं

घर्मः शिर्स्तद्यम्गिः। सिम्प्रियः पृशुभिर्भुवत्। छुर्दिस्तोकाय् तनयाय यच्छ।

वार्तः प्राणस्तद्यम् ग्निः। सम्प्रियः पृश्मिभ्वत्। स्वदितं तोकाय तनयाय पितुं पंच।

प्राचीमनुं प्रदिशुं प्रेहिं विद्वान्। अग्नेरंग्ने पुरो अग्निर्भवेह। विश्वा आशा दीद्यांनो विभाहि। ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुंष्पदे॥५६॥

अर्कश्चक्षुस्तदसौ सूर्यस्तदयमग्निः। सिम्प्रियः पशुभिर्भुवत्। यत्ते शुक्र शुक्रं वर्चः शुक्रा तनूः। शुक्रं ज्योतिरजस्त्रम्। तेनं मे दीदिहि तेन त्वाऽऽदंधे। अग्निनाँऽग्ने

ब्रह्मणा। आनुशे व्यानशे सर्वमायुर्व्यानशे। ये ते अग्ने शिवे तन्वौ। विरार्ट्घ स्वरार्ट्घ। ते माविंशतां ते मां जिन्वताम्॥५७॥ ये तें अग्ने शिवे तनुवौं। सम्राद्वांभिभूश्चं। ते माविंशतां ते मां जिन्वताम्। ये तें

अग्ने शिवे तनुवौं। विभूश्चं परिभूश्चं। ते मा विंशतां ते मां जिन्वताम्। ये तें अग्ने शिवे तनुवौं। प्रभ्वी च प्रभूंतिश्च। ते मा विंशतां ते मां जिन्वताम्। यास्ते अग्ने शिवास्तनुवंः। ताभिस्त्वाऽऽदंधे। यास्ते अग्ने घोरास्तनुवंः। ताभिरमुं गंच्छ॥५८॥

चतुंष्पदे जिन्वतां तुनुवृस्त्रीणिं च॥

इमे वा एते लोका अग्नयंः। ते यदव्यांवृत्ता आधीयेरन्। शोचयेयुर्यजमानम्।

घर्मः शिर् इति गार्हंपत्यमा दंधाति। वातः प्राण इत्यंन्वाहार्यपचंनम्। अर्कश्चक्षुरित्यांहवनीयम्। तेनैवेनान्व्यावंर्तयति। तथा न शोचयन्ति यजंमानम्। रथन्तरम्भिगायते गार्हंपत्य आधीयमांने। राथन्तरो वा अयं लोकः॥५९॥ अस्मिन्नवैनं लोके प्रतिष्ठितमा धंत्ते। वामदेव्यमभिगायत उद्धियमांणे। अन्तरिक्षं

वै वांमदेव्यम्। अन्तरिक्ष पृवैनं प्रतिष्ठित्मार्धत्ते। अथो शान्तिर्वे वांमदेव्यम्। शान्तमेवेनं पश्व्यंमुद्धंरते। बृहद्भिगांयत आह्वनीयं आधीयमांने। बार्हतो वा असौ लोकः। अमुष्मिन्नेवेनं लोके प्रतिष्ठित्मार्धत्ते। प्रजापंतिर्ग्निमंसृजत॥६०॥ सोऽश्वोऽवारों भूत्वा परांङेत्। तं वांरवन्तीयंनावारयत। तद्वांरवन्तीयंस्य वारवन्तीयत्वम्। श्येतेनं श्येती अंकुरुत। तच्छौतस्यं श्येतत्वम्। यद्वांरवन्तीयंमभि गायंते। वार्यित्वेवेनं प्रतिष्ठित्मा धत्ते। श्येतेनं श्येती कुंरुते। घृमः शिर् इति गार्हंपत्यमादंधाति। सशींर्षाणमेवेनमा धत्ते॥६१॥

उपैनमुत्तरो युज्ञो नमिति। रुद्रो वा एषः। यद्ग्निः। स आंधीयमान ईश्वरो

यजंमानस्य पृशून् हि॰सिंतोः। सिम्प्रियः पृशुभिंभुंवदित्यांह। पृशुभिंभे्वेन् ॰ सिम्प्रियं करोति। पृशूनामहि॰सायै। छुर्दिस्तोकाय तनयाय युच्छेत्यांह। आशिषेमेवैतामा शांस्ते। वार्तः प्राण इत्यन्वाहार्यपर्चनम्॥६२॥

सप्राणमेवैनमा धंत्ते। स्वदितं तोकाय तनयाय पितुं प्रचेत्यांह। अन्नमेवास्मैं स्वदयति। प्राचीमन् प्रदिशं प्रेहिं विद्वानित्यांह। विभक्तिरेवैनयोः सा। अथो नानांवीर्यावेवैनौ कुरुते। ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुंष्पद् इत्यांह। आशिषंमेवैतामा शांस्ते। अर्कश्चक्षुरित्यांहवनीयम्। अर्को वै देवानामन्नम्॥६३॥

अन्नमेवावं रुन्धे। तेनं मे दीदिहीत्यांह। सिमंन्ध एवैनम्ं। आनुशे व्यांनश् इति त्रिरुदिंङ्गयित। त्रयं इमे लोकाः। एष्वेंवैनं लोकेषु प्रतिष्ठितमा धंत्ते। तत्तथा न कार्यम्ं। वीङ्गित्तमप्रतिष्ठितमा दंधीत। उद्धृत्यैवाधायांभिमन्नियः। अवीङ्गितमेवैनं प्रतिष्ठितमाधंत्ते। विराद्वं स्वराद्व यास्ते अग्ने शिवास्तनुवस्ताभिस्त्वाऽऽदंध इत्यांह। एता वा अग्नेः शिवास्तनुवंः। ताभिरवैन समर्धयित। यास्ते अग्ने

घोरास्तुनुवस्ताभिर्मुं गुच्छेति ब्रूयाद्यं द्विष्यात्। ताभिरेवैनं पराभावयति॥६४॥

श्मीग्रभादिग्निं मंन्थति। एषा वा अग्नेर्यिज्ञियां तुन्। तामेवास्मैं जनयित। अदितिः पुत्रकामा। साध्येभ्यों देवेभ्यों ब्रह्मौदनमंपचत्। तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्ञांत्। सा रेतोंऽधत्त। तस्यें धाता चाँर्यमा चांजायेताम्। सा द्वितीयंमपचत्॥६५॥ तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्ञांत्। सा रेतोंऽधत्त। तस्यें मित्रश्च

तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्ञांत्। सा रेतोऽधत्त। तस्ये मित्रश्च वरुणश्चाजायेताम्। सा तृतीयंमपचत्। तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्ञांत्। सा रेतोऽधत्त। तस्या अ॰शंश्च भगंश्चाजायेताम्। सा चंतुर्थमंपचत्॥६६॥

तस्यां उच्छेषंणमददुः। तत्प्राश्नांत्। सा रेतोंऽधत्त। तस्या इन्द्रेश्च विवंस्वाङ्श्चाजायेताम्। ब्रह्मौदुनं पंचिति। रेतं एव तद्दंधाति। प्राश्नंन्ति ब्राह्मणा ओंदुनम्। यदाज्यंमुच्छिष्यंते। तेनं स्मिधोऽभ्यज्या दंधाति। उच्छेषंणाद्वा अदिती रेतोंऽधत्त॥६७॥ उच्छेषंणादेव तद्रेतों धत्ते। अस्थि वा एतत्। यथ्समिधंः। एतद्रेतंः। यदाज्यम्। यदाज्येन समिधोऽभ्यज्यादधांति। अस्थ्येव तद्रेतंसि दधाति। तिस्र आदंधाति मिथुनत्वायं। इयंतीर्भवन्ति। प्रजापंतिना यज्ञमुखेन सम्मिताः॥६८॥

इयंतीर्भवन्ति। युज्ञपुरुषा सिम्मिताः। इयंतीर्भवन्ति। पृतावृद्धै पुरुषे वीर्यम्। वीर्यसम्मिताः। आर्द्रा भवन्ति। आर्द्रिमिव हि रेतः सिच्यते। चित्रियस्याश्वत्थस्यादंधाति। चित्रमेव भवति। घृतवंतीभिरा दंधाति॥६९॥ पृतद्वा अग्नेः प्रियं धामं। यद्घृतम्। प्रियेणैवैनं धाम्ना समर्धयति। अथो

पुतद्वा अग्नेः प्रियं धामं। यद्घृतम्। प्रियेणैवैनं धाम्ना समधेयति। अथो तेर्जसा। गायत्रीभिर्न्नाह्मणस्यादेध्यात्। गायत्रछंन्दा वै ब्राँह्मणः। स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययनस्त्वायं। त्रिष्टुग्भी राजन्यंस्य। त्रिष्टुप्छंन्दा वै रांजन्यंः। स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययनस्त्वायं॥७०॥

जगंतीभिर्वेश्यंस्य। जगंतीछन्दा वै वैश्यंः। स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययन्स्त्वायं। तश् संवथ्सरं गोपायेत्। संवथ्सरश हि रेतों हितं वर्धते। यद्येनश संवथ्सरे नोपनमैत्। स्मिधः पुन्रादंध्यात्। रेतं एव तिष्कृतं वर्धमानमेति। न मा्र्समंश्ञीयात्। न स्त्रियमुपंयात्॥७१॥

यन्मा १ समंश्र्ञीयात्। यथ्स्रियंमुपेयात्। निर्वींर्यः स्यात्। नैनंमुग्निरुपंनमेत्। श्व आंधास्यमानो ब्रह्मौद्नं पंचिति। आदित्या वा इत उत्तमाः सुंवृगं लोकमायन्। ते वा इतो यन्तं प्रतिनुदन्ते। एते खलु वावाऽऽदित्याः। यद्ग्रौह्मणाः। तैरेव सन्त्वं गंच्छति॥७२॥

नैनं प्रतिनुदन्ते। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। क्वां सः। अग्निः कार्यः। योंऽस्मै प्रजां पृश्न्त्रंजनयतीति। शल्कैस्ता १ रात्रिमृग्निमिन्धीत। तस्मिन्नुपव्युषम्रणी निष्टंपेत्। यथंर्ष्भायं वाशिता न्यांविच्छायति। तादृगेव तत्। अपोदूह्य भस्माग्निं मंन्थति॥ ७३॥

सैव साऽग्नेः सन्तंतिः। तं मंथित्वा प्राश्चमुद्धंरति। संवथ्सरमेव तद्रेतों हितं प्रजनयति। अनाहित्स्तस्याग्निरित्याहुः। यः समिधोऽनाधायाग्निमाधत्त इतिं। ताः संवथ्मरे पुरस्तादादंध्यात्। संवथ्मरादेवैनंमवरुध्याधंत्ते। यदि संवथ्मरेऽनाद्ध्यात्। द्वादृश्यां पुरस्तादादंध्यात्। संवथ्मरप्रितमा व द्वादंश रात्रयः। संवथ्मरमेवास्याहिता भवन्ति। यदि द्वादृश्यां नाद्ध्यात्। त्र्यहे पुरस्तादादंध्यात्। आहिता एवास्यं भवन्ति॥७४॥

प्रजापंतिः प्रजा अंसृजता स रिंरिचानोंऽमन्यता स तपोंऽतप्यता स

द्वितीयंमपचचतुर्थमंपचददिंती रेतोंऽधत्त सम्मिता घृतवंतीभिरादंधाति राजन्यः स्वस्य छन्दंसः प्रत्ययनुस्त्वायेयाद्गच्छति मन्थित

आत्मन्वीर्यमपश्यत्। तदंवर्धतः। तदंस्माथ्सहंसोर्ध्वमंसृज्यतः। सा विराडंभवत्। तां देवासुरा व्यंगृह्णतः। सौंऽब्रवीत्प्रजापंतिः। मम् वा एषा॥७५॥

दोहां एव युष्माक्मितिं। सा ततः प्राच्युदंकामत्। तत्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। अथंवं पितुं में गोपायेतिं। सा द्वितीयमुदंकामत्। तत्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। नर्यं प्रजां में गोपायेतिं। सा तृतीयमुदंकामत्। तत्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। शङ्स्यं पृशून्में

गोपायेतिं॥७६॥

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

सा चंतुर्थमुदंक्रामत्। तत्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। सप्रंथ स्भां में गोपायेतिं। सा पंश्चममुदंक्रामत्। तत्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। अहं बुध्निय मत्रं मे गोपायेतिं। अग्नीन् वाव सा तान्व्यंक्रमत। तान्प्रजापंतिः पर्यगृह्णात्। अथों पङ्किमेव। पङ्किर्वा एषा ब्राह्मणे प्रविष्टा॥७७॥

तामात्मनोऽधि निर्मिमीते। यद्ग्निरांधीयतें। तस्मांदेतावंन्तोऽग्नय आधीयन्ते। पाङ्कं वा इद सर्वम्। पाङ्कंनैव पाङ्कः स्पृणोति। अर्थवं पितुं में गोपायेत्यांह। अन्नमेवेतेनं स्पृणोति। नर्यं प्रजां में गोपायेत्यांह। प्रजामेवेतेनं स्पृणोति। शक्स्यं पृश्नमें गोपायेत्यांह॥७८॥

पृश्नृवैतेनं स्पृणोति। सप्रंथ सुभां में गोपायेत्यांह। सुभामेवैतेनंन्द्रिय स्पृणोति। अहें बुध्निय मन्नं मे गोपायेत्यांह। मन्नमेवैतेन् श्रिय स्पृणोति। यदंन्वाहार्यपर्चने उन्वाहार्यं पर्चन्ति। तेनु सौं उस्याभीष्टंः प्रीतः। यद्गार्हं पत्य

आज्यंमधिश्रयंन्ति सम्पर्नीर्याजयंन्ति। तेन् सौंऽस्याभीष्टः प्रीतः। यदांहवनीये जुह्वंति॥७९॥

तेन् सौंऽस्याभीष्टः प्रीतः। यथ्सभायाँ विजयंन्ते। तेन् सौंऽस्याभीष्टः प्रीतः। यदांवस्थेऽन्न् हरंन्ति। तेन् सौंऽस्याभीष्टः प्रीतः। तथाँऽस्य सर्वे प्रीता अभीष्टा आधीयन्ते। प्रवस्थमेष्यन्नेवसूपंतिष्ठेतैकमेकम्। यथाँ ब्राह्मणायं गृहेवासिने परिदायं गृहानेतिं। ताहगेव तत्। पुनंरागत्योपंतिष्ठते। सा भागयमेवैषां तत्। सा ततं ऊर्ध्वारोहत्। सा रोहिण्यंभवत्। तद्रोहिण्ये रोहिणित्वम्। रोहिण्यामृग्निमादंधीत। स्व पुवैनं योनौ प्रतिष्ठितमाधंत्ते। ऋभ्रोत्येनेन॥८०॥

ब्रह्म सन्धंत्तं कृत्तिंकासूर्द्धन्ति द्वाद्शसुं प्रजापंतिर्वाचो देवासुरास्तद्ग्निर्नोद्धर्मः शिरं इमे वै शंमीगुर्भात्प्रजापंतिः स

रिंरिचानः स तपः स आत्मन्वीर्यं दर्श॥१०॥

ब्रह्म सन्धंत्तं तौ दिव्यावर्थो शुन्त्वाय प्राच्येषां यदुपर्युपरि यथ्सद्यः सोऽश्वोऽवारी भूत्वा जर्गतीभिरशीतिः॥८०॥

एषा पशून्में गोपायेति प्रविष्टा पशून्में गोपायेत्यांह जुह्वंति तिष्ठते सप्त चं॥_____

ब्रह्म सन्धंत्तमृध्नोत्येंनेन॥

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ द्वितीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

उद्धन्यमानम्स्या अमेध्यम्। अपं पाप्मानं यर्जमानस्य हन्तु। शिवा नंः सन्तु प्रदिशृश्चतंस्रः। शं नों माता पृथिवी तोकसाता। शं नों देवीर्भिष्टये। आपों भवन्तु पीतये। शं योर्भि स्रंवन्तु नः। वैश्वान्रस्यं रूपम्। पृथिव्यां परिस्रमां। स्योनमा विशन्तु नः॥१॥

यदिदं दिवो यददः पृथिव्याः। सञ्जज्ञाने रोदंसी सम्बभूवतुः। ऊषाँन्कृष्णमंवतु कृष्णमूषाः। इहोभयौर्यज्ञियमागंमिष्ठाः। ऊतीः कुंर्वाणो यत्पृथिवीमचंरः। गुहाकारमाखुरूपं प्रतीत्यं। तत्ते न्यंक्तमिह सम्भरंन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। ऊर्जं पृथिव्या रसंमाभरंन्तः। शतं जीवेम श्ररदः

वम्रीभिरनं वित्तं गृहांस्। श्रोत्रं त उर्व्यवंधिरा भवामः। प्रजापंतिसृष्टानां प्रजानांम्। क्षुधोऽपंहत्यै सुवितं नो अस्तु। उप प्रभिन्नमिष्मूर्जं प्रजाभ्यंः। सूदं गृहेभ्यो रस्मार्भरामि। यस्यं रूपं बिभ्रंदिमामविंन्दत्। गुहा प्रविष्टाः सिर्रस्य मध्यै। तस्येदं विहंतमाभरंन्तः। अछंम्बद्धारम्स्यां विधेम॥३॥

यत्पर्यपंश्यथ्सरिरस्य मध्यैं। उर्वीमपंश्यञ्जगंतः प्रतिष्ठाम्। तत्पुष्कंरस्यायतंनाद्धि

जातम्। पूर्णं पृथिव्याः प्रथंन १ हरामि। याभिरह १ हुज्ञगंतः प्रतिष्ठाम्। उर्वीमिमां विश्वज्ञनस्यं भूत्रीम्। ता नः शिवाः शर्कराः सन्तु सर्वाः। अग्ने रेतंश्चन्द्र १ हिरंण्यम्। अन्धः सम्भूतम्मृतं प्रजासुं। तथ्सम्भरंन्नुत्तर्तो निधायं॥४॥ अतिप्रयच्छं दुरितिं तरेयम्। अश्वो रूपं कृत्वा यदेश्वत्थेऽतिष्ठः। संवथ्सरं देवेभ्यो निलायं। तत्ते न्यंक्तमिह सम्भरंन्तः। शतं जीवेम शरदः सवीराः। ऊर्जः

रायस्पोषेण सिम्षा मंदेम। गायत्रिया हियमांणस्य यत्तै॥५॥ पूर्णमपंतत्तृतीयंस्यै दिवोऽधि। सोऽयं पूर्णः सोमपूर्णाद्धि जातः। ततो हरामि सोमपीथस्यावंरुद्धै। देवानां ब्रह्मवादं वदंतां यत्। उपार्श्वणोः सुश्रवा वै श्रुतोऽसि।

पृथिव्या अध्युत्थितोऽसि। वनस्पते शतवंलशो विरोह। त्वयां वयमिषुमूर्जुं मदेन्तः।

ततो मामाविंशतु ब्रह्मवर्चसम्। तथ्सम्भर्ड्स्तदवंरुन्धीय साक्षात्। ययां ते सृष्टस्याग्नेः। हेतिमशंमयत्प्रजापंतिः। तामिमामप्रदाहाय॥६॥

शुमी १ शान्त्यै हराम्यहम्। यत्ते सृष्टस्यं यतः। विकंङ्कत्ं भा आँच्छं ज्ञातवेदः। तयां भासा सम्मितः। उरुं नो लोकमन् प्रभाहि। यत्ते तान्तस्य हृदंयमाच्छिन्दञ्जातवेदः। मुक्तो (दिस्त्रमिरिक्ता) एवते तदशके सम्भूगम्। सात्मा अग्रे सहेद्यो भवेदः।

मुरुतोऽद्भिस्तमियुत्वा। एतत्ते तदेशुनेः सम्भेरामि। सात्मां अग्ने सहंदयो भवेह।

चित्रियादश्वत्थाथ्सम्भृता बृह्त्यः॥७॥ शरीरमभि सङ्स्कृताः स्थ। प्रजापंतिना यज्ञमुखेन सम्मिताः। तिस्रस्रिवृद्धिर्मिथुना

प्रजात्यै। अश्वत्थाद्धंव्यवाहाद्धि जाताम्। अग्नेस्तुनूं यज्ञियाः सम्भंरामि। शान्तयोनिः शमीगुर्भम्। अग्नये प्रजनियतवै। यो अश्वत्थः शमीगुर्भः। आरुरोह

त्वे सर्चां। तं ते हरामि ब्रह्मणा॥८॥
यिज्ञियैः केतुभिः सह। यं त्वां समर्भरञ्जातवेदः। यथाशरीरं भूतेषु न्यंक्तम्। स

सम्भृतः सीद शिवः प्रजाभ्यः। उरुं नों लोकमनुनिषि विद्वान्। प्रवेधसे क्वये

मेध्यांय। वचों वृन्दार्रु वृष्माय वृष्णैं। यतों भ्यमभंयं तन्नों अस्तु। अवं देवान् यंजे हेड्यान्। समिधाऽग्निं दुंवस्यत॥९॥

यज् हङ्यान्। सामधाऽाभ्र दुवस्यता। १॥

घृतैर्बोधयुतातिथिम्। आऽस्मिन् हुव्या जुंहोतन। उपं त्वाऽग्ने हुविष्मंतीः।

घृताचींर्यन्तु हर्यत। जुषस्वं स्मिधो ममं। तं त्वां स्मिद्धिंरङ्गिरः। घृतेनं वर्धयामिस। बृहच्छोंचा यविष्ठा। समिध्यमांनः प्रथमो नु धर्मः। समक्तुभिंरज्यते विश्ववांरः॥१०॥

शोचिष्केंशो घृतनिंणिक्पावकः। सुयज्ञो अग्निर्यज्ञथांय देवान्। घृतप्रंतीको घृतयोनिर्ग्निः। घृतैः समिद्धो घृतम्स्यान्नम्। घृतप्रुषंस्त्वा स्रितो वहन्ति। घृतं पिबन्थ्स्यजां यक्षि देवान्। आयुर्दा अग्ने ह्विषो जुषाणः। घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गव्यम्। पितेवं पुत्रम्भिरंक्षतादिमम्॥११॥

त्वामंग्ने समिधानं यंविष्ठ। देवा दूतं चंक्रिरे हव्यवाहम्। उरुज्रयंसं घृतयोनिमाहुंतम्। त्वेषं चक्षुंदंधिरे चोद्यन्वंति। त्वामंग्ने प्रदिव आहुंतं घृतेनं। सुम्रायवंः सुष्मिधा समीधिरे। स वांवृधान ओषंधीभिरुक्षितः। उरु ज्रयार्रस् पार्थिवा वितिष्ठसे। घृतप्रतीकं व ऋतस्य धूर्षदम्। अग्निं मित्रं न संमिधान ऋक्षते॥१२॥

इन्धांनो अको विदर्शेषु दीद्यंत्। शुक्रवंर्णामुद्दं नो यश्सते धियम्। प्रजा अंग्रे संवांसय। आशांश्च पृशुभिः सह। राष्ट्राण्यंस्मा आधेहि। यान्यासँन्थ्सिवृतुः स्व। मही विश्पत्नी सदेने ऋतस्यं। अर्वाची एतं धरुणे रयीणाम्। अन्तर्वत्नी जन्यं जातवेदसम्। अध्वराणां जनयथः पुरोगाम्॥१३॥

आरोहतं दुशत् शक्करीर्ममं। ऋतेनाँग्र आयुंषा वर्चसा सह। ज्योग्जीवंन्त उत्तरामुत्तरा समाम। दर्शमहं पूर्णमांसं युज्ञं यथा यजैं। ऋत्वियवती स्थो अग्निरेतसौ। गर्भं दधाथां ते वामहं दंदे। तथ्सत्यं यद्वीरं विभृथः। वीरं जनिय्वयर्थः। ते मत्प्रातः प्रजनिष्येथे। ते मा प्रजांते प्रजनिय्वयर्थः॥१४॥

प्रजयां पृशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनं सुवुर्गे लोके। अनृताथ्सत्यमुपैमि। मानुषाद्दैव्यमुपैमि। दैवीं वार्चं यच्छामि। शल्कैरुग्निमिंन्धानः। उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोर् ऋध्वा। अति मृत्युं तराम्यहम्। जातंवेदो भुवंनस्य रेतः। इह सिश्च तपंसो यज्जंनिष्यते॥१५॥

अग्निमेश्वत्थादिषे हव्यवाहम्। श्वामीगुर्भाञ्चनयन् यो मेयोभूः। अयं ते योनिर्ऋत्वियः। यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नेग्न आरोह। अथां नो वर्धया रियम्। अपेत वीत वि च सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुराणा ये च नूतंनाः। अदादिदं यमोऽवसानं पृथिव्याः। अर्नन्निमं पितरों लोकमंस्मै॥१६॥

अग्नेर्भस्मांस्यग्नेः पुरीषमिस। संज्ञानमिसि काम्धरणम्। मियं ते काम्धरणं भूयात्। संवंः सृजािम् हृदयािन। स॰सृष्टं मनो अस्तु वः। स॰सृष्टः प्राणो अस्तु वः। सं या वंः प्रियास्तुन्वंः। सं प्रिया हृदयािन वः। आत्मा वो अस्तु सिम्प्रियः। सिम्प्रियास्तुन्वो मम्॥१७॥

कल्पेतां द्यावापृथिवी। कल्पेन्तामाप् ओषंधीः। कल्पेन्ताम्ग्रयः पृथंक्। मम् ज्यैष्ठ्याय सन्नेताः। येऽग्रयः समेनसः। अन्तरा द्यावापृथिवी। वासंन्तिकावृतू

उषसः श्रेयंसीः श्रेयसीर्दधंत्॥२०॥

अभि कर्ल्पमानाः। इन्द्रंमिव देवा अभि सं विंशन्तु। दिवस्त्वां वीर्येण। पृथिव्यै महिम्ना॥१८॥

अन्तरिक्षस्य पोषेण। सुर्वपंशुमादेधे। अजीजनन्नमृतं मर्त्यासः। अस्रेमाणं तरणिं

वीडुर्जम्भम्। दश् स्वसारो अग्रुवंः समीचीः। पुमार्रसं जातम्भि सर्रभन्ताम्। प्रजापंतेस्त्वा प्राणेनाभि प्राणिमि। पूष्णः पोषेण मह्यम्। दीर्घायुत्वायं श्तशारदाय। श्तर श्रद्ध आयुषे वर्चसे॥१९॥ जीवात्वे पुण्यांय। अहं त्वदंस्मि मदंसि त्वमेतत्। ममांसि योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं हव्यान्यग्ने। पुत्रः पित्रे लोकुकुञ्जातवेदः। प्राणे

त्वाऽमृत्मादंधामि। अन्नादमन्नाद्यांय। गोप्तारं गुर्स्यै। सुगार्हप्त्यो विदहन्नरांतीः।

अग्ने सपत्नार् अप बार्धमानः। रायस्पोष्मिष्मूर्जम्समास् धेहि। इमा उ मामुपंतिष्ठन्तु रायः। आभिः प्रजाभिरिह संवंसेय। इहो इडां तिष्ठतु विश्वरूपी। मध्ये वसौँदीदिहि जातवेदः। ओजंसे बलाय त्वोद्यंच्छे। वृषंणे शुष्मायायुंषे वर्चसे। सप्रवृतूरंसि वृत्रतूः। यस्ते देवेषुं महिमा सुवर्गः॥२१॥

स्पूलतूरास वृत्रतूः। यस्त द्वषु माह्मा सुव्गः॥२१॥ यस्तं आत्मा पृशुषु प्रविष्टः। पृष्टि्र्या ते मनुष्येषु पप्रथे। तयां नो अग्ने जुषमाण एहिं। दिवः पृथिव्याः पर्यन्तिरक्षात्। वातात्पशुभ्यो अध्योषंधीभ्यः। यत्रं

यत्र जातवेदः सम्बुभूथं। ततों नो अग्ने जुषमांण एहिं। प्राचीमनुं प्रदिशं प्रेहिं विद्वान्। अग्नेरंग्ने पुरो अंग्निर्भवेह। विश्वा आशा दीद्यांनो वि भाहि॥२२॥

ऊर्जं नो धेहि द्विपदे चतुंष्पदे। अन्वग्निरुषसामग्रंमख्यत्। अन्वहांनि प्रथमो जातवेदाः। अनु सूर्यस्य पुरुत्रा चं रुश्मीन्। अनु द्यावांपृथिवी आतंतान। विक्रंमस्व महा असि। वेदिषन्मानुषेभ्यः। त्रिषु लोकेषुं जागृहि। यदिदं दिवो यददः

पृथिव्याः। संविदाने रोदंसी सं बभूवर्तुः॥२३॥
तयोः पृष्ठे सींदतु जातवेदाः। शम्भूः प्रजाभ्यंस्तन्वे स्योनः। प्राणं त्वाऽमृत

आ दंधामि। अन्नादमन्नाद्यांय। गोप्तारं गुप्त्यै। यत्ते शुक्र शुक्रं वर्चः शुक्रा तुन्ः।

शुक्रं ज्योतिरजंस्नम्। तेनं मे दीदिहि तेन् त्वाऽऽदंधे। अग्निनाँऽग्ने ब्रह्मणा। आन्शे व्यानशे सर्वमायुर्व्यानशे॥२४॥

नयं प्रजां में गोपाय। अमृत्त्वायं जीवसें। जातां जिन्ष्यमाणां च। अमृते सत्ये प्रतिष्ठिताम्। अर्थवं पितुं में गोपाय। रसमन्निम्हायुंषे। अदंब्यायोऽशीततनो। अविषन्नः पितुं कृण्। शङ्स्यं पृश्नमें गोपाय। द्विपादो ये चतुंष्पदः॥२५॥ अष्टाशंफाश्च य इहाग्नें। ये चैकंशफा आशुगाः। सप्रंथ स्भां में गोपाय। ये च्

जुटाराकाञ्च प इहामा प पकराका आर्युगान सप्रय सुमा म गापापा प पू सभ्याः सभासदः। तानिन्द्रियावंतः कुरु। सर्वमायुरुपांसताम्। अहं बुध्निय मत्रं मे गोपाय। यमृषंयस्त्रेविदा विदुः। ऋचः सामानि यजूरंषि। सा हि श्रीर्मृतां स्ताम्॥२६॥

चतुंः शिखण्डा युवृतिः सुपेशाः। घृतप्रंतीका भुवंनस्य मध्यें। मुर्मृज्यमांना मह्ते सौभंगाय। मह्यं धुक्ष्व यजंमानाय कामान्। इहैव सन्तत्रं स्तो वो अग्नयः। प्राणेनं वाचा मनसा बिभर्मि। तिरो मा सन्तमायुर्मा प्रहांसीत्। ज्योतिषा वो वैश्वानुरेणोपंतिष्ठे। पृश्चधाऽग्नीन्व्यंक्रामत्। विराद्थ्सृष्टा प्रजापंतेः। ऊर्ध्वाऽऽरोहद्रोहिणी। योनिर्ग्नेः प्रतिष्ठितिः॥२७॥

विश्-तु नः पुरूचीर्विधेम निधाय यत्तेऽप्रदाहाय बृहुत्यौं ब्रह्मणा दुवस्यत विश्ववार इममृंञ्जते पुरोगां प्रजनियिष्यथौं जिन्घ्यतेंऽस्मे ममं महिम्ना वर्चसे दर्धथ्सुवर्गो भाहि सम्बभूवतुरायुर्व्यानशे चतुष्यदः सुतां प्रजापंतेर्द्वे चं॥————[१]

नवैतान्यहांनि भवन्ति। नव वै सुंवर्गा लोकाः। यदेतान्यहांन्युप्यन्तिं। नवस्वेव तथ्सुंवर्गेषुं लोकेषुं स्त्रिणः प्रतितिष्ठंन्तो यन्ति। अग्निष्टोमाः परंः सामानः कार्या इत्यांहुः। अग्निष्टोमसंम्मितः सुवर्गो लोक इतिं। द्वादंशाग्निष्टोमस्यं स्तोत्राणि। द्वादंश मासाः संवथ्सरः। तत्तन्न सूर्क्यम्। उक्थ्यां एव संप्तद्शाः परंः सामानः कार्याः॥२८॥

पृशवो वा उक्थानि। पृशूनामवंरुद्धौ। विश्वजिद्भिजितांवग्निष्टोमौ। उक्थाः सप्तदृशाः परंः सामानः। ते सङ्स्तुंता विराजम्भि सम्पद्धन्ते। द्वे चर्चावतिंरिच्येते। एकंया गौरतिंरिक्तः। एक्याऽऽयुंरूनः। सुवर्गो वै लोको ज्योतिः। ऊर्ग्विराट्॥२९॥

सुवर्गमेव तेनं लोकम्भि जंयन्ति। यत्पर्भ् राथंन्तरम्। तत्प्रंथमेऽहंन्कार्यम्। बृहद्वितीये। वैरूपं तृतीये। वैराजं चंतुर्थे। शाक्करं पंश्रमे। रैवत । स्वतंय एते ग्रहां गृह्यन्ते॥३०॥

गृह्यन्ते। अतिग्राह्याः परः सामस्। मिथुनमेव तैर्यजमाना अवंरुन्धते। बृहत्पृष्ठं भवति। बृहद्वे स्वगी लोकः। बृहतैव स्वगी लोकं यन्ति। त्र्यस्त्रिक्शि नाम साम। माध्यं दिने पर्वमाने भवति॥३१॥

अतिग्राह्याः परंः सामसु। इमानेवैतैर्लोकान्थ्सन्तंन्वन्ति। मिथुना एते ग्रहां

त्रयंस्निश्शृद्धे देवताः। देवतां पृवावंरुन्धते। ये वा इतः परांश्वश् संवथ्सरमृप्यन्ति। न हैनं ते स्वस्ति समंश्ज्वते। अथ् येऽमृतोऽर्वाश्चमृप्यन्ति। ते हैन इस्वस्ति समंश्ज्वते। पृतद्धा अमृतोऽर्वाश्चमुपंयन्ति। यदेवम्। यो हु खलु वाव प्रजापंतिः। स उवेवेन्द्रः। तदुं देवेभ्यो नयंन्ति॥३२॥

पक्षंसी। एव र संवथ्सरस्य पक्षंसी। यदेतेन गृह्येरन्। विषूची संवथ्सरस्य पक्षंसी

सन्तंतिर्वा एते ग्रहाः। यत्परंः सामानः। विषूवान्दिवाकीर्त्यम्। यथा शालांयै

व्यवंस्नश्सेयाताम्। आर्तिमार्च्छंयः। यदेते गृह्यन्तें। यथा शालांयै पक्षंसी मध्यमं वश्शम्भि संमायच्छंति॥३३॥

पुवश् संवथ्स्रस्य पक्षंसी दिवाकीत्र्यंम्भि सं तंन्वन्ति। नार्तिमार्च्छंन्ति।
पुक्विश्शमहंभविति। शुक्राग्रा ग्रहां गृह्यन्ते। प्रत्युत्तंब्थ्ये सयत्वायं। सौर्यं पुतदहंः
पुशुरालंभ्यते। सौर्योऽतिग्राह्यों गृह्यते। अहंरेव रूपेण समर्धयन्ति। अथो अहं
पुवैष बुलिर्ह्हिंयते। सुतैतदहंरितग्राह्यां गृह्यन्ते॥३४॥

सप्त वै शीर्षण्याः प्राणाः। असावादित्यः शिरः प्रजानाम्। शीर्षन्नेव प्रजानां प्राणान्दंधाति। तस्माध्सप्त शीर्षन्प्राणाः। इन्द्रो वृत्रः हृत्वा। असुरान्पराभाव्यं। स इमाँ ह्योकान्भ्यंजयत्। तस्यासौ लोकोऽनंभिजित आसीत्। तं विश्वकंमा भूत्वा- ऽभ्यंजयत्। यद्वैश्वकर्मणो गृह्यते॥३५॥

सुवर्गस्यं लोकस्याभिजिंत्यै। प्रवा पृतेंऽस्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये वैश्वकर्मणं गृह्णतें। आदित्यः श्वो गृंह्यते। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठन्ति। अन्योन्यो गृह्यते। विश्वान्येव कर्माणि कुर्वाणा यंन्ति। अस्यामन्येव प्रतिं तिष्ठन्ति। तावाऽपंरार्धाथ्यंवथ्यरस्यान्योन्यो गृह्यते। तावुभौ सह महाव्रते गृह्यते। यज्ञस्यैवान्तं गृत्वा। उभयौर्लोकयोः प्रतिं तिष्ठन्ति। अर्क्यमुक्थं भवति। अन्नाद्यस्यावंरुद्धौ॥३६॥ स्मायच्छंत्यितग्रह्यां गृह्यते गृह्यते संवथ्यरस्यान्यौन्यो गृह्यते पश्चं च॥———[३]

पुक्वि १ एवं भवित। एतेन् वै देवा एकिवि १ शेनं। आदित्यमित उत्तम १ सुंवर्गं लोकमारोहयन्। स वा एष इत एकिवि १ शः। तस्य दशावस्तादहांनि। दर्श प्रस्तांत्। स वा एष विराज्युं भयतः प्रतिष्ठितः। विराजि हि वा एष उभयतः प्रतिष्ठितः। तस्मादन्तरेमौ लोकौ यन्। सर्वेषु सुवर्गेषुं लोकेष्वं भितपंत्रेति॥३७॥ देवा वा आदित्यस्यं सुवर्गस्यं लोकस्यं। परांचोऽतिपादादं विभयुः। तं

छन्दोभिरदः हं धृत्यै। देवा वा आंदित्यस्यं सुवर्गस्यं लोकस्यं। अवांचो-

ऽवपादादंबिभयुः। तं पुश्चभीं रृश्मिभिरुदंवयन्। तस्मदिकविर्शेऽहुन्पश्चं दिवाकीर्त्यानि क्रियन्ते। रश्मयो वै दिंवाकीर्त्यानि। ये गांयत्रे। ते गांयत्रीषूत्तंरयोः

पर्वमानयोः॥३८॥ महादिवाकीर्त्युष्ट्र होतुः पृष्ठम्। विकर्णं ब्रह्मसामम्। भासौँऽग्निष्टोमः। अथैतानि

एति पर्वमानयोः स्पर्राणि पश्चं च॥

पराणि। परैर्वे देवा आंदित्य सुंवर्गं लोकमंपारयन्। यदपारयन्। तत्पराणां पर्त्वम्। पारयंन्त्येनं पराणि। य एवं वेदं। अथैतानि स्पराणि। स्परैर्वे देवा आंदित्य सुंवर्गं लोकमंस्पारयन्। यदस्पारयन्। तथ्स्पराणाः स्पर्त्वम्। स्पर्यन्त्येनः स्पराणि। य एवं वेदं॥३९॥

अप्रतिष्ठां वा पुते गंच्छन्ति। येषा रं संवथ्सरेऽनाप्तेऽर्थ। पुकाद्शिन्याप्यते॥ वैष्णवं वामनमालभन्ते। युज्ञो वै विष्णुः। युज्ञमेवालभन्ते प्रतिष्ठित्यै।

वृष्णुव वामुनमालमन्ता युज्ञा व विष्णुः। युज्ञमुवालमन्त् प्राताष्ठत्या पुन्द्राग्नमालभन्ते। इन्द्राग्नी वै देवानामर्यातयामानौ। ये पुव देवते अर्यातयाम्नी। ते एवालभन्ते॥४०॥ वैश्वदेवमालंभन्ते। देवतां एवावंरुन्थते। द्यावापृथिव्यां धेनुमालंभन्ते। द्यावापृथिव्योरेव प्रतिं तिष्ठन्ति। वायव्यं वथ्समालंभन्ते। वायरेवैभ्यो यथा-ऽऽयत्नाद्देवता अवंरुन्थे। आदित्यामविं वशामालंभन्ते। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठन्ति। मैत्रावरुणीमालंभन्ते॥४१॥

मित्रेणैव यज्ञस्य स्विष्ट शमयन्ति। वर्रणेन् दुरिष्टम्। प्राजापत्यं तूपरं महाव्रत आलंभन्ते। प्राजापत्योऽतिग्राह्यो गृह्यते। अहंरेव रूपेण समर्धयन्ति। अथो अहं एवैष बुलिर्ह्वियते। आग्नेयमा लंभन्ते प्रति प्रज्ञात्ये। अजुपेत्वान् वा एते पूर्वेर्मासैरवं रुन्थते। यदेते गुळ्याः पृशवं आलुभ्यन्तें। उभयेषां पशूनामवंरुद्धौ॥४२॥

यदितिरिक्तामेकादिशिनीमालभेरन्। अप्रियं भ्रातृंव्यम्भ्यतिरिच्येत। यद्द्रौ द्वौ पृशू समस्येयुः। कनीय आर्युः कुर्वीरन्। यदेते ब्राह्मणवन्तः पृशवं आलुभ्यन्तैं। नाप्रियं भ्रातृंव्यम्भ्यंतिरिच्यंते। न कनीय आर्युः कुर्वते॥४३॥

प्रजापंतिः प्रजाः सृष्ट्वा वृत्तोऽशयत्। तं देवा भूताना् रस्ं तेजः सम्भृत्यं। तेनैनमभिषज्यन्। महानंववर्तीतिं। तन्मंहाव्रतस्यं महाव्रतत्वम्। महद्वृतमितिं। तन्मंहाव्रतस्यं महाव्रतत्वम्। मह्तो व्रतमितिं। तन्मंहाव्रतस्यं महाव्रतत्वम्। पृश्चविर्शः स्तोमो भवति॥४४॥ चतुंविरशत्यर्धमासः संवथ्मरः। यद्वा पृतस्मिन्थ्संवथ्मरेऽिष् प्राजांयत। तदन्नं पश्चविरशमंभवत्। मध्यतः क्रियते। मध्यतो ह्यन्नंमिशतं िधनोतिं। अथो मध्यत

पुव प्रजानामूर्थींयते। अथ् यद्वा इदमंन्ततः क्रियतें। तस्मांदुदन्ते प्रजाः समेधन्ते। अन्ततः क्रियते प्रजनंनायैव। त्रिवृच्छिरो भवति॥४५॥ त्रेधाविहित हि शिरंः। लोमं छ्वीरस्थि। परांचा स्तुवन्ति। तस्मात्तथ्सदग्व। न मेद्यतोऽन्ं मेद्यति। न कृश्यतोऽन्ं कृश्यति। पृश्रुद्शौंऽन्यः पृक्षो भवति। स्प्तद्शौंऽन्यः। तस्माद्वया इंस्यन्यत्रम्धम्भि पूर्यावंतन्ते। अन्यत्रतो हि तद्गरीयः क्रियतें॥४६॥

द्विपदांसु स्तुवन्ति प्रतिष्ठित्यै। सर्वेण सह स्तुवन्ति। सर्वेण ह्यांत्मनांऽऽत्मन्वी। सहोत्पतंन्ति। एकैकामुच्छि ५ पन्ति। आत्मन्न ह्यङ्गांनि बद्धानि। न वा एतेन सर्वः पुरुषः॥४७॥

यदित इंतो लोमांनि दतो न्खान्। पुरिमादः क्रियन्ते। तान्येव तेन प्रत्युंप्यन्ते। औदुंम्बरस्तल्पो भवति। ऊर्ग्वा अन्नमुदुम्बरः। ऊर्ज एवान्नाद्यस्यावंरुद्धौ। यस्यं

पश्चवि श आत्मा भेवति। तस्मौन्मध्यतः पशवो वरिष्ठाः। एकवि शं पुच्छम्।

तल्पंमारुह्योद्गांयेत्। तल्प्सद्यंमेवाभि जंयति॥४८॥
यस्यं तल्प्सद्यंमभिजित् स्यात्। स देवाना साम्यंक्षे। तल्प्सद्यं मा
परांजेषीति तल्पंमारुह्योद्गांयेत्। न तल्प्सद्यं परांजयते। प्रेङ्के शर्सति। महो
वै प्रेङ्कः। महंस प्वान्नाद्यस्यावंरुद्धै। देवासुराः संयंत्ता आसन्। त आंदित्ये
व्यायंच्छन्त। तं देवाः समंजयन्॥४९॥

तल्पसद्यमनंभिजित्र स्यात्। स देवाना साम्यंक्षे। तल्पसद्यंमभिजंयानीति

ब्राह्मणश्चं शूद्रश्चं चर्मकृते व्यायंच्छेते। दैव्यो वै वर्णौ ब्राह्मणः। असुर्यः शूद्रः। इमेंऽराथ्सुरिमे सुंभूतमंकृत्रित्यंन्यत्रो ब्रूंयात्। इम उद्वासीकारिणं इमे दुंभूतमंकृत्रित्यंन्यत्रः। यदेवैषा सुकृतं या राद्धिः। तदंन्यत्रोऽभि श्रीणाति। यदेवैषां दुष्कृतं याऽरांद्धिः। तदंन्यत्रोऽपं हन्ति। ब्राह्मणः सं जयित। अमुमेवाऽऽदित्यं भ्रातृंव्यस्य संविन्दन्ते॥५०॥

भृवृति भृवृति क्रियते पुर्रुषो जयत्यजयञ्जयत्रयेकं च॥ \blacksquare

उद्धन्यमान १ शोचिष्केशोऽग्ने सुपन्नानितग्राह्यां वैश्वदेवमालभन्ते पश्चाशत्॥५०॥

उद्धन्यमानं नवैतानि सन्तंतिरेकविश्श एषोऽप्रंतिष्ठां प्रजापंतिर्वृत्तः षट्॥६॥

उद्धन्यमानि संविन्दन्ते॥

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयबाह्मणे प्रथमाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवा विजयमुंपयन्तः। अग्नीषोमयोस्तेजस्विनीस्तुनूः सन्त्रंदधत। इदमुं नो भविष्यति। यदिं नो जेष्यन्तीतिं। तेनाग्नीषोमावपाँकामताम्।

ते देवा विजित्यं। अग्नीषोमावन्वैच्छन्। ते ऽग्निमन्वंविन्दत्रृतुषूथ्मंत्रम्। तस्य

विभंक्तीभिस्तेज्ञस्विनींस्तुनूरवांरुन्धत॥१॥ ते सोममन्वंविन्दन्। तमंघ्नन्। तस्यं यथाऽभिज्ञायंं तनूर्व्यंगृह्वत। ते ग्रहां अभवन्।

तद्गहांणां ग्रह्त्वम्। यस्यैवं विदुषो ग्रहां गृह्यन्तें। तस्य त्वेव गृहीताः। नानांऽऽग्नेयं पुनराधेये कुर्यात्। यदनांग्नेयं पुनराधेये कुर्यात्। व्यृद्धमेव तत्॥२॥

अनौग्नेयं वा एतत्क्रियते। यथ्समिधस्तनूनपातिम्डो ब्रहियंजिति। उभावौग्नेयावाज्यंभागौ स्याताम्। अनौज्यभागौ भवत् इत्यांहुः। यदुभावौग्नेयावन्वश्चाि

उमावाश्रुयावाज्यमागा स्याताम्। अनाज्यमागा मवत् इत्याहुः। यदुमावाश्रुयावन्वश्रा। अग्नये पर्वमानायोत्तरः स्यात्। यत्पर्वमानाय। तेनाऽऽज्यंभागः। तेनं सौम्यः। इति। नेति ब्रूयात्। प्रजनंनं वा अग्निः। प्रजनंनमेवोपैतीति। कृतयंजुः सम्भृतसम्भार् इत्यांहुः॥४॥

न सम्भृत्याः सम्भाराः। न यजुः कार्यमिति। अथो खलुं। सम्भृत्यां एव सम्भाराः। कार्यं यजुः। पुनराधेयंस्य समृद्धौ। तेनोपार्श प्रचरित। एष्यं इव वा एषः। यत्पुनराधेयंः। यथोपार्श नृष्टमिच्छिति॥५॥

ताद्दगेव तत्। उचैः स्विष्टकृतमृथ्मृंजित। यथां नृष्टं वित्त्वा प्राहायमिति।

ताहगेव तत्। एक्धा तेंजस्विनीं देवतामुपैतीत्यांहुः। सैनंमीश्वरा प्रदह इतिं। तत्तथा

नोपैति। प्रयाजानूयाजेष्वेव विभंक्तीः कुर्यात्। यथापूर्वमाज्यंभागौ स्याताम्। एवं

पंत्रीसंयाजाः॥६॥

यथां सुप्तं बोधयंति। तादगेव तत्। अग्निन्यंक्ताः पत्नीसंयाजानामृचंः स्युः।

तेनाँग्नेय सर्वं भवति। एकधा तेजस्विनीं देवतामुपैतीत्यांहुः। सैनंमीश्वरा प्रदह

तद्वैश्वान्रवंत्प्रजनंनवत्तर्मुपैतीतिं। तदांहुः। व्यृंद्धं वा एतत्। अनाँग्नेयं वा एतिक्रियत् इतिं। नेतिं ब्रूयात्। अग्निं प्रंथमं विभक्तीनां यजति। अग्निम्त्तमं पंत्रीसंयाजानांम्। तेनाँग्नेयम्। तेन् समृंद्धं क्रियत् इतिं॥७॥

अरु-यतेव तद्धंवित सम्भृंतसम्भार् इत्यांहुिर्च्छितं पत्नीसंयाजा नवं च॥————[१]

देवा वै यथादर्शं यज्ञानाहंरन्त। योंऽग्निष्टोमम्। य उक्थ्यम्ं। योंऽतिरात्रम्। ते सुहैव सर्वे वाज्पेयंमपश्यन्। ते। अन्योंऽन्यस्मै नातिष्ठन्त। अहम्नेनं यजा इतिं। तेंऽब्रुवन्। आजिमस्य धांवामेतिं॥८॥

तस्मिन्नाजिमेधावन्। तं बृह्स्पित्रिरुदंजयत्। तेनायजतः। स स्वाराज्यमगच्छत्। तिमन्द्रौंऽब्रवीत्। मामनेनं याज्येतिं। तेनेन्द्रंमयाजयत्। सोऽग्रंं देवतांनां पर्येत्। अगंच्छथ्स्वाराज्यम्। अतिष्ठन्तास्मे ज्यैष्ठ्यांय॥९॥

य एवं विद्वान् वांज्येयेन् यजंते। गच्छंति स्वारांज्यम्। अग्रर्श् समानानां पर्येति। तिष्ठंन्तेऽस्मै ज्यैष्ठाांय। स वा एष ब्राह्मणस्यं चैव रांज्नन्यंस्य च युज्ञः।

तं वा एतं वांज्पेय इत्यांहुः। वाजाप्यो वा एषः। वाज्र ह्यंतेनं देवा ऐफ्सन्। सोमो वै वांजपेयः। यो वै सोमं वाजपेयं वेदं॥१०॥

वाज्येवैनं पीत्वा भवति। आऽस्यं वाजी जायते। अन्नं वै वाजिपयः। य एवं वेदं। अत्यन्नम्। आऽस्यानादो जायते। ब्रह्म वै वाजिपयः। य एवं वेदं। अति ब्रह्मणाऽन्नम्। आऽस्यं ब्रह्मा जायते॥११॥

वाग्वै वाजंस्य प्रस्वः। य एवं वेदं। क्रोतिं वाचा वीर्यम्। ऐनं वाचा गंच्छति। अपिवतीं वाचं वदति। प्रजापंतिर्देवेभ्यों यज्ञान्व्यादिंशत्। स आत्मन्वांजपेयंमधत्त। तं देवा अंब्रुवन्। एष वाव यज्ञः। यद्वांजपेयंः॥१२॥

अप्येव नोऽत्रास्त्विति। तेभ्यं पृता उन्नितीः प्रायंच्छत्। ता वा पृता उन्नितयो व्याख्यायन्ते। यज्ञस्यं सर्वत्वायं। देवतांनामिर्निर्भागाय। देवा वै ब्रह्मणुश्चान्नंस्य च् शमलमपाँघ्नन्। यद्वह्मणुः शमलमासीँत्। सा गाथां नाराश्र्ङ्स्यंभवत्। यदन्नंस्य। सा सुराँ॥१३॥ तस्माद्गायंतश्च मृत्तस्यं च न प्रंतिगृह्यम्। यत्प्रंतिगृह्णीयात्। शर्मलं प्रतिगृह्णीयात्। सर्वा वा एतस्य वाचोऽवंरुद्धाः। यो वांजपेययाजी। या पृंथिव्यां याऽग्नौ या रंथन्तरे। याऽन्तरिक्षे या वायौ या वांमदेव्ये। या दिवि याऽऽदित्ये या बृंह्ति। याऽपसु यौषंधीषु या वनस्पतिंषु। तस्माद्धाजपेययाज्यार्त्वंजीनः। सर्वा ह्यंस्य वाचोऽवंरुद्धाः॥१४॥

सर्व ऐन्द्रा भवन्ति। एक्धैव यजमान इन्द्रियं दंधित। सप्तदंश प्राजापत्या ग्रहां गृह्यन्ते। सप्तद्शः प्रजापितिः। प्रजापितेराप्त्रै। एकंयुर्चा गृह्णाति। एक्धैव यजमाने

ऽवंरुन्धे॥१५॥

वीर्यं दधाति। सोम्ग्रहा ॥ स्रुप्त सुराग्रहा ॥ श्रुह्माति। एतद्वे देवानां पर्ममन्नम्। यथ्सोमः॥ १६॥

पुतन्मंनुष्यांणाम्। यथ्सुराँ। पुर्मेणैवास्मां अन्नाद्येनावंरमृन्नाद्यमवंरुन्धे। सोम्ग्रहान्गृह्णाति। ब्रह्मणो वा पुतत्तेजः। यथ्सोमः। ब्रह्मण पुव तेजसा तेजो यजमाने दधाति। सुराग्रहान्गृह्णाति। अन्नस्य वा पुतच्छमंलम्। यथ्सुराँ॥१७॥

अन्नस्यैव शर्मलेन शर्मलं यर्जमानादपंहन्ति। सोमग्रहा ॥ स्रं स्राग्रहा ॥ श्रं गृह्णाति। पुमान् वे सोमंः। स्त्री स्र्रां। तिन्मिथुनम्। िमथुनमेवास्य तद्यज्ञे करोति प्रजनंनाय। आत्मानंमेव सोमग्रहेः स्पृणोति। जाया । स्रं ग्राग्रहेः। तस्माद्वाजपेययाज्यं पृष्मिं ह्योके स्त्रिय । सम्भवति। वाजपेयां भिजित ॥ ह्यां स्या १८॥ पूर्वे सोमग्रहा गृह्यन्ते। अपरे स्राग्रहाः। पुरोऽक्षः सोमग्रहान्थ्सांदयति। पश्चादक्षः सुराग्रहान्। पापवस्यसस्य विधृत्ये। एष वे यर्जमानः। यथ्सोमंः। अन्नः

सुरां। सोमुग्रहा ॥ सुराग्रहा ॥ व्यतिषजित। अन्नाद्येनैवेनं व्यतिषजित॥१९॥

सम्पृचंः स्थ सं मां भद्रेणं पृङ्केत्यांह। अन्नं वै भद्रम्। अन्नाद्यंनेवैन स स स्रृंजिति। अन्नस्य वा एतच्छमंलम्। यथ्सुराँ। पाप्मेव खलु वै शमंलम्। पाप्मना वा एंनमेतच्छमंलेन व्यतिषजित। यथ्सोमग्रहा इश्चं सुराग्रहा इश्चं व्यतिषजित। विपृचंः स्थ वि मां पाप्मनां पृङ्केत्यांह। पाप्मनैवैन् शमंलेन व्यावंर्तयति॥२०॥

तस्मौद्वाजपेययाजी पूतो मेध्यों दक्षिण्यंः। प्राङ्द्रंवित सोमग्रहैः। अम्मेव तैर्लोकमभिजंयति। प्रत्यङ्ख्सुंराग्रहैः। इममेव तैर्लोकम्भिजंयति। प्रतिष्ठन्ति सोमग्रहैः। यावंदेव सत्यम्। तेनं सूयते। वाजसृद्धाः सुराग्रहान् हंरन्ति। अनृतेनैव विश् र सर्मृजिति। हिर्ण्यपात्रं मधौः पूर्णं देदाति। मुध्योऽसानीति। एकधा ब्रह्मण उपं हरति। एकधैव यर्जमान आयुस्तेजों दधाति॥२१॥ आह्वाऽवंरुन्धे सोमः शर्मलुं यथ्सुरा ह्यंस्यैनुं व्यतिषजति व्यावंर्तयति सृजति चृत्वारि च॥______[3]

ब्रह्मवादिनों वदन्ति। नाग्निंष्टोमो नोक्थ्यंः। न षोंडशी नातिंरात्रः। अथ कस्मौद्वाजपेये सर्वे यज्ञऋतवोऽवंरुध्यन्त इतिं। पशुभिरितिं ब्रूयात्। आग्नेयं पृशुमालंभते। अग्निष्टोममेव तेनावंरुन्थे। ऐन्द्राग्नेनोक्थ्यम्। ऐन्द्रेणं षोड्शिनंः स्तोत्रम्। सार्स्वत्याऽतिंरात्रम्॥२२॥

मारुत्या बृह्तः स्तोत्रम्। एतावन्तो वै यंज्ञक्रतवः। तान्पशुभिरेवावंरुन्थे। आत्मानमेव स्पृणोत्यग्निष्टोमेनं। प्राणापानावुक्थ्यंन। वीर्यर् षोड्शिनः स्तोत्रेणं। वार्चमितरात्रेणं। प्रजां बृह्तः स्तोत्रेणं। इममेव लोकमभिजंयत्यग्निष्टोमेनं। अन्तरिक्षमुक्थ्यंन॥२३॥

सुवर्गं लोक १ षोड्शिनंः स्तोत्रेणं। देवयानांनेव पथ आरोहत्यितरात्रेणं। नाक १ रोहित बृह्तः स्तोत्रेणं। तेजं प्वाऽऽत्मन्यंत्त आग्नेयेनं पृश्चनां। ओजो बलंमैन्द्राग्नेनं। इन्द्रियमैन्द्रेणं। वाच १ सारस्वत्या। उभावेव देवलोकं च मनुष्यलोकं चाभिजंयित मारुत्या वृशयां। सप्तदंश प्राजापत्यान्पृश्चनालंभते। सप्तद्शः प्रजापंतिः॥२४॥

प्रजापंतेरार्थै। श्यामा एकंरूपा भवन्ति। एविमेव हि प्रजापंतिः समृद्धै। तान्पर्यग्निकृतानुथ्मृंजित। मुरुतों युज्ञमंजिघा सम्प्रजापंतेः। तेभ्यं एतां मारुतीं वृशामालंभतः। तयैवैनानशमयत्। मा्रुत्या प्रचर्यः। एतान्थ्संज्ञीपयेत्। मुरुतं एव शमियित्वा॥२५॥

शंमियत्वा॥२५॥

पुतैः प्रचंरित। यज्ञस्याघाताय। एकधा वृपा जुंहोति। एकदेवत्यां हि। पुते।

अथों एकधेव यजंमाने वीर्यं दधाति। नैवारेणं सप्तदंशशरावेणैतर्हि प्रचंरित।

पृतत्पुंरोडाशा ह्यंते। अथो पशूनामेव छिद्रमपिंदधाति। सार्स्वत्योत्तमया प्रचरित। वाग्वै सर्रस्वती। तस्मौत्प्राणानां वागुंत्तमा। अथौ प्रजापंतावेव यज्ञं प्रतिष्ठापयित। प्रजापंतिरहि वाक्। अपंत्रदती भवति। तस्मौन्मनुष्यौः सर्वां वाचं वदन्ति॥२६॥

अतिरात्रमन्तिरिक्षमुक्थ्येन प्रजापितः शमियत्वोत्तमया प्रचरित षद चं॥———[४]
सावित्रं जुहोति कर्मणः कर्मणः पुरस्तात्। कस्तद्वेदेत्यांहुः। यद्वांजपेयंस्य
पूर्वं यदपंरमितिं। सवितृप्रंसूत एव यंथापूर्वं कर्माणि करोति। सवंनेसवने

पूर्वं यदपर्मितिं। स्वितृप्रंसूत एव यंथापूर्वं कर्माणि करोति। सर्वनेसवने जुहोति। आक्रमणमेव तथ्सेतुं यजमानः कुरुते। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ध्ये। वाचस्पतिर्वाचम्द्य स्वंदाति न इत्याह। वाग्वै देवानां पुराऽन्नमासीत्। वाचमेवास्मा

अन्नईं स्वदयति॥२७॥

इन्द्रंस्य वज्रोंऽसि वार्त्रघ्न इति रथंमुपावंहरित विजित्यै। वाजंस्य नु प्रंस्वे मातरं महीमित्यांह। यचैवयम्। यचास्यामिधं। तदेवावंरुन्थे। अथो तस्मिन्नेवोभये-ऽभिषिच्यते। अफ्स्वंन्तर्मृतंम्फ्सु भेषजिमित्यश्वांन्यल्पूलयित। अफ्सु वा अश्वंस्य तृतीयं प्रविष्टम्। तदंनुवेनन्ववंप्लवते। यदफ्सु पंल्पूलयित॥२८॥

यदेवास्यापस् प्रविष्टम्। तदेवावंरुन्धे। बहु वा अश्वोऽमेध्यमुपंगच्छति। यदपस् पंलपूलयंति। मेध्यांनेवैनांन्करोति। वायुर्वां त्वा मनुंर्वा त्वेत्यांह। एता वा एतं देवता अग्रे अश्वमयुञ्जन्। ताभिरेवैनान् युनक्ति। स्वस्योज्ञित्यै। यजुंषा युनक्ति व्यावृंत्त्यै॥२९॥

अपौन्नपादाशुहेम्निति सम्मौष्टिं। मेध्यांनेवैनौन्करोति। अथो स्तौत्येवैनांनाजि श्रमिरिष्यतः। विष्णुक्रमान्क्रमते। विष्णुरेव भूत्वेमाँ श्लोकान्भिजयिति। वैश्वदेवो वै रथः। अङ्कौ न्यङ्कावभितो रथं यावित्यांह। या एव देवता रथे प्रविष्टाः। ताभ्यं

एव नमंस्करोति। आत्मनोऽनाँत्यै। अशंमरथं भावुकोऽस्य रथों भवति। य एवं वेदं॥३०॥

देवस्याहर संवितुः प्रंस्वे बृहस्पतिंना वाजजिता वाजं जेषमित्यांह।

स्वितृप्रंसूत एव ब्रह्मणा वाज्मु इंयति। देवस्याह १ संवितुः प्रंस्वे बृहस्पतिना

वाज्जिता वर्षिष्ठं नाकरं रुहेयमित्यांह। स्वितृप्रंसूत एव ब्रह्मणा वर्षिष्ठं नाकरं रोहित। चात्वांले रथच्कं निर्मितर रोहित। अतो वा अङ्गिरस उत्तमाः सुंवर्गं लोकमांयन्। साक्षादेव यजंमानः सुवर्गं लोकमेंति। आवेष्टयित। वज्रो वै रथः। वज्रेणैव दिशोऽभिजंयित॥३१॥

वाजिनार् सामं गायते। अत्रं वै वाजः। अन्नमेवावंरुन्थे। वाचो वर्षमं देवेभ्योऽपान्नामत्। तद्वनस्पतीन्प्राविंशत्। सेषा वाग्वनस्पतिषु वदित। या दुन्दुभौ। तस्माद्दन्दुभिः सर्वा वाचोऽतिंवदित। दुन्दुभीन्थ्समाघ्रंन्ति। प्रमा वा एषा

वाक्॥३२॥

ऽवंरुन्थे। इन्द्रांय वाचं वद्तेन्द्रं वाजं जापयतेन्द्रो वाजंमजियदित्यांह। एष वा एतर्हीन्द्रंः। यो यजंते। यजंमान एव वाज्मुजंयित। सप्तदंश प्रव्याधानाजिं धांवन्ति। सप्तद्शः स्तोत्रं भंवित। सप्तदंशसप्तदश दीयन्ते॥३३॥ स्प्तद्शः प्रजापितिः। प्रजापतेराप्त्यै। अर्वाऽिस् सित्रंरिस वाज्यंसीत्यांह। अग्निर्वा अर्वा। वायुः सितः। आदित्यो वाजी। एताभिरेवास्मै देवतांभिर्देवर्थं युनिक्त।

या दुन्दुभौ। परमयैव वाचाऽवंरां वाचमंवरुन्धे। अथों वाच एव वर्ष्म यजंमानो-

प्रष्टिवाहिनं युनिक्ता प्रष्टिवाही वै देवर्थः। देवर्थमेवास्मै युनिक्ता ३४॥ वार्जिनो वार्जं धावत काष्ठां गच्छतेत्यांह। सुवर्गो वै लोकः काष्ठां। सुवर्गमेव लोकं यंन्ति। सुवर्गं वा एते लोकं यंन्ति। य आजिं धावंन्ति। प्राश्चों धावन्ति। प्राङिव हि स्वर्गों लोकः। चत्सृभिरन् मन्नयते। चत्वारि छन्दां सि। छन्दोंभिरेवैनांन्थ्सुवर्गं लोकं गंमयति॥३५॥

तेनं लोकान्नयंन्ति। रथविमोचनीयं जुहोति प्रतिष्ठित्यै। आ मा वाजंस्य प्रसवो

प्र वा एतें ऽस्माल्लोकाच्यंवन्ते। य आजिं धावंन्ति। उदं च आवंर्तन्ते। अस्मादेव

जंगम्यादित्याह। अत्रुं वै वार्जः। अत्रमेवावंरुन्थे। यथालोकं वा एत उर्ज्ञयन्ति। य आजिं धावंन्ति॥३६॥
कृष्णलं कृष्णलं वाज्यसृद्धः प्रयंच्छति। यमेव ते वार्जं लोकमुज्जयंन्ति। तं पंरिक्रीयावंरुन्थे। एकधा ब्रह्मण् उपंहरति। एकधेव यजमाने वीर्यं दधाति। देवा वा ओषंधीष्वाजिमयुः। ता बृह्स्पित्रदंजयत्। स नीवारात्रिरंवृणीत। तन्नीवाराणां नीवारत्वम्। नैवारश्चरुर्भवति॥३७॥

पुतद्वै देवानां पर्ममन्नम्। यन्नीवाराः। प्रमेणैवास्मां अन्नाद्येनावंरमन्नाद्यमवंरुन्थे। सप्तदंशशरावो भवति। सप्तद्शः प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्ये। क्षीरे भंवति। रुचंमेवास्मिन्दधाति। सपिष्वान्भवति मेध्यत्वायं। बार्ह्स्पत्यो वा एष देवतंया॥३८॥ यो वांजिपेयेन यजेते। बार्हस्पत्य एष चरुः। अश्वांन्थ्सरिष्यतः सस्रुष्श्चावं प्रापयति। यमेव ते वाजं लोकमुञ्जयंन्ति। तमेवावंरुन्थे। अजीजिपत वनस्पतय इन्द्रं वाजं विमुच्यध्वमिति दुन्दुभीन् विमुश्चति। यमेव ते वाजं लोकमिन्द्रियं दुन्दुभयं उज्जयंन्ति। तमेवावंरुन्थे॥३९॥

अभिजंयति वा एषा वार्थीयन्तेऽस्मै युनिक गमयति य आजि धावंन्ति भवति देवतंयाऽष्टौ चं॥———[६]
ताप्यं यजमानं परिधापयति। यज्ञो वै ताप्यम्। यज्ञेनैवैन् समर्धयति। दर्भमयं
परिधापयति। पवित्रं वै दर्भाः। पुनात्येवैनम्। वाज्ञं वा एषोऽवंरुरुथ्सते। यो
वाजपर्येन यज्ञते। ओष्धयः खल वै वाजः। यहर्भमयं परिधापयति॥४०॥

वांज्ययेन यजंते। ओषंधयः खलु वै वाजः। यद्दंभ्मयं परिधापयंति॥४०॥ वाज्स्यावंरुद्धौ। जाय एिह सुवो रोहावेत्यांह। पित्नंया एवेष यज्ञस्यांन्वारुम्भो- ऽनंविच्छित्त्यै। सप्तदंशारित्वर्यूपो भवित। सप्तद्शः प्रजापंतिः। प्रजापंतेराप्त्यै। तूपरश्चतुंरिश्चभवित। गौधूमं चृषालम्। न वा एते ब्रीहयो न यवाः। यद्गोधूमाः॥४१॥ एविमेव हि प्रजापंतिः समृद्धौ। अथो अमुमेवास्मै लोकमन्नंवन्तं करोति।

वासोभिर्वेष्टयति। एष वै यर्जमानः। यद्यूपः। सुर्वेद्वृत्यं वासः। सर्वाभिरेवैनं देवतांभिः समर्थयति। अथो आक्रमणमेव तथ्सेतुं यर्जमानः कुरुते। सुवृर्गस्य लोकस्य समष्ट्री। द्वादंश वाजप्रसुवीयांनि जुहोति॥४२॥

द्वादेश मार्साः संवथ्सरः। संवथ्सरमेव प्रीणाति। अथो संवथ्सरमेवास्मा

उपंदधाति। सुवर्गस्यं लोकस्य समंध्ये। दशभिः कल्पैं रोहति। नव वै पुरुषे

प्राणाः। नाभिर्दश्मी। प्राणानेव यंथास्थानं केल्पयित्वा। सुवर्गं लोकमेति। एतावृद्धे पुरुषस्य स्वम्॥४३॥
यावंत्प्राणाः। यावंदेवास्यास्ति। तेनं सह सुवर्गं लोकमेति। सुवर्देवाः अंगुन्मेत्याह। सुवर्गमेव लोकमेति। अमृतां अभूमेत्यांह। अमृतंमिव हि सुवर्गो

सम्हं प्रजया सं मयाँ प्रजेत्यांह। आशिषंमेवैतामा शाँस्ते। आस्पुटैर्प्नन्ति।

लोकः। प्रजापेतेः प्रजा अभूमेत्याह। प्राजापत्यो वा अयं लोकः। अस्मादेव तेन

लोकान्नैतिं॥४४॥

अत्रं वा इयम्। अन्नाद्यंनेवन् समर्थयन्ति। ऊषैर्घन्ति। एते हि साक्षादन्नम्। यदूषाः। साक्षादेवेनंमुन्नाद्यंन् समर्थयन्ति। पुरस्तात्प्रत्यश्चं घ्रन्ति॥४५॥

पुरस्ताद्धि प्रंतीचीनमन्नम् द्यतें। शीर्षतो घ्रंन्ति। शीर्षतो ह्यन्नम् द्यतें। दिग्भ्यो घ्रंन्ति। दिग्भ्य एवास्मां अन्नाद्यमवंरुन्धते। ईश्वरो वा एष पराङ्क्षद्यः। यो यूप्र्रे रोहंति। हिरंण्यमध्यवंरोहति। अमृतं वै हिरंण्यम्। अमृतर् सुवर्गो लोकः॥४६॥

अमृतं एव सुंवर्गे लोके प्रतिं तिष्ठति। श्वतमानं भवति। श्वतायुः पुरुषः श्वतिन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। पुष्ट्ये वा एतद्रूपम्। यद्जा। त्रिः संवथ्सरस्यान्यान्पशून्परि प्रजांयते। बस्ताजिनमध्यवं रोहति। पुष्ट्यांमेव प्रजनंने प्रतिं तिष्ठति॥४७॥

प्रिधापयंति गोधूमां जुहोति स्वं नैति प्रत्यश्चं प्रन्ति लोको नवं च॥————[७] सप्तान्नहोमाञ्जहोति। सप्त वा अन्नानि। यावन्त्येवान्नानि। तान्येवावंरुन्थे। सप्त ग्राम्या ओषंधयः। सप्तार्ण्याः। उभयीषामवंरुद्धे। अन्नस्यान्नस्य जुहोति। अन्नस्यान्नस्यावंरुद्धौ। यद्वांजपेययाज्यनंवरुद्धस्याश्नीयात्॥४८॥

अवंरुद्धेन व्यृंद्धेत। सर्वस्य समवदायं जुहोति। अनंवरुद्धस्यावंरुद्धै। औदुंम्बरेण सुवेणं जुहोति। ऊर्ग्वा अन्नमुदुम्बरंः। ऊर्ज एवान्नाद्यस्यावंरुद्धै। देवस्यं त्वा सवितुः प्रंस्व इत्यांह। स्वितृप्रंसूत एवैनं ब्रह्मंणा देवतांभिर्भिषिश्चित। अन्नस्यान्नस्यावंरुद्धै॥४९॥

पुरस्ताँत्प्रत्यश्चंम्भिषिश्चिति। पुरस्ताद्धि प्रंतीचीन्मन्नंम्द्यतें। शीर्ष्वतोंऽभिषिश्चिति। शीर्ष्वतो ह्यन्नंम्द्यतें। आ मुखांदन्ववंस्नावयित। मुख्त एवास्मां अन्नाद्यं दधाति। अग्नेस्त्वा साम्रांज्येनाभिषिश्चामीत्यांह। एष वा अग्नेः स्वः। तेनैवेनंम्भिषिश्चिति। इन्द्रंस्य त्वा साम्रांज्येनाभिषिश्चामीत्यांह॥५०॥

इन्द्रियमेवास्मिन्नेतेनं दधाति। बृह्स्पतें स्त्वा साम्रांज्येनाभिषिश्चामीत्यांह। ब्रह्म वै देवानां बृह्स्पतिः। ब्रह्मणैवैनंमभिषिश्चिति। सोमग्रहा श्चांवदानीयानिं चर्त्विग्भ्य उपहरन्ति। अमुमेव तैर्लोकमन्नवन्तं करोति। सुराग्रहा श्चांनवदानीयानिं च वाज्रसृद्धः। इममेव तैर्लोकमन्नवन्तं करोति। अथो उभर्यौष्वेवाभिषिंच्यते। विमाथं कुर्वते वाज्रसृतः॥५१॥

इन्द्रियस्यावंरुद्धै। अनिरुक्ताभिः प्रातः सव्ने स्तुंवते। अनिरुक्तः प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्यै। वाजंवतीभिर्माध्यं दिने। अत्रुं वै वाजंः। अत्रुं मेवावंरुन्थे। शिपिविष्ट-वंतीभिस्तृतीयसव्ने। युज्ञो वै विष्णुंः। पृशवः शिपिंः। युज्ञ एव पृशुषु प्रतिं तिष्ठति। बृहदन्त्यं भवति। अन्तंमेवैन ई श्रियै गंमयति॥५२॥

अश्वीयादत्रंस्यात्रस्यावंरुद्धाः इन्द्रंस्य त्वाः साम्राज्येनाभिषिश्चामीत्यांह वाज्रसृतः शिपिश्लीणि च॥———[८]
नृषदं त्वेत्याह। प्रजा वै नॄन्। प्रजानामेवेतेन सूयते। द्रुषद्मित्याह। वनस्पतयो

वै द्रु। वनस्पतीनामेवेतेनं सूयते। भुवनसद्मित्यांह। यदा वै वसीयान्भवंति। भुवनमगुन्निति वै तमांहुः। भुवनमेवेतेनं गच्छति॥५३॥

अपसुषदं त्वा घृत्सद्मित्यांह। अपामेवैतेनं घृतस्यं सूयते। व्योम्सद्मित्यांह। यदा वै वसीयान्भवंति। व्योमागन्निति वै तमांहुः। व्योमैवैतेनं गच्छति। पृथिविषदं त्वाऽन्तरिक्षसदमित्याह। एषामेवैतेनं लोकाना ५ सूयते। तस्माँद्वाजपेययाजी न कश्चन प्रत्यवंरोहति। अपीव हि देवतांना स्यतें॥५४॥

नाकसदिमत्यांह। यदा वै वसींया-भवंति। नाकंमगन्निति वै तमांहः। नाकंमेवैतेन गच्छति। ये ग्रहाः पश्चजनीना इत्याहा पश्चजनानांमेवैतेन स्यते। अपार रसमुद्वंयसमित्यांह। अपामेवैतेन रसंस्य सूयते। सूर्यरिश्मर समाभृतिमित्यांह सशुऋत्वायं॥५५॥

इन्द्रों वृत्र १ हत्वा। असुरान्पराभाव्यं। सोंऽमावास्यां प्रत्यागंच्छत्। ते पितरंः पूर्वेद्युरागंच्छन्। पितृन् यज्ञोंऽगच्छत्। तं देवाः पुनरयाचन्त। तमेंभ्यो न पुनरददुः। तें ऽब्रुवन्वरं वृणामहै। अर्थ वः पुनर्दास्यामः। अस्मभ्यंमेव पूर्वेद्युः क्रियाता

गुच्छुति सूयते नवं च॥

इति॥५६॥

तमें भ्यः पुनंरददुः। तस्मां त्पितृभ्यः पूर्वेद्युः क्रियते। यत्पितृभ्यः पूर्वेद्युः करोति।

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पितृभ्यं एव तद्यज्ञं निष्क्रीय यजंमानः प्रतंनुते। सोमांय पितृपींताय स्वधा नम इत्यांह। पितुरेवाधिं सोमपीयमवंरुन्थे। न हि पिता प्रमीयंमाण आहैष सोमपीय इतिं। इन्द्रियं वै सोमपीथः। इन्द्रियमेव सोमपीथमवं रुन्धे। तेनेन्द्रियेणं द्वितीयां जायामभ्यंश्जुते॥५७॥

एतद्वै ब्राह्मणं पुरा वांजवश्रवसा विदामंत्रन्। तस्मात्ते द्वेद्वे जाये अभ्याक्षित।

इत्यांह। य एव पिंतृणामग्निः। तं प्रीणाति। तिस्र आहुंतीर्जुहोति। त्रिर्निदंधाति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते॥५८॥ षड्वा ऋतवंः। ऋत्नेव प्रीणाति। तूष्णीं मेक्षंणमादंधाति। अस्तिं वा हि षष्ठ ऋतुर्न वां। देवान् वे पितृन्प्रीतान्। मुनुष्याः पितरोऽनु प्रपिपते। तिस्र आहुंतीर्जुहोति।

ऋतवः खलु वै देवाः पितरंः। ऋतूनेव देवान्पितृन्त्रींणाति। तान्त्रीतान्। मनुष्याः

त्रिर्निदंधाति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्डा ऋतवंः॥५९॥

य एवं वेदं। अभि द्वितीयां जायामंश्जुते। अग्नयं कव्यवाहंनाय स्वधा नम

पितरोऽनु प्रपिपते। स्कृदाच्छिन्नं बर्हिर्भवति। स्कृदिव हि पितरेः। त्रिर्निदंधाति। तृतीये वा इतो लोके पितरेः। तानेव प्रीणाति। पराङावर्तते॥६०॥

ह्रीका हि पितरंः। ओष्मणौं व्यावृत् उपाँस्ते। ऊष्मभांगा हि पितरंः। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। प्राश्या (३) न्न प्राश्या (३) मितिं। यत्प्रांश्जीयात्। जन्यमन्नमद्यात्। प्रमायुंकः स्यात्। यन्न प्रांश्जीयात्। अहंविः स्यात्॥६१॥

पितृभ्य आवृंश्चेत। अवघ्रेयंमेव। तन्नेव प्राशितं नेवाप्रांशितम्। वीरं वा वै पितरंः प्रयन्तो हरंन्ति। वीरं वां ददति। दशां छिनत्ति। हरंणभागा हि पितरंः। पितॄनेव निरवंदयते। उत्तरं आयुंषि लोमं छिन्दीत। पितृणाः ह्यंतर्हि नेदीयः॥६२॥

नमंस्करोति। नम्स्कारो हि पितृणाम्। नमों वः पितरो रसाय। नमों वः पितरः शुष्माय। नमों वः पितरो जीवाय। नमों वः पितरः स्वधायै। नमों वः पितरो मन्यवै। नमों वः पितरो घोराय। पितरो नमों वः। य एतस्मिं होके स्थ॥६३॥ युष्मा इस्तेऽनं। यैंऽस्मिं होके। मां तेऽनं। य एतस्मिं होके स्थ। यूयं तेषां वसिष्ठा

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् १)

भूयास्त। येंऽस्मिँ श्लोके। अहं तेषां विसेष्ठो भूयास्मित्यांह। विसेष्ठः समानानां भवति। य पुवं विद्वान्पितृभ्यः कुरोतिं। पुष वै मनुष्यांणां युज्ञः॥६४॥

देवानां वा इतंरे युज्ञाः। तेन वा एतत्पितृलोके चरित। यत्पितृभ्यः करोति। स ईश्वरः प्रमेतोः। प्राजापत्ययूर्चा पुन्रेति। युज्ञो वै प्रजापितः। युज्ञेनैव सह पुन्रेति। न प्रमायुंको भवति। पितृलोके वा एतद्यजमानश्चरित। यत्पितृभ्यः करोति। स ईश्वर आर्तिमार्तोः। प्रजापित्स्त्वावैनं तत् उन्नेतुमर्ह्तीत्यांहुः। यत्प्राजापत्ययूर्चा पुन्रेति। प्रजापितिरेवेनं तत् उन्नयित। नार्तिमार्च्छति यजमानः॥६५॥ इत्यंश्वरे पद्यने पद्यने पद्म कृतवां वर्तिऽहंविः स्यानेदीयः स्थ युज्ञो यजमानश्चरित् यत्पितृभ्यः करोति पश्च चाः[१०]

देवासुरा अग्नीषोर्मयोर्देवा वै यथादर्शं देवा वै यद्न्यैर्ग्नहैंर्बह्मवादिनो नाग्निष्टोमो न सांवित्रं देवस्याहं तार्प्यर

सप्तान्नेहोमानृषदं त्वेन्द्रों वृत्र १ हत्वा दर्शा॥१०॥

देवासुरा यर्जमानः॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

उभये वा एते प्रजापंतेरध्यंसृज्यन्त। देवाश्चासुंराश्च। तान्न व्यंजानात्। इमेंऽन्य इमेंऽन्य इति। स देवान् १ शूनंकरोत्। तान्भ्यंषुणोत्। तान्पवित्रंणापुनात्। तान्परस्तात्पवित्रंस्य व्यंगृह्णात्। ते ग्रहां अभवन्। तद्ग्रहांणां ग्रहत्वम्॥१॥

देवता वा पृता यर्जमानस्य गृहे गृह्यन्ते। यद्ग्रहाः। विदुरेनं देवाः। यस्यैवं विदुषं पृते ग्रहां गृह्यन्ते। एषा वै सोम्स्याऽऽहुंतिः। यदुंपा्र्शः। सोमेन देवाङ्स्तंपयाणीति खलु वै सोमेन यजते। यदुंपा्र्शं जुहोतिं। सोमेनैव तद्देवाङ्स्तंपयति। यद्गहां जुहोतिं॥२॥

देवा एव तद्देवान्गंच्छन्ति। यचंम्सां जुहोतिं। तेनैवानुंरूपेण यजंमानः सुवृगंं लोकमेति। किं न्वेंतदग्रं आसीदित्यांहुः। यत्पात्राणीतिं। इयं वा एतदग्रं आसीत्। मृन्मयांनि वा एतान्यांसन्। तैर्देवा न व्यावृतंमगच्छन्। त एतानिं दारुमयांणि पात्रौण्यपश्यन्। तान्यंकुर्वत॥३॥

गच्छति। यानि दारुमयाणि पात्राणि भवन्ति। अमुमेव तैर्लोकम्भिजंयति। यानि मृन्मयानि। इममेव तैर्लोकम्भिजंयति। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। काश्चतंस्रः स्थालीर्वायव्याः सोम्ग्रहंणीरिति। देवा वै पृश्चिमदुह्नन्॥४॥ तस्यां पृते स्तनां आसन्। इयं वै पृश्चिः। तामांदित्या आंदित्यस्थाल्या चतुंष्पदः पृश्चनंदुह्नन्। यदांदित्यस्थाली भवंति। चतुंष्पद पृव तयां पृशून् यजंमान इमां दुहे। तामिन्द्रं उक्थ्यस्थाल्येन्द्रियमंदुह्न्। यदुंक्थ्यस्थाली भवंति। इन्द्रियमेव तया

तैर्वे ते व्यावृतंमगच्छन्। यद्दांरुमयांणि पात्रांणि भवंन्ति। व्यावृतंमेव तैर्यजंमानो

भवंति॥५॥
 ऊर्जमेव तया यजमान इमां दुहै। तां मेनुष्यौ ध्रुवस्थाल्याऽऽयुंरदुह्नन्।
यद्धुंवस्थाली भवंति। आयुंरेव तया यजमान इमां दुहै। स्थाल्या गृह्णातिं।

यर्जमान इमां दुंहे। तां विश्वे देवा आग्रयणस्थाल्योर्जमदुह्नन्। यदाँग्रयणस्थाली

वायव्यंन जुहोति। तस्मांद्न्येन पात्रंण पृशून्दुहिन्तं। अन्येन प्रतिंगृह्वन्ति। अथौं व्यावृतंमेव तद्यजंमानो गच्छति॥६॥

युव स्रुरामंमिश्वना। नमुंचावासुरे सर्चा। विपिपाना शुंभस्पती। इन्द्रं कर्म

स्वावतम्। पुत्रमिव पितरांविश्विनोभा। इन्द्रावंतं कर्मणा दुर्सनांभिः। यथ्सुरामं व्यपिंबः शचींभिः। सरस्वती त्वा मघवन्नभीष्णात्। अहाँव्यग्ने ह्विरास्येंते। स्रुचीवं घृतं चुमू इंव सोमः॥७॥

वाज्यसिन रे रियम्समे सुवीरम्। प्रश्नस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्। यस्मिन्नश्वांस ऋष्भासं उक्षणः। वृशा मेषा अंवसृष्टास् आहुंताः। कीलालपे सोमंपृष्टाय वेधसें। हृदा मृतिं जंनय चारुं मृग्नयें। नाना हि वां देवहिंत र सदो मितम्। मा सर्मृक्षाथां पर्मे व्योमन्। सुरा त्वमिसं शुष्मिणी सोमं एषः। मा मां हिरसीः स्वां योनिमाविशन्॥८॥

यदत्रं शिष्ट रसिनंः सुतस्यं। यदिन्द्रो अपिंबुच्छचींभिः। अहं तदेस्य मनसा

शिवनं। सोम् राजांनिम्ह भक्षयामि। द्वे स्रुती अंशृणवं पितृणाम्। अहं देवानांमुत मर्त्यांनाम्। ताभ्यांमिदं विश्वं भुवंन् र समेति। अन्तरा पूर्वमपंरं च केतुम्। यस्ते देव वरुण गायत्रछंन्दाः पाशः। तं ते एतेनावं यजे॥९॥

यस्ते देव वरुण त्रिष्टुप्छंन्दाः पाशः। तं ते एतेनावं यजे। यस्ते देव वरुण जगेतीछन्दाः पाशः। तं ते एतेनावं यजे। सोमो वा एतस्यं राज्यमादंते। यो राजा सत्राज्यो वा सोमेन यजेते। देवसुवामेतानि हवी धि भवन्ति। एतावंन्तो

वै देवानार स्वाः। त एवास्मै स्वान्प्रयंच्छन्ति। त एंनुं पुनः सुवन्ते राज्यायं। देवसू राजां भवति॥१०॥

सोमं आविशन् यंजे राज्यायेकं च॥

[२]

उदंस्थाद्देव्यदितिर्विश्वरूपी। आयुर्य्ज्ञपंतावधात्। इन्द्रांय कृण्वती भागम्। मित्राय वर्रुणाय च। इयं वा अग्निहोत्री। इयं वा एतस्य निषीदति। यस्याँग्निहोत्री निषीदति। तामुत्थांपयेत्। उदंस्थाद्देव्यदितिरिति। इयं वै देव्यदितिः॥११॥

इमामेवास्मा उत्थापयति। आयुर्यज्ञपंतावधादित्यांह। आयुरेवास्मिन्दधाति। इन्द्रांय कृण्वती भागं मित्राय वर्रुणाय चेत्याह। यथायजुरेवैतत्। अवंर्तिं वा एषैतस्यं पाप्मानं प्रतिख्याय निषींदति। यस्यां ग्रिहोत्र्युपंसृष्टा निषीदंति। तां दुग्धा ब्रौह्मणायं दद्यात्। यस्यात्रं नाद्यात्। अवंर्तिमेवास्मिन्पाप्मानं प्रतिमुश्चति॥१२॥ दुग्ध्वा दंदाति। न ह्यदंष्टा दक्षिणा दीयतें। पृथिवीं वा एतस्य पयः प्रविशति। यस्यौग्निहोत्रं दुह्यमान् स्कन्दिति। यद्द्य दुग्धं पृथिवीमसंक्त। यदोषंधीरप्यसंर्द्यदापंः। पयो गृहेषु पयो अघ्नियासुं। पयो वृथ्सेषु पयो अस्तु तन्मयीत्यांह। पयं एवाऽऽत्मन्गृहेषुं पृशुषुं धत्ते। अप उपंसृजति॥१३॥ अद्भिरेवैनंदाप्नोति। यो वै युज्ञस्यार्ते नानांति स स स्मुजितिं। उुभे वै ते तर्ह्यार्च्छतः। आर्च्छति खलु वा एतदिग्निहोत्रम्। यद्द्वमान् ধ स्कन्दिति। यदंभिदुह्यात्। आर्ते नानौर्तं यज्ञस्य स॰सृंजेत्। तदेव यादकीदक्रं होतव्यम्। अथान्यां दुग्ध्वा पुनेर्होतव्यम्। अनाँतेनैवार्तं यज्ञस्य निष्केरोति॥१४॥

यद्युद्गंतस्य स्कन्देंत्। यत्ततोऽह्तंत्वा पुनंरेयात्। यज्ञं विच्छिन्द्यात्। यत्र स्कन्देंत्। तन्निषद्य पुनर्गृह्णीयात्। यत्रैव स्कन्दिति। ततं एवैनत्पुनर्गृह्णाति। तदेव यादक्षीदक्रं होतव्यम्। अथान्यां दुग्ध्वा पुनंर्होतव्यम्। अनार्तेनैवार्तं यज्ञस्य निष्कंरोति॥१५॥ वि वा एतस्यं यज्ञशिछंद्यते। यस्यांग्निहोत्रंऽधिश्रिंते श्वाऽन्तरा धावंति। रुद्रः खलु वा एषः। यद्ग्रिः। यद्गामंन्वत्या वर्तयेत्। रुद्रायं पश्नपि दध्यात्। अपशुर्यजंमानः स्यात्। यदपौँ उन्वतिषिश्चेत्। अनाद्यमग्नेरापंः। अनाद्यमाभ्यामपि दध्यात्। गार्हपत्याद्भरमादायं। इदं विष्णुर्विचेक्रम् इति

वैष्ण्व्यर्चाऽऽहंवनीयाँद्ध्व १ सयन्नुद्रंवेत्। युज्ञो वै विष्णुः। युज्ञेनैव युज्ञ १ सन्तेनोति। भरमेना पुदमिषं वपित शान्त्यै॥१६॥

वै देव्यदितिर्मुश्चित स्जित करोति करोत्याभ्यामिषं दथ्यात् पश्चं च॥————[3]

नि वा पृतस्यांऽऽहव्नीयो गार्हंपत्यं कामयते। निगार्हंपत्य आहव्नीयम्। यस्याग्निमनुंद्धृत्र् सूर्योऽभि निम्नोचंति। दुर्भेण् हिरंण्यं प्रबद्धं पुरस्तांद्धरेत्।

अथाग्निम्। अथाँग्निहोत्रम्। यद्धिरंण्यं पुरस्ताद्धरंति। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्। ज्योतिरवैनं पश्यनुद्धरित। यदिशं पूर्व हरत्यथां भिहोत्रम्॥१७॥

भागधेर्येनैवैनं प्रणंयति। ब्राह्मण आर्षेय उद्धरेत्। ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः।

सर्वाभिरेवैनं देवतांभिरुद्धंरति। अग्निहोत्रम्ंपसाद्यातमिंतोरासीत। व्रतमेव हतमनुं म्रियते। अन्तं वा एष आत्मनों गच्छति। यस्ताम्यंति। अन्तंमेष यज्ञस्यं गच्छति। यस्याग्निमनुंद्धत र सूर्योऽभि निम्रोचंति॥१८॥ पुनः समन्यं जुहोति। अन्तेनैवान्तं यज्ञस्य निष्कंरोति। वरुणो वा एतस्यं

यज्ञं गृह्णाति। यस्याग्निमनुद्धतः सूर्योऽभि निम्रोचंति। वारुणं चरुं निर्वपेत्। तेनैव यज्ञं निष्क्रींणीते। नि वा एतस्यांऽऽहवनीयो गार्हंपत्यं कामयते। नि गार्हंपत्य आहवनीयम्। यस्याग्निमनुंद्धृत सूर्योऽभ्युंदेतिं। चतुर्गृहीतमाज्यं पुरस्तौद्धरेत्॥१९॥

अथाग्निम्। अथाँग्निहोत्रम्। यदाज्यं पुरस्ताृद्धरंति। पृतद्वा अुग्नेः प्रियं धामं।

यदाज्यम्। प्रियेणैवैनं धाम्ना समर्धयति। यद्ग्निं पूर्वे हर्त्यथाँग्निहोत्रम्। भाग्धेयेनैवैनं प्रणयति। ब्राह्मण आर्षेय उद्धेरेत्। ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः॥२०॥

सर्वाभिरेवैनं देवतांभिरुद्धंरित। परांची वा एतस्मैं व्युच्छन्ती व्युंच्छित। यस्याग्निमनुद्धृत् सूर्योऽभ्युंदेतिं। उषाः केतुनां जुषताम्। यज्ञं देवेभिरिन्वितम्। देवेभ्यो मधुंमत्तम् स्वाहेतिं प्रत्यिङ्ग्षिद्याज्येन जुहुयात्। प्रतीचींमेवास्मै विवासयित। अग्निहोत्रमुंपसाद्यातिमेतोरासीत। व्रतमेव हृतमनुं म्रियते। अन्तं वा एष आत्मनो गच्छिति॥२१॥

यस्ताम्यंति। अन्तंमेष यज्ञस्यं गच्छति। यस्याग्निमनुंद्धृत्र् सूर्योऽभ्युंदेतिं। पुनः समन्यं जुहोति। अन्तंनैवान्तं यज्ञस्य निष्कंरोति। मित्रो वा एतस्यं यज्ञं गृह्णाति। यस्याग्निमनुंद्धृत्र् सूर्योऽभ्युंदेतिं। मैत्रं चुरुं निर्वपेत्। तेनैव यज्ञं निष्क्रीणीते। यस्याऽऽहवनीयेऽनुंद्वाते गार्हंपत्य उद्घायेत्॥२२॥

यदांहवनीयमनुंद्वाप्य गार्हंपत्यं मन्थैंत्। विच्छिंन्द्यात्। भ्रातृंव्यमस्मै जनयेत्।

बृहद्विराट्॥२५॥

यद्वै युज्ञस्यं वास्त्व्यं क्रियतें। तदनुं रुद्रोऽवंचरित। यत्पूर्वमन्ववृस्येत्। वास्त्व्यमुग्निमुपांसीत। रुद्रोंऽस्य पृशून्यातुंकः स्यात्। आहुवनीयंमुद्वाप्यं। गार्हंपत्यं मन्थेत्॥२३॥

इतः प्रथमं जंज्ञे अग्निः। स्वाद्योनेरिधं जातवेदाः। स गांयत्रिया त्रिष्टुभा जगंत्या।

देवेभ्यों ह्व्यं वंहतु प्रजानन्नितिं। छन्दोंभिरेवैन् स्वाद्योनेः प्रजनयित। गार्हंपत्यं मन्थित। गार्हंपत्यं वा अन्वाहिताग्नेः पृशव उपं तिष्ठन्ते। स यदुद्वायंति। तदनुं पृशवोऽपं क्रामन्ति। इषे र्य्ये रंमस्व॥२४॥
सहंसे द्युम्नायं। ऊर्जेऽपत्यायेत्यांह। पृशवो वै र्यिः। पृश्नेवास्में रमयित। सार्स्वतौ त्वोथ्सौ सिन्धातामित्यांह। ऋख्सामे वै सारस्वतावुथ्सौं। ऋख्सामाभ्यांमेवैन सिन्धे। सम्राडंसि विराडसीत्यांह। रथन्तरं वै सम्राट्।

ताभ्यांमेवैन् समिन्धे। वज्रो वै चुक्रम्। वज्रो वा एतस्यं युज्ञं विच्छिनति।

यस्यानों वा रथों वाऽन्त्रराऽग्नी यातिं। आह्वनीयंमुद्धाप्यं। गार्हंपत्यादुद्धंरेत्। यदंग्ने पूर्वं प्रभृतं पदश् हि तैं। सूर्यस्य रुश्मीनन्वांतृतानं। तत्रं रियष्ठामनु सं भरैतम्। सं नः सृज सुमत्या वाजंवत्येतिं॥२६॥

पूर्वेणैवास्यं युज्ञेनं युज्ञमनु सन्तंनोति। त्वमंग्ने स्प्रथां असीत्यांह। अग्निः सर्वा देवताः। देवतांभिरेव युज्ञ स् सन्तंनोति। अग्नयं पिथुकृतं पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निर्वेपेत्। अग्निमेव पिथुकृत् स्वनं भाग्धेयेनोपंधावति। स पुवैनं युज्ञियं पन्थामिपं नयति। अनुङ्वान्दक्षिणा। वृही ह्यंष समृद्धौ॥२७॥

यस्यं प्रातः सब्ने सोमोऽितारिच्यते। माध्यं दिन् सर्वनं कामयमानो-ऽभ्यतिरिच्यते। गौर्थयति मुरुतामिति धयंद्वतीषु कुर्वन्ति। हिनस्ति वै सुन्ध्यधीतम्।

सन्धीव खलु वा एतत्। यथ्सवंनस्यातिरिच्यंते। यद्धयंद्वतीषु कुर्वन्तिं। सुन्धेः

शान्त्यैं। गायत्र सामं भवति पश्चदशः स्तोमंः। तेनैव प्रांतः सवनान्नयंन्ति॥२८॥

मरुत्वंतीषु कुर्वन्ति। तेनैव माध्यं दिनाथ्सवंनान्नयंन्ति। होतुंश्चमसमनून्नयन्ते।

होताऽनुं शश्सित। मध्यत एव यज्ञश् समादंधाति। यस्य माध्यं दिने सर्वने सोमोंऽतिरिच्यंते। आदित्यं तृतीयसवनं कामयंमानोऽभ्यतिरिच्यते। गौरिवीतर् सामं भवति। अतिंरिक्तं वै गौरिवीतम्। अतिंरिक्तं यथ्सवंनस्यातिरिच्यंते॥२९॥

अतिरिक्तस्य शान्त्यै। बण्महा असि सूर्येति कुर्वन्ति। यस्यैवाऽऽदित्यस्य सर्वनस्य कामेनातिरिच्यंते। तेनैवैनं कामेन सर्मर्धयन्ति। गौरिवीत १ साम भवति। तेनैव मार्ध्यं दिनाथ्सवंनान्नयंन्ति। सप्तदशः स्तोमंः। तेनैव तृंतीयसवनान्नयंन्ति। होतुंश्चमसमनूत्रंयन्ते। होताऽनुं शश्सित॥३०॥

मध्यत एव यज्ञ समादंधाति। यस्यं तृतीयसवने सोमोंऽतिरिच्यंत। उक्थ्यं कुर्वीत। यस्योक्थ्येंऽतिरिच्येत। अतिरात्रं कुर्वीत। यस्यांतिरात्रेंऽतिरिच्यंते। तत्त्वै दुंष्प्रज्ञानम्। यजंमानं वा एतत्पशवं आसाह्यंयन्ति। बृहथ्सामं भवति। बृहद्वा

इमाँ लोकान्दांधार। बार्हंताः पशवंः। बृहतैवास्में पशून्दांधार। शिपिविष्टवंतीषु

कुर्वन्ति। शिपिविष्टो वै देवानां पुष्टम्। पुष्टमैवैन र समर्धयन्ति। होतुंश्चमसमनून्नंयन्ते।

होताऽनुंशरसित। मध्यत एव यज्ञर समादंधाति॥३१॥

युन्ति सर्वनस्यातिरिच्यंत शरसित दाधाराष्टी चं॥

एकैंको वै जनतांयामिन्द्रंः। एकं वा एताविन्द्रंमिभ सरसंनुतः। यो द्वो सर्समुनुतः। प्रजापंतिर्वा एष वितायते। यद्यज्ञः। तस्य ग्रावांणो दन्ताः। अन्यत्रं वा एते सर्समुन्वतोर्निर्वणस्यिति। पूर्वणोपसृत्यां देवता इत्यांहुः। पूर्वोपसृतस्य वै श्रेयांन्भवति। एतिवन्त्याज्यांनि भवन्त्यभिजिंत्ये॥३२॥

मरुत्वंतीः प्रतिपदंः। मरुतो वै देवानामपंराजितमायतंनम्। देवानांमेवापंराजित

आयतंने यतते। उभे बृहद्रथन्तरे भवतः। इयं वाव रंथन्तरम्। असौ बृहत्।

आभ्यामेवैनंमन्तरेति। वाचश्च मनंसश्च। प्राणाचांपानाचं। दिवश्चं पृथिव्याश्चं॥३३॥

यस्य भूया १ सो यज्ञकृतव इत्यांहुः। स देवतां वृङ्क इतिं। यद्यंग्निष्टोमः सोमंः प्रस्ताथ्स्यात्॥३४॥

उक्थ्यं कुर्वीत। यद्युक्थः स्यात्। अतिरात्रं कुर्वीत। यज्ञकृतुभिरेवास्यं देवतां वृङ्के। यो वै छन्दोंभिरिभ्भवंति। स स १ सुन्वतोर्भिभवंति। संवेशायं त्वोपवेशाय त्वेत्यांह। छन्दा १ सि वै संवेश उपवेशः। छन्दोभिरेवास्य छन्दा १ स्यभिभवंति। इष्टर्गो वा ऋत्विजांमध्वर्युः॥३५॥

सर्वस्माद्वित्ताद्वेद्यात्। अभिवर्तो ब्रह्मसामं भवति। सुवर्गस्यं लोकस्याभिवृत्त्यै।

अभिजिद्भवति। सुवर्गस्यं लोकस्याभिजित्यै। विश्वजिद्भवति। विश्वस्य जित्यै।

इष्टर्गः खलु वै पूर्वोऽर्ष्टः क्षीयते। प्राणापानौ मृत्योमां पात्मित्यांह। प्राणापानयोरेव श्रयते। प्राणापानौ मा मां हासिष्टमित्यांह। नैनं पुराऽऽयुंषः प्राणापानौ जंहितः। आर्तिं वा एते नियंन्ति। येषां दीक्षितानां प्रमीयंते। तं यदंववर्जेयुः। ऋर्कृतांमिवैषां लोकः स्यांत्। आहंर दहेतिं ब्रूयात्॥३६॥

तं देक्षिणतो वेद्यै निधाये। सूर्पराज्ञियां ऋग्भिः स्तुंयुः। इयं वै सर्पतो राज्ञीं। अस्या एवेनं परिददित। व्यृद्धं तिदत्यांहुः। यथ्स्तुतमनंनुशस्तमितिं। होतौ प्रथमः प्रांचीनावीती मौर्जालीयं परीयात्। यामीरेनुब्रुवन्। सूर्पराज्ञीनौं कीर्तयेत्। उभयोरेवैनं लोकयोः परिददित॥३७॥

अथों धुवन्त्येवैनम्ं। अथो न्येंवास्मैं हुवते। त्रिः परियन्ति। त्रयं इमे लोकाः। पृभ्य पृवैनं लोकेभ्यों धुवते। त्रिः पुनः परियन्ति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतुभिरेवैनं धुवते। अग्र आयू रेषि पवस इति प्रतिपदं कुर्वीरन्। रथन्तरसामेषार् सोमः स्यात्। आयुरेवाऽऽत्मन्दंधते। अथों पाप्मानंमेव विज्ञहंतो यन्ति॥३८॥ अभिजित्ये पृथ्व्याश्च स्यादंख्युर्वृत्याङ्कोकयोः परिवदित कुर्वीर्ड्कीणि च॥———[६]

असुर्यं वा एतस्माद्वर्णं कृत्वा। पृशवों वीर्यमपं क्रामन्ति। यस्य यूपों विरोहंति। त्वाष्ट्रं बंहुरूपमालंभेत। त्वष्टा वै रूपाणांमीशे। य एव रूपाणामीशें। सोंऽस्मिन्पृशून् वीर्यं यच्छति। नास्मात्पृशवों वीर्यमपं क्रामन्ति। आर्तिं वा एते नियंन्ति। येषांं

दीक्षितानांमग्निरुद्वायंति॥३९॥

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यदांहवनीयं उद्घार्यंत्। यत्तं मन्थंत्। विच्छिंन्द्यात्। भ्रातृंव्यमस्मै जनयेत्। यदांहवनीयं उद्घार्यंत्। आग्नींद्धादुद्धंरेत्। यदाग्नींद्ध उद्घार्यंत्। गार्हंपत्यादुद्धंरेत्। यद्गार्हंपत्य उद्घार्यंत्। अतं पुव पुनंर्मन्थेत्॥४०॥

अत्र वाव स निलंयते। यत्र खलु वै निलीनमृत्तमं पश्यंन्ति। तदेनिमच्छन्ति। यस्माद्दारों रुद्वार्यंत्। तस्यारणीं कुर्यात्। कुमुकमिपं कुर्यात्। एषा वा अग्नेः प्रिया तृन्ः। यत्कुं मुकः। प्रिययैवैनं तृनुवा समर्धयिति। गार्हं पत्यं मन्थिति॥४१॥ गार्हं पत्यो वा अग्नेर्योनिः। स्वादेवैनं योनैर्जनयित। नास्मै भ्रातृं व्यं जनयित। यस्य सोमं उपदस्येत्। सुवर्ण् हिरंण्यं द्वेधा विच्छिद्यं। ऋजीषें उन्यदां धूनुयात्।

जुहुयादन्यत्। सोमंमेवाभिषुणोतिं। सोमं जुहोति। सोमंस्य वा अभिषूयमांणस्य

प्रिया तुनूरुदंक्रामत्॥४२॥ तथ्सुवर्ण् हरंण्यमभवत्। यथ्सुवर्ण् हरंण्यं कुर्वन्तिं। प्रिययैवैनं तुनुवा

समर्धयन्ति। यस्याक्रीत एसोमंमपहरेयुः। क्रीणीयादेव। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। यस्यं क्रीतमंपहरेयुः। आदाराङ्श्चं फाल्गुनानिं चाभिषुंणुयात्। गायत्री यर सोमुमाह्ररत्। तस्य योऽ५शः पराऽपंतत्॥४३॥

त आंदारा अंभवन्। इन्द्रों वृत्रमंहन्। तस्यं वृल्कः परांऽपतत्। तानिं फाल्गुनान्यंभवन्। पुशवो वै फौल्गुनानि। पुशवः सोमो राजा। यदांदारा ५ श्चे फाल्गुनानि चाभिषुणोति। सोमंमेव राजानम्भिषुणोति। श्रुतेन प्रातः सवने श्रीणीयात्। दभ्ना मध्यं दिने॥४४॥

नीतिमश्रेणं तृतीयसवने। अग्निष्टोमः सोमंः स्याद्रथन्तरसांमा। य एवर्त्विजों वृताः स्युः। त एनं याजयेयुः। एकां गां दक्षिणां दद्यात्तेभ्यं एव। पुनः सोमं क्रीणीयात्। यज्ञेनैव तद्यज्ञमिंच्छति। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। सर्वांभ्यो वा एष देवताभ्यः सर्वेभ्यः पृष्ठेभ्यं आत्मानुमागुरते। यः सुत्रायांगुरतें। पुतावान्खलु वै

पुरुषः। यावंदस्य वित्तम्। सर्ववेदसेनं यजेत। सर्वपृष्ठोऽस्य सोमंः स्यात्। सर्वाभ्य

एव देवताभ्यः सर्वेभ्यः पृष्ठेभ्यं आत्मानं निष्क्रीणीते॥४५॥

उद्वायंति मन्थेनमन्थत्यकामत्प्राऽपंतनम्ध्यन्दिन आगुरते पश्चं च॥———[७] पर्वमानः सुवर्जनः। प्वित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा। पुनन्तुं

मा देवज्ञनाः। पुनन्तु मनेवो ध्रिया। पुनन्तु विश्वं आयवंः। जातंवेदः प्वित्रवत्। प्वित्रेण पुनाहि मा। शुक्रेणं देव दीद्यंत्। अग्ने कत्वा कतूर रनुं॥४६॥

यत्ते प्वित्रंम् चिषि। अग्ने वितंतमन्त्रा। ब्रह्म तेनं पुनीमहे। उभाभ्यां देव सवितः। प्वित्रंण स्वेनं च। इदं ब्रह्मं पुनीमहे। वैश्वदेवी पुनती देव्यागांत। यस्यै ब्रह्मीस्तुन्वों वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधुमाद्येषु। वयः स्याम् पत्यो रयीणाम्॥४७॥

वैश्वानरो रिश्मिभिर्मा पुनातु। वार्तः प्राणेनेषिरो मंयोभूः। द्यावांपृथिवी पर्यसा पर्योभिः। ऋतावंरी यज्ञियं मा पुनीताम्। बृहद्भिः सवित्स्तृभिः। वर्षिष्ठैर्देव मन्मंभिः। अग्ने दक्षैः पुनाहि मा। येनं देवा अपुनत। येनाऽऽपो दिव्यं कर्शः। तेनं दिव्येन ब्रह्मंणा॥४८॥

इदं ब्रह्मं पुनीमहे। यः पांवमानीरध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृतं रसम्। सर्वं स पूतमंश्ञाति। स्वृद्तितं मांतृरिश्वंना। पावमानीयों अध्येतिं। ऋषिंभिः सम्भृत १

रसम्। तस्मै सर्रस्वती दुहे। क्षीर सर्पिर्मधूदकम्। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः॥४९॥

पावमानीर्दिशन्तु नः। इमं लोकमथी अमुम्। कामान्थ्समेर्धयन्तु नः। देवीर्देवैः

समार्भृताः। पावमानीः स्वस्त्ययंनीः। सुदुघा हि घृतश्चर्तः। ऋषिभिः सम्भृतो

रसं:॥५०॥

तेनं ब्रह्मविदों व्यम्। पूतं ब्रह्मं पुनीमहे। इन्द्रंः सुनीती सह मां पुनातु। सोमंः स्वस्त्या वर्रुणः सुमीच्यां। युमो राजां प्रमृणाभिः पुनातु मा। जातवेदा मोर्जयंन्त्या पुनातु॥५१॥

अर्नु रयीणां ब्रह्मणा स्वस्त्ययंनीः सुदुघा हि घृंतृश्चुत् ऋषिभिः सम्भृंतो रसंः पुनातु त्रीणि च॥

सहस्रधारेण। पावमान्यः पुनन्तु मा। प्राजापत्यं पवित्रम्। शतोद्योम १ हिरण्मयम्।

ब्राह्मणेष्वमृत रे हितम्। येनं देवाः पवित्रेण। आत्मानं पुनते सदाँ। तेनं

सुदुघा हि पर्यस्वतीः। ऋषिभिः सम्भृतो रसंः। ब्राह्मणेष्वमृत र् हितम्।

प्रजा वै सत्रमांसत तपस्तप्यंमाना अर्जुह्वतीः। देवा अपश्यश्रमसं घृतस्यं पूर्णङ् स्वधाम्। तमुपोदंतिष्ठन्तमंजुहवुः। तेनाधमास ऊर्जमवारुभ्यत। तस्मादर्धमासे देवा इंज्यन्ते। पितरोंऽपश्यश्रम्सं घृतस्यं पूर्णं स्वधाम्। तमुपोदंतिष्ठन्तमंजुहवुः। तेनं मास्यूर्जमवारुन्थत। तस्मौन्मासि पितुन्यः क्रियते। मुनुष्यां अपश्यश्चमुसं घृतस्यं पूर्ण इस्वधाम्॥५२॥ तमुपोदंतिष्ठन्तमंजुहवुः। तेनं द्वयीमूर्ज्मवांरुन्धत। तस्माद्विरह्नां मनुष्येंभ्य

उपंह्रियते। प्रातश्चं सायं चं। पशवों ऽपश्यश्चमसं घृतस्यं पूर्ण इस्वधाम्। तमुपोदंतिष्ठन्तमंजुहवुः। तेनं त्रयीमूर्ज्मवांरुन्धतः तस्मात्रिरह्नंः पशवः प्रेरंते। प्रातः संङ्गवे सायम्। असुरा अपश्यश्चम्सं घृतस्यं पूर्णं इस्वधाम्॥५३॥ तमुपोदंतिष्ठन्तमंजुहवुः। तेनं संवथ्सर ऊर्जमवांरुन्धत। ते देवा अमन्यन्त। अमी वा इदमंभूवन्। यद्वय सम इतिं। त पुतानिं चातुर्मास्यान्यंपश्यन्। तानि

निरंवपन्। तैरेवैषां तामूर्जमवृञ्जत। ततो देवा अभवन्। पराऽसुंराः॥५४॥

यद्यजंते। यामेव देवा ऊर्जम्वारुन्थत। तान्तेनावंरुन्थे। यत्पृतृभ्यः क्रोति। यामेव पितर् ऊर्जम्वारुन्थत। तान्तेनावंरुन्थे। यदांवस्थेऽत्रुष्ट् हरंन्ति। यामेव मंनुष्यां ऊर्जम्वारुन्थत। तान्तेनावंरुन्थे। यद्दक्षिणां ददांति॥५५॥ यामेव पशव ऊर्जमवारुन्थत। तान्तेनावंरुन्थे। यचांतुर्मास्थैर्यजंते।

यामेवासुरा ऊर्जम्वारुन्धत। तान्तेनावंरुन्धे। भवंत्यात्मनां। परांस्य भ्रातृं व्यो भवति। विराजो वा एषा विक्रांन्तिः। यचांतुर्मास्यानिं। वैश्वदेवेनास्मिं श्लोके प्रत्यंतिष्ठत्। वरुणप्रघासैरन्तिरक्षे। साकुमेधेरमुष्मिं श्लोके। एष ह त्वावेतथ्सर्वं भवति। य एवं विद्वा इश्चांतुर्मास्यैर्यजंते॥ ५६॥

मनुष्यां अपश्यश्रम्सं पृतस्यं पूर्णः स्वधामसंग अपश्यश्रम्सं पृतस्यं पूर्णः स्वधामसंग ददांत्यितिष्ठम्त्वारि च॥——[९]

अग्निर्वाव संवथ्सरः। आदित्यः पंरिवथ्सरः। चन्द्रमां इदावथ्सरः। वायुरंनुवथ्सरः। यद्वैश्वदेवेन यजेते। अग्निमेव तथ्संवथ्सरमाप्नोति। तस्माद्वैश्वदेवेन यजेमानः। संवथ्सरीणाई स्वस्तिमाशौस्त इत्याशोसीत। यद्वेरुणप्रघासैर्यजेते। आदित्यमेव तत्पंरिवथ्सरमाँप्रोति॥५७॥

तस्माँद्वरुणप्रघासैर्यजंमानः। परिवृथ्मरीणाई स्वस्तिमाशाँस्त इत्याशांसीत। यथ्मांकमेधेर्यजंते। चन्द्रमंसमेव तिदंदावथ्मरमाँप्रोति। तस्माँथ्माकमेधेर्यजंमानः। इदावथ्मरीणाई स्वस्तिमाशाँस्त इत्याशांसीत। यत्पितृयज्ञेन यजते। देवानेव तदन्ववंस्यति। अथवा अस्य वायुश्चांनुवथ्मरश्चाप्रींतावुच्छिंष्येते। यच्छुंनासीरीयेण यजते॥५८॥

वायुमेव तदंनुवथ्मरमाँप्रोति। तस्माँच्छुनासीरीयेण यजंमानः। अनुवथ्मरीणाई स्वस्तिमाशाँस्त इत्याशांसीत। संवथ्मरं वा एष ईंप्सतीत्यांहुः। यश्चांतुर्मास्यैर्यजंत इति। एष ह त्वै संवथ्मरमाँप्रोति। य एवं विद्वाःश्चांतुर्मास्यैर्यजंते। विश्वे देवाः समयजन्त। तैंऽग्निमेवायंजन्त। त एतं लोकमंजयन्॥५९॥

यस्मिन्नग्निः। यहैंश्वदेवेन यजंते। एतमेव लोकं जंयति। यस्मिन्नग्निः। अग्नेरेव सायुंज्यमुपैति। यदा वैश्वदेवेन यजंते। अर्थ संवथ्सरस्यं गृहपंतिमाप्नोति। यदा संवथ्सरस्यं गृहपंतिमाप्नोतिं। अर्थ सहस्रयाजिनंमाप्नोति। यदा संहस्रयाजिनंमाप्नोतिं॥६०॥

अथं गृहमेधिनंमाप्नोति। यदा गृंहमेधिनंमाप्नोति। अथाग्निर्भवति। यदाग्निर्भवंति। अथा गौर्भवति। एषा वै वैश्वदेवस्य मात्राँ। एतद्वा एतेषांमवमम्। अतोतो वा उत्तराणि श्रेया १सि भवन्ति। यद्विश्वं देवाः समयंजन्त। तद्वैश्वदेवस्यं वैश्वदेवत्वम्॥६१॥

अथाऽऽदित्यो वर्रण् राजानं वरुणप्रघासैरयजत। स एतं लोकमंजयत्। यस्मिन्नादित्यः। यद्वंरुणप्रघासैर्यजंते। एतमेव लोकं जंयति। यस्मिन्नादित्यः। आदित्यस्यैव सायुंज्यमुपैति। यदांदित्यो वर्रुण् राजानं वरुणप्रघासे-रयंजत। तद्वंरुणप्रघासानां वरुणप्रघासत्वम्। अथ् सोमो राजा छन्दार्शसे साकमेधेर्यजत॥६२॥

स एतं लोकमंजयत्। यस्मिईश्चन्द्रमां विभातिं। यथ्सांकमेधेर्यजंते। एतमेव

लोकं जंयित। यस्मिईश्चन्द्रमां विभातिं। चन्द्रमंस एव सार्युज्यमुपैति। सोमो वै चन्द्रमाः। एष ह् त्वै साक्षाथ्सोमं भक्षयित। य एवं विद्वान्थ्सांकमेधेर्यजंते। यथ्सोमश्च राजा छन्दाईसि च सुमैधन्त॥६३॥

तथ्सांकमेधाना रे साकमेधत्वम्। अथर्तवेः पितरेः प्रजापंतिं पितरं

पितृयुज्ञेनांयजन्त। त एतं लोकमंजयन्। यस्मिन्नृतविः। यत्पितृयुज्ञेन् यजेते। एतमेव लोकं जयित। यस्मिन्नृतविः। ऋतूनामेव सायुज्यमुपैति। यद्दतविः पितरिः प्रजापितिं पितरें पितृयुज्ञेनायंजन्त। तत्पितृयुज्ञस्यं पितृयज्ञत्वम्॥६४॥ अथौषिधय इमं देवं त्र्यम्बकैरयजन्त प्रथेमहीति। ततो व ता अप्रथन्त। य एवं विद्वाः स्त्र्यम्बकैर्यजेते। प्रथंते प्रजयां प्रशुभिः। अर्थं वायुः परमेष्ठिन रेश्नासीरीयेणायजत। स एतं लोकमंजयत्। यस्मिन्वायुः। यच्छुनासीरीयेण यजेते।

वायोरेव सायुंज्यमुपैति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। प्र चांतुर्मास्ययाजी मींयता (३)

एतमेव लोकं जंयति। यस्मिन्वायुः॥६५॥

न प्रमीयता (३) इति। जीवन्वा एष ऋतूनप्येति। यदि वसन्तौ प्रमीयते। वसन्तो भेवति। यदि ग्रीष्मे ग्रीष्मः। यदि वर्षास् वर्षाः। यदि श्रारदि शरत्। यदि हेमेन् हेमन्तः। ऋतुर्भूत्वा संवथ्सरमप्येति। संवथ्सरः प्रजापंतिः। प्रजापंतिवीवैषः॥६६॥

परिवृथ्सरमाँप्रोति शुनासीरीर्येण यजंतेऽजयन्थ्सहस्रयाजिनंमाप्रोति वैश्वदेवृत्वः सांकमेधेरंयजत स्मैधंन्त पितृयज्ञत्वं जंयति
यस्मिन्वायुर्हंमन्तस्रीणि च॥——————————————————————[१०]

उभयें युव॰ सुराम्मुदंस्थान्नि वै यस्यं प्रातः सव्न एकैंकोऽसुर्यं पर्वमानः प्रजा वै सृत्रमांसताग्निर्वाव संवथ्सरो

दर्श॥१०॥

उभये वा उदस्थाथ्सर्वाभिर्मध्यतोऽत्र वाव ब्राह्मणेष्वर्थं गृहमेधिन् षट्थ्यंष्टिः॥६६॥ उभये वा वैषः॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥पञ्चमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः॥

अग्नेः कृत्तिकाः। शुक्रं प्रस्ताञ्चोतिर्वस्तात्। प्रजापंते रोहिणी। आपंः प्रस्तादोषंधयोऽवस्तात्। सोमस्येन्वका वितंतानि। प्रस्ताद्वयंन्तोऽवस्तात्। रुद्रस्य बाहू। मृग्यवंः प्रस्ताद्विक्षारोऽवस्तात्। अदित्ये पुनर्वसू। वातंः परस्तांदार्द्रमवस्तात्॥१॥

बृह्स्पतेंस्तिष्यः। जुह्वंतः पुरस्ताद्यजंमाना अवस्तात्। सूर्पाणांमाश्रेषाः। अभ्यागच्छंन्तः पुरस्तांदभ्यानृत्यंन्तोऽवस्तात्। पितृणां मुघाः। रुदन्तः पुरस्तांदपश्रू १ शोऽवस्तात्। अर्यम्णः पूर्वे फल्गुंनी। जाया पुरस्तांदषभोऽवस्तात्। भगस्योत्तरे। वृह्तवंः पुरस्ताद्वहंमाना अवस्तात्॥ २॥

देवस्यं सवितुर्हस्तंः। प्रस्वः प्रस्तांध्यनिर्वस्तांत्। इन्द्रंस्य चित्रा। ऋतं प्रस्तांध्यत्यम्वस्तांत्। वायोर्निष्ट्यां व्रतिः। प्रस्तादसिंद्धिर्वस्तांत्।

इन्द्राग्नियोर्विशांखे। युगानिं प्रस्तांत्कृषमांणा अवस्तांत्। मित्रस्यांनूराधाः। अभ्यारोहंत्प्रस्तांद्भ्यारूढम्वस्तांत्॥३॥ इन्द्रंस्य रोहिणी। शृणत्प्रस्तांत्प्रतिशृणद्वस्तांत्। निर्ऋंत्ये मूल्वर्हंणी। प्रतिभुञ्जन्तंः प्रस्तांत्प्रतिशृणन्तोऽवस्तांत्। अपां पूर्वा अषाढाः। वर्चः प्रस्ताथ्समितिर्वस्तांत्। विश्वेषां देवानामुत्तंराः। अभिजयंत्प्रस्तांद्भिजितम्वस्तांत् विष्णोः श्रोणा पच्छमानाः। परस्तात्पन्थां अवस्तांत॥४॥

विष्णोः श्रोणा पृच्छमानाः। पुरस्तात्पन्थां अवस्तात्। ४॥ वसूना 💐 श्रविष्ठाः। भूतं पुरस्ताद्भृतिरुवस्तात। इन्द्रस्य श्रतभिषक्। विश्वव्यंचाः परस्तांद्विश्वक्षिंतिर्वस्तांत्। अजस्यैकंपदः पूर्वे प्रोष्ठपदाः। वैश्वान्रं पुरस्ताँद्वैश्वावस्वम्वस्तांत्। अहें बुंध्रियस्योत्तरे। अभिषिश्चन्तंः परस्तांदभिषुण्वन्तो-ऽवस्तात्। पूष्णो रेवतीं। गार्वः परस्ताद्वथ्सा अवस्तात्। अश्विनोरश्वयुजौं। ग्रामः परस्ताथ्सेनाऽवस्तांत्। यमस्यांपभरंणीः। अपकर्षन्तः पुरस्तांदपुवहंन्तोऽवस्तांत्। पूर्णा पश्चाद्यत्ते देवा अदेधुः॥५॥

यत्पुण्यं नक्षेत्रम्। तद्बद्वंर्वीतोपव्युषम्। यदा वै सूर्यं उदेतिं। अथ नक्षेत्रं नैतिं। याविति तत्र सूर्यो गच्छैत्। यत्रं जघन्यं पश्यैत्। ताविति कुर्वीत यत्कारी स्यात्। पुण्याह एव कुंरुते। एव॰ हु वै युज्ञेषुं च शृतद्युंम्नं च माथ्स्यो निरवसाय्यां चेकार॥६॥

यो वै नेक्ष्रत्रियं प्रजापंतिं वेदं। उभयोरेनं लोकयौर्विदुः। हस्तं एवास्य हस्तंः। चित्रा शिरंः। निष्ट्या हृदंयम्। ऊरू विशाखे। प्रतिष्ठाऽनूराधाः। एष वै नेक्ष्रत्रियः प्रजापंतिः। य एवं वेदं। उभयोरेनं लोकयौर्विदुः॥७॥

अस्मि ॥ श्रीष्ठा थां कामर्थेत दृहितरंं प्रिया स्यादितिं। तां निष्ठांयां दद्यात्। प्रियेव भवति। नेव तु पुनरागंच्छति। अभिजिन्नाम् नक्षंत्रम्। उपिरष्टादषाढानांम्। अवस्तांच्छ्रोणायें। देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवास्तस्मिन्नक्षंत्रेऽभ्यंजयन्॥८॥

यद्भ्यजंयन्। तदंभिजितोंऽभिजित्त्वम्। यं कामयेतानपज्य्यं जंयेदितिं। तमेतस्मिन्नक्षंत्रे यातयेत्। अनुपज्य्यमेव जंयित। पापपंराजितिमव् तु। प्रजापंतिः पृशूनंसृजत। ते नक्षत्रं नक्षत्रमुपातिष्ठन्त। ते समावन्त एवाभवन्। ते रेवतीमुपातिष्ठन्त॥९॥

ते रेवत्यां प्राभंवन्। तस्माँद्रेवत्यां पशूनां कुंवीत। यत्किं चाँर्वाचीन् सोमाँत्। प्रैव भंवन्ति। सृष्टिलं वा इदमन्त्रासींत्। यदतंरन्। तत्तारंकाणां तारकृत्वम्। यो वा इह यजंते। अमु सलोकं नंक्षते। तन्नक्षंत्राणां नक्षत्रत्वम्॥१०॥ देवगहा वै नक्षंत्राणि। य एवं वेदं। गृह्येव भंवति। यानि वा इमानि

देवगृहा वै नक्षत्राणि। य एवं वेदं। गृह्येव भवति। यानि वा इमानि पृथिव्याश्चित्राणि। तानि नक्षत्राणि। तस्मादश्चीलनामङ्श्चित्रे। नावस्येन्न यंजेत। यथा पापाहे कुंरुते। तादगेव तत्। देवनुक्षत्राणि वा अन्यानि॥११॥

यम्नुक्षुत्राण्यन्यानिं। कृत्तिंकाः प्रथमम्। विशांखे उत्तमम्। तानिं देवनक्षुत्राणिं। अनूराधाः प्रथमम्। अपभरंणीरुत्तमम्। तानिं यमनक्षुत्राणिं। यानिं देवनक्षुत्राणिं।

तानि दक्षिणेन परियन्ति। यानि यमनक्षत्राणि॥१२॥

तान्युत्तरेण। अन्वेषामराथ्स्मेतिं। तदंनूराधाः। ज्येष्ठमेषामवधिष्मेतिं। तद्येष्ठघ्नी। मूलंमेषामवृक्षामेतिं। तन्मूलवर्हंणी। यन्नासंहन्त। तदंषाढाः। यदश्लोणत्॥१३॥

तच्छ्रोणा। यदर्श्वणोत्। तच्छ्रविष्ठाः। यच्छ्रतमभिषज्यन्। तच्छ्रतभिषक्। प्रोष्ठपदेषूदंयच्छन्त। रेवत्यांमरवन्त। अश्वयुजोरयुञ्जत। अपुभरंणी्ष्वपांवहन्। तानि वा एतानि यमनक्ष्रत्राणि। यान्येव देवनक्ष्रत्राणि। तेषुं कुर्वीत यत्का्री स्यात्। पुण्याह एव कुंरुते॥१४॥

चकारैवं वेदोभयोरेनं लोकयोविंद्रजयत्रेवतीमुपातिष्ठन्त नक्षत्रत्वम्न्यानि यानि यमनक्षत्राण्यश्लीणद्यमनक्षत्राणि त्रीणि च॥—[२] देवस्य सवितः प्रातः प्रसवः प्राणः। वर्फणस्य सायमसिवोऽपानः। यत्प्रतीचीनं

देवस्यं सिवतुः प्रातः प्रस्तवः प्राणः। वर्रुणस्य सायमास्वोऽपानः। यत्प्रंतीचीनं प्रात्स्तनात्। प्राचीनर् सङ्गवात्। ततो देवा अग्निष्टोमं निर्गमिमत। तत्तदात्तवीर्यं निर्मार्गः। मित्रस्यं सङ्गवः। तत्पुण्यं तेज्रस्व्यहंः। तस्मात्तर्हि पृशवंः समायन्ति। यत्प्रंतीचीनर् सङ्गवात्॥१५॥

बृहस्पतेंर्मध्यं दिनः। तत्पुण्यं तेजस्व्यहंः। तस्मात्तर्हि तेक्ष्णिष्ठं तपति। यत्प्रंतीचीनं

प्राचीनं मध्यं दिनात्। ततों देवा उक्थ्यं निरंमिमत। तत्तदात्तंवीर्यं निर्मार्गः।

मध्यं दिनात्। प्राचीनंमपराह्णात्। ततो देवाः षोंडशिनं निरंमिमत। तत्तदात्तंवीर्यं निर्मार्गः॥१६॥

भगंस्यापराह्णः। तत्पुण्यं तेज्ञस्व्यहंः। तस्मादपराह्णे कुंमार्यो भगंमिच्छमानाश्चरन्ति। यत्प्रंतीचीनंमपराह्णात्। प्राचीनर् सायात्। ततो देवा अंतिरात्रं निरंमिमत। तत्तदात्तंवीर्यं निर्मार्गः। वरुणस्य सायम्। तत्पुण्यं तेज्रस्व्यहंः। तस्मात्तर्ह् नानृतं वदेत्॥१७॥

ब्राह्मणो वा अष्टाविष्शो नक्षेत्राणाम्। समानस्याहुः पश्च पुण्यांनि नक्षेत्राणि। चत्वार्यश्चीलानिं। तानि नवं। यचं पुरस्तान्नक्षेत्राणां यचावस्तांत्। तान्येकांदश। ब्राह्मणो द्वांदशः। य एवं विद्वान्थ्यंवथ्यरं व्रतं चरित। संवथ्यरेणैवास्यं व्रतं गुप्तं भंवति। समानस्याहुः पश्च पुण्यांनि नक्षेत्राणि। चत्वार्यश्चीलानिं। तानि नवं। आग्नेयी रात्रिः। ऐन्द्रमहंः। तान्येकांदश। आदित्यो द्वांदशः। य एवं विद्वान्थ्यंवथ्यरं व्रतं चरित। सुंवथ्यरेणैवास्यं व्रतं गुप्तं भविति॥१८॥

चरति। स्वथ्सरेणेवास्य व्रत गुप्त भवति॥१८॥
सङ्गवाथ्योड्शिनं निरंमिमत् तत्तदात्तंवीर्यं निर्मार्गो वंदद्भवति समानस्याहुः पश्च पुण्यांनि नक्षंत्राण्यष्टौ चं॥———[3]

ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कति पात्रांणि युज्ञं वहन्तीतिं। त्रयोदशेतिं ब्र्यात्। स यद्भूयात्। कस्तानि निरंमिमीतेतिं। प्रजापंतिरितिं ब्रूयात्। स यद्भूयात्। कुत्स्तानि निरंमिमीतेतिं। आत्मन् इतिं। प्राणापानाभ्यांमेवोपाईश्वन्तर्यामौ निरंमिमीत॥१९॥ व्यानादुंपा १ शुसर्वनम्। वाच ऐन्द्रवायवम्। दुक्षु ऋतुभ्यां मैत्रावरुणम्। श्रोत्रांदाश्विनम्। चक्षुंषः शुक्रामन्थिनौं। आत्मनं आग्रयणम्। अङ्गेभ्य उक्थ्यम्। आयुंषो ध्रुवम्। प्रतिष्ठायां ऋतुपात्रे। यज्ञं वाव तं प्रजापंतिर्निरंमिमीत। स निर्मितो नाद्धियत समंब्रीयत। स एतान्प्रजापंतिरपिवापानंपश्यत्। तां निरंवपत्। तैर्वे स युज्ञमप्यंवपत्। यदंपिवापा भवंन्ति। युज्ञस्य धृत्या असंंब्रयाय॥२०॥

उपार्श्वन्तर्यामौ निरंमिमीतामिमीत् पर्द्व॥——————————[४]

ऋतमेव पंरमेष्ठि। ऋतं नात्येति किश्चन। ऋते संमुद्र आहिंतः।

ऋते भूमिरिय १ श्रिता। अग्निस्तिग्मेन शोचिषां। तप आक्रान्तम् ष्णिहां। शिरस्तपस्याहितम्। वैश्वानरस्य तेजंसा। ऋतेनांस्य नि वंर्तये। सत्येन परि वर्तये। तपंसाऽस्यानुं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शग्मेनांस्याभि वर्तये। तदतं तथ्सत्यम्। तद्वतं तच्छंकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२१॥ यद्घर्मः पर्यवंर्तयत्। अन्तान्पृथिव्या दिवः। अग्निरीशान ओर्जसा। वर्रुणो धीतिभिः सह। इन्द्रों मरुद्भिः सर्खिभिः सह। अग्निस्तिग्मेनं शोचिषां। तप् आक्रान्तमुष्णिहाँ। शिरस्तपस्याहितम्। वैश्वानरस्य तेर्जसा। ऋतेर्नास्य नि वर्तये। सत्येन परिं वर्तये। तपंसाऽस्यानुं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शग्मेनांस्याभि

वंर्तये। तद्दतं तथ्मत्यम्। तद्भृतं तच्छंकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२२॥ यो अस्याः पृथिव्यास्त्वचि। निवर्तयत्योषंधीः। अग्निरीशांन ओजंसा। वर्रणो धीतिभिः सह। इन्द्रों मुरुद्धिः सिखंभिः सह। अग्निस्तिग्मेनं शोचिषां। तप् आऋांन्तमुष्णिहां। शिरुस्तप्स्याहितम्। वैश्वानरस्य तेजंसा। ऋतेनांस्य नि वंर्तये। सृत्येन परि वर्तये। तपंसाऽस्यानं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शुग्मेनांस्याभि वर्तये। तद्दतं तथ्सत्यम्। तद्वतं तच्छंकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२३॥

एकं मासमुदंसृजत्। प्रमेष्ठी प्रजाभ्यः। तेनाभ्यो मह् आवंहत्। अमृतं मर्त्याभ्यः। प्रजामनु प्र जांयसे। तदुं ते मर्त्यामृतम्। येन मासां अर्धमासाः। ऋतवंः परिवथ्सराः। येन ते ते प्रजापते। ईजानस्य न्यवंत्यन्। तेनाहमस्य ब्रह्मणा। निवंत्यामि जीवसे अग्निस्तिग्मेनं शोचिषा। तप् आक्रान्तमुष्णिहा। शिर्स्तपस्याहितम्। वैश्वानरस्य तेजंसा। ऋतेनास्य नि वंत्ये। स्त्येन परि वर्तये। तपंसाऽस्यानुं वर्तये। शिवेनास्योपं वर्तये। शुग्मेनास्याभि वर्तये। तद्तं तथ्सत्यम्। तद्वतं तच्छंकेयम्। तेनं शकेयं तेनं राध्यासम्॥२४॥

एकं मासं चतुंविं रशितः)॥———[५] देवा वै यद्यज्ञेऽकुंर्वत। तदसुंरा अकुर्वत। तेऽसुंरा ऊर्ध्वं पृष्ठेभ्यो नापंश्यन्। ते केशानग्रेंऽवपन्त। अथ् श्मश्रूंणि। अथोपपक्षौ। ततस्तेऽवांश्च आयन्। परांऽभवन्।

परिवर्तये सहाभिवर्तय उष्णिहां राध्यासुं न्यवर्तयन्नुपंवर्तये चत्वारिं च। (ऋतमेव षोडंश। यद्घर्मो यो अस्याः सप्तदंशसप्तदश।

यस्यैवं वपंन्ति। अवांङेति॥२५॥

अथो परैव भंवति। अथं देवा ऊर्ध्वं पृष्ठेभ्योऽपश्यन्। त उंपपृक्षावग्रेऽवपन्त। अथ् श्मश्रृंणि। अथ् केशान्। तत्स्तेऽभवन्। सुवृगं लोकमायन्। यस्यैवं वर्पन्ति। भवंत्यात्मनां। अथो सुवर्गं लोकमेति॥२६॥

अथैतन्मनुंर्वित्रे मिंथुनमंपश्यत्। स श्मश्रूण्यग्रेंऽवपतः। अथोपपृक्षौः। अथ् केशान्। ततो वै स प्राजांयत प्रजयां पृशुभिः। यस्यैवं वपंन्ति। प्र प्रजयां पृशुभिर्मिथुनैर्जायते। देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते संवथ्सरे व्यायंच्छन्तः। तान्देवाश्चांतुर्मास्यैरेवाभि प्रायुंञ्जत॥२७॥

वैश्वदेवेनं चतुरों मासोंऽवृञ्जतेन्द्रंराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावंर्तयन्त परि च। वरुणप्रघासैश्चतुरों मासोंऽवृञ्जत् वरुणराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावंर्तयन्त परि च। साकुमेधेश्चतुरों मासोंऽवृञ्जत् सोमंराजानः। ताञ्छीर्षं नि चावंर्तयन्त परि च। या संवथ्सर उंपजीवाऽऽसींत्। तामेषामवृञ्जत। ततों देवा अभवन्। पराऽसुंराः॥२८॥ वर्तयंते परिं च। यैषा संवथ्सर उंपजीवा। वृङ्के तां भ्रातृंव्यस्य। क्षुधाऽस्य भ्रातृंव्यः

य एवं विद्वाः श्चांतुर्मास्यैर्यजंते। भ्रातृंव्यस्यैव मासो वृक्ता। शीर्षं नि चं

पर्रा भवति। लोहितायसेन नि वंर्तयते। यद्वा इमामग्निर्ऋतावागंते निवर्तयंति। एतदेवैना र्रं रूपं कृत्वा निवंर्तयति। सा ततः श्वश्वो भूयंसी भवंन्त्येति॥२९॥ प्र जांयते। य एवं विद्वाँ लोहितायसेन निवर्तयते। एतदेव रूपं कृत्वा नि वंर्तयते। स ततः श्वश्वो भूयान्भवंन्नेति। प्रैव जांयते। न्नेण्या शंलुल्या नि वंर्तयत। त्रीणि त्रीणि वै देवानांमृद्धानि। त्रीणि छन्दार्रसे। त्रीणि सर्वनानि। त्रयं इमे लोकाः॥३०॥ ऋध्यामेव तद्वीर्यं एषु लोकेषु प्रतिं तिष्ठति। यचांतुर्मास्ययाज्यांत्मनो नावद्येत्।

देवेभ्य आवृश्चेता चृतृषु चृतृषु मासेषु नि वर्तयेता प्रोक्षंमेव तद्देवेभ्य आत्मनो-ऽवंद्यत्यनांत्रस्काय। देवानां वा एष आनीतः। यश्चांतुर्मास्ययाजी। य एवं विद्वान्नि चं वर्तयंते परि च। देवतां एवाप्येति। नास्यं रुद्रः प्रजां प्रशून्भि मन्यते॥३१॥ पृत्येत्ययुञ्जतासुरा एति लोका मन्यते॥————[६]

आयुंषः प्राण सन्तंनु। प्राणादंपान सन्तंनु। अपानाद्यान सन्तंनु। व्याना चक्षुः सन्तंनु। चक्षुंषः श्रोत्र सन्तंनु। श्रोत्रान्मनः सन्तंनु। मनंसो वाच् सन्तंनु। वाच आत्मान् सन्तंनु। आत्मनं पृथिवी सन्तंनु। पृथिव्या अन्तरिक्ष सन्तंनु। अन्तरिक्षाद्देव सन्तंनु। दिवः सुवः सन्तंनु॥ ३२॥

अन्तरिक्षर् सन्तेनु हे चं॥————[७] इन्द्रो दधीचो अस्थिभैः। वृत्राण्यप्रतिष्कुतः। जघानं नवतीर्नवं। इच्छन्नश्वंस्य

इन्द्रा दधाचा अस्थामः। वृत्राण्यप्रातष्कुतः। ज्ञधान नवतानवा इच्छन्नश्वस्य यच्छिरंः। पर्वतेष्वपंश्रितम्। तिद्वेदच्छर्यणाविति। अत्राह् गोरमन्वत। नाम् त्वष्टुंरपीच्यम्। इत्था चन्द्रमंसो गृहे। इन्द्रमिद्गाथिनो बृहत्॥३३॥

इन्द्रंमकेंभिर्किणः। इन्द्रं वाणीरनूषत। इन्द्र इद्धर्योः सर्चां। सम्मिश्च आवंचो युजां। इन्द्रों वृज्री हिर्ण्ययः। इन्द्रों दीर्घाय चक्षंसे। आ सूर्यर्थं रोहयिद्दिवि। वि गोभिरद्रिंमैरयत्। इन्द्रं वाजेषु नो अव। सहस्रंप्रधनेषु च॥३४॥ उग्र उग्राभिंरूतिभिः। तिमन्द्रं वाजयामिस। महे वृत्राय हन्तेवे। स वृषां वृष्भो भुंवत्। इन्द्रः स दामने कृतः। ओजिंष्टः स बले हितः। द्युम्नी श्लोकी स सौम्यः। गिरा वज्रो न सम्भृतः। सबेलो अनंपच्युतः। ववक्षुरुग्रो अस्तृतः॥३५॥

बृहचास्तृंतः॥**____**[८

देवासुराः संयंता आसन्। स प्रजापंतिरिन्द्रं ज्येष्ठं पुत्रमप् न्यंधत्त। नेदेन्मसुरा बलीया॰सोऽहन्त्रिति। प्रह्लादों हु वै कायाध्वः। विरोचन् इं स्वं पुत्रमप् न्यंधत्त। नेदेनं देवा अहन्त्रिति। ते देवाः प्रजापंतिमुपस्मेत्योचुः। नाराजकस्य युद्धमंस्ति। इन्द्रमन्विच्छामेति। तं यंज्ञऋतुभिरन्वैच्छन्॥३६॥ वं यंज्ञत्भिन्तिन्तन। तमिष्टिभिरन्वैच्छन्। तमिष्टिभिरन्वेवन्तन।

तं यंज्ञऋतुभिर्नान्वंविन्दन्। तमिष्टिंभिरन्वैच्छन्। तमिष्टिंभिरन्वंविन्दन्। तदिष्टीनामिष्टित्वम्। एष्टंयो हु वै नामं। ता इष्टंय इत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः। तस्मां एतमांग्नावैष्ण्वमेकांदशकपालं दीक्षणीयं निरंवपन्। तदंपद्रुत्यांतन्वत। तान्पंत्रीसंयाजान्त उपानयन्॥३७॥

ते तदंन्तमेव कृत्वोदंद्रवन्। ते प्रांयणीयंमभि समारोहन्। तदंपद्रुत्यांतन्वत।

ताञ्छ्य्यँन्त उपानयन्। ते तदंन्तमेव कृत्वोदंद्रवन्। त आंतिथ्यम्भि स्मारोहन्। तदंप्द्रुत्यांतन्वत। तानिडान्त उपानयन्। ते तदंन्तमेव कृत्वोदंद्रवन्। तस्मादेता एतदंन्ता इष्टंयः सन्तिष्ठन्ते॥३८॥

एव॰ हि देवा अर्कुर्वत। इति देवा अंकुर्वत। इत्यु वै मंनुष्याः कुर्वते। ते देवा ऊंचुः। यद्वा इदमुचैर्यज्ञेन चराम। तन्नोऽसुराः पाप्माऽनुंविन्दन्ति। उपार्श्रूपसदां

चराम। तथा नोऽसुंराः पाप्मा नानुंवेथ्स्यन्तीतिं। त उंपा रशूंपसदंमतन्वत। तिस्र

एव सांमिधेनीरनूच्यं॥३९॥

सुवेणांघारमाघार्य। तिस्रः परांचीराहुंतीरहुत्वा। सुवेणांपसदं जुह्वां चंकुः। उग्रं वचो अपांवधीन्त्वेषं वचो अपांवधी् स्वाहेतिं। अश्नन्यापिपासे ह् वा उग्रं वचेः। एनश्च वैरहत्यं च त्वेषं वचेः। एत १ ह् वाव तचेतुर्धाविहितं पाप्मानं देवा अपंजिघ्नरे। तथों एवैतदेवंविद्यजमानः। तिस्र एव सांमिधेनीर्नूच्यं। सुवेणांघारमाघार्य॥४०॥ पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् १) तिसः परांचीराहुंतीर्हुत्वा। सुवेणांपुसदं जुहोति। उग्रं वचो अपांवधीन्त्वेषं

वचो अपांवधी इस्वाहेति। अशन्यापिपासे ह वा उग्नं वर्चः। एनश्च वैरहत्यं च त्वेषं वर्चः। एतमेव तर्चतुर्धाविहितं पाप्मानं यर्जमानोऽपं हते। तेंऽभिनीयैवाहंः पशुमाऽलंभन्त। अहं एव तद्देवा अवंर्तिं पाप्मानं मृत्युमपंजिघ्नरे। तेनांभिनीयंव रात्रेः प्राचंरन्। रात्रिया एव तद्देवा अवंर्तिं पाप्मानं मृत्युमपंजिघ्निरे॥४१॥

तस्मादिभनीयैवाहंः पशुमा लंभेत। अहं एव तद्यजंमानोऽवंर्तिं पाप्मानं भ्रातृंव्यानपं नुदते। तेनांभिनीयंव रात्रेः प्रचंरेत्। रात्रिया एवं तद्यजंमानोऽवंर्तिः पाप्मानं भ्रातृंव्यानपं नुदते। स एष उपवस्थीयेऽहं द्विदेवत्यः पशुरा लेभ्यते। द्वयं वा अस्मिँ होके यर्जमानः। अस्थि च मार्सं च। अस्थि चैव तेन मार्सं च यजंमानः सङ्स्कुंरुते। ता वा एताः पश्चं देवताः। अग्नीषोमांवग्निमित्रावरुंणौ॥४२॥ पश्चपश्ची वै यर्जमानः। त्वङ्गार्सः स्नावाऽस्थिं मुजा। एतमेव तत्पंश्वधाविहितमात्मानं वरुणपाशान्मुंश्वति। भेषजतांयै निर्वरुणत्वायं। तर

स्प्तिमिश्छन्दोंभिः प्रातरंह्वयन्। तस्माँथ्सप्त चंतुरुत्तराणि छन्दा १सि प्रातरनुवाके-ऽनूँच्यन्ते। तमेतयोपसमेत्योपांसीदन्। उपाँस्मै गायता नर् इतिं। तस्मादेतयां बहिष्यवमान उपसर्घः॥४३॥

ऐच्छुन्नुन्युङ्स्तिष्ठुन्तेऽनूच्यानूच्यं स्रुवेणांघारमाघार्य रात्रिया एव तद्देवा अवंर्तिं पाप्मानं मृत्युमपंजिघ्नरे मित्रावर्रुणौ नवं च (देवा

यजमानो देवा देवा यजमानो यजमानः प्राचरं प्रचरेदालंभन्तालंभेत मृत्युमपंजिष्ठरे भ्रातृंब्यान्॥)॥———[९] स समुद्र उत्तर्तः प्राज्वलद्भूम्यन्तेन। एष वाव स समुद्रः। यच्चात्वालः। एष

उवेव स भूम्यन्तः। यद्वैद्यन्तः। तदेतित्रिशालं त्रिपूरुषम्। तस्मात्तं त्रिवितस्तं खेनन्ति। स सुवर्णरज्ञताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत आसीत्। तं यदस्या अध्यजनयन्। तस्मादादित्यः॥४४॥

अथ् यथ्सुंवर्णरज्ञताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत् आसींत्। साऽस्यं कौशिकतां। तं त्रिवृताऽभि प्रास्तुंवत। तं त्रिवृताऽदंदत। तं त्रिवृताऽहंरन्। यावंती त्रिवृतो मात्रां। तं पंश्रद्शेनाभि प्रास्तुंवत। तं पंश्रद्शेनादंदत। तं पंश्रद्शेनाहंरन्। यावंती पश्रद्शस्य मात्रां॥४५॥ त र संप्तदशेनाभि प्रास्तुंवत। त र संप्तदशेनादंदत। त र संप्तदशेनाहंरन्।

यावंती सप्तद्शस्य मात्राँ। तस्यं सप्तद्शनं ह्रियमांणस्य तेजो हरोऽपतत्। तमेंकविर्शेनाभि प्रास्तुंवत। तमेंकविर्शेनादंदत। तमेंकविर्शेनाहंरन्। यावंत्येकविर्शस्य मात्राँ। ते यित्रवृताँ स्तुवतेँ॥४६॥ त्रिवृत्वेव तद्यजंमानमादंदते। तं त्रिवृत्वेव हंरन्ति। यावंती त्रिवृतो मात्राँ। अग्निर्वे त्रिवृत्। यावद्वा अग्नेदंहंतो धूम उदेत्यानु व्येतिं। तावंती त्रिवृतो मात्राँ। अग्नेरेवैनं तत्। मात्रार सायुंज्यर सलोकतां गमयन्ति। अथ यत्पंश्रदशेनं

तं पंश्चद्रशेनै्व हंरन्ति। यावंती पश्चद्रशस्य मात्राँ। चन्द्रमा वै पंश्चद्रशः। एष हि पंश्चद्रश्यामंपक्षीयतें। पृश्चद्रश्यामांपूर्यतें। चन्द्रमंस एवेनं तत्। मात्रा सायंज्य सलोकतां गमयन्ति। अथ यथ्मंप्तद्रशेनं स्तुवतें। स्प्तद्रशेनै्व तद्यजंमान्मादंदते। तर संप्तद्रशेनै्व हंरन्ति॥४८॥

स्तुवतै। पश्चद्शेनैव तद्यजमानमादंदते॥४७॥

मात्रा सायुं ज्य सलोकतां गमयन्ति। ते कुश्यौ। व्यंघ्रन्। ते अंहोरात्रे अंभवताम्। अहंरेव सुवर्णां अभवताम्। रज्ता रात्रिः। स यदांदित्य उदेति। एतामेव तथ्सुवर्णां कुशीमनु समेति। अथ यदंस्तमेति। एतामेव तद्रजतां कुशीमनुसंविंशति। प्रहादों हु वै कांयाध्वः। विरोचन् स्वं पुत्रमुदौस्यत्। स प्रदेरोऽभवत्। तस्मौत्प्रद्रादुंद्कं नाचांमेत्॥५०॥

आदित्यः पंश्चद्रशस्य मात्रां स्तुवतं पश्चद्रशेनेव तद्यजंमान्मादंदते सप्तद्रशेनेव हंरन्त्यादित्यस्यैवेनं तिर्द्रशित च्त्वारिं चाः[१०] ये वै चृत्वार्ः स्तोमाः। कृतं तत्। अथ् ये पश्चं। किलः सः। तस्माचतुंष्टोमः। तचतुंष्टोमस्य चतुष्टोमृत्वम्। तदांहः। कृतमानि तानि ज्योती ५षि। य एतस्य स्तोमा

इति। त्रिवृत्पंश्चदशः संप्तदश एंकवि १ शः॥ ५१॥

पुतानि वाव तानि ज्योती १षि। य पुतस्य स्तोमाः। सोंऽब्रवीत्। सप्तद्देशनं ह्रियमाणो व्यंलेशिषि। भिषज्यंत मेतिं। तमृश्विनौ धानाभिरभिषज्यताम्। पूषा कर्म्भणं। भारती परिवापेणं। मित्रावरुंणौ पयस्यंया। तदांहः॥५२॥

यदिश्वभ्यां धानाः। पूष्णः कंरम्भः। भारंत्ये परिवापः। मित्रावर्रणयोः पयस्याऽथं। कस्मादितेषारं हृविषामिन्द्रंमेव यंजन्तीतिं। एता ह्यंनं देवता इतिं ब्रूयात्। एतैर्ह्विर्भिरभिषज्य्ङ्स्तस्मादितिं। तं वसंवोऽष्टाकंपालेन प्रातः सवने-ऽभिषज्यन्। रुद्रा एकांदशकपालेन माध्यं दिने सवने। विश्वं देवा द्वादंशकपालेन तृतीयसवने॥५३॥

स यद्ष्टाकंपालान्प्रातः सव्ने कुर्यात्। एकांदशकपालान्माध्यं दिने सर्वने। द्वादंशकपालाङ्स्तृतीयसव्ने। विलोम् तद्यज्ञस्यं क्रियेत। एकांदशकपालानेव प्रांतः सव्ने कुर्यात्। एकांदशकपालान्माध्यं दिने सर्वने। एकांदशकपालाङ्- स्तृतीयसवने। यज्ञस्यं सलोमृत्वायं। तदांहुः। यद्वसूंनां प्रातः सवनम्। रुद्राणां माध्यं दिन् सवनम्। विश्वेषां देवानां तृतीयसवनम्। अथ कस्मादेतेषा हिवषामिन्द्रमेव यंजन्तीति। एता ह्यंनं देवता इति ब्रूयात्। एतैर्ह्विर्भिरभि-षज्य इस्तस्मादिति॥५४॥

णुक्षिक्ष आहुस्तृतीयसवने प्रांतः सवनं पर्श्व च॥————[११]
तस्यावाचोऽवपादादेबिभयुः। तमेतेषुं स्प्रस् छन्दः स्वश्रयन्। यदश्रयन्।
तच्छ्रायन्तीयस्य श्रायन्तीयत्वम्। यदवारयन्। तद्वारवन्तीयस्य वारवन्तीयत्वम्।

तस्यावांच एवावंपादादंबिभयुः। तस्मां एतानिं सप्त चंतुरुत्तराणि छन्दा इस्युपांदधुः।

तेषामित् त्रीण्यंरिच्यन्त। न त्रीण्युदंभवन्॥५५॥
स बृह्तीमेवास्पृंशत्। द्वाभ्यांमक्षराभ्याम्। अहोरात्राभ्यांमेव। तदांहुः। कृतमा
सा देवाक्षरा बहती। यस्यान्तत्प्रत्यतिष्ठतः। द्वादंश पौर्णमास्यः। द्वादशाष्ट्रकाः।

सा देवाक्षेरा बृह्ती। यस्यान्तत्प्रत्यतिष्ठत्। द्वादेश पौर्णमास्यः। द्वादेशाष्ट्रकाः। द्वादेशामावास्याः। पुषा वाव सा देवाक्षेरा बृह्ती॥५६॥

यस्यान्तत्प्रत्यतिष्ठदितिं। यानिं च छन्दा ईस्यत्यरिंच्यन्त। यानिं च नोदर्भवन्।

तानि निर्वीयाणि हीनान्यंमन्यन्त। साऽब्रंबीद्वृह्ती। मामेव भूत्वा। मामुप् सङ्श्रंयतेतिं। चतुर्भिरक्षरैंरनुष्टुग्बृंह्तीं नोदंभवत्। चतुर्भिरक्षरैंः पृङ्क्षिंहृती-मत्यंरिच्यत। तस्यांमेतानिं चत्वार्यक्षरांण्यपच्छिद्यांदधात्॥५७॥
ते बृंह्ती एव भूत्वा। बृह्तीमुप् समंश्रयताम्। अष्टाभिरक्षरैरुण्णिग्बृंह्तीं नोदंभवत्। अष्टाभिरक्षरैष्ट्रिष्टुग्बृंह्तीमत्यंरिच्यत। तस्यांमेतान्यष्टावृक्षरांण्यपच्छिद्यां-दिधात्। ते बृंहती एव भूत्वा। बृहतीमुप् समंश्रयताम्। द्वादशिभेरक्षरैंर्गायत्री

ते बृंह्ती एव भूत्वा। बृह्तीमुप् समंश्रयताम्। सौंऽब्रवीत्प्रजापंतिः। छन्दा रेस् रथों मे भवत। युष्माभिर्हमेतमध्वांनमनु सश्चराणीतिं। तस्यं गायत्री च जगंती च पक्षावंभवताम्। उष्णिकं त्रिष्ठुप्च प्रष्ट्यौं। अनुष्ठुप्चं पङ्किश्च धुर्यौं। बृह्त्येंवोद्धिरंभवत्।

बृंह्तीं नोदंभवत्। द्वाद्शभिंरक्षरै्र्जगंती बृहतीमत्यंरिच्यत। तस्यांमेतानि

द्वादेशाक्षराण्यपच्छिद्यांदधात्॥५८॥

स पृतं छंन्दोर्थमास्थायं। पृतमध्वांनमनु समंचरत्। पृतः हु वै छंन्दोर्थमास्थायं। पृतमध्वांनमनु सञ्चरित। येनैष पृतथ्सञ्चरित। य पृवं विद्वान्थ्सोमेन यजंते। य उं चैनमेवं वेदं॥५९॥

अभुवुन्वाव सा देवाक्षंरा बृह्त्यंदधाद्वादंशाक्षराँण्यपुच्छिद्यांदधादास्थाय षद्वं॥———————————————[१२]
अग्नेः कृत्तिंका यत्पुण्यं देवस्यं सवितुर्ब्रह्मवादिनः कत्यृतमेव देवा वा आयुंषः प्राणमिन्द्रों दधीचो देवासुराः स

प्रजापंतिः स संमुद्रो ये वै चत्वारस्तस्यावांचो द्वादंश॥१२॥

अग्नेः कृत्तिका देवगृहा ऋतमेवर्ध्यामेव तिस्रः परांचीर्ये वै चत्वारो नवंपश्चाशत्॥५९॥

अग्नेः कृत्तिंका य उं चैनमेवं वेदं॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके पश्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥षष्ठमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके षष्टः प्रपाठकः॥

अनुंमत्यै पुरोडाशंमृष्टाकंपालं निर्वपिति। ये प्रत्यञ्चः शम्यांया अवृशीयंन्ते। तन्नैर्ऋतमेकंकपालम्। इयं वा अनुंमितिः। इयं निर्ऋतिः। नैर्ऋतेन पूर्वेण प्रचरित। पाप्मानंमेव निर्ऋतिं पूर्वां निरवंदयते। एकंकपालो भवति। एक्धैव निर्ऋतिं निरवंदयते। यदहंत्वा गार्हंपत्य ईयुः॥१॥

रुद्रो भूत्वाऽग्निरंनूत्थायं। अध्वर्यं च यजमानं च हन्यात्। वीहि स्वाहा-ऽऽहुंतिं जुषाण इत्यांह। आहुंत्यैवैन १ शमयति। नार्तिमार्च्छंत्यध्वर्युर्न यजमानः। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्धे निर्ऋत्यै भाग्धेयम्। इमान्दिशं यन्ति। एषा वै निर्ऋत्यै दिक्। स्वायांमेव दिशि निर्ऋतिं निरवंदयते॥२॥

स्वकृंत इरिंणे जुहोति प्रद्रे वाँ। एतद्वे निर्ऋत्या आयतंनम्। स्व एवायतंने निर्ऋतिं निरवंदयते। एष तें निर्ऋते भाग इत्यांह। निर्दिशत्येवैनांम्। भूतें ह्विष्मंत्यसीत्यांह। भूतिंमे्वोपावंर्तते। मुश्रेममश्हंस् इत्यांह। अश्हंस एवैनं मुश्रति। अङ्गुष्ठाभ्यां जुहोति॥३॥

अन्तत एव निर्ऋतिं निरवंदयते। कृष्णं वासंः कृष्णतूषं दक्षिणा। एतद्वे

निर्ऋत्ये रूपम्। रूपेणैव निर्ऋतिं निर्वंदयते। अप्रतिक्षमायंन्ति। निर्ऋत्या अन्तर्हित्ये। स्वाहा नमो य इदं चकारेति पुन्रेत्य गार्हंपत्ये जुहोति। आहुंत्यैव नंमस्यन्तो गार्हंपत्यमुपावंर्तन्ते। आनुमतेन प्रचंरति। इयं वा अनुंमितिः॥४॥ इयमेवास्मै राज्यमनुं मन्यते। धेनुर्दक्षिणा। इमामेव धेनुं कुंरुते। आदित्यं च्रुं निर्वपति। उभर्यौष्वेव प्रजास्वभिषिंच्यते। दैवीषु च मानुंषीषु च। वरो दक्षिणा।

विष्णुंर्यज्ञः। देवतांश्चैव यज्ञं चार्व रुन्धे। वामनो वही दक्षिणा। यद्वही। तेनांश्चेयः। यद्वांमनः। तेनं वैष्णवः समृद्धौ। अग्नीषोमीयमेकांदशकपालुं निर्वपति।

वरो हि राज्य समृद्धै। आग्नावैष्णवमेकांदशकपालं निर्वपति। अग्निः सर्वा

देवताः॥५॥

अग्रीषोमाँभ्यां वा इन्द्रों वृत्रमंहन्नितिं। यदंग्रीषोमीयमेकांदशकपालं निर्वपंति॥६॥ वार्त्रघ्नमेव विजित्यै। हिरंण्यं दक्षिणा समृद्धै। इन्द्रों वृत्र हत्वा।

देवतांभिश्चेन्द्रियेणं च व्यार्ध्यत। स एतमैन्द्राग्नमेकांदशकपालमपश्यत्।

तन्निरंवपत्। तेन वै स देवतांश्चेन्द्रियं चार्वारुन्थ। यदैन्द्राग्नमेकांदशकपालं

निर्वपंति। देवता श्रेव तेने निद्रयं च यर्जमानो ऽवंरुन्धे। ऋषभो वही दक्षिणा॥७॥ यद्वही। तेनाँग्नेयः। यदंषभः। तेनैन्द्रः समृद्धौ। आग्नेयमष्टाकंपालं निर्वपति। ऐन्द्रं दिधे। यदाँग्रेयो भवंति। अग्निर्वै यंज्ञमुखम्। युज्ञमुखम्विद्धं पुरस्ताँद्धत्ते। यदैन्द्रं दधि॥८॥

इन्द्रियमेवावंरुन्धे। ऋषभो वही दक्षिणा। यद्वही। तेनाँग्नेयः। यदंषुभः। तेनैन्द्रः समृद्धै। यावंतीर्वे प्रजा ओषंधीनामहुंतानामाश्वन्। ताः परांऽभवन्। आग्रयणं भंवति हुताद्याय। यजमानस्यापराभावाय॥९॥

देवा वा ओषंधीष्वाजिमंयुः। ता इंन्द्राग्नी उदंजयताम्। तावेतमैंन्द्राग्नं

द्वादेशकपालं निरंवृणाताम्। यदैँन्द्राग्नो भवत्युञ्जिंत्यै। द्वादेशकपालो भवति। द्वादेश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरेणैवास्मा अन्नमवंरुन्धे। वैश्वदेवश्वरुभंवति। वैश्वदेवं वा अन्नम्। अन्नमेवास्मै स्वदयति॥१०॥

प्रथमजो वृथ्सो दक्षिणा समृद्धौ। सौम्य श्यांमाकं च्रुं निर्वपित। सोमो वा अंकृष्टप्च्यस्य राजां। अकृष्टप्च्यमेवास्में स्वदयित। वासो दक्षिणा। सौम्य हि देवत्या वासः समृद्धौ। सरंस्वत्यै च्रुं निर्वपित। सरंस्वते च्रुम्। मिथुनमेवावं रुन्धे। मिथुनौ गावौ दक्षिणा समृद्धौ। एति वा एष यंज्ञमुखादध्याः। योऽग्नेर्देवताया एति। अष्टावेतानि ह्वी १षि भवन्ति। अष्टाक्षरा गायत्री। गायत्रीऽग्निः। तेनैव यंज्ञमुखादध्यां अग्नेर्देवतांयै नैति॥११॥

र्ड्युर्न्रिखंदयतेऽङ्कुष्ठाभ्यां ज्होत्यनुंमितर्द्वतां निर्वपंति वही दक्षिणा यदैन्द्रं दध्यपंराभावाय स्वदयति गावौ दक्षिणा समृंद्धौ पर्द॥[१] वैश्वद्वेवन् वै प्रजापंतिः प्रजा असृजत। ताः सृष्टा न प्राजायन्त। सौंऽग्निरंकामयत। अहमिमाः प्रजनयेयमितिं। स प्रजापंतये शुचंमदधात्।

सोंऽशोचत्प्रजामिच्छमांनः। तस्माद्यं चं प्रजा भुनिक्त् यं च न। तावुभौ शोंचतः प्रजामिच्छमांनौ। तास्विग्नमप्यंसृजत्। ता अग्निरध्यैत्॥१२॥

सोमो रेतोंऽदधात्। स्विता प्राजंनयत्। सरंस्वती वाचंमदधात्। पूषाऽपोंषयत्। ते वा एते त्रिः संवथ्सरस्य प्रयुंज्यन्ते। ये देवाः पुष्टिंपतयः। स्वथ्सरो वै प्रजापंतिः। स्वथ्सरेणैवास्मै प्रजाः प्राजंनयत्। ताः प्रजा जाता म्रुतौंऽघ्नन्। अस्मानिष् न प्रायुंक्षतेति॥१३॥

स पृतं प्रजापंतिर्मारुतः सप्तकंपालमपश्यत्। तन्निरंवपत्। ततो वै प्रजाभ्योऽकल्पत। यन्मारुतो निरुप्यतें। यज्ञस्य क्रुस्यैं। प्रजानामघाताय। सप्तकंपालो भवति। सप्तगंणा वै मुरुतः। गृणश पृवास्मै विशं कल्पयति। स प्रजापंतिरशोचत्॥१४॥

याः पूर्वाः प्रजा असृक्षि। मुरुत्स्ता अविधिषुः। कथमपर्राः सृजेयेति। तस्य शुष्मे आण्डं भूतं निरेवर्तत। तद्युदंहरत्। तदंपोषयत्। तत्प्राजायत। आण्डस्य वा पुतद्रूपम्। यदामिक्षां। यद्युद्धरंति॥१५॥

षष्ठमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

प्रजा एव तद्यजंमानः पोषयति। वैश्वदेव्यांमिक्षां भवति। वैश्वदेव्यों वै प्रजाः। प्रजा एवास्मै प्रजनयति। वाजिनमानयति। प्रजास्वेव प्रजातासु रेतो दधाति। द्यावापृथिव्यं एकंकपालो भवति। प्रजा एव प्रजांता द्यावापृथिवीभ्यांम्भयतः परि गृह्णाति। देवासुराः संयंत्ता आसन्। सौंऽग्निरंब्रवीत्॥१६॥

मामग्रे यजत। मया मुखेनास्राञ्जेष्यथेति। मां द्वितीयमिति सोमोंऽब्रवीत्। मया राज्ञां जेष्यथेतिं। मां तृतीयमितिं सिवता। मया प्रसूता जेष्यथेतिं। मां

चंतुर्थीमिति सरस्वती। इन्द्रियं वोऽहं धाँस्यामीति। मां पश्चममिति पूषा। मयाँ प्रतिष्ठयां जेष्यथेतिं॥१७॥ तैंऽग्निना मुखेनासुंरानजयन्। सोमेन राज्ञां। सवित्रा प्रसूताः। सरस्वतीन्द्रियमंदधा

पूषा प्रतिष्ठाऽऽसींत्। ततो वै देवा व्यंजयन्त। यदेतानि हवी १ षि निरुप्यन्ते

विजित्यै। नोत्तंरवेदिमुपंवपति। पशवो वा उत्तरवेदिः। अजाता इव ह्यंतर्हिं

पशर्वः॥१८॥

पृदित्यंशोचद्युद्धरत्यव्रवीत्प्रतिष्ठयां जेष्य्येत्येतर्हि प्रश्वः॥——[२] त्रिवृद्धर्हिर्भवति। माता पिता पुत्रः। तदेव तन्मिथुनम्। उल्बं गर्भो ज्रायुं। तदेव तन्मिथुनम्। त्रेधा बर्हिः सन्नद्धं भवति। त्रयं इमे लोकाः। एष्वेव लोकेषु

प्रति तिष्ठति। एकधा पुनः सन्नेद्धं भवति। एकं इव ह्यंयं लोकः॥१९॥

अस्मिन्नेव तेनं लोके प्रतिं तिष्ठति। प्रसुवों भवन्ति। प्रथमजामेव पृष्टिमवंरुन्धे। प्रथमजो वथ्सो दक्षिणा समृद्धे। पृषदाज्यं गृह्णाति। प्रावो वै पृषदाज्यम्। प्रश्नेवावं रुन्धे। पृश्रुगृहीतं भवति। पाङ्गा हि प्रावः। बहुरूपं भवति॥२०॥

बहुरूपा हि प्शवः समृद्धै। अग्निं मंन्थन्ति। अग्निमृंखा वै प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। यद्ग्निं मन्थन्ति। अग्निमृंखा एव तत्प्रजा यजंमानः सृजते। नवं प्रयाजा इंज्यन्ते। नवांनूयाजाः। अष्टौ ह्वी १षि। द्वावांघारौ। द्वावाज्यंभागौ॥२१॥

त्रिष्शथ्सम्पंद्यन्ते। त्रिष्शदंक्षरा विराट्। अन्नं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवंरुन्धे।

यजंमानो वा एकंकपालः। तेज् आज्यम्। यदेकंकपाल आज्यंमानयंति। यजंमानमेव तेजंसा समर्धयति। यजंमानो वा एकंकपालः। पृशव आज्यम्॥२२॥

यदेकंकपाल आज्यंमानयंति। यजंमानमेव पशुभिः समर्धयति। यदल्पंमानयेत्।

अल्पां एनं पृशवों भुञ्जन्त उपंतिष्ठेरन्। यद्बह्वानयेत्। बहवं एनं पृशवोऽभुंञ्जन्त उपंतिष्ठेरन्। बह्वांनीयाविः पृष्ठं कुर्यात्। बहवं एवैनं पृशवों भुञ्जन्त उपंतिष्ठन्ते। यजमानो वा एकंकपालः। यदेकंकपालस्यावद्येत्॥२३॥

यजंमानस्यावंद्येत्। उद्घा माद्येद्यजंमानः। प्र वां मीयेत। स्कृदेव होंतृव्यः। स्कृदिंव हि सुंवर्गो लोकः। हुत्वाऽभि जुंहोति। यजंमानमेव सुंवर्गं लोकं गंमियत्वा। तेजंसा समर्धयति। यजंमानो वा एकंकपालः। सुवर्गो लोक आंहवनीयः॥२४॥

यदेकंकपालमाहवनीयें जुहोतिं। यजंमानमेव सुंवर्गं लोकं गंमयति। यद्धस्तेन जुहुयात्। सुवर्गाल्लोकाद्यजंमानमवंविध्येत्। स्रुचा जुंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य समंष्ट्री। यत्प्राङ्घर्षत। देवलोकम्भिजंयेत्। यद्देक्षिणा पितृलोकम्। यत्प्रत्यक्॥२५॥

रक्षार्शस यज्ञर हेन्युः। यदुदङ्कं। मृनुष्यलोकम्भिजयेत्। प्रतिष्ठितो होत्व्यः। एकंकपालं वै प्रतितिष्ठन्तं द्यावापृथिवी अनु प्रति तिष्ठतः। द्यावापृथिवी ऋतवः। ऋतून् यज्ञः। यज्ञं यजमानः। यजमानं प्रजाः। तस्मात्प्रतिष्ठितो होत्व्यः॥२६॥

वाजिनों यजित। अग्निर्वायुः सूर्यः। ते वै वाजिनः। तानेव तद्यंजित। अथो खल्वांहुः। छन्दार्भसे वै वाजिन इतिं। तान्येव तद्यंजित। ऋख्सामे वा इन्द्रंस्य हरीं सोमपानौं। तयोः परिधयं आधानम्। वाजिनं भागधेयम्॥२७॥

यदप्रहत्य परिधीं जुंहुयात्। अन्तर्राधानाभ्यां घासं प्रयंच्छेत्। प्रहत्यं परिधीं जुंहोति। निर्राधानाभ्यामेव घासं प्रयंच्छिति। बर्हिषं विषिश्चन्वाजिनमा नयित। प्रजा वै बर्हिः। रेतो वाजिनम्। प्रजास्वेव रेतो दधाति। समुपहूर्यं भक्षयन्ति। एतथ्सोमपीथा ह्येते। अथो आत्मन्नेव रेतो दधते। यजमान उत्तमो भक्षयित। प्रशवो वै वाजिनम्। यजमान एव प्रशून्प्रतिष्ठापयन्ति॥२८॥

लोको बंहुरूपं भंवत्याज्यंभागौ पृशव आज्यंमवद्येदांहवनीयः प्रत्यक्तस्मात्प्रतिष्ठितो होत्व्यो भाग्धेयंमेते चत्वारि च॥——[३]

प्रजापंतिः सिवता भूत्वा प्रजा अंसृजत। ता एंन्मत्यंमन्यन्त। ता अंस्मादपाँक्रामन्। ता वर्रुणो भूत्वा प्रजा वर्रुणेनाग्राहयत्। ताः प्रजा वर्रुणगृहीताः। प्रजापंतिं पुन्रुपाधावन्नाथिमच्छमानाः। स एतान्य्रजापंतिर्वरुण-प्रधासानपश्यत्। तां निर्वपत्। तैर्वे स प्रजा वर्रुणपाशादंमुश्चत्। यद्वरुणप्रधासा निरुप्यन्ते॥२९॥

प्रजानामवंरुणग्राहाय। तासां दक्षिणो बाहुर्न्यक्र आसीत्। स्वयः प्रसृतः। स एतां द्वितीयां दक्षिणतो वेदिमुदंहन्। ततो वे स प्रजानां दक्षिणं बाहुं प्रासारयत्। यद्वितीयां दक्षिणतो वेदिमुद्धन्ति। प्रजानांमेव तद्यजमानो दक्षिणं बाहुं प्रसारयित। तस्मांचातुर्मास्ययाज्यंमुष्मिं छोक उभयाबांहुः। यज्ञाभिंजित् इ ह्यंस्य। पृथमात्राद्वेदी असंम्भिन्ने भवतः॥३०॥

तस्मौत्पृथमात्रं व्यश्सौँ। उत्तरस्यां वेद्यांमुत्तरवेदिमुपं वपति। पृशवो वा

उंत्तरवेदिः। पृशूनेवावंरुन्थे। अथों यज्ञपुरुषोऽनंन्तरित्यै। पृतद्वाँह्मणान्येव पश्चं हुवी १ षिं। अथैष ऐंन्द्राग्नो भंवति। प्राणापानौ वा एतौ देवानाँम्। यदिन्द्राग्नी। यदैन्द्राग्नो भवति॥३१॥

प्राणापानावेवावं रुन्धे। ओजो बलं वा एतौ देवानांम्। यदिंन्द्राग्नी। यदैंन्द्राग्नी। भवंति। ओजो बलंमेवावं रुन्धे। मारुत्यांमिक्षां भवति। वारुण्यांमिक्षां। मेषी चं मेषश्चं भवतः। मिथुना एव प्रजा वंरुणपाशान्मुंश्चति। लोमशौ भंवतो मेध्यत्वायं॥३२॥

श्मीपुर्णान्युपं वपित। घासमेवाभ्यामिपं यच्छित। प्रजापितमृत्राद्यं नोपानमत्। स एतेनं श्तेध्मेन हृविषाऽन्नाद्यमवांरुन्थ। यत्पंरः श्तानिं शमीपुर्णानि भवंन्ति। अन्नाद्यस्यावंरुद्धे। सौम्यानि वे क्रीरांणि। सौम्या खलु वा आहुंतिर्दिवो वृष्टिं च्यावयित। यत्क्रीरांणि भवंन्ति। सौम्ययैवाहुंत्या दिवो वृष्टिमवंरुन्थे। काय एकंकपालो भवति। प्रजानां कन्त्वायं। प्रतिपूरुषं कंरम्भपात्राणि भवन्ति।

जाता एव प्रजा वंरुणपाशान्मुंश्चिति। एक्मितिरिक्तम्। जिन्छियमाणा एव प्रजा वंरुणपाशान्मुंश्चिति॥३३॥

वरुणपाशान्मुश्चीते॥ ३३॥ निरुप्यन्ते भवतो भवति मेध्यत्वायं रुन्धे षद्वं॥———————————[४]

उत्तरस्यां वेद्यांमन्यानिं हवी १ षिं सादयति। दक्षिणायां मारुतीम्। अपधुरमेवैनां

युनिक्तः। अथो ओर्ज पुवासामवं हरितः। तस्माद्धह्मंणश्च क्षुत्राच्च विशोंऽन्यतो-ऽपकृमिणीः। मारुत्या पूर्वया प्रचरितः। अनृतमेवावं यजते। वारुण्योत्तरया। अन्तत पुव वर्रुणमवं यजते। यदेवाध्वर्युः करोति॥३४॥ तत्प्रंतिप्रस्थाता करोति। तस्माद्यच्छ्रेयांन्करोति। तत्पापीयान्करोति। पत्नीं वाचयति। मध्यांमेवैनां करोति। अथो तपं प्रवैनामुपं नयित। यञ्चार् सन्तन्न

प्रघास्यान् हवामह् इति पत्नीमुदानंयति। अह्वंतैवैनाम्। यत्पत्नी

प्रंब्रूयात्। प्रियं ज्ञाति र रुन्थ्यात्। असौ में जार इति निर्दिशेत्। निर्दिश्यैवैनं

वरुणपाशेनं ग्राहयति॥३५॥

पुरोनुवाक्यांमनुब्रूयात्। निर्वीर्यो यजंमानः स्यात्। यजंमानोऽन्वांह। आत्मन्नेव वीर्यं धत्ते। उभौ याज्या सवीर्यत्वायं। यद्ग्रामे यदरंण्य इत्यांह। यथोदितमेव वर्रणमवं यजते। यज्मानदेवत्यो वा आहवनीर्यः॥३६॥

भ्रातृब्यदेवत्यो दक्षिणः। यदांहवनीये जुहुयात्। यजमानं वरुणपाशेनं ग्राहयेत्। दक्षिणेऽग्रौ जुंहोति। भ्रातृंव्यमेव वरुणपाशेनं ग्राहयति। शूर्पेण जुहोति। अन्यमेव वरुणमवं यजते। शीर्षत्रीध निधायं जुहोति। शीर्षत एव वरुणमवं यजते। प्रत्यिक्षिष्ठं जुहोति॥३७॥

प्रत्यङ्केष्व वंरुणपाशान्निर्मुच्यते। अऋन्कर्म कर्मकृत इत्याह। देवा-ऽनृणं निरवदायं। अनृणा गृहानुप प्रेतेति वावैतदाह। वरुणगृहीतं वा एतद्यज्ञस्यं। यद्यजुंषा गृहीतस्यांतिरिच्यंते। तुषांश्च निष्कासश्चं। तुषैश्च निष्कासेनं चावभृथमवैति। वरुणगृहीतेनैव वरुणमवयजते। अपोऽवभृथमवैति॥३८॥ अपस् व वरुणः। साक्षादेव वरुणमवयजते। प्रतियुतो वरुणस्य पाश् इत्यांह। वृरुणपाशादेव निर्मुंच्यते। अप्रंतीक्षमा यंन्ति। वरुणस्यान्तर्हित्यै। एधौंऽस्येधिषीमहीत्यांह। समिधैवाग्निं नंमस्यन्तं उपायंन्ति। तेजोंऽसि तेजो मियं धेहीत्यांह। तेजं पुवाऽऽत्मन्धंत्ते॥३९॥

क्रोति ग्राहयत्याहवनीयस्तिष्ठं जुहोत्यपीऽवभृथमवैति धत्ते॥————[५] देवासुराः संयेत्ता आसन्। सौंऽग्निरंब्रवीत्। ममेयमनींकवती तुनूः। तां प्रीणीत। अथासुरान्भि भविष्यथेति। ते देवा अग्नयेऽनींकवते पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निरंवपन्। सौंऽग्निरनींकवान्थस्वेनं भागधेयेन प्रीतः। चतुर्धाऽनींकान्यजनयत।

ततो देवा अभवन्। पराऽसुराः॥४०॥

यद्ग्रयेऽनींकवते पुरोडाशंमृष्टाकंपालं निर्वपंति। अग्निमेवानींकवन्त् स्वेनं भाग्धेयेन प्रीणाति। सौंऽग्निरनींकवान्थ्स्वेनं भाग्धेयेन प्रीतः। चतुर्धाऽनींकानि जनयते। असौ वा आंदित्यौंऽग्निरनींकवान्। तस्यं र्ष्टमयोऽनींकानि। साक्षस्यंणोद्यता निर्वपति। साक्षादेवास्मा अनींकानि जनयति। तेऽसुराः परांजिता

यन्तंः। द्यावांपृथिवी उपांश्रयन्॥४१॥

ऽजुहवुः॥४३॥

यजमानो भ्रातृं व्यान्थ्यन्तंपति। मध्यन्दिने निर्वपति। तर्हि हि तेक्ष्णिष्ठं तपंति। चरुर्भविति। सर्वतं एवैनान्थ्यन्तंपति। ते देवाः श्वीविज्यिनः सन्तः। सर्वासां दुग्धे गृहमेधीयं चरुं निरंवपन्॥४२॥ आशिता एवाद्योपंवसाम। कस्य वाऽहेदम्। कस्यं वा श्वो भवितेति। स शृतो-ऽभवत्। तस्याहुंतस्य नाश्वनं। न हि देवा अहुंतस्याश्वनितं। तेंऽब्रुवन्। कस्मां इम होंष्याम् इति। मुरुद्धों गृहमेधिभ्यं इत्यंब्रुवन्। तं मुरुद्धों गृहमेधिभ्यं।

ते देवा मरुद्धाः सान्तपनेभ्यंश्चरं निरंवपन्। तान्द्यावांपृथिवीभ्यांमेवोभयतः

समंतपन्। यन्मरुद्धाः सान्तपनेभ्यंश्चरं निर्वपंति। द्यावांपृथिवीभ्यांमेव तदुंभयतो

ततों देवा अभवन्। पराऽसुंराः। यस्यैवं विदुषों मुरुद्धों गृहमेधिभ्यों गृहे जुह्वंति। भवंत्यात्मनां। परांऽस्य भ्रातृंव्यो भवति। यद्वै यज्ञस्यं पाकुत्रा ऋियतें। पृश्वयं तत्। पाकुत्रा वा पुतित्रियते। यन्नेध्माबुर्हिर्भवंति। न सांमिधेनीरुन्वाहं॥४४॥

न प्रयाजा इज्यन्तैं। नानूयाजाः। य एवं वेदं। पृशुमान्भंवति। आज्यंभागौ यजित। यज्ञस्यैव चक्षुंषी नान्तरेति। मुरुतों गृहमेधिनों यजित। भागधेयेनैवैनान्थ्समंध्यति। अग्निश्स्वंष्टकृतंं यजित प्रतिष्ठित्यै। इडाँन्तो भवित। पृशवो वा इडाँ। पृशुष्वेवोपरिष्टात्प्रतिं तिष्ठति॥४५॥

यत्पत्नीं गृहमेधीयंस्याश्जीयात्। गृहुमेध्येव स्याँत्। वि त्वंस्य यज्ञ ऋध्येत। यन्नाश्जीयात्। अगृहमेधी स्यात्। नास्यं यज्ञो व्यृद्धोत। प्रतिवेशं पचेयुः। तस्याँश्जीयात्। गृहुमेध्येव भवति। नास्यं यज्ञो व्यृद्धाते॥४६॥

ते देवा गृंहमेधीयेनेष्ट्वा। आशिता अभवन्। आश्चेताभ्यंश्चत। अनुं वृथ्सानंवासयन्। तेभ्योऽसुंराः क्षुधं प्राहिण्वन्। सा देवेषुं लोकमविंत्वा। असुंरान्पुनंरगच्छत्। गृह्मेधीयेनेष्ट्वा। आशिता भवन्ति। आश्चेतेऽभ्यंश्चते॥४७॥ अन् वथ्सान् वांसयन्ति। भ्रातृंव्यायैव तद्यजंमानः क्षुधं प्रहिणोति। ते देवा

गृंहम्धीयेनेष्ठा। इन्द्रांय निष्कासं न्यंदधुः। अस्मानेव श्व इन्द्रो निहिंतभाग उपावर्तितेति। तानिन्द्रो निहिंतभाग उपावर्तत। गृह्म्धीयेनेष्ठा। इन्द्रांय निष्कासं निद्ध्यात्। इन्द्रं पृवैनं निहिंतभाग उपावर्तत। गार्हपत्ये जुहोति॥४८॥ भाग्धेयेनैवैन् सम्ध्यति। ऋषभमाह्वंयति। वषद्भार पृवास्य सः। अथो इन्द्रियमेव तद्वीर्यं यज्ञंमानो भ्रातृव्यंस्य वृङ्के। इन्द्रों वृत्र ह्त्वा। परां परावतंमगच्छत्। अपाराधमिति मन्यंमानः। सौंऽब्रवीत्। क इदं वेदिष्यतीति।

तें ऽब्रुवन्म्रुतो वरं वृणामहै॥४९॥
अर्थ व्यं वेदाम। अस्मभ्यंमेव प्रंथम हिविनिरुप्याता इति। त एंन्मध्यंक्रीडन्।
तत्क्रीडिनां क्रीडित्वम्। यन्मुरुद्धाः क्रीडिभ्यः प्रथम हिविनिरुप्यते विजित्यै।
साक सूर्येणोद्यता निर्वपति। एतस्मिन्वै लोक इन्द्रों वृत्रमंहुन्थ्समृद्धै।
एतद्वाह्मणान्येव पश्चं ह्वी १षि। एतद्वाह्मण ऐन्द्राग्नः। अथैष ऐन्द्रश्चरुर्भवति॥५०॥

उद्धारं वा एतिमन्द्र उदंहरत। वृत्र॰ हृत्वा। अन्यासुं देवतास्विधे। यदेष ऐन्द्रश्चरुभवंति। उद्धारमेव तं यजंमान उद्धंरते। अन्यासुं प्रजास्विधे। वैश्वकुर्मण एकंकपालो भवति। विश्वान्येव तेन कर्माणि यजंमानोऽवंरुन्थे॥५१॥

कृष्यतेऽभ्यं अते ज्होति वृणामहै भवत्युष्टी चं॥———[७] वृश्वदेवेन वै प्रजापंतिः प्रजा असृजत। ता वंरुणप्रघासैर्वरुणपाशादंमुश्चत्। साकुमेधेः प्रत्यंस्थापयत्। त्र्यंम्बकै रुद्रं निरवादयत। पितृयुज्ञेनं सुवृगं

साक्रमेधेः प्रत्यंस्थापयत्। त्र्यंम्बकै रुद्रं निरवादयत। पितृयज्ञेनं सुवृगं लोकमंगमयत्। यद्वैश्वदेवेन यजंते। प्रजा एव तद्यजंमानः सृजते। ता वंरुणप्रघासवंरुणपाशान्मंश्चति। साक्रमेधेः प्रतिष्ठापयति। त्र्यंम्बकै रुद्रं निरवंदयते॥५२॥

पितृयज्ञेनं सुवृगं लोकं गंमयति। दृक्षिणतः प्रांचीनावीती निर्वपिति। दृक्षिणावृद्धि पितृणाम्। अनांदत्य तत्। उत्तर्त एवोपवीय निर्वपेत्। उभये हि देवाश्चं पितरंश्चेज्यन्तैं। अथो यदेव दंक्षिणार्धेऽधि श्रयंति। तेनं दिक्षिणार्वृत्। सोमांय बहुरूपा धाना भवन्ति। अहोरात्राणांमभिजित्यै। पितृभ्यौऽग्निष्वात्तेभ्यो मन्थम्। अर्धमासा वै पितरौऽग्निष्वात्ताः॥५४॥ अर्धमासानेव प्रीणाति। अभिवान्यांयै दुग्धे भवति। सा हि पितृदेवत्यं दुहे।

मासांनेव प्रींणाति। यस्मिन्वा ऋतौ पुरुषः प्रमीयंते। सौंऽस्यामुष्मिं ल्लोके भंवति।

संवथ्सरमेव प्रीणाति। पितृभ्यों बर्हिषद्धों धानाः। मासा वै पितरों बर्हिषदंः।

पितृमते पुरोडाश्र् षद्कपालं निर्वपति। संवथ्सरो वै सोमः पितृमान्॥५३॥

यत्पूर्णम्। तन्मेनुष्यांणाम्। उपूर्यर्धो देवानाम्। अर्धः पितृणाम्। अर्ध उपमन्थति। अर्धो हि पितृणाम्। एक्योपमन्थति॥५५॥ एका हि पितृणाम्। दक्षिणोपमन्थति। दक्षिणावृद्धि पितृणाम्। अनार्भ्योपमन्थति।

ति पितृन्गच्छेति। इमान्दिशं वेदिमुर्द्धन्ति। उभये हि देवाश्चं पितरंश्चेज्यन्तै। चतुंः स्रिक्तिर्भवति। सर्वा ह्यनु दिशंः पितरंः। अखांता भवति॥५६॥

खाता हि देवानाम। मध्यतों ऽग्निराधीयते। अन्ततो हि देवानामाधीयतें।

वर्षीयानिध्म इध्माद्भवित् व्यावृत्त्यै। परिश्रयित। अन्तर्हितो हि पितृलोको मनुष्यलोकात्। यत्परुषि दिनम्। तद्देवानाम्। यदंन्तरा। तन्मनुष्याणाम्॥५७॥

यथ्समूलम्। तत्पितुणाम्। समूलं बुर्हिर्भवित् व्यावृत्त्यै। दक्षिणा स्तृणाति।

दक्षिणावृद्धि पितृणाम्। त्रिः पर्येति। तृतीये वा इतो लोके पितरंः। तानेव प्रीणाति। त्रिः पुनः पर्येति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते॥५८॥ षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। यत्प्रंस्तरं यजुंषा गृह्णीयात्। प्रमायुंको यजंमानः

षङ्घा ऋतवः। ऋतून्व प्राणात। यत्प्रस्तुर यजुषा गृह्णायात्। प्रमायुका यजमानः स्यात्। यत्र गृह्णीयात्। अनायत्नः स्यात्। तूष्णीमेव न्यंस्येत्। न प्रमायुको भवंति। नानायत्नः। यत्रीन्यंरिधीन्यंरिद्ध्यात्॥५९॥

मृत्युना यजंमानं परिगृह्णीयात्। यन्न पंरिद्ध्यात्। रक्षा रेसि युज्ञर हंन्युः। ह्यो पंरिधी परिद्धाति। रक्षंसामपंहत्यै। अथो मृत्योरेव यजंमानम्थ्यंजिति। यत्रीणि त्रीणि ह्वी इष्यंदाहरेयुः। त्रयंस्रय एषार साकं प्रमीयेरन्। एकैंकमनूचीनांन्युदाहरिन्त। एकैंक पुवैषांमन्वश्चः प्रमीयते। कृशिपं कशिप्व्यांय।

उपबर्हणमुपबर्हण्याय। आञ्चनमाञ्चन्याय। अभ्यञ्चनमभ्यञ्चन्याय। यथाभागमे-वैनान्त्रीणाति॥६०॥

विनान्प्रीणाति॥६०॥

निरवंदयते पितृमानंग्निष्वात्ता एक्योपं मन्थृत्यखांता भवति मनुष्याणां पद्यन्ते परिदुध्यान्मीयते पश्चं च॥————[८]

अग्नयं देवेभ्यः पितृभ्यः सिम्ध्यमानायानुं ब्रूहीत्यांह। उभये हि देवाश्चं पितरंश्चेज्यन्तें। एकामन्वांह। एका हि पितृणाम्। त्रिरन्वांह। त्रिर्हि देवानांम्। आधारावाधारयित। यज्ञप्रषोरनंन्तिरत्ये। नार्षेयं वृणीते। न होतांरम्॥६१॥ यदांर्षेयं वृणीत। यद्धोतांरम्। प्रमायुंको यज्ञंमानः स्यात्। प्रमायुंको होतां। तस्मान्न वृणीते। यज्ञंमानस्य होतुंर्गोपीथायं। अपं बर्हिषः प्रयाजान् यंजिति।

युज्ञस्यैव चक्षुंषी नान्तरंति। प्राचीनावीती सोमं यजति। पितृदेवत्यां हि। पृषाऽऽहुंतिः। पश्चकृत्वोऽवं द्यति। पश्च ह्यंता देवताः। द्वे पुरोऽनुवाक्ये। याज्यां देवतां वषद्भारः। ता एव प्रीणाति। सन्तंतमवं द्यति॥६३॥

प्रजा वै ब्रहिः। प्रजा एव मृत्योरुथ्मृंजित। आज्यंभागौ यजित॥६२॥

ऋतूना सन्तंत्यै। प्रैवैभ्यः पूर्वया पुरोऽनुवाक्यंयाऽऽह। प्रणंयति द्वितीयंया। गमयंति याज्यंया। तृतीये वा इतो लोके पितरंः। अह्नं एवैनान्पूर्वया पुरो-उनुवाक्यंयाऽत्यानंयति। रात्रिंयै द्वितीयंया। ऐवैनान् याज्यंया गमयति। दक्षिणतों-ऽवदायं। उदङ्कातें क्रामित व्यावृत्त्यै॥६४॥

आ स्वधेत्याश्रांवयति। अस्तुं स्वधेतिं प्रत्याश्रांवयति। स्वधा नम इति वर्षद्वरोति। स्वधाकारो हि पिंतृणाम्। सोममग्रे यजति। सोमंप्रयाजा हि पितरंः। सोमं पितृमन्तं यजित। संवथ्सरो वै सोमंः पितृमान्। संवथ्सरमेव तद्यंजित। पितृन्बंहिषदों यजति॥६५॥

ये वै यज्वांनः। ते पितरों बर्हिषदंः। तानेव तद्यंजिति। पितृनंग्निष्वात्तान् यंजिति। ये वा अयंज्वानो गृहमेधिनंः। ते पितरौंऽग्निष्वात्ताः। तानेव तद्यंजिति। अग्निं केव्यवाहंनं यजित। य एव पिंतृणामग्निः। तमेव तद्यंजिति॥६६॥

अथो यथाऽग्नि इस्विष्टकृतं यजीति। तादृगेव तत्। एतत्ते तत ये च त्वामन्विति

तिसृषुं स्रक्तीषु निदंधाति। तस्मादा तृतीयात्पुरुंषान्नाम न गृंह्वन्ति। एतावंन्तो

हीज्यन्तें। अत्रं पितरो यथाभागं मन्दध्वमित्यांह। ह्लीका हि पितरंः। उदंश्रो

निष्क्रांमन्ति। एषा वै मंनुष्यांणां दिक्। स्वामेव तिद्दश्मनु निष्क्रांमन्ति॥६७॥ आहुवनीयमुपंतिष्ठन्ते। न्यंवास्मै तद्भुंवते। यथ्मत्यांहवनीयें। अथान्यत्र चरन्ति। आतिमंतोरुपंतिष्ठन्ते। अग्निमेवोपंद्रष्टारं कृत्वा। पितृन्निरवंदयन्ते। अन्तं वा एते

प्राणानां गच्छन्ति। य आतिमेतोरुप् तिष्ठंन्ते। सुसन्दर्शं त्वा व्यमित्यांह॥६८॥ प्राणो वै सुंसन्दक्। प्राणमेवाऽऽत्मन्दंधते। योजा न्विंन्द्र ते हरी इत्यांह। प्राणमेव पुनंरयुक्त। अक्षन्नमीमदन्त हीति गार्हंपत्यमुपंतिष्ठन्ते। अक्षन्नमीमदन्ताथ त्वोपंतिष्ठामह् इति वावैतदांह। अमीमदन्त पितरंः सोम्या इत्यभि प्रपंद्यन्ते। अमीमदन्त पितरोऽथं त्वाऽभि प्रपंद्यामह् इति वावैतदांह। अपः परिषिश्रति। मार्जयंत्येवैनान्॥६९॥

अथों तुर्पयंत्येव। तृप्यंति प्रजयां पुशुभिः। य एवं वेदं। अपं बर्हिषावनूयाजौ

यंजिति। प्रजा वै ब्र्हिः। प्रजा एव मृत्योरुथ्सृंजिति। चृतुरंः प्रयाजान् यंजिति। द्वावंनूयाजौ। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। न पत्यन्वांस्ते। न संयोजयन्ति। यत्पत्यन्वासीत। यथ्संयाजयेयुः। प्रमायुंका स्यात्। तस्मान्नान्वांस्ते। न संयोजयन्ति। पित्रियै गोपीथायं॥७०॥

होतांरमाञ्यंभागौ यजित सन्तंतमवंद्यति व्यावृत्त्ये बर्हिषदौ यजित तमेव तद्यंज्ञत्यनु निष्क्रांमन्त्याहैनानृतवो नवं च॥—[९] प्रतिपूरुषमेकंकपालां निर्वपति। जाता एव प्रजा रुद्रान्निरवंदयते।

प्रात्पूरुषमककपाला । नवपाता जाता पुव प्रजा रुद्रााञ्चरवदयता एकमितिरिक्तम्। जुनिष्यमाणा पुव प्रजा रुद्राञ्चिरवदयते। एककपाला भवन्ति। पुक्धैव रुद्रं निरवदयते। नाभिघारयति। यदंभिघारयेत्। अन्तर्वचारिण र्रं रुद्रं कुर्यात्। पुकोल्मुकेनं यन्ति॥७१॥

ति रुद्रस्यं भाग्धेयम्। इमान्दिशं यन्ति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्रो वा अपृशुकाया आहुत्यै नातिष्ठत। असौ ते पृशुरिति निर्दिशेद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तमंस्मै पृशुं निर्दिशति। यदि न द्विष्यात्। आखुस्ते

न ग्राम्यान्पशून् हिनस्तिं। नार्ण्यान्। चृतुष्पथे जुंहोति। एष वा अंग्रीनां

पशुरितिं ब्रूयात्॥७२॥

खलुं। अन्तमेनैव होत्व्यम्। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते॥७३॥
एष ते रुद्र भागः सह स्वस्नाऽम्बिक्येत्यांह। शरद्वा अस्याम्बिका स्वसां। तया
वा एष हिनस्ति। य॰ हिनस्ति। तयैवैन॰ सह शंमयति। भेषजङ्गव इत्यांह।
यावंन्त एव ग्राम्याः पशवंः। तेभ्यों भेषजं करोति। अवाम्ब रुद्रमंदिमहीत्यांह।
आशिषंमेवैतामा शांस्ते॥७४॥

पड्बींशो नामं। अग्निवत्येव जुंहोति। मध्यमेनं पर्णेनं जुहोति। सुग्ध्यंषा। अथो

त्र्यंम्बकं यजामह् इत्यांह। मृत्योमुंक्षीय माऽमृतादिति वावैतदांह। उत्किरन्ति। भगंस्य लीफ्सन्ते। मूतेंकृत्वाऽऽसंजन्ति। यथा जनं यतेंऽवसं क्रोतिं। ताहगेव तत्। एष तें रुद्र भाग इत्यांह निरवंत्त्यै। अप्रतीक्षमा यंन्ति। अपः परिषिश्चति। रुद्रस्यान्तर्हित्यै। प्र वा पुतेंऽस्माल्लोकाच्यंवन्ते। ये त्र्यंम्बकैश्चरंन्ति। आदित्यं च्रुं

पुनरेत्य निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठन्ति॥७५॥

युन्ति ब्रूयान्त्रिरवंदयते शास्ते सिश्चित् षद्वं॥————[१०] अनुंमत्यै वैश्वदेवेन ताः सृष्टास्त्रिवृत्प्रजापंतिः सवितोत्तंरस्यान्देवासुराः सौंऽग्निर्यत्पत्नीं वैश्वदेवेन ता वंरुणप्रघासैरग्नयें

देवेभ्यः प्रतिपूरुषं दर्श॥१०॥

अर्नुमत्यै प्रथम्जो वृथ्सो बंहुरूपा हि पृशव्स्तस्मांत्पृथमात्रं यद्ग्रयेऽनींकवत उद्धारं वा अग्नये देवेभ्यः प्रतिपूरुषं पश्चेंसप्ततिः॥७५॥

अनुमत्यै प्रतिं तिष्ठन्ति॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥सप्तमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

पृतद्वाँह्मणान्येव पश्चं ह्वी १ षिं। अथेन्द्रांय शुनासीरांय पुरोडाशं द्वादंशकपालं निर्वपति। संवथ्सरो वा इन्द्राशुनासीरं। संवथ्सरेणैवास्मा अन्नमवं रुन्धे। वायव्यं पयो भवति। वायुर्वे वृष्ट्यै प्रदापयिता। स पृवास्मै वृष्टिं प्रदापयित। सौर्य एकंकपालो भवति। सूर्येण वा अमुष्मिं ह्योकं वृष्टिंधृता। स पृवास्मै वृष्टिं निर्यंच्छिति॥१॥

द्वाद्शग्व स्सीरं दक्षिणा समृद्धौ। देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवा अग्निमंब्रुवन्। त्वयां वीरेणासुरान्भिभंवामेति। सौंऽब्रवीत्। त्रेधाऽहमात्मानं विकेरिष्य इति। स त्रेधाऽऽत्मानं व्यंकुरुत। अग्निं तृतीयम्। रुद्रं तृतीयम्। वर्रणं तृतीयम्॥२॥

सौंऽब्रवीत्। क इदं तुरीयमितिं। अहमितीन्द्रौंऽब्रवीत्। सन्तु सृंजावहा इतिं। तौ

समंसृजेताम्। स इन्द्रंस्तुरीयंमभवत्। यदिन्द्रंस्तुरीयमभवत्। तदिंन्द्रतुरीयस्थैंन्द्रतुरीयृत्वम्। ततो वै देवा व्यंजयन्त। यदिंन्द्रतुरीयं निरुप्यते विजित्यै॥३॥

वृहिनीं धेनुर्दक्षिणा। यद्घहिनीं। तेनांग्रेयी। यद्गैः। तेनं रौद्री। यद्धेनुः। तेनैन्द्री। यथ्स्री स्ती दान्ता। तेनं वारुणी समृद्धे। प्रजापंतिर्य्ज्ञमंसृजत॥४॥

तः सृष्टः रक्षाः स्यजिघाः सन्। स एताः प्रजापंतिरात्मनो देवता निरंमिमीत। ताभिवै स दिग्भ्यो रक्षाः स्मि प्राणुंदत। यत्पंश्चावृत्तीयं जुहोति। दिग्भ्य एव तद्यजंमानो रक्षाः स्मि प्रणुंदते। समूंद्धः रक्षः सन्दंग्धः रक्षः इत्यांह। रक्षाः स्येव सन्दंहित। अग्रयं रक्षोघ्ने स्वाहेत्यांह। देवतांभ्य एव विजिग्यानाभ्यो भाग्धेयं करोति। प्रष्टिवाही रथो दक्षिणा समृंद्धे॥५॥

इन्द्रों वृत्र रह्त्वा। असुंरान्पराभाव्यं। नमुंचिमासुरं नालंभत। तर शृच्यां-ऽगृह्णात्। तौ समलभेताम्। सौंऽस्माद्भिशुंनतरोऽभवत्। सौंऽब्रवीत्। सुन्धार सन्दंधावहै। अथु त्वाऽवं स्रक्ष्यामि। न मा शुष्केणु नार्द्रेणं हनः॥६॥ न दिवा न नक्तमितिं। स एतम्पां फेनंमसिश्चत्। न वा एष शुष्को नार्झो व्युंष्टाऽऽसीत्। अनुंदितः सूर्यः। न वा एतिद्दवा न नक्तम्। तस्यैतिस्मं ह्लोके। अपां फेनेन शिर उदंवर्तयत्। तदंनमन्वंवर्तत। मित्रंद्रुगितिं॥७॥

यदंपामार्गहोमो भवंति। रक्षंसामपंहत्यै। एकोल्मुकेनं यन्ति। तिद्ध रक्षंसां भागधेयम्। इमान्दिशं यन्ति। एषा वै रक्षंसां दिक्। स्वायांमेव दिशि रक्षांसी हन्ति॥८॥

स्वकृत दक्षिण सदोति पदरे वाँ। एवदै रक्षंसामारावर्नम्। स्व एवारावंने रक्षांसी

स एतानंपामार्गानंजनयत्। तानंजुहोत्। तैर्वे स रक्षाङ्स्यपांहत।

स्वर्नृत इरिणे जुहोति प्रदरे वाँ। पृतद्वै रक्षंसामायतनंम्। स्व पृवायतंने रक्षा रेसि हिन्ता। पूर्णमयेन स्रुवेणं जुहोति। ब्रह्म वै पूर्णः। ब्रह्मंणैव रक्षा रेसि हिन्ता। देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रंस्व इत्यांह। सिवृतृप्रंसूत पृव रक्षा रेसि हिन्ता। हृत रक्षोऽविधिष्म रक्ष्म इत्यांह। रक्षंसा र् स्तृत्यैं। यद्वस्ते तद्दक्षिणा निरवंत्यै। अप्रंतीक्षमायंन्ति। रक्षंसाम्न्तर्हित्यै॥९॥

युच्छुति वर्रुणं तृतीयं विजित्या असृजत् समृंद्धौ हनो मित्रंद्रुगितिं हन्ति स्तृत्यै त्रीणिं च॥————[१]

धात्रे पुरोडाशं द्वादशकपालं निर्वपति। संवथ्सरो वै धाता। संवथ्सरेणैवास्मै

प्रजाः प्रजनयति। अन्वेवास्मा अनुंमितर्मन्यते। राते राका। प्र सिंनीवाली जनयति। प्रजास्वेव प्रजातासु कुह्वां वाचं दधाति। मिथुनौ गावौ दक्षिणा समृद्धौ। आग्नावैष्णवमेकांदशकपालं निर्वपति। ऐन्द्रावैष्णवमेकांदशकपालम्॥१०॥

वैष्णुवं त्रिकपालम्। वीर्यं वा अग्निः। वीर्यमिन्द्रः। वीर्यं विष्णुः। प्रजा एव प्रजाता वीर्यं प्रतिष्ठापयति। तस्मात्प्रजा वीर्यावतीः। वामन ऋष्भो वही दक्षिणा। यद्वही। तेनांग्रेयः। यदंष्भः॥११॥

तेनैन्द्रः। यद्वांमनः। तेनं वैष्णवः समृद्धौ। अग्नीषोमीयमेकांदशकपालं निर्वपति। इन्द्रासोमीयमेकांदशकपालम्। सौम्यं चरुम्। सोमो वै रेतोधाः। अग्निः प्रजानां प्रजनियता। वृद्धानामिन्द्रः प्रदापियता। सोमं एवास्मै रेतो दर्धाति॥१२॥ अग्निः प्रजां प्रजनयति। वृद्धामिन्द्रः प्रयंच्छिति। बभुर्दक्षिणा समृद्धौ। सोमापौष्णं चुरुं निर्वपति। ऐन्द्रापौष्णं चुरुम्। सोमो वै रेतोधाः। पूषा पंशूनां प्रजनियता। वृद्धानामिन्द्रः प्रदापयिता। सोमं एवास्मै रेतो दर्धाति। पूषा पुशून्प्रजनयति॥१३॥

वृद्धानिन्द्रः प्रयंच्छति। पौष्णश्चरुभंवति। इयं वै पूषा। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठति।

श्यामो दक्षिणा समृद्धी। बहु वै पुरुषो मेध्यमुपंगच्छति। वैश्वानुरं द्वादंशकपालं निर्वपति। संवथ्सरो वा अग्निर्वेश्वानुरः। संवथ्सरेणैवैन हं स्वदयति। हिरंण्यं दक्षिणा॥१४॥

पवित्रं वै हिरंण्यम्। पुनात्येवैनम्ं। बहु वै राजन्योऽनृतं करोति। उपं जाम्ये हरंते। जिनातिं ब्राह्मणम्। वद्त्यनृतम्। अनृते खलु वै क्रियमांणे वरुणो गृह्णाति।

हरते। जिनातिं ब्राह्मणम्। वद्त्यनृंतम्। अनृते खलु वै क्रियमाणे वरुणो गृह्णाति। वारुणं यवमयं चरुं निर्वपति। वरुणपाशादेवैनं मुश्चति। अश्वो दक्षिणा। वारुणो हि देवत्याऽश्वः समृद्धौ॥१५॥

पुन्नुवैण्णुवमेकांदशकपालुं यदंषुभो दर्धाति पूषा पुश्च्यजनयित हिरंण्यं दक्षिणा दक्षिणां विष्ठणेकं च॥————[२]

रुत्रिनांमेतानि हुवी १ षि भवन्ति। एते वै राष्ट्रस्यं प्रदातारेः। एतेंऽपादातारेः। य

पुव राष्ट्रस्यं प्रदातारः। येऽपादातारः। त पुवास्मै राष्ट्रं प्रयंच्छन्ति। राष्ट्रमेव भवति। यथ्समाहृत्यं निर्वपेत्। अरंबिनः स्युः। यथायथं निर्वपति रिबत्वायं॥१६॥

यथ्मद्यो निर्वपेत्। यावंतीमेकंन हविषाऽऽशिषंमव रुन्धे। तावंतीमवंरुन्धीत।

अन्वहित्रविपिति। भूयंसीमेवाशिषमवं रुन्थे। भूयंसो यज्ञऋतूनुपैति। बार्हस्पृत्यं चुरुं निर्वपिति ब्रह्मणों गृहे। मुख्त एवास्मै ब्रह्म सङ्श्यंति। अथो ब्रह्मंन्नेव क्षत्रमन्वारंम्भयति। शितिपृष्ठो दक्षिणा समृद्धे॥१७॥

ऐन्द्रमेकांदशकपाल राजन्यंस्य गृहे। इन्द्रियमेवावं रुन्थे। ऋष्भो दक्षिणा समृद्धे। आदित्यं चुरुं महिष्ये गृहे। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतितिष्ठति।

धेनुर्दक्षिणा समृद्धौ। भगाय चुरुं वावातायै गृहे। भगमेवास्मिन्दधाति। विचित्तगर्भा

पष्ठौही दक्षिणा समृद्धौ॥१८॥

नैर्ऋतं चरुं पीरवृत्त्यै गृहे कृष्णानां व्रीहीणां नखिर्निभिन्नम्। पाप्मानमेव निर्ऋतिं निरवंदयते। कृष्णा कूटा दक्षिणा समृद्धै। आग्नेयमृष्टाकपाल॰ सेनान्यों गृहे। सेनांमेवास्य सङ्श्यंति। हिरंण्यं दक्षिणा समृद्धौ। वारुणं दर्शकपाल र सूतस्यं गृहे। वरुणसवमेवावं रुन्धे। महानिंरष्टो दक्षिणा समृद्धौ। मारुत र सप्तर्कपालं ग्रामण्यो गृहे॥१९॥

अन्नं वै मरुतः। अन्नमेवावं रुन्धे। पृश्जिदक्षिणा समृद्धै। सावित्रं द्वादंशकपालं

क्षृत्तर्गृहे प्रसूँत्यै। उपध्वस्तो दक्षिणा समृद्धे। आश्विनं द्विकपालः संङ्ग्रहीतुर्गृहे। अश्विनौ वै देवानां भिषजौं। ताभ्यांमेवास्में भेषजं करोति। स्वात्यौं दक्षिणा समृद्धे। पौष्णं चुरुं भागदुघस्यं गृहे॥२०॥ अन्नं वै पूषा। अन्नंमेवावं रुन्थे। श्यामो दक्षिणा समृद्धे। रौद्रं गांवीधुकं

अत्रुं वै पूषा। अत्रमेवावं रुन्धे। श्यामो दक्षिणा समृद्धै। रौद्रं गांवीधुकं चरुमक्षावापस्यं गृहे। अन्तत एव रुद्रं निरवंदयते। श्वल उद्वांरो दक्षिणा समृद्धै। द्वादंशैतानि ह्वी १षि भवन्ति। द्वादंश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरेणैवास्मे राष्ट्रमवंरुन्थे। राष्ट्रमेव भवति॥२१॥

यन्न प्रंति निर्वपेंत्। रुबिनं आशिषोऽवंरुन्धीरन्। प्रतिनिर्वपिति। इन्द्रांय सुत्राम्णं

पुरोडाश्मेकांदशकपालम्। इन्द्रांया १ होमुचैं। आशिषं पुवावंरुन्धे। अयं नो राजां वृत्रहा राजां भूत्वा वृत्रं वंध्यादित्यांह। आशिषंमेवेतामा शाँस्ते। मैत्राबार्हस्पत्यं भंवति। श्वेतायैं श्वेतवंथ्सायै दुग्धे॥२२॥

बार्ह्स्पत्ये मैत्रमि दधाति। ब्रह्मं चैवास्में क्षत्रं चं समीचीं दधाति। अथो ब्रह्मंत्रेव क्षत्रं प्रतिष्ठापयित। बार्ह्स्पत्येन पूर्वेण प्रचरित। मुखत एवास्मै ब्रह्म सङ्श्यंति। अथो ब्रह्मंत्रेव क्षत्रमन्वारंम्भयित। स्वयं कृता वेदिर्भवित। स्वयं दिनं बर्हिः। स्वयं कृत इध्मः। अनिभिजितस्याभिजित्ये। तस्माद्राज्ञामरंण्यमभिजितम्। सेव श्वेता श्वेतवंथ्सा दक्षिणा समृद्धौ॥२३॥

रिक्षत्वाय समृद्धौ पश्चेही दक्षिणा समृद्धौ ग्रह्म भंगद्यस्यं गृहे भंवित दुर्थंऽभिजित्ये हे चं॥———[3]

देवसुवामेतानि ह्वी १ षि भवन्ति। एतावन्तो वै देवाना १ स्वाः। त एवास्मै स्वान्प्रयंच्छन्ति। त एन १ सुवन्ते। अग्निरेवैनं गृहपंतीना १ सुवते। सोमो वनस्पतीनाम्। रुद्रः पंशूनाम्। बृहस्पतिर्वाचाम्। इन्द्रौ ज्येष्ठानाम्। मित्रः सत्यानांम्॥२४॥

वर्रुणो धर्मपतीनाम्। पृतदेव सर्वं भवति। सृविता त्वा प्रस्वानार् सुवतामिति हस्तं गृह्णाति प्रसूत्यै। ये देवा देवः सुवः स्थेत्याह। यथायुजुरेवैतत्। मृह्ते क्षुत्रायं

हस्त गृह्णात् प्रसूत्य। य दवा दवः सुवः स्थत्याह। यथायुजुर्वतत्। मृह्त क्षुत्राय महत आधिपत्याय महते जानंराज्यायेत्यांह। आशिषंमेवैतामा शाँस्ते। एष वो

प्रति त्यन्नामं राज्यमंधायीत्यांह॥२५॥
राज्यमेवास्मिन्प्रतिंदधाति। स्वां तनुवं वर्रुणो अशिश्रेदित्यांह। वुरुणस्वमेवावंरुन्थे

भरता राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाः राजेत्यांह। तस्माथ्सोमंराजानो ब्राह्मणाः।

शुचैंर्मित्रस्य व्रत्यां अभूमेत्यांह। शुचिंमेवैनं व्रत्यं करोति। अमंन्मिह महुत ऋतस्य नामेत्यांह। मनुत एवैनम्। सर्वे व्राता वरुंणस्याभूवित्रित्यांह। सर्वंव्रातमेवैनं करोति। वि मित्र एवैररांतिमतारीदित्यांह॥२६॥ अरांतिमैवैनं तारयति। असूंषुदन्त यिज्ञयां ऋतेनेत्यांह। स्वदयंत्येवैनम्।

व्यं त्रितो जरिमाणं न आनुडित्यांह। आयुरेवास्मिन्दधाति। द्वाभ्यां विमृष्टे।

द्विपाद्यजंमानः प्रतिष्ठित्यै। अग्नीषोमीयंस्य चैकांदशकपालस्य देवसुवां

चं हविषांमुग्रयें स्विष्टकृतें समवंद्यति। देवतांभिरेवैनंमुभ्यतः परिंगृह्णाति।

विष्णुक्रमान्क्रमते। विष्णुरेव भूत्वेमाँ ह्लोकान् भिर्ज्ञयति॥२७॥

स्त्यानां मध्ययात्र्याहातार्यित्त्यांह कमत् एकं च॥

अर्थेतः स्थेतिं जुहोति। आहुंत्यैवेनां निष्क्रीयं गृह्णाति। अथों हविष्कृतानामेवाभिर्घृत

गृह्णाति। वहंन्तीनां गृह्णाति। पृता वा अपार राष्ट्रम्। राष्ट्रमेवास्मै गृह्णाति। अथो श्रियंमेवैनंम्भिवंहन्ति। अपां पतिंर्सीत्यांह। मिथुनमेवाकः। वृषां- ऽस्यूर्मिरित्यांह॥२८॥

ऊर्मिमन्तमेवैनं करोति। वृष्सेनोंऽसीत्यांह। सेनांमेवास्य सङ्श्यंति। व्रजिक्षितः स्थेत्यांह। एता वा अपां विशंः। विशंमेवास्मै पर्यूहति। मुरुतामोजः स्थेत्यांह।

अत्रुं वै मुरुतः। अन्नमेवावंरुन्धे। सूर्यंवर्चसः स्थेत्यांह॥२९॥ राष्ट्रमेव वंर्चस्व्यंकः। सूर्यंत्वचसः स्थेत्यांह। सत्यं वा एतत्। यद्वर्षंति। अर्नृतं यदातपंति वर्षंति। सत्यानृते एवावंरुन्धे। नैन र सत्यानृते उदिते हिर्रंस्तः। य एवं वेदं। मान्दाः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेव ब्रह्मवर्चस्यंकः॥३०॥

वाशाः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेव वृश्यंकः। शक्वंरीः स्थेत्यांह। पृशवो वै शक्वंरीः। पृश्नेवावंरुन्थे। विश्वभृतः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेव पंयुस्व्यंकः। जनुभृतः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेवन्द्रियाव्यंकः। अग्नेस्तेजस्याः स्थेत्यांह॥३१॥

राष्ट्रमेव तेंज्ञस्व्यंकः। अपामोषंधीनाः रसः स्थेत्यांह। राष्ट्रमेव मंध्व्यंमकः। सार्स्वतं ग्रहं गृह्णाति। एषा वा अपां पृष्ठम्। यथ्सरंस्वती। पृष्ठमेवैन समानानां करोति। षोड्शिभंगृह्णाति। षोडंशकलो वै पुरुषः। यावानेव पुरुषः। तस्मिन्वीर्यं दधाति। षोड्शिभंजुंहोतिं षोड्शिभंगृह्णाति। द्वात्रिर्श्शथ्सम्पद्यन्ते। द्वात्रिर्श्रयक्षरा- उनुष्टुक्। वागंनुष्टुफ्सर्वाणे छन्दार्श्स। वाचैवैन् सर्वेभिश्छन्दोभिर्भिषिश्चति॥३२॥

ऊर्मिरित्यांह् सूर्यवर्चसः स्थेत्यांह ब्रह्मवर्चस्यंकस्तेज्रस्याः स्थेत्यांहैव पुरुंषः षद चं॥———[५] देवीरापः सं मधुंमतीर्मधुंमतीभिः सृज्यध्वमित्यांह। ब्रह्मणैवैनाः स॰सृंजति।

अनांधृष्टाः सीदतेत्यांह। ब्रह्मंणैवैनाः सादयति। अन्तरा होतुंश्च धिष्णियं

ब्राह्मणाच्छ १ सिनेश्च सादयति। आग्नेयो वै होताँ। ऐन्द्रो ब्राँह्मणाच्छु १ सी।

तेर्जसा चैवेन्द्रियेणं चोभ्यतों राष्ट्रं परिंगृह्णाति। हिरंण्येनोत्पुंनाति। आहुत्यै हि

पवित्राभ्यामुत्पुनन्ति व्यावृत्त्यै॥३३॥

अमृता ह्यापंः। अमृत १ हिरंण्यम्॥३५॥

श्तमानं भवति। श्तायुः पुरुषः श्तेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। अनिभृष्टम्सीत्यांह। अनिभृष्ट्ड् ह्यंतत्। वाचो बन्धुरित्यांह। वाचो ह्यंष बन्धुंः। त्पोजा इत्यांह। त्पोजा ह्यंतत्। सोमंस्य दात्रम्सीत्यांह॥३४॥ सोमंस्य ह्यंतद्दात्रम्। शुक्रा वंः शुक्रेणोत्पुंनामीत्यांह। शुक्रा ह्यापंः। शुक्रश् हिरंण्यम्। चन्द्राश्चन्द्रेणेत्यांह। चन्द्रा ह्यापंः। चन्द्रश् हिरंण्यम्। अमृतां अमृत्नेत्यांह।

स्वाहां राजुसूयायेत्यांह। राजुसूयांय ह्यंना उत्पुनातिं। सुधुमादौं द्युम्निनीरूर्ज

पुता इति वारुण्यर्चा गृह्णाति। वुरुणस्वमेवावंरुन्थे। एकंया गृह्णाति। एकधैव

यजंमाने वीर्यं दधाति। क्षत्रस्योल्बंमिस क्षत्रस्य योनिर्सीतिं ताप्यं चोष्णीषं च प्रयंच्छति सयोनित्वायं। एकंशतेन दर्भपुञ्जीलैः पंवयति। शतायुर्वे पुरुषः शतवीर्यः। आत्मैकंशतः॥३६॥

यावांनेव पुरुषः। तस्मिन्वीर्यं दधाति। दध्यांशयति। इन्द्रियमेवावं रुन्धे।

उदुम्बरंमाशयति। अन्नाद्यस्यावंरुद्धै। शष्पांण्याशयति। सुरांबिलमेवेनंं करोति। आविदं एता भविन्ति। आविदंमेवेनंं गमयिन्ति॥३७॥ अग्निरेवेनं गार्हंपत्येनावित। इन्द्रं इन्द्रियेणं। पूषा पृश्विः। मिन्नावरुणो प्राणापानाभ्यांम्। इन्द्रों वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। स दिवंमिलखत्। सौंऽर्यम्णः पन्थां अभवत्। स आविंन्ने द्यावांपृथिवी धृतन्नते इति द्यावांपृथिवी उपांधावत्।

स आभ्यामेव प्रसूत इन्ह्रों वृत्राय वज्रं प्राहंरत्। आविन्ने द्यावापृथिवी धृतव्रेते इति यदाहं॥३८॥ अभ्यामेव प्रसूतो यजमानो वज्रं भ्रातृंव्याय प्रहंरति। आविन्ना देव्यदितिर्विश्वरूपीत्यांह। इयं वै देव्यदितिर्विश्वरूपी। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। आविन्नोऽयम्सावांमुष्यायणौऽस्यां विश्यंस्मिन्नाष्ट्र इत्यांह। विशेवेन १ राष्ट्रेण समर्धयति। मृह्ते क्षुत्रायं मह्त आधिपत्याय मह्ते जानंराज्यायेत्यांह। आशिषंमेवेतामा शांस्ते। एष वो भरता राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना १ राजेत्यांह। तस्माथ्सोमंराजानो ब्राह्मणाः॥३९॥

इन्द्रंस्य वज्रोंऽसि वार्त्रघ्न इति धनुः प्रयंच्छति विजित्यै। शृत्रुबार्धनाः स्थेतीषून्। शृत्रूनेवास्यं बाधन्ते। पात मां प्रत्यश्चं पात मां तिर्यश्चंमृन्वश्चं मा पातेत्यांह। तिस्रो व शंर्व्याः। प्रतीचीं तिरश्चमूचीं। ताभ्यं पृवैनं पान्ति। दिग्भ्यो मां पातेत्यांह। दिग्भ्य पृवैनं पान्ति। विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यः पातेत्यांह। अपंरिमितादेवेनं पान्ति। हिरंण्यवर्णावुषसां विरोक इतिं त्रिष्टुभां बाहू उद्गृह्णाति। इन्द्रियं व वीर्यं त्रिष्टुक्। इन्द्रियमेव वीर्यमुपरिष्टादात्मन्धंत्ते॥४०॥

व्यावृत्त्यै दात्रमुसीत्यांह्ामृत्र् हिरंण्यमेकश्वो गंमयुन्त्याहं ब्राह्मणा नाष्ट्राभ्यः पातेत्यांह चत्वारिं च॥————[६]

दिशो व्यास्थांपयति। दिशाम्भिजिंत्त्यै। यदंनु प्रक्रामेंत्। अभि दिशों जयेत्। उत्तु माँद्येत्। मन्साऽनु प्रक्रांमित। अभि दिशों जयित। नोन्माँद्यति। स्मिध्मा तिष्ठेत्यांह। तेजं एवावंरुन्थे॥४१॥

उग्रामा तिष्ठेत्यांह। इन्द्रियमेवावंरुन्थे। विराजमातिष्ठेत्यांह। अन्नाद्यंमेवावंरुन्थे। उदीचीमा तिष्ठेत्यांह। पृश्नेवावंरुन्थे। ऊर्ध्वामातिष्ठेत्यांह। सुवर्गमेव लोकम्भिजंयति। अनून्निंहीते। सुवर्गस्यं लोकस्य समष्टौ॥४२॥

मारुत एष भंवति। अत्रं वै मुरुतः। अत्रंमेवावंरुन्थे। एकंविश्शतिकपालो भवति प्रतिष्ठित्यै। योऽरण्येऽनुवाक्यो गणः। तं मध्यत उपद्धाति। ग्राम्येरेव पशुभिरारण्यान्पशून्परि गृह्णाति। तस्माँद्राम्यैः पशुभिरारण्याः पृशवः परिगृहीताः। पृथिवैन्यः। अभ्यंषिच्यत॥४३॥

स राष्ट्रं नार्भवत्। स एतानि पार्थान्यंपश्यत्। तान्यंजुहोत्। तैर्वे स राष्ट्रमंभवत्। यत्पार्थानि जुहोतिं। राष्ट्रमेव भवति। बार्ह्स्पृत्यं पूर्वेषामुत्तमं भवति। ऐन्द्रमुत्तरेषां प्रथमम्। ब्रह्मं चैवास्मैं क्षत्रं चं स्मीचीं दधाति। अथो ब्रह्मन्नेव क्षत्रं प्रतिं-ष्ठापयति॥४४॥

षद्वुरस्तांदिभिषेकस्यं जुहोति। षडुपिरेष्टात्। द्वादंश् सम्पंद्यन्ते। द्वादंश् मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरः खलु वै देवानां पूः। देवानांमेव पुरं मध्यतो व्यवंसपिति। तस्य न कृतंश्चनोपांव्याधो भंवति। भूतानामवेष्टीर्जुहोति। अत्रात्र वै मृत्युर्जायते। यत्रंयत्रैव मृत्युर्जायते। ततं पृवेनमवंयजते। तस्माद्राज्ञसूयेनेजानो नाभिचंरित्वै। प्रत्यर्गनमभिचारः स्तृंणुते॥४५॥

क्ये समंध्या असिच्यत स्थापयित जायंते पश्चं च॥————[७] सोमंस्य त्विषिंरसि तवेव मे त्विषिंभूयादिति शार्दूलचुर्मोपंस्तृणाति। यैव सोमे त्विषिंः। या शाँदूले। तामेवावंरुन्थे। मृत्योवां एष वर्णः। यच्छाँदूलः। अमृत्र् हिरंण्यम्। अमृतंमसि मृत्योमां पाहीति हिरंण्यमुपाँस्यति। अमृतंमेव मृत्योर्न्तर्थंते। शृतमांनं भवति॥४६॥

पाहीत्युपरिष्टादिध निदंधाति। उभयतं एवास्मै शर्म दधाति। अवैष्टा दन्दशूका

शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। दिद्योन्मां

इति क्रीबर सीसेन विध्यति। दुन्दुशूकान्वावयज्ञते। तस्माँत्क्रीबं देन्दुशूका दश्शुंकाः। निरेस्तं नमुंचेः शिर् इति लोहितायसं निरेस्यति। पाप्मानमेव नमुंचिं निरवंदयते। प्राणा आत्मनः पूर्वेऽभिषिच्या इत्यांहः॥४७॥ सोमो राजा वर्रुणः। देवा धर्मसुवंश्च ये। ते ते वाचर् सुवन्तां ते ते प्राणर सुवन्तामित्यांह। प्राणान्वाऽऽत्मनः पूर्वान्भिषिश्चति। यद्भूयात्। अग्नेस्त्वा तेजंसाऽभिषिश्चामीतिं। तेज्रस्थेव स्यांत्। दुश्चर्मा तु भवेत्। सोमंस्य त्वा

स्वयैवैनं देवतंयाऽभिषिश्चति। अग्नेस्तेज्ञसेत्यांह। तेजं एवास्मिन्दधाति। सूर्यस्य वर्चसेत्यांह। वर्चं एवास्मिन्दधाति। इन्द्रंस्येन्द्रियेणेत्यांह। इन्द्रियमेवास्मिन्दधाति। मित्रावरुणयोर्वीर्येणेत्यांह। वीर्यमेवास्मिन्दधाति। मुरुतामोज्ञसेत्यांह॥४९॥

द्युम्नेनाभिषिश्चामीत्यांह। सौम्यो वै देवतंया पुरुषः॥४८॥

क्षत्रपंतिं करोति। अतिं दिवस्पाहीत्यांह। अत्यन्यान्पाहीति वावैतदांह।

समावंवृत्रन्नधरागुदींचीरित्यांह। राष्ट्रमेवास्मिन्ध्रुवमंकः। उच्छेषंणेन जुहोति।

ओर्ज एवास्मिन्दधाति। क्षत्राणां क्षत्रपंतिरसीत्यांह। क्षत्राणांमेवैनं

उच्छेषंणभागो वै रुद्रः। भाग्धेयेंनैव रुद्रं निरवंदयते॥५०॥
उदं हुरित्याग्नीं द्धे जुहोति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। रुद्र यत्ते ऋयी परं नामेत्यांह। यद्वा अस्य ऋयी परं नामं। तेन वा एष हिंनस्ति। यश् हिनस्ति। तेनैवैन श्रे सह शंमयति। तस्मैं हुतमंसि यमेष्टं मुसीत्यांह। यमादेवास्यं मृत्युमवंयजते॥५१॥
प्रजांपते न त्वदेतान्यन्य इति तस्यैं गृहे जुंहुयात्। यां कामयेत राष्ट्रमंस्यै प्रजा

स्यादिति। राष्ट्रमेवास्यै प्रजा भवति। पर्णमयेनाध्वर्युरभिषिश्चति। ब्रह्मवर्चसमेवा-

स्मिन्त्विषं दधाति। औदुंम्बरेण राजन्यः। ऊर्जमेवास्मिन्नन्नाद्यं दधाति। आश्वंत्थेन

वैश्यंः। विशंमेवास्मिन्पुष्टिं दधाति। नैयंग्रोधेन जन्यंः। मित्राण्येवास्मैं कल्पयति।

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

भुवत्याहुः पुरुष ओजुसेत्याह निरवंदयते यजते जन्यो द्वे चं॥_____

अथो प्रतिष्ठित्यै॥५२॥

इन्द्रंस्य वज्रोऽसि वार्त्रघ्न इति रथंमुपावंहरति विजित्यै। मित्रावरुंणयोस्त्वा प्रशास्त्रोः प्रशिषां युन्ज्मीत्यांह। ब्रह्मंणैवैनं देवतांभ्यां युनक्ति। प्रष्टिवाहिनं युनक्ति। प्रष्टिवाही वै देवर्थः। देवर्थमेवास्मै युनक्ति। त्रयोऽश्वां भवन्ति। रथंश्चतुर्थः। द्वौ संव्येष्ठसारथी। षट्थ्सम्पंद्यन्ते॥५३॥

षड्वा ऋतवंः। ऋतुभिरेवेनं युनिक्तः। विष्णुक्रमान्क्रंमते। विष्णुरेव भूत्वेमाँ श्लोकान्भिजंयित। यः क्षित्रियः प्रतिहितः। सौंऽन्वारंभते। राष्ट्रमेव भवित। त्रिष्टुभाऽन्वारंभते। इन्द्रियं वै त्रिष्टुक्। इन्द्रियमेव यजमाने दधाति॥५४॥ मुरुतां प्रस्वे जेषमित्यांह। मुरुद्धिरेव प्रसूत् उन्नंयित। आप्तं मन् इत्यांह। यदेव मनसैफ्सींत्। तदांपत्। राजन्यं जिनाति। अनौक्रान्त एवाक्रंमते। वि वा एष

यदेव मनुसैफ्सींत्। तदांपत्। राजुन्यं जिनाति। अनांकान्त एवाक्रंमते। वि वा एष इंन्द्रियेणं वीर्येणर्ध्यते। यो राजुन्यं जिनातिं। समृहमिन्द्रियेणं वीर्येणेत्यांह॥५५॥ सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

वारांही उपानहावुपंमुश्रते। अस्या एवान्तर्धत्ते। इन्द्रियस्यं वीर्यस्यानांत्यै॥५६॥ नमों मात्रे पृंथिव्या इत्याहाहि ईसायै। इयंदस्यायुंरस्यायुंर्मे धेहीत्यांह। आयुरेवाऽऽत्मन्धेत्ते। ऊर्गस्यूर्जं मे धेहीत्यांह। ऊर्जमेवाऽऽत्मन्धेत्ते। युङ्कंसि वर्चोऽसि वर्चो मियं धेहीत्यांह। वर्च एवाऽऽत्मन्धंत्ते। एकुधा ब्रुह्मण् उपंहरित। पुक्धैव यर्जमान् आयुरूर्जुं वर्चो दधाति। रथविमोचनीयां जुहोति प्रतिं-ष्ठित्यै॥५७॥ त्रयोऽश्वां भवन्ति। रथंश्चतुर्थः। तस्मांचतुर्जुहोति। यदुभौ सहावृतिष्ठेताम्। सुमानं लोकिमियाताम्। सुह संङ्ग्रहीत्रा रथवाहंने रथमादंधाति। सुवर्गादेवैनं

इन्द्रियमेव वीर्यमात्मन्धंत्ते। पुशूनां मृन्युरंसि तवेव मे मृन्युर्भूयादिति

वाराही उपानहाबुपं मुश्चते। पुशूनां वा पुष मृन्युः। यद्वराहः। तेनैव पंशूनां

मन्युमात्मन्धंत्ते। अभि वा इय र सुंषुवाणं कामयते। तस्ये श्वरेन्द्रियं वीर्यमादांतोः।

ऽऽदंधाति। अतिंच्छन्द्साऽऽदंधाति। अतिंच्छन्दा वै सर्वाणि छन्दार्शस। सर्वेभिरेवैनं छन्दोभिरादंधाति। वर्ष्म् वा एषा छन्दंसाम्। यदतिंच्छन्दाः। यदतिंच्छन्दसा दधाति। वर्ष्मैवैनर्श्यमानानां करोति॥५८॥ प्रवन्ते द्धाति वर्षेभेत्याहानांत्ये प्रतिष्ठित्ये ब्रह्मणाऽऽदंधाति सम च॥———[९] मित्रोऽसि वर्रुणोऽसीत्यांह। मैत्रं वा अहंः। वारुणी रात्रिः। अहोरात्राभ्यांमेवैनंमुपाव

लोकादन्तर्दधाति। ह॰सः शुंचिषदित्यादधाति। ब्रह्मणैवैनंमुपावहरंति। ब्रह्मणा-

मित्रोंऽसि वर्रुणोऽसीत्यांह। मैत्रो वै दक्षिणः। वारुणः सूव्यः। वैश्वदेव्यांमिक्षां। स्वमेवेनौ भाग्धेयंमुपावंहरति। समहं विश्वदेविरित्यांह॥५९॥ वैश्वदेव्यो वै प्रजाः। ता एवाद्याः कुरुते। क्षत्रस्य नाभिरिस क्षत्रस्य योनिरसीत्यंधीवासमास्तृंणाति सयोनित्वायं। स्योनामा सींद सुषदामा

सीदेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। मा त्वां हिश्सीन्मा मां हिश्सीदित्याहाहिश्सायै। निषंसाद धृतव्रंतो वरुंणः पुस्त्यांस्वा साम्रांज्याय सुऋतुरित्यांह। साम्रांज्यमेवैनश् सुऋतुं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व॰ राजन्ब्रह्माऽसिं सिवृताऽसिं सृत्यसंव इत्याह। सिवतारंमेवैन॰ सत्यसंवं करोति॥६०॥

ब्रह्मा(३)न्त्व र राजन्ब्रह्माऽसीन्द्रोऽसि सत्यौजा इत्यांह। इन्द्रंमेवैन ई

स्त्यौर्ज्ञंसं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व॰ राजन्ब्रह्माऽसिं मित्रोंऽसि सुशेव् इत्यांह। मित्रमेवैन॰ सुशेवंं करोति। ब्रह्मा(३)न्त्व॰ राजन्ब्रह्मासि वर्रुणोऽसि सत्यधर्मेत्यांह। वर्रुणमेवैन॰ सत्यधर्माणं करोति। स्विताऽसिं सत्यसंव इत्यांह। गायत्रीमेवैतेनांभि व्याहंरति। इन्द्रोंऽसि सत्यौजा इत्यांह। त्रिष्टुभंमेवैतेनांभि व्याहंरति॥६१॥

मित्रोंऽसि सुशेव इत्यांह। जर्गतीमेवैतेनांभि व्याहंरति। सृत्यमेता देवताः। सृत्यमेतानि छन्दार्शस। सृत्यमेवावंरुन्थे। वर्रुणोऽसि सृत्यधुर्मेत्यांह। अनुष्टुभंमेवैतेनांभि व्याहंरति। सृत्यानृते वा अनुष्टुप्। सृत्यानृते वर्रुणः। सृत्यानृते एवावंरुन्थे॥६२॥

नैन र्रं सत्यानृते उंदिते हि र्रं स्तः। य एवं वेदं। इन्द्रं स्य वज्रों ऽसि वार्त्रघ्न इति स्फ्यं प्रयंच्छिति। वज्रो वै स्फ्यः। वज्रेंणैवास्मां अवरप्र र रंन्थयित। एव र हि तच्छ्रेयः। यदंस्मा एते रध्येयः। दिशोऽभ्यंय र राजांऽभूदिति पश्चाक्षान्प्रयंच्छिति। एते वै सर्वेऽयाः। अपंराजायिनमेवैनं करोति॥६३॥

ओदनमुद्भवते। पुरमेष्ठी वा एषः। यदोदनः। परमामेवैन श्रियं गमयति। सुश्लोकाँ(४) सुमंङ्गलाँ(४) सत्यंराजा(३)नित्यांह। आशिषंमेवैतामा शास्ते। शौनः शेपमाख्यापयते। वरुणपाशादेवैनं मुश्चति। पुरः शृतं भवति। शृतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। मारुतस्य चैकंवि शतिकपालस्य वैश्वदेव्ये चामिक्षांया अग्नयं स्विष्टकृतं समर्वद्यति। देवतांभिरेवैनंम्भयतः परिं गृह्णाति। अपान्नित्रे स्वाहोर्जो निष्ने स्वाहाऽग्नयें गृहपंतये स्वाहेतिं तिस्र आहुंतीर्जुहोति। त्रयं इमे लोकाः। पृष्वंव लोकेषु प्रतिं तिष्ठति॥६४॥ देवैरित्यांह सत्यसंवं करोति त्रिष्टुभंमेवेतेनांभि व्याहंरति सत्यानृते एवावंरुन्धे करोति श्तेन्द्रियः षट् चं॥———[१०]

एतद्वाँह्मणानि धात्रे रत्निनाँन्देवसुवामर्थेतो देवीर्दिशः सोमस्येन्द्रंस्य मित्रो दर्शा॥१०॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

पृतद्वाँह्मणानि वैष्ण्वं त्रिंकपालमन्नं वै पूषा वाशाः स्थेत्यांह् दिशो व्यास्थांपयृत्युदंङ्घरेत्य ब्रह्मा(३)न्त्व॰ रांजुञ्चतुंष्यष्टिः॥६४॥ एतद्वाँह्मणानि प्रतिं तिष्ठति॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके अष्टमः प्रपाठकः॥

वर्रणस्य सुषुवाणस्यं दश्धेन्द्रियं वीर्यं परांऽपतत्। तथ्स् र्सृद्धिरन् समंसर्पत्। तथ्स् रसृपारं सरसृत्वम्। अग्निनां देवेनं प्रथमेऽहृन्नन् प्रायुंङ्कः। सरस्वत्या वाचा द्वितीयें। स्वित्रा प्रंस्वेनं तृतीयें। पूष्णा पृश्भिश्चतुर्थे। बृह्स्पतिना ब्रह्मंणा पश्चमे। इन्द्रेण देवेनं षष्ठे। वर्रुणेन स्वयां देवतया सप्तमे॥१॥

सोमेन राज्ञाँ ऽष्टमे। त्वष्ट्रां रूपेणं नवमे। विष्णुंना युज्ञेनाँ ऽऽप्नोत्। यथ्म र सृपो भवंन्ति। इन्द्रियमेव तद्वीर्यं यजंमान आप्नोति। पूर्वापूर्वा वेदिर्भवति। इन्द्रियस्यं वीर्यस्यावंरुद्धे। पुरस्तांदुप्सदार्रं सौम्येन प्रचरित। सोमो वै रेतोधाः। रेतं पुव तद्दंधाति। अन्तरा त्वाष्ट्रेणं। रेतं पुव हितं त्वष्टां रूपाणि विकरोति। उपरिष्टाद्वैष्ण्वेनं। युज्ञो वै विष्णुंः। युज्ञ पुवान्ततः प्रतिं तिष्ठति॥२॥

सुप्तमे दंधाति पश्चं च॥**—————[१**]

जामि वा पृतत्कुर्वन्ति। यथ्मद्यो दीक्षयंन्ति सद्यः सोमं क्रीणन्तिं। पुण्डरिस्रजां प्रयंच्छुत्यजांमित्वाय। अङ्गिरसः सुवर्गं लोकं यन्तः। अपसु दीक्षात्पसी प्रावेशयन्। तत्पुण्डरीकमभवत्। यत्पुण्डरिस्रजां प्रयच्छंति। साक्षादेव दीक्षात्पसी अवंरुन्धे। दशभिवंथ्सतरैः सोमं क्रीणाति। दशाकष्करा विराट्॥३॥

अन्नं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवं रुन्थे। मुष्करा भवन्ति सेन्द्रत्वायं। दृश्पेयों भवति। अन्नाद्यस्यावंरुद्धे। शृतं ब्राँह्मणाः पिबन्ति। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। स्मृद्शः स्तोत्रं भवति। स्मृद्शः प्रजापंतिः॥४॥ प्रजापंतेराप्त्यै। प्राकाशावंध्वर्यवं ददाति। प्रकाशमेवैनं गमयति। स्रजंमुद्गात्रे।

प्रस्तोतृप्रतिहृर्तृभ्यांम्। प्राजापत्यो वा अश्वः। प्रजापंतेरास्यै॥५॥ द्वादंश पष्टौहीर्ब्रह्मणें। आयुंरेवावंरुन्थे। वृशां मैंत्रावरुणायं। राष्ट्रमेव वृश्यंकः। ऋष्भं ब्रांह्मणाच्छुर्सिनें। राष्ट्रमेवेन्द्रियाव्यंकः। वासंसी नेष्टापोतृभ्यांम्। पवित्रे

व्यंवास्में वासयति। रुकार होत्रें। आदित्यमेवास्मा उन्नंयति। अर्थं

पुवास्यैते। स्थूरि यवाचितमंच्छावाकायं। अन्तत पुव वर्रणमवं यजते॥६॥

अनुङ्गाहंमग्रीधें। वहिर्वा अनुङ्गान्। वहिर्ग्नीत्। वहिनैव वहिं यज्ञस्यावंरुन्धे। इन्द्रंस्य सुषुवाणस्यं त्रेधेन्द्रियं वीर्यं परांऽपतत्। भृगुस्तृतीयमभवत्। श्रायन्तीयं तृतीयम्। सरंस्वती तृतीयम्। भाग्वो होतां भवति। श्रायन्तीयं ब्रह्मसामं भवति। वारवन्तीयमग्निष्टोमसामम्। सारस्वतीरपो गृह्णाति। इन्द्रियस्यं

वीर्यस्यावंरुद्धौ। श्रायन्तीर्यं ब्रह्मसामं भंवति। इन्द्रियमेवास्मिन्वीर्यः श्रयति।

वार्वन्तीयंमग्निष्टोमसामम्। इन्द्रियमेवास्मिन्वीर्यं वारयति॥७॥

विराहुजापंतिरक्षः प्रजापंतेरात्यं यजते ब्रह्मसामं भवति सम चे॥————[२] ईश्वरो वा एष दिशोऽनूनमंदितोः। यं दिशोऽनुं व्यास्थापयंन्ति। दिशामवेष्टयो भवन्ति। दिश्वेव प्रतिं तिष्ठत्यनुंन्मादाय। पश्चं देवतां यजित। पश्च दिशः। दिश्वेव प्रतिं तिष्ठति। हिवषोहिवष इष्ट्वा बांर्हस्पत्यम्भिघांरयित। यज्मानदेवत्यों वै बृह्स्पतिः। यजमानमेव तेजंसा समर्धयित॥८॥

आदित्यां मृल्हां गुर्भिणीमा लेभते। मा्रुतीं पृश्विं पष्टौहीम्। विशं चैवास्मैं राष्ट्रं चं सुमीचीं दधाति। आदित्यया पूर्वया प्रचंरति। मा्रुत्योत्तंरया। राष्ट्र एव विश्वमनुंबध्नाति। उचैरादित्याया आश्रावयति। उपार्श्य मार्रुत्ये। तस्मौद्राष्ट्रं विशमतिवदति। गर्भिण्यांदित्या भंवति॥९॥

ड्नियं वै गर्भः। राष्ट्रमेवेन्द्रियाव्यंकः। अगुर्भा मांरुती। विश्वे मुरुतः। विशंमेव निरिन्द्रियामकः। देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवा अश्विनौः पूषन्वाचः सृत्यश् संन्निधायं। अनृतेनासुरान्भ्यंभवन्। तैंऽश्विभ्यां पूष्णे पुरोडाश्ं द्वादंशकपालं निर्वपन्। ततो वै ते वाचः सृत्यमवारुभत॥१०॥

यदिश्वभ्यां पूष्णे पुंरोडाश्ं द्वादंशकपालं निर्वपिति। अनृतेनैव भ्रातृंव्यानिभूयं। वाचः सत्यमवंरुन्धे। सरंस्वते सत्यवाचे चुरुम्। पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणाभि गृणाति। सवित्रे सत्यप्रसवाय पुरोडाश्ं द्वादंशकपालं प्रसूत्ये। दूतान्प्रहिणोति। आविदं एता भवन्ति। आविदंमेवैनं गमयन्ति। अथो दूतेभ्यं एव न छिंद्यते। तिसृधन्व १ शुंष्कदृतिर्दक्षिणा समृद्धौ॥११॥

अर्थ्यति भ्वत्यरून्धत् गुम्यन्ति हे चे॥———[३]
आग्नेयम्ष्टाकंपालुं निर्वपति। तस्माच्छिशिरे कुरुपश्चालाः प्राश्चो यान्ति।
सौम्यं चरुम्। तस्माहसन्तं व्यवसायादयन्ति। सावित्रं द्वादंशकपालम्।

तस्मौत्पुरस्ताद्यवांना । सिवृत्रा विरुन्धते। बार्हस्पत्यं चुरुम्। सिवृत्रैव विरुध्यं। ब्रह्मणा यवानादंधते। त्वाष्ट्रमष्टाकंपालम्॥१२॥

रूपाण्येव तेनं कुर्वते। वैश्वान्रं द्वादंशकपालम्। तस्मां अघन्यं नैदांघे प्रत्यश्चंः कुरुपश्चाला यांन्ति। सार्स्वतं च्रं निर्वपति। तस्मांत्रावृष्टि सर्वा वाचो वदन्ति। पौष्णेन व्यवंस्यन्ति। मैत्रेणं कृषन्ते। वारुणेन विधृंता आसते। क्षेत्रपत्येनं पाचयन्ते। आदित्येनादंधते॥१३॥

मासिमाँस्येतानि ह्वी॰षि निरुप्याणीत्यांहुः। तेनैवर्तून्प्रयुंङ्कः इतिं। अथो खल्वांहुः। कः संवथ्सरं जींविष्यतीतिं। षडेव पूँर्वेद्युर्निरुप्यांणि। षडुंत्तरेद्युः। तेनैवर्तून्प्रयुंङ्के। दक्षिणो रथवाहनवाहः पूर्वेषां दक्षिणा। उत्तरं उत्तरेषाम्। संवथ्सरस्यैवान्तौ युनक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य समध्यै॥१४॥

हन्द्रंस्य सुषुवाणस्यं दश्धेन्द्रियं वीर्यं परांऽपतत्। स यत्प्रंथमं निरष्ठींवत्।

तत्क्वंलमभवत्। यद्वितीयम्। तद्वदंरम्। यत्तृतीयम्। तत्क्कंन्धुं। यन्नुस्तः। स सि॰्हः। यदक्ष्यौः॥१५॥

स शाँदूंलः। यत्कर्णयोः। स वृकंः। य ऊर्ध्वः। स सोमंः। याऽवांची। सा सुराँ। त्रयाः सक्तंवो भवन्ति। इन्द्रियस्यावंरुद्धै। त्रयाणि लोमांनि॥१६॥

त्विषिमेवावंरुन्थे। त्रयो ग्रहाँः। वीर्यमेवावंरुन्थे। नाम्नां दश्मी। नव वै पुरुषे प्राणाः। नाभिदंशमी। प्राणा इन्द्रियं वीर्यम्। प्राणानेवेन्द्रियं वीर्यं यजमान आत्मन्थंत्ते। सीसेन क्रीबाच्छष्पांणि क्रीणाति। न वा एतदयो न हिरंण्यम्॥१७॥ यथ्सीसम्। न स्त्री न पुमान्। यत्क्रीबः। न सोमो न सुरां। यथ्सौत्रामणी

समृद्धै। स्वाद्वीन्त्वां स्वादुनेत्यांह। सोमंमेवेनां करोति। सोमोंऽस्यश्विभ्यां पच्यस्व सरंस्वत्यै पच्यस्वेन्द्रांय सुत्राम्णे पच्यस्वेत्यांह। एताभ्यो ह्यंषा देवतांभ्यः पच्यंते। तिस्रः स॰सृष्टा वसति॥१८॥

तिस्रो हि रात्रींः क्रीतः सोमो वसंति। पुनातुं ते परिस्रुत्मिति यजुंषा पुनाति व्यावृंत्त्ये। प्वित्रेण पुनाति। प्वित्रेण हि सोमं पुनन्ति। वारेण शर्श्वता तनेत्यांह। वारेण हि सोमं पुनन्ति। वायुः पूतः प्वित्रेणिति नैतयां पुनीयात्। व्यृंद्धा ह्यंषा। अतिप्वितस्यैतयां पुनीयात्। कुविद्क्षेत्यनिरुक्तया प्राजापत्ययां गृह्णाति॥१९॥

अनिरुक्तः प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्यै। एकंयुर्चा गृह्णाति। एक्धेव यजंमाने वीर्यं दधाति। आश्विनं धूम्रमालंभते। अश्विनौ वै देवानां भिषजौं। ताभ्यांमेवास्मै भेषजं कंरोति। सार्स्वतं मेषम्। वाग्वै सरंस्वती। वाचैवैनं भिषज्यति। ऐन्द्रमृष्भ सेन्द्रत्वायं॥२०॥

अक्ष्योर्लोमांनि हिरंण्यं वसित गृह्णाति भिषज्युत्येकं च॥——————[$oldsymbol{arphi}$]

नैतेषाँ पशूनां पुरोडाशां भवन्ति। ग्रहंपुरोडाशा होते। युवर सुरामंमिश्वनेतिं सर्वदेवत्यं याज्यानुवाक्यं भवतः। सर्वा एव देवताः प्रीणाति॥२१॥ ब्राह्मणं परिक्रीणीयादुच्छेषंणस्य पातारम्। ब्राह्मणो ह्याहुंत्या उच्छेषंणस्य पाता। यदि ब्राह्मणं न विन्देत्। वृत्मीक्वपायामवं नयेत्। सैव ततः प्रायंश्वित्तः। यद्वै सौत्रामण्ये व्यृद्धम्। तदंस्यै समृद्धम्। नानादेवत्याः पृशवंश्व पुरोडाशांश्व भवन्ति

यत्रिषु यूपेष्वालभेता बहिर्धाऽस्मांदिन्द्रियं वीर्यं दध्यात्। भ्रातृंव्यमस्मै जनयेत्।

एकयूप आलंभते। एकधैवास्मिन्निन्द्रियं वीर्यं दधाति। नास्मै भ्रातृंव्यं जनयति।

इन्द्रिये एवास्मैं समीचीं दधाति। पुरस्तांदनूयाजानां पुरोडाशैः प्रचंरति। पृशवो वै पुरोडाशाः। पृशूनेवावं रुन्धे। ऐन्द्रमेकांदशकपालं निर्वपति। इन्द्रियमेवावं रुन्धे। सावित्रं द्वादंशकपालं प्रसूत्ये। वारुणं दशंकपालम्। अन्तृत एव वर्रणमवं यजते। वर्डवा दक्षिणा॥२३॥

समृद्धै। ऐन्द्रः पंशूनामुत्तमो भवति। ऐन्द्रः पुरोडाशानां प्रथमः॥२२॥

उत वा एषाऽश्वर्थ सूते। उताऽश्वंतरम्। उत सोमं उत सुराँ। यथ्सौँत्रामणी

समृद्धे। बार्ह्स्पत्यं पृशुं चंतुर्थमंतिपवितस्या लंभते। ब्रह्म वै देवानां बृह्स्पतिंः। ब्रह्मणेव यज्ञस्य व्यृद्धमिपं वपित। पुरोडाशंवानेष पृशुभंवित। न ह्यंतस्य ग्रहं गृह्णन्तिं। सोमंप्रतीकाः पितरस्तृण्णुतिते शतातृण्णाया सम्मवनयित॥२४॥ श्रातायुः पुरुषः श्रातेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। दक्षिणेऽग्नौ जुंहोति। पापवस्यसस्य व्यावृत्त्ये। हिरंण्यमन्त्रा धारयित। पूतामेवेनां जुहोति। श्रातमानं भवति। श्रातायुः पुरुषः श्रातेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। यत्रैव शंतातृण्णां धारयित॥२५॥

तन्निदंधाति प्रतिष्ठित्यै। पितृन् वा एतस्यैन्द्रियं वीर्यं गच्छति। य सोमोंऽति पवंते। पितृणां याँज्यानुवाक्यांभिरुपं तिष्ठते। यदेवास्यं पितृनिन्द्रियं वीर्यं गच्छंति। तदेवावं रुन्धे। तिसृभिरुपं तिष्ठते। तृतीये वा इतो लोके पितरंः। तानेव प्रीणाति। अथो त्रीणि वै यज्ञस्यैन्द्रियाणि। अध्वर्युरहोतां ब्रह्मा। त उपंतिष्ठन्ते। यान्येव

यज्ञस्यैन्द्रियाणिं। तैरेवास्मैं भेषजं करोति॥२६॥

प्रीणाति प्रथमो दक्षिंणा समवंनयति धारयंतीन्द्रियाणि चत्वारि च॥

अग्निष्टोममग्र आहंरति। यज्ञमुखं वा अग्निष्टोमः। यज्ञमुखमेवारभ्यं सवमा ऋंमते। अथैषों ऽभिषेचनीयंश्चतुस्त्रि १ शपंवमानो भवति। त्रयंस्त्रि १ शहै देवताः। ता एवाऽऽप्नोति। प्रजापंतिश्चतुस्त्रिंशः। तमेवाऽऽप्नोति। सश्शर एष

स्तोमांनामयंथापूर्वम्। यद्विषंमाः स्तोमाः॥२७॥

स्तोमाः पशवं उक्थान्येकं च॥=

एतावान् वै यज्ञः। यावान्पर्वमानाः। अन्तः श्लेषंणं त्वा अन्यत्। यथ्समाः पवंमानाः। तेनाऽसर्श्रारः। तेनं यथापूर्वम्। आत्मनुवाग्निष्टोमेनुर्ध्नोतिं। आत्मना पुण्यों भवति। प्रजा वा उक्थानिं। पशवं उक्थानिं। यदुक्थ्यों भवत्यनु सन्तंत्त्यै॥२८॥

उपं त्वा जामयो गिर् इतिं प्रतिपद्भवति। वाग्वै वायुः। वाच एवैषों ऽभिषेकः।

सर्वांसामेव प्रजाना रे सूयते। सर्वां एनं प्रजा राजेतिं वदन्ति। एतमु त्यन्दश् क्षिप् इत्यांह। आदित्या वै प्रजाः। प्रजानांमेवैतेनं सूयते। यन्ति वा एते यंज्ञमुखात्। ये संम्भार्यां अक्रन्॥२९॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् १)

यदाह् पर्वस्व वाचो अग्निय इति। तेनैव यंज्ञमुखान्नयंन्ति। अनुष्टुक्प्रंथमा भंवति। अनुष्टुगुंत्तमा। वाग्वा अनुष्टुक्। वाचैव प्रयन्ति। वाचोद्यंन्ति। उद्वंतीर्भवन्ति। उद्वद्वा अनुष्टुभो रूपम्। आनुष्टुभो राजन्यः॥३०॥

तस्मादुद्वंतीर्भवन्ति। सौर्यंनुष्टुगुंत्तमा भंवति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्तंत्यै। यो वै स्वादेति। नैनर्ं स्व उपनमित। यः सामंभ्य एति। पापीयान्थ्सुषुवाणो भंवति। एतानि खलु वै सामानि। यत्पृष्ठानि। यत्पृष्ठानि भवन्ति॥३१॥

तैरेव स्वान्नैतिं। यानिं देवराजानाः सामानि। तैर्मुष्मिंश्लोक ऋंध्रोति। यानिं मनुष्यराजानाः सामानि। तैर्स्मिंश्लोक ऋंध्रोति। उभयोरेव लोकयोर् ऋध्रोति। देवलोके चं मनुष्यलोके चं। एकविष्शोऽभिषेचनीयस्योत्तमो भवति। एकविष्शः केशवपनीयंस्य प्रथमः। सप्तदशो दंशपेयः॥३२॥

विड्वा एंकवि शः। राष्ट्र संप्तदशः। विशं एवैतन्मंध्यतों ऽभिषिंच्यते। तस्माद्वा एष विशां प्रियः। विशो हि मध्यतोंऽभिषिच्यतें। यद्वा एनमदो दिशोऽनुं व्यास्थापयंन्ति। तथ्सुंवर्गं लोकमभ्या रोहति। यदिमं लोकं न प्रत्यवरोहेंत्। अतिजनं वेयात्। उद्वां माद्येत्। यदेष प्रंतीचीनंः स्तोमो भवंति। इममेव तेनं

लोकं प्रत्यवरोहति। अथों अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठत्यनुंन्मादाय॥३३॥ अर्ऋत्राजन्यों भवंन्ति दशपेयों माद्येश्रीणिं च॥—

इयं वै रंजता। असौ हरिणी। यद्रुक्मौ भवंतः। आभ्यामेवेनंमुभ्यतः परि गृह्णाति। वरुणस्य वा अभिषिच्यमानस्यापः। इन्द्रियं वीर्यं निरंघ्नन्। तथ्सुवर्ण् ध

हिरंण्यमभवत्। यद्रुक्ममंन्तुर्दधांति। इन्द्रियस्यं वीर्यस्यानिर्घाताय। शतमानो भवति शतक्षरः। शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। आयुर्वे हिरंण्यम्। आयुष्यां एवैनंमभ्यतिं क्षरन्ति। तेजो वै हिरंण्यम्। तेजस्यां एवैनंमभ्यतिं क्षरन्ति।

वर्चो वै हिरंण्यम्। वर्चस्यां एवैनंमभ्यतिं क्षरन्ति॥३४॥

श्तक्षंरोऽष्टौ चं॥_____

अप्रीतिष्ठितो वा एष इत्यांहुः। यो रांज्सूयेंन् यजंत् इतिं। यदा वा एष एतेनं द्विरात्रेण यजंते। अथं प्रतिष्ठा। अथं संवथ्सरमाप्रोति। यावंन्ति संवथ्सरस्यांहोरात्राणिं। तावंतीरेतस्यं स्तोत्रीयाः। अहोरात्रेष्वेव प्रतिं तिष्ठति। अग्निष्टोमः पूर्वमहंर्भवति। अतिरात्र उत्तरम्॥३५॥

नानैवाहोरात्रयोः प्रतिं तिष्ठति। पौर्णमास्यां पूर्वमहंभवति। व्यष्टकायामुत्तरम्। नानैवार्धमासयोः प्रतिं तिष्ठति। अमावास्यायां पूर्वमहंभवति। उद्दृष्ट उत्तरम्। नानैव मासयोः प्रतिं तिष्ठति। अथो खलुं। ये एव समानपक्षे पुण्याहे स्याताम्। तयौः कार्यं प्रतिष्ठित्ये॥३६॥

अपृश्व्यो द्विरात्र इत्यांहुः। द्वे ह्येते छन्दंसी। गायत्रं च त्रैष्टुंभं च। जगंतीम्नत्यंन्ति। न तेन् जगंती कृतेत्यांहुः। यदेनान्तृतीयसवने कुर्वन्तीतिं।

यदा वा एषाऽहीन्स्याह्भंजंते। साह्रस्यं वा सर्वनम्। अथैव जगंती कृता। अथं पश्रव्यः। व्यंष्टिर्वा एष द्विरात्रः। य एवं विद्वान्द्विरात्रेण यजंते। व्येवास्मां उच्छति। अथो तमं एवापं हते। अग्निष्टोममंन्त्तत आ हंरति। अग्निः सर्वा देवताः। देवतांस्वेव प्रतिं तिष्ठति॥३७॥

-[१०]

वर्रणस्य यदिश्वभ्यां यत्रिषु तस्मादुद्वंतीः सप्तत्रिर्श्शत्॥३७॥

वर्रुणस्य प्रति तिष्ठति॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे प्रथमाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टकम् २॥

॥प्रथमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

अङ्गिरसो वै स्त्रमांसत। तेषां पृश्जिर्धर्मधुगांसीत्। सर्जीषणांजीवत्। तैंऽब्रुवन्। कस्मै नु स्त्रमांस्महे। येंऽस्या ओषधीर्न जनयांम् इतिं। ते दिवो वृष्टिंमसृजन्त। यावंन्तः स्तोका अवापंद्यन्त। तावंतीरोषधयोऽजायन्त। ता जाताः पितरो विषेणांलिम्पन्॥१॥

तासाँ ज्रुष्वा रुप्युन्त्यैत्। तेँऽब्रुवन्। क इदिमृत्थमंक्रिति। व्यं भागिधेयमिच्छमाना इति पितरौँऽब्रुवन्। किं वो भाग्धेयमिति। अग्निहोत्र एव नोऽप्यस्त्वित्यंब्रुवन्। तेभ्यं एतद्भांग्धेयं प्रायंच्छन्। यद्भुत्वा निमार्ष्टि। ततो वै त ओषंधीरस्वदयन्। य एवं वेदं॥२॥

स्वदंन्तेऽस्मा ओषंधयः। ते वृथ्समुपावांसृजन्। इदं नों हूव्यं प्रदांप्येतिं।

सौंऽब्रवीद्वरं वृणै। दशं मा रात्रींर्जातं न दोहन्। आसङ्गवं मात्रा सह चराणीति। तस्मौद्वथ्सं जातं दश रात्रीर्न दुहन्ति। आसङ्गवं मात्रा सह चरति। वारेवृत्ड् ह्यंस्य। तस्मौद्वथ्स॰ स॰सृष्टध्य॰ रुद्रो घातुंकः। अति हि सन्धान्धयंति॥३॥

अ्रिम्पन्वेद् घातुंक् एकं च॥——[१] प्रजापंतिरुग्निमंसृजत। तं प्रजा अन्वंसृज्यन्त। तमंभाग उपाँस्त। सौंऽस्य

प्रजाभिरपाँकामत्। तमंवरुरुंध्समानोऽन्वैत्। तमंवरुधं नाशंक्रोत्। स तपोंऽतप्यत। सौंऽग्निरुपांरम्तातांपि वै स्य प्रजापंतिरितिं। स रुराटादुदंमृष्ट॥४॥

तद्घृतमंभवत्। तस्माद्यस्यं दक्षिण्तः केशा उन्मृंष्टाः। ताञ्चेष्ठलृक्ष्मी प्रांजापृत्येत्यांहुः। यद्र्राटांदुदमृष्ट। तस्माद्र्राटे केशा न संन्ति। तद्ग्रौ प्रागृह्णात्। तद्यंचिकिथ्सत्। जुहवानी(३) मा हौषा(३)मितिं। तिद्वंचिकिथ्सायै जन्मं। य एवं विद्वान् विचिकिथ्सति॥५॥

वसींय एव चेतयते। तं वागुभ्यंवदञ्जुहुधीतिं। सौंऽब्रवीत्। कस्त्वम्सीतिं। स्वैव ते

वागित्यंब्रवीत्। सोऽजुहोथ्स्वाहेतिं। तथ्स्वांहाकारस्य जन्मं। य एव इस्वांहाकारस्य जन्म वेदं। करोतिं स्वाहाकारेणं वीर्यम्। यस्यैवं विदुषंः स्वाहाकारेण जुह्वंति॥६॥ भोगांयैवास्यं हुतं भंवति। तस्या आहुंत्यै पुरुषमसृजत। द्वितीयंमजुहोत्। सोऽश्वंमसृजत। तृतीयंमजुहोत्। स गामंसृजत। चतुर्थमंजुहोत्। सोऽविंमसृजत। पश्चममंजुहोत्। सोंऽजामंसृजत॥७॥ सौंऽग्निरंबिभेत्। आहुंतीभिवें मांऽऽप्नोतीतिं। स प्रजापंतिं पुनः प्राविंशत्। तं प्रजापंतिरब्रवीत्। जायुस्वेतिं। सौंऽब्रवीत्। किं भागधेयंमुभि जीनिष्य इतिं।

तुभ्यमेवेद १ ह्याता इत्यंब्रवीत्। स एतद्भाग्धेयंमुभ्यंजायत। यदंग्निहोत्रम्॥८॥ तस्मादि शिहोत्रमुंच्यते। तद्ध्यमानमादित्यौं ऽब्रवीत्। मा हौंषीः। उभयोर्वे नांवेतिदितिं। सौंऽग्निरंब्रवीत्। कथं नौं होष्युन्तीतिं। सायमेव तुभ्यंं जुहवन्ं। प्रातर्मह्यमित्यंब्रवीत्। तस्मांदुग्नयं साय हूं यते। सूर्याय प्रातः॥९॥

आग्नेयी वै रात्रिः। ऐन्द्रमहंः। यदनुंदिते सूर्ये प्रातर्जुहुयात्। उभयंमेवाग्नेयः

स्यौत्। उदिते सूर्ये प्रातर्जुहोति। तथाऽग्नये साय हूंयते। सूर्याय प्रातः। रात्रिं वा अनुं प्रजाः प्र जांयन्ते। अह्य प्रतिं तिष्ठन्ति। यथ्सायं जुहोति॥१०॥

प्रैव तेनं जायते। उदिते सूर्यें प्रातर्जुहोति। प्रत्येव तेनं तिष्ठति।

प्रजापंतिरकामयत् प्रजांयेयेतिं। स एतदंग्निहोत्रं मिथुनमंपश्यत्। तद्दिते

सूर्येऽजुहोत्। यर्जुषाऽन्यत्। तूष्णीमृन्यत्। ततो वै स प्राजांयत। यस्यैवं विदुष् उदिते सूर्येऽग्निहोत्रं जुह्वंति॥११॥ प्रैव जांयते। अथो यथा दिवा प्रजानन्नेति। ताद्दगेव तत्। अथो खल्वांहुः। यस्य वै द्वौ पुण्यौ गृहे वसंतः। यस्तयोरन्य राधयंत्यन्यं न। उभौ वाव स

तार्वृच्छ्तीति। अग्निं वावाऽऽदित्यः सायं प्र विंशति। तस्मांदग्निर्दूरान्नक्तं दहशे। उभे हि तेजंसी सम्पद्येते॥१२॥ उद्यन्तं वावाऽऽदित्यम्ग्निरनुं समारोहति। तस्मांद्धूम पुवाग्नेर्दिवां दहशे। यद्ग्रयें सायं जुंहुयात्। आ सूर्याय वृश्च्येत। यथ्सूर्याय प्रातर्जुहुयात्। आऽग्नये वृश्च्येत। देवतांभ्यः समदं दध्यात्। अग्निज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहेत्येव साय होत्व्यम्। सूर्यो ज्योतिज्योतिंगुः स्वाहेतिं प्रातः। तथोभाभ्या र् साय हूंयते॥१३॥

उभाभ्यां प्रातः। न देवतांभ्यः समदं दधाति। अग्निज्यांतिरित्यांह। अग्निर्वे रेतोधाः। प्रजा ज्योतिरित्यांह। प्रजा एवास्मै प्र जनयति। सूर्यो ज्योतिरित्यांह। प्रजास्वेव प्रजातासु रेतो दधाति। ज्योतिरिग्निः स्वाहेत्यांह। प्रजा एव प्रजाता अस्यां प्रतिष्ठापयति॥१४॥

तूष्णीमृत्तंग्माहुंतिं जुहोति। मिथुन्त्वाय् प्रजांत्यै। यदुदिते सूर्यं प्रांतर्जुहुयात्। यथाऽतिंथये प्रद्रुंताय शून्यायांवस्थायांहार्य हर्नित। ताहगेव तत्। काऽऽह् तत्स्तद्भवतीत्यांहुः। यथ्स न वेदं। यस्मै तद्धर्न्तीतिं। तस्माद्यदौष्मं जुहोतिं। तदेव संम्प्रति। अथो यथा प्रार्थमौष्मं परिवेवेष्टि। ताहगेव तत्॥१५॥ अमृष्ट विचिकिथ्मंति जुह्नंत्युजामंम् जताग्रिहोत्र सूर्याय प्रातर्जुहोति जुह्नंति स्म्पर्वेते हूयते स्थापयित सम्प्रति हे चं॥ [२]

रुद्रो वा एषः। यद्ग्निः। पत्नी स्थाली। यन्मध्येऽग्नेरंधिश्रयेत्। रुद्राय पत्नीमपिं दध्यात्। प्रमायुंका स्यात्। उदीचोऽङ्गांरान्निरूह्याधिं श्रयति। पत्नियै गोपीथायं। व्यन्तान्करोति। तथा पत्र्यप्रमायुका भवति॥१६॥

घुर्मो वा एषोऽशाँन्तः। अहंरहुः प्र वृंज्यते। यदंग्निहोत्रम्। प्रतिंषिश्चेत्पृशुकांमस्य। शान्तिमेव हि पंश्व्यम्। न प्रतिंषिश्चेद्वह्मवर्चसकांमस्य। सिमंद्धिमेव हि ब्रह्मवर्चसम्। अथो खलुं। प्रतिषिच्यंमेव। यत्प्रतिषिश्चतिं॥१७॥

तत्पंश्वयम्। यञ्जुहोतिं। तद्वंह्मवर्चसि। उभयंमेवाकः। प्रच्युंतं वा एतद्स्माल्लोकात्। अगंतं देवलोकम्। यच्छृतः ह्विरनंभिघारितम्। अभि द्यांतयति। अभ्यंवैनंद्घारयति। अथों देवत्रैवैनंद्गमयति॥१८॥

पर्यमि करोति। रक्षंसामपंहत्यै। त्रिः पर्यमि करोति। त्र्यांवृद्धि युज्ञः। अथों मेध्यत्वायं। यत्प्राचीनंमुद्धासर्यंत्। यजंमान शुचा ऽपंयेत्। यद्दंक्षिणा। पितृदेवत्य इं स्यात्। यत्प्रत्यक्॥१९॥ प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

पत्नी रे शुचा ऽपंयेत्। उदीचीनुमुद्वांसयति। एषा वै देवमनुष्याणा रे शान्ता दिक्। तामेवैनदनूद्वांसयति शान्त्यैं। वर्त्मं करोति। यज्ञस्य सन्तंत्यै। निष्टंपति। उपैव तथ्स्तृंणाति। चतुरुन्नयति। चतुंष्पादः पशवंः॥२०॥

पशूनेवावंरुन्थे। सर्वांन्पूर्णानुन्नंयति। सर्वे हि पुण्यां राद्धाः। अनूच उन्नंयति। प्रजायां अनूचीनत्वायं। अनूच्येवास्यं प्रजाऽर्धुंका भवति। सम्मृंशति व्यावृंत्त्यै। नाहों ष्यनुपं सादयेत्। यदहों ष्यनुपसादयेत्। यथाऽन्यस्मां उपनिधायं॥२१॥

अन्यस्मै प्रयच्छंति। तादृगेव तत्। आऽस्मै वृश्च्येत। यदेव गार्हंपत्येऽधि श्रयंति। तेन गार्हंपत्यं प्रीणाति। अग्निरंबिभेत्। आहुंतयो माऽत्येंष्यन्तीतिं। स पुता समिर्धमपश्यत्। तामाऽर्धत्त। ततो वा अग्नावाहुतयोऽध्रियन्त॥२२॥

यदेन समयंच्छत्। तथ्सिमधंः सिमत्त्वम्। सिमधमा दंधाति। समेवैनं यच्छति। आहुंतीनां धृत्यैं। अथों अग्निहोत्रमेवेध्मवंत्करोति। आहुंतीनां प्रतिष्ठित्यै। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यदेका र सिमधंमाधाय द्वे आहुंती जुहोतिं। अथ कस्यार्र

समिधिं द्वितीयामाहंतिं जुहोतीतिं॥२३॥

यह्ने स्मिधांवा द्थ्यात्। भ्रातृंव्यमस्मै जनयेत्। एकाई स्मिधंमाधायं। यजुंषा-ऽन्यामाहृंतिं जुहोति। उभे एव स्मिद्धंती आहृंती जुहोति। नास्मै भ्रातृंव्यं जनयित। आदींप्तायां जुहोति। सिमंद्धिमिव हि ब्रंह्मवर्च्सम्। अथो यथाऽतिंथिं ज्योतिंष्कृत्वा पंरि वेवेष्टि। ताद्दगेव तत्। चृतुरुन्नंयित। द्विर्जुहोति। तस्मौद्विपाचतुंष्पादमित। अथौं द्विपद्येव चतुंष्पदः प्रतिष्ठापयित॥२४॥

भ्वति प्रतिषिश्चिति गमयि प्रत्यक्पशवं उपनिधायाँप्रियन्तेति तच्चत्वारि च॥———[३]

उत्तरावर्ती वै देवा आहुतिमजुहवुः। अवाचीमसुराः। ततो देवा अभवन्।

परा रम्गः। यं कामयेत वसीयान्यस्यादिति। कनीयस्तस्य पर्वर्शं हत्वा। उत्तरं

पराऽसुराः। यं कामयेत् वसीयान्थस्यादिति। कनीयस्तस्य पूर्व हुत्वा। उत्तरं भूयो जुहुयात्। एषा वा उत्तरावृत्याहुंतिः। तान्देवा अजुहवुः। तत्नस्तेऽभवन्॥२५॥

यस्यैवं जुह्वंति। भवंत्येव। यं कामयंत् पापीयान्थस्यादितिं। भूयस्तस्य पूर्वर्षे हुत्वा। उत्तरं कनीयो जुहुयात्। एषा वा अवाच्याहुंतिः। तामसुंरा अजुहवुः। तत्स्ते

परांऽभवन्। यस्यैवं जुह्वंति। परैव भंवति॥२६॥

हुत्वोपं सादयत्यजांमित्वाय। अथो व्यावृत्त्यै। गार्हंपत्युं प्रतींक्षते। अनंनुध्यायिनमेवैनं करोति। अग्निहोत्रस्य वै स्थाणुरंस्ति। तं य ऋच्छेत्। यज्ञस्थाणुमृच्छेत्। एष वा अग्निहोत्रस्यं स्थाणुः। यत्पूर्वाऽऽहुंतिः। तां यदुत्तंरयाऽभि जुंहुयात्॥२७॥

यज्ञस्थाणमृच्छेत्। अतिहाय पूर्वामाहुतिं जुहोति। यज्ञस्थाणमेव परि वृणक्ति। अथो भ्रातृंव्यमेवास्वाऽतिं क्रामति। अवाचीन र सायमुपमार्षि। रेतं एव तद्दंधाति। ऊर्ध्वं प्रातः। प्र जनयत्येव तत्। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। चृतुरुन्नंयति॥२८॥

द्विर्जुहोति। अथ के द्वे आहुंती भवत इतिं। अग्नौ वैश्वान्र इतिं ब्रूयात्। एष वा अग्निर्वेश्वान्रः। यद्वाँह्मणः। हुत्वा द्विः प्राश्ञांति। अग्नावेव वैश्वान्रे द्वे आहुंती जुहोति। द्विर्जुहोतिं। द्विर्निमाँष्टिं। द्विः प्राश्ञांति॥२९॥

षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। किं

यत्तूष्णीम्। तत्प्रांजापृत्यम्॥३०॥ यन्निमार्ष्टिं। तदोषंधीनाम्। यद्वितीयम्ं। तत्पितृणाम्। यत्प्राश्ञांति।

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तद्गर्भाणाम्। तस्माद्गर्भा अनंश्ञन्तो वर्धन्ते। यदाचामंति। तन्मंनुष्यांणाम्। उदंङ्घर्यावृत्याचांमति॥३१॥ आत्मनों गोपीथायं। निर्णेनेक्ति शुद्धौं। निष्टंपति स्वगाकृंत्यै। उद्दिंशति।

देवत्यंमग्निहोत्रमितिं। वैश्वदेवमितिं ब्रूयात्। यद्यजुंषा जुहोतिं। तदैंन्द्राग्नम्।

आत्मना गापायाया निणनाक्त शुद्धा निष्ठपात स्वगाकृत्या उद्दिशाता सप्तर्षीनेव प्रीणाति। दक्षिणा पूर्यावंतिते। स्वमेव वीर्यमन् पूर्यावंतिते। तस्माद्दक्षिणोऽर्घ आत्मनो वीर्यावत्तरः। अथो आदित्यस्यैवावृत्मन् पूर्यावंतिते। हुत्वोप् समिन्धे॥३२॥

ब्रह्मवर्चसस्य सिमंद्धै। न ब्र्हिरनु प्र हंरेत्। असईस्थितो वा एष यज्ञः। यदंग्निहोत्रम्। यदंनु प्रहरेत्। यज्ञं विच्छिन्द्यात्। तस्मान्नानुं प्रहृत्यम्। यज्ञस्य सन्तंत्यै। अपो नि नंयति। अवभृथस्यैव रूपमंकः॥३३॥ अभवन्भवति जुहुयान्नंयति मार्ष्टि द्विः प्राश्नांति प्राजापत्यमाचांमतीन्धेऽकः॥______[४]

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। अग्निहोत्रप्रायणा यज्ञाः। किं प्रायणमग्निहोत्रमिति। वथ्सो वा अग्निहोत्रस्य प्रायणम्। अग्निहोत्रं यज्ञानाम्। तस्यं पृथिवी सदः। अन्तरिक्षमाग्नीद्भम्। द्यौर्हंविर्धानम्। दिव्या आपः प्रोक्षंणयः। ओषंधयो बर्हिः॥३४॥

वन्स्पतंय इध्मः। दिशः परिधयः। आदित्यो यूपः। यजमानः पृशः। समुद्रो-ऽवभृथः। संवथ्सरः स्वंगाकारः। तस्मादाहिताग्रेः सर्वमेव बहिष्यं दत्तं भविति। यथ्सायं जुहोतिं। रात्रिमेव तेनं दक्षिण्यां कुरुते। यत्प्रातः॥३५॥

अहंरेव तेनं दक्षिण्यं कुरुते। यत्ततो ददांति। सा दक्षिणा। यावंन्तो वै देवा अहंतमादन्। ते परांऽभवन्। त एतदंग्निहोत्र सर्वस्यैव संमवदायांजुहवुः। तस्मादाहुः। अग्निहोत्रं वै देवा गृहाणां निष्कृंतिमपश्यन्नितिं। यथ्सायं जुहोतिं। रात्रिया एव तद्धुताद्यांय॥३६॥ यजंमान्स्यापंराभावाय। यत्प्रातः। अहं एव तद्धुताद्यांय। यजंमान्स्यापंराभावाय। यत्ततोऽश्ञातिं। हुतमेव तत्। द्वयोः पर्यसा जुहुयात्पशुकांमस्य। एतद्वा अंग्निहोत्रं

यत्तता उश्जाता हुतम्व तत्। द्वयाः पयसा जुहुयात्पशुकामस्या पृतद्वा आग्नहात्र मिथुनम्। य एवं वेदं। प्र प्रजयां पृशुभिर्मिथुनैर्जायते॥३७॥

इमामेव पूर्वया दुहे। अमूमुत्तंरया। अधिश्रित्योत्तंरमा नंयति। योनांवेव तद्रेतः

सिश्चिति प्रजनंने। आज्येन जुहुयात्तेजंस्कामस्य। तेजो वा आज्यम्। तेजस्व्येव

भंवति। पर्यसा पृशुकांमस्य। पृतद्वै पंशूना र रूपम्। रूपेणैवास्मैं पृशूनवंरुन्थे॥३८॥

पृशुमानेव भंवति। द्ध्नेन्द्रियकांमस्य। इन्द्रियं वै दिधं। इन्द्रियाव्यंव भंवति। यवाग्वा ग्रामंकामस्योषधा वै मंनुष्याः। भागधेयेनैवास्में सजातानवं रुन्धे। ग्राम्यंव भंवति। अयंज्ञो वा एषः। योऽसामा॥३९॥

चतुरुन्नंयति। चतुंरक्षर एथन्तरम्। रथन्तरस्यैष वर्णः। उपरींव हरति।

अन्तरिक्षं वामदेव्यम्। वामदेव्यस्यैष वर्णः। द्विर्जुहोति। द्यक्षरं बृहत्। बृह्त एष

वर्णः। अग्निहोत्रमेव तथ्सामंन्वत्करोति॥४०॥

यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो वेदं। उपैनमुप्सदो नमन्ति। विन्दतं उपस्तारम्। उन्नीयोपं सादयित। पृथिवीमेव प्रीणाित। होष्यन्नुपंसादयित। अन्तिरक्षमेव प्रीणाित। हुत्वोपं सादयित। दिवंमेव प्रीणाित। एता वा अग्निहोत्रस्योपसदंः॥४१॥ य एवं वेदं। उपैनमुप्सदो नमन्ति। विन्दतं उपस्तारम्। यो वा अग्निहोत्रस्याश्रांवितं प्रत्याश्रांवितः होतांरं ब्रह्माणं वषद्कारं वेदं। तस्य त्वेव

हुतम्। प्राणो वा अग्निहोत्रस्याश्रावितम्। अपानः प्रत्याश्रावितम्। मनो होता। चक्षुंर्ब्रह्मा। निमेषो वंषद्वारः॥४२॥

य एवं वेदं। तस्य त्वेव हुतम्। सायं यावांनश्च वै देवाः प्रांत्यांवांणश्चाग्निहोत्रिणों गृहमागंच्छन्ति। तान् यन्न तुर्पयेंत्। प्रजयांऽस्य पृशुभिविं तिष्ठेरन्। यत्तर्पयेंत्। तृप्ता एनं प्रजयां पृशुभिस्तर्पयेयुः। सजूर्देवैः सायं यावंभिरितिं साय॰ सम्मृंशति। सजूर्देवैः प्रातर्यावंभिरितिं प्रातः। ये चैव देवाः सायं यावांनो ये चं

प्रातर्यावांणः॥४३॥

तानेवोभयाईस्तर्पयित। त एनं तृप्ताः प्रजयां पृश्वभिस्तर्पयन्ति। अरुणो हं स्माहौपंवेशिः। अग्निहोत्र एवाह स् सायं प्रांत्वं अग्तृं अग्तृं व्येभ्यः प्र हंरािम। तस्मान्मत्पापीया स्मो आतृं व्या इति। चतुरुन्नंयित। द्विर्जुहोति। स्मिथ्संप्तमी। सप्तपंदा शक्तंरी। शाक्तरो वर्ज्ञः। अग्निहोत्र एव तथ्सायं प्रांत्वं यं यज्ञंमानो आतृं व्याय प्र हंरति। भवंत्यात्मनां। परांऽस्य आतृं व्यो भवति॥४४॥ वर्षः। प्रांतरहताद्याय जायते रुन्थेऽसामा करोत्येता वा अग्निहोत्रस्योपसदी वषद्वारश्चं प्रातृर्यावाणे वज्रसीणि च॥——[५]

प्रजापंतिरकामयताऽऽत्मृन्वन्मं जायेतेतिं। सोंऽजुहोत्। तस्यांऽऽत्मृन्वदंजायत। अग्निर्वायुरांदित्यः। तेंऽब्रुवन्। प्रजापंतिरहौषीदात्मृन्वन्में जायेतेतिं। तस्यं व्यमंजिनष्महि। जायंतान्न आत्मृन्वदिति तेंऽजुहवुः। प्राणानांमृग्निः। तुनुवैं वायुः॥४५॥

चक्षुंष आदित्यः। तेषा ५ हुतादंजायत् गौरेव। तस्यै पर्यसि व्यायंच्छन्त। ममं

हुतादंजिन ममेति। ते प्रजापंतिं प्रश्ञमांयन्। स आंदित्यौंऽग्निमंब्रवीत्। यत्रो नौ जयात्। तन्नौं सहासदितिं। कस्यै कोऽहौंषीदितिं प्रजापंतिरब्रवीत्कस्यै क इति। प्राणानांमहिमत्यग्निः॥४६॥

त्नुवां अहमितिं वायुः। चक्षुंषोऽहमित्यांदित्यः। य एव प्राणानामहौषीत्। तस्यं हुतादंजनीतिं। अग्नेर्हुतादंजनीतिं। तदिग्निहोत्रस्यांग्निहोत्रत्वम्। गौर्वा अग्निहोत्रम्। य एवं वेद गौरंग्निहोत्रमितिं। प्राणापानाभ्यांमेवाग्निः समर्धयति। अव्यर्धुकः

प्राणापानाभ्यां भवति॥४७॥

य पृवं वेदं। तौ वायुरंब्रवीत्। अनु मा भंजत्मितिं। यदेव गार्हंपत्ये-ऽधिश्रित्यांहव्नीयंम्भ्युंद्रवान्। तेन् त्वां प्रीणानित्यंब्रूताम्। तस्माद्यद्वार्हंपत्ये-ऽधिश्रित्यांहव्नीयंम्भ्युंद्रवंति। वायुम्व तेनं प्रीणाति। प्रजापंतिर्देवताः सृजमानः। अग्निम्व देवतानां प्रथममंसृजतः। सौंऽन्यदांलुम्भ्यंमवित्वा॥४८॥

प्रजापंतिमभि पर्यावंर्तत। स मृत्योरंबिभेत्। सोंऽमुमांदित्यमात्मनो निरंमिमीत।

त १ हुत्वा परौं हुर्यावंर्तत। ततो वै स मृत्युमपां जयत्। अपं मृत्युं जंयति। य एवं वेदं। तस्माद्यस्यैवं विदुषंः। उतैकाहमुत द्यहं न जुह्वंति। हुतमेवास्यं भवति। असौ

ह्यांदित्यों ऽग्निहोत्रम्॥४९॥ तनुवैं वायुरग्निर्भवत्यविंत्वा भवत्येकं च॥

रौद्रं गविं। वायव्यंमुपंसृष्टम्। आश्विनं दुह्यमानम्। सौम्यं दुग्धम्। वारुणमधिं श्रितम्। वैश्वदेवा भिन्दवंः। पौष्णमुदंन्तम्। सारस्वतं विष्यन्दंमानम्। मैत्र १ शरंः। धातुरुद्वांसितम्। बृह्स्पतेरुन्नीतम्। स्वितुः प्र क्रौन्तम्। द्यावापृथिव्य ई ह्रियमाणम्। पुन्द्राग्नमुपंसन्नम्। अग्नेः पूर्वाऽऽहुंतिः। प्रजापंते्रत्तंरा। पुन्द्र रहतम्॥५०॥

उद्वांसित रसप्त चं॥₌ दक्षिणत उपं सृजति। पितृलोकमेव तेनं जयति। प्राचीमा वर्तयति। देवलोकमेव तेनं जयति। उदींचीमावृत्यं दोग्धि। मुनुष्युलोकमेव तेनं जयति। पूर्वौ दुह्याञ्चेष्ठस्यं

ज्यैष्ठिनेयस्यं। यो वां गतश्रीः स्यात्। अपंरौ दुह्यात्कनिष्ठस्यं कानिष्ठिनेयस्यं। यो

वा बुभूषेत्॥५१॥

न सं मृंशति। पापवस्यसस्य व्यावृत्त्यै। वायव्यं वा एतदुपंसृष्टम्। आश्विनं दुद्यमानम्। मैत्रं दुग्धम्। अर्यम्ण उद्वास्यमानम्। त्वाष्ट्रमुन्नीयमानम्। बृह्स्पतेरुन्नीतम्। सवितुः प्रक्रान्तम्। द्यावापृथिव्य ई ह्वियमाणम्॥५२॥

पुन्द्राग्नमुपं सादितम्। सर्वांभ्यो वा पृष देवतांभ्यो जुहोति। योंऽग्निहोत्रं जुहोति। यथा खलु वै धेनुं तीर्थे तर्पयंति। एवमग्निहोत्री यजमानं तर्पयति। तृप्यंति प्रजयां पृश्मिः। प्र सुवर्गं लोकं जानाति। पश्यंति पुत्रम्। पश्यंति पौत्रम्। प्र प्रजयां पृश्मिमिथुनैर्जायते। यस्यैवं विदुषोंऽग्निहोत्रं जुह्वंति। य उं चैनदेवं वेदं॥५३॥ वुभूषेद्धियमांणआयते हे चं॥———[८]

त्रयो वै प्रैयमेधा आंसन्। तेषां त्रिरेकौंऽग्निहोत्रमंजुहोत्। द्विरेकंः। स्कृदेकंः। तेषां यस्त्रिरजुंहोत्। स ऋचाऽजुंहोत्। यो द्विः। स यजुंषा। यः स्कृत्। स तूष्णीम्॥५४॥

लंभते। आदित्यास्तर्ह्याग्नः॥५७॥

यश्च यजुषाऽजुंहोद्यश्चं तूष्णीम्। तावुभावाँध्रुताम्। तस्माद्यजुषाऽऽहुंतिः पूर्वां होत्व्याँ। तूष्णीमुत्तंरा। उभे पुवर्धी अवरुन्धे। अग्निज्योतिज्योतिंरुग्निः स्वाहेतिं सायं जुंहोति। रेतं एव तद्दंधाति। सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहेतिं प्रातः। रेतं एव हितं प्र जनयति। रेतो वा पृतस्यं हितं न प्र जांयते॥५५॥

यस्याँग्निहोत्रमहुंत्र् सूर्योऽभ्युंदेतिं। यद्यन्ते स्यात्। उन्नीय् प्राङ्क्दाद्रंवेत्। स उपसाद्यातिमंतोरासीत। स यदा ताम्याँत्। अथ् भूः स्वाहेतिं जुहुयात्। प्रजापंतिर्वे भूतः। तमेवोपांसरत्। स एवेनं तत् उन्नयित। नार्तिमार्च्छंति यजमानः॥५६॥ वृष्णां जांयते यजमानः॥——[९] यद्ग्निमुद्धरंति। वसंवस्तर्द्यग्निः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। वसुंष्वेवास्यांग्निहोत्र हुतं भवित। निहिंतो धूपायञ्छेते। रुद्रास्तर्द्यग्निः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। यस्य तथांविधे जुह्नंति। यस्य तथांविधे जुह्नंति। रुद्रष्वेवास्यांग्निहोत्र हुतं भवित। प्रथमिप्पम्विरा

तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। आदित्येष्वेवास्यांग्निहोत्र हुतं भविति। सर्वे एव संवृंश इध्म आदींग्नो भवित। विश्वं देवास्तर्द्यग्निः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। विश्वंष्वेवास्यं देवेष्वंग्निहोत्र हुतं भविति। नित्रामृर्चिरुपावैति लोहिनीकेव भविति। इन्द्रस्तर्द्यग्निः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। इन्द्रं एवास्यांग्निहोत्र हुतं भविति॥५८॥

अङ्गारा भवन्ति। तेभ्योऽङ्गारेभ्योऽर्चिरुदेति। प्रजापंतिस्तर्ध्वाग्नः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। प्रजापंतावेवास्यांग्निहोत्र हृतं भवति। शरोऽङ्गारा अध्यूहन्ते। ब्रह्म तर्ह्याग्निः। तस्मिन् यस्य तथांविधे जुह्नंति। ब्रह्मन्नेवास्यांग्निहोत्र हृतं भवति। वसुषु रुद्रेष्वांदित्येषु विश्वंषु देवेषुं। इन्द्रे प्रजापंतौ ब्रह्मन्। अपरिवर्गमेवास्यैतासुं देवतांसु हुतं भवति। यस्यैवं विदुषोंऽग्निहोत्रं जुह्नंति। य उं चैनदेवं वेदं॥५९॥ आदित्यास्तर्धिग्निर्द्धं प्रवास्यांग्निहोत्र हुतं भवति देवेषुं च्लारि च (यद्गिनिहितः प्रथम सर्व प्रव नित्रामङ्गाराः शरोऽङ्गारा

ब्रह्म वसुंष्वष्टौ॥)॥•

ऋतं त्वां सत्येन परिषिश्चामीतिं सायं परिषिश्चति। सत्यं त्वर्तेन परिषिश्चामीतिं प्रातः। अग्निर्वा ऋतम्। असावांदित्यः सत्यम्। अग्निमेव तदांदित्येनं सायं परिषिश्चति। अग्निनांऽऽदित्यं प्रातः सः। यावंदहोरात्रे भवंतः। तावंदस्य लोकस्यं। नार्तिर्न रिष्टिः। नान्तो न पंर्यन्तौंऽस्ति। यस्यैवं विदुषौंऽग्निहोत्रं जुह्वंति। य उंचैनदेवं वेदं॥६०॥

अस्ति द्वे चं॥———[११] अङ्गिरसः प्रजापंतिरग्नि॰ रुद्र उंत्तरावंतीं ब्रह्मवादिनौंऽग्निहोत्रप्रांयणा यज्ञाः प्रजापंतिरकामयताऽऽत्मन्बद्रौद्रङ्गविं

दक्षिणतस्त्रयो वै यदग्निमृतं त्वां सत्येनैकांदश॥११॥

अङ्गिरसः प्रैव तेनं पुशूनेव यन्निमार्ष्ट्रि यो वा अग्निहोत्रस्योपसदो दक्षिणतः षुष्टिः॥६०॥

अङ्गिरसो य उंचैनदेवं वेदं॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥द्वितीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

प्रजापंतिरकामयत प्रजाः सृंजेयेतिं। स एतं दर्शहोतारमपश्यत्। तं मनंसा-ऽनुद्रुत्यं दर्भस्तम्बेंऽजुहोत्। ततो वै स प्रजा अंसृजत। ता अंस्माथ्सृष्टा अपाँकामन्। ता ग्रहेणागृह्णात्। तद्ग्रहंस्य ग्रहुत्वम्। यः कामयेत् प्रजायेयेतिं। स दर्शहोतारं मनंसाऽनुद्रुत्यं दर्भस्तम्बे जुंह्यात्। प्रजापंतिर्वे दर्शहोता॥१॥

प्रजापंतिरेव भूत्वा प्रजायते। मनंसा जुहोति। मनं इव हि प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्यै। पूर्णयां जुहोति। पूर्ण इंव हि प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्यै। न्यूंनया जुहोति। न्यूंनाद्धि प्रजापंतिः प्रजा असृंजत। प्रजाना स्ष्रिः॥२॥

दुर्भस्तम्बे जुंहोति। एतस्माद्वै योनैः प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। यस्मादेव योनैः प्रजापंतिः प्रजा असृजत। तस्मादेव योनेः प्रजायते। ब्राह्मणो दक्षिणत उपास्ते। ब्राह्मणो वै प्रजानांमुपद्रष्टा। उपद्रष्टुमत्येव प्रजायते। ग्रहो भवति। प्रजानाः सृष्टानां

धृत्यै। यं ब्राँह्मणं विद्यां विद्वा १ सं यशो नर्च्छत्॥३॥

सोऽरंण्यं परेत्यं। दर्भस्तम्बमुद्भथ्यं। ब्राह्मणं दक्षिण्तो निषाद्यं। चतुरहोतॄन्व्याचंक्षीत एतद्वै देवानां परमं गुद्धं ब्रह्मं। यचतुर्होतारः। तदेव प्रकाशं गमयति। तदेनं

प्रकाशं गतम्। प्रकाशं प्रजानां गमयति। दुर्भस्तम्बमुद्गथ्य व्याचेष्टे॥४॥

अग्निवान् वै दंर्भस्तम्बः। अग्निवत्येव व्याचंष्टे। ब्राह्मणो दंक्षिणत उपास्ते।

ब्राह्मणो वै प्रजानांमुपद्रष्टा। उपद्रष्टुमत्येवैनं यशं ऋच्छति। ईश्वरन्तं यशोर्तोरित्यांहुः। यस्यान्ते व्याचष्ट इति। वरस्तस्मै देयः। यदेवैनं तत्रोपनमंति।

तदेवावं रुन्धे॥५॥

अग्निमादधानो दशहोत्राऽरणिमवं दध्यात्। प्रजातमेवैनुमा धंत्ते। तेनैवोद्गुत्यांग्निहोत्रं जुंहुयात्। प्रजातमेवैनं ज्ञुहोति। हविर्निर्वफ्स्यं दर्शहोतारं व्याचंक्षीत। प्रजातमेवैनं

निर्वपति। सामिधेनीरंनुवक्ष्यं दशंहोतारं व्याचंक्षीत। सामिधेनीरेव सृष्ट्वाऽऽरभ्य

प्रतंन्ते। अथो यज्ञो वै दर्शहोता। यज्ञमेव तंनुते॥६॥

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) 202

अभिचरं दर्शहोतारं जुह्यात्। नव वै पुरुषे प्राणाः। नार्भिर्दशमी। सप्राणमेवैनमभि चरति। एतावद्वै पुरुषस्य स्वम्। यावंत्प्राणाः। यावंदेवास्यास्ति।

तदभि चंरति। स्वकृंत इरिंणे जुहोति प्रदरे वाँ। एतद्वा अस्यै निर्ऋंतिगृहीतम्। निर्ऋतिगृहीत एवैनं निर्ऋत्या ग्राहयति। यद्वाचः कूरम्। तेन वर्षंद्वरोति। वाच

एवैनं कूरेण प्र वृंश्वति। ताजगार्तिमार्च्छति॥७॥

दर्शहोता सृष्ट्यां ऋच्छेद्धाचेप्टे रुन्ध एव तंनुते निर्ऋतिगृहीतं पश्चं च॥

प्रजापंतिरकामयत दर्शपूर्णमासौ सृंजे्येतिं। स पृतं चतुंर्होतारमपश्यत्।

तं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहव्नीयंऽजुहोत्। ततो वै स दंर्शपूर्णमासावंसृजत।

तावंस्माथ्सुष्टावपांकामताम्। तौ ग्रहेंणागृह्णात्। तद्ग्रहंस्य ग्रहुत्वम्। दुर्शुपूर्णमासावालभ चतुंर्होतारं मनंसाऽनुद्रुत्यांहवनीयें जुहुयात्। दुर्शुपूर्णमासावेव सृष्ट्वाऽऽरभ्य

प्रतंनुते॥८॥

ग्रहों भवति। दुर्शपूर्णमासयौः सृष्टयोर्धृत्यै। सोऽकामयत चातुर्मास्यानि

सृज्येतिं। स एतं पश्चंहोतारमपश्यत्। तं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयेंऽजुहोत्। ततो वै स चांतुर्मास्यान्यंसृजतः। तान्यंस्माथ्सृष्टान्यपांकामन्। तानि ग्रहेणागृह्णात्। तद्गहंस्य ग्रहुत्वम्। चाुतुर्मास्यान्यालभंमानः॥९॥

पश्चेहोतारं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयें जुहुयात्। चातुर्मास्यान्येव सृष्ट्वाऽऽरभ्य प्रतंनुते। ग्रहों भवति। चातुर्मास्याना ५ सृष्टानां धृत्यैं। सोऽकामयत पशुबन्ध ५ सृंजेयेतिं। स पुतर षह्वांतारमपश्यत्। तं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहव्नीयंऽजुहोत्। ततो वै स पंशुबुन्धमंसृजत। सोंस्माथ्सृष्टोऽपांकामत्। तं ग्रहेणागृह्णात्॥१०॥ तद्गहंस्य ग्रहत्वम्। पृशुबन्धेनं युक्ष्यमाणः। षङ्कोतारं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयें जुहुयात्। पुशुबुन्धमेव सृष्ट्वाऽऽरभ्य प्र तंनुते। ग्रहों भवति। पुशुबुन्धस्यं सृष्टस्य धृत्यैं। सोंऽकामयत सौम्यमंध्वर स्ंजेयेतिं। स पुत सप्तहोंतारमपश्यत्। तं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयेंऽजुहोत्। ततो वै स सौम्यमंध्वरमंसृजत॥११॥

सौंऽस्माथ्सृष्टोऽपांकामत्। तं ग्रहेंणागृह्णात्। तद्ग्रहंस्य ग्रह्त्वम्। दीक्षिष्यमांणः।

स्प्तहोतारं मनंसाऽनुद्रुत्यांऽऽहवनीयें जुहुयात्। सौम्यमेवाध्वर स्ष्ट्वाऽऽरभ्य प्र तंनुते। ग्रहों भवति। सौम्यस्याध्वरस्यं सृष्टस्य धृत्यै। देवेभ्यो वै युज्ञो न प्राभंवत्। तमेतावच्छः समंभरन्॥१२॥

यथ्संम्भाराः। ततो वै तेभ्यों युज्ञः प्राभंवत्। यथ्संम्भारा भवंन्ति। युज्ञस्य प्रभूँत्यै। आतिथ्यमासाद्य व्याचेष्टे। युज्ञमुखं वा आतिथ्यम्। मुख्त एव युज्ञः सम्भृत्य प्र तंनुते। अयंज्ञो वा एषः। योऽप्रक्रीकः। न प्रजाः प्रजायेरन्। पत्नीर्व्याचेष्टे। युज्ञमेवाकः। प्रजानां प्रजनंनाय। उपसथ्सु व्याचेष्टे। एतद्वै पत्नीनामायतंनम्। स्व एवना आयत्नेऽवंकल्पयिति॥१३॥

वृत्तु आल्भंमानोऽगृह्णादस्जनाभरआयेर्न्थ्यद्वं॥
[२]

प्रजापंतिरकामयत् प्रजांयेयेतिं। स तपोंऽतप्यतः। स त्रिवृत् कृ स्तोमंमसृजतः। तं पश्चद्शः स्तोमों मध्यत उदंतृणत्। तौ पूँर्वपक्षश्चांपरपक्षश्चांभवताम्। पूर्वपक्षं देवा अन्वसृंज्यन्तः। अपुरुपक्षमन्वसुंराः। ततो देवा अभवन्। पराऽसुंराः। यं कामयेत्

वसीयान्थ्स्यादिति॥१४॥

तं पूर्वपक्षे यांजयेत्। वसीयानेव भवति। यं कामयेत् पापीयान्थ्स्यादिति। तमपरपक्षे यांजयेत्। पापीयानेव भवति। तस्मौत्पूर्वपक्षोऽपरपक्षात्करुण्यंतरः। प्रजापितेवै दशहोता। चतुरहोता पश्चहोता। षङ्कोता सप्तहोता। ऋतवेः संवथ्सरः॥१५॥

प्रजाः पृशवं इमे लोकाः। य एवं प्रजापंतिं बहोर्भूयार्स्सं वेदं। बहोरेव भूयाँ-भवति। प्रजापंतिर्देवासुरानंसृजतः। स इन्द्रमिप नासृंजतः। तं देवा अंब्रुवन्। इन्द्रं नो जन्येतिं। सोंऽब्रवीत्। यथाऽहं युष्माङ्स्तप्साऽसृंक्षिः। एविमन्द्रं जनयध्वमितिं॥१६॥

ते तपोऽतप्यन्त। त आत्मिन्निन्द्रमपश्यन्। तमंब्रुवन्। जायस्वेति। सौऽब्रवीत्। किं भागधेयंमुभि जंनिष्य इति। ऋतून्थ्यंवथ्युरम्। प्रजाः पृशून्। इमाँ ह्योकानित्यंब्रुवन्। तं वै माऽऽहुत्या प्र जनयुतेत्यंब्रवीत्॥१७॥ तं चतुंर्होत्रा प्राजंनयन्। यः कामयेत वीरो म् आजांयेतेति। स चतुंर्होतारं जुहुयात्। प्रजापंतिर्वे चतुंर्होता। प्रजापंतिरेव भूत्वा प्रजायते। जजन्दिन्द्रंमिन्द्रियाय स्वाहेति ग्रहेण जुहोति। आऽस्यं वीरो जांयते। वीर॰ हि देवा एतयाऽऽहुंत्या प्राजंनयन्। आदित्याश्चाङ्गिरसश्च सुवर्गे लोकेंऽस्पर्धन्त। वयं पूर्वे सुवर्गं लोकिमियाम वयं पूर्व इति॥१८॥

त आदित्या पृतं पश्चेहोतारमपश्यन्। तं पुरा प्रांतरनुवाकादाग्नींध्रेऽजुहवुः। ततो वै ते पूर्वे सुवर्गं लोकमायन्। यः सुवर्गकामः स्यात्। स पश्चेहोतारं पुरा प्रांतरनुवाकादाग्नींध्रे जुहुयात्। स्वथ्सरो वै पश्चेहोता। स्वथ्सरः सुवर्गो लोकः। स्वथ्सर पृवर्त्षुं प्रतिष्ठायं। सुवर्गं लोकमेति। तेंऽब्रुवन्निङ्गिरस आदित्यान्॥१९॥ क्वं स्थ। क्वं वः सुद्यो हृव्यं वंक्ष्याम् इति। छन्दः स्वित्यंब्रुवन्। गायुत्रियां

क स्था क वः सुन्धा हुव्य वक्ष्याम् इति। छन्दः स्वित्यश्रुवन्। गायात्रया त्रिष्टुभि जगत्यामिति। तस्माच्छन्दः सु सुन्ध आदित्येभ्यः। आङ्गीर्सीः प्रजा हुव्यं वहन्ति। वहन्त्यस्मै प्रजा बिलम्। ऐन्मप्रतिख्यातं गच्छति। य एवं वेदे। द्वादेश् मासाः पश्चर्तवंः। त्रयं इमे लोकाः। असावांदित्य एंकविर्शः। एतस्मिन्वा एष श्रितः। एतस्मिन्प्रतिष्ठितः। य एवमेत १ श्रितं प्रतिष्ठितं वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥२०॥

स्यादिति संवथ्सरो जनयध्यमितीत्यंब्रवीत्पूर्व इत्यांदित्यानृतवः पद्गं॥———[३] प्रजापंतिरकामयत् प्रजायेयेति। स एतं दर्शहोतारमपश्यत्। तेनं दश्धाऽऽत्मानं

विधायं। दशंहोत्राऽतप्यत। तस्य चित्तिः स्रुगासीत्। चित्तमाज्यम्। तस्यैतावंत्येव वागासीत्। पुतावान् यज्ञऋतुः। स चतुर्होतारमसृजत। सोऽनन्दत्॥२१॥

असृंक्षि वा इमिनिति। तस्य सोमों हुविरासींत्। स चतुंर्होत्राऽतप्यत। सोऽताम्यत्। स भूरिति व्याहंरत्। स भूमिमसृजतः। अग्निहोत्रं दंर्शपूर्णमासौ यजूरंषि। स द्वितीयंमतप्यतः। सोऽताम्यत्। स भुव इति व्याहंरत्॥२२॥

सों ऽन्तरिक्षमसृजतः। चातुर्मास्यानि सामानि। स तृतीयंमतप्यतः। सो ऽताम्यत्। स सुवरिति व्याहरत्। स दिवंमसृजतः। अग्निष्टोममुक्थ्यंमतिरात्रमृचंः। एता वै व्याहृतय इमे लोकाः। इमान्खलु वै लोकानन् प्रजाः पृशवृश्छन्दार्शसे प्राजायन्तः। य एवमेताः प्रजापंतेः प्रथमा व्याहृतीः प्रजाता वेदं॥२३॥

द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्र प्रजयां प्शुभिंमिथुनैजांयते। स पश्चंहोतारमसृजत। स ह्विनीविंन्दत। तस्मै सोमंस्तुनुवं प्रायंच्छत्। एतत्तं ह्विरितिं। स पश्चंहोत्राऽतप्यत। सोऽताम्यत्। स प्रत्यङ्कंबाधत। सोऽसुंरानसृजत। तदस्याप्रिंयमासीत्॥२४॥

तद्दुर्वर्ण् हरेण्यमभवत्। तद्दुर्वर्णस्य हिरेण्यस्य जन्मं। स द्वितीयंमतप्यत। सोऽताम्यत्। स प्राङंबाधता स देवानंसृजतः। तदंस्य प्रियमांसीत्। तथ्सुवर्ण् हिरेण्यमभवत्। तथ्सुवर्णस्य हिरेण्यस्य जन्मं। य एव स्वर्णस्य हिरेण्यस्य जन्म वेदं॥२५॥

सुवर्णं आत्मनां भवति। दुर्वर्णों ऽस्य भ्रातृं व्यः। तस्माँ थ्सुवर्ण् १ हिरंण्यं भार्यम्ँ। सुवर्णं एव भवति। ऐनं प्रियं गंच्छति नाप्रियम्। स सप्तहों तारमसृजत। स सप्तहों त्रैव सुवर्णं लोकमैंत्। त्रिण्वेन स्तोमेनैभ्यो लोकभ्योऽसुं रान्प्राणुंदत। त्रयस्त्रि १ प्रत्यंतिष्ठत्। एकवि १ शेन रुचं मधत्त॥ २६॥

त्रिणवेन स्तोमेनेभ्यो लोकेभ्यो भ्रातृंव्यान्प्रणुंदते। त्रयस्त्रि शोन प्रतिं तिष्ठति।

सप्तदशेन प्राजायत। य एवं विद्वान्थ्सोमेन यजेते। सप्तहौत्रैव स्वर्गं लोकमेति।

एकवि शोन रुचं धत्ते। सप्तदशेन प्र जांयते। तस्मांध्सप्तदशः स्तोमो न निर्हृत्यंः। प्रजापंतिर्वे संप्तदशः। प्रजापंतिमेव मध्यतो धंत्ते प्रजाँत्यै॥२७॥ अनुन्दद्भुव इति व्याहंर्द्वेदांसीद्वेदांधत्त प्रजांत्यै॥—— देवा वै वर्रुणमयाजयन्। स यस्यैयस्यै देवतांयै दक्षिणामनंयत्। तामंब्रीनात्। तें ऽब्रुवन्। व्यावृत्य प्रतिंगृह्णाम। तथां नो दक्षिणा न ब्लेष्यतीतिं। ते व्यावृत्य प्रत्यंगृह्णन्। ततो वै तान्दक्षिणा नाष्ट्रीनात्। य एवं विद्वान्व्यावृत्य दक्षिणां प्रतिगृह्णातिं। नैनं दक्षिंणा ब्रीनाति॥२८॥ राजां त्वा वरुंणो नयत् देवि दक्षिणेऽग्रये हिरंण्यमित्यांह। आग्नेयं वै

हिरंण्यम्। स्वयैवैनंद्देवतंया प्रतिगृह्णाति। सोमाय वास इत्याह। सौम्यं वै वासंः।

स्वयैवैनंद्देवतंया प्रतिंगृह्णाति। रुद्राय गामित्यांह। रौद्री वै गौः। स्वयैवैनां देवतंया

प्रतिंगृह्णाति। वर्रुणायाश्वमित्यांह॥२९॥

वारुणो वा अर्थः। स्वयैवैनं देवतंया प्रतिंगृह्णाति। प्रजापंतये पुरुषमित्यांह। प्राजापत्यो वे पुरुषः। स्वयैवैनं देवतंया प्रतिं गृह्णाति। मनवे तल्पमित्यांह। मानवो वे तल्पः। स्वयैवैनं देवतंया प्रतिं गृह्णाति। उत्तानायांङ्गीर्सायान् इत्यांह। इयं वा उत्तान आङ्गीरसः॥३०॥

अनयैवैन्त्प्रतिं गृह्णाति। वैश्वानयर्चा रथं प्रतिं गृह्णाति। वैश्वानरो वै देवतया रथंः। स्वयैवैनं देवतया प्रतिं गृह्णाति। तेनांमृत्त्वमंश्यामित्यांह। अमृतंमेवाऽऽत्मन्धंत्ते। वयो दात्र इत्यांह। वयं पृवैनं कृत्वा। सुवर्गं लोकं गंमयति। मयो मह्यंमस्तु प्रतिग्रहीत्र इत्यांह॥३१॥

यद्वै शिवम्। तन्मयंः। आत्मनं एवेषा परींत्तिः। क इदं कस्मां अदादित्यांह। प्रजापंतिर्वे कः। स प्रजापंतये ददाति। कामः कामायेत्यांह। कामेन् हि ददांति। कामेन प्रतिगृह्णातिं। कामों दाता कामः प्रतिग्रहीतेत्यांह॥३२॥

कामो हि दाता। कार्मः प्रतिग्रहीता। काम र समुद्रमाविशेत्यांह। समुद्र इंव हि

कामंः। नेव हि काम्स्यान्तोऽस्तिं। न संमुद्रस्यं। कामेन त्वा प्रतिगृह्णामीत्यांह। येन कामेन प्रतिगृह्णातिं। स एवेनंम्मुष्मिं श्लोके काम् आगंच्छति। कामैतत्तं एषा ते काम् दक्षिणेत्यांह। कामं एव तद्यजंमानोऽमुष्मिं श्लोके दक्षिणामिच्छति। न प्रतिग्रहीतिरं। य एवं विद्वान्दक्षिणां प्रतिग्रह्णाति। अनुणामवैनां प्रति ग्रह्णाति॥३३॥

प्रतिग्रहीतरि। य एवं विद्वान्दक्षिणां प्रतिगृह्णाति। अनृणामेवैनां प्रति गृह्णाति॥३३॥ क्षीनात्यश्वमित्यांहाङ्गीर्सः प्रतिग्रहीत्र इत्यांह प्रतिग्रहीतेत्यांह दक्षिणेत्यांह च्त्वारि च॥————[५]

अन्तो वा एष यज्ञस्यं। यद्दंशममहंः। दशमेऽहंन्थ्सर्पराज्ञियां ऋग्भिः स्तुंवन्ति।

यज्ञस्यैवान्तं गृत्वा। अन्नाद्यमवं रुन्थते। तिसृभिः स्तुवन्ति। त्रयं इमे लोकाः। पृभ्य पृव लोकेभ्योऽन्नाद्यमवं रुन्थते। पृश्चिवतीर्भवन्ति। अन्नं वै पृश्चि॥३४॥ अन्नमेवावं रुन्थते। मनंसा प्रस्तौति। मनसोद्गायित। मनंसा प्रतिं हरित। मनं इव हि प्रजापितः। प्रजापित्रार्थै। देवा वै सूर्पाः। तेषािम्य राज्ञी। यथ्सपिराज्ञियां ऋग्भिः स्तुवन्ति। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठन्ति॥३५॥

चतुंरहोतृन् होता व्याचेष्टे। स्तुतमनुंश श्सित् शान्त्यै। अन्तो वा एष युज्ञस्यं।

यद्दंशममहंः। एतत्खलु वै देवानां पर्मं गृह्यं ब्रह्मं। यचतुंर्होतारः। दृश्मेऽहुङ्श्चतुंर्-होतॄन्व्याचेष्टे। यज्ञस्यैवान्तं गृत्वा। प्रमं देवानां गृह्यं ब्रह्मावं रुन्धे। तदेव प्रकाशं गमयति॥३६॥

तर्देनं प्रकाशं गृतम्। प्रकाशं प्रजानां गमयित। वार्चं यच्छित। यज्ञस्य धृत्यं। यज्ञमानदेवत्यं वा अहं। भातृव्यदेवत्यां रात्रिः। अहा रात्रिं ध्यायेत्। भातृव्यस्यैव तल्लोकं वृंङ्के। यिद्वा वार्चं विसृजेत्। अहुर्भातृंव्यायोच्छि १ षेत्। यन्नक्तं विसृजेत्। रात्रिं भातृंव्यायोच्छि १ षेत्। अधिवृक्षसूर्ये वार्चं विसृजित। पृतावंन्तमेवास्में लोकमुच्छि १ षित। यावंदादित्यों ऽस्तमेतिं॥३७॥

प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। ताः सृष्टाः समिश्लिष्यन्। ता रूपेणानुप्राविंशत्। तस्मादाहुः। रूपं वै प्रजापंतिरितिं। ता नाम्नाऽनु प्राविंशत्। तस्मादाहुः। नाम् वै प्रजापंतिरितिं। तस्मादप्यांमित्रौ सङ्गत्यं। नाम्ना चेद्ध्वयेते॥३८॥

मित्रमेव भेवतः। प्रजापंतिर्देवासुरानंसृजत। स इन्द्रमिप् नासृंजत। तं देवा अंब्रुवन्। इन्द्रंं नो जन्येतिं। स आत्मित्रिन्द्रंमपश्यत्। तमंसृजत। तं त्रिष्टुग्वीर्यं भूत्वाऽनु प्राविंशत्। तस्य वर्ज्ञः पश्चद्शो हस्त आपंद्यत। तेनोदय्यासुंरानुभ्यंभवत्॥३९॥

य एवं वेदं। अभि भ्रातृंव्यान्भवति। ते देवा असुंरैर्विजित्यं। सुवृगं लोकमायन्। तें ऽमुष्मिं होके व्यंक्षुध्यन्। तें ऽब्रुवन्। अमुतः प्रदानं वा उपंजिजीविमेतिं। ते सप्तहोतारं यज्ञं विधायायास्यम्। आङ्गीरसं प्राहिण्वन्। एतेनामुत्रं कल्पयेतिं॥४०॥ तस्य वा इयं क्रृप्तिः। यदिदं किं चं। य एवं वेदं। कल्पंतेऽस्मै। स वा अयं मंनुष्येषु युज्ञः सप्तहोता। अमुत्रं सुद्धो देवेभ्यो हव्यं वहित। य एवं वेदं। उपैनं यज्ञो नंमति। सोंऽमन्यत। अभि वा इमेंंऽस्माल्लोकादमुं लोकं कंमिष्यन्त इतिं। स वार्चस्पते हृदिति व्याहंरत्। तस्मांत्पुत्रो हृदंयम्। तस्मांदस्माल्लोकादमुं लोकं नाभि कामयन्ते। पुत्रो हि हृदंयम्॥४१॥

लोकमंजयन्। य एवं विद्वा ५ श्वतुं रहोतृभिर्यु ज्ञं तनुते। वि पाप्मना भ्रातृं व्येण जयते।

अभि सुंवर्गं लोकं जंयति। षड्ढोंत्रा प्रायणीयमा सांदयति। अमुष्मे वै लोकाय

देवा वै चतुरहोतृभिर्यज्ञमंतन्वत। ते वि पाप्मना भ्रातृंव्येणाजंयन्त। अभि सुंवर्गं

षड्ढोता। घ्रन्ति खलु वा एतथ्सोमम्। यदिभिषुण्वन्ति॥४२॥
ऋजुधैवैनममुं लोकं गमयित। चतुरहोत्राऽऽितथ्यम्। यशो वे चतुरहोता। यशं
एवाऽऽत्मन्धेत्ते। पश्चहोत्रा पृशुमुपंसादयित। सुव्ग्यों वे पश्चहोता। यजमानः पृशुः।
यजमानमेव सुवर्गं लोकं गमयित। ग्रहान्गृहीत्वा सप्तहोतारं जुहोति। इन्द्रियं वे
सप्तहोता॥४३॥

इन्द्रियमेवाऽऽत्मन्धंत्ते। यो वै चतुंर्होतृननुसवनं तुर्पयंति। तृप्यंति प्रजयां

पशुभिः। उपैन सोमपीथो नमिति। बहिष्यवमाने दर्शहोतारं व्याचेक्षीत। माध्यं

दिने पर्वमाने चतुरहोतारम्। आर्भवे पर्वमाने पश्चहोतारम्। पितृयज्ञे षङ्कौतारम्।

तृप्यंति प्रजयां पशुभिः। उपैंन सोमपीथो नंमति। देवा वै चतुंर्होतृभिः

सुत्रमांसत। ऋद्धिपरिमितं यशंस्कामाः। तेंऽब्रुवन्। यन्नः प्रथमं यशं ऋच्छात्।

सर्वेषात्रस्तथ्सहासदितिं। सोमश्चतुंरहोत्रा। अग्निः पश्चंहोत्रा। धाता षड्ढोंत्रा॥४५॥

इन्द्रंः सप्तहौँत्रा। प्रजापंतिर्दशंहोत्रा। तेषा सोम र राजानं यशं आर्च्छत्।

यज्ञायज्ञियंस्य स्तोत्रे सप्तहोतारम्। अनुसुवनमेवैना ईस्तर्पयति॥४४॥

तन्त्र्यंकामयत। तेनापांकामत्। तेनं प्रलायंमचरत्। तं देवाः प्रैषेः प्रैषंमैच्छन्। तत्प्रैषाणां प्रैष्त्वम्। निविद्धिन्यंवेदयन्। तन्निविद्धांनिविद्वत्त्वम्॥४६॥ आप्रीभिराप्नुवन्। तदाप्रीणांमाप्रित्वम्। तमंघ्नन्। तस्य यशो व्यंगृह्णतः। ते ग्रहां अभवन्। तद्ग्रहांणां ग्रहत्वम्। यस्यैवं विदुषो ग्रहां गृह्यन्तें। तस्य त्वेव गृहीताः।

तमंवधिष्म। पुनेरिम र सुंवामहा इतिं। तं छन्दों भिरसुवन्त। तच्छन्दं सां

छन्दस्त्वम्। साम्रा समानंयन्। तथ्साम्नः सामत्वम्। उक्थैरुदंस्थापयन्।

तें ऽब्रुवन्। यो वै नः श्रेष्ठोऽभूत्॥४७॥

तदुक्थानांमुक्थत्वम्। य एवं वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥४८॥

सर्वमायुरिति। सोमो वै यशंः। य एवं विद्वान्थ्सोमंमागच्छंति। यशं एवैनंमृच्छिति। तस्मादाहुः। यश्चैवं वेद यश्च न। तावुभौ सोममागंच्छतः। सोमो हि यशंः। तं त्वाऽव यशं ऋच्छुतीत्यांहुः। यः सोमे सोमं प्राहेतिं। तस्माथ्सोमे सोमः प्रोच्यंः। यशं एवैनंमृच्छिति॥४९॥

अभिषुण्वन्तिं सप्तहोता तर्पयित् षड्ढाँत्रा निवित्त्वमभूतिष्ठति प्राहेति हे चं॥————[८] इदं वा अग्रे नैव किं च नाऽऽसीत्। न द्यौरासीत्। न पृथिवी। नान्तरिक्षम्।

तदसंदेव सन्मनोऽकुरुत स्यामिति। तदंतप्यत। तस्मौत्तेपानाद्धूमोऽजायत। तद्भयों-ऽतप्यत। तस्मौत्तेपानादग्निरंजायत। तद्भयोंऽतप्यत॥५०॥

तस्मौत्तेपानाञ्चोतिरजायत। तद्भूयोऽतप्यत। तस्मौत्तेपानादर्चिरंजायत। तद्भूयो-ऽतप्यत। तस्मौत्तेपानान्मरीचयोऽजायन्त। तद्भूयोऽतप्यत। तस्मौत्तेपानादंदारा अंजायन्त। तद्भूयोऽतप्यत। तद्भूमिव समहन्यत। तद्भूमिनत्॥५१॥

स संमुद्रोऽभवत्। तस्माँथ्समुद्रस्य न पिंबन्ति। प्रजनंनिमव् हि मन्यंन्ते। तस्माँत्पृशोर्जायंमानादापंः पुरस्ताँद्यन्ति। तद्दशंहोताऽन्वंसृज्यत। प्रजापंतिर्वे दशंहोता। य एवं तपंसो वीर्यं विद्वाङ्स्तप्यंते। भवंत्येव। तद्वा इदमापंः सिल्लमांसीत्। सोऽरोदीत्प्रजापंतिः॥५२॥ स कस्मां अज्ञि। यद्यस्या अप्रंतिष्ठाया इतिं। यद्पस्वंवापंद्यत। सा पृंथिव्यंभवत्। यद्व्यमृष्ट। तदन्तिरंक्षमभवत्। यद्व्यमुद्रमृष्ट। सा द्यौरंभवत्।

यदरोदीत्। तद्नयो रोद्स्त्वम्॥५३॥ य पृवं वेदं। नास्यं गृहे रुंदन्ति। पृतद्वा पृषां लोकानां जन्मं। य पृवमेषां लोकानां जन्म वेदं। नैषु लोकेष्वार्तिमार्च्छति। स इमां प्रतिष्ठामंविन्दत। स

इमां प्रतिष्ठां वित्वाऽकांमयत् प्रजांयेयेति। स तपोंऽतप्यतः। सौंऽन्तर्वानभवतः। स ज्धनादसुरानसृजतः॥५४॥ तेभ्यों मृन्मये पात्रेऽन्नंमदुहत्। याऽस्य सा तुनूरासींत्। तामपांहतः। सा जोथ्स्रांऽभवत्। सोंऽकामयत् प्रजांयेयेतिं। स तपोंऽतप्यतः। सोंऽन्तर्वानभवत्। स उंपपृक्षाभ्यांमेवर्तूनंसृजतः। तेभ्यो रज्ते पात्रं घृतमंदुहत्। याऽस्य सा तुनूरासींत्॥५६॥
तामपांहतः। सोंऽहोरात्रयौः सन्धिरंभवत्। सोंऽकामयत् प्रजांयेयेतिं। स तपों-ऽतप्यतः। सोंऽन्तर्वानभवत्। स मुखाँद्देवानंसृजतः। तेभ्यो हरिते पात्रे सोमंमदुहत्। याऽस्य सा तुनूरासींत्। तामपांहतः। तदहंरभवत्॥५७॥

तिमस्राऽभवत्। सोऽकामयत प्रजाययेवितं। स तपोऽतप्यत। सोन्तर्वानभवत्। स

प्रजनेनादेव प्रजा अंसृजत। तस्मांदिमा भूयिष्ठाः। प्रजनेनास्येना असृंजत॥५५॥

ताभ्यों दारुमये पात्रे पयोंऽदुहत्। याऽस्य सा तनूरासींत्। तामपांहत। सा

पुते वै प्रजापंतेर्दीहाँः। य पुवं वेदं। दुह पुव प्रजाः। दिवा वै नोंऽभूदितिं। तद्देवानां देवत्वम्। य पुवं देवानां देवत्वं वेदं। देववांनेव भवति। पुतद्वा अंहोरात्राणां जन्मं। य पुवमहोरात्राणां जन्म वेदं। नाहोरात्रेष्वार्तिमार्च्छति॥५८॥ तद्वा इदं मर्नस्थेव पंरमं प्रतिष्ठितम्। यदिदं किं चं। तदेतच्छ्वीवस्यसन्नाम ब्रह्मं।

असतोऽधि मनोऽसृज्यत। मनंः प्रजापंतिमसृजत। प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत।

व्युच्छन्तीं व्युच्छन्त्यसमे वस्यंसीवस्यसी व्युच्छति। प्रजायते प्रजयां पृशुभिः। प्र परमेष्ठिनो मात्रामाप्रोति। य एवं वेदं॥५९॥ अग्निरंजायत् तद्भ्यांऽतप्यताभिनदरोदीत्प्रजापंतीरोद्दस्त्वमंस्ज्तास्ंजत घृतमंद्ह्द्याऽस्य सा तुन्रासीदहंरभवदच्छित् वेदं (इदं धूमाँ-ऽग्निज्योतिर्विमंशीचय उदारास्तद्भ्यः स ज्ञ्चनाथ्सा तिमंस्रा स प्रजनंनाथ्सा जोध्सा स उपपक्षाभ्याः सीऽहोरात्रयाः सन्धः

स मुखात्तदहंर्देववाँन्मृन्मर्थे दारुमर्थे रजुते हरिते तेभ्यस्ताभ्यो द्वे तेऽत्रं पर्यो घृत॰ सोमम्ँ॥)॥————[९]

प्रजापंतिरिन्द्रंमसृजतानुजाव्रं देवानांम्। तं प्राहिणोत्। परेहि। एतेषां देवानामधिपतिरेधीतिं। तं देवा अंब्रुवन्। कस्त्वमिसं। व्यं वै त्वच्छ्रेयार्रसः स्म इतिं। सोंऽब्रवीत्। कस्त्वमिसं व्यं वै त्वच्छ्रेयार्रसः स्म इतिं मा देवा अंवोच्त्रितिं। अथ् वा इदं तर्हिं प्रजापंतौ हरं आसीत्॥६०॥

यदस्मिन्नांदित्ये। तदेनमब्रवीत्। एतन्मे प्रयंच्छ। अथाहमेतेषां देवानामधिपतिर्भविष कोऽह इस्यामित्यंब्रवीत्। एतत्प्रदायेति। एतथ्स्या इत्यंब्रवीत्। यदेतद्ववीषीतिं। द्वितीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

विदुरेनं नाम्नां। तदंस्मे रुकां कृत्वा प्रत्यंमुश्चत्। ततो वा इन्द्रों देवानामधिपतिरभवत्। य एवं वेदं। अधिपतिरेव संमानानां भवति। सोऽमन्यत। किं किं वा अंकरमिति। स चन्द्रं म आहरेति प्रार्लपत्। तचन्द्रमंसश्चन्द्रमस्त्वम्। य एवं वेदं॥६२॥

चुन्द्रवानेव भवति। तं देवा अंब्रुवन्। सुवीर्यो मर्या यथां गोपायत इति। तथ्सूर्यस्य सूर्यत्वम्। य एवं वेदं। नैनं दभ्नोति। कश्च नास्मिन्वा इदिमंन्द्रियं प्रत्यंस्थादितिं। तदिन्द्रंस्येन्द्रत्वम्। य एवं वेदं। इन्द्रियाव्येव भंवति॥६३॥

अयं वा इदं पंरमों ऽभूदिति। तत्पंरमेष्ठिनः परमेष्ठित्वम्। य एवं वेदं। परमामेव काष्ठां गच्छति। तं देवाः संमन्तं पर्यविशन्। वसंवः पुरस्तात्। रुद्रा देक्षिण्तः। आदित्याः पश्चात्। विश्वे देवा उत्तरतः। अङ्गिरसः प्रत्यश्चम्॥६४॥ साध्याः पराश्चम्। य एवं वेदं। उपैन समानाः संविंशन्ति। स प्रजापंतिरेव

पश्चात्पर्यायन्। स पश्चात्पर्यवर्तयत। ता मुखं पुरस्तात्पश्यंन्तीः। मुखं दक्षिणतः।

मुखं पृश्चात्। उत्तर्तः पर्यायन्। स उत्तर्तः पर्यवर्तयत। ता मुखं पुरस्तात्पश्यंन्तीः। मुखं दक्षिणृतः। मुखं पृश्चात्॥६६॥

मुखंमुत्तर्तः। ऊर्ध्वा उदायन्। स उपिरेष्टान्त्र्यंवर्तयत। ताः सूर्वतोमुखो भूत्वाऽऽवंयत्। ततो वै तस्मैं प्रजा अतिष्ठन्तान्नाद्याय। य पृवं विद्वान्पिरं च वर्तयंते नि
चं। प्रजापंतिरेव भूत्वा प्रजा अति। तिष्ठंन्तेऽस्मै प्रजा अन्नाद्यांय। अन्नाद एव

आसीद्वेदं चन्द्रम्स्त्वं य एवं वेदेन्द्रियाव्येव भविति प्रत्यश्चं मुर्खं दक्षिणतो मुर्खं पृक्षान्नवं च॥————[१०] प्रजापितिरकामयत बहोर्भूयान्थस्यामिति। स पुतं दर्शहोतारमपश्यत्। तं

भंवति॥६७॥

प्रायुंङ्कः। तस्य प्रयुंक्ति बहोर्भूयांनभवत्। यः कामयेत बहोर्भूयांन्थस्यामितिं। स दर्शहोतारं प्रयुं श्रीत। बहोरेव भूयाँ-भवति। सों ऽकामयत वीरो म आजांयेतेतिं। स दर्शहोतुश्चतुंर्होतारं निरमिमीत। तं प्रायुंङ्क॥६८॥

तस्य प्रयुक्तीन्द्रोऽजायत। यः कामयेत वीरो म आजायेतेति। स चतुर्होतारं प्रयुं श्रीत। आऽस्यं वीरो जांयते। सोंऽकामयत पशुमान्थस्यामितिं। स चतुंर्होतुः पश्चंहोतारं निरंमिमीत। तं प्रायुंङ्का तस्य प्रयुंक्ति पशुमानंभवत्। यः कामयेत पशुमान्थस्यामितिं। स पश्चंहोतारं प्रयुं जीत॥६९॥

पृशुमानेव भवति। सोंऽकामयतुर्तवों मे कल्पेरुन्नितिं। स पश्चंहोतुः षङ्कांतारं निरंमिमीत। तं प्रायुंङ्का तस्य प्रयुंत्तगृतवौंऽस्मा अकल्पन्त। यः कामयेतर्तवों मे कल्पेरन्निति। स षड्ढोतारं प्रयुश्जीत। कल्पेन्तेऽस्मा ऋतवः। सोऽकामयत सोमपः सोमयाजी स्याम्। आ में सोमपः सोमयाजी जांयेतेतिं॥७०॥

स षङ्कोतुः सप्तहोतारं निरंमिमीत। तं प्रायुंङ्का। तस्य प्रयुंक्ति सोमपः

सोमयाज्यंभवत्। आऽस्यं सोम्पः सोमयाज्यंजायत। यः कामयेत सोम्पः सोमयाजी स्याम्। आ में सोम्पः सोमयाजी जांयेतेति। स सप्तहोतारं प्रयंश्चीत। सोम्प एव सोमयाजी भवति। आऽस्यं सोम्पः सोमयाजी जांयते। स वा एष पशुः पंश्चधा प्रतिं तिष्ठति॥७१॥

पद्भिमुंखेंन। ते देवाः पृशून् वित्वा। सुवर्गं लोकमांयन्। तेंऽमुष्मिं होके व्यक्षिध्यन्। तेंऽब्रुवन्। अमुतः प्रदानं वा उपंजिजीविमेति। ते सप्तहोतारं यृज्ञं विधायायास्यम्। आङ्गीर्सं प्राहिण्वन्। एतेनामुत्रं कल्प्येति। तस्य वा इयं क्रिप्तिः॥७२॥

यदिदं किं चं। य एवं वेदं। कल्पंतेऽस्मै। स वा अयं मंनुष्येषु युज्ञः सप्तहोता। अमुत्रं सुद्धो देवेभ्यो हृव्यं वहिति। य एवं वेदं। उपैनं युज्ञो नमिति। यो वै चतुंरहोतृणां निदानं वेदं। निदानंवान्भवित। अग्निहोत्रं वै दर्शहोतुर्निदानम्। दुर्शपूर्णमासौ चतुंरहोतुः। चातुर्मास्यानि पश्चंहोतुः। पृशुबन्धः षङ्कोतुः। सौम्यौ-

ऽध्वरः सप्तहोतुः। पृतद्वै चतुर्होतृणां निदानम्। य पृवं वेदे। निदानवान्भवति॥७३॥

अमिमीत तं प्रायुंक्क्ष पश्चंहोतारं प्र युंक्षीत जायेतेतिं तिष्ठति क्रुप्तिर्दशंहोतुर्निदानरं सप्त चं॥———[११]

प्रजापंतिरकामयत प्रजाः सृंजेयेति प्रजापंतिरकामयत दर्शपूर्णमासौ सृंजेयेति प्रजापंतिरकामयत् प्रजायेयेति स तपः स त्रिवृतं प्रजापंतिरकामयत् दर्शहोतार् तेनं दश्धाऽऽत्मानं देवा वै वर्रुणमन्तो वै प्रजापंतिस्ताः सृष्टाः समिश्लिष्यं देवा वै चतुरहोतृभिरिदं वा अग्रै प्रजापंतिरिन्द्रं प्रजापंतिरकामयत बहोर्भूयानेकांदश॥११॥

प्रजापंतिस्तद्ग्रहंस्य प्रजापंतिरकामयतानयैवैनृत्तस्य वा इयं क्रृप्तिस्तस्मात्तेपानाञ्च्योतिर्यदस्मिन्नांदित्ये स षड्ढांतुः सप्तहांतारं

त्रिसंप्ततिः॥ ७३॥

प्रजापंतिरकामयत निदानंवान्भवति॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

ब्रह्मवादिनो वदन्ति। किं चतुंर्होतृणां चतुर्होतृत्वमितिं। यदेवैषु चंतुर्धा होतांरः। तेन् चतुंर्होतारः। तस्माचतुंर्होतार उच्यन्ते। तचतुर्रहोतृणां चतुर्होतृत्वम्। सोमो वै चतुंर्होता। अग्निः पश्चंहोता। धाता षड्ढोता। इन्द्रंः सप्तहोता॥१॥

प्रजापंतिर्दर्शहोता। य एवं चतुंर्होतृणामृद्धिं वेदं। ऋध्नोत्येव। य एषामेवं बन्धुतां वेदं। बन्धुंमान्भवति। य एषामेवं क्लिप्तिं वेदं। कल्पतेऽस्मै। य एषामेवमायतंनं वेदं। आयतंनवान्भवति। य एषामेवं प्रतिष्ठां वेदं॥२॥

प्रत्येव तिष्ठति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। दशंहोता चतुंर्होता। पश्चंहोता षड्ढोता सप्तहोता। अथ कस्माचतुंर्होतार उच्यन्त इति। इन्द्रो वै चतुंर्होता। इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठों देवतांनामुपदेशंनात्। य एविमन्द्रक्ष् श्रेष्ठं देवतांनामुपदेशंनाद्वेदं। विसिष्ठः समानानां भवति। तस्माच्छ्रेष्ठंमायन्तं प्रथमेनैवानुं बुध्यन्ते। अयमागन्।

अयमवासादिति। कीर्तिरस्य पूर्वाऽऽगच्छति जनतामायतः। अथो एनं प्रथमेनैवान्

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

बुध्यन्ते। अयमागन्। अयमवांसादितिं॥३॥

सप्तहोंता प्रतिष्ठां वेदं बुध्यन्ते षट्वं॥

दक्षिणां प्रतिग्रहीष्यन्थ्सप्तदंशकृत्वोऽपाँन्यात्। आत्मानंमेव समिंन्धे। तेर्जसे वीर्याय। अथौं प्रजापंतिरेवैनां भूत्वा प्रतिंगृह्णाति। आत्मनो-ऽनौत्यै। यद्येनमार्त्विज्याद्वृतः सन्तं निर्हरेरन्। आग्नीध्रे जुहुयाद्दशंहोतारम्। चुतुर्गृहीतेनाऽऽज्येन। पुरस्तांत्प्रत्यिङ्गष्ठन्। प्रतिलोमं विग्राहम्॥४॥

प्राणानेवास्योपं दासयति। यद्येनं पुनरूप शिक्षेयुः। आग्नींध्र एव जुंहुयाद्दशंहोतारम्। चुतुर्गृहीतेनाऽऽज्येन। पृश्चात्प्राङासीनः। अनुलोममविंग्राहम्। प्राणानेवास्मैं कल्पयति। प्रायंश्चित्ती वाग्घोतेत्यृंतुमुखऋंतुमुखे जुहोति। ऋतूनेवास्मैं कल्पयति। कल्पंन्तेऽस्मा ऋतवंः॥५॥

क्रुप्ता अस्मा ऋतव् आयंन्ति। षड्ढोता वै भूत्वा प्रजापंतिरिदः सर्वमसृजत। स

मनोऽसृजत। मन्सोऽधि गायत्रीमंसृजत। तद्गायत्रीं यशं आर्च्छत्। तामाऽलंभत। गायत्रिया अधि छन्दा इंस्यसृजत। छन्दोभ्योऽधि साम। तथ्साम् यशं आर्च्छत्। तदाऽलंभत॥६॥

साम्नोऽधि यजू ईष्यसृजत। यजुभ्योऽधि विष्णुम्। तद्विष्णुं यशं आर्च्छत्। तमाऽलंभत। विष्णो्रध्योषंधीरसृजत। ओषंधीभ्योऽधि सोमम्। तथ्सोम् यशं आर्च्छत्। तमाऽलंभत। सोमादिधं पृशूनंसृजत। पृशुभ्योऽधीन्द्रम्॥७॥ तदिन्द्रं यशं आर्च्छत्। तदेनुन्नाति प्राच्यंवत। इन्द्रं इव यश्स्वी भंवति। य एवं वेदं। नैनं यशोऽति प्रच्यंवते। यद्वा इदं किं चं। तथ्सर्वमृत्तान एवाऽऽङीरमः प्रत्यंग्रहात। तदेनं प्रतिग्रहीतं नादिनत। यत्किं चं प्रतिग्रहीयात।

य पुव वदा नन् यशाऽात् प्रच्यवता यहा इद कि चा तथ्सवमुत्तान पुवाऽऽङ्गीर्मः प्रत्यगृह्णात्। तदेनं प्रतिगृह्णातं नाहिनत्। यत्किं चे प्रतिगृह्णायात्। तथ्सवंमुत्तानस्त्वांऽऽङ्गीर्मः प्रतिगृह्णात्वित्येव प्रतिगृह्णायात्। इयं वा उत्तान आङ्गीर्मः। अनयैवैन्त्प्रतिंगृह्णाति। नैन हिनस्ति। बर्हिषा प्रतीयाद्गां वाऽश्वं वा। पृतद्वे पंशूनां प्रियं धामं। प्रियेणैवैनं धाम्ना प्रत्येति॥८॥

विग्राहंमृतवस्तदाऽलंभृतेन्द्रं गृह्णीयाथ्यद्वं॥———[२]

यो वा अविद्वान्निवर्तयंते। विशीर्षा सपाँप्माऽमुष्मिँ ह्योके भविति। अथ यो विद्वान्निवर्तयंते। सशीर्षा विपाँप्माऽमुष्मिँ ह्योके भविति। देवता वै सप्त पृष्टिकामा न्यंवर्तयन्त। अग्निश्चं पृथिवी चं। वायुश्चान्तरिक्षं च। आदित्यश्च द्यौश्चं चन्द्रमाँः। अग्निर्यंवर्तयत। स सांहस्त्रमंपुष्यत्॥९॥

पृथिवी न्यंवर्तयत। सौषंधीभिवंनस्पतिभिरपुष्यत्। वायुर्न्यंवर्तयत। समरीचीभिरपुष्यत्। अन्तिरिक्षं न्यंवर्तयत। तद्वयोभिरपुष्यत्। आदित्यो न्यंवर्तयत। स रिश्मिभिरपुष्यत्। द्यौर्न्यवर्तयत। सा नक्षेत्रैरपुष्यत्। चन्द्रमा न्यंवर्तयत। सो नक्षेत्रैरपुष्यत्। चन्द्रमा न्यंवर्तयत। सो होरात्रैर्र्धमासैर्मासैर्न्ऋतुभिः संवथ्सरेणांपुष्यत्। तान्योषान्पुष्यति। याङ्स्ते-ऽपुष्यन्। य एवं विद्वान्नि चं वर्तयंते परि च॥१०॥

अपुष्यत्रक्षेत्ररपुष्यत्यक्षं च॥———[3]

्रवृ<u>ष्युभवत्रस्वयाययः वाष्ट्र</u>ा तस्य वा अग्नेर्हिरेण्यं प्रतिजग्रहुषंः। अर्धिमेन्द्रियस्यापौकामत्। तदेतेनैव ऽऽत्मन्नुपार्धत्ते। य एवं विद्वान् हिरंण्यं प्रतिगृह्णातिं। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णातिं। अर्धमंस्येन्द्रियस्यापंक्रामित। तस्य वै सोमंस्य वासः प्रतिजग्रहुषः। तृतीयमिन्द्रियस्यापांक्रामत्॥११॥

तदेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै स तृतीयमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। तृतीयमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। तृतीयमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। य एवं विद्वान् वासः प्रतिगृह्णातिं। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णातिं। तृतीयमस्येन्द्रियस्यापंक्रामित। तस्य वै रुद्रस्य गां

प्रत्यंगृह्णात्। तेन वै सौंऽर्धिमेन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। अर्धिमेन्द्रियस्या-

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

प्रंतिजग्रहुषंः। चतुर्थिमिन्द्रियस्यापाँकामत्। तामेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै स चंतुर्थिमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्त॥१२॥ चतुर्थिमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्ते। य एवं विद्वान्गां प्रंतिगृह्णातिं। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णातिं। चतुर्थमंस्येन्द्रियस्यापंकामति। तस्य वै वर्रुणस्याश्वं प्रतिजग्रहुषंः। पश्चमिनद्रियस्यापाँकामत्। तमेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै

स पंश्रममिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्त। पृश्रममिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्ते। य एवं

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अथ योऽविंद्वान्प्रतिगृह्णातिं। पृश्चममंस्येन्द्रियस्यापंक्रामित। तस्य वै प्रजापंतेः पुरुषं प्रतिजग्रहुषंः। षृष्ठमिंन्द्रियस्यापांक्रामत्। तमेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै स षृष्ठमिंन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्त। षृष्ठमिंन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपाधंत्त। य एवं विद्वान्पुरुषं प्रतिगृह्णातिं। अथ योऽविंद्वान्प्रतिगृह्णातिं। षृष्ठमंस्येन्द्रियस्यापंक्रामित॥१४॥

तस्य वै मनोस्तर्ल्पं प्रतिजग्रहुषंः। स्प्तमिन्द्रियस्यापाँकामत्। तमेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै स संप्तमिन्द्रियस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। स्प्तमिन्द्रियस्या-ऽऽत्मन्नुपार्धत्त। य पुवं विद्वाङ्स्तर्ल्पं प्रतिगृह्णाति। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। स्प्तममस्येन्द्रियस्यापंकामित। तस्य वा उत्तानस्याँऽऽङ्गीर्सस्याप्राणत्प्रतिजग्रहुषंः। अष्टमिन्द्रियस्यापाँकामत्॥१५॥

तदेतेनैव प्रत्यंगृह्णात्। तेन् वै सोंऽष्ट्रमिनिद्वयस्याऽऽत्मन्नुपार्धत्त। अष्ट्रमिनिद्वय-स्याऽऽत्मन्नुपार्धत्ते। य एवं विद्वानप्राणत्प्रतिगृह्णाति। अथ् योऽविद्वान्प्रतिगृह्णाति। अष्टममंस्येन्द्रियस्यापंत्रामित। यद्वा इदं किं चं। तथ्सर्वमृत्तान एवा-ऽऽङ्गीर्सः प्रत्यंगृह्णात्। तदेनं प्रतिंगृहीतं नाहिनत्। यत्किं चं प्रतिगृह्णीयात्। तथ्सर्वमृत्तानस्त्वाऽऽङ्गीर्सः प्रतिंगृह्णात्वत्येव प्रतिंगृह्णीयात्। इयं वा उत्तान आङ्गीर्सः। अनयैवैन्त्प्रतिंगृह्णाति। नैन रे हिनस्ति॥१६॥

तृतीयिमिन्द्रियस्यापाँकामचतुर्थिमिन्द्रियस्यात्मत्रुपाधृत्तार्श्वं प्रतिगृह्णातिं षृष्ठमंस्येन्द्रियस्यापंकामत्यष्टमिमिन्द्रियस्यापाँकामत्प्रतिगृह्णीयाच्त्वारिं च (तस्य वा अग्नेर्हिरंण्यु सोमंस्य वासस्तदेतेनं रुद्रस्य गान्तामेतेन वर्ष्णस्यार्श्वं प्रजापंतेः पुर्ष्रषु मनोस्तल्पुन्तमेतेनौत्तानस्य तदेतेनाप्रांणुद्यद्वे। अर्धं तृतीयमष्टमं तचेतुर्थं तां पंश्रम षष्ठ संप्तमन्तम्। तदेतेन द्वे तामेतेनैकं तमेतेन त्रीणि तदेतेनैकम्॥॥ [8]

ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यद्दशंहोतारः स्त्रमासंत। केन् ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। केनं प्रजा अंसृजन्तेतिं। प्रजापंतिना वै ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। तेनं प्रजा अंसृजन्त। यचतुंर्होतारः स्त्रमासंत। केन् ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। केनौषंधीरसृजन्तेतिं। सोमेन वै ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्॥१७॥

तेनौषंधीरसृजन्त। यत्पश्चंहोतारः सुत्रमासंत। केन् ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्।

केनैभ्यो लोकेभ्योऽस्र्रान्प्राण्दन्त। केनैषां पृशूनंवृञ्जतेति। अग्निना वै ते गृहपंतिना-ऽऽर्भुवन्। तेनैभ्यो लोकेभ्योऽस्र्रान्प्राण्दन्त। तेनैषां पृशूनंवृञ्जत। यथ्यङ्कोतारः स्त्रमास्ता केन् ते गृहपंतिनाऽऽर्भुवन्॥१८॥

केन्तूनंकल्पयन्तेतिं। धात्रा वै ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। तेन्तूनंकल्पयन्त। यथ्मप्तहोतारः स्त्रमासंत। केन् ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। केन् सुवंरायन्। केन्माँ श्लोकान्थ्समंतन्वित्रितिं। अर्यम्णा वै ते गृहपंतिनाऽऽर्ध्रुवन्। तेन् सुवंरायन्। तेनेमाँ श्लोकान्थ्समंतन्वित्रितिं॥१९॥

पुते वै देवा गृहपंतयः। तान् य पुवं विद्वान्। अप्यन्यस्यं गार्हपते दीक्षंते। अवान्तरमेव स्त्रिणांमृभ्नोति। यो वा अर्यमणुं वेदं। दानंकामा अस्मै प्रजा भंवन्ति। यज्ञो वा अर्यमा। आर्यावस्तिरिति वै तमांहुर्यं प्रशर्सन्ति। आर्यावस्तिर्भवति। य पुवं वेदं॥२०॥

यद्वा इदं किं चं। तथ्सर्वं चतुंर्होतारः। चतुंर्होतृभ्योऽधिं युज्ञो निर्मितः। स य

पृवं विद्वान् विवर्दता अहमेव भूयों वेदा यश्चतुंरहोतृन् वेदेति। स ह्यंव भूयो वेदे। यश्चतुंरहोतृन् वेदे। यो वै चतुंरहोतृणा् होतृन् वेदे। सर्वांसु प्रजास्वन्नमित्ता २१॥

सर्वा दिशोऽभि जंयति। प्रजापंतिर्वे दशंहोतृणा् होताँ। सोम्श्रतुंर्होतृणा् होताँ। अग्निः पश्चंहोतृणा् होताँ। धाता षङ्कांतृणा् होताँ। अर्थमा सप्तहोतृणा् होताँ। एते वै चतुंर्होतृणा् होतांरः। तान् य एवं वेदं। सर्वासु प्रजास्वन्नंमित्त। सर्वा दिशोऽभि जंयति॥२२॥

आर्धुवृत्रार्धुवृत्रित्येवं वेदाँति सर्वा दिशोऽभि जंयति (वे तेनं स्त्रेङ्केनं॥)॥———[५] प्रजापंतिः प्रजाः सृष्ट्वा व्यंस्र १ सत। स हृदंयं भूतों ऽशयत्। आत्मन् हा (३) इत्यह्वंयत्। आपुः प्रत्यंश्रण्वन्। ता अग्निहोत्रेणैव यंज्ञकृतुनोपं पूर्यावंतन्त। ताः

इत्यह्वयत्। आपः प्रत्यशृण्वन्। ता अग्निह्तिणेव यज्ञऋतुनीप प्यवितेन्त। ताः कुसिन्धमुपौहन्। तस्मादिग्निह्तेत्रस्यं यज्ञऋतोः। एकं ऋत्विक्। चृतुष्कृत्वोऽह्वंयत्। अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमाः॥२३॥

ते प्रत्यंशृण्वन्। ते दंर्शपूर्णमासाभ्यांमेव यंज्ञऋतुनोपं पूर्यावंर्तन्त। त

उपौहङ्श्वत्वार्यङ्गानि। तस्माद्दर्शपूर्णमासयौर्यज्ञकतोः। चत्वारं ऋत्विजः।

पश्चकृत्वोऽह्वंयत्। पशवः प्रत्यंशृण्वन्। ते चांतुर्मास्यैरेव यंज्ञऋतुनोपं पर्यावंर्तन्त। त उपौहं लोमं छुवीं मार्समिस्थं मुज्जानम्। तस्माचातुर्मास्यानां यज्ञक्रतोः॥२४॥ पश्चर्त्विजः। षुद्गत्वोऽह्वंयत्। ऋतवः प्रत्यंश्रण्वन्। ते पंशुबन्धेनैव यंज्ञऋतुनोपंपर्यावंर्तन्त। त उपौंहन्थ्स्तनांवाण्डौ शिश्ञमवांश्चं प्राणम्। तस्मौत्पशुबन्धस्यं यज्ञऋतोः। षड्विजः। सप्तकृत्वोऽह्वंयत्। होत्राः प्रत्यंशृण्वन्। ताः सौम्येनैवाध्वरेणं यज्ञऋतुनोपंपर्यावंर्तन्त॥२५॥ ता उपौहन्थ्सप्त शीर्षणयान्त्राणान्। तस्माध्यौम्यस्याध्वरस्यं यज्ञकृतोः। सुप्त होत्राः प्राचीर्वषंद्भवन्ति। दुशुकृत्वोऽह्वंयत्। तपः प्रत्यंशृणोत्। तत्कर्मणैव संवथ्सरेण

ता उपहिन्स्त शार्षण्यान्त्राणान्। तस्माध्साम्यस्याध्वरस्य यज्ञकृताः। स्त होत्राः प्राचीर्वषंद्वर्वन्ति। दशकृत्वोऽह्वयत्। तपः प्रत्यंशृणोत्। तत्कर्मणैव संवध्सरेण् सर्वैयज्ञकृतुभिरुपं पूर्यावर्ततः। तथ्सर्वमात्मान्मपरिवर्गमुपौहत्। तस्माध्संवध्सरे सर्वे यज्ञकृतवोऽवंरुध्यन्ते। तस्माद्दशंहोता चतुरहोता। पश्चंहोता षङ्कोता स्प्तहोता। एकंहोत्रे बुलिश् हंरन्ति। हर्रन्त्यस्मै प्रजा बुलिम्। ऐन्मप्रंतिख्यातं गच्छति। य एवं वेदं॥२६॥

चन्द्रमाँश्चातुर्मास्यानां यज्ञकृतोरिष्वरेणं यज्ञकृतुनोपं पूर्यावंतिन्त सुप्तहोता च्त्वारि च॥———[६]
प्रजापितिः पुरुषमसृजत। सौंऽग्निरंब्रवीत्। ममायमन्नम्स्त्विति। सोऽविभेत्।
सर्वं वै माऽयं प्र धृक्ष्यतीति। स एता ॥ श्वतं रहोतनात्मस्परणानपश्यत।

सर्वं वै माऽयं प्र धंक्ष्यतीतिं। स एता इश्चतुं रहोतॄ नात्मस्परंणानपश्यत्। तानं जुहोत्। तैर्वे स आत्मानं मस्पृणोत्। यदंग्निहोत्रं जुहोतिं। एकंहोतारमेव तद्यं ज्ञकृतुमां प्रोत्यग्निहोत्रम्॥२७॥

कुसिन्धं चाऽऽत्मनः स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नंयित। चतुंरहोतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाँप्रोति दर्शपूर्णमासौ। चत्वारिं चाऽऽत्मनोऽङ्गांनि स्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नंयित। समित्पंश्चमी। पश्चंहोतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाँप्रोति चातुर्मास्यानिं। लोमं छुवीं मार्समित्यं मुज्ञानम्॥२८॥

तानिं चाऽऽत्मनंः स्पृणोतिं। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नयित।

अग्निहोत्रं मज्जानन्द्विर्जुहोत्यपंरिवर्गङ् स्पृणोत्येकं च॥-

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

द्विर्जुहोति। षड्ढोतारमेव तद्यंज्ञऋतुमाँप्रोति पशुबन्धम्। स्तनांवाण्डौ शिश्ञमवाँश्चं प्राणम्। तानि चाऽऽत्मनंः स्पृणोतिं। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नंयति। द्विर्जुहोति॥२९॥

स्मिथ्संप्तमी। स्प्तहोतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाँप्रोति सौम्यमध्वरम्। स्प्त चाऽऽत्मनंः शीर्षण्याँन्प्राणान्थस्पृणोति। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति। चतुरुन्नयित। द्विर्जुहोतिं। द्विर्निमाँष्टिं। द्विः प्राश्ञांति। दशहोतारमेव तद्यंज्ञकृतुमाँप्रोति संवथ्सरम्। सर्वं चाऽऽत्मान्मपंरिवर्गः स्पृणोतिं। आदित्यस्यं च सायुंज्यं गच्छति॥३०॥

प्रजापंतिरकामयत् प्रजांयेयेति। स तपोऽतप्यतः सोंऽन्तर्वानभवतः स हरितः श्यावोऽभवतः तस्माथ्स्र्यंन्तर्वन्नाः हरिणी सती श्यावा भवति। स विजायंमानो गर्भेणाताम्यतः स तान्तः कृष्णः श्यावोऽभवतः तस्मांत्तान्तः कृष्णः श्यावो भवति।

तस्यासुरेवाजींवत्॥३१॥

तेनासुनाऽसुंरानसृजत। तदसुंराणामसुर्त्वम्। य पृवमसुंराणामसुर्त्वं वेदं। असुंमानेव भवति। नैन्मसुंर्जहाति। सोऽसुंरान्थ्सृष्ट्वा पितेवांमन्यत। तदनुं पितॄनंसृजत। तत्पितृणां पितृत्वम्। य पृवं पितृणां पितृत्वं वेदं। पितेवैव स्वानां भवति॥३२॥

यन्त्यंस्य पितरो हवम्ं। स पितृन्थ्सृष्ट्वाऽऽमंनस्यत्। तदनुं मनुष्यांनसृजतः। तन्मंनुष्यांणां मनुष्यत्वम्। य एवं मंनुष्यांणां मनुष्यत्वं वेदं। मृनुस्त्येव भंवति। नैनं मनुंर्जहाति। तस्में मनुष्यांन्थ्ससृजानायं। दिवां देवत्राऽभंवत्। तदनुं देवानंसृजतः। तद्देवानां देवत्वम्। य एवं देवानां देवत्वं वेदं। दिवां हैवास्यं देवत्रा भंवति। तानि वा एतानि चत्वार्यम्भारसा। देवा मनुष्याः पितरोऽसुंराः। तेषु सर्वेष्वम्भो नभं इव भवति। य एवं वेदं॥३३॥
अजीव्थ्स्वानां भवति देवानंस्जत सह चं॥———[८]

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २) 25 वहान्। याने वहाने वहान्। याने वहान्। याने वहान्

ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यो वा इमं विद्यात्। यतोऽयं पर्वते। यदंभि पर्वते। यदंभि सम्पर्वते। सर्वमायंरियात्। न पुराऽऽयंषः प्र मीयेत। पृशुमान्थस्यात्। विन्देतं प्रजाम्। यो वा इमं वेदं॥३४॥

यतोऽयं पर्वते। यदंभि पर्वते। यदंभि सम्पर्वते। सर्वमायुरिति। न पुराऽऽयुंषः प्र मीयते। पृशुमान्भवति। विन्दते प्रजाम्। अन्धः पंवते। अपोऽभि पंवते। अपोऽभि सम्पंवते॥३५॥

अस्याः पंवते। इमाम्भि पंवते। इमाम्भि सम्पंवते। अग्नेः पंवते। अग्निम्भि पंवते। अग्निम्भि पंवते। अग्निम्भि सम्पंवते। अन्तरिक्षात्पवते। अन्तरिक्षम्भि सम्पंवते। अन्तरिक्षम्भि सम्पंवते। आदित्यात्पंवते॥३६॥

आदित्यम्भि पंवते। आदित्यम्भि सम्पंवते। द्योः पंवते। दिवंम्भि पंवते। दिवंम्भि सम्पंवते। दिग्भ्यः पंवते। दिशोऽभि पंवते। दिशोऽभि सम्पंवते। स यत्पुरस्ताद्वातिं। प्राण एव भूत्वा पुरस्तांद्वाति॥३७॥ तस्मौत्पुरस्ताद्वान्तम्। सर्वाः प्रजाः प्रति नन्दन्ति। प्राणो हि प्रियः प्रजानाम्। प्राण इंव प्रियः प्रजानां भवति। य एवं वेदं। स वा एष प्राण एव। अथ् यद्दंक्षिणतो वातिं। मात्तरिश्वेव भूत्वा दंक्षिणतो वांति। तस्मौद्दक्षिणतो वान्तं विद्यात्। सर्वा दिश आ वांति॥३८॥

सर्वा दिशोऽनु वि वांति। सर्वा दिशोऽनु सं वातीतिं। स वा एष मांतिरश्वैव। अथ् यत्पश्चाद्वातिं। पर्वमान एव भूत्वा पृश्चाद्वांति। पूतमंस्मा आहंरन्ति। पूतमुपंहरन्ति। पूतमंश्ञाति। य एवं वेदं। स वा एष पर्वमान एव॥३९॥

अथ यदुंत्तर्तो वातिं। स्वितैव भूत्वोत्तंर्तो वांति। स्वितेव स्वानां भवति। य एवं वेदे। स वा एष संवितेव। ते य एनं पुरस्तांदायन्तंमुप्वदंन्ति। य एवास्यं पुरस्तांत्पाप्मानंः। ताइस्तेऽपं घ्रन्ति। पुरस्तादितंरान्पाप्मनंः सचन्ते। अथ य एनं दक्षिणत आयन्तंमुप्वदंन्ति॥४०॥

य एवास्यं दक्षिणतः पाप्मानः। ताङ्स्तेऽपं घ्रन्ति। दक्षिणत इतंरान्पाप्मनः

सचन्ते। अथ् य एनं पृश्चादायन्तंमुप् वदन्ति। य एवास्यं पृश्चात्पाप्मानंः। ताइस्तेऽपं घ्रन्ति। पृश्चादितंरान्पाप्मनंः सचन्ते। अथ् य एनमुत्तर्त आयन्तंमुप् वदन्ति। य एवास्यौत्तर्तः पाप्मानंः। ताइस्तेऽपं घ्रन्ति॥४१॥

उत्तर्त इतरान्याप्मनः सचन्ते। तस्मदिवं विद्वान्। वीवं नृत्येत्। प्रेवं चलेत्। व्यस्येवाक्ष्यौ भाषित। मण्टयेदिव। ऋष्ययेदिव। शृङ्गायेतेव। उत मोपं वदेयः। उत में पाप्मान्मपं हन्युरितिं। स यान्दिशः सिनमेष्यन्थस्यात्। यदा तान्दिशं वातो वायात्। अथ प्रवेयात्। प्र वां धावयेत्। सातमेव रेदितं व्यूढं गुन्धम्भि प्रच्यंवते। आऽस्य तं जनपदं पूर्वां कीर्तिर्गच्छिति। दानंकामा अस्मै प्रजा भवन्ति। य पृवं वेदं॥४२॥

पूजापंतिः सोम् राजानमसृजतः। तं त्रयो वेदा अन्वंसृज्यन्तः। तान् हस्तें-ऽकुरुतः। अथु ह सीतां सावित्रीः। सोम् राजानं चकमे। श्रद्धामु स चंकमे।

वेद सम्पंवत आदित्यात्पंवते वात्या वाँत्येष पर्वमान एव देक्षिणत आयन्तंमुप वर्दन्त्युत्तर्तः पाप्मानुस्ताः स्तेपं घ्रन्तीत्यृष्टौ

साऽऽहं पितरं प्रजापंतिमुपंससार। त॰ होवाच। नमंस्ते अस्तु भगवः। उपं त्वाऽयानि॥४३॥

प्रत्वां पद्ये। सोमं वै राजांनं कामये। श्रृद्धामु स कांमयत् इतिं। तस्यां उ ह स्थांग्रमंलङ्कारं केल्पयित्वा। दशंहोतारं पुरस्तांद्धाख्यायं। चतुर्होतारं दक्षिणतः। पश्चंहोतारं पश्चात्। षड्ढोतारमुत्तर्तः। सप्तहोतारमुपरिष्टात्। सम्भारश्च पत्निंभिश्च मुखेंऽलङ्कत्यं॥४४॥

आऽस्यार्धं वंब्राज। ता १ होदीक्ष्यों वाच। उप मा वंर्त्स्वेतिं। त १ होवाच। भोगं तु म् आचंक्ष्व। एतन्म् आचंक्ष्व। यत्तं पाणावितिं। तस्यां उ ह त्रीन् वेदान्प्रदंदौ। तस्मादुह् स्त्रियो भोगमेव हारयन्ते। स यः कामयेत प्रियः स्यामिति॥४५॥

यं वां कामयेत प्रियः स्यादितिं। तस्मां एतः स्थांग्रमंलङ्कारं केल्पयित्वा। दर्शहोतारं पुरस्तांद्याख्यायं। चतुंरहोतारं दक्षिणतः। पश्चंहोतारं पृश्चात्। षङ्कोतारमुत्तरतः। सप्तहोतारमुपरिष्टात्। सम्भारैश्च पत्निभिश्च मुखेंऽलङ्कृत्यं।

आस्यार्धं व्रंजेत्। प्रियो हैव भंवति॥४६॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अयान्यलङ्कर्त्यं स्यामितिं भवति॥

तं वा एतं दर्शहूतु सन्तम्। दर्शहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः॥४७॥

आत्मुन्नात्मुन्नित्यामंत्रयत। तस्मै सप्तम र हूतः प्रत्यंश्रणोत्। स सुप्तहूंतोऽभवत्।

तस्मैं दश्म १ हृतः प्रत्यंशृणोत्। स दशंहृतोऽभवत्। दशंहृतो ह वै नामैषः।

ब्रह्मौत्मन्वदंसृजत। तदंकामयत। समात्मनां पद्येयेतिं। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत।

सप्तर्ह्तो हु वै नामैषः। तं वा पृतः सप्तर्हृतः सन्तम्। सप्तहोतेत्याचेक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षेप्रिया इव हि देवाः। आत्मन्नात्मन्नित्यामेन्नयत। तस्मै षष्ठः हृतः प्रत्येश्वणोत्। स षड्ढूंतोऽभवत्॥४८॥

षड्ढूंतो हु वै नामैषः। तं वा एत १ षड्ढूंत १ सन्तम्। षड्ढ्योतेत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै पश्चम १ हूतः

प्रत्यंशृणोत्। स पश्चंहूतोऽभवत्। पश्चंहूतो हु वै नामैषः। तं वा एतं पश्चंहूत् रू सन्तम्। पश्चंहोतेत्याचंक्षते परोक्षंण॥४९॥

प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः। आत्मन्नात्मन्नित्यामंत्रयत। तस्मै चतुर्थ हूतः प्रत्येश्वणोत्। स चतुर्हृतोऽभवत्। चतुर्हृतो हु वै नामैषः। तं वा एतं चतुर्हृत सन्तम्। चतुर्हितित्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः। तमंत्रवीत्। त्वं वै मे नेदिष्ठ हूतः प्रत्यंश्रौषीः। त्वयैनानाख्यातार् इति। तस्मान्नु हैना् श्रुश्चतुर्होतार् इत्याचंक्षते। तस्मांच्छुश्रूषुः पुत्राणा् हह्यंतमः। नेदिष्ठो हृद्यंतमः। नेदिष्ठो ब्रह्मंणो भवति। य एवं वेदं॥५०॥

बृह्मवादिनः किं दक्षिणां यो वा अविद्वान्तस्य वै ब्रह्मवादिनो यद्दर्शहोतारः प्रजापितिर्व्यस्तं प्रजापितिः पुर्णष प्रजापितिरकामयत् स तपः सौँउन्तर्वांन्ब्रह्मवादिनो यो वा इमं विद्यात्प्रजापितिः सोम् र राजानं ब्रह्मांत्मुन्वदेकादश॥११॥

ब्रह्मवादिनस्तस्य वा अग्नेर्यद्वा इदं किं चे प्रजापितिरकामयत् य एवास्यं दक्षिण्तः पेश्चाशत्॥५०॥

ब्रह्मवादिनो य एवं वेदं॥

देवाः षड्ढंतोऽभवृत्पश्चंहोतेत्याचंक्षते पुरोक्षंणाश्रौषीः षद्वं॥

हरिः ओम्॥ जाहाणे दिवीसायके ववीसः गामकः समापः॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

जुष्टो दर्मूना अतिथिर्दुरोणे। इमं नो यज्ञमुपं याहि विद्वान्। विश्वां अग्नेऽभियुजों विहत्यं। शृत्रूयतामा भरा भोजनानि। अग्ने शर्धं महते सौभंगाय। तवं द्युम्नान्यंत्तमानिं सन्तु। सञ्जीस्पृत्य स्युपमा कृणुष्व। शृत्रूयताम्भि तिष्ठा महा सि। अग्ने यो नोऽभितो जनंः। वृको वारो जिघा सित॥१॥

ताइस्त्वं वृत्रहं जहि। वस्वस्मभ्यमा भेर। अग्ने यो नोऽभिदासंति। समानो यश्च निष्ट्यः। इध्मस्येव प्रक्षायतः। मा तस्योच्छेषि किश्चन। त्विमेन्द्राभिभूरसि। देवो विज्ञातवीर्यः। वृत्रहा पुरुचेतनः। अप प्राचं इन्द्र विश्वारं अमित्रान्॥२॥

अपापांचो अभिभूते नुदस्व। अपोदींचो अपंशूराधरा चं ऊरौ। यथा तव शर्मन्मदेम। तिमन्द्रं वाजयामिस। महे वृत्राय हन्तंवे। स वृषां वृष्भो भुंवत्। युजे रथं गुवेषंण् हिरिभ्याम्। उप ब्रह्मांणि जुजुषाणमंस्थुः। विबांधिष्टास्य रोदंसी

हृव्यवाहंमभिमातिषाहम्ँ। रृक्षोहणं पृतंनासु जिष्णुम्। ज्योतिष्मन्तं दीद्यंतं पुरंन्थिम्। अग्निः स्विष्टकृतमा हुवेम। स्विष्टमग्ने अभि तत्पृंणाहि। विश्वां देव पृतंना अभि ष्य। उरुं नः पन्थां प्रदिशन्विभांहि। ज्योतिष्मद्धेह्यज्ञरं न आयुंः। त्वामंग्ने हिवष्मंन्तः। देवं मर्तास ईडते॥४॥

मन्यैं त्वा जातवेंदसम्। स हव्या वंक्ष्यानुषक्। विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः।

सिन्धुं न नावा दुंरिताऽति पर्षि। अग्नें अत्रिवन्मनंसा गृणानः। अस्माकं बोध्यविता तन्नांम्। पूषा गा अन्वेत नः। पूषा रेक्ष्त्वर्वतः। पूषा वाजरं सनोतु नः। पूषेमा आशा अनुवेद सर्वाः॥५॥

सो अस्मार अभयतमेन नेषत्। स्वस्तिदा अषृणिः सर्ववीरः। अप्रयुच्छन्पुर एतु प्रजानन्। त्वमंग्ने सप्रथां असि। जुष्टो होता वरेण्यः। त्वयां यज्ञं वितंन्वते।

अग्नी रक्षा रेसि सेधित। शुक्रशोचिरमंर्त्यः। शुचिः पावक ईड्यः। अग्ने रक्षां णो अर्ह्सः॥६॥

प्रतिं ष्म देव रीषंतः। तिपंष्ठैरजरों दह। अग्ने हश्सि न्यंत्रिणम्ं। दीद्यन्मर्त्येष्वा। स्वे क्षयें शुचिव्रत। आ वांत वाहि भेषजम्। वि वांत वाहि यद्रपंः। त्व र हि विश्वभेषजः। देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वातः॥७॥

आ सिन्धोरा पंरावतः। दक्षं मे अन्य आवातुं। परान्यो वांतु यद्रपः। यद्दो वांत ते गृहे। अमृतंस्य निधिर्हितः। ततों नो देहि जीवसें। ततों नो धेहि भेषजम्। ततों नो मह आवंह। वात आवांतु भेषजम्। शम्भूमंयोभूनों हृदे॥८॥ प्र ण आयू ५ षि तारिषत्। त्वमंग्ने अयासिं। अया सन्मनंसा हितः। अया सन् हव्यमूहिषे। अया नों धेहि भेषजम्। इष्टो अग्निराहुंतः। स्वाहांकृतः पिपर्तु नः।

स इदं प्रति पप्रथे। ऋतूनुथ्मृंजते वशी। कामस्तदग्रे समंवर्तताधि। मनसो

स्वगा देवेभ्यं इदं नमः। कामों भूतस्य भव्यस्य। सम्राडेको विराजिति॥९॥

रेतः प्रथमं यदासींत्। सतो बन्धुमसंति निरंविन्दन्। हृदि प्रतीष्यां कवयों मनीषा। त्वयां मन्यो सरथंमारुजन्तः। हर्षंमाणासो धृषता मरुत्वः। तिग्मेषंव आयुंधा स्थिशानाः। उप प्रयन्ति नरो अग्निरूपाः॥१०॥

मन्युर्भगों मन्युरेवासं देवः। मन्युर्होता वर्रुणो विश्ववेदाः। मन्युं विशं ईडते देवयन्तींः। पाहि नो मन्यो तपंसा श्रमंणा त्वमंग्ने व्रतभृच्छुचिः। देवा असांदया इह। अग्ने हव्याय वोढंवे। व्रतानुबिभ्रंद्वतुपा अदाँभ्यः। यजां नो देवा अजरंः सुवीरं। दधद्रब्लांनि सुविदानो अंग्ने। गोपाय नो जीवसे जातवेदः॥११॥

जिघारं सत्यमित्रां अघुन्वानीं डते सर्वा अरहंसो वातो हुदे रांजत्यग्निरूपाः सुविदानो अंग्र एकं च॥______[१] चक्षुंषो हेते मनंसो हेते। वाचों हेते ब्रह्मंणो हेते। यो मांऽघायुरंभिदासंति। तमंग्ने मेन्या मेनिं कृणु। यो मा चक्षुंषा यो मनंसा। यो वाचा ब्रह्मंणाऽघायुरंभिदासंति।

तयाँ उम्रे त्वं मेन्या। अमुमंमेनिं कृणु। यत्किश्वासौ मनंसा यर्च वाचा। यज्ञैर्जुहोति यजुंषा हविर्मिः॥१२॥

निर्ऋंतिरादुरक्षंः। ते अस्य घ्रन्त्वनृतेन स्त्यम्। इन्द्रेंषिता आज्यंमस्य

मथ्रन्तु। मा तथ्समृद्धि यद्सौ कुरोतिं। हन्मिं तेऽहं कृत हिवः। यो में

तन्मृत्युर्निर्ऋत्या संविदानः। पुरादिष्टादाहुंतीरस्य हन्तु। यातुधाना

घोरमचींकृतः। अपाँश्चौ त उभौ बाह्। अपनह्याम्यास्यम्॥१३॥ अपं नह्यामि ते बाह्। अपं नह्याम्यास्यम्। अग्नेर्देवस्य ब्रह्मणा। सर्वं तेऽविधषं कृतम्। पुराऽमुष्यं वषद्वारात्। युज्ञं देवेषुं नस्कृधि। स्विष्टम्स्माकं भूयात्। माऽस्मान्प्रापन्नरातयः। अन्ति दूरे सतो अग्ने। भ्रातृंव्यस्याभिदासंतः॥१४॥ वषद्कारेण वज्रेण। कृत्या हंन्मि कृतामहम्। यो मा नक्तं दिवां सायम्।

प्रातश्चाह्रों निपीयंति। अद्या तिमंन्द्र वज्रेण। भातृंव्यं पादयामिस। इन्द्रंस्य गृहोंऽसि

तन्त्वां। प्रपंद्ये सगुः सार्श्वः। सह यन्मे अस्ति तेनं। ईडें अग्निं विपश्चितम्॥१५॥

गिरा यज्ञस्य सार्धनम्। श्रुष्टीवानंन्धितावानम्। अग्ने शकेमं ते वयम्। यमं देवस्यं वाजिनंः। अति द्वेषा रसि तरेम। अवंतं मा समंनसौ समोकसौ। सर्चेतसौ सरेतसौ।

उभौ मामंवतञ्जातवेदसौ। शिवौ भंवतम्द्य नंः। स्वयं कृण्वानः सुगमप्रयावम्॥१६॥

तिग्मर्श्वज्ञो वृष्भः शोश्चानः। प्रत्न स्थस्थमन् पश्यमानः। आ तन्तुंम्ग्रिर्दिव्यं

तंतान। त्वन्नस्तन्तुंरुत सेतुंरग्ने। त्वं पन्थां भवसि देवयानः। त्वयांऽग्ने पृष्ठं व्यमारुहेम। अथां देवैः संधुमादं मदेम। उद्त्तमं मुंमुग्धि नः। वि पाशं मध्यमश्चृंत। अवांधमानिं जीवसे॥१७॥

व्य सोम ब्रते तवं। मनंस्त्नूषु बिभ्रंतः। प्रजावंन्तो अशीमिह। इन्द्राणी देवी सुभगां सुपत्नीं। उद शोन पित्विद्यं जिगाय। त्रि श्रादंस्या ज्यनं योजनािन। उपस्थ इन्द्र स्थिवंरं बिभित्। सेनां हु नामं पृथिवी धनञ्जया। विश्वव्यंचा अदितिः सूर्यत्वक्। इन्द्राणी देवी प्रासहा ददांना॥१८॥

सा नों देवी सुहवा शर्म यच्छत्। आत्वांऽहार्षम्नतरंभूः। ध्रुवस्तिष्ठाविंचाचितः। विशंस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु। मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्। ध्रुवा द्यौर्धुवा पृथिवी। ध्रुवं

विश्वंमिदं जर्गत्। ध्रुवा हु पर्वता इमे। ध्रुवो राजां विशामयम्। इहैवैधि मा

व्यंथिष्ठाः॥१९॥

पर्वत इवाविचाचितः। इन्द्रं इवेह ध्रुवस्तिष्ठ। इह राष्ट्रम् धारय। अभितिष्ठ पृतन्यतः। अधेरे सन्तु शत्रंवः। इन्द्रं इव वृत्रहा तिष्ठ। अपः क्षेत्रांणि स्ञयन्। इन्द्रं एणमदीधरत्। ध्रुवं ध्रुवेणं हृविषां। तस्मैं देवा अधिब्रवन्। अयं च ब्रह्मंण्स्पतिः॥२०॥

ह्विर्भिग्स्यंमि दासंतो विपश्चित्मप्रयावश्चीवसे दर्दांना व्यथिष्ठा ब्रव्हेकं च॥———[२] जुष्टीं नरो ब्रह्मंणा वः पितृणाम्। अक्षंमव्ययं न किलारिषाथ। यच्छक्वंरीषु बृह्ता रवेण। इन्द्रे शुष्ममदंधाथा वसिष्ठाः। पावका नः सरंस्वती। वाजेंभिर्वाजिनीवती।

यज्ञं वंष्टु धिया वंसुः। सरंस्वत्यभिनों नेषि वस्यः। मा पंस्फरीः पर्यसा मा न आर्थक्। जुषस्वं नः सुख्यां वेश्यां च॥२१॥

मा त्वक्षेत्राण्यरंणानि गन्म। वृञ्जे ह्विर्नमंसा ब्र्हिर्ग्नौ। अयांमि सुग्धृतवंती सुवृक्तिः। अम्यंक्षि सद्म सदंने पृथिव्याः। अश्रांयि युज्ञः सूर्ये न चक्षुंः। इहार्वाञ्चमितं ह्वये। इन्द्रं जैत्राय जेतंवे। अस्माकंमस्तु केवंलः। अर्वाश्वमिन्द्रंममुतो हवामहे।

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यो गोजिद्धंनजिदंश्वजिद्यः॥२२॥
इमं नो युज्ञं विह्वे जुषस्व। अस्य कुर्मो हरिवो मेदिनं त्वा। असंम्मृष्टो जायसे

मातृवोः शुचिः। मृन्द्रः कृविरुदंतिष्ठो विवंस्वतः। घृतेनं त्वा वर्धयन्नग्न आहुत। धूमस्तें कृतुरंभविद्द्वि श्रितः। अग्निरग्नैं प्रथमो देवतांनाम्। संयातानामृत्तमो विष्णुंरासीत्।

यर्जमानाय परिगृह्यं देवान्। दीक्षयेद १ हिवरा गेच्छतन्नः॥२३॥ अग्निश्चं विष्णो तपं उत्तमं महः। दीक्षापालेभ्योऽवनंतु हि शंका।

विश्वैद्वैर्यिज्ञियैः संविदानौ। दीक्षाम्समे यर्जमानाय धत्तम्। प्र तिद्वष्णुः स्तवते वीर्याय। मृगो न भीमः कुंचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषुं त्रिषु विक्रमणेषु। अधि क्षियन्ति भुवनानि विश्वा। नूमर्तो दयते सिन्ष्यन् यः। विष्णंव उरुगायाय दार्शत्॥२४॥

प्र यः सुत्राचा मनसा यजातै। पुतावन्तुन्नर्यमा विवासात्। विचंक्रमे पृथिवीमेष

एताम्। क्षेत्रांय विष्णुर्मनुषे दशस्यन्। ध्रुवासों अस्य कीरयो जनांसः। उरुक्षिति ध

सुजनिमा चकार। त्रिर्देवः पृथिवीमेष एताम्। विचंक्रमे शतर्चसं महित्वा। प्र

इन्द्रंः सुवर्षा जनयन्नहांनि। जिगायोशिग्भः पृतंना अभि श्रीः॥२६॥ प्रारोचयन्मनंवे केतुमहांम्। अविन्दुज्योतिर्बृह्ते रणांय। अश्विनाववंसे निह्वये वाम्। आ नूनं यांतर सुकृतायं विप्रा। प्रात्युक्तेनं सुवृता रथेन। उपागंच्छत्मवसागंतन्नः। अविष्टं धीष्वश्विना न आसु। प्रजावद्रेतो अहंयं नो

अस्तु। आवां तोके तनेये तूर्तुजानाः। सुरत्नांसो देववीतिं गमेम॥२७॥ त्वः सोम् ऋतुंभिः सुऋतुंर्भूः। त्वं दक्षैः सुदक्षों विश्ववेदाः। त्वं वृषां

सुवर्षाम्पस्वां वृजनेस्य गोपाम्। भरेषुजाः संक्षितिः सुश्रवंसम्। जयंन्तं त्वामनं मदेम सोम। भवां मित्रो न शेव्यों घृतासंतिः। विभूतद्यम्न एव या उ सप्रथाः॥२८॥

अधां ते विष्णो विदुषां चिद्दध्यः। स्तोमों यज्ञस्य राध्यों ह्विष्मंतः। यः पूर्व्यायं वेधसे नवींयसे। सुमज्ञांनये विष्णवे ददांशित। यो जातम्स्य महतो महि ब्रवांत।

सेदु श्रवोंभिर्युज्यं चिद्भ्यंसत्। तम् स्तोतारः पूर्व्यं यथां विद ऋतस्यं। गर्भ ई हविषां पिपर्तन। आऽस्यं जानन्तो नामं चिद्विवक्तन। बृहत्तें विष्णो सुमृतिं भंजामहे॥२९॥ इमा धाना घृंतसुर्वः। हरी इहोपंवक्षतः। इन्द्र ५ सुखतंमे रथें। एष ब्रह्मा प्रतेमहे। विदर्थे शश्सिष्ध हरीं। य ऋत्वियः प्रते वन्वे। वनुषो हर्यतं मदम्। इन्द्रो नामं घृतन्नयः। हरिंभिश्चारु सेचंते। श्रुतो गुण आ त्वां विशन्तु॥३०॥ हरिवर्पसङ्गिरंः। आचर्षणिप्रा वृष्भो जनानाम्। राजां कृष्टीनां पुंरुहूत इन्द्रेः।

स्तुतश्रंवस्यन्नवसोपंमद्रिक्। युक्ता हरी वृष्णायाँ ह्यर्वाङ्। प्र यथ्सिन्धंवः प्रस्वं यदायन्। आपः समुद्र रथ्येव जग्मुः। अतंश्चिदिन्द्रः सदंसो वरीयान्। यदी र सोमः पृणति दुग्धो अर्शः। ह्वयांमसि त्वेन्द्रं याह्यंर्वाङ्॥३१॥

अरंन्ते सोमंस्त्नुवे भवाति। शतंत्रतो मादयंस्वा सुतेषुं। प्रास्मा अंव पृतंनासु प्रयुथ्सु। इन्द्रांय सोमाः प्रदिवो विदानाः। ऋभुर्येभिवृषंपर्वा विहायाः। प्रयम्यमाणान्प्रति षू गृंभाय। इन्द्र पिब वृषंधूतस्य वृष्णाः। अहेडमान् उपंयाहि युज्ञम्। तुभ्यं पवन्त इन्दंवः सुतासंः। गावो न वंज्ञिन्थ्स्वमोको अच्छं॥३२॥

इन्द्रा गंहि प्रथमो यज्ञियांनाम्। या ते काकुथ्सुकृता या वरिष्ठा। यया शश्वित्पवंसि मध्वं ऊर्मिम्। तयां पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात्। सन्ते वज्ञो वर्ततामिन्द्र गृव्युः। प्रात्युंजा वि बोधय। अश्विनावेह गेच्छतम्। अस्य सोमंस्य पीतयैं। प्रात्यावांणा प्रथमा यंजध्वम्। पुरा गृध्रादरंरुषः पिबाथः। प्रातर्हि यज्ञमृश्विना दधांते। प्रश्रंसन्ति क्वयंः पूर्वभाजः। प्रातर्यंजध्वमृश्विनां हिनोत। न

सायमंस्ति देवया अर्जुष्टम्। उतान्यो अस्मद्यंजते विचायः। पूर्वः पूर्वो यर्जमानो

वनीयान्॥३३॥ चाश्वजिद्यो गंच्छतं नो दाशन्नामांभिश्नीर्गमेम सप्रथां भजामहे विशन्तु याह्यविङच्छं पिबाथः पद्गं॥______

पिलतं च यत्। किलासं च पिलतं चं। निरितो नांशया पृषंत्। आ नः स्वो अंश्ञुतां वर्णः। परौ श्वेतानि पातय। असितं ते निलयनम्। आस्थानमसितं तवं॥३४॥ असिंक्रियस्योषधे। निरितो नांशया पृषंत्। अस्थिजस्यं किलासंस्य। तनूजस्यं

नक्तं जाताऽस्योपधे। रामे कृष्णे असिक्कि च। इद॰ रंजनि रजय। किलासं

च यत्त्वचि। कृत्ययां कृतस्य ब्रह्मणा। लक्ष्मं श्वेतमंनीनशम्। सरूपा नामं ते

माता। सरूपो नामं ते पिता। सरूपाऽस्योषधे सा। सरूपिमदं कृधि॥३५॥ शुन १ हुंवेम मुघवांनुमिन्द्रम्। अस्मिन्भरे नृतंमं वाजंसातौ। शृण्वन्तंमुग्रमूतयें स्मर्थ्स्। घ्रन्तं वृत्राणि स्ञितं धर्नानाम्। धूनुथ द्यां पर्वतान्दाश्षे वस्। नि वो वनां जिहते यामं नो भिया। कोपयंथ पृथिवीं पृश्चिमातरः। युधे यदुंग्राः

पृषंतीरयुंग्ध्वम्। प्रवेपयन्ति पर्वतान्। विविश्चन्ति वनस्पतीन्॥३६॥

प्रोवारत मरुतो दुर्मदां इव। देवांसः सर्वया विशा। पुरुत्रा हि सद्दृङ्क्ष्मिं। विशो विश्वा अनुं प्रभु। सम्थ्यं त्वा हवामहे। सम्थ्यविग्नमवसे। वाज्यन्तों हवामहे। वाजेषु चित्रराधसम्। सङ्गच्छध्व संवंदध्वम्। सं वो मना स्सि जानताम्॥३७॥

देवा भागं यथा पूर्वे। सञ्जानाना उपासंत। समानो मन्त्रः सिनितः समानी। समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं केतो अभि स॰ रेभध्वम्। संज्ञानेन वो ह्विषां यजामः। समानी व आकूतिः। समाना हृदयानि वः। समानमंस्तु वो मनः। यथां वः सुसहासंति॥३८॥

स्ंज्ञानं नः स्वैः। स्ंज्ञान्मरंणैः। स्ंज्ञानंमिश्विना युवम्। इहास्मासु नियंच्छतम्। स्ंज्ञानं मे बृह्स्पितिः। स्ंज्ञानं सिवृता करत्। स्ंज्ञानंमिश्वना युवम्। इह मह्यं नि यंच्छतम्। उपं च्छायामिव घृणैः। अर्गन्म शर्म ते वयम्॥३९॥

अग्ने हिरंण्यसन्दशः। अदंब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वम्। शिवेभिंरद्य परिंपाहि नो गयम्। हिरंण्यजिह्वः सुविताय नव्यंसे। रक्षा मार्किर्नो अघशर्रस ईशत। मदेमदे हि नों दुदः। यूथा गवांमृजुऋतुंः। सङ्गंभाय पुरूश्ता। उभया हस्त्या वसुं। शिशीहि राय आ भेरा ४०॥

शिप्रिंन्वाजानां पते। शचींवस्तवं दुर्सनां। आ तू नं इन्द्र भाजय। गोष्वश्वेषु शुभुषुं। सृहस्रेषु तुवीमघ। यद्देवा देव्हेर्डनम्। देवांसश्चकृमा वयम्। आदित्यास्तरमानमा यूयम्। ऋतस्यर्तेनं मुश्चत। ऋतस्यर्तेनांऽऽदित्याः॥४१॥

यजंत्रा मुश्चतेह माँ। युज्ञैर्वो यज्ञवाहसः। आशिक्षंन्तो न शेकिम। मेदंस्वता यजमानाः। स्रुचाऽऽज्येन् जुह्वंतः। अकामा वो विश्वेदेवाः। शिक्षंन्तो नोपं शेकिम।

यदि दिवा यदि नक्तम्। एनं एन्स्योकंरत्। भूतं मा तस्माद्भव्यं च॥४२॥ द्रुपदार्दिव मुश्रतु। द्रुपदाद्विवेन्मुंमुचानः। स्विन्नः स्नात्वी मलांदिव। पूतं प्वित्रेणेवाऽऽज्यम्। विश्वे मुश्चन्तु मैनंसः। उद्वयं तमंस्स्परिं। पश्यंन्तो ज्योतिरुत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यम्। अगन्म ज्योतिरुत्तमम्॥४३॥

वृषासो अर्शः पंवते ह्विष्मान्थ्सोमः। इन्द्रंस्य भाग ऋत्यः श्तायः। स मा वृषाणं वृष्मं कृणोतु। प्रियं विशार सर्ववीरर सुवीरम्। कस्य वृषां सुते सर्वा। नियुत्वानवृष्मो रणत्। वृत्रहा सोमंपीतये। यस्ते शृङ्ग वृषोनपात्। प्रणंपात्कुण्डुपाय्यः। न्यंस्मिन्दध्र आ मनः॥४४॥

त स्मृप्रीचींक्तयो वृष्णियानि। पौ इस्यांनि नियुतः सश्च्रिरन्द्रम्। समुद्रं न सिन्धंव उक्थशुंष्माः। उर्व्यचंसङ्गिर् आ विंशन्ति। इन्द्रांय गिरो अनिंशितसर्गाः। अपः प्रैर्यन्थ्सगंरस्य बुप्नात्। यो अक्षेणेव चिक्रया शचींभिः। विष्वंक्तस्तम्भं पृथिवीमुत द्याम्। अक्षोदयच्छवंसा क्षामंबुप्नम्। वार्णवांतस्तिविंषीभिरिन्द्रः॥४५॥

दृढान्यौँघ्रादुशमान् ओर्जः। अवांभिनत्ककुभः पर्वतानाम्। आ नो अग्ने सुकेतुनां। रियं विश्वायुंपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसें। त्व॰ सोम महे भगम्।

त्वं यूनं ऋतायते। दक्षं दधासि जीवसें। रथं युअते मुरुतंः शुभे सुगम्। सूरो न मित्रावरुणा गविष्टिषु॥४६॥

रजा रेसि चित्रा विचंरन्ति तन्यवंः। दिवः संम्राजा पर्यसा न उक्षतम्। वाचर सुमित्रावरुणाविरावतीम्। पर्जन्यश्चित्रां वंदति त्विषीमतीम्। अभ्रा वंसत मरुतः सुमाययाँ। द्यां वंर्षयतमरुणामंरेपसम्। अयुंक्त सुप्त शुन्ध्युवंः। सूरो रथंस्य निष्ठियः। ताभिर्याति स्वयुक्तिभिः। विहिष्ठेभिर्विहरंन् यासि तन्तुम्॥४७॥

अवव्ययन्नसितं देव वस्वः। दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य। चर्मेवावाधुस्तमो अफ्स्वंन्तः। पूर्जन्याय प्र गांयत। दिवस्पुत्रायं मीदुषें। स नों यवसंमिच्छतु। अच्छां वद तुवसं गीर्मिराभिः। स्तुहि पूर्जन्यं नमसाऽऽविवास। कनिक्रदद्वषभो जीरदानुः। रेतों दधात्वोषंधीषु गर्भम्॥४८॥

यो गर्भमोषंधीनाम्। गवां कृणोत्यर्वताम्। पूर्जन्यः पुरुषीणांम्। तस्मा इदास्ये हुविः। जुहोता मध्मत्तमम्। इडां नः संयतं करत्। तिस्रो यदंग्ने शरदस्त्वामित्।

शुचिं घृतेन शुचंयः सप्र्यन्। नामांनि चिद्दिधिरे युज्ञियांनि। असूदयन्त तुनुवः सुजांताः॥४९॥

इन्द्रंश्च नः शुनासीरौ। इमं युज्ञं मिंमिक्षतम्। गर्भं धत्तः स्वस्तयें। ययोरिदं विश्वं भुवंनमा विवेशं। ययोरान्न्दो निहितो महंश्च। शुनांसीरावृत्भिः संविदानौ। इन्द्रंवन्तौ ह्विरिदं जुंषेथाम्। आघाये अग्निमिन्धते। स्तृणन्तिं ब्र्हिरांनुषक्। येषामिन्द्रो युवा सखाँ। अग्न इन्द्रंश्च मेदिनाँ। हथो वृत्राण्यंप्रति। युवः हि वृत्रहन्तंमा। याभ्याः सुवरजंयन्नग्रं एव। यावांतस्थतुर्भुवंनस्य मध्यें। प्रचंर्षणी वृषणा वर्ज्ञंबाह्। अग्नी इन्द्रांवृत्रहणां हवे वाम्॥५०॥

मन् इन्द्रो गविष्टिषु तन्तुं गर्भ्ः स्वांताः सखां स्म चं॥———[५]
उत नेः प्रिया प्रियासुं। स्प्तस्वसा सुजुंष्टा। सरंस्वती स्तोम्यांऽभूत्। इमा
जुह्वांनायुष्मदा नमोंभिः। प्रति स्तोमर्थं सरस्वति जुषस्व। तव शर्मान्प्रियतंमे
दर्धानाः। उपस्थेयाम शर्णं न वृक्षम्। त्रीणिं पदा विचंक्रमे। विष्णुंर्गो्पा अदाँभ्यः।

ततो धर्माणि धारयन्॥५१॥

चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् २)

तदंस्य प्रियम्भि पाथों अश्याम्। नरो यत्रं देवयवो मदंन्ति। उरुक्रमस्य स हि बन्धुंरित्था। विष्णोः पदे पर्मे मध्व उथ्मः। कृत्वादा अस्थु श्रेष्ठः। अद्य त्वां वन्वन्थ्सुरेक्णाः। मर्त आनाश सुवृक्तिम्। इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह। प्रिया त आ ब्र्हिः सीद। वीहि सूर प्रोडाशम्॥५२॥

उपं नः सूनवो गिरंः। शृण्वन्त्वमृतंस्य ये। सुमृडीका भंवन्तु नः। अद्या नों देव सिवतः। प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दुःष्वप्निय स्व। विश्वांनि देव सिवतः। दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। शुचिंमकैर्बृह्स्पतिम्॥५३॥

अध्वरेषुं नमस्यत। अनाम्योज् आ चंके। या धारयंन्त देवा सुदक्षा दक्षंपितारा। असुर्याय प्रमहसा। स इत् क्षेति सुधित ओकंसि स्वे। तस्मा इडां पिन्वते विश्वदानी। तस्मै विशंः स्वयमेवानंमन्ति। यस्मिन्ब्रह्मा राजंनि पूर्व एति। सक्तिमिन्द्र सच्यंतिम्। सच्यंतिं ज्ञघनंच्यतिम्॥५४॥ कुनात्काभात्र आ भेर। प्रयपस्यित्रीव सुक्थ्यौ। वि नं इन्द्र मृधों जिह। कर्नीखुनदिव सापयन्। अभि नः सुष्टुंतिं नय। प्रजापंतिः स्त्रियां यशेः। मुष्कयोरदधाथ्सपम्। कामस्य तृप्तिमानन्दम्। तस्यौग्ने भाजयेह माँ। मोदेः प्रमोद आंनुन्दः॥५५॥

मनंसिश्चत्तमाकूंतिम्। वाचः स्त्यमंशीमिह। पुशूनाः रूपमन्नंस्य। यशः श्रीः श्रंयतां मियं। यथाऽहम्स्या अतृंपः स्त्रिये पुमान्। यथा स्त्री तृप्यंति पुःसि प्रिये प्रिया। एवं भगंस्य तृप्याणि॥५६॥

मुष्कयोर्निहितः सपंः। सृत्वेव कार्मस्य तृप्याणि। दक्षिणानां प्रतिग्रहे।

यज्ञस्य काम्यंः प्रियः। ददामीत्यग्निर्वदिति। तथेतिं वायुरांह् तत्। हन्तेतिं स्त्यं चन्द्रमाः। आदित्यः स्त्यमोमितिं। आप्स्तथ्सत्यमा भेरन्। यशो यज्ञस्य दिक्षणाम्। असौ मे कामः समृद्धताम्। न हि स्पश्मिविदन्नन्यम्स्मात्। वैश्वान्रात्पुंरपुतारंमुग्नेः॥५७॥

अर्मास् आसर्न्। अयूपाः सद्म विभृंता पुरूणिं। वैश्वांनर् त्वया ते नुत्ताः। पृथिवीम्न्याम्भितंस्थुर्जनांसः। पृथिवीं मातरं महीम्। अन्तरिक्षमुपं ब्रुवे। बृहतीमूतये दिवम्। विश्वं बिभर्ति पृथिवी॥५८॥ अन्तरिक्षुं वि पंप्रथे। दुहे द्यौर्बृह्ती पर्यः। न ता नंशन्ति न दंभाति तस्करः। नैनां अमित्रो व्यथिरादंधर्षति। देवाङ्श्च याभिर्यजंते ददांति च। ज्योगित्ताभिः सचते गोपंतिः सह। न ता अर्वा रेणुकंकाटो अश्जुते। न सईस्कृतत्रमुपं यन्ति ता अभि। उरुगायमभयं तस्य ता अनु। गावो मर्त्यस्य वि चरन्ति यज्वनः॥५९॥

ता आभा उरुगायमभय तस्य ता अनु। गावा मत्यस्य वि चरान्त यज्वनः॥५९॥ रात्री व्यंख्यदायती। पुरुत्रा देव्यंक्षभिः। विश्वा अधि श्रियोऽधित। उपं ते गा इवाकंरम्। वृणीष्व दुहितर्दिवः। रात्री स्तोमं न जिग्युषीं। देवीं वाचंमजनयन्त देवाः। तां विश्वरूपाः पृशवों वदन्ति। सा नो मन्द्रेष्मूर्जं दुहाना। धेनुर्वाग्स्मानुप् सुष्टुतैतुं॥६०॥

यद्वाग्वदंन्त्यिवचेत्नानि। राष्ट्री देवानां निष्सादं मुन्द्रा। चतंस्र ऊर्जं दुदुहे पया रेसि। क्रं स्विदस्याः पर्मं जंगाम। गौरी मिमाय सिल्लानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा पर्मे व्योमन्। तस्या रे समुद्रा अधि विक्षंरन्ति। तेनं जीवन्ति प्रदिश्कष्ठतंस्रः॥६१॥

ततंः क्षरत्यक्षरम्। तिद्वश्वमुपं जीवति। इन्द्रासूरां जनयंन्विश्वकंर्मा। मुरुत्वारं अस्तु गणवान्थ्सजातवान्। अस्य स्रुषा श्वशुंरस्य प्रशिष्टिम्। सपत्ना वाचं मनसा उपांसताम्। इन्द्रः सूरों अतर्द्रजारंसि। स्रुषा सपत्ना श्वशुंरो-ऽयमंस्तु। अयर शत्रूंश्वयतु जर्ह्षषाणः। अयं वाजं जयतु वाजंसातौ। अग्निः क्षंत्रभृदिनिंभृष्टमोजः। सहस्रियों दीप्यतामप्रयुच्छन्। विभ्राजंमानः सिमधा न उग्रः। आऽन्तरिक्षमरुहृदगुन्द्याम्॥६२॥

धारयंन्पुरोडाशं बृह्स्पतिं ज्ञ्चनंच्युतिमान्नदो भगंस्य तृप्याण्युग्नेः पृथिवी यज्वंन एत् प्रदिश्श्चतंस्रो वाजंसातौ च्त्वारिं च॥[६] वृषाँऽस्य १शुर्वृष्भायं गृह्यसे। वृषाऽयमुग्रो नृचक्षंसे। दिव्यः कंर्मण्यों हितो अधिपतिं विशाम्॥६३॥

कृंणुहि जीरदानो॥६५॥

अस्याः पृथिव्या अध्यक्षम्। इमिनेन्द्र वृष्मं कृण्। यः सुशृङ्गः सुवृष्मः। कृत्याणो द्रोण आहितः। कार्षीवल प्रगाणेन। वृष्मेणं यजामहे। वृष्मेण् यजमानाः। अर्कूरेणेव सूर्पिषां। मृद्धेश्च सर्वा इन्द्रेण। पृतेनाश्च जयामिस॥६४॥ यस्यायमृष्मो हृविः। इन्द्रांय परिणीयतें। जयांति शत्रुंमायन्तम्। अथो हिन्त पृतन्यतः। नृणामहं प्रणीरसंत्। अग्रं उद्भिन्दतामंसत्। इन्द्र शुष्मं तनुवा मेरंयस्व।

नीचा विश्वा अभितिष्ठाभिमातीः। नि शृणीह्याबाधं यो नो अस्ति। उरुं नो लोकं

बृहन्नामं। वृष्भस्य या कुकुत्। विषूवान् विष्णो भवतु। अयं यो मामुको वृषाँ।

अथो इन्द्रं इव देवेभ्यः। वि ब्रंवीतु जर्नेभ्यः। आयुंष्मन्तुं वर्चस्वन्तम्। अथो

प्रेह्मभि प्रेहि प्र भंग् सहंस्व। मा विवेनो वि शृंणुष्वा जनेषु। उदींडितो वृंषभ् तिष्ठ शुष्मैः। इन्द्र शत्रूंन्युरो अस्माकं युध्य। अग्रे जेता त्वं जंय। शत्रूंन्थ्सहस् ओर्ज्सा। वि शत्रून् विमृधों नुद। एतं ते स्तोमं तुविजात् विप्रः। रथं न धीरः स्वपां अतक्षम्। यदीदंग्ने प्रतित्वं देव हर्याः॥६६॥

सुवंवितीरप एंना जयेम। यो घृतेनाभिमांनितः। इन्द्र जैत्रांय जिज्ञेषे। स नः

वृत्रहा पुंरुचेतंनः। इन्द्रों जिगाय सहंसा सहार्श्सा इन्द्रों जिगाय पृतंनानि विश्वा॥६७॥ इन्द्रों जातो वि पुरों रुरोज। स नंः पर्स्पा वरिवः कृणोतु। अयं कृतुरगृंभीतः।

सङ्कांस् पारय। पृतनासाह्यंषु च। इन्द्रों जिगाय पृथिवीम्। अन्तरिक्षः सुवंर्महत्।

इन्द्रा जाता व पुरा रुराजा स नः पर्स्पा वारवः कृणाता ज्य कृतुरगृमातः। विश्वजिदुद्धिदिथ्सोमंः। ऋषिर्विप्रः काव्यंन। वायुरंग्रेगा यंज्ञप्रीः। साकङ्गन्मनंसा यज्ञम्। शिवो नियुद्धिः शिवाभिः। वायो शुक्रो अंयामि ते। मध्वो अग्रं दिविष्टिषु॥६८॥

आ यांहि सोमं पीतये। स्वारुहो देव नियुत्वंता। इमिनंद्र वर्धय क्षित्रियांणाम्। अयं विशां विश्पतिरस्तु राजां। अस्मा इंन्द्र मिह वर्चा रेसि धेहि। अवर्चसं कणुहि शत्रुंमस्य। इममा भंज ग्रामे अश्वेषु गोषुं। निर्मुं भंज योऽमित्रों अस्य। वर्ष्मन् क्षत्रस्यं ककुभिं श्रयस्व। ततों न उग्रो वि भंजा वसूनि॥६९॥

अस्मे द्यांवापृथिवी भूरिं वामम्। सन्दुंहाथां घर्मदुघेव धेनुः। अय राजां प्रिय इन्द्रंस्य भूयात्। प्रियो गवामोषंधीनामुतापाम्। युनिज्मं त उत्तरावंन्तिमिन्द्रम्। येन जयांसि न परा जयांसै। स त्वांऽकरेकवृष्भ इस्वानांम्। अथो राजन्नुत्तमं मानुवानांम्। उत्तर्स्त्वमधंरे ते सुपत्नाः। एकवृषा इन्द्रंसखा जिगीवान्॥७०॥

विश्वा आशाः पृतंनाः सञ्जयं जयन्। अभि तिष्ठ शत्रूयतः संहस्व। तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ। बिलिमंग्ने अन्तित् ओत दूरात्। आ भन्दिष्ठस्य सुमृतिं चिकिद्धि। बृहत्ते अग्ने मिह् शर्म भद्रम्। यो देह्यो अनमयद्वध्स्त्रेः। यो अर्यपत्नीरुषसंश्वकारं। स निरुध्या नहुषो यह्वो अग्निः। विशंश्वके बिलहृतः सहोभिः॥७१॥ प्र सद्यो अंग्ने अत्येष्यन्यान्। आविर्यस्मै चारुतरो बुभूथं। ईडेन्यो वपुष्यो

विभावां। प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम्। ब्रह्मंज्येष्ठा वीर्या सम्भृतानि। ब्रह्माग्रे

ज्येष्ठं दिवमा तंतान। ऋतस्य ब्रह्मं प्रथमोत जंज्ञे। तेनांर्हित ब्रह्मंणा स्पर्धितुङ्कः। ब्रह्म सुचो घृतवंतीः। ब्रह्मणा स्वरंवो मिताः॥७२॥

ब्रह्मं यज्ञस्य तन्तंवः। ऋत्विजो ये हंविष्कृतंः। शृङ्गाणीवेच्छृङ्गिणा ५ सन्दंदिश्रिरे। चषालंबन्तः स्वरंबः पृथिव्याम्। ते देवासः स्वरंबस्तस्थिवा रसंः। नमः सर्खिभ्यः सन्नान्माऽवंगात। अभिभूरग्निरंतरृद्रजा रेसि। स्पृधों विहत्य पृतंना अभिश्रीः। जुषाणो म आहुंतिं मामहिष्ट। हत्वा सपत्नान् वरिवस्करन्नः। ईशांनं त्वा भुवंनानामभिश्रियम्। स्तौम्यंग्न उरुकृत ५ सुवीरम्। हविर्जुषाणः सपत्ना ५ अभिभूरंसि। जुहि शत्रू रप मृधों नुदस्व॥७३॥ विशां जंयामसि जीरदानो हर्या विश्वा दिविष्टिषु वसूनि जिगीवान्थ्सहींभिर्मिता नश्चत्वारि च॥————[७]

स प्रत्नवन्नवीयसा। अग्नै चुम्नेनं संयतौ। बृहत्तंतन्थ भानुनौ। नवं नु स्तोमंमग्नयै। दिवः श्येनायं जीजनम्। वसौं कुविद्वनातिं नः। स्वारुहा यस्य श्रियों दशे।

र्यिर्वीरवंतो यथा। अग्रें यज्ञस्य चेतंतः। अदाभ्यः पुरएता॥७४॥

अग्निर्विशां मानुषीणाम्। तूर्णी रथः सदा नर्वः। नव सोर्माय वाजिनै। आज्यं पर्यसोऽजिन। जुष्ट्रं शुचितम् वस्। नवर्ं सोम जुषस्व नः। पीयूषंस्येह तृंण्णुहि। यस्ते भाग ऋता वयम्। नवंस्य सोम ते वयम्। आ सुमतिं वृणीमहे॥७५॥

स नों रास्व सहस्रिणंः। नवर् हिवर्जुंषस्व नः। ऋतुर्भिः सोम् भूतंमम्। तदुङ्ग प्रतिहर्य नः। राजैन्थ्सोम स्वस्तयै। नवुर्स्तोमुन्नवर् हिवः। इन्द्राग्निभ्यां नि वेदय। तज्जुंषेता ए सचेतसा। शुचिं नु स्तोमं नवंजातमद्य। इन्द्रौग्नी वृत्रहणा जुषेथाँम्॥ ७६॥

उभा हि वार् सुहवा जोहंवीमि। ता वाजर् सद्य उंशते धेष्ठां। अग्निरिन्द्रो नवंस्य नः। अस्य हव्यस्यं तृप्यताम्। इह देवौ संहस्रिणौं। युज्ञं न आ हि गच्छंताम्। वसुंमन्तरं सुवर्विदम्। अस्य हव्यस्यं तृप्यताम्। अग्निरिन्द्रो नवंस्य नः। विश्वांन्देवा इस्तंर्पयत॥ ७७॥

ह्विषोऽस्य नवंस्य नः। सुवर्विदो हि जंजिरे। एदं ब्रहिः सुष्टरीमा नवेन। अयं

यज्ञो यजमानस्य भागः। अयं बंभूव भुवंनस्य गर्भः। विश्वं देवा इदम्द्यागंमिष्ठाः। इमे न द्यावापृथिवी समीचीं। तन्वाने यज्ञं पुरुपेशंसिन्धिया। आऽस्मै पृणीतां भुवंनानि विश्वां। प्रजां पृष्टिंममृतं नवेन॥७८॥

इमे धेनू अमृतं ये दुहातें। पर्यस्वत्युत्तरामेतु पुष्टिः। इमं यज्ञं जुषमाणे नवेन।

समीची द्यावांपृथिवी घृताचीं। यविष्ठो हव्यवाहंनः। चित्रभांनुर्घृतासुंतिः। नवंजातो वि रोचसे। अग्ने तत्ते महित्वनम्। त्वमंग्ने देवतांभ्यः। भागे देव न मीयसे॥७९॥ स एना विद्वान् यंक्ष्यसि। नव्ड् स्तोमं जुषस्व नः। अग्निः प्रंथमः प्राश्ञांतु। स हि वेद यथां हिवः। शिवा अस्मभ्यमोषंधीः। कृणोतुं विश्वचंर्षणिः। भद्रान्नः श्रेयः

समंनेष्ट देवाः। त्वयांऽवसेन् समंशीमिह त्वा। स नों मयोभूः पितो आ विंशस्व। शं तोकायं तुनुवें स्योनः। एतम् त्यं मधुना संयुतं यवम्। सर्स्वत्या अधिमनावंचकृषुः। इन्द्रं आसीथ्सीरंपितः शतकृतः। कीनाशां आसन्मुरुतः सुदानंवः॥८०॥

पुर्पुता वृंणीमहे जु्षेथाँन्तर्पयतामृतुन्नवेन मीयसे स्योनश्चत्वारि च॥————[८]

जुष्टश्चक्षुंषो जुष्टींनरो नक्तञ्जाता वृषास उत नो वृषांंऽस्य शुः सप्रंत्नवदष्टौ॥८॥

जुष्टों मृन्युर्भगो जुष्टीं नरो हरिवर्पसङ्गिरः शिप्रिन्वाजानामुत नेः प्रिया यद्वाग्वदेन्ती विश्वा आशा अशीतिः॥८०॥ जुष्टेः सुदानंवः॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥पञ्चमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके पश्चमः प्रपाठकः॥

प्राणो रेक्षति विश्वमेजंत्। इर्यो भूत्वा बंहुधा बहूनिं। स इथ्सर्वं व्यांनशे। यो देवो देवेषुं विभूरन्तः। आवृंदूदात् क्षेत्रियंध्वगद्वृषां। तिमत्प्राणं मन्सोपं शिक्षत। अग्रं देवानांमिदमंत्तु नो हृविः। मनंस्श्चित्तेदम्। भूतं भव्यं च गुप्यते। तिद्धि देवेष्वंग्रियम्॥१॥

आ नं एतु पुरश्चरम्। सह देवैरिम १ हवम्। मनः श्रेयंसिश्रेयसि। कर्मन् यज्ञपंतिं दर्धत्। जुषतां मे वागिद १ हविः। विराट्टेवी पुरोहिता। ह्व्यवाडनंपायिनी। ययां रूपाणि बहुधा वदंन्ति। पेशा १ सि देवाः पंरमे जनित्रें। सा नो विराडनंपस्फुरन्ती॥२॥

वाग्देवी जुंषतामिद शह्विः। चक्षुंर्देवानां ज्योतिरमृते न्यंक्तम्। अस्य विज्ञानांय बहुधा निधीयते। तस्यं सुम्नमंशीमहि। मा नों हासीद्विचक्षणम्। आयुरिन्नः प्रतींर्यताम्। अनंन्धाश्चक्षंषा व्यम्। जीवा ज्योतिरशीमिह। सुवर्ज्योतिरुतामृतम्। श्रोत्रेण भृद्रमृत शृंण्वन्ति सृत्यम्। श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदेश्च महंश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश् आ शृंणोिम। येन प्राच्यां उत देक्षिणा। प्रतीच्यें दिशः शृण्वन्त्यंत्तरात्। तदिच्छोत्रं बहुधोद्यमानम्। अरान्न नेिमः परि सर्वं बभ्व॥३॥

उदेहिं वाजिन्यो अस्यपस्वंन्तः। इद॰ राष्ट्रमा विंश सूनृतांवत्। यो रोहितो विश्वमिदं ज्जानं। स नो राष्ट्रेषु सुधितान्दधातु। रोह॰रोह्॰ रोहित् आरुरोह।

अग्नियमनंपस्फुरन्ती सृत्यः सप्त चं॥-

प्रजाभिर्वृद्धिं जनुषांमुपस्थम्। ताभिः स॰रंब्यो अविद्थ्यडुर्वीः। गातुं प्रपश्यंत्रिह राष्ट्रमाऽहाँः। आऽहांर्षीद्राष्ट्रमिह रोहितः। मृधो व्यास्थ्दभयं नो अस्तु॥४॥ अस्मभ्यं द्यावापृथिवी शक्वंरीभिः। राष्ट्रं दुंहाथामिह रेवतीभिः। विमंमर्श रोहितो विश्वरूपः। सुमाचुऋाणः प्ररुहो रुहंश्च। दिवंं गुत्वायं महता मंहिम्ना। वि नों राष्ट्रमुनत्तु पर्यसा स्वेनं। यास्ते विशस्तर्पसा सं बभूवुः। गायत्रं वथ्समनु तास्त आऽगुः। तास्त्वा विशन्तु महंसा स्वेनं। सं माता पुत्रो अभ्येतु रोहितः॥५॥

यूयमुंग्रा मरुतः पृश्ञिमातरः। इन्द्रंण स्युजा प्रमृंणीथ शत्रून्। आ वो रोहिंतो अशृणोदभिद्यवः। त्रिसंप्तासो मरुतः स्वादुसम्मुदः। रोहिंतो द्यावांपृथिवी जंजान। तस्मिङ्स्तन्तुं परमेष्ठी तंतान। तस्मिञ्छिश्रिये अज एकंपात्। अहर्ष्हृद्यावांपृथिवी बलेन। रोहिंतो द्यावांपृथिवी अंहर्ष्हत्। तेन सुवंः स्तिभृतन्तेन नाकंः॥६॥

पुनर्नु इन्द्रों मुघवां ददातु। धर्नानि शुक्रो धन्यः सुराधाः। अुर्वाचीनं कृणुतां

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

याचितो मनंः। श्रुष्टी नो अस्य हिवषो जुषाणः। यानि नोऽजिनं धर्नानि। जहर्थं शूर मन्युनां। इन्द्रानुंविन्द नस्तानिं। अनेनं हविषा पुनः। इन्द्र आशांभ्यः परिं। सर्वाभ्योऽभंयं करत्॥८॥

जेता शत्रून् विचंर्षणिः। आकूँत्यै त्वा कामांय त्वा समृधें त्वा। पुरो दंधे अमृतत्वायं जीवसें। आकूंतिमस्यावंसे। कामंमस्य समृंद्धौ। इन्द्रंस्य युअते धियंः। आर्कूतिं देवीं मनसः पुरो दंधे। यज्ञस्यं माता सुहवां मे अस्तु। यदिच्छामि मनसा सकांमः। विदेयंमेनद्धदेये निविष्टम्॥९॥

सेद्ग्रिर्ग्री १ रत्ये त्यन्यान्। यत्रं वाजी तनयो वीडुपांणिः। सहस्रंपाथा अक्षरां समेति। आशानां त्वाऽऽशापालेभ्यः। चृतुभ्यों अमृतेभ्यः। इदं भूतस्याध्यंक्षेभ्यः। विधेमं हिवषां वयम्। विश्वा आशा मधुना स॰ सृजामि। अनमीवा आप ओषंधयो भवन्त्। अयं यर्जमानो मृधो व्यस्यताम्॥१०॥

अगृंभीताः पशवंः सन्तु सर्वें। अग्निः सोमो वर्रणो मित्र इन्द्रंः। बृहुस्पतिंः सविता

यः संहुम्री। पूषा नो गोभिरवंसा सरंस्वती। त्वष्टां रूपाणि समंनक्तु युज्ञैः। त्वष्टां रूपाणि दर्धती सरंस्वती। पूषा भगरं सिवता नो ददातु। बृह्स्पित्दिद्दिन्द्रंः सहस्रम्ं। मित्रो दाता वर्रुणः सोमो अग्निः॥११॥

करित्रविष्टमस्यतात्रवं च॥

कामों अस्मे। तमापृंणा वसुपते वसूंनाम्। इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैः। चन्द्रवंता राधंसा पुप्रथंश्च। सुवर्यवो मृतिभिस्तुभ्यं विप्राः। इन्द्रांय वाहः कुशिकासो अऋन्। इन्द्रंस्य नु वीर्याणि प्रवोचम्। यानि चकारं प्रथमानि वृज्री॥१२॥

आ नों भर भगंमिन्द्र द्युमन्तम्। नि तें देष्णस्यं धीमहि प्ररेके। उर्व इंव पप्रथे

अहुन्नहिमन्वपस्तंतर्द। प्रवृक्षणां अभिनृत्पर्वतानाम्। अहुन्नहिं पर्वते शिश्रियाणम्। त्वष्टांऽस्मै वज्रई स्वर्यन्ततक्ष। वाश्रा इंव धेनवः स्यन्दंमानाः। अञ्जः समुद्रमवं जग्मुरापः। वृषायमाणोऽवृणीत् सोमम्। त्रिकंद्रुकेष्विपबथ्सुतस्यं। आ सायंकं मुघवां दत्त् वज्रम्। अहंन्नेनं प्रथम्जा महीनाम्॥१३॥ इन्द्रो वर्ज्रेण महुता व्धेनं। स्कन्धा ईसीव कुलिशेनाविवृंक्णा। अहिंः शयत उपपृक्पृंथिव्याम्। अयोध्येव दुर्मद् आ हि जुह्वे। महावीरं तुंविबाधमृंजी्षम्॥१४॥ नातांरीरस्य समृतिं वधानांम्। स॰ रुजानाः पिपिष इन्द्रंशत्रुः। विश्वो विहाया अरितः। वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे। तुरणिर्न शिश्रथत्। श्रुवस्यया न शिश्रथत्। विश्वंस्मा इदिंषुध्यसे। देवुत्रा हव्यमूहिंषे। विश्वंस्मा इथ्सुकृते वारंमृण्वति। अग्निर्द्वारा व्यृंण्वति॥१५॥ उदु जिहांनो अभि कामंमी रयन्। प्रपृश्चिन्वश्वा भुवंनानि पूर्वथां। आ केतुना सुषंमिद्धो यजिष्ठः। कामं नो अग्ने अभिहंर्य दिग्भ्यः। जुषाणो हव्यम्मृतेषु दूढां। आ नों र्यिं बंहुलां गोमंतीमिषम्ं। नि धेहि यक्षंद्मृतेषु भूषन्। अश्विना

युज्ञमागंतम्। दाशुषुः पुरुंद रससा। पूषा रक्षितु नो र्यिम्॥१६॥

यदिन्द्राहंन्प्रथमजा महीनाम्। आन्मायिनाममिनाः प्रोत मायाः। आथ्सूर्यं

जनयन्द्यामुषासम्। तादीक्रा शत्रूत्र किलांविविथ्से। अहंन्वृत्रं वृत्रुतरं व्यरसम्।

ड्मां यज्ञमिश्वनां वर्धयंन्ता। ड्मौ र्यिं यजंमानाय धत्तम्। ड्मौ प्शून्रंक्षतां विश्वतों नः। पूषा नः पातु सद्मप्रयच्छन्। प्रतें महे संरस्वति। सुभंगे वार्जिनीवति। सृत्यवाचे भरे मृतिम्। इदं ते हृव्यं घृतवंथ्सरस्वति। सृत्यवाचे प्रभरेमा ह्वी १षिं। इमानि ते दुरिता सौभंगानि। तेभिर्वय सुभगांसः स्याम॥१७॥
वज्यहीनामृजीपं व्यंण्वति रक्षतु नो रियर सौभंगान्येकं च॥
[४]

युज्ञो रायो युज्ञ ईशो वसूनाम्। युज्ञः सुस्यानांमुत सुंक्षितीनाम्। युज्ञ इष्टः पूर्विचित्तिं दधातु। युज्ञो ब्रह्मण्वा अप्येतु देवान्। अयं युज्ञो वर्धतां गोभिरश्वैः। इयं वेदिः स्वपत्या सुवीरां। इदं बर्हिरिते बर्ही इष्यन्या। इमं युज्ञं विश्वे अवन्तु देवाः। भगं एव भगंवा अस्तु देवाः। तेनं वयं भगंवन्तः स्याम॥१८॥

तं त्वां भग् सर्व इञ्जोहवीमि। स नो भग पुरपुता भवेह। भग् प्रणेतुर्भग् सत्यंराधः। भगेमां धियमुदंव ददंन्नः। भग् प्र णो जनय गोभिरश्वैः। भग् प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम। शश्वतीः समा उपयन्ति लोकाः। शश्वतीः समा उपयन्त्यापः।

इष्टं पूर्त १ शर्श्वतीना १ सर्माना १ शाश्वतेन । हिवषेष्ट्वा ८नुन्तं लोकं पर्मा रुरोह॥१९॥

इयमेव सा या प्रथमा व्यौच्छंत्। सा रूपाणि कुरुते पश्चं देवी। द्वे स्वसारौ वयत्स्तन्नमेतत्। सुनातनं वितंतु षण्मयूखम्। अवान्या इस्तन्तून्किरतो धत्तो अन्यान्। नावंपृज्याते न गंमाते अन्तम्। आ वो यन्तूदवाहासो अद्या वृष्टिं ये विश्वे मरुतों जुनन्ति। अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्धः। एतं जुंषध्वं कवयो युवानः॥२०॥

धारावरा मुरुतो धृष्णुवोजसः। मृगा न भीमास्तंविषेभिरूर्मिभिः। अग्नयो न शुंशुचाना ऋंजीषिणंः। भुमिन्धमंन्त उप गा अंवृण्वत। वि चंक्रमे त्रिर्देवः। आ वेधसं नीलेपृष्ठं बृहन्तम्। बृहस्पितु सदेने सादयध्वम्। सादद्योनिं दम् आ दीदिवा रसम्। हिरेण्यवर्णमरुष र संपेम। स हि शुचिः शृतपंत्रः स शुन्थ्यः॥२१॥ हिरंण्यवाशीरिषिरः सुंवर्षाः। बृहस्पतिः स स्वांवेश ऋष्वाः। पूरू सर्खिभ्य

आसुतिं केरिष्ठः। पूष्ड् स्तवं व्रते वयम्। निरंष्येम कुदाचन। स्तोतारंस्त इह

स्मंसि। यास्तें पूषन्ना वों अन्तः संमुद्रे। हिर्ण्ययींर्न्तरिक्षे चरन्ति। याभिर्यासि दूत्या स्पर्यस्य। कामेन कृतश्रवं इच्छमानः॥२२॥

अरंण्यान्यरंण्यान्यसौ। या प्रेव नश्यंसि। कथा ग्रामं न पृंच्छसि। न त्वाभीरिव विन्दती (३)। वृषार्वाय वदंते। यदुपावंति चिच्चिकः। आघाटीभिरिव धावयन्।

अर्ण्यानिर्महीयते। उत गावं इवादन्। उतो वेश्मेव दृश्यते॥२३॥

वार्त्रहत्यायु शवंसे। पृतुनासाह्याय च। इन्द्रु त्वा वंर्तयामसि। सुब्रह्माणं वीरवंन्तं

बृहन्तम्। उरुं गंभीरं पृथुबंध्रमिन्द्र। श्रुतर्षिमुग्रमंभिमातिषाहम्। अस्मभ्यं चित्रं वृषंण र र्यिं दाः। क्षेत्रिये त्वा निर्ऋत्ये त्वा। द्रुहो मुंश्रामि वर्रणस्य पाशांत्। अनागसं ब्रह्मंणे त्वा करोमि॥२५॥

शिवे ते द्यावांपृथिवी उभे इमे। शं ते अग्निः सहाद्भिरंस्तु। शं द्यावांपृथिवी सहौषंधीभिः। शम्नतिरंक्षः सह वातंन ते। शं ते चतंस्रः प्रदिशों भवन्तु। या दैवीश्चतंस्रः प्रदिशोः। वातंपत्नीरभि सूर्यो विचष्टे। तासां त्वा जरस आ दंधामि।

प्रयक्ष्मं एतु निर्ऋतिं पराचैः। अमोचि यक्ष्मांदुरितादवर्त्वं॥२६॥

द्रुहः पाशान्तिर्ऋंत्यै चोदंमोचि। अहा अवंर्तिमविंदथ्स्योनम्। अप्यंभूद्भद्रे सुंकृतस्यं लोके। सूर्यमृतं तमंसो ग्राह्या यत्। देवा अमुंश्रुन्नसृंजन्न्येनसः। एवम्हिम्मं क्षेत्रियाञ्जांमिश्र्सात्। द्रुहो मुंश्रामि वर्रुणस्य पाशात्। बृहंस्पते युविमन्द्रेश्च वस्वः। दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य। धृत्तः रियः स्तुंवते कीरयेचित्॥२७॥

यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां नः। देवायुधिमन्द्रमा जोहुंवानाः। विश्वावृधंमभि ये रक्षंमाणाः। येनं हृता दीर्घमध्वांनमायन्। अनुन्तमर्थमिनंवर्ध्स्यमानाः। यत्तं सुजाते हिमवंथ्सु भेषजम्। मयोभूः शन्तंमा यद्धृदोसिं। ततों नो देहि सीबले। अदो गिरिभ्यो अधि यत्प्रधावंसि। स्श्शोभंमाना कृन्येव शुभ्रे॥२८॥

तां त्वा मुद्गेला हुविषां वर्धयन्ति। सा नः सीबले र्यिमा भांजयेह। पूर्वं देवा अपरेणानुपश्यं जन्मंभिः। जन्मान्यवंरैः परांणि। वेदांनि देवा अयम्स्मीति माम्। अह १ हित्वा शरीरं ज्रसः प्रस्तात्। प्राणापानौ चक्षुः श्रोत्रमः। वाचं मनंसि सम्भृताम्। हित्वा शरीरं ज्रसः प्रस्तात्। आ भूतिं भूतिं वयमंश्ञवामहै। इमा एव ता उषसो याः प्रथमा व्योच्छन्। ता देव्यः कुर्वते पश्चेरूपा। शश्वंतीर्नावंपृज्यन्ति। न गमन्त्यन्तमः॥२९॥

क्रोम्यवंत्यं विच्छुभेऽश्ववामहै च्लारि च॥———[६] वसूनां त्वाऽधीतेन। रुद्राणांमूर्म्या। आदित्यानां तेजंसा। विश्वेषां देवानां

साम्राज्यमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ॥३२॥

ऋतुंना। मुरुतामेम्नां जुहोमि स्वाहाँ। अभिभूंतिरहमागंमम्। इन्द्रंसखा स्वायुधंः। आस्वाशांसु दुष्यहंः। इदं वर्चो अग्निनां दत्तमागाँत्। यशो भर्गः सह ओजो बलं च॥३०॥

दीर्घायुत्वायं शतशांरदाय। प्रतिंगृभ्णामि महते वीर्याय। आयुरिस विश्वायुरिस।

स्वायंरिस् सर्वमायंरिसः। सर्वं म् आयंर्भ्यात्। सर्वमायंर्गेषम्। भूर्भृवः सुवंः। अग्निर्धर्मेणान्नादः। मृत्युर्धर्मेणान्नपितः। ब्रह्मं क्षृत्रः स्वाहाँ॥३१॥ प्रजापितः प्रणेताः। बृह्स्पितः पुरएता। यमः पन्थाः। चन्द्रमाः पुनर्सुः स्वाहाँ। अग्निरंन्नादोऽन्नपितः। अन्नाद्यंमस्मिन् यज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। सोमो राजा राजंपितः। राज्यमस्मिन् यज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। वरुणः सम्राद्थ्सम्रादंितः।

मित्रः क्षत्रं क्षत्रपंतिः। क्षत्रमस्मिन् यज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। इन्द्रो बलं बलंपतिः। बलंमस्मिन् यज्ञे यजमानाय ददातु स्वाहाँ। बृह्स्पतिर्ब्रह्म ब्रह्मपितिः। ब्रह्मास्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। स्विता राष्ट्र राष्ट्रपंतिः। राष्ट्रमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। पूषा विशां विद्वेतिः। विशंमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। सरंस्वती पृष्टिः पृष्टिंपत्नी। पृष्टिंमस्मिन् युज्ञे यजंमानाय ददातु स्वाहाँ। त्वष्टां पशूनां मिथुनानार् रूपकृद्रूपपंतिः। रूपेणास्मिन् युज्ञे यजंमानाय पृश्न्देदातु स्वाहाँ॥३३॥

सामो वर्रणो मित्र इन्द्रो बहुस्पितिः सिवता पूषा सरंस्वती त्वष्टा दर्शाणा———[७] स ई पाहि य ऋंजीषी तर्रुत्रः। यः शिप्रंवान्वृष्भो यो मंतीनाम्। यो गौत्रभिद्वंज्रभृद्यो हंरिष्ठाः। स इंन्द्र चित्रा अभि तृन्धि वाजान्। आ ते शुष्मों वृष्भ एतु पृश्चात्। ओत्त्रादंधरागा पुरस्तात। आ विश्वतो अभिसमेत्वर्वाङ्। इन्द्रं

च् स्वाह्। साम्रांज्यम्स्मिन् युज्ञे यर्जमानाय ददातु स्वाह्। विशंम्स्मिन् युज्ञे यर्जमानाय ददातु स्वाहां चृत्वारिं च (अग्निः

द्युम्न सुर्वर्वद्धेह्यस्मे। प्रोष्वंस्मै पुरोर्थम्। इन्द्राय शूषमंर्चत॥३४॥ अभीकं चिदु लोकुकृत्। सुङ्गे सुमथ्सुं वृत्रुहा। अस्माकं बोधि चोदिता। नर्भन्तामन्यकेषाम्। ज्याका अधि धन्वंसु। इन्द्रं वय शुनासीरम्। अस्मिन् यज्ञे हंवामहे। आ वाजैरुपं नो गमत्। इन्द्रांय शुनासीरांय। सुचा जुंहुत नो हविः॥३५॥

जुषतां प्रति मेधिरः। प्र हव्यानिं घृतवंन्त्यस्मै। हर्यश्वाय भरता सजोषाः। इन्द्रर्तुभिर्ब्रह्मणा वावृधानः। शुनासीरी हिवरिदं जुषस्व। वयः सुपूर्णा उपसेद्रिन्द्रम्। प्रियमेधा ऋषंयो नाधंमानाः। अपं ध्वान्तमूणिहि पूर्धि चक्षुः। मुमुग्ध्यंस्मान्निधयेऽव बद्धान्। बृहदिन्द्रांय गायत॥३६॥

मर्रुतो वृत्रहन्तमम्। येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधः। देवं देवाय जागृवि। कामिहैकाः क इमे पंतुङ्गाः। मान्थालाः कुलिपरिमापतन्ति। अनांवृतैनान्प्रधंमन्तु देवाः। सौपंर्णं चक्षुंस्तनुवां विदेय। एवा वन्दस्व वर्रुणं बृहन्तम्। नमस्याधीरममृतंस्य गोपाम्। स नः शर्म त्रिवरूथं वियर्सत्॥३७॥

यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः। नाकं सुपूर्णमुप् यत्पतंन्तम्। हृदा वेनंन्तो

पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

अभ्यचंक्षत त्वा। हिरंण्यपक्षं वर्रणस्य दूतम्। यमस्य योनौं शकुनं भुंर्ण्युम्। शं नों देवीर्भिष्टंये। आपों भवन्तु पीतयैं। शं योर्भि स्रंवन्तु नः। ईशांना वार्याणाम्। क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्॥३८॥

अपो यांचामि भेषजम्। अपसु मे सोमों अब्रवीत्। अन्तर्विश्वांनि भेषजा। अग्निं चं विश्वशंम्भुवम्। आपंश्च विश्वभेषजीः। यद्पसु ते सरस्वति। गोष्वश्वेषु यन्मधुं। तेनं मे वाजिनीवति। मुखंमिङ्क्षि सरस्वति। या सर्रस्वती वैशम्भल्या॥३९॥

तस्यां मे रास्व। तस्यांस्ते भक्षीय। तस्यांस्ते भूयिष्ठभाजों भूयास्म। अहं त्वदंस्मि मदंसि त्वमेतत्। ममांसि योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं ह्व्यान्यंग्ने। पुत्रः पित्रे लोंकुकुञ्जांतवेदः। इहैव सन्तत्र सन्तं त्वाऽग्ने। प्राणेनं वाचा मनंसा बिभर्मि। तिरो मा सन्तमायुर्मा प्रहांसीत्॥४०॥

ज्योतिषा त्वा वैश्वानरेणोपितिष्ठे। अयं ते योनिर्ऋत्वियः। यतो जातो अरोचथाः। तं जानन्नंग्र आरोह। अथां नो वर्धया र्यिम्। या ते अग्ने यिज्ञयां त्नूस्तयेह्यारोहात्माऽऽत्मानम्। अच्छा वसूंनि कृण्वन्नस्मे नर्या पुरूणि। यज्ञो भूत्वा यज्ञमा सींद स्वां योनिम्। जातंवेदो भुव आ जायंमानः सक्षय एहि। उपावंरोह जातवेदः पुनस्त्वम्॥४१॥

देवेभ्यों हव्यं वंह नः प्रजानन्। आयुंः प्रजा रियम्स्मासुं धेहि। अजस्रो

दीदिहि नो दुरोणे। तिमन्द्रं जोहवीमि मघवांनमुग्रम्। स्त्रा दर्धान्मप्रंतिष्कुत्र् शवार्श्सा। मश्हिंष्ठो गीर्भिरा चं यज्ञियोऽववर्तत्। राये नो विश्वां सुपथां कृणोतु वृज्ञी। त्रिकंद्रुकेषु महिषो यवांशिरं तुविशुष्मस्तृपत्। सोममपिबृद्धिष्णुंना सुतं यथा-ऽवंशत्। स ईं ममाद मिह कर्म् कर्तवे महामुरुम्॥४२॥ सैनर्श् सश्चद्देवं देवः स्त्यिमिन्दुर्श् सत्य इन्द्रः। विदद्यतीं स्रमां रुग्णमद्रैः।

सैन र सश्चद्वेवं देवः स्त्यिमिन्दु र स्त्य इन्द्रः। विदय्तीं स्रमां रुग्णमद्रेः। मिंह पार्थः पूर्व्य र सम्द्रियंकः। अग्रं नयथ्सुपद्यक्षराणाम्। अच्छा रवं प्रथमा जानतीगात्। विदद्गव्य र स्रमां दृढमूर्वम्। येनानुकं मानुषी भोजते विद। आ ये विश्वाः स्वपत्यानि चुकुः। कृण्वानासो अमृत्त्वायं गातुम्। त्वं नृभिनृपते देवहृंतौ॥४३॥

भूरीणि वृत्वा हंर्यश्व हश्सि। त्वन्निदंस्युश्चमुंरिम्। धुनिं चास्वांपयो दभीतंये सुहन्तुं। पुवा पांहि प्रत्नथा मन्दंतु त्वा। श्रुधि ब्रह्मं वावृधस्वोत गीर्भिः। आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषः। जुहि शत्रू रिभे गा ईन्द्र तृन्धि। अग्ने बार्धस्व वि मृधी नुदस्व। अपामीवा अप रक्षा रेसि सेध। अस्मार्थ्समुद्राह्वंहतो दिवो नं:॥४४॥

अपां भूमानमुपं नः सृजेह। यज्ञ प्रतिं तिष्ठ सुमतौ सुशेवा आ त्वाँ। वसूंनि पुरुधा विशन्तु। दीर्घमायुर्यजमानाय कृण्वन्। अथामृतेन जरितारमिङ्गा। इन्द्रः शुनावृद्धितंनोति सीरम्। संवथ्सरस्यं प्रतिमाणंमेतत्। अर्कस्य ज्योतिस्तदिदांस् ज्येष्ठम्। संवथ्सर शुनवथ्सीरमेतत्। इन्द्रस्य राधः प्रयंतं पुरु तमना। तदर्करूपं विमिमानमेति। द्वादंशारे प्रतिं तिष्ठतीद्वृषां। अश्वायन्तों गव्यन्तों वाजयंन्तः। हवांमहे त्वोपंगन्तवा उं। आभूषंन्तस्त्वा सुमृतौ नवांयाम्। वयिमंन्द्र त्वा शुन १ हुंवेम॥४५॥

अर्चत हविर्गायत यश्सचर्षणीनां वैशम्भुल्या हांसीत्त्वमुरुं देवहूंतौ नुस्त्मना षद्वं॥-

प्राण उदेहि पुन्रा नो भर युज्ञो रायो वार्त्रहत्याय वसूना स ई पाह्यष्टौ॥८॥ प्राणो रंक्षुत्यर्गृभीता धाराव्रा मुरुतो दीर्घायुत्वाय ज्योतिषा त्वा पश्चंचत्वारि शत्॥४५॥

प्राणः शुन ह्वेम॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके पश्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥षष्ठमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके षष्ठः प्रपाठकः॥

स्वाद्वीं त्वौ स्वादुनौ। तीव्रां तीव्रेणे। अमृतांममृतेन। मधुंमतीं मधुंमता। सृजामि स॰ सोमेन। सोमौऽस्यश्विभ्यौं पच्यस्व। सर्रस्वत्यै पच्यस्व। इन्द्रांय सुत्राम्णें पच्यस्व। परीतो षिञ्चता सुतम्। सोमो य उत्तम॰ हविः॥१॥

द्धन्वा यो नर्यो अपस्वंन्तरा। सुषाव सोममद्रिभिः। पुनातुं ते परिस्रुतम्। सोम् सूर्यस्य दृहिता। वारेण शश्वंता तनां। वायुः पूतः प्वित्रेण। प्राङ्ख्सोमो अतिंद्रुतः। इन्द्रंस्य युज्यः सखां। वायुः पूतः प्वित्रेण। प्रत्यङ्ख्सोमो अतिंद्रुतः॥२॥

इन्द्रंस्य युज्यः सखाँ। ब्रह्मं क्ष्रत्रं पंवते तेजं इन्द्रियम्। सुरंया सोमंः सुत आसुंतो मदांय। शुक्रेणं देव देवताः पिपृग्धि। रसेनात्रं यजंमानाय धेहि। कुविदङ्ग यवंमन्तो यवंश्चित्। यथा दान्त्यंनुपूर्वं वियूयं। इहेहैंषां कृणुत् भोजंनानि। ये ब्रहिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः। उपयामगृंहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वा जुष्टं गृह्णामि॥३॥

सरंस्वत्या इन्द्रांय सुत्राम्णैं। एष ते योनिस्तेजंसे त्वा। वीर्याय त्वा बलांय त्वा। तेजोऽसि तेजो मियं धेहि। वीर्यमिस वीर्यं मियं धेहि। बलंमिस बलं मियं धेहि। नाना हि वां देवहिंत्र सदं कृतम्। मा सर्सृक्षाथां पर्मे व्योमन्। सुरा त्वमिसं शुष्मिणी सोमं एषः। मा मां हिरसीः स्वां योनिमाविशन्॥४॥

उपयामगृहीतोऽस्याश्विनं तेजः। सारुस्वतं वीर्यम्। ऐन्द्रं बलम्। एष ते योनिर्मोदाय त्वा। आनन्दायं त्वा महंसे त्वा। ओजोऽस्योजो मियं धेहि। मन्युरंसि मन्युं मियं धेहि। महोंऽसि महो मियं धेहि। सहोंऽसि सहो मियं धेहि। या व्याघ्रं विषूंचिका। उभौ वृकं च रक्षंति। श्येनं पंतित्रण सिक्हम्। सेमं पात्व सहंसः। सम्पृचंः स्थ सं मां भुद्रेणं पृङ्का विपृचंः स्थ वि मां पाप्मनां पृङ्का। ५॥

ह्विः प्रत्यङ्ख्सोमो अतिद्वतो गृह्णाम्याविशन्विष्चिका पश्चं च॥————[१] सोमो राजाऽमृतर्ं सुतः। ऋजीषेणांजहान्मृत्युम्। ऋतेनं सृत्यमिन्द्रियम्। विपान १ शुक्रमन्धंसः। इन्द्रंस्येन्द्रियम्। इदं पयोऽमृतं मधुं। सोमंमुद्धो व्यंपिबत्। छन्दंसा हु॰्सः शुंचिषत्। ऋतेनं सृत्यमिन्द्रियम्। अद्धः क्षीरं व्यंपिबत्॥६॥

त्रुङ्गांक्षिर्सो धिया। ऋतेनं स्त्यिमिन्द्रियम्। अन्नांत्पिर्स्नुतो रसम्। ब्रह्मणा व्यंपिबत् क्षत्रम्। ऋतेनं स्त्यिमिन्द्रियम्। रेतो मूत्रं विजंहाति। योनिं प्रविशिदिन्द्रियम्। गर्भो ज्रायुणाऽऽवृंतः। उल्बं जहाति जन्मंना। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्॥७॥

वेदेन रूपे व्यंकरोत्। सतासती प्रजापंतिः। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्। सोमेन सोमौ व्यंपिबत्। सृतासृतौ प्रजापंतिः। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्। दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्। सत्यानृते प्रजापंतिः। अश्रंद्धामनृतेऽदंधात्। श्रद्धाः सत्ये प्रजापंतिः। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्। दृष्ट्वा पंरिस्रुतो रसम्। शुक्रेणं शुक्रं व्यंपिबत्। पयः सोमं प्रजापंतिः। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्। दृष्ट्वा पंरिस्रुतो रसम्। शुक्रेणं शुक्रं व्यंपिबत्। पयः सोमं प्रजापंतिः। ऋतेनं सत्यिमिन्द्रियम्। विपानः शुक्रमन्धंसः। इन्द्रंस्येन्द्रियम्। इदं पयोऽमृतं मधुं॥८॥

अद्यः क्षीरं व्यपिवृज्जन्मंनुर्तेनं स्त्यमिन्द्रियः श्रुद्धाः स्त्ये प्रजापितिरृष्टौ चं॥————[२] सुरावन्तं बर्हिषदः सुवीरम्। यज्ञः हिन्वन्ति महिषा नमोभिः। दधानाः सोमं

दिवि देवतांसु। मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः। यस्ते रसः सम्भृत ओषंधीषु। सोमंस्य शुष्मः सुरंया सुतस्यं। तेनं जिन्व यजमानं मदेन। सरंस्वतीमृश्विनाविन्द्रंमृग्निम्। यमृश्विना नमुंचेरासुरादिधं। सरंस्वत्यसंनोदिन्द्रियायं॥९॥

ड्मन्तर शुक्रं मधुमन्तमिन्दुम्। सोम्र राजानिम्ह भक्षयामि। यदत्रं रिप्तर रिसनः सुतस्य। यदिन्द्रो अपिबच्छचीभिः। अहं तदस्य मनसा शिवन। सोम्र राजानिम्ह भक्षयामि। पितृभ्यः स्वधाविभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधाविभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधाविभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधाविभ्यः

अमीमदन्त पितरंः। अतीतृपन्त पितरंः। अमीमृजन्त पितरंः। पितंरः शुन्धंध्वम्। पुनन्तुं मा पितरंः सोम्यासंः। पुनन्तुं मा पितामहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः। पवित्रेण श्वायुंषा। पुनन्तुं मा पितामहाः। पुनन्तु प्रपितामहाः॥११॥ प्वित्रेण श्तायुंषा। विश्वमायुर्व्यश्यवे। अग्न आयूर्षि पवसेऽग्ने पर्वस्व। पर्वमानः सुवर्जनः पुनन्तुं मा देवजनाः। जात्वेदः प्वित्रंवद्यत्ते प्वित्रंमुर्चिषि। उभाभ्यां देव सवितर्वेश्वदेवी पुनती। ये समानाः समनसः। पितरो यमराज्ये। तेषां लोकः स्वधा नमः। यज्ञो देवेषुं कल्पताम्॥१२॥

तेषां लोकः स्वधा नर्मः। युज्ञो देवेषुं कल्पताम्॥१२॥ ये संजाताः समनसः। जीवा जीवेषुं मामकाः। तेषा्ड् श्रीमीये कल्पताम्। अस्मिँ होके शत र समाः। द्वे स्रुती अशणवं पितृणाम्। अहं देवानामुत मर्त्यानाम्। याभ्यांमिदं विश्वमेजुथ्समेति। यदंन्तरा पितरं मातरं च। इद॰ हविः प्रजनंनं मे अस्तु। दशंबीर स्वर्गण इस्वस्तयें। आत्मसनि प्रजासनि। पृशुसन्यभयसनि लोक्सिन। अग्निः प्रजां बहुलां में करोत्। अन्नं पयो रेतों अस्मासुं धत्त। रायस्पोषमिषमूर्जमस्मासुं दीधरथ्स्वाहाँ॥१३॥ ड्डन्ड्रियायं पितरंः शतायुंषा पुनन्तुं मा पितामहाः पुनन्तु प्रपिंतामहाः कल्पताः स्वस्तये पश्चं च॥————[३]

सीसेन तत्रुं मनसा मनीषिणंः। ऊर्णासूत्रेणं कवयों वयन्ति। अश्विनां युज्ञ १

संविता सरंस्वती। इन्द्रंस्य रूपं वर्रणो भिष्ज्यन्। तदंस्य रूपमुमृत्र शचीभिः।

तिस्रोऽदंधुर्देवताः सररगणाः। लोमांनि शष्पैर्बहुधा न तोकांभिः। त्वगंस्य मार्समंभवन्न लाजाः। तदिश्वनां भिषजां रुद्रवंर्तनी। सरंस्वती वयित पेशो अन्तरः॥१४॥
अस्थि मुज्जानं मासंरैः। कारोतरेण दर्धतो गवां त्वचि। सरंस्वती मनंसा पेश्लं

वस्। नासंत्याभ्यां वयित दर्शतं वर्पः। रसं परिस्रुता न रोहितम्। नुग्रहुर्धीर्स्तसंरुन्न वर्म। पर्यसा शुक्रम्मृतं जनित्रम्। सुरंया मूत्रांज्जनयन्ति रेतः। अपामंतिं दुर्मृतिं बार्धमानाः। ऊर्विध्यं वातर् सबुवन्तदारात्॥१५॥

इन्द्रंः सुत्रामा हृदयेन स्त्यम्। पुरोडाशेन सिवता जंजान। यकृत्क्रोमानं वर्रणो भिष्ज्यन्। मतस्रे वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्। आन्नाणि स्थाली मधु पिन्वंमाना। गुदा पात्राणि सुद्धा न धेनुः। श्येनस्य पत्रं न प्रीहा शचीभिः। आसन्दी नाभिरुदरं न माता। कुम्भो विनिष्ठुर्जनिता शचीभिः। यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भो अन्तः॥१६॥ प्राशीर्व्यक्तः शतधार उथ्मः। दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः। मुख् सदस्य शिर् इथ्मदेन। जिह्वा पवित्रंमिश्वना सर सरंस्वती। चप्पन्न पायुर्भिषगंस्य वालः। वस्तिन शेपो हरंसा तर्स्वी। अश्विभ्यां चक्षुंरमृतं ग्रहाँभ्याम्। छागेन् तेजो ह्विषां शृतेनं। पक्ष्मांणि गोधूमैः क्वंलैरुतानिं। पेशो न शुक्लमसितं वसाते॥१७॥

अविर्न मेषो नसि वीर्याय। प्राणस्य पन्थां अमृतो ग्रहाँभ्याम्। सर्रस्वत्युप्वाकैर्व्यानम्। नस्यांनि बर्हिर्बदेरैर्जजान। इन्द्रस्य रूपमृष्भो बलाय। कर्णाँभ्याङ् श्रोत्रंममृतं ग्रहाँभ्याम्। यवा न बर्हिर्श्ववि केसंराणि। कर्कन्धं जज्ञे मधुं सार्घं मुखाँत्। आत्मन्नुपस्थे न वृकंस्य लोमं। मुखे श्मश्रृंणि न व्यांघ्रलोमम्॥१८॥

केशा न शीर्षन् यशंसे श्रियै शिखाँ। सिन्हस्य लोम् त्विषिरिन्द्रियाणि। अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदिश्विनाँ। आत्मानमङ्गैः समधाथ्सरेस्वती। इन्द्रस्य रूप॰ शतमानमार्युः। चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दर्धाना। सरस्वती योन्यां गर्भमन्तः। अश्विभ्यां पत्नी सुकृतं बिभर्ति। अपार रसेन् वर्रणो न साम्ना। इन्द्रई श्रिये जनयंत्रपसु राजां। तेर्जः पशूनार ह्विरिन्द्रियावंत्। परिस्रुता पर्यसा सार्घं मधुं। अश्विभ्यां दुग्धं भिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्यांम्। अमृतः सोम् इन्दुः॥१९॥

अन्तर आराद्नतर्वसाते व्याष्ठलोमः राजां चुत्वारि च॥———[४] मित्रों ऽसि वर्रुणो ऽसि। समृहं विश्वेद्वैः। क्षुत्रस्य नाभिरसि। क्षुत्रस्य योनिरसि।

स्योनामा सींद। सुषदामा सींद। मा त्वां हिश्सीत्। मा मां हिश्सीत्। निषंसाद धृतव्रंतो वर्रुणः। पुस्त्यांस्वा॥२०॥

साम्राज्याय सुक्रतुंः। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्वे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्मेषंज्येन। तेजंसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिश्चामि। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्वे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरंस्वत्यै भैषंज्येन॥२१॥

वीर्यायात्राद्यांयाभिषिश्चामि। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्वे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्तौभ्याम्। इन्द्रंस्येन्द्रियेणं। श्रियै यशंसे बलायाभिषिश्चामि। कोऽसि

कत्मों ऽसि। कस्मैं त्वा कार्य त्वा। सुश्लोकाँ(४) सुमंङ्गलाँ(४) सत्यंराजा(३)न्। शिरों मे श्रीः॥२२॥

यशो मुखम्ँ। त्विषिः केशाँश्च श्मश्रूणि। राजां मे प्राणों ऽमृतम्ँ। सम्राद्वर्क्षुः। विराद्धोत्रम्ँ। जिह्वा में भुद्रम्। वाङ्गहंः। मनों मृन्युः। स्वराङ्गामंः। मोदाः प्रमोदा अङ्गलीरङ्गांनि॥२३॥

चित्तं मे सहं। बाह् मे बलंमिन्द्रियम्। हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो

ममं। पृष्टीमें राष्ट्रमुदर्मश्सौं। ग्रीवाश्च श्रोण्यौं। ऊरू अंरुबी जानंनी। विशो मेऽङ्गांनि सर्वतः। नाभिर्मे चित्तं विज्ञानम्। पायुर्मेऽपंचितिर्भसत्॥२४॥ आन्न-दन्न-दावाण्डौ में। भगः सौभांग्यं पसंः। जङ्घांभ्यां प्रद्यां धर्मोंऽस्मि। विशि राजा प्रतिष्ठितः। प्रतिं क्षत्रे प्रतिं तिष्ठामि राष्ट्रे। प्रत्यश्चेषु प्रतिं तिष्ठामि गोषुं। प्रत्यङ्गेषु प्रतिं तिष्ठाम्यात्मन्। प्रतिं प्राणेषु प्रतिं तिष्ठामि पृष्टे। प्रति द्यावांपृथिव्योः।

प्रतिं तिष्ठामि यज्ञे॥२५॥

त्र्या देवा एकांदश। त्र्यस्त्रिष्शाः सुराधंसः। बृह्स्पतिंपुरोहिताः। देवस्यं सिवृतुः स्वे। देवा देवैरंवन्तु मा। प्रथमा द्वितीयैः। द्वितीयौस्तृतीयैः। तृतीयौः सृत्येनं। सृत्यं यज्ञेनं। यज्ञो यजुंभिः॥२६॥

यजूर्षेष् सामंभिः। सामान्युग्भिः। ऋचो याज्यांभिः। याज्यां वषद्कारैः। वृषद्कारा आहुंतिभिः। आहुंतयो मे कामान्थ्समंधयन्तु। भूः स्वाहाँ। लोमांनि प्रयंतिर्ममं। त्वङ्ग आनंतिरागंतिः। मार्सं म उपनितिः। वस्वस्थिं। मञ्जा म आनंतिः॥२७॥

पुस्त्यांस्वा सरंस्वत्ये भेषंज्येन श्रीरङ्गांनि भूसद्यज्ञे युज्ञो युज्ञां युज्ञ्ञां युज्ञां युज्ञ्ञ्ञ

सूर्यों मा तस्मादेनंसः। विश्वांन्मुश्चत्व १ हंसः। यद्गामे यदरंण्ये। यथ्सभायां

यदिन्द्रिये। यच्छूद्रे यद्यें। एनंश्चकुमा व्यम्। यदेकस्याधि धर्मणि। तस्यावयजनमसि। यदापो अघ्निया वरुणेति शपामहे। ततो वरुण नो मुञ्ज॥२९॥

अवंभृथ निचङ्कुण निचेरुरंसि निचङ्कुण। अवं देवैर्देवकृत्मेनोंऽयाट्। अव् मर्त्यूर्मर्त्यंकृतम्। उरोरा नों देव रिषस्पांहि। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु। दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः। योंऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वयं द्विष्मः। द्रुपदादिवेन्मुंमुचानः। स्वित्रः स्नात्वी मलांदिव॥३०॥

पूतं प्वित्रेणेवाज्यम्। आपः शुन्धन्तु मैनेसः। उद्घयं तमंस्परि। पश्यन्तो ज्योतिरुत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यम्। अगन्म ज्योतिरुत्तमम्। प्रतियुतो वर्रणस्य पार्शः। प्रत्येस्तो वर्रणस्य पार्शः। एधौऽस्येधिषीमहि। स्मिदंसि॥३१॥

तेजोंऽसि तेजो मियं धेहि। अपो अन्वंचारिषम्। रसेन् समंसृक्ष्महि। पयंस्वार अग्रु आगंमम्। तं मा सरसृंज वर्चसा। प्रजयां च धनेन च। समावंवर्ति पृथिवी। समुषाः। समु सूर्यः। समु विश्वमिदं जगंत्। वैश्वानुरज्योतिर्भूयासम्। विभुं काम्ं व्यंश्जवै। भूः स्वाहाँ॥३२॥

स्वप्र एनार्श्स चकृमा वयं मुंश्च मलांदिव समिदंसि जगुत्रीणिं च॥——————[६]

होतां यक्षथ्समिधेन्द्रंमिडस्पदे। नाभां पृथिव्या अधि। दिवो वर्ष्मन्थ्समिध्यते।

ओजिंष्ठश्चर्षणी सहान्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्ष्ततनूनपांतम्। कुतिभिर्जेतांरुमपंराजितम्। इन्द्रं देव॰ सुंवर्विदम्। पृथिभिर्मधुंमत्तमैः। नराश॰सेन तेजंसा॥३३॥

देवो देवैः सवींर्यः। वर्ज्जहस्तः पुरन्दरः। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतांयक्षद्वर्हिषीन्द्रंि वृष्मं नर्यापसम्। वसुंभीरुद्रैरांदित्यैः। स्युग्भिंर्बुर्हिरासंदत्॥३४॥

वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्विडांभिरिन्द्रंमीडितम्। आजुह्वांनुममंर्त्यम्।

वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षदोजो न वीर्यम्। सहो द्वार् इन्द्रंमवर्धयन्। सुप्रायणा विश्रंयन्तामृतावृधंः। द्वार् इन्द्रांय मीदुषें। वियन्त्वाज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षदुषे इन्द्रंस्य धेनू। सुदुघं मातरौं मही। सवातरौ न तेजंसी। वथ्समिन्द्रंमवर्धताम्॥३५॥

वीतामाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्देव्या होतांरा। भिषजा सर्खाया। हिविषेन्द्रं भिषज्यतः। कुवी देवौ प्रचेतसौ। इन्द्राय धत्त इन्द्रियम्। वीतामाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षत्तिस्रो देवीः। त्रयंस्त्रिधातंवोपसंः। इडा सरंस्वती भारती॥३६॥

म्हीन्द्रंपत्नीर्ह्विष्मंतीः। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्त्त्वष्टांर्मिन्द्रं देवम्। भिषज्ञं सुयजं घृत्तिश्रयम्। पुरुरूपं सुरेतंसं मघोनिम्। इन्द्रांय त्वष्टा दर्धदिन्द्रियाणि। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्द्रनस्पतिम्। शृमितारं शृतक्रेतुम्। धियो जोष्टारंमिन्द्रियम्॥३७॥

मध्वां सम्अन्पथिभिः सुगेभिः। स्वदांति ह्व्यं मधुंना घृतेनं। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षदिन्द्रङ् स्वाहाऽऽज्यंस्य। स्वाहा मेदंसः। स्वाहां स्तोकानांम्। स्वाहा स्वाहांकृतीनाम्। स्वाहां ह्व्यसूँक्तीनाम्। स्वाहां देवा॰ आज्यपान्। स्वाहेन्द्र १ होत्राञ्जुंषाणाः। इन्द्र आज्यंस्य वियन्तु। होतर्यजं॥३८॥

तेजंसाऽऽसददवर्धतां भारतीन्द्रियं जुंषाणा द्वे चं (समिधेन्द्रन्तनूनपांतमिडांभिर्बुर्हिष्योजं उषे दैव्यां तिस्रस्त्वष्टांरं वनस्पितिमिन्द्रम्॥

स्मिधेन्द्रं चतुर्वेत्वेकों वियन्तु द्विर्वीतामेकों वियन्तु द्विर्वेत्वेकों वियन्तु होत्यर्यजं॥)॥—————[७]

सिंद्धं इन्द्रं उषसामनीके। पुरोरुचां पूर्वकृद्वांवृधानः। त्रिभिर्देवैस्त्रिष्शता वर्ज्ञंबाहुः। ज्ञ्चानं वृत्रं वि दुरों ववार। नराशर्सः प्रतिशूरो मिमानः। तनूनपात्प्रतिं यज्ञस्य धामं। गोभिर्वपावान्मधुंना सम्ञन्। हिरंण्यैश्चन्द्री यंज्ञति प्रचेताः। ईडितो देवैर्हिरवार अभिष्टिः। आजुह्वांनो हिवषा शर्धमानः॥३९॥

पुरन्दरो मघवान् वर्ज्ञबाहुः। आयांतु यज्ञमुपंनो जुषाणः। जुषाणो बर्हिर्हिर्शिवान्न इन्द्रेः। प्राचीन स्मीदत्प्रदिशां पृथिव्याः। उरुव्यचाः प्रथमान स्योनम्। आदित्यैर्क्तं वसंभिः सजोषाः। इन्द्रं दुरंः कव्ष्यो धावमानाः। वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः। द्वारो देवीर्भितो विश्रयन्ताम्। सुवीरां वीरं प्रथमाना महोभिः॥४०॥

उषासानक्तां बृह्ती बृहन्तम्। पर्यस्वती सुदुघे शूरिमन्द्रम्। पेशंस्वती तन्तुंना संव्ययंन्ती। देवानां देवं यंजतः सुरुक्ये। दैव्या मिमाना मनसा पुरुत्रा। होतांराविन्द्रं प्रथमा सुवाचौ। मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दर्धाना। प्राचीनं ज्योतिर्ह्विषां वृधातः। तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमानाः। इन्द्रं जुषाणा वृषंणं न पत्नीः॥४१॥

अच्छिन्नं तन्तुं पर्यसा सरेस्वती। इडां देवी भारती विश्वतूँर्तिः। त्वष्टा दधदिन्द्रांय शुष्मम्। अपाकोचिंष्टुर्यशसें पुरूणिं। वृषा यजन्वृषंणं भूरिरेताः। मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्। वनस्पतिरवंसृष्टो न पाशैंः। त्मन्यां समञ्जर्छंमिता न देवः। इन्द्रंस्य हब्यैर्जुठरं पृणानः। स्वदांति हब्यं मधुंना घृतेनं। स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रं। वृषायमांणो वृष्भस्तुंराषाट्। घृतुप्रुषा मधुंना ह्व्यमुन्दन्। मूर्धन् युज्ञस्यं जुषता ७ स्वाहाँ ॥ ४२ ॥

शर्धमानो महोभिः पत्नीर्घृतेनं चुत्वारिं च॥=

आचंर्षणिप्रा विवेषु यन्मां। त॰ सुधीचींः। सुत्यमित्तन्न त्वावा ५ अन्यो अस्ति।

इन्द्रं देवो न मर्त्यो ज्यायान्। अह्न्नहिं पिर्शयांनुमर्णः। अवांसृजोऽपो अच्छां समुद्रम्। प्रसंसाहिषे पुरुहूत् शत्रून्। ज्येष्ठंस्ते शुष्मं इह रातिरंस्तु। इन्द्रा भंर दक्षिणेना वसूंनि। पितः सिन्धूंनामिस रेवतींनाम्। स शेवृंधमिधं धाद्युम्नम्समे। मिहं क्षत्रं जनाषािडंन्द्र तव्यम्। रक्षां च नो मुघोनः पाहि सूरीन्। राये च नः स्वपत्या इषे धाः॥४३॥

्वतीनां च्लारि चादिवं बर्हिरिन्द्र ए सुदेवं देवैः। वीरवंथ्स्तीणं वेद्यांमवर्धयत्। वस्तौर्वृतं प्राक्तौर्भृतम्। राया बर्हिष्मतोऽत्यंगात्। वस्तुवने वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवीर्द्वार् इन्द्र ए सङ्घाते। विङ्वीर्यामन्नवर्धयन्। आ वथ्सेन् तरुणेन कुमारेणं चमीविता अपार्वाणम्। रेणुकंकाटं नुदन्ताम्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजं॥४४॥

देवी उषासानक्तां। इन्द्रं युज्ञे प्रयत्यंह्वेताम्। दैवीविंशः प्रायांसिष्टाम्। सुप्रीते सुधिते अभूताम्। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजी। देवी जोष्ट्री वसुंधिती।

गृहान्॥४७॥

देविमन्द्रंमवर्धताम्। अयाँव्यन्याघा द्वेषा १सि। आन्यावाँक्षीद्वसु वार्याणि। यजमानाय शिक्षिते॥४५॥

वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवी ऊर्जाहुंती दुघे सुदुघें। पयसेन्द्रंमवर्धताम्।

इषमूर्जमन्याऽवाँक्षीत्। सग्धि । सपीतिमन्या। नवेन पूर्वं दर्यमाने। पुराणेन नवम्।

अधांतामूर्जमूर्जाहुंती वसु वार्याणि। यजमानाय शिक्षिते। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं॥४६॥
देवा दैव्या होतांरा। देविमन्द्रंमवर्धताम्। हृताघंश र सावाभाँष्टां वसुवार्याणि। यजमानाय शिक्षितौ। वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवीस्त्स्रिस्त्स्रो देवीः। पितिमिन्द्रंमवर्धयन्। अस्पृक्षद्भारंती दिवम्ं। रुद्रैर्यज्ञ र सरंस्वती। इडा वसुंमती

वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजं। देव इन्द्रो नराशरसंः। त्रिव्रूथस्निवन्धुरः। देविमन्द्रमवर्धयत्। शतेने शितिपृष्ठानामाहितः। सहस्रेण प्रवर्तते। मित्रावरुणेदस्य

होत्रमर्ह्तः। बृह्स्पतिः स्तोत्रम्। अश्विनाऽऽध्वंर्यवम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं॥४८॥

देव इन्द्रो वनस्पतिः। हिर्रण्यपर्णो मधुंशाखः सुपिप्पृतः। देविमन्द्रमवर्धयत्। दिव्मग्रेणाप्रात्। आऽन्तिरक्षं पृथिवीमंद्दश्तित्। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवं बर्हिर्वारितीनाम्। देविमन्द्रमवर्धयत्। स्वासस्थिमन्द्रेणासंन्नम्। अन्या बर्ही इष्यभ्यंभूत्। वसुवनं वसुधेयस्यं वेतु यजं। देवो अग्निः स्विष्टकृत्। देविमन्द्रमवर्धयत्। स्विष्टं कुर्विन्थ्स्वंष्टकृत्। स्विष्टम्द्य करोतु नः। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं॥४९॥

वियन्तु यर्ज शिक्षिते शिक्षिते वंसुवने वसुधेयंस्य वीतां यर्ज गृहान् वंतु यर्जाभूथ्यद्वं (देवं ब्र्हिर्देवीद्वर्शि देवी उषासानक्तां देवी जोष्ट्री देवी ऊर्जाहृती देवा दैव्या होतारा शिक्षितौ देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीर्देव इन्द्रो नराशरसो देव इन्द्रो वनस्पतिर्देवं ब्र्हिर्वारितीनान्देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवम्। वृतु वियन्तु चृतुर्वीतामेको वियन्तु चृतुर्वैत्ववर्धयदवर्धयुत्रिरंवर्धतामेकोऽ वर्धयर्श्चतुरंवर्धयत्। वस्तोरा वृथ्सेन् दैवीरयावीष हृताऽस्पृक्षच्छुतेन् दिव स्वासस्थ स्विष्ट शिक्षिते शिक्षिते शिक्षिते॥)॥———[१०]

होतां यक्षथ्समिधाऽग्निमिडस्पदे। अश्विनेन्द्र सरंस्वतीम्। अजो धूम्रो न

गोधूमैः क्रंलैभेषुजम्। मधु शष्पैर्न तेजं इन्द्रियम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षत्तनूनपाथ्सरंस्वती। अविर्मेषो न भेषुजम्।

प्था मध्रमताभंरन्। अश्विनेन्द्रांय वीर्यम्॥५०॥ बदंरैरुप्वाकांभिर्भेषुजं तोकांभिः। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मध्रं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्यं नराशरसं न नुग्रहुम्। पतिर सुराये भेषुजम्। मेषः सरस्वती भिषक्। रथो न चन्द्र्यंश्विनौर्वपा इन्द्रंस्य वीर्यम्। बदंरैरुपवाकांभिर्भेषजं तोकांभिः। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मध्रं। वियन्त्वाज्यंस्य

होतां यक्षिदिडेडित आजुह्वांनः सरंस्वतीम्। इन्द्रं बलेन वर्धयन्। ऋष्भेण् गवेन्द्रियम्। अश्विनेन्द्रांय वीर्यम्। यवैंः कर्कन्धुंभिः। मधुं लाजैर्न मासरम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षद्वर्हिः

सुष्टरीमोर्णमदाः। भिषङ्गासंत्या॥५२॥

होतर्यजं॥५१॥

भिषजाऽश्विनाऽश्वा शिशुंमती। भिषग्धेनुः सरंस्वती। भिषग्दुह इन्द्रांय भेषजम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्यर्यजं। होतां यक्षद्दुरो दिशः। क्वष्यो न व्यचंस्वतीः। अश्विभ्यां न दुरो दिशः। इन्द्रो न रोदंसी दुधै। दुहे कामान्थ्यरंस्वती॥५३॥ अश्विनन्द्रांय भेषजम्। शुक्रं न ज्योतिंरिन्द्रियम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं।

समं जाते सरंस्वत्या। त्विषिमिन्द्रे न भेषजम्। श्येनो न रजंसा हृदा। पयः सोमंः पिर्स्रुतां घृतं मधुं॥५४॥
वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यंजं। होतां यक्षद्दैव्या होतांरा भिषजाऽश्विनां। इन्द्रं न जागृंवी दिवा नक्तं न भेषजेः। शूष्ट् सरंस्वती भिषक्। सीसेन दह इन्द्रियम्।

वियन्त्वाज्यंस्य होतर्यजं। होतां यक्षथ्सुपेशंसोषे नक्तं दिवां। अश्विनां सञ्जानाने।

वियन्त्वाज्यस्य हित्येज। होता यक्षद्व्या होतारा भिषजाऽश्विना। इन्द्र न जागृंवी दिवा नक्तं न भेषुजैः। शूष्ट्र सरंस्वती भिषक्। सीसेन दुह इन्द्रियम्। पयः सोमेः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षत्तिस्रो देवीर्न भेषुजम्। त्रयंस्त्रिधातंवोऽपसंः। रूपमिन्द्रें हिर्ण्ययम्॥५५॥ अश्विनेडा न भारती। वाचा सरस्वती। मह इन्द्रांय दधुरिन्द्रियम्। पयः सोमंः

परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्त्त्वष्टांरमिन्द्रंमिश्वनां। भिषजं न सरंस्वतीम्। ओजो न जूतिरिन्द्रियम्। वृको न रंभसो भिषक्। यशः स्रंया भेषजम्॥५६॥ श्रिया न मासंरम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षद्वनस्पतिम्। शृमितार श्रातकंतुम्। भीमं न मन्यः राजांनं व्याघं नमंसाऽश्विना भामम्। सरंस्वती भिषक्। इन्द्रांय दुह इन्द्रियम्। पयः सोमः परिस्रुतां घृतं मधुं। वियन्त्वाज्यंस्य होतर्यजं॥५७॥

होतां यक्षद्गिः स्वाहाऽऽज्यंस्य स्तोकानांम्। स्वाहा मेदंसां पृथंक्। स्वाहा छागंमिश्वभ्यांम्। स्वाहां मेषः सरंस्वत्यै। स्वाहंर्षभिमन्द्रांय सिःश्हाय सहंसेन्द्रियम्। स्वाहाऽग्निं न भेषजम्। स्वाहा सोमंमिन्द्रियम्। स्वाहेन्द्रः सुत्रामांणः सिवतारं वर्रुणं भिषजां पितम्। स्वाहा वनस्पितं प्रियं पाथो न भेषजम्। स्वाहां देवाः आंज्यपान्॥५८॥

स्वाह् । प्राञ्चं प्

वीर्यं वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यंज् नासंत्या सरंस्वती मधुं हिर्ण्ययं भेषुजं वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यंजांज्यपान्मृताः पश्चं च (स्मिधाऽग्निश् षट्। तनूनपांथ्स्प्ता नराशश्सम्पृषिः। इडेडितो यवैर्ष्टो। ब्रुहिः स्प्ता दुरोऽश्विना नवं। सुपेश्सर्षिः। दैव्या होतांरा सीसेन रसंः। तिस्रस्त्वष्टांरम्ष्टावंष्टो। वन्स्पतिमृषिः। अग्नित्रयोदश। अश्विना द्वादंश त्रयोदश। स्मिधाऽग्निं वदेर्र्वदेर्र्यवैर्श्विना त्विषिमृश्विना न भेषुजश् रूपमृश्विनां भीमं भामम्॥॥
[११]

सिमिद्धो अग्निरंश्विना। तृप्तो घुर्मो विराद्थ्युतः। दुहे धेनुः सरंस्वती। सोमर्थ शुक्रमिहेन्द्रियम्। तुनूपा भिषजां सुते। अश्विनोभा सरंस्वती। मध्वा रजार्थसीन्द्रियम्। इन्द्रांय पृथिभिर्वहान्। इन्द्रायेन्दुर्थं सरंस्वती। नराश्यस्येन नग्नहुं:॥६०॥

अधाताम्श्विना मधुं। भेषजं भिषजां सुते। आजुह्वांना सरंस्वती। इन्द्रांयेन्द्रियाणि वीर्यम्। इडांभिरश्विनाविषम्। समूर्ज् सर र्यिं देधुः। अश्विना नमुंचेः सुतम्। सोमर्थ शुक्रं पंरिस्नुतां। सरंस्वती तमाभरत्। बर्हिषेन्द्रांय पातंवे॥६१॥

कुवृष्यों न व्यर्चस्वतीः। अश्विभ्यां न दुरो दिशः। इन्द्रो न रोदंसी दुघैं। दुहे कामान्थ्सरंस्वती। उषासा नक्तंमश्विना। दिवेन्द्रई सायमिन्द्रियैः। सञ्जानाने सुपेशंसा। समं जाते सरंस्वत्या। पातं नो अश्विना दिवाँ। पाहि नक्तई सरस्वति॥६२॥

दैव्यां होतारा भिषजा। पातिमन्द्र सर्चां सुते। तिस्रस्रेधा सरंस्वती। अश्विना भारतीडाँ। तीव्रं परिस्रुता सोमम्। इन्द्रांय सुषवुर्मदम्। अश्विना भेषजं मध्ं। भेषजं नः सरस्वती। इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियम्। रूप र रूपमधः सुते। ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः। शृश्मानः परिस्रुतां। कीलालमिश्वभ्यां मधुं। दुहे धेनुः सरस्वती। गोभिन्नं सोममिश्वना। मासरेण परिष्कृतां। समधाता स्वरंखत्या। स्वाहेन्द्रे सुतं मध्॥६३॥

मधुं॥६३॥ नग्रहः पातंवे सरस्वत्यधुः सुतैंऽष्टौ चं॥—————————[१२]

अश्विनां ह्विरिंन्द्रियम्। नमुंचेर्धिया सरंस्वती। आ शुक्रमांसुराद्वसु। मघिमन्द्रांय जिभ्रेरे। यमृश्विना सरंस्वती। ह्विषेन्द्रमवंर्धयन्। स बिंभेद वृतं मघम्। नमुंचावासुरे सर्चां। तिमन्द्रं पशवः सर्चां। अश्विनोभा सरंस्वती॥६४॥

दधांना अभ्यंनूषत। ह्विषां यज्ञमिन्द्रियम्। य इन्द्रं इन्द्रियं द्धुः। स्विता वरुणो भगः। स सुत्रामां ह्विष्पंतिः। यजमानाय सश्चत। स्विता वरुणोऽदध्त्। यजमानाय दाशुषे। आदंत्त नमुंचेर्वसुं। सुत्रामा बर्लमिन्द्रियम्॥६५॥

वरुंणः क्ष्रत्रमिन्द्रियम्। भगेन सिवता श्रियम्। सुत्रामा यशंसा बलम्। दर्धाना यज्ञमांशत। अश्विना गोभिरिन्द्रियम्। अश्वेभिर्वीर्यं बलम्। हिविषेन्द्रक् सरस्वती। यजंमानमवर्धयन्। ता नासंत्या सुपेशंसा। हिरंण्यवर्तनी नरौं। सरंस्वती ह्विष्मंती। इन्द्रं कर्मसु नोऽवत। ता भिषजां सुकर्मणा। सा सुदुघा सरंस्वती। स वृंत्रहा

शतर्ऋतुः। इन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥६६॥

उभा सरंस्वती बलंमिन्द्रियत्रय पद्गं ——[१३] देवं बुर्हिः सरंस्वती। सुदेविमन्द्रं अश्विनां। तेजो न चक्षुंर्क्ष्योः। बुर्हिषां दधुरिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं। देवीर्द्वारं अश्विनां। भिषजेन्द्रे

दधारान्द्रयम्। वसुवन वसुधयस्य ।वयन्तु यजा द्वाद्वारा आश्वना। ।मूषजन्द्र सर्रस्वती। प्राणं न वीर्यन्नसि। द्वारों दधुरिन्द्रियम्। वसुवने वसुधेर्यस्य वियन्तु यजं॥६७॥

देवी उषासांविश्वनां। भिषजेन्द्रे सर्रस्वती। बलुं न वार्चमास्यें। उषाभ्यां दधिरिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं। देवी जोष्ट्री अश्विनां। सुत्रामेन्द्रे सर्रस्वती। श्रोत्रं न कर्णयोर्यशंः। जोष्ट्रीभ्यां दधिरिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं॥६८॥

देवी ऊर्जाहुंती दुघं सुदुघं। पयसेन्द्र सरंस्वत्यश्विनां भिषजांवत। शुक्रं न ज्योतिः स्तनंयोराहुंती धत्त इन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यर्ज। देवा देवानां भिषजां। होतांराविन्द्रंमश्विनां। वषद्वारेः सरंस्वती। त्विष्ं न हृदंये मृतिम्। होतृंभ्यां दधुरिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यर्ज॥६९॥

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः। सर्रस्वत्यश्विना भारतीडाँ। शूषन्न मध्ये नाभ्याँम्। इन्द्रांय दधिरिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं। देव इन्द्रो नराशर्भः। त्रिवरूथः सर्रस्वत्याऽश्विभ्यांमीयते रथः। रेतो न रूपम्मृतं जनित्रम्ं। इन्द्रांय त्वष्टा दधिदिन्द्रियाणि। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं॥७०॥

देव इन्द्रो वन्स्पतिः। हिरंण्यपणी अश्विभ्याम्। सरंस्वत्याः सुपिप्पृतः। इन्द्रांय पच्यते मध्री ओजो न जूतिमृष्भो न भामम्। वन्स्पतिनी दर्धदिन्द्रियाणि। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजे। देवं बर्हिवीरितीनाम्। अध्वरे स्तीर्णमृश्विभ्याम्। ऊर्णमृदाः सरंस्वत्याः॥७१॥

स्योनिमंन्द्र ते सदंः। ईशायैं मृन्यु र राजांनं ब्र्हिषां दध्रिन्द्रियम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजां। देवो अग्निः स्विष्टकृत्। देवान् यक्षद्यथायथम्। होतांराविन्द्रमिश्वनां। वाचा वाच र सरंस्वतीम्। अग्नि र सोम र स्विष्टकृत्। स्विष्ट इन्द्रंः सुत्रामां सिवता वरुणो भिषक्। इष्टो देवो वनस्पतिः। स्विष्टा देवा आजयपाः। इष्टो अग्निरिग्निनां। होतां होत्रे स्विष्टकृत्। यशो न दर्धदिन्द्रियम्। ऊर्ज्मपंचिति र स्वधाम्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजां॥७२॥

द्वारों दध्रिरिन्द्रियं वंसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज् जोष्ट्रींभ्यां दध्रिरिन्द्रियं वंसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज् होर्तृभ्यां दध्रिरिन्द्रियं वंसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज् होर्तृभ्यां दध्रिरिन्द्रियं वंसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यज् सरंस्वत्या वनस्पितः षद्वं (देवं बर्हिर्देवीद्वर्रिरों देवी उपासांविश्वनां देवी जोष्ट्रीं देवी ऊर्जाहंती देवा देवानां भिषजां वषद्भारेदेवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीदेव इन्द्रो नराश्यः सो देव इन्द्रो वनस्पितिदेवं बर्हिवारितीनान्देवो अग्निः स्विष्टकृद्देवान्। समिधाऽग्निं देवं बर्हिः सरंस्वत्यश्विना सर्वं वियन्तु। द्वारंस्तिस्रः सर्ववियन्तु। अज इन्द्रमोजोऽग्निं परः सरंस्वतीम्। नक्तं पूर्वः सरंस्वति। अन्यत्र सरंस्वती। भिषवपूर्वं दह इन्द्रियम्। अन्यत्रं दध्रिन्द्रियम्। सौत्रामण्याः संतासुती। अञ्चन्त्ययं यजंमानः॥)॥—————[१४]

अग्निम्द्य होतांरमवृणीत। अयर सुंतासुती यजमानः। पर्चन्यक्तीः।

पर्चन्पुरोडाशान्। गृह्णन्ग्रहान्। बध्नन्नश्विभ्यां छागः सरम्बत्या इन्द्राय। बध्नन्थ्सरंस्वत्यै मेषमिन्द्रांयाश्विभ्यांम्। बध्नन्निन्द्रांयर्षभमश्विभ्याः सरंस्वत्यै। सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवत्। अश्विभ्यां छागेन सरस्वत्या इन्द्राय॥७३॥ सरंस्वत्यै मेषेणेन्द्रांयाश्विभ्यांम्। इन्द्रांयर्षभेणाश्विभ्याः सरंस्वत्यै। अक्षु स्तान्में दुस्तः प्रतिपचताग्रंभीषुः। अवीवृधन्त ग्रहैः। अपातामिश्वना सरंस्वतीन्द्रंः सुत्रामां वृत्रहा। सोमान्थ्सुराम्णंः। उपो उक्थामुदाः श्रौद्विमदां अदन्। अवीवृधन्ताङ्ग्षैः। त्वामृद्यर्षं आर्षेयर्षीणान्नपादवृणीत। अयर सुंतासुती यजमानः। बहुभ्य आ सङ्गतेभ्यः। एष में देवेषु वसु वार्या येक्ष्यत् इतिं। ता या देवा देवदानान्यदुः। तान्यंस्मा आ च शास्वं। आ च गुरस्व। इषितश्चं होतरसिं भद्रवाच्याय प्रेषितो मानुषः। सूक्तवाकायं सूक्ता ब्रूहि॥७४॥

इन्द्रांय यजेमानः सप्त चे॥-उशन्तंस्त्वा हवामह् आ नों अग्ने सुकेतुनां। त्वर सोंम मुहे भगं त्वर

सोम प्रचिंकितो मनीषा। त्वया हि नेः पितरंः सोम पूर्वे त्व र सोम पितृभिंः संविदानः। बर्हिषदः पितर् आऽहं पितृन्। उपंहृताः पितरोऽग्निष्वात्ताः पितरः। अग्निष्वात्तानृंतुमतो हवामहे। नराशरसे सोमपीथं य आशुः। ते नो अर्वन्तः सुहवां भवन्तु। शं नो भवन्तु द्विपदे शं चतुंष्पदे। ये अग्निष्वात्ता येऽनंग्निष्वात्ताः॥७५॥ अ॰होमुर्चः पितरंः सोम्यासंः। परेऽवंरेऽमृतांसो भवंन्तः। अधि ब्रुवन्तु ते अंवन्त्वरमान्। वान्यांयै दुग्धे जुषमांणाः कर्म्भम्। उदीरांणा अवंरे परे च। अग्निष्वात्ता ऋतुभिः संविदानाः। इन्द्रंवन्तो हविरिदं जुंषन्ताम्। यदंग्ने कव्यवाहन त्वमंग्न ईडितो जांतवेदः। मातंली कव्यैः। ये तांतृपुर्देवत्रा जेहंमानाः। होत्रावृधः स्तोमंतष्टासो अर्कैः। आऽग्नें याहि सुविदत्रेंभिर्वाङ्। सत्यैः कुव्यैः पितृभिर्घर्मसिद्धः। हव्यवाहंमुजरं पुरुप्रियम्। अग्निं घृतेनं हिवषां सप्यन्। उपांसदं कव्यवाहं पितृणाम्। स नः प्रजां वीरवंती १ समृण्वतु॥ ७६॥

अनंग्निष्वात्ता जेहंमानाः सप्त चं॥_____

होतां यक्षिदिडस्पदे। स्मिधानं महद्यशंः। सुषंमिद्धं वरेण्यम्। अग्निमिन्द्रं वयोधसम्। गायत्रीं छन्दं इन्द्रियम्। त्र्यविं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यस्य होत्र्यजे। होतां यक्षुच्छुचिंव्रतम्। तनूनपांतमुद्भिदम्। यं गर्भमिदितिर्द्धे॥७७॥

शुचिमिन्द्रं वयोधसम्। उष्णिहं छन्दं इन्द्रियम्। दित्यवाहं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षदीडेन्यम्। ईडितं वृत्रहन्तंमम्। इडांभिरीड्यक् सहं। सोम्मिन्द्रं वयोधसम्। अनुष्टुभं छन्दं इन्द्रियम्। त्रिवृथ्सं गां वयो दर्धत्॥७८॥

वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षथ्सुबर्हिषदम्ं। पूष्णवन्त्ममंत्र्यम्। सीदंनतं बर्हिषं प्रिये। अमृतेन्द्रं वयोधसम्। बृह्तीं छन्दं इन्द्रियम्। पश्चांविं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतांयक्षुद्धचंस्वतीः। सुप्रायणा ऋतावृधंः॥७९॥

द्वारों देवीर्हिर्ण्ययीः। ब्रह्माण् इन्द्रं वयोधसम्। पृङ्किः छन्दं इहेन्द्रियम्। तुर्यवाहं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षथ्सुपेशंसे। सुशिल्पे बृह्ती उभे। नक्तोषासा न दंर्शते। विश्वमिन्द्रं वयोधसम्। त्रिष्टुभं छन्दं इन्द्रियम्॥८०॥

पृष्ठवाहुं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्ष्त्रभ्वंतसा। देवानांमुत्तमं यशः। होतांग् दैव्यां क्वी। स्युजेन्द्रं वयोधसम्। जगंतीं छन्दं इहेन्द्रियम्। अनुङ्वाहुं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्यंजं। होतां यक्षत्येशंस्वतीः॥८१॥

तिस्रो देवीर्हिर्ण्ययीः। भारतीर्बृह्तीर्म्हीः। पितृमिन्द्रं वयोधसम्। विराजं छन्दं इहेन्द्रियम्। धेनुं गां न वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यस्य होत्र्यजं। होतां यक्षथ्सुरेतंसम्। त्वष्टांरं पृष्टिवर्धनम्। रूपाणि विभ्रंतं पृथंक्। पृष्टिमिन्द्रं वयोधसम्॥८२॥

द्विपदं छन्दं इहेन्द्रियम्। उक्षाणं गां न वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षच्छतक्रतुम्। हिरंण्यपर्णमुक्थिनम्। रशुनां बिभ्रतं वृशिम्। भगमिन्द्रं वयोधसम्। कुकुमं छन्दं इहेन्द्रियम्। वृशां वेहतं गां न वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्ष्यस्वाहांकृतीः। अग्निं गृहपतिं पृथंक्। वरुणं भेषुजं कृविम्। क्षुत्रमिन्द्रं वयोधसम्। अतिच्छन्दसं छन्दं इन्द्रियम्। बृहदंष्भं गां वयो दर्धत्। वेत्वाऽऽज्यंस्य होतर्यजं॥८३॥

द्धे दर्धहतावृधं इन्द्रियं पेशंस्वतीर्वयोधस्ं वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यंजं सप्त चं (इडस्प्देंऽग्निङ्गांयुत्रीत्र्यविम्ं। शृचिव्रत्ष् शृचिंमुिणाहंन्दित्यवाहम्ं। ईडेन्य्ष् सोमंमनुष्ठुभं त्रिवृथ्सम्। सुब्रृहि्षदंममृतेन्द्रं बृह्तीं पञ्चांविम्। व्यचंस्वतीः सुप्रायणा द्वारौं बृह्माणंः पृङ्किमिृह तुर्युवाहम्ं। सुपेशंसे विश्वमिन्द्रं त्रिष्ठुभं पष्ठवाहम्ं। प्रचेतसा स्युजेन्द्रं जर्गतीमिृहानुङ्गाहम्ं। पेशंस्वतीस्तिसः पतिं विराजंमिृह धेनुन्न। सुरेतंसन्त्वष्टांर् पृष्टिमिन्द्रं द्विपदंमिृहोक्षाण्न्न। श्वतंत्रतं भग्मिन्द्रं कुकुभंमिृह वृशान्न। स्वाहांकृतीः क्षुत्रमतिच्छन्दसं बृहदंषुभं गां वयो दर्धदिन्द्रियमृषिं वसु नवं द्शेहंन्द्रियमष्टं नव दश् गां न वयो दर्धदिडस्पदे सर्वं वेतु॥)॥——[१७]

सिमंद्धो अग्निः स्मिधां। सुषंमिद्धो वरेंण्यः। गायत्री छन्दं इन्द्रियम्। त्र्यविगीवयो दधुः। तनूनपाच्छुचित्रतः। तुनूपाच् सरंस्वती। उष्णिक्छन्दं इन्द्रियम्। दित्यवाङ्गोवयो दधुः। इडांभिर्ग्निरीड्यः। सोमो देवो अमर्त्यः॥८४॥

अनुष्टुप्छन्दं इन्द्रियम्। त्रिवृथ्सो गौर्वयो दधुः। सुब्रुहिरुग्निः पूष्णवान्। स्तीर्णबर्हिरमेर्त्यः। बृह्ती छन्दं इन्द्रियम्। पश्चांविर्गीर्वयो दधुः। दुरो देवीर्दिशो

म्हीः। ब्रह्मा देवो बृह्स्पतिः। पुङ्किश्छन्दं इहेन्द्रियम्। तुर्यवाङ्गोर्वयो दधुः॥८५॥ उषे यह्वी सुपेशंसा। विश्वे देवा अमर्त्याः। त्रिष्टुप्छन्दं इन्द्रियम्। पुष्टुवाद्गौर्वयो

दधः। दैव्यां होतारा भिषजा। इन्द्रेण स्युजां युजा। जर्गती छन्दं इहेन्द्रियम्। अनुङ्गान्गौर्वयो दधः। तिस्र इडा सरंस्वती। भारती मुरुतो विशः॥८६॥ विराद्धन्दं इहेन्द्रियम्। धेनुर्गौर्न वयो दधः। त्वष्टां तुरीपो अद्भुतः। इन्द्राग्नी

पृष्टिवर्धना। द्विपाच्छन्दं इहेन्द्रियम्। उक्षा गौर्न वयो दधुः। श्रमिता नो वनस्पतिः। स्विता प्रंसुवन्भगम्। कुकुच्छन्दं इहेन्द्रियम्। वृशा वेहद्गौर्न वयो दधुः। स्वाहां यज्ञं वरुणः। सुक्षत्रो भेषुजं करत्। अतिच्छन्दाश्छन्दं इन्द्रियम्। बृहदंष्भो गौर्वयो दधुः॥८७॥

अमेर्त्यस्तुर्य्वाङ्गोर्वयां दधुर्विशां वृशा वेहहोर्न वयां दधुश्चरत्वारं च॥————[१८] वस्न-तेन्तुंनां देवाः। वसंवस्त्रिवृतां स्तुतम्। रथन्तरेण तेजसा। ह्विरिन्द्रे वयां दधुः। ग्रीष्मेणं देवा ऋतुनां। रुद्राः पंश्चदशे स्तुतम्। बृह्ता यशंसा बलम्ं। ह्विरिन्द्रे

वयो दधुः। वर्षाभिर्ऋतुनांऽऽदित्याः। स्तोमे सप्तद्शे स्तुतम्॥८८॥

वैरूपेण विशोजंसा। ह्विरिन्द्रे वयो दधुः। शार्देन्तुना देवाः। एक्विश्श ऋभवंः स्तुतम्। वैराजेन श्रिया श्रियम्। ह्विरिन्द्रे वयो दधुः। हेमन्तेन्तुना देवाः। म्रुतिस्त्रिण्वे स्तुतम्। बलेन् शर्करीः सहः। ह्विरिन्द्रे वयो दधुः। शेशिरेण्तुना देवाः। त्रयस्त्रिश्थे १ स्तुतम्। सत्येन रेवतीः क्षत्रम्। ह्विरिन्द्रे वयो दधुः॥८९॥ स्तोमं समद्शे स्तुतर सहं ह्विरिन्द्रे वयो दधुः॥८९॥

देवं बर्हिरिन्द्रं वयोधसम्। देवं देवमंवर्धयत्। गायत्रिया छन्दंसेन्द्रियम्। तेज् इन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवीर्द्वारों देविमन्द्रं वयोधसम्। देवीर्देवमंवर्धयन्। उष्णिहा छन्दंसेन्द्रियम्। प्राणिमन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं॥९०॥

देवी देवं वंयोधसम्। उषे इन्द्रंमवर्धताम्। अनुष्टुभा छन्दंसेन्द्रियम्। वाचमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवी जोष्ट्री देवमिन्द्रं वयोधसम्। देवी देवमंवर्धताम्। बृह्त्या छन्दंसेन्द्रियम्। श्रोत्रमिन्द्रे वयो दर्धत्। वृसुवनं वसुधेयंस्य वीतां यजं॥९१॥

देवी ऊर्जाहुंती देविमन्द्रं वयोधसम्। देवी देवमंवर्धताम्। पृङ्ग्या छन्दंसेन्द्रियम्। शुक्रमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वीतां यर्जः। देवा दैव्या होतांरा देविमन्द्रं वयोधसम्। देवा देवमंवर्धताम्। त्रिष्टुभा छन्दंसेन्द्रियम्। त्विषिमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वीतां यर्जः॥९२॥

देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीवयोधसम्। पितिमिन्द्रमवर्धयन्। जगत्या छन्दंसेन्द्रियम्। बल्मिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यजं। देवो नराशश्सो देविमिन्द्रं वयोधसम्। देवो देवमंवर्धयत्। विराजा छन्दंसेन्द्रियम्। रेत इन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु यजं॥९३॥

देवो वनस्पतिर्देविमिन्द्रं वयोधसम्। देवो देवमंवर्धयत्। द्विपदा छन्दंसेन्द्रियम्। भगमिन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनें वसुधेयंस्य वेतु यर्जा। देवं बर्हिर्वारितीनां देविमन्द्रं वयोधसम्। देवं देवमंवर्धयत्। कुकुभा छन्दंसेन्द्रियम्। यश इन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवो अग्निः स्विष्टकृद्देविमन्द्रं वयोधसम्। देवो देवमंवर्धयत्। अतिच्छन्दसा छन्दंसेन्द्रियम्। क्षत्रिमन्द्रे वयो दर्धत्। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं॥९४॥

वियुन्तु यर्ज वीतां यर्ज वीतां यर्ज वेतु यर्ज वेतु यर्ज पश्च च (देवं बुर्हिर्गायत्रिया तेर्जः। देवीद्वरिं उष्णिहाँ प्राणम्। देवी देवमुषे अंनुष्टभा वाचम्। देवी जोष्ट्री बृहत्या श्रोत्रम्। देवी ऊर्जाहंती पुङ्गा शुक्रम्। देवा दैव्या होतांरा त्रिष्टभा त्विषिम्। देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः पितं जगत्या बलम्। देवो नराशश्मो विराजा रेतः। देवो वनस्पितिर्द्धिपदा भगम्। देवं बुर्हिर्वारितीनां कुकुभा यर्शः। देवो अग्निः स्विष्टकृदितिंच्छन्दसा क्षत्रम्। वेतु वियुन्तु चुतुर्वीतामेको वियन्तु चुतुर्वैत्ववर्धयदवर्धयश्रश्चतुर्रवर्धतामेकोऽवर्धयश् श्चतुर्रवर्धयत्॥॥

[२०]

स्वाद्वीं त्वा सोमः सुरावन्तर् सीसेन मित्रोऽसि यद्देवा होतां यक्षथ्समिधेन्द्रर् सिमंद्ध इन्द्र आचेर्षणिप्रा देवं ब्रुहिर्होतां यक्षथ्समिधाऽग्निर सिमंद्धो अग्निरंश्विनाऽश्विनां हुविरिंन्द्रियं देवं ब्रुहिः सरंस्वत्यग्निमद्योशन्तो होतां यक्षदिडस्पदे सिमंद्धो अग्निः समिधां वसन्तेनृर्तुनां देवं ब्रुहिरिन्द्रं वयोधसं विरुश्तिः॥२०॥

स्वाद्वीं त्वाऽमीमदन्त पितरः साम्राज्याय पूतं पवित्रेणोषासानक्ता बर्दरैरधातां देव इन्द्रो वनस्पतिः पष्टवाहुङ्गां देवी देवं

वंयोधसं चतुंर्नवतिः॥९४॥

स्वाद्वीं त्वां वेतु यजं॥

हरिं: ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके षष्टः प्रपाठकः समाप्तः॥

328

॥ सप्तमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

त्रिवृथ्स्तोमो भवति। ब्रह्मवर्चसं वै त्रिवृत्। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्थे। अग्निष्टोमः सोमो भवति। ब्रह्मवर्चसं वा अग्निष्टोमः। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्थे। रथन्तर सामे भवति। ब्रह्मवर्चसं वै रथन्तरम्। ब्रह्मवर्चसमेवावं रुन्थे। परिस्नजी होतां भवति॥१॥

अरुणो मिर्मिरस्निश्ं ऋः। एतद्वे ब्रह्मवर्चसस्यं रूपम्। रूपेणैव ब्रह्मवर्चसमवं रुन्थे। बृह्स्पतिरकामयत देवानां पुरोधां गंच्छे युमितिं। स एतं बृहस्पतिस्वमंपश्यत्।

तमाऽहंरत्। तेनायजत। ततो वै स देवानां पुरोधामगच्छत्। यः पुरोधाकामः स्यात्। स बृहस्पतिस्वेनं यजेत॥२॥

पुरोधामेव गंच्छति। तस्यं प्रातः सवने सन्नेषुं नाराश्र्सेषुं। एकांदश् दक्षिणा नीयन्ते। एकांदश् माध्यंं दिने सर्वने सन्नेषुं नाराश्र्सेषुं। एकांदश तृतीयसवने सन्नेषुं नाराश्र्सेषुं। त्रयंस्त्रिश्श्रथ्सम्पद्यन्ते। त्रयंस्त्रिश्शृद्धे देवताः।

329

देवतां पुवावंरुन्धे। अश्वंश्वतुस्त्रिन्शः। प्राजापत्यो वा अश्वंः॥३॥

कृष्णाजिनेऽभिषिश्चित। ब्रह्मणो वा एतद्रूपम्। यत्कृष्णाजिनम्। ब्रह्मवर्चसेनैवैन् समर्थयित। आज्येनाभिषिश्चित। तेजो वा आज्यम्। तेजं एवास्मिन्दधाति॥४॥ होतां भवित यजेत् वा अश्चे दधाति॥ यद्यांग्रेयो भवित। अग्निम्ंखा ह्यद्धिः। अथ् यत्पौष्णः। पृष्टिवै पूषा। पृष्टिवैश्यंस्य।

प्रजापंतिश्चतुस्त्रि शो देवतानाम्। यावंतीरेव देवताः। ता पुवावंरुन्धे।

पृष्टिमेवावं रुन्धे। प्रस्वायं सावित्रः। अथ् यत्त्वाष्ट्रः। त्वष्टा हि रूपाणि विक्रोति। निर्वरुणत्वायं वारुणः॥५॥

अथो य एव कश्च सन्थ्सूयतें। स हि वांरुणः। अथ् यद्वैंश्वदेवः। वैश्वदेवो हि वैश्यः। अथ् यन्मांरुतः। मारुतो हि वेश्यः। सप्तैतानि ह्वी १ षि भवन्ति। सप्तगणा वै मुरुतः। पृश्चिः पष्टौही मांरुत्या लेभ्यते। विश्वे मुरुतः। विश्वे पृवैतन्मध्यतोऽभिषिंच्यते। तस्माद्वा एष विशः प्रियः। विश्वो हि मध्यतो-ऽभिषिच्यते। ऋष्मचर्मेऽध्यभिषिश्चित। स हि प्रजनियता। द्वाऽभिषिश्चित।

ऊर्ग्वा अन्नाद्यं दिधे। ऊर्जैवैनंमन्नाद्येन समर्धयति॥६॥

वारुणो विद्वे मरुतोऽष्टौ चं॥

यदाँग्नेयो भवंति। आग्नेयो वै ब्राँह्मणः। अथु यथ्सौम्यः। सौम्यो हि ब्राँह्मणः। प्रस्वायैव सांवित्रः। अथु यद्वांर्हस्पत्यः। एतद्वै ब्राँह्मणस्यं वाक्पृतीयम्। अथु यद्गीषोमीयः। आग्नेयो वै ब्राँह्मणः। तौ यदा सङ्गच्छेते॥७॥

अर्थ वीर्यावत्तरो भवति। अथ् यथ्मारस्वतः। एतद्धि प्रत्यक्षं ब्राह्मणस्यं वाक्पतीयम्। निर्वरुणत्वायैव वारुणः। अथो य एव कश्च सन्थ्सूयते। स हि वारुणः। अथ् यद्यावापृथिव्यः। इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। तं द्यावापृथिवी नान्वंमन्येताम्। तमेतेनैव भाग्धेयेनान्वंमन्येताम्॥८॥

वर्ज्रस्य वा एषोऽनुमानायं। अनुंमतवज्ञः सूयाता इति। अष्टावेतानि ह्वी १ षिं भवन्ति। अष्टाक्षेरा गायत्री। गायत्री ब्रह्मवर्च्सम्। गायत्रियेव बंह्मवर्च्समवं रुन्थे। हिरंण्येन घृतमुत्पुंनाति। तेजस एव रुचे। कृष्णाजिनेंऽभिषिश्चिति। ब्रह्मणो वा एतदंख्सामयों रूपम्। यत्कृष्णाजिनम्। ब्रह्मन्नेवैनंमृख्सामयोरध्यभिषिञ्चति। घृतेनाभिषिश्चति। तथां वीर्यावत्तरो भवति॥९॥

सङ्गच्छेंते भागधेयेनान्वंमन्येता र रूपं चत्वारिं च॥

न वै सोमेन सोमंस्य सवौंऽस्ति। हतो ह्यंषः। अभिषुंतो ह्यंषः। न हि हतः सूयतें। सौमी र सूतवंशामा लंभते। सोमों वै रंतोधाः। रेतं एव तद्दंधाति। सौम्यर्चा-र्जभिषिश्चति। रेतोुधा ह्यंषा। रेतः सोमः। रेतं एवास्मिन्दधाति। यत्किं चं राजसूर्यमृते सोमम्। तथ्सर्वं भवति। अषांढं युथ्सु पृतंनासु पप्रिम्। सुवर्षामपस्वां वृजनंस्य गोपाम्। भरेषुजाः सुंक्षितिः सुश्रवंसम्। जयन्तं त्वामनुं मदेम सोम॥१०॥ रेतुः सोमः सप्त चं॥=

यो वै सोमेन सूयतें। स देवसवः। यः पृशुनां सूयतें। स देवसवः। य इष्टां सूयतें। स मनुष्यसुवः। एतं वै पृथये देवाः प्रायंच्छन्। ततो वै सोऽप्यांरण्यानां पशूनामंसूयत। यावंतीः कियंतीश्च प्रजा वाचं वदंन्ति। तासा सर्वांसा ध

स्यते॥११॥

पुष गोस्वः। षुट्टिश्ष उक्थ्यो बृहथ्सांमा। पर्वमाने कण्वरथन्त्रं भंवति। यो वै वाजपर्यः। स सम्राट्थ्सवः। यो राजसूर्यः। स वंरुणसुवः। प्रजापितः स्वाराज्यं परमेष्ठी। स्वाराज्यं गौरेव। गौरिव भवति॥१३॥

य एतेन् यर्जते। य उं चैनमेवं वेदं। उभे बृंहद्रथन्तरे भंवतः। तिद्धे स्वारांज्यम्। अयुतं दक्षिणाः। तिद्धे स्वारांज्यम्। प्रतिधुषाऽभिषिश्चिति। तिद्धे स्वारांज्यम्। अनुद्धते वेद्ये दक्षिणत आंहव्नीयंस्य बृह्तः स्तोत्रं प्रत्यभिषिश्चिति। इयं वाव सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

रंथन्तरम्॥१४॥

सि १ हे व्याघ्र उत या पृदांको। त्विषिरुग्नो ब्राँह्मणे सूर्ये या। इन्द्रं या देवी सुभगां ज्ञानं। सा न आगुन्वर्चंसा संविदाना। या रांजुन्यें दुन्दुभावायंतायाम्। अश्वंस्य ऋन्द्ये पुरुषस्य मायौ। इन्द्रं या देवी सुभगां ज्ञानं। सा न आगुन्वर्चसा संविदाना। या हस्तिनि द्वीपिनि या हिरंण्ये। त्विष्रिश्वंषु पुरुषेषु गोषुं॥१६॥

इन्द्रं या देवी सुभगां जजानं। सा न आगुन्वर्चसा संविदाना। रथे अक्षेषुं वृष्भस्य वाजें। वाते पूर्जन्ये वरुणस्य शुष्में। इन्द्रं या देवी सुभगां जजानं। सा न् आग्न्वर्चसा संविदाना। राडंसि विराडंसि। सम्राडंसि स्वराडंसि। इन्द्रांय त्वा तेजंस्वते तेजंस्वन्तङ् श्रीणामि। इन्द्रांय त्वौजंस्वत ओजंस्वन्तङ् श्रीणामि॥१७॥

इन्द्रांय त्वा पर्यस्वते पर्यस्वन्त श्रीणामि। इन्द्रांय त्वाऽऽयुंष्मत् आयुंष्मन्त श्रीणामि। तेजोंऽसि। तत्ते प्र यंच्छामि। तेजंस्वदस्तु मे मुखम्। तेजंस्विच्छरों अस्तु मे। तेजंस्वान् विश्वतः प्रत्यङ्का। तेजंसा सम्पिपृग्धि मा। ओजोंऽसि। तत्ते प्र यंच्छामि॥१८॥

ओर्जस्वदस्तु मे मुखम्। ओर्जस्वच्छिरो अस्तु मे। ओर्जस्वान् विश्वतंः प्रत्यङ्कः।

ओर्जसा सं पिंपृग्धि मा। पयोंऽसि। तत्ते प्र यंच्छामि। पयंस्वदस्तु मे मुखम्ँ। पयंस्विच्छिरों अस्तु मे। पयंस्वान् विश्वतः प्रत्यङ्ग। पयंसा सं पिंपृग्धि मा॥१९॥ आयुंरिस। तत्ते प्र यंच्छामि। आयुंष्मदस्तु मे मुखम्ँ। आयुंष्मच्छिरों अस्तु मे। आयुंष्मान् विश्वतः प्रत्यङ्ग। आयुंषा सं पिंपृग्धि मा। इममंग्र आयुंषे वर्चसे कृधि। प्रिय॰ रेतों वरुण सोम राजन्। मातेवाँस्मा अदिते शर्म यच्छ। विश्वे देवा

जरंदष्टिर्यथाऽसंत्॥२०॥

आयुंरिस विश्वायुंरिस। सर्वायुंरिस सर्वमायुंरिस। यतो वातो मनोजवाः। यतः क्षरंन्ति सिन्धंवः। तासाँ त्वा सर्वासार रुचा। अभिषिश्चामि वर्चसा। समुद्र इंवािस गृह्मनाँ। सोमं इवास्यदाँभ्यः। अग्निरिव विश्वतंः प्रत्यङ्कः। सूर्यं इव ज्योितिषा विभूः॥२१॥

अपां यो द्रवंणे रसंः। तमहम्समा आंमुष्यायणायं। तेर्जसे ब्रह्मवर्चसायं गृह्णामि। अपां य ऊर्मी रसंः। तमहम्समा आंमुष्यायणायं। ओर्जसे वीर्याय गृह्णामि। अपां यो मंध्यतो रसंः। तमहम्समा आंमुष्यायणायं। पृष्ट्यै प्रजनंनाय गृह्णामि। अपां यो यिज्ञयो रसंः। तमहम्समा आंमुष्यायणायं। आयुंषे दीर्घायुत्वायं गृह्णामि॥२२॥ गोष्वोर्जस्वन्तः श्रीणाम्योजीऽसि तते प्रयंख्लामि पयंसा सम्पिपृष्धि माऽसंद्विभूर्यंज्ञियो रसो द्वे वं॥———[७]

अभिप्रेहिं वीरयंस्व। उग्रश्चेत्तां सपब्रहा। आतिष्ठ मित्रवर्धनः। तुभ्यंं देवा अधिब्रवन्। अङ्कौ न्यङ्कावभित् आतिष्ठ वृत्रहृत्रथम्ं। आतिष्ठंन्तं परि विश्वं अभूषन्। श्रियं वसानश्चरित् स्वरोचाः। मृहत्तद्स्यासुरस्य नामं। आ विश्वरूपो अमृतांनि तस्थौ। अनु त्वेन्द्रों मद्त्वनु बृह्स्पितः॥२३॥

अन् सोमो अन्वग्निरावीत्। अनुं त्वा विश्वं देवा अवन्तु। अनुं सप्त राजानो

य उताभिषिक्ताः। अनुं त्वा मित्रावर्रुणाविहावंतम्। अनु द्यावांपृथिवी विश्वशंम्भू। सूर्यो अहोभिरनुं त्वाऽवतु। चन्द्रमा नक्षेत्रैरनुं त्वाऽवतु। द्यौश्चं त्वा पृथिवी च प्रचेतसा। शुक्रो बृहद्दक्षिणा त्वा पिपर्तु। अनुं स्वधा चिकिता सोमों अग्निः। आऽयं पृणक्तु रजसी उपस्थम्॥२४॥

बहस्पतिः सोमों अग्निरेकं च॥————[८]
प्रजापंतिः प्रजा असृजत। ता अस्माथ्मृष्टाः परांचीरायन्। स एतं

प्रजापितरोद्नमंपश्यत्। सोऽन्नं भूतोंऽतिष्ठत्। ता अन्यत्रान्नाद्यमिवित्वा। प्रजापितिं प्रजा उपावर्तन्त। अन्नमेवेनं भूतं पश्यन्तीः प्रजा उपावर्तन्ते। य एतेन् यजेते। य उ चैनमेवं वेदं। सर्वाण्यन्नांनि भवन्ति॥२५॥

सर्वे पुरुषाः। सर्वांण्येवान्नान्यवं रुन्थे। सर्वान्पुरुषान्। राडंसि विराड्सीत्यांह। स्वारांज्यमेवैनं गमयति। यद्धिरंण्यं ददांति। तेज्रस्तेनावंरुन्थे। यत्तिंसृधन्वम्। वीर्यं तेनं। यदष्ट्रांम्॥२६॥

पुष्टिं तेनं। यत्कंमण्डलुम्ं। आयुष्टेनं। यद्धिरंण्यमा बुध्नातिं। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्। ज्योतिरेवास्मिन्दधाति। अथो तेजो वै हिरंण्यम्। तेजं एवाऽऽत्मन्धंत्ते। यदोदनं प्राश्ञातिं। एतदेव सर्वमवरुध्यं॥२७॥

तदंस्मिन्नेक्धाऽधाँत्। रोहिण्यां कार्यः। यद्वाँह्मण एव रोहिणी। तस्मादेव। अथो वर्ष्मैवैन र समानानां करोति। उद्यता सूर्येण कार्यः। उद्यन्तं वा एतर सर्वाः प्रजाः प्रतिनन्दन्ति। दिदृक्षेण्यो दर्शनीयो भवति। य एवं वेदे। ब्रह्मवादिनो वदन्ति॥२८॥ अवेत्योऽवभृथा (३) ना (३) इतिं। यद्दर्भपुश्चीलैः प्वयंति। तथ्स्वंदेवावैति।

तन्नावैति। त्रिभिः पंवयति। त्रयं इमे लोकाः। एभिरेवैनं लोकैः पंवयति। अथो

अपां वा एतत्तेजो वर्चः। यद्दर्भाः। यद्दर्भपुञ्जीलैः प्वयंति। अपामेवैनं तेजसा वर्चसाऽभिषिञ्चति॥२९॥

वर्चसाऽभिषिश्चाते॥२९॥
भवन्त्यष्ट्रांमवरुध्यं वदन्ति दर्भा यद्दर्भपुञ्जीलैः पवयत्येकं च॥——————————[९]

प्रजापंतिरकामयत बहोर्भूयाँन्थ्स्यामितिं। स एतं पंश्रशार्दीयंमपश्यत्। तमाऽहंरत्। तेनांयजत। ततो वै स बहोर्भूयांनभवत्। यः कामयेत बहोर्भूयांन्थ्स्यामितिं। स पंश्रशार्दीयेन यजेत। बहोरेव भूयांन्भवति। मुरुथ्स्तोमो वा एषः। मरुतो हि देवानां भूयिष्ठाः॥३०॥

बहुर्भविति। य एतेन् यजंते। य उंचैनमेवं वेदं। पृञ्चशार्दीयों भविति। पञ्च वा ऋतवंः संवथ्सरः। ऋतुष्वेव संवथ्सरे प्रतिं तिष्ठति। अथो पञ्चौक्षरा पृङ्किः। पाङ्को यज्ञः। यज्ञमेवावं रुन्थे। सप्तद्शः स्तोमा नातिं यन्ति। सप्तद्शः प्रजापंतिः। प्रजापंतेरास्यै॥३१॥ अगस्त्यों मुरुद्धी उक्ष्णः प्रौक्षंत्। तानिन्द्र आदंत्त। त एनं वर्ज्रमुद्धत्याभ्यायन्त। तानगस्त्यंश्चैवेन्द्रंश्च कयाशुभीयंनाशमयताम्। ताञ्छान्तानुपाह्वयत। यत्कंयाशुभीयं भविति शान्त्या। तस्मादेत एनद्वामारुता उक्षाणः सवनीयां भवित्त। त्रयः प्रथमेऽहृन्ना लभ्यन्ते। एवं द्वितीया। एवं तृतीया। ३२॥

एवं चंतुर्थे। पश्चौत्तमेऽहृन्ना लभ्यन्ते। वर्षिष्ठमिव ह्यंतदहंः। वर्षिष्ठः समानानां भवित। य एतेन यज्ञंते। य उचैनमेवं वेदं। स्वाराज्यं वा एष यज्ञः। एतेन वा एकया वां कान्दमः स्वाराज्यमगच्छत। स्वाराज्यं गच्छित। य एतेन यज्ञंते॥३३॥

एकया वां कान्दमः स्वारांज्यमगच्छत्। स्वारांज्यं गच्छति। य एतेन यजंते॥३३॥ य उं चैनमेवं वेदं। मारुतो वा एषः स्तोमंः। एतेन वै मरुतों देवानां भूयिंष्ठा अभवन्। भूयिष्ठः समानानां भवति। य एतेन यजति। य उं चैनमेवं वेदं। पश्चशारदीयो वा एष यज्ञः। आ पश्चमात्पुरुषादन्नमित्ता। य एतेन यजेते। य उं चैनमेवं वेदं। सप्तदशङ् स्तोमा नातिं यन्ति। सप्तदशः प्रजापंतिः। प्रजापंतिरेव नैतिं॥३४॥

अस्या जरांसो दमा म्रित्राः। अर्चर्छूमासो अग्नयंः पावकाः। श्विचीचयंः श्वात्रासो भुरण्यवंः। वृन्रूषदो वायवो न सोमाः। यजां नो मित्रावरुणा। यजां देवा र ऋतं बृहत्। अग्ने यक्षि स्वन्दमम्। अश्विना पिबंत र सुतम्। दीद्यंग्री शुचिव्रता। ऋतुनां यज्ञवाहसा॥३५॥

द्वे विरूपे चरतः स्वर्धे। अन्याऽन्यां वृथ्समुपं धापयेते। हरिंर्न्यस्यां भवंति स्वधावान्। शुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः। पूर्वाप्रं चरतो माययैतौ। शिशू क्रीडंन्तौ परिं यातो अध्वरम्। विश्वान्यन्यो भुवनाऽभि चष्टें। ऋतूनन्यो विदधंज्ञायते पुनः। त्रीणं शृता त्रीषृहस्राणयग्निम्। त्रिष्शचं देवा नवं चाऽसपर्यन्॥३६॥

औक्षं घृतैरास्तृंणन्बर्हिरंस्मै। आदिद्धोतांरं न्यंषादयन्त। अग्निनाऽग्निः समिध्यते। क्विर्गृहपंतिर्युवां। हृव्यवाङ्गुह्वांऽऽस्यः। अग्निर्देवानां ज्ठरम्। पूतदंक्षः क्विक्रंतुः। देवो देवेभिरा गंमत्। अग्निश्रियों मुरुतों विश्वकृष्टयः। आ त्वेषमुग्रमवं

ईमहे व्यम्॥३७॥ ते स्वानिनों रुद्रियां वर्षनिर्णिजः। सिर्हा न हेषक्रंतवः सुदानंवः। यदुंत्तमे मंरुतो मध्यमे वाँ। यद्वांऽवमे स्भगासो दिवि ष्ठ। ततों नो रुद्रा उत वाऽन्वस्यं।

अग्ने वित्ताद्धविषो यद्यजामः। ईडे अग्निः स्ववंसन्नमोभिः। इह प्रस्ता वि च यत्कृतं नंः। रथैरिव प्रभेरे वाजयद्भिः। प्रदक्षिणिन्मरुताः स्तोमंमृद्धाम्॥३८॥

श्रुधि श्रुंत्कर्ण् वह्निंभिः। देवैरंग्ने स्यावंभिः। आसींदन्तु बर्हिषिं। मित्रो वर्रुणो अर्यमा। प्रात्यावांणो अध्वरम्। विश्वेषामदिंतिर्यज्ञियांनाम्। विश्वेषामतिंथिर्मानुंषाणाम्। अग्निर्देवानामवं आवृणानः। सुमृडीको भंवतु विश्ववेदाः। त्वे अंग्ने सुमृतिं भिक्षंमाणाः॥३९॥

दिवि श्रवो दिधरे यज्ञियांसः। नक्तां च चुकुरुषसा विरूपे। कृष्णं च वर्णमरुणं च सन्धुः। त्वामंग्र आदित्यासं आस्यम्। त्वां जिह्वा शुचंयश्चकिरे कवे। त्वा श रांतिषाचों अध्वरेषुं सिश्चरे। त्वे देवा हिवरंदन्त्याहुंतम्। नि त्वां यज्ञस्य सार्धनम्। अग्ने होतांरमृत्विजम्। वनुष्वद्दंव धीमहि प्रचेतसम्। जीरं दूतममर्त्यम्॥४०॥

युज्ञवाहुसासपूर्यन्वयमृद्धां भिक्षंमाणाः प्रचेतस्मेकं च॥🗕

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि। वायुर्न नियुतों नो अच्छं। पिबास्यन्धों अभिसृष्टो अस्मे। इन्द्रः स्वाहां रिष्मा ते मदाय। कस्य वृषां सुते सर्चा।

नियुत्वान्वृष्भो रंणत्। वृत्रहा सोमंपीतये। इन्द्रं वयं महाधने। इन्द्रमर्भे हवामहे। युजं वृत्रेषुं वज्रिणम्॥४१॥

द्विता यो वृत्रुहन्तंमः। विद इन्द्रंः श्ततंत्रतुः। उपं नो हरिभिः सुतम्। स सूर आजनयं ज्योतिरिन्द्रम्। अया धिया तुरणिरद्रिबर्हाः। ऋतेनं शुष्मी नवंमानो अर्कैः। व्यंस्त्रिधो अस्रो अद्रिर्बिभेद। उतत्यदाश्वश्वियम्। यदिन्द्र नाहुंषी्ष्वा। अग्रे विक्षु प्रतीदंयत्॥४२॥

भरेष्विन्द्र र सुहवर हवामहे। अर्होम्चर सुकृतं दैव्यं जनम्। अग्निं मित्रं

वर्रण स्मातये भगम्। द्यावापृथिवी म्रुतः स्वस्तये। मृहि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं वि विद्वान्। आदिथ्सिखंभ्यश्चरथ समैरत्। इन्द्रो नृभिरजन्द्दीद्यांनः साकम्। सूर्यमुषसं गातुमृग्निम्। उरुं नो लोकमन् नेषि विद्वान्। सुवविद्योतिरभय स्वस्ति॥४३॥

ऋष्वा तं इन्द्रं स्थिवंरस्य बाहू। उपंस्थेयाम शर्णा बृहन्तां। आ नो विश्वांभिरूतिभिः स्जोषाः। ब्रह्मं जुषाणो हंर्यश्व याहि। वरीवृज्धस्थिवंरिभिः सुशिप्र। अस्मे दधृद्वृषंण् शृष्मंमिन्द्र। इन्द्रांय गावं आशिरम्ं। दुदुह्रे वृज्जिणे मधुं। यथ्सीमुपह्दरे विदत्। तास्ते विज्ञन्धेनवों जोजयुर्नः॥४४॥ गर्भस्तयो नियुतों विश्ववाराः। अहंरहर्भ्य इज्ञोर्गुवानाः। पूर्णा इंन्द्र क्षुमतो

गर्भस्तयो नियुतो विश्ववाराः। अहरहर्भूय इञ्जोर्गुवानाः। पूर्णा इन्द्र क्षुमतो भोजनस्य। इमां ते धियं प्र भेरे महो महीम्। अस्य स्तोत्रे धिषणा यत्तं आनुजे। तम्थ्यवे च प्रस्वे च सासहिम्। इन्द्रं देवासः शवंसा मदं नन्॥४५॥

वृज्ञिणमयथ्स्वृस्ति जोंजयुर्नः सुप्त चं॥-----[१३]

प्रजापंतिः पृश्नंसृजत। तेंऽस्माथ्सृष्टाः पर्गं च आयन्। तानंग्निष्टोमेन् नाऽऽप्नोंत्। तानुक्थ्यंन् नाऽऽप्नोंत्। तान्थ्यांड्शिना नाऽऽप्नोंत्। तान्यात्रिया नाऽऽप्नोंत्। तान्थ्यन्थिना नाऽऽप्नोंत्। सोंऽग्निमंब्रवीत्। इमान्मं ईपसेति। तान्ग्निस्चिवृता स्तोमेन् नाऽऽप्नोंत्॥४६॥

स इन्द्रंमब्रवीत्। इमान्मं ईफ्सेतिं। तानिन्द्रः पश्चद्शेन् स्तोमेन् नाऽऽप्नौत्। स विश्वान्द्रेवानंब्रवीत्। इमान्मं ईफ्स्तेतिं। तान् विश्वेदेवाः संप्तद्शेन् स्तोमेन् नाऽऽप्नुंवन्। स विष्णुंमब्रवीत्। इमान्मं ईफ्सेतिं। तान् विष्णुंरेकवि्श्शेन् स्तोमेनाऽऽप्नोत्। वारवन्तीयेनावारयत॥४७॥

ड्दं विष्णुर्वि चंक्रम् इति व्यंक्रमत। यस्मौत्पृशवः प्रप्रेव अश्शेरन्। स एतेनं यजेत। यदाप्रौत्। तद्प्तोर्यामंस्याप्तोर्यामृत्वम्। एतेन् वै देवा जैत्वांनि जित्वा। यं काम्मकांमयन्त् तमौऽऽप्रुवन्। यं कामं कामयंते। तमेतेनौऽऽप्नोति॥४८॥

स्तोमेंनु नाऽऽप्नोंदवारयतु नर्व च॥———[१४]

नमंसा ते जुहोिम। मा देवानां मिथुयाकंर्म भागम्। सावीर्हि देव प्रस्वायं पित्रे। वर्ष्माणंमस्मै विर्माणंमस्मै। अथास्मभ्य सिवतः सर्वतांता। दिवेदिव आ सुंवा भूरिं पृश्वः। भूतो भूतेषुं चरित प्रविष्टः। स भूतानामिधेपितर्बभूव॥४९॥ तस्यं मृत्यौ चरित राज्सूयम्ं। स राजां राज्यमनुं मन्यतामिदम्। येभिः शिल्पैः पप्रथानामद्द हत्। येभिद्याम्भ्यिप श्रात्प्रजापंतिः। येभिर्वाचं विश्वरूपा सम्ब्यंयत्। तेनेममंग्र इह वर्चसा समिङ्गिः। येभिरादित्यस्तपंति प्र केत्भिः।

व्याघ्रों ऽयमग्नौ चंरति प्रविष्टः। ऋषींणां पुत्रो अंभिशस्तिपा अयम्। नमस्कारेण

समिङ्गि॥५०॥ आऽयं भांतु शवंसा पश्चं कृष्टीः। इन्द्रं इव ज्येष्ठो भंवतु प्रजावान्। अस्मा अस्तु पुष्कुलं चित्रभांनु। आऽयं पृणक्तु रजंसी उपस्थम्। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावंत्। इन्द्रियावंत्पुष्कुलं चित्रभांनु। यस्मिन्थ्सूर्या अर्पिताः सप्त साकम्।

येभिः सूर्यो दद्दशे चित्रभांनुः। येभिर्वाचं पुष्कलेभिरव्यंयत्। तेनेममंग्न इह वर्चसा

विश्रंयस्व दिशों महीः। विशंस्त्वा सर्वा वाञ्छन्तु। मा त्वद्राष्ट्रमधि भ्रशत्।

या दिव्या आपः पर्यसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। तासां त्वा

तस्मित्राजांनमधि विश्रंयेमम्। द्यौरंसि पृथिव्यंसि। व्याघ्रो वैयाघ्रेऽधिं॥५१॥

सर्वासार रुचा। अभिषिश्चामि वर्चसा। अभि त्वा वर्चसाऽसिचं दिव्येनं। पर्यसा सह। यथासां राष्ट्रवर्धनः॥५२॥ तथाँ त्वा सविता करत्। इन्द्रं विश्वां अवीवृधन्। सुमुद्रव्यंचसङ्गिरंः। रुथीतंम १ रथीनाम्। वार्जाना् सत्पंतिं पतिम्। वसंवस्त्वा पुरस्तांद्रिभिषिश्चन्तु गायत्रेण

छन्दंसा। रुद्रास्त्वां दक्षिणतों ऽभिषिंश्चन्तु त्रैष्टुंभेन् छन्दंसा। आदित्यास्त्वां पश्चादभिषिश्चन्तु जागंतेन छन्दंसा। विश्वे त्वा देवा उत्तरतोऽभिषिश्चं त्वाऽनुंष्टुभेन छन्दंसा। बृहस्पतिंस्त्वोपरिष्टाद्भिषिंश्चतु पाङ्केन् छन्दंसा॥५३॥

अरुणं त्वा वृकंमुग्रङ्क्षंजङ्करम्। रोचंमानं मरुतामग्रे अर्चिषंः। सूर्यवन्तं मघवानं

विषासिहम्। इन्द्रमुक्थेषुं नामहूर्तमः हुवेम। प्र बाहवां सिसृतं जीवसं नः। आ नो गर्व्यातिमुक्षतं घृतेनं। आ नो जने श्रवयतं युवाना। श्रुतं में मित्रावरुणा हवेमा। इन्द्रंस्य ते वीर्यकृतः। बाह उपावं हरामि॥५४॥

इन्द्रस्य ते वीर्युकृतः। बाहू उपावं हरामि॥५४॥

बुभूबाव्यंयुत्तेनेममंग्र इह वर्चसा समंिक्षु वैयाघ्रेऽधि राष्ट्रवर्धनः पाङ्केन छन्दंसोपावंहरामि॥————[१५]

अभि प्रेहिं वीरयंस्व। उग्रश्चेत्तां सपल्लहा। आतिष्ठ वृत्रहन्तंमः। तुभ्यं देवा अधिब्रवन्। अङ्कौ न्यङ्कावभितो रथं यौ। ध्वान्तं वांताग्रमनुं स्थरंन्तौ। दूरेहेंतिरिन्द्रियावांन्यत्त्री। ते नोऽग्नयः पप्रयः पारयन्तु। नमंस्त ऋषे गद।

अव्यंथाये त्वा स्वधाये त्वा॥५५॥

मा नं इन्द्राभित्स्त्वदृष्वारिष्टासः। एवा ब्रंह्मन्तवेदंस्तु। तिष्ठा रथे अधि यद्वज्रंहस्तः। आ र्श्मीन्देव युवसे स्वर्श्वः। आ तिष्ठ वृत्रहन्नातिष्ठंन्तं परि। अनु त्वेन्द्रों मद्त्वनुं त्वा मित्रावरुंणौ। द्यौश्चं त्वा पृथिवी च प्रचेतसा। शुक्रो बृहद्दक्षिणा त्वा पिपर्तु। अनुं स्वधा चिंकिता सोमों अग्निः। अनुं त्वाऽवतु

सविता सवेनं॥५६॥

इन्द्रं विश्वां अवीवृधन्। समुद्रव्यंचस्ङ्गिरंः। र्थीतंम १ रथीनाम्। वाजांना १ सत्पंतिं पतिम्। परिमा सेन्या घोषाः। ज्यानां वृञ्जन्तु गृध्नवंः। मेथिष्ठाः पिन्वंमाना इह। मां गोपंतिम्भि संविंशन्तु। तन्मेऽनुंमित्रिरनुं मन्यताम्। तन्माता पृंथिवी तत्पता द्योः॥५७॥

तद्भावाणः सोम्सुतो मयोभुवः। तदिश्वना शृणुत स्मौभगा युवम्। अवं ते हेड् उद्तंत्तमम्। एना व्याघ्रं परिषस्वजानाः। सिन्दह हिन्वन्ति महते सौभंगाय। समुद्रं न सुहुवंन्तस्थिवा स्म्मैं। मुर्मृज्यन्ते द्वीपिनं मुफ्स्वंन्तः। उद्सावेतु सूर्यः। उद्दिदं मामुकं वर्यः। उदिहि देव सूर्य। सह वृग्नुना ममे। अहं वाचो विवार्यनम्। मिय् वागस्तु धर्णसिः। यन्तुं नृदयो वर्षन्तु पूर्जन्याः। सुपिप्पुला ओषंधयो भवन्तु। अन्नंवतामोदनवंतामामिक्षंवताम्। एषा राजां भूयासम्॥५८॥

स्वधार्यै त्वा स्वेन द्यौः सूँर्य सप्त चं॥————[१६]

बहुधा घृतेनं। रायस्पोषेणेमं वर्चसा स॰ सृंजाथ। नर्ते ब्रह्मणस्तपंसो विमोकः।

ये केशिनंः प्रथमाः सत्रमासंत। येभिराभृंतं यदिदं विरोचंते। तेभ्यों जुहोमि

द्विनाम्नी दीक्षा वृशिनी ह्युंग्रा। प्र केशाः सुवतं काण्डिनो भवन्ति। तेषां ब्रह्मेदीशे वर्पनस्य नान्यः। आ रोह् प्रोष्टं विषंहस्व शत्रून्ं। अवास्त्राग्दीक्षा वृशिनी ह्युंग्रा॥५९॥ देहि दक्षिणां प्रतिर्स्वायुः। अथामुच्यस्व वरुणस्य पाशांत्। येनावंपथ्सविता क्षुरेणं। सोमंस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेनं ब्रह्माणो वपतेदमस्योर्जेमम्। र्य्या

वर्चसा सर सृंजाथ। मा ते केशाननुं गाद्वर्च एतत्। तथां धाता कंरोतु ते।

तुभ्यमिन्द्रो बृह्स्पतिः। स्विता वर्च आदंधात्॥६०॥
तेभ्यों निधानं बहुधा व्यैच्छन्। अन्तरा द्यावांपृथिवी अपः सुवंः। दुर्भस्तम्बे वीर्यंकृते निधायं। पौइस्येनेमं वर्चसा सह सृंजाथ। बलं ते बाहुवोः संविता दंधातु। सोमंस्त्वाऽनक्त पर्यसा घृतेनं। स्त्रीषु रूपमंश्विनैतन्नि धंत्तम्। पौइस्येनेमं

वर्चसा सरसृंजाथ। यथ्सीमन्तङ्कङ्कंतस्ते लिलेखं। यद्वाँ क्षुरः पंरिवृवर्ज् वपर्इस्ते। स्त्रीषु रूपमंश्विनैतन्नि धंत्तम्। पौइस्येनेमर सर सृंजाथो वीर्येण॥६१॥

स्त्रीषु रूपमिश्वेनेतित्रे धत्तम्। पोइस्येनेम र सर सृजाथी वीयेण॥६१॥ अवासाग्दीक्षा विश्विनी ह्यंग्राऽदंशाद्ववर्ज् वप र स्ते द्वे चं॥————[१७]

इन्द्रं वै स्वाविशों मरुतो नापांचायन्। सोऽनंपचाय्यमान एतं विंघनमंपश्यत्।

तमाऽहरत्। तेनायजता तेनैवासान्त स् सई स्तम्भं व्यंहन्। यद्यहन्। तिर्द्विघनस्यं विघन्त्वम्। वि पाप्मानं भ्रातृंव्य स् हते। य एतेन् यजते। य उं चैनमेवं वेदं॥६२॥ य राजांनं विशो नाप्चायंयुः। यो वा ब्राह्मणस्तमंसा पाप्मना प्रावृंतः स्यात्। स एतेनं यजेत। विघनेनैवैनंद्विहत्यं। विशामाधिपत्यं गच्छति। तस्य द्वे द्वांदशे

स्वाविशों बुलि १ हर्रन्ति॥६३॥ हर्रन्त्यस्मै विशों बुलिम्। ऐनुमप्रंतिख्यातं गच्छति। य एवं वेदं। प्रबाहुग्वा अग्रैं क्षत्राण्यातेपुः। तेषामिन्द्रः क्षत्राण्यादंत्त। न वा इमानिं क्षत्राण्यंभूवन्नितिं।

स्तोत्रे भवंतः। द्वे चंतुर्वि १ शे। औद्भिंद्यमेव तत्। एतद्वे क्षत्रस्यौद्भिंद्यम्। यदंस्मै

तन्नक्षंत्राणां नक्षत्रत्वम्। आ श्रेयंसो भ्रातृंव्यस्य तेजं इन्द्रियं दंत्ते। य एतेन् यजंते। य उं चैनमेवं वेदं॥६४॥

तद्यथां हु वै संचिक्तिणों कप्लंकावुपावंहितों स्यातांम्। एवमेतो युग्मन्तों स्तोमौं। अयुक्षु स्तोमेंषु क्रियेते। पाप्मनोऽपंहत्ये। अपं पाप्मानं भ्रातृंव्य हते। य एतेन यजंते। य उं चैनमेवं वेदं। तद्यथां हु वै सूंतग्रामण्यंः। एवं छन्दा स्ति। तेष्वसावांदित्यो बृंहतीरभ्यूंढः॥६५॥

त्रिवृद्यदाँग्नेयोँऽग्निमुंखा ह्युद्धिर्यदाँग्नेय आँग्नेयो न वै सोमेंनु यो वै सोमेंनैष गोंसुवः सि्र्हेंऽभि प्रेहिं मित्रवर्धनः

प्रजापंतिस्ता ओंद्नं प्रजापंतिरकामयत बहोर्भूयांनगस्त्योस्या जरांस्सितश्च हरीं प्रजापंतिः पुशून्व्याघ्रोऽयम्भिप्रेहिं वृत्रहन्तमो

ये केशिन इन्द्रं वा अष्टादंश॥१८॥

त्रिवृद्यो वै सोमेनायुरिस बहुर्भवित तिष्ठा हरीरथ आयं भांतु तेभ्यों निधान पट्थ्यंष्टिः॥६६॥

त्रिवृत्पाप्मनों नुदते॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयज्ञ्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टमः प्रश्नः॥

॥तैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्ट्रके अष्टमः प्रपाठकः॥

पीवों त्रार रियवृधंः सुमेधाः। श्वेतः सिंषिक्ति नियुतांमिभिश्रीः। ते वायवे समंनसो वितंस्थुः। विश्वेत्ररंः स्वपत्यानि चक्रः। रायेऽन् यञ्जजतू रोदंसी उभे। राये देवी धिषणां धाति देवम्। अधां वायुं नियुतंः सश्चत स्वाः। उत श्वेतं वस्ंधितिन्निरेके। आ वायो प्र याभिः। प्र वायुमच्छां बृहती मंनीषा॥१॥

बृहद्रंयिं विश्ववाराः रथप्राम्। द्युतद्यांमा नियुतः पत्यंमानः। कृविः कृविमियक्षसि प्रयज्यो। आ नो नियुद्धिः शृतिनीभिरध्वरम्। सहस्रिणीभिरुपं याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन् हृविषि मादयस्व। यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः। प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः। विश्वां जातानि परि ता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तं नो अस्तु॥२॥

व्यः स्याम् पतंयो रयीणाम्। रयीणां पतिं यज्ततं बृहन्तम्। अस्मिन्भरे नृतंमं

वार्जसातौ। प्रजापंतिं प्रथम्जामृतस्यं। यजांम देवमधिं नो ब्रवीतु। प्रजापते त्विन्निधिपाः पुराणः। देवानां पिता जनिता प्रजानाम्। पतिर्विश्वस्य जगंतः परस्पाः।

परावतों निवतं उद्वतंश्च। प्रजांपते विश्वसृज्जीवधंन्य इदं नों देव। प्रतिंहर्य

ह्विर्नो देव विह्वे जुंषस्व। तवेमे लोकाः प्रदिशो दिशंश्व॥३॥

ह्व्यम्। प्रजापंतिं प्रथमं यज्ञियांनाम्। देवानामग्रे यज्ततं यंजध्वम्। स नो ददातु द्रविण १ सुवीर्यम्। रायस्पोषुं वि ष्यंतु नाभिमस्मे। यो राय ईशे शतदाय उक्थ्यः। यः पंशूना १ रिक्षिता विष्ठितानाम्। प्रजापंतिः प्रथम्जा ऋतस्यं॥४॥

सहस्रंधामा जुषता १ ह्विर्नः। सोमांपूषणेमौ देवौ। सोमांपूषणा रजसो

सहस्रधामा जुषता हावनः। सामापूषणमा द्वा। सामापूषणा रजसा विमानम्। सप्तचंक्र रथमविश्वमिन्वम्। विष्वृवृतं मनसा युज्यमानम्। तं जिन्वथो वृषणा पश्चरिष्ठमम्। दिव्यन्यः सदेनं चक्र उच्चा। पृथिव्यामन्यो अध्यन्तिरक्षे। तावस्मभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुम्। रायस्पोषं विष्यंतान्नाभिमस्मे॥५॥ धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वः। र्यिर सोमो रिय्पतिर्दधातु। अवंतु देव्यदितिरन्वां। बृहद्वंदेम विदर्थे सुवीराः। विश्वान्यन्यो भुवना ज्जानं। विश्वमन्यो अभिचक्षांण एति। सोमांपूषणाववंतं धियं मे। युवभ्यां विश्वाः एतंना जयेम। उद्तुंत्तमं वंरुणास्तंभ्राद्याम्। यत्किं चेदं कित्वासः। अवं ते हेड्स्तत्त्वां यामि। आदित्यानामवंसा न दंक्षिणा। धारयंन्त आदित्यासंस्तिस्रो भूमीधारयन्। यज्ञो देवाना शृचिरपः॥६॥

ते शुक्रासः शुचंयो रिम्वन्तः। सीदंन्नादित्या अधि ब्रहिषिं प्रिये। कामेन देवाः स्रथं दिवो नः। आ यान्तु यज्ञमुपं नो जुषाणाः। ते सूनवो अदितेः पीवसामिषम्। घृतं पिन्वत्प्रतिहर्यन्नृतेजाः। प्र यज्ञिया यजमानाय येमुरे।

मनीषाऽस्तुं चर्तस्यास्मे किंतवासंश्चत्वारिं च॥

पृथिभिर्देवयानैः॥७॥ अस्मे कामं दाशुषे सन्नमंन्तः। पुरोडाशं घृतवंन्तं जुषन्ताम्। स्कुभायत्

आदित्याः कामं पितुमन्तंमस्मे। आ नः पुत्रा अदितेर्यान्तु युज्ञम्। आदित्यासंः

निर्ऋति सेधतामंतिम्। प्र रिश्मिभिर्यतंमाना अमृधाः। आदित्याः काम् प्रयंतां वर्षद्वृतिम्। जुषध्वं नो ह्व्यदांतिं यजत्राः। आदित्यान्काममवंसे हुवेम। ये भूतानिं जनयंन्तो विचिख्युः। सीदंन्तु पुत्रा अदितेरुपस्थम्। स्तीर्णं बर्हिर्हंविरद्यांय देवाः॥८॥

स्तीर्णं बर्हिः सीदता युज्ञे अस्मिन्। ध्राजाः सेधन्तो अमंतिं दुरेवाम्। अस्मभ्यं प्राप्ता अदितेः प्र राष्ट्रेस्य। अदितेराः काम् दिवर्षे जन्माः। असे नर्थं स्पार्थः

पुत्रा अदितेः प्र यर्श्सत। आदित्याः कामं ह्विषों जुषाणाः। अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान्। विश्वांनि देव वयुनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मञ्जंहुराणमेनः। भूयिष्ठान्ते नमं उक्तिं विधेम। प्र वंः शुक्रायं भानवे भरध्वम्। ह्व्यं मृतिं चाग्नये सुपूतम्॥९॥ यो दैव्यांनि मानुंषा जनूर्श्षं। अन्तर्विश्वांनि विद्याना जिगांति। अच्छा गिरों मृतयों देवयन्तीः। अग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षंमाणाः। सुसन्दश्रं सुप्रतींक्र्ं स्वश्रम्ं। ह्व्यवाहंमर्तिं मानुंषाणाम्। अग्ने त्वम्समद्यंयोध्यमीवाः। अनिग्नेत्रा अभ्यंमन्त कृष्टीः। पुनर्स्मभ्यरं सुवितायं देव। क्षां विश्वंभिर्जरंभिर्यजत्र॥१०॥

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्। स्वस्तिभिरतिं दुर्गाणि विश्वां। पूर्श्वं पृथ्वी बंहुला नं उर्वी। भवां तोकाय तनयाय शं योः। प्रकारवो मन्ना वच्यमानाः। देवद्रीचीं नयथ देवयन्तः। दक्षिणावाङ्वाजिनी प्राच्येति। ह्विभरंन्त्यग्नये घृताचीं। इन्द्रं नरों युजे रथम्ं। जुगृभ्णाते दक्षिणिमन्द्र हस्तम्॥११॥

वसूयवों वसुपते वसूनाम्। विद्मा हि त्वा गोपंति । शूर गोनाम्। अस्मभ्यं चित्रं वृषंण १ रियन्दाः। तवेदं विश्वमितिः पशव्यम्। यत्पश्यंसि चक्षंसा सूर्यस्य। गर्वामिस गोपंतिरेकं इन्द्र। भक्षीमिहं ते प्रयंतस्य वस्वः। सिमन्द्र णो मनसा नेषि गोभिः। स॰ सूरिभिर्मघवन्थ्सः स्वस्त्या। सं ब्रह्मणा देवकृतं यदस्ति॥१२॥ सं देवाना र सुमृत्या युज्ञियांनाम्। आराच्छत्रुमपं बाधस्व दूरम्। उग्रो यः शम्बंः पुरुह्त तेनं। अस्मे धेंहि यवंमुद्गोमंदिन्द्र। कुधीधियं जरित्रे वाजंरलाम्। आ वेधसूर स हि शुचिं। बृहस्पतिः प्रथमं जार्यमानः। महो ज्योतिषः पर्मे व्योमन्। सप्तास्यंस्तुविजातो खेंण। वि सप्तरंश्मिरधमृत्तमा र्रसि॥१३॥

बृह्स्पतिः समंजयद्वसूनि। महो व्रजान्गोमंतो देव एषः। अपः सिषांस्-श्स्वरप्रंतीत्तः। बृह्स्पतिर्हन्त्यमित्रंमकैंः। बृह्स्पते पर्येवा पित्रे। आ नो दिवः पावीरवी। इमा जुह्वांना यस्ते स्तनंः। सरंस्वत्यभि नो नेषि। इय श्रुष्मेंभिर्विस्खा इंवारुजत्। सानुं गिरीणान्तंविषेभिरूर्मिभैः। पारावद्घीमवंसे सुवृक्तिभिः। सरंस्वतीमा विवासेम धीतिभिः॥१४॥

सोमों धेनु सोमो अर्वन्तमाशुम्। सोमों वीरं कर्मण्यं ददातु। साद्रन्यं विद्थ्य स् सभेयम्। पितुः श्रवंणं यो ददांशदस्मे। अषांढं युथ्सु त्व सोम् ऋतुंभिः। या ते धामांनि ह्विषा यर्जन्ति। त्विममा ओषंधीः सोम् विश्वाः। त्वम्पो अंजनयस्त्वङ्गाः। त्वमातंतन्थोर्वन्तिरक्षम्। त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ॥१५॥

या ते धार्मानि दिवि या पृथिव्याम्। या पर्वतेष्वोषंधीष्वपसु। तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहेडन्। राजैन्थ्सोम् प्रति ह्व्या गृंभाय। विष्णोर्नुकं तदंस्य प्रियम्। प्र तद्विष्णुंः। पुरो मात्रया तुनुवां वृधान। न ते मिह्त्वमन्वंश्जुवन्ति। उभे ते विद्य रजंसी पृथिव्या विष्णों देव त्वम्। पुरमस्यं विथ्से॥१६॥

विचंक्रमे त्रिर्देवः। आ ते महो यो जात एव। अभि गोत्राणि। आभिः स्पृधीं मिथतीररिषण्यन्। अमित्रंस्य व्यथया मृन्युमिन्द्र। आभिर्विश्वां अभियुजो विषूंचीः। आर्याय विशोवंतारीर्दासीः। अय शृण्वे अध जयंत्रुत घ्रन्। अयमुत प्र कृणते युधा गाः। यदा सत्यं कृणते मृन्युमिन्द्रः॥१७॥

विश्वं दृढं भयत् एजंदस्मात्। अनुं स्वधामंक्षर्न्नापों अस्य। अवर्धत् मध्य आ नाव्यानाम्। सुधीचीनेन मनसा तिमेन्द्र ओजिष्ठेन। हन्मेनाहन्नभिद्यून्। मुरुत्वंन्तं वृष्भं वांवृधानम्। अकंवारिं दिव्य शासिमन्द्रम्। विश्वासाह्मवसे नूतंनाय। उग्रश् सहोदामिह तश्हुंवेम। जिनेष्ठा उग्रः सहंसे तुरायं॥१८॥

मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः। अवधिन्निन्द्रं म्रुतिश्चिदत्रं। माता यद्वीरं दुधनुद्धिनेष्ठा। क्वंस्यावो मरुतः स्वधाऽऽसीत्। यन्मामेकर्रं सुमर्धत्ताहिहत्यै।

अह इ ह्युंग्रस्तंविषस्तुविष्मान्। विश्वंस्य शत्रोरनंमं वध्स्रैः। वृत्रस्यं त्वा श्वसथा दीषंमाणाः। विश्वं देवा अंजहुर्ये सर्खायः। मुरुद्धिरिन्द्र सुख्यं ते अस्तु॥१९॥

अथेमा विश्वाः पृतंना जयासि। वधीं वृत्रं मंरुत इन्द्रियेणं। स्वेन भामेन तविषो

बंभूवान्। अहमेता मनंवे विश्वश्चंन्द्राः। सुगा अपश्चंकर् वर्ज्ञंबाहुः। स यो वृषा् वृष्णियेभिः समोकाः। महो दिवः पृथिव्याश्चं सम्राट्। सतीनसंत्वा हव्यो भरेषु। मरुत्वां नो भवत्विन्द्रं ऊती। इन्द्रों वृत्रमंतरद्वृत्रत्र्ये॥२०॥ अनाधृष्यो मुघवा शूर इन्द्रेः। अन्वेनं विशो अमदन्त पूर्वीः। अय॰ राजा जगंतश्चर्षणीनाम्। स एव वीरः स उं वीर्यावान्। स एकराजो जगंतः परस्पाः।

यदा वृत्रमतंरुच्छूर इन्द्रं। अथाभवद्दमिताभिक्रंतूनाम्। इन्द्रो युज्ञं वर्धयंन्विश्ववंदाः।

पुरोडाशंस्य जुषता हिर्विनः। वृत्रं तीत्वी दीन्वं वर्ज्रंबाहुः॥२१॥ दिशोऽह हह हिता ह हैणेन। इमं यज्ञं वर्धयंन्विश्ववेदाः। पुरोडाशं प्रतिं गृभ्णात्विन्द्रः। यदा वृत्रमतंरच्छूर् इन्द्रः। अथैकराजो अभवज्ञनानाम्। इन्द्रों देवाञ्छंम्बर्हत्यं आवत्। इन्द्रों देवानांमभवत्पुरोगाः। इन्द्रों युज्ञे हविषां वावृधानः। वृत्रतूर्नो अभेयु शर्म य स्तत्। यः सप्त सिन्धू रदेधात्पृथिव्याम्। यः सप्त लोकानकृणोदिशंश्व। इन्द्रों हुविष्मान्थ्सगंणो मुरुद्भिः। वृत्रुतूर्नो यज्ञमिहोपं

यासत्॥२२॥ ववर्थ विथ्म इन्द्रंस्तुरायाँस्तु वृत्रुतूर्ये वर्ज्नबाहुः पृथिव्यात्रीणि च॥

इन्द्रस्तरंस्वानभिमातिहोग्रः। हिरंण्यवाशीरिषि्रः सुंवर्षाः। तस्यं वय सुंमृतौ युज्ञियंस्य। अपि भुद्रे सौमनुसे स्याम। हिरंण्यवर्णो अभयं कृणोतु। अभिमातिहेन्द्रः पृतंनासु जिष्णुः। स नः शर्म त्रिवरूथं वि यर्सत्। यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः। इन्द्रई स्तुहि वुज्रिणुङ् स्तोमंपृष्ठम्। पुरोडाशंस्य जुषता १ हिवर्नः॥२३॥

हुत्वाभिमांतीः पृतंनाः सहंस्वान्। अथाभयं कृणुहि विश्वतो नः। स्तुहि शूरं विज्रिणमप्रतीत्तम्। अभिमातिहनं पुरुहूतिमन्द्रम्। य एक इच्छ्तपंतिर्जनेषु।

तस्मा इन्द्रांय हविरा जुंहोत। इन्द्रों देवानांमधिपाः पुरोहितः। दिशां

रयिन्दांत्॥२४॥

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

पतिंरभवद्वाजिनींवान्। अभिमातिहा तंविषस्तुविंष्मान्। अस्मभ्यंं चित्रं वृषंण ४

य इमे द्यावांपृथिवी मंहित्वा। बलेनाद ईहदभिमातिहेन्द्रंः। स नों हविः प्रतिं

गृभ्णातु रातयें। देवानां देवो निधिपा नो अव्यात्। अनंवस्ते रथं वृष्णे यत्तें।

इन्द्रंस्य नु वीर्याण्यहन्नहिम्। इन्द्रो यातोऽवंसितस्य राजां। शमंस्य च शृङ्गिणो

अभि सिध्मो अंजिगादस्य शत्रून्। वितिग्मेनं वृषभेणा पुरोभेत्। सं

वर्जेणासृजद्वृत्रमिन्द्रंः। प्र स्वां मृतिमंतिरुच्छाशंदानः। विष्णुं देवं वर्रणमूतये

भगम्। मेदंसा देवा वपयां यजध्वम्। ता नो यज्ञमागंतं विश्वधेना। प्रजावंदस्मे

द्रविंगेह धंत्तम्। मेदंसा देवा वपयां यजध्वम्। विष्णुं च देवं वर्रुणं च रातिम्॥२६॥

ता नो अमीवा अप बार्धमानौ। इमं युज्ञं जुषमाणावुपेतम्। विष्णूवरुणा

वर्ज्रबाहुः। सेदु राजाँ क्षेति चर्षणीनाम्। अरान्न नेमिः परि ता बंभूव॥२५॥

युवर्मध्वरायं नः। विशे जनांय मिह शमं यच्छतम्। दीर्घप्रंयज्यू हिवषां वृधाना। ज्योतिषाऽरांतीर्दहत्नतमा रसि। ययोरोर्जसा स्किभिता रजा रसि। वीर्येभिर्वीरतमा शिविष्ठा। याऽपत्ये ते अप्रंतीत्ता सहोभिः। विष्णूं अगुन्वरुंणा पूर्वहूंतौ॥२७॥ विष्णूंवरुणावभिशस्तिपावांम्। देवा यंजन्त हिवषां घृतेनं। अपामीवार सेधतर

रक्षसंश्च। अथाधत्तं यजमानाय शं योः। अर्होम्चां वृष्भा सुप्रतूर्ती। देवानां देवतमा शिचेष्ठा। विष्णूंवरुणा प्रतिहर्यतन्नः। इदं नरा प्रयंतमूतये ह्विः। मही नु द्यावापृथिवी इह ज्येष्ठें। रुचा भवतार शुचयंद्भिर्कैः॥२८॥
यथ्सीं विरेष्ठे बृहती विमिन्वन्। नृवद्योक्षा पंप्रथानेभिरेवैः। प्रपूर्वजे पितरा

यथ्सीं वरिष्ठे बृह्ती विमिन्वन्। नृवद्भोक्षा पंप्रथानेभिरेवैंः। प्रपूर्विजे पितरा नव्यंसीभिः। गीर्भिः कृणुध्व सदेने ऋतस्यं। आ नौ द्यावापृथिवी दैव्येन। जनेन यातं मिहे वां वरूथम्। स इथ्स्वपा भुवनेष्वास। य इमे द्यावापृथिवी जजानं। उर्वी गंभीरे रजंसी सुमेकैं। अव शोरा शच्या समैरत्॥२९॥

भूरिं द्वे अचेरन्ती चरेन्तम्। पृद्वन्तं गर्भमुपदींदधाते। नित्यं न सूनुं पित्रोरुपस्थैं।

तं पिंपृत रोदसी सत्यवाचम्। इदं द्यांवापृथिवी सत्यमंस्तु। पितर्मातर्यदिहोपं

ब्रुवे वाम्। भूतं देवानामवमे अवोभिः। विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्। उर्वी पृथ्वी बंहुले दूरे अंन्ते। उपं ब्रुवे नमंसा यज्ञे अस्मिन्। दर्धाते ये सुभगें सुप्रतूँर्ती। द्यावा रक्षेतं पृथिवी नो अभ्वात्। या जाता ओषंधयोऽति विश्वाः परिष्ठाः। या ओषंधयः सोमंराज्ञीरश्वावती । सोमवतीम्। ओषंधीरितिं मातरोऽन्या वो अन्यामंवतु॥३०॥ ह्विर्नो दाद्भभूव रातिं पूर्वहूंतावुकैरैरदस्मिन्पर्श्व च॥ शुचिं नु स्तोम् इ श्वर्थद्वृत्रम्। उभा वांमिन्द्राग्नी प्र चंर्षणिभ्यः। आ वृंत्रहणा गीर्भिर्विप्रः। ब्रह्मणस्पते त्वमस्य यन्ता। सूक्तस्यं बोधि तनयं च जिन्व। विश्वं तद्भद्रं यद्वन्तिं देवाः। बृहद्वंदेम विदथें सुवीरौः। स ई र् स्त्येभिः सर्खिभिः शुचिद्भेः।

घर्मस्वेदेभिर्द्रविणं व्यानट्। ब्रह्मणस्पतेरभवद्यथावृशम्। सृत्यो मृन्युर्मिह् कर्मा करिष्यतः। यो गा उदाज्रथ्म दिवे वि चांभजत्। मृहीवं रीतिः शवंसा सर्त्पृथंक्।

गोधांयसं विधंनसैरंतर्दत्। ब्रह्मंणस्पतिर्वृषंभिर्वराहैं:॥३१॥

इन्धांनो अग्निं वनवद्वनुष्यतः। कृतब्रह्मा शूशुवद्रातहं व्य इत्। जातेनं जातमित्सृत्प्र सृरंसते। यं युं युजंं कृणुते ब्रह्मणस्पतिः। ब्रह्मणस्पते सुयमस्य विश्वहाँ॥३२॥ रायः स्याम रथ्यो विवस्वतः। वीरेषुं वीरार उपपृक्षिः नस्त्वम्। यदीशांनो

ब्रह्मणा वेषि मे हवम्। स इज्जनेन स विशा स जन्मना। स पुत्रैर्वार्जं भरते धना नृभिः। देवानां यः पितरमा विवासति। श्रद्धामना ह्विषा ब्रह्मणस्पतिम्। यास्ते पूषत्रावो अन्तः। शुक्रं ते अन्यत्पूषेमा आशाः। प्रपंथे पृथामजनिष्ट पूषा॥३३॥

प्रपंथे दिवः प्रपंथे पृथिव्याः। उमे अभि प्रियतंमे स्थस्थैं। आ च परां च चरति प्रजानन्। पूषा सुबन्धंदिव आ पृथिव्याः। इडस्पतिंर्म्घवां दस्मवंचाः। तं देवासो अदंदः सूर्यायैं। कामेन कृतं त्वस्र स्वश्रम्। अजाऽश्वः पशुपा वाजंबस्त्यः। धियं जिन्वो विश्वे भुवंने अर्पितः। अष्ट्रां पूषा शिथिरामुद्वरींवृजत्॥३४॥

स्श्रक्षांणो भुवंना देव ईयते। शुचीं वो ह्व्या मंरुतः शुचींनाम्। शुचिर्र हिनोम्यध्वरर शुचिंभ्यः। ऋतेनं सत्यमृत्सापं आयन्। शुचिंजन्मानः शुचंयः पावकाः। प्र चित्रमुकं गृणते तुरायं। मारुताय स्वतंवसे भरध्वम्। ये सहा रेसि

सहंसा सहंन्ते। रेजंते अग्ने पृथिवी मुखेभ्यंः। अश्सेष्वा मंरुतः खादयों वः॥३५॥ वक्षंः सुरुक्ता उपं शिश्रियाणाः। वि विद्युतो न वृष्टिभी रुचानाः। अनुं स्वधामायुंधैर्यच्छंमानाः। या वः शर्म शशमानाय सन्ति। त्रिधातूंनि दाशुषं

यच्छुताधि। अस्मभ्यं तानि मरुतो वियन्त। र्यिं नो धत्त वृषणः सुवीरम्। इमे

तुरं मुरुतों रामयन्ति। इमे सहः सहंस् आ नंमन्ति। इमे शश्संवनुष्यतो नि पौन्ति॥३६॥
गुरुद्वेषो अरंरुषे दधन्ति। अरा इवेदचंरमा अहंव। प्रप्रं जायन्ते अकंवा महोभिः।
पृश्वेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः। स्वयां मृत्या मुरुतः सं मिमिक्षुः। अनुं ते दायि
मह इन्द्रियायं। सत्रा ते विश्वमनुं वृत्रहत्यें। अनुं क्षुत्रमनु सहों यजत्र। इन्द्रं

शिक्षा सर्खिभ्यः पुरुहूत् नृभ्यः। त्व १ हि दृढा मंघवृन्विचेताः। अपांवृधि परिवृतिं

देवेभिरनुं ते नृषह्यै। य इन्द्र शुष्मों मघवन्ते अस्ति॥३७॥

न रार्थः। इन्द्रो राजा जगंतश्चर्षणीनाम्। अधिक्षमि विषुरूपं यदस्ति। ततो ददातु दाशुषे वसूनि। चोदद्राध् उपंस्तुतिश्चदर्वाक्। तमुष्टिहि यो अभिभूत्योजाः। वन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रेः। अषांढमुग्रं सहंमानमाभिः॥३८॥

गीर्भिर्वर्ध वृष्मं चंर्षणीनाम्। स्थूरस्यं रायो बृंह्तो य ईशैं। तम् ष्टवाम विद्येष्विन्द्रम्। यो वायुना जयंति गोमंतीष्। प्र धृंष्णुया नंयति वस्यो अच्छं। आ ते शुष्मो वृष्म एंतु पृश्चात्। ओत्त्रादंधरागा पुरस्तात्। आ विश्वतो अभिसमेत्वर्वाङ्। इन्द्रं द्युम्न स्वंवर्धेह्यस्मे॥३९॥

वराहै विश्वहां ऽजिनष्ट पूषोद्वरीं वृजत्खादयों वः पान्त्यस्त्याभिर्नवं च॥

आ देवो यांतु सिवता सुरत्नः। अन्तिरिक्षप्रा वहंमानो अश्वैः। हस्ते दर्धानो नर्या पुरूणि। निवेशयं च प्रसुवं च भूमे। अभीवृतं कृशंनैर्विश्वरूपम्। हिरंण्यशम्यं यज्तो बृहन्तम्। आस्थाद्रथरं सिवता चित्रभानः। कृष्णा रजारंसि तिवेषीं दर्धानः। सर्घा नो देवः संविता सवायं। आ सांविषद्वसुंपतिर्वसूनि॥४०॥

विश्रयंमाणो अमंतिमुरूचीम्। मूर्तभोजंनमधंरासतेन। विजनाँञ्छावाः शितिपादों अख्यन्। रथ्रु हिरंण्यप्रउगं वहंन्तः। शश्विद्दशंः सिवृतुर्देव्यंस्य। उपस्थे विश्वा भुवंनानि तस्थः। वि सुंपूर्णो अन्तरिक्षाण्यख्यत्। गृभीरवेपा असुंरः सुनीथः। क्वेदानीर् सूर्यः कश्चिकेत। कृतमान्द्यार रिश्मर्स्या तंतान॥४१॥ भगं धियं वाजयंन्तः पुरंन्धिम्। नराशरसो ग्रास्पतिनी अव्यात्। आ ये वामस्यं

सङ्ग्थे रंयीणाम्। प्रिया देवस्यं सिवृतुः स्याम। आ नो विश्वे अस्क्रांगमन्तु देवाः। मित्रो अंर्यमा वरुणः स्जोषाः। भुवन् यथां नो विश्वे वृधासः। करंन्थ्सुषाहां विथुरं न शवंः। शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु। श॰ सरंस्वती सह धीभिरंस्तु॥४२॥

शर्मभिषाचः शर्मु रातिषाचः। शं नो दिव्याः पार्थिवाः शं नो अप्याः। ये संवितः सत्यसंवस्य विश्वे। मित्रस्यं व्रते वरुणस्य देवाः। ते सौभंगं वीरवृद्गोमृदप्रः। दर्धातन् द्रविणं चित्रम्स्मे। अग्ने याहि दूत्यं वारिषेण्यः। देवा अच्छा ब्रह्मकृतां गुणेनं। सर्रस्वतीं मुरुतो अश्विनापः। युक्षि देवात्रं ब्रध्यायं विश्वान्॥४३॥

द्यौः पितः पृथिवि मातरध्रुंक्। अग्नै भ्रातर्वसवो मृडतां नः। विश्वं आदित्या

अदिते सुजोषाः। अस्मभ्यु शर्म बहुलं वि यन्ता विश्वे देवाः शृणुतेम १ हवं मे। ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ। ये अग्निजिह्वा उत वा यजंत्राः। आसद्यास्मिन्बर्हिषिं मादयध्वम्। आ वां मित्रावरुणा हव्यजुंष्टिम्। नर्मसा देवाववंसाऽऽववृत्याम्॥४४॥ अस्माकं ब्रह्म पृतंनासु सह्या अस्माकम्। वृष्टिर्दिव्या सुपारा। युवं वस्त्रांणि पीवसा वंसाथे। युवोरच्छिंद्रा मन्तंवो ह सर्गाः। अवांतिरतमनृंतानि विश्वाः। ऋतेनं मित्रावरुणा सचेथे। तथ्सु वां मित्रावरुणा महित्वम्। ईुर्मा तुस्थुषीरहंभिर्दुदुह्ने। विश्वाः पिन्वथं स्वसंरस्य धेनाः। अनुं वामेकः पविरा वंवर्ति॥४५॥

यद्व १ हिष्ठन्नाति विदे सुदान्। अच्छिंद्र १ शर्म भुवंनस्य गोपा। ततों नो मित्रावरुणाववीष्टम्। सिषांसन्तो जीगिवा १ संः स्याम। आ नो मित्रावरुणा ह्व्यदांतिम्। घृतैर्गव्यूंतिमुक्षत्मिडांभिः। प्रतिं वामत्र वर्मा जनांय। पृणीतमुद्रो दिव्यस्य चारौंः। प्र बाहवां सिसृतं जीवसें नः। आ नो गव्यूंतिमुक्षतं घृतेनं॥ ४६॥

वर्सूनि ततानास्तु विश्वान् ववृत्यां ववर्ति घृतेन् विषूचीः श्रुतन्द्वे चं॥=

अर्हन्बिभर्षि मा नंस्तोके। आ ते पितर्मरुता स्मुम्नेत्। मा नः सूर्यस्य स्न्हशो युयोथाः। अभि नो वीरो अर्वति क्षमेत। प्र जांयेमिह रुद्र प्रजाभिः। एवा बंभ्रो वृषभ चेकितान। यथां देव न हंणी्षे न हर्श्से। हावन्श्रूनों रुद्रेह बोधि। बृहद्वंदेम विदथे सुवीराः। परि णो रुद्रस्यं हेतिः स्तुहि श्रुतम्। मीढुंष्ट्रमार्हंन्बिभर्षि। त्वमंग्ने रुद्र आ वो राजांनम्॥४८॥

सूर्यो देवीमुषस् रोचंमानामर्यः। न योषांमुभ्यंति पृश्चात्। यत्रा नरो देवयन्तो

युगानि। वितन्वते प्रतिं भुद्रायं भुद्रम्। भुद्रा अश्वां हरितः सूर्यस्य। चित्रा एदंग्वा

आ नो जनें श्रवयतं युवाना। श्रुतं में मित्रावरुणा हवेमा। इमा रुद्रायं

स्थिरधंन्वने गिरंः। क्षिप्रेषंवे देवायं स्वधाम्नें। अषांढाय सहंमानाय मीढुषें।

तिग्मायुधाय भरता शृणोतंन। त्वादंत्तेभी रुद्र शन्तंमेभिः। शत हिमां अशीय

भेषजेभिः। व्यंस्मद्वेषों वितरं व्य॰ हंः। व्यमीवा इश्चातयस्वा विषूंचीः॥४७॥

अनुमाद्यांसः। नुमस्यन्तों दिव आ पृष्ठमंस्थुः। परि द्यावांपृथिवी यंन्ति सद्यः। तथ्सूर्यस्य देवृत्वं तन्मंहित्वम्। मुध्या कर्तोवितंतु सञ्जभार॥४९॥

यदेदयुंक्त हरितः सुधस्थात्। आद्रात्री वासंस्तनुते सिमस्मै। तन्मित्रस्य

वर्रणस्याभिचक्षै। सूर्यो रूपं कृणुते द्योरुपस्थै। अनन्तमन्यद्रुशंदस्य पार्जः।

कृष्णमृन्यद्धरितः सं भेरन्ति। अद्या देवा उदिता सूर्यस्य। निर॰हंसः पिपृतान्निरंवद्यात्। तन्नो मित्रो वर्रणो मामहन्ताम्। अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः॥५०॥
दिवो रुका उरुचक्षा उदेति। दूरे अर्थस्तरणिभ्राजिमानः। नूनं जनाः सूर्येण प्रस्ताः। आयन्नर्थानि कृणवन्नपा स्ति। शं नो भव चक्षंसा शं नो अहाँ। शं भानुना

आप्रा द्यावांपृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्यं आत्मा जर्गतस्त्रस्थुषेश्च। त्वष्ट्

श हिमा शं घृणेनं। यथा शमस्मै शमसंदुरोणे। तथ्सूर्य द्रविणं धेहि चित्रम्।

चित्रं देवानामुदंगादनीकम्। चक्षुंर्मित्रस्य वर्रुणस्याग्नेः॥५१॥

दधत्तन्नंस्तुरीपम्। त्वष्टां वीरं पिशङ्गंरूपः। दशेमन्त्वष्टुंर्जनयन्त गर्भम्। अतंन्द्रासो

युवतयो बिर्भर्त्रम्। तिग्मानीक इस्वयंशसं जनेषु। विरोचंमानं परिषीन्नयन्ति। आविष्ट्यों वर्धते चार्रुरासु। जिह्मानांमूर्ध्वस्वयंशा उपस्थैं॥५२॥ उभे त्वष्टुंर्बिभ्यतुर्जायंमानात्। प्रतीचीं सि॰हं प्रतिंजोषयेते। मित्रो जनान्प्र स मित्र। अयं मित्रो नंमस्यः सुशेवः। राजां सुक्षत्रो अंजनिष्ट वेधाः। तस्यं वय र सुंमतौ यज्ञियंस्य। अपिं भद्रे सौंमनसे स्यांम। अनमीवास इडंया मदंन्तः। मितज्मंवो वरिमन्ना पृथिव्याः। आदित्यस्यं व्रतमुपक्ष्यन्तंः॥५३॥

वयं मित्रस्यं सुमतौ स्यांम। मित्रं न ई॰ शिम्या गोषुं गव्यवंत्। स्वाधियों विदथें अपस्वजींजनन्। अरंजयता र रोदंसी पार्जसा गिरा। प्रति प्रियं यंजतं जनुषामवः। महा । अदित्यो नर्मसोप्सद्यः। यात्यञ्जनो गृण्ते सुशेवः। तस्मा पुतत्पन्यंतमाय जुष्टम्। अग्नौ मित्रायं हिवरा जुहोत। आ वार् रथो रोदंसी बद्धधानः॥५४॥

हिर्ण्ययो वृषंभिर्यात्वश्वैः। घृतवंर्तनिः पविभीरुचानः। इषां

नृपतिर्वाजिनीवान्। स पंप्रथानो अभि पश्च भूमं। त्रिवन्धुरो मन्सायांतु युक्तः। विशो येन् गच्छंथो देवयन्तीः। कुत्रां चिद्यामंमिश्वना दर्धाना। स्वश्वां यशसाऽऽयांतम्वांक्। दस्रां निधिं मधुंमन्तं पिबाथः। वि वा रू रथों वध्वां यादंमानः॥५५॥

अन्तौं दिवो बांधते वर्तनिभ्यौम्। युवोः श्रियं परि योषांवृणीत। सूरों दुहिता

परितिक्यियायाम्। यद्देवयन्तमवंथः शचीिभः। परिघ्रः सवां मनांवां वयोगाम्। यो ह्स्यवारं रिथरावस्तं उस्राः। रथो युजानः परियाति वर्तिः। तेनं नः शं योरुषसो व्युष्टौ। न्यंश्विना वहतं यज्ञे अस्मिन्। युवं भुज्युमवंविद्धः समुद्रे॥५६॥ उदूहथुर्रणसो अस्रिधानैः। प्तित्रिभिरश्रमैरंव्यथिभिः। दःसनांभिरश्विना पारयंन्ता। अग्नीषोमा यो अद्य वाम्। इदं वचः सप्यतिं। तस्मै धत्तः सुवीर्यम्। गवां पोषः स्वश्वियम्। यो अग्नीषोमां हिवषां सपर्यात्। देवद्रीचा मनसा यो

घृतेनं। तस्यं व्रत रक्षतं पातम १ हंसः॥ ५ ७॥

विशे जनांय मिह् शर्म यच्छतम्। अग्नीषोमा य आहुंतिम्। यो वां दाशाँद्धविष्कृंतिम्। स प्रजयां सुवीर्यम्। विश्वमायुर्व्यश्वत्। अग्नीषोमा चेति तद्धीर्यं वाम्। यदमुंष्णीतमवसं पणिङ्गोः। अवांतिरतं प्रथंयस्य शेषंः। अविन्दतं ज्योतिरकं बहुभ्यः। अग्नीषोमाविम १ सु मेऽग्नीषोमा हुविषः प्रस्थितस्य॥५८॥ जुभार बौर्भ्रेष्ट्पस्थं उपक्ष्यन्ती बद्धधानो वृष्वां यादमानः समुद्रेऽ१हंसः प्रस्थितस्य॥————[७]

अहमंस्मि प्रथम्जा ऋतस्यं। पूर्वं देवेभ्यां अमृतंस्य नाभिः। यो मा ददांति स इदेव माऽऽवाः। अहमन्नमन्नमदन्तंमिद्मा। पूर्वमग्नेरिपं दहृत्यन्नम्। यत्तौ हांसाते अहमुत्तरेषुं। व्यात्तंमस्य पृशवः सुजम्भम्। पश्यंन्ति धीराः प्रचरित् पाकाः। जहाँम्यन्यन्न जंहाम्यन्यम्। अहमन्नं वशिमचंरामि॥५९॥

समानमर्थं पर्येमि भुञ्जत्। को मामन्नं मनुष्यो दयेत। पर्गके अन्नं निहितं लोक पृतत्। विश्वैर्देवैः पितृभिर्गुप्तमन्नम्। यद्द्यते लुप्यते यत्परोप्यते॥ शृतत्मी सा तुनूर्मे बभूव। महान्तौं चुरू संकृद्धुग्धेनं पप्रौ। दिवंं च पृश्चिं पृथिवीं च साकम्। तथ्सम्पिबंन्तो न मिनन्ति वेधसंः। नैतद्भूयो भवंति नो कनीयः॥६०॥

अर्न्न प्राणमन्नमपानमांहुः। अर्न्न मृत्युं तमुं जीवातुंमाहुः। अर्न्न ब्रह्माणों जरसं

वदन्ति। अन्नमाहुः प्रजनंनं प्रजानांम्। मोघमन्नं विन्दते अप्रंचेताः। सृत्यं ब्रंवीमि वध इथ्स तस्यं। नार्यमणं पुष्यंति नो सखायम्। केवंलाघो भवति केवलादी। अहं मेघः स्तृनयन्वर्षन्नस्मि। मामदन्त्यहमंद्रयन्यान्॥६१॥ अह॰ सद्मृतों भवामि। मदांदित्या अधि सर्वे तपन्ति। देवीं वाचंमजनयन्त् यद्वाग्वदंन्ती। अनुन्तामन्तादिध निर्मितां महीम्। यस्यां देवा अदधुर्भोजनानि। एकांक्षरां द्विपदा॰ षद्दंदां च। वाचं देवा उपं जीवन्ति विश्वः। वाचं देवा उपं

जीवन्ति विश्वै। वार्चं गन्ध्वाः पृशवों मनुष्यौः। वाचीमा विश्वा भुवंनान्यर्पिता॥६२॥ सा नो हवंं जुषतामिन्द्रंपत्नी। वागुक्षरं प्रथमुजा ऋतस्यं। वेदांनां माता- अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

यामृषंयो मञ्चकृतों मनीषिणः। अन्वैच्छं देवास्तपंसा श्रमेण। तान्देवीं वाच र हिविषां यजामहे। सा नों दधातु सुकृतस्यं लोके। चत्वारि वाक्परिमिता पदानि॥६३॥ तानिं विदुर्बाह्मणा ये मंनीषिणः। गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गंयन्ति। तुरीयं वाचो मंनुष्यां वदन्ति। श्रद्धयाऽग्निः समिध्यते। श्रद्धयां विन्दते हिवः। श्रद्धां भगस्य

मूर्धिनिं। वच्सा वेदयामिस। प्रियः श्रें द्वे ददेतः। प्रियः श्रें द्वे दिदांसतः। प्रियं भोजेषु यज्वंसु॥६४॥ इदं में उदितं कृषि। यथां देवा असुरेषु। श्रृद्धामुग्रेषुं चित्रिरे। एवं भोजेषु यज्वंसु। अस्माकंमुदितं कृषि। श्रृद्धां देवा यजंमानाः। वायुगोपा उपांसते। श्रद्धाः ।

श्रुद्धां मध्यन्दिनं परि। श्रुद्धा॰ सूर्यस्य निम्नुचि। श्रद्धे श्रद्धांपयेह माँ। श्रुद्धा देवानिधं वस्ते। श्रुद्धा विश्वंमिदं जगत्। श्रुद्धां कार्मस्य मातरम्। हुविषां

ह्वंदय्यंयाऽऽकूत्या। श्रद्धयां ह्यते हविः। श्रद्धां प्रातर्ह्वामहे॥६५॥

वर्धयामसि। ब्रह्मं जज्ञानं प्रंथमं पुरस्तांत्। वि सीमृतः सुरुचों वेन आवः। स बुध्नियां उप मा अस्य विष्ठाः॥६६॥

स्तश्च योनिमसंतश्च विवंः। पिता विराजांमृष्भो रंयीणाम्। अन्तरिक्षं विश्वरूप् आविवेश। तमकेर्भ्यंचिन्ति वृथ्सम्। ब्रह्म सन्तुं ब्रह्मंणा वृधयंन्तः। ब्रह्मं देवानंजनयत्। ब्रह्म विश्वमिदं जगंत्। ब्रह्मंणः क्षुत्रं निर्मितम्। ब्रह्मं ब्राह्मण आत्मनां। अन्तरंस्मित्रिमे लोकाः॥६७॥

अन्तर्विश्वंमिदं जर्गत्। ब्रह्मैव भूतानां ज्येष्ठम्ँ। तेन कोऽर्हित स्पर्धितुम्। ब्रह्मेन्द्रेवास्त्रयंस्त्रि श्वत्। ब्रह्मेन्निन्द्रप्रजापती। ब्रह्मेन् हु विश्वां भूतानि। नावीवान्तः समाहिता। चतंस्र आशाः प्रचंरन्त्वग्नयः। इमं नो यज्ञं नयतु प्रजानन्। घृतं पिन्वंत्रजर्शं सुवीरम्॥६८॥

ब्रह्मं स्मिद्भंवत्याहुंतीनाम्। आ गावों अग्मन्नुत भ्रद्ममंत्रन्। सीदंन्तु गो्ष्ठे रणयंन्त्वस्मे। प्रजावंतीः पुरुरूपां इह स्युः। इन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहांनाः। इन्द्रो यज्वेने पृणते चे शिक्षति। उपेद्दंदाति न स्वं मुंषायति। भूयोभूयो रियमिदंस्य वर्धयन्। अभिन्ने खिल्ले नि दंधाति देवयुम्। न ता नंशन्ति न ता अर्वा॥६९॥ गावो भगो गाव इन्द्रों मे अच्छात्। गावः सोमंस्य प्रथमस्यं भक्षः। इमा या गावः सर्जनास् इन्द्रं। इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्। यूयं गांवो मेदयथा कृशं चित्। अश्रीलं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्। भुद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः। बृहद्वो वयं उच्यते सुभासुं। प्रजावंतीः सूयवंस १ रिशन्तीः। शुद्धा अपः सुप्रपाणे पिबंन्तीः। मा वंः स्तेन ईंशत् माऽघशर्रसः। परिं वो हेती रुद्रस्यं वृश्यात्। उपेदमुंपपर्चनम्। आसु गोषूपंपृच्यताम्। उपंर्षभस्य रेतंसि। उपेंन्द्र तवं वीर्ये॥७०॥

च्यामि कर्नीयोऽन्यानिषिता प्रवित् यज्वंस हवामहे विष्ठा लोकाः सुवीर्मर्वा पिवंन्तीः पद्वं॥———[८] ता सूँर्याचन्द्रमसां विश्वभृत्तंमा मृहत्। तेजो वसुंमद्राजतो दिवि। सामात्माना चरतः सामचारिणां। ययोर्ष्वतं न मुमे जातुं देवयोः। उभावन्तौ परि यात् अर्म्याः। दिवो न र्ष्रमी इस्तंनुतो व्यंर्ण्वे। उभा भुंवन्ती भुवंना क्विकंतू। सूर्या न चन्द्रा चरतो

हतामंती। पतीं द्युमिद्वेश्वविदां उभा दिवः। सूर्या उभा चुन्द्रमंसा विचक्षणा॥७१॥

विश्ववारा वरिवोभा वरेंण्या। ता नोंऽवतं मतिमन्ता महिंव्रता। विश्ववपंरी प्रतरंणा तर्न्ता। सुवर्विदां दृशये भूरिंरश्मी। सूर्या हि चन्द्रा वस् त्वेषदंर्शता। मनस्विनोभानुंचरतोनु सन्दिवम्ं। अस्य श्रवों नद्यः सप्त बिंभ्रति। द्यावा क्षामां पृथिवी दंर्शतं वर्पुः। अस्मे सूर्याचन्द्रमसांऽभिचक्षें। श्रद्धेकमिन्द्र चरतो विचर्तुरम्॥७२॥

पूर्वापुरं चरतो माययैतौ। शिशू क्रीडंन्तौ परिं यातो अध्वरम्। विश्वान्यन्यो भ्वंनाऽभि चष्टें। ऋतूनन्यो विदर्धज्ञायते पुनः। हिरंण्यवर्णाः शुचंयः पावका यासा । राजां। यासां देवाः शिवेनं मा चक्षुंषा पश्यत। आपो भद्रा आदित्पंश्यामि। नासंदासीन्नो सदांसीत्तदानींम्। नासीद्रजो नो व्योंमा परो यत्। किमावंरीवः कुह कस्य शर्मन्॥७३॥

अम्भः किर्मासीद्गह्नं गभीरम्। न मृत्युर्मृतुं तर्हि न। रात्रिया अहं

अष्टमः प्रश्नः (अष्टकम् २)

आसीत्प्रकेतः। आनींदवात इस्वधया तदेकम्। तस्माँ द्धान्यं न परः किश्चनासं। तमं आसीत्तमंसा गूढमग्रे प्रकेतम्। सुलिल सर्वमा इदम्। तुच्छेनाभ्वपिहितं यदासीत्। तमंसस्तन्मंहिना जांयतैकम्ं। कामस्तदग्रे समंवर्तताधि॥७४॥

मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्। सतो बन्धुमसंति निरंविन्दन्। हृदि प्रतीष्यां कुवयों

मनीषा। तिरुश्चीनो वितंतो रुश्मिरेषाम्। अधः स्विदासी(३)दुपरि स्विदासी(३)त्। रेतोधा आसन्महिमानं आसन्। स्वधा अवस्तात्प्रयंतिः पुरस्तांत्। को अुद्धा वेंद्र क इह प्र वोंचत्। कुत् आजांता कुतं इयं विसृष्टिः। अविग्देवा अस्य विसर्जनाय॥७५॥ अथा को वेंद्र यतं आबुभूवं। इयं विसृष्टिर्यतं आबुभूवं। यदिं वा द्धे यदिं वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्। सो अङ्ग वेद यदि वा न वेदे। कि इस्विद्वनुङ्क उ स वृक्ष आंसीत्। यतो द्यावांपृथिवी निष्टतक्षुः। मनीषिणो मनंसा पृच्छतेदुतत्।

यद्ध्यतिष्ठद्भवनानि धारयन्। ब्रह्म वनं ब्रह्म स वृक्ष आसीत्॥७६॥

ब्रह्माध्यतिष्ठद्भवनानि धारयन्। प्रातर्ग्निं प्रातिरन्द्र हवामहे। प्रातिर्मित्रावरुणा

यतो द्यावांपृथिवी निष्टतक्षुः। मनीषिणो मनसा विब्नवीमि

प्रातरिश्वनां। प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पितिम्। प्रातः सोममुत रुद्र ह्वेम। प्रातिर्जितं भगमुग्र ह्वेम। व्यं पुत्रमिद्तिर्यो विधर्ता। आधिश्चः मन्यमानस्तुरिश्चित्॥७७॥ राजां चिद्यं भगं भक्षीत्याहं। भग् प्रणेतुर्भग् सत्यंराधः। भग्मां धियमुदंव ददंत्रः। भग् प्रणो जनय गोभिरश्वैः। भग् प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम। उतेदानीं भगवन्तः स्याम। उत प्रित्व उत मध्ये अह्राम्। उतोदिता मघवन्थ्सूर्यस्य। व्यं देवाना समृतौ स्याम। भगं एव भगवा अस्तु देवाः॥७८॥

तेनं वयं भगंवन्तः स्याम। तं त्वां भग् सर्व् इञ्जोहवीमि। स नों भग पुर एता भेवेह। समेध्वरायोषसों नमन्त। द्धिक्रावेव शुचेये प्दायं। अर्वाचीनं वंसुविदं भगं नः। रथंमिवाश्वां वाजिन् आवंहन्तु। अश्वांवतीर्गोमंतीर्न उषासंः। वीरवंतीः सदंमुच्छन्तु भुद्राः। घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीनाः। यूयं पांत स्वस्तिभिः सदां

नः॥७९॥

विच्क्षणा विंचर्तुर शर्मन्निधे विसर्जनाय ब्रह्म वनं ब्रह्म स वृक्ष आंसीत्तुरिश्चेद्देवाः प्रपीना एकं च॥——[९] पीवौन्नान्ते शुक्रासः सोमों धेनुमिन्द्रस्तरंस्वाञ्छ्विमा देवो यांतु सूर्यों देवीमहमंस्मि ता सूर्याचन्द्रमसा नवं॥९॥

पीवौन्नामग्ने त्वं पारयानाधृष्यः शुचिं नु विश्रयंमाणो दिवो रुक्जोऽन्नं प्राणमन्नन्ता सूर्याचन्द्रमसा नवंसप्ततिः॥७९॥ पीवौन्नां यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे द्वितीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टकम् ३॥

॥प्रथमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः॥

अग्निर्नः पातु कृत्तिकाः। नक्षेत्रं देविमिन्द्रियम्। इदमांसां विचक्षणम्। ह्विरासं जुंहोतन। यस्य भान्तिं र्ष्ण्मयो यस्यं कृतवंः। यस्येमा विश्वा भुवंनानि सर्वां। स कृत्तिंकाभिर्भिसंवसानः। अग्निर्नो देवः सुंविते दंधातु। प्रजापंते रोहिणी वेतु पत्नीं। विश्वरूपा बृहती चित्रभानुः॥१॥

सा नो यज्ञस्यं सुविते दंधातु। यथा जीवंम श्ररदः सवीराः। रोहिणी देव्युदंगात्पुरस्तात्। विश्वां रूपाणि प्रतिमोदंमाना। प्रजापंति हिवषां वर्धयंन्ती। प्रिया देवानामुपंयातु यज्ञम्। सोमो राजां मृगशीर्षेण आगन्। शिवं नक्षंत्रं प्रियमंस्य धामं। आप्यायंमानो बहुधा जनेषु। रेतः प्रजां यजमाने दधातु॥२॥ देवानां पतिरिघ्यानांम्। नक्षेत्रमस्य हविषां विधेम। मा नः प्रजा॰ रीरिष्नमोत वीरान्। हेती रुद्रस्य परिं णो वृणक्तु। आर्द्रा नक्षेत्रं जुषता १ हिवर्नः॥३॥ प्रमुश्चमांनौ दुरितानि विश्वां। अपाघश र सन्नुदतामरांतिम्। पुनर्नो देव्यदिंतिः स्पृणोतु। पुनर्वसू नः पुनरेतां यज्ञम्। पुनर्नो देवा अभियन्तु सर्वे। पुनः पुनर्वो हविषां यजामः। एवा न देव्यदितिरनर्वा। विश्वस्य भर्त्री जर्गतः प्रतिष्ठा। पुनेर्वसू हिवषां वर्धयंन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पार्थः॥४॥ बृहस्पतिः प्रथमं जायंमानः। तिष्यं नक्षंत्रम्भि सम्बंभूव। श्रेष्ठों देवानां पृतंनासु जिष्णुः। दिशोऽनु सर्वा अभयं नो अस्तु। तिष्यः पुरस्तांदुत मध्यतो नः। बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चात्। बाधेतां द्वेषो अभयं कृणुताम्। सुवीर्यस्य पत्यः स्याम। इद॰

स्पेभ्यों हिवरंस्तु जुष्टम्। आश्रेषा येषांमनुयन्ति चेतः॥५॥

यत्ते नक्षेत्रं मृगशीर्षमस्ति। प्रिय॰ राजन् प्रियतमं प्रियाणाम्। तस्मै ते सोम

हिवषां विधेम। शं नं एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे। आर्द्रयां रुद्रः प्रथंमा न एति। श्रेष्ठां

ये अन्तिरिक्षं पृथिवीं क्षियन्ति। ते नेः सूर्पासो हवमागिमिष्ठाः। ये रोचने सूर्यस्यापि सूर्पाः। ये दिवें देवीमन् सूर्श्वरन्ति। येषांमाश्रेषा अनुयन्ति कामम्। तेभ्यः सूर्पभ्यो मध्मञ्जहोमि। उपहूताः पितरो ये मुघास्। मनोजवसः सुकृतः सुकृत्याः। ते नो नक्षेत्रे हवमागिमिष्ठाः। स्वधाभिर्य्ज्ञं प्रयंतं जुषन्ताम्॥६॥ ये अग्निदग्धा येऽनिग्नदग्धाः। येऽमुं लोकं पितरः क्षियन्ति। याः श्रे विद्य याः

तदंर्यमन्वरुणमित्र चारुं। तं त्वां वय सिन्तार सिन्तार सिन्ताम्। जीवा जीवन्तमुप् सिविशेम। येनेमा विश्वा भुवनानि सिन्निता। यस्य देवा अनु सं यन्ति चेतः॥७॥ अर्यमा राजाऽजर्स्तुविष्मान्। फल्गुंनीनामृष्मो रोरवीति। श्रेष्ठो देवानां भगवो भगासि। तत्त्वां विदुः फल्गुंनीस्तस्यं वित्तात्। अस्मभ्यं क्षत्रम्जर सुवीर्यम्। गोमदर्श्ववदुप सन्नुदेह। भगों ह दाता भग इत्प्रदाता। भगों देवीः फल्गुंनीरा

विवेश। भगस्येत्तं प्रसवं गमेम। यत्रं देवैः संधमादं मदेम॥८॥

उं च न प्रविद्या मुघासुं युज्ञ र सुकृतं जुषन्ताम्। गवां पतिः फल्ग्नीनामसि त्वम्।

आयांतु देवः संवितोपयातु। हिर्ण्ययेन स्वृता रथेन। वहुन् हस्तर् सुभगं विद्यनापसम्। प्रयच्छेन्तं पपुंरिं पुण्यमच्छं। हस्तः प्रयच्छत्वमृतं वसीयः। दक्षिणेन प्रतिगृभ्णीम एनत्। दातारम्द्य संविता विदेय। यो नो हस्ताय प्रसुवातिं यज्ञम्। त्वष्टा नक्षेत्रम्भ्येति चित्राम्। सुभर संसं युव्तिर रोचमानाम्॥९॥ निवेशयंत्रमृतान्मर्त्याः श्र्या रूपाणि पिर्शन् भुवंनानि विश्वाः। तन्नस्त्वष्टा तदुं चित्रा विचेष्टाम्। तन्नक्षेत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नः प्रजां वीरवंतीर सनोतु।

गोभिनी अश्वैः समनक्त यज्ञम्। वायुर्नक्षंत्रम्भ्येति निष्ट्याम्। तिग्मशृंङ्गो वृष्भो रोरुंवाणः। समीरयन् भवना मात्रिश्वां। अप द्वेषा स्मि नृदतामरातीः॥१०॥ तन्नो वायुस्तद् निष्ट्यां शृणोत्। तन्नक्षंत्रं भूरिदा अस्तु मह्यम्। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। यथा तरेम दुरितानि विश्वां। दूरम्समच्छत्रंवो यन्तु भीताः। तदिन्द्राग्नी कृणतां तद्विशांखे। तन्नो देवा अनुमदन्तु यज्ञम्। पृश्चात् पुरस्तादभयं नो अस्तु। नक्षंत्राणामिधेपत्नी विशांखे। श्रेष्ठांविन्द्राग्नी भृवंनस्य गोपौ॥११॥

विष्यः शत्रूनप् बार्धमानौ। अप् क्षुधं नुदतामरांतिम्। पूर्णा पृश्चादुत पूर्णा पुरस्तांत्। उन्मध्यतः पौर्णमासी जिंगाय। तस्यां देवा अधि संवसंन्तः। उत्तमे नाकं इह मादयन्ताम्। पृथ्वी सुवर्चा युवृतिः स्जोषाः। पौर्णमास्युदंगाच्छोभमाना। आप्याययंन्ती दुरितानि विश्वाः। उरुं दुहां यजमानाय यज्ञम्॥१२॥

वित्रभानुर्यजमाने द्यात हुविर्नः पायुश्चेतो जुपन्ताश्चेतो मदेम् रोचमानामर्गतीगींपौ यज्ञम्॥

[१]

ऋष्ट्यास्मं ह्व्यैर्नमंसोप्सद्यं। मित्रं देवं मित्र्धयं नो अस्तु। अनूराधान् ह्विषां वर्धयन्तः। शृतं जीवेम श्ररदः सवीराः। चित्रं नक्षंत्रमुदंगात्पुरस्तात्। अनूराधास् इति यद्वदंन्ति। तन्मित्र एति पृथिभिदेवयानैः। हिर्ण्ययैर्वितंतैर्न्तरिक्षे। इन्द्रौ

ज्येष्ठामनु नक्षंत्रमेति। यस्मिन्वृत्रं वृत्रूतूर्ये तृतारं॥१३॥

तस्मिन्वयम्मृतं दुहानाः। क्षुधं तरेम् दुरितिं दुरिष्टिम्। पुर्न्दरायं वृष्भायं धृष्णवें। अषांढाय सहंमानाय मीढुषें। इन्द्रांय ज्येष्ठा मधुमृद्दहाना। उरुं कृणोतु यजमानाय लोकम्। मूलं प्रजां वीरवंतीं विदेय। परांच्येतु निर्ऋतिः पराचा।

अहंनों अद्य संवित दंधातु। मूलं नक्षंत्रमिति यद्वदंन्ति। परांचीं वाचा निर्ऋतिं नुदामि। शिवं प्रजायें शिवमंस्तु मह्मम्। या दिव्या आपः पयंसा सम्बभूवुः। या अन्तरिक्ष उत पार्थिवीर्याः। यासांमषाढा अनुयन्ति कामम्। ता न आपः श्र स्योना भवन्तु। याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैशन्तीरुत

प्रांस्चीर्याः॥१५॥
यासांमषाढा मधुं भृक्षयंन्ति। ता न आपः शङ् स्योना भंवन्तु। तन्नो विश्वे उपं शृण्वन्तु देवाः। तदंषाढा अभिसंयंन्तु यज्ञम्। तन्नक्षंत्रं प्रथतां पृश्भ्यः। कृषिर्वृष्टिर्यजमानाय कल्पताम्। शुभ्राः कृन्यां युवृतयः सुपेशंसः। कृर्मृकृतः सुकृतो वीर्यावतीः। विश्वान् देवान् हृविषां वर्धयंन्तीः। अषाढाः काम्मुपं यान्तु यज्ञम्॥१६॥

यस्मिन् ब्रह्माऽभ्यजेयथ्सर्वमेतत्। अमुं चं लोकमिदमूं च सर्वम्। तन्नो नक्षेत्रमभिजिद्विजित्यं। श्रियंं दधात्वहृंणीयमानम्। उभौ लोकौ ब्रह्मणा सञ्जितेमौ। तन्नो नक्षेत्रमिनि द्विचेष्टाम्। तस्मिन्वयं पृतेनाः सञ्जयेम। तन्नो देवासो अनुजानन्तु कामम्। शृण्वन्ति श्रोणाममृतस्य गोपाम्। पुण्यामस्या उपेश्रणोमि वाचम्॥१७॥

महीं देवीं विष्णुंपत्नीमजूर्याम्। प्रतीचींमेनाः ह्विषां यजामः। त्रेधा विष्णुंरुरुगायो विचंक्रमे। महीं दिवं पृथिवीम्नतिरक्षम्। तच्छ्रोणैतिश्रवं इच्छमाना। पुण्यः श्लोकं यजमानाय कृण्वती। अष्टौ देवा वसंवः सोम्यासंः। चतंस्रो देवीरजराः श्रविष्ठाः। ते यज्ञं पान्तु रजंसः प्रस्तात्। संवथ्सरीणम्मृतः स्वस्ति॥१८॥
यज्ञं नः पान्तु वसंवः पुरस्तात्। दक्षिण्तोऽभियंन्तु श्रविष्ठाः। पुण्यं नक्षंत्रम्भि

संविशाम। मा नो अर्रातिर्घशेष्ट्रसाऽगर्न्। क्षत्रस्य राजा वर्रुणोऽधिराजः। नक्षत्राणा श्वतिभेष्ववसिष्ठः। तो देवेभ्यः कृणुतो दीर्घमायुः। श्वत सहस्रां भेषजानि धत्तः। यज्ञं नो राजा वर्रुण उपयातु। तन्नो विश्वे अभि संयन्तु देवाः॥१९॥

अज

तन्नो नक्षेत्र शतभिषग्जुषाणम्। दीर्घमायुः प्रतिरद्भेषजानि।

एकंपादुदंगात्पुरस्तांत्। विश्वां भूतानि प्रति मोर्दमानः। तस्यं देवाः प्रंस्वं यन्ति सर्वे। प्रोष्ठपदासों अमृतंस्य गोपाः। विभ्राजंमानः समिधान उग्रः। आऽन्तिरक्षमरुहृदगुन्द्याम्। तः सूर्यं देवमुजमेकंपादम्। प्रोष्ठपदासो अनुयन्ति सर्वे॥२०॥ अहिं बुंध्रियः प्रथंमान एति। श्रेष्ठों देवानांमुत मानुंषाणाम्। तं ब्राह्मणाः सोम्पाः सोम्पाः। प्रोष्ठपदासो अभि रक्षन्ति सर्वे। चत्वार एकंमिभ कर्म देवाः। प्रोष्ठपदास

पूषा रेवत्यन्वेति पन्थांम्। पुष्टिपतीं पशुपा वार्जंबस्त्यौ॥२१॥ इमानिं ह्व्या प्रयंता जुषाणा। सुगैर्नो यानैरुपंयातां यज्ञम्। क्षुद्रान् पृशून् रंक्षतु रेवतीं नः। गावों नो अश्वार् अन्वेतु पूषा। अन्नर् रक्षंन्तौ बहुधा विरूपम्। वाजर्र सनुतां यर्जमानाय यज्ञम्। तदिश्विनांवश्वयुजोपंयाताम्। शुभुङ्गिमेष्ठौ सुयमेभिरश्वैः।

इति यान् वदंन्ति। ते बुध्नियं परिषद्य एक्वन्तंः। अहि एक्षिन्ति नमंसोप्सद्यं।

स्वं नक्षंत्र १ हविषा यजंन्तो। मध्वा सम्पृंक्तो यजुंषा समंक्तो॥२२॥

यौ देवानां भिषजौ हव्यवाहौ। विश्वस्य दूतावमृतंस्य गोपौ। तौ नक्षंत्रं जुजुषाणोपयाताम्। नमोऽश्विभ्यां कृणुमोऽश्वयुग्भ्यांम्। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। तद्यमो राजा भगंवान् विचंष्टाम्। लोकस्य राजां महतो महान् हि। सुगं नः पन्थामभंयं कृणोतु। यस्मिन्नक्षंत्रे यम एति राजां। यस्मिन्नेनम्भ्यषिश्चन्त देवाः। तदंस्य चित्र हिवषां यजाम। अपं पाप्मानं भरंणीर्भरन्तु। निवेशंनी यत्तं देवा अदंधुः॥२३॥

नवोनवो भवति जायमानो यमांदित्या अर्शुमाँप्याययंन्ति। ये विरूपे समनसा संव्ययंन्ती। समानं तन्तुं परितातना तें। विभू प्रभू अनुभू विश्वतो हुवे। ते नो नक्षेत्रे

तृतार् मह्यं प्रास्चीर्या याँन्तु युज्ञं वाच ई स्वस्ति देवा अनुयन्ति सर्वे वार्जवस्त्यौ समंक्तौ देवास्त्रीणि च॥————[२]

हवमार्गमेतम्। वयं देवी ब्रह्मणा संविदानाः। सुरत्नांसो देववीतिं दर्धानाः। अहोरात्रे हविषां वर्धयन्तः। अतिं पाप्मानमितं मुक्त्या गमेम। प्रत्युवदृश्यायती॥२४॥ व्युच्छन्तीं दुहिता दिवः। अपो मही वृंणुते चक्षुंषा। तमो ज्योतिंष्कृणोति सूनरीं।

उदुिस्रयाः सचते सूर्यः। सचां उद्यन्नक्षंत्रमर्चिमत्। तवेदंषो व्युषि सूर्यस्य च। सं भक्तेनं गमेमिहि। तन्नो नक्षंत्रमर्चिमत्। भानुमक्तेजं उचरंत्। उपयज्ञिमहागंमत्॥२५॥ प्र नक्षंत्राय देवायं। इन्द्रायेन्दु हवामहे। स नः सिवता सुंवथ्सिनम्। पृष्टिदां वीरवंत्तमम्। उदुत्यं चित्रम्। अदिंतिनं उरुष्यतु महीमू षु मातरम्। इदं विष्णुः

प्रतिद्वर्ष्णुः। अग्निर्मूर्धा भुवंः। अनुनोऽद्यानुंमित्रिरन्विदन्नमते त्वम्। हव्यवाहर्

स्विष्टम्॥२६॥ आयुत्यंगम्भिवंष्टम्॥—

अग्निर्वा अंकामयत। अन्नादो देवाना ईस्यामिति। स एतम् ग्नये कृत्तिंकाभ्यः पुरोडाशंमृष्टाकंपालं निरंवपत्। ततो वे सौंऽन्नादो देवानांमभवत्। अग्निर्वे देवानांमन्नादः। यथां हु वा अग्निर्देवानांमन्नादः। एव ह वा एष मंनुष्यांणां भवति। य एतेनं हृविषा यज्ञते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहां कृत्तिंकाभ्यः स्वाहां। अम्बाये स्वाहां दुलाये स्वाहां। नित्तत्ये स्वाहाऽभ्रयंन्त्ये

प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। ता अंस्माथ्सृष्टाः परांचीरायन्। तासार्

रोहिणीमभ्यंध्यायत्। सोंऽकामयत। उप मा वंर्तेत। समेनया गच्छेयेतिं। स एतं

स्वाहाँ। मेघयंन्त्ये स्वाहां वर्षयंन्त्ये स्वाहाँ। चुपुणीकांये स्वाहेतिं॥२७॥

प्रजापंतये रोहिण्ये चुरुं निरंवपत्। ततो वै सा तमुपावंतित। समेनयागच्छत। उपं हु वा एंनं प्रियमावंतित। सं प्रियेणं गच्छते। य एतेनं हुविषा यजंते। य उचैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। प्रजापंतये स्वाहां रोहिण्ये स्वाहां। रोचंमानाये स्वाहां प्रजाभ्यः स्वाहेति॥२८॥ सोमो वा अंकामयत। ओषंधीनाः राज्यम्भिजंयेय्मितिं। स एतः सोमांय मृगशीर्षायं श्यामाकं चुरुं पर्यसि निरंवपत्। ततो वै स ओषंधीनाः राज्यम्भ्यंजयत्। सुमानानाः ह वै राज्यम्भिजंयित। य एतेनं हिवषा यजंते। य

उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सोमाय स्वाहां मृगशीर्षाय स्वाहां। इन्वकाभ्यः

स्वाहौषंधीभ्यः स्वाहाँ। राज्याय स्वाहाऽभिजिंत्यै स्वाहेतिं॥२९॥

रुद्रो वा अंकामयत। पृशुमान्थ्स्यामितिं। स एत र रुद्रायाऽऽर्द्रिये प्रैय्यं क्षवं चरुं पर्यसि निरंवपत्। ततो वे स पंशुमानंभवत्। पृशुमान् ह वे भंवति। य एतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। रुद्राय स्वाहाऽऽर्द्रीये स्वाहां। पिन्वंमानाये स्वाहां पशुभ्यः स्वाहेतिं॥३०॥

ऋक्षा वा इयमंलोमकांऽऽसीत्। साऽकांमयत। ओषंधीभिर्वनस्पतिंभिः

प्रजायियेतिं। सैतमदित्यै पुनर्वसुभ्यां चरुं निरंवपत्। ततो वा इयमोषंधीभिर्वनस्पतिंभि

प्राजायत। प्रजायते हु वै प्रजयां पृशुभिः। य एतेनं हुविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अदित्यै स्वाहा पुनर्वसुभ्याम्। स्वाहा भूत्यै स्वाहा प्रजात्यै स्वाहेतिं॥३१॥

स्वाहात॥ ३१॥ वृह्स्पतिर्वा अंकामयत। ब्रह्मवर्च्सी स्यामिति। स एतं बृह्स्पतेये तिष्याय नैवारं च्रुं पर्यसि निरंवपत्। ततो वै स ब्रह्मवर्च्स्यंभवत्। ब्रह्मवर्च्सी हु वै भंवति। य एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। बृह्स्पतंये स्वाहां तिष्यांय स्वाहां। ब्रह्मवर्च्साय स्वाहेतिं॥ ३२॥

देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवाः सूर्पेभ्यं आश्रेषाभ्य आज्यं कर्म्भं निरंवपन्। तानेताभिरेव देवतांभिरुपांनयन्। एताभिर्ह् वै देवतांभिर्द्धिषन्तं भ्रातृंव्यमुपंनयित। य एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सूर्पेभ्यः स्वाहाँऽऽश्रेषाभ्यः स्वाहाँ। दुन्दशूकेंभ्यः स्वाहेतिं॥३३॥ पितरो वा अंकामयन्त। पितृलोक ऋधुयामेतिं। त एतं पितृभ्यों मुघाभ्यः पुरोडाश ए षद्धंपालं निरंवपन्। ततो वै ते पितृलोक आधुंवन्। पितृलोके ह वा

ऋंध्रोति। य प्रतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। पितृभ्यः स्वाहां म्घाभ्यः। स्वाहांऽन्घाभ्यः स्वाहांऽग्दाभ्यः। स्वाहांऽरुभ्यतीभ्यः स्वाहेतिं॥३४॥ अर्यमा वा अंकामयत। पृशुमान्थ्रस्यामिति। स पृतमंर्यम्णे फल्गुंनीभ्यां च्रं निरंवपत्। ततो वै स पंशुमानंभवत्। पृशुमान् ह वै भंवति। य पृतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अर्यम्णे स्वाहा फल्गुंनीभ्याः स्वाहां।

भगो वा अंकामयत। भगी श्रेष्ठी देवानाई स्यामिति। स पुतं भगाय फल्गुंनीभ्यां

पशुभ्यः स्वाहेतिं॥३५॥

चुरुं निरंवपत्। ततो वै स भूगी श्रेष्ठी देवानांमभवत्। भूगी हु वै श्रेष्ठी संमानानां भवति। य एतेनं हुविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। भगांय स्वाहा फल्गुंनीभ्या इं स्वाहां। श्रेष्ठांय स्वाहेतिं॥३६॥

स्विता वा अंकामयत। श्रन्में देवा दधीरन्। स्विता स्यामितिं। स एतर संवित्रे हस्तांय पुरोडाश्ं द्वादंशकपालं निरंवपदाशूनां व्रीहीणाम्। ततो वे तस्मै श्रद्देवा अदंधत। स्विताऽभंवत्। श्रद्धवा अंस्मै मनुष्यां दधते। स्विता संमानानां भवति। य एतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। स्वित्रे स्वाहां हस्तांय। स्वाहां ददते स्वाहां पृण्ते। स्वाहां प्रयच्छंते स्वाहां प्रतिगृभ्णते स्वाहतिं॥३७॥

त्वष्टा वा अंकामयत। चित्रं प्रजां विन्देयेतिं। स एतं त्वष्ट्रं चित्रायें पुरोडाशम्ष्टाकंपालं निरंवपत्। ततो वै स चित्रं प्रजामंविन्दत। चित्र॰ हु वै प्रजां विन्दते। य एतेनं हुविषा यजिते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। त्वष्ट्रे स्वाहां चित्राये स्वाहां। चैत्रांय स्वाहां प्रजाये स्वाहेतिं॥३८॥

गृष्ट्ये दुग्धं पयो निरंवपत्। ततो वै स कामचारंमेषु लोकेष्वभ्यंजयत्। कामचार ई

ह वा एषु लोकेष्वभिजयति। य एतेन हिवषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं।

सोऽत्रं जुहोति। वायवे स्वाहा निष्ट्यांयै स्वाहाँ। कामचारांय स्वाहाऽभिजिंत्यै

वायुर्वा अंकामयत। कामचारंमेषु लोकेष्वभिजंयेयमितिं। स एतद्वायवे निष्ट्यांयै

स्वाहेतिं॥३९॥
इन्द्राग्नी वा अंकामयेताम्। श्रेष्ठमं देवानांम्भिजंयेवेतिं। तावेतिमंन्द्राग्निभ्यां विशांखाभ्यां पुरोडाश्मेकांदशकपालं निरंवपताम्। ततो वे तौ श्रेष्ठमं देवानांम्भ्यंजयताम्। श्रेष्ठमं ह् वे संमानानांम्भि जंयति। य एतेनं हृविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। इन्द्राग्निभ्याङ् स्वाहा विशांखाभ्याङ् स्वाहां। श्रेष्ठमंयु स्वाहाऽभिजिंत्ये स्वाहेतिं॥४०॥

अथैतत्पौर्णमास्या आज्यं निर्वपति। कामो वै पौर्णमासी। काम आज्यम्।

कामेंनैव कामर समर्धयति। क्षिप्रमेनर सकाम उपनमति। येन कामेन यजित।

सोऽत्रं जुहोति। पौर्णुमास्यै स्वाहा कामांय स्वाहाऽऽगंत्यै स्वाहेतिं॥४१॥

अग्निः पश्चंदश प्रजापंतिः षोडंश् सोम् एकांदश रुद्रो दश्केंकांदश् बृहुस्पतिर्दशं देवासुरा नवं पितर् एकांदशार्यमा भगो दशं

दश सिवता चतुर्दश त्वष्टां वायुरिन्द्राग्नी दशं दशाथैतत्पौर्णमास्या अष्टौ पश्चंदश॥—————[४]

मित्रो वा अंकामयत। मित्रधेयंमेषु लोकेष्वभिजंयेयमितिं। स एतं मित्रायांनूराधेभ्यंश्वरुं निरंवपत्। ततो वै स मित्रधेयंमेषु लोकेष्वभ्यंजयत्। मित्रधेयं हु वा एषु लोकेष्वभिजयति। य एतेनं हुविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। मित्राय स्वाहांऽनूराधेभ्यः स्वाहां। मित्रधेयांय स्वाहाऽभिजिंत्यै स्वाहेतिं॥४२॥

इन्द्रो वा अंकामयत। ज्यैष्ठमं देवानांम्भिजंयेयमितिं। स एतमिन्द्रांय ज्येष्ठायें पुरोडाश्मेकांदशकपालं निरंवपन्म्हाव्रीहीणाम्। ततो वै स ज्यैष्ठमं देवानांम्भ्यंजयत्। ज्यैष्ठमं ह वै संमानानांम्भिजंयति। य एतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। इन्द्रांय स्वाहां ज्येष्ठाये स्वाहां। ज्यैष्ठांय स्वाहाऽभिजिंत्ये स्वाहेतिं॥४३॥ प्रजापंतिर्वा अंकामयत। मूलं प्रजां विन्देयेति। स एतं प्रजापंतये मूलाय च्रं निरंवपत्। ततो वै स मूलं प्रजामंविन्दत। मूलई हु वै प्रजां विन्दते। य एतेनं हृविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। प्रजापंतये स्वाहा मूलांय स्वाहां। प्रजाये स्वाहेति॥४४॥

आपो वा अंकामयन्त। समुद्रं कामम्मिजयेमेति। ता एतमुद्धोऽषाढाभ्यंश्वरं

निरंवपन्। ततो वै ताः संमुद्रं कामंम्भ्यंजयन्। समुद्र र ह वै कामंम्भिजंयित। य एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अद्धः स्वाहांऽषाढाभ्यः स्वाहां। समुद्राय स्वाहा कामांय स्वाहां। अभिजिंत्ये स्वाहेतिं॥४५॥ विश्वे वे देवा अंकामयन्त। अनुपज्ययं जंयेमेतिं। त एतं विश्वेभ्यो देवेभ्यों-ऽषाढाभ्यंश्चरं निरंवपन्। ततो वै तेऽनपज्य्यमंजयन्। अनुपज्य्य ह वै जंयित। य एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। विश्वेभ्यो देवेभ्यः

स्वाहांऽषाढाभ्यः स्वाहां। अनुपुज्ययाय स्वाहा जित्ये स्वाहेतिं॥४६॥

ब्रह्म वा अंकामयत। ब्रह्मलोकमभिजंयेयमितिं। तदेतं ब्रह्मणेऽभिजितें चरुं

निरंवपत्। ततो वै तद्वंह्मलोकम्भ्यंजयत्। ब्रह्मलोकः ह् वा अभिजंयित। य एतेनं हिविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। ब्रह्मणे स्वाहांऽभिजिते स्वाहां। ब्रह्मलोकाय स्वाहाऽभिजितेये स्वाहेति॥४७॥ विष्णुर्वा अंकामयत। पुण्यङ् श्लोकः शृणवीय। न मां पापी कीर्तिरागंच्छेदिति। स एतं विष्णंव श्लोणायै पुरोडाशं त्रिकपालं निरंवपत्। ततो वै स पुण्यङ् श्लोकंमश्रणुत। नैनं पापी कीर्तिरागंच्छत्। पुण्यः ह वै श्लोकः शृणुते। नैनं पापी

कीर्तिरागंच्छति। य एतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। विष्णंवे स्वाहाँ श्रोणायै स्वाहाँ। श्लोकांय स्वाहाँ श्रुताय स्वाहेति॥४८॥ वसंवो वा अंकामयन्त। अग्रं देवतांनां परीयामेति। त एतं वस्ंभ्यः श्रविष्ठाभ्यः पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निरंवपन्। ततो वै तेऽग्रं देवतांनां पर्यायन्। अग्रं ह वै संमानानां पर्येति। य एतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति।

वसुंभ्यः स्वाह्य श्रविष्ठाभ्यः स्वाहाँ। अग्रांय स्वाह्य परींत्यै स्वाहेतिं॥४९॥

इन्द्रो वा अंकामयत। दृढोऽशिंथिलः स्यामितिं। स एतं वर्रुणाय शृतिभिषजे भेषुजेभ्यः पुरोडाशं दशंकपालं निर्वयत्कृष्णानां व्रीहीणाम्। ततो वै स दृढो-ऽशिंथिलोऽभवत्। दृढो हृ वा अशिंथिलो भवति। य एतेनं हृविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। वर्रुणाय स्वाहां शृतिभिषजे स्वाहां। भेषुजेभ्यः स्वाहेति॥५०॥

प्रोष्ठपदेभ्यंश्चरं निरंवपत्। ततो वै स तेंज्ञस्वी ब्रह्मवर्चस्यंभवत्। तेज्ञस्वी हु वै ब्रह्मवर्चसी भवित। य एतेनं हृविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अजायेकंपदे स्वाहाँ प्रोष्ठपदेभ्यः स्वाहाँ। तेजंसे स्वाहाँ ब्रह्मवर्चसाय स्वाहेति॥५१॥ अहिवै बुध्नियोंऽकामयत। इमां प्रतिष्ठां विन्देयेतिं। स एतमहंये बुध्नियांय प्रोष्ठपदेभ्यः पुरोडाशं भूमिंकपालं निरंवपत्। ततो वै स इमां प्रतिष्ठामंविन्दत।

अजो वा एकंपादकामयत। तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी स्यामिति। स एतम्जायैकंपदे

इमा १ ह वै प्रतिष्ठां विनदते। य पुतेनं हिवषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सो ऽत्रं

जुहोति। अहंये बुध्नियांयु स्वाहाँ प्रोष्ठपुदेभ्यः स्वाहाँ। प्रतिष्ठायै स्वाहेतिं॥५२॥

पूषा वा अंकामयत। पृशुमान्थ्स्यामितिं। स एतं पूष्णे रेवत्ये च्रुं निरंवपत्। ततो वे स पंशुमानंभवत्। पृशुमान् हु वे भंवति। य एतेनं हुविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। पूष्णे स्वाहां रेवत्ये स्वाहां। पृशुभ्यः स्वाहेतिं॥५३॥ अश्विनो वा अंकामयेताम्। श्रोत्रस्विनावबंधिरौ स्यावेतिं। तावेतमश्विभ्यांमश्वयुग्भ्य

पुरोडाशंं द्विकपालं निरंवपताम्। ततो वै तौ श्रीन्नस्विनावबंधिरावभवताम्।

श्रोत्रस्वी ह वा अबंधिरो भवति। य एतेनं हिवषा यजति। य उं चैनदेवं वेदं।

सोऽत्रं जुहोति। अश्विभ्याङ् स्वाहाँ ऽश्वयुग्भ्याङ् स्वाहाँ। श्रोत्रांय स्वाहा श्रुत्ये

स्वाहेति॥५४॥
यमो वा अंकामयत। पितृणाः राज्यम्भिजंयेयमिति। स एतं
यमायांपुभरंणीभ्यश्चरं निरंपवत्। ततो वै स पितृणाः राज्यम्भ्यंजयत्।

स्मानाना रे हु वै राज्यम्भि जंयित। य एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। युमाय स्वाहांऽपुभरंणीभ्यः स्वाहां। राज्याय स्वाहाऽभिजिंत्यै स्वाहेतिं॥५५॥

अथैतदंमावास्यांया आज्यं निर्वपति। कामो वा अमावास्यां। काम आज्यम्। कामेनेव काम् समर्थयति। क्षिप्रमेन् सकाम् उपनमति। येन् कामेन् यजंते। सोऽत्रं जुहोति। अमावास्यांये स्वाहा कामांय स्वाहाऽऽगंत्ये स्वाहेतिं॥५६॥

चन्द्रमा वा अंकामयत। अहोरात्रानंधमासान्मासांनृतून्थ्संवथ्सरमास्वा। चन्द्रमंसः सायंज्य सलोकतांमाप्रयामिति। स एतं चन्द्रमंसे प्रतीदृश्यांयै पुरोडाशं पश्चंदशकपालं निरंवपत्। ततो वे सोंऽहोरात्रानंधमासान्मासांनृतून्थ्संवथ्सर-मास्वा। चन्द्रमंसः सायंज्य सलोकतांमाप्रोत्। अहोरात्रान् ह वा

अर्धमासान्मासानृतून्थ्संवथ्सरमास्वा। चन्द्रमंसः सायुंज्यः सलोकतांमाप्नोति।

य एतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। चुन्द्रमंसे स्वाहाँ प्रतीदृश्यांये स्वाहाँ। अहोरात्रेभ्यः स्वाहाँऽर्धमासेभ्यः स्वाहाँ। मासेभ्यः स्वाहर्तुभ्यः स्वाहाँ। संवथ्सराय स्वाहितं॥५७॥
अहोरात्रे वा अंकामयेताम्। अत्यंहोरात्रे मुंच्येविह। न नांवहोरात्रे आंप्रुयातामितिं। ते एतमंहोरात्राभ्यां चुरुं निरंवपताम्। द्वयानां व्रीहीणाम्।

शुक्रानां च कृष्णानां च। स्वात्योर्दुग्धे। श्वेतायें च कृष्णायें च। ततो वै ते अत्यंहोरात्रे अमुच्येते। नैने अहोरात्रे आंप्रुताम्। अति ह वा अंहोरात्रे मुंच्यते। नैनेमहोरात्रे आंप्रुतः। य एतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अह्रे स्वाहा रात्रिये स्वाहां। अतिंमुक्तये स्वाहेति॥५८॥
उषा वा अंकामयत। प्रियाऽऽदित्यस्यं सुभगां स्यामितिं। सैतमुषसें चरुं

उषा वा अकामयत। प्रियाऽऽदित्यस्य सुभगा स्यामिति। सेतमुषसे चुरु निरंवपत्। ततो वै सा प्रियाऽऽदित्यस्यं सुभगाऽभवत्। प्रियो हु वै समानानाः ई सुभगों भवति। य पुतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। उषसे स्वाहा व्युष्ट्रे स्वाहाँ। व्यूष्ट्रे स्वाहोतं॥५९॥ अथैतस्मै नक्षंत्राय चरुं निर्वपति। यथा त्वं देवानामिसं। पुवमहं मंनुष्यांणां

भ्यासमिति। यथां ह वा एतद्देवानांम्। एवं ह वा एष मनुष्यांणां भवति। य

पृतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। नक्षेत्राय स्वाहोंदेष्यते स्वाहाँ। उद्यते स्वाहोदिताय स्वाहाँ। हरेसे स्वाहा भरेसे स्वाहाँ। भ्राजंसे स्वाहा तेजंसे स्वाहाँ। तपंसे स्वाहाँ ब्रह्मवर्चसाय स्वाहेति॥६०॥ सूर्यो वा अंकामयत। नक्षेत्राणां प्रतिष्ठा स्यामिति। स पृत सूर्याय नक्षेत्रभ्यश्चरुं निर्वपत्। ततो वै स नक्षेत्राणां प्रतिष्ठाऽभवत्। प्रतिष्ठा ह वै संमानानां भवति। य

एतेनं हिवषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। सूर्याय स्वाहा नक्षंत्रेभ्यः

स्वाहाँ। प्रतिष्ठायै स्वाहेतिं॥६१॥

अथैतमदित्यै चुरुं निर्वपति। इयं वा अदितिः। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठति। सोऽत्रं

प्रथमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

जुहोति। अदित्यै स्वाहाँ प्रतिष्ठायै स्वाहेतिं॥६२॥

अथैतं विष्णंवे चुरुं निर्वपति। युज्ञो वै विष्णुंः। युज्ञ एवान्तृतः प्रतिं तिष्ठति। सोऽत्रं जुहोति। विष्णंवे स्वाहां युज्ञाय स्वाहां। प्रतिष्ठायै स्वाहेति॥६३॥

चन्द्रमाः पश्चंदशाहोरात्रे सप्तदंशोषा एकांद्शाथैतस्मै नक्षंत्राय त्रयोंदश् सूर्यो दशाथैतमदित्यै पश्चाथैतं विष्णंवे षदथ्सप्त (सविताऽऽशूनां व्रीहीणामिन्द्रो मुहाव्रीहीणामिन्द्रेः कृष्णानां व्रीहीणामंहोरात्रे द्वयानां व्रीहीणाम्। पितरः षद्वेपाल॰ सिवता द्वादंशकपालिमन्द्राग्नी एकांदशकपालुमिन्द्र एकांदशकपालुमिन्द्रो दर्शकपालुं विष्णुंस्त्रिकपालमहिर्भूमिंकपालमृश्विनौं द्विकपालं चुन्द्रमाः पश्चंदशकपालमृग्निस्त्वष्टा वसंवोऽष्टाकंपालम्न्यत्रं चुरुम्। रुद्रौंऽर्यमा पूषा पंशुमान्थस्या ५ सोमों रुद्रो बृहुस्पतिः पर्यसि वायः पयः सोमों वायुरिन्द्राग्नी मित्र इन्द्र आपो ब्रह्मं युमोंऽभिजित्यै त्वष्टां प्रजापंतिः प्रजायें पौर्णमास्या अमावास्याया अगत्यै विश्वे जित्यां अश्विनौ श्रुत्यै। ब्रह्म तदेतं विष्णुः स एतं वायुः स एतदापुस्ताः। पितरो विश्वे वसंवोऽकामयन्त मेति त एतन्निरंवपन्। आपोऽकामयन्त् मेति ता पृतन्निरंवपन्। इन्द्राग्नी अश्विनांवकामयेतां वेति तावेतन्निरंवपताम्। अहोरात्रे वा अंकामयेतामिति ते पृतन्निरंवपताम्। अन्यत्रांकामयतेति स पुतन्निरंवपत्। इन्द्राग्नी श्रेष्ठामिन्द्रो उयैष्ठामिन्द्रो दुढः। अहिः सूर्योऽदित्यै विष्णंवे प्रतिष्ठायैं। सोमो युमः संमानानाम्। अग्निर्नो रीरिषद्न्यत्रं रीरिषः॥)॥_____

अग्निर्न ऋध्यास्म नवीनवोऽग्निर्मित्रश्चन्द्रमाः षट्॥६॥

अग्निर्नस्तन्नों वायुरहिंबुंभ्रियं ऋक्षा वा इयमथैतत्पौंर्णमास्या अजो वा एकंपाथ्सूर्यस्त्रिषंष्टिः॥६३॥

अग्निर्नः पातु प्रतिष्ठायै स्वाहेतिं॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके प्रथमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥द्वितीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः॥

तृतीयंस्यामितो दिवि सोमं आसीत्। तं गांयुत्र्याऽहंरत्। तस्यं पूर्णमंच्छिद्यत। तत्पूर्णोऽभवत्। तत्पूर्णस्यं पर्णृत्वम्। ब्रह्म वै पूर्णः। यत्पंर्णशाखयां वथ्सानंपाकरोति। ब्रह्मणैवैनांनुपाकरोति। गायुत्रो वै पूर्णः। गायुत्राः पुशवंः॥१॥

तस्मात्रीणित्रीणि पूर्णस्यं पलाशानिं। त्रिपदां गायत्री। यत्पंर्णशाखया गाः प्रार्पयिति। स्वयैवैनां देवतंया प्रार्पयिति। यं कामयेतापृशः स्यादितिं। अपूर्णान्तस्मै शुष्कांग्रामाहंरेत्। अपृशुरेव भविति। यं कामयेत पशुमान्थस्यादितिं। बहुपूर्णान्तस्मै

बहुशाखामाहंरेत्। पृशुमन्तंमेवैनं करोति॥२॥

यत्प्राचीमा हरेंत्। देवलोकम्भि जंयेत्। यदुदींचीं मनुष्यलोकम्। प्राचीमुदींचीमा हंरति। उभयौंर्लोकयोर्भिजिंत्यै। इषे त्वोर्जे त्वेत्यांह। इषंमेवोर्जं यजंमाने दधाति। वायवः स्थेत्यांह। वायुर्वा अन्तरिक्षस्याध्यंक्षाः। अन्तरिक्षदेवत्याः खलु वै पशर्वः॥३॥

वायवं एवैनान्परि ददाति। प्र वा एंनानेतदा केरोति। यदाहं। वायवः स्थेत्यंपायवः स्थेत्यांह। यजंमानायैव पृश्नुपं ह्वयते। देवो वंः सिवता प्रापंयत्वित्यांह प्रसूत्यै। श्रेष्ठंतमाय कर्मण इत्यांह। यज्ञो हि श्रेष्ठंतम् कर्म। तस्मादेवमांह। आप्यांयध्वमिघ्नया देवभागिनत्यांह॥४॥

वृथ्सेभ्यंश्च वा एताः पुरा मंनुष्येभ्यश्चाप्यांयन्त। देवेभ्यं एवैना इन्द्रायाप्यांययित। ऊर्जस्वतीः पर्यस्वतीरित्यांह। ऊर्ज् हि पर्यः सम्भरंन्ति। प्रजावंतीरनमीवा अंयक्ष्मा इत्यांह प्रजात्ये। मा वंः स्तेन ईशत् माऽघशः स् इत्यांह गृत्ये। रुद्रस्यं हेतिः परि वो वृणक्तित्यांह। रुद्रादेवेनांस्रायते। ध्रुवा अस्मिन्गोपंतो स्यात बह्वीरित्यांह। ध्रुवा एवास्मिन्बह्वीः करोति॥५॥
यजमानस्य पशन्पाहीत्यांह। पशनां गोपीथायं। तस्मांथ्सायं पशव

यजंमानस्य पुशून्पाहीत्यांह। पुशूनां गोंपीथायं। तस्माँथ्सायं पुशव उपंसमावंर्तन्ते। अनंधः सादयति। गर्भाणां धृत्या अप्रंपादाय। तस्माद्गर्भाः प्रजानामप्रपाद्काः। उपरीव निदंधाति। उपरीव हि सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ष्ये॥६॥

लोकस्य समंध्ये॥६॥
पशवंः करोति पशवों देवभागमित्यांह करोति नवं च॥—————[१]

देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्व इत्यंश्वपुर्शुमादंत्ते प्रसूत्यै। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्याह।

अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्तौम्। पूष्णो हस्तौभ्यामित्यांह् यत्यैं। यो वा ओषंधीः पर्वशो वेदं। नैनाः स हिनस्ति। प्रजापंतिर्वा ओषंधीः पर्वशो वेद। स एना न हिनस्ति। अश्वपर्श्वा बर्हरच्छैति। प्राजापत्यो वा अश्वः सयोनित्वायं॥७॥

ओषंधीनामहिर्स्सायै। यज्ञस्यं घोषद्सीत्यांह। यजंमान एव र्यिं दंधाति। प्रत्युंष्ट्र रक्षः प्रत्युंष्टा अरांतय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्यै। प्रेयमंगाद्धिषणां बर्हिरच्छेत्यांह। विद्या वै धिषणां। विद्ययैवैनदच्छेंति। मनुंना कृता स्वधया वित्षष्टेत्यांह। मानुवी हि पर्शुंः स्वधाकृता॥८॥

त आवंहन्ति कुवर्यः पुरस्तादित्यांह। शुश्रुवा १सो वै कुवर्यः। युज्ञः पुरस्तांत्।

मुख्त एव यज्ञमा रंभते। अथो यदेतदुक्ता यतः कुतंश्चा हरंति। तत्प्राच्यां एव दिशो भवति। देवेभ्यो जुष्टंमिह बर्हिरासद इत्याह। बर्हिषः समृद्धौ। कर्मणो-

ऽनंपराधाय। देवानां परिषूतम्सीत्यांह॥९॥ यद्वा इदं किं चे। तद्देवानां परिषूतम्। अथो यथा वस्यंसे प्रतिप्रोच्याहेदं

य एवं वेदं॥११॥

यावंतः स्तम्बान्पंरिदिशेत्। यत्तेषांमुच्छिङ्घ्यात्। अति तद्यज्ञस्यं रेचयेत्। एक ई स्तम्बं परिंदिशेत्। त॰ सर्वं दायात्॥१०॥
यज्ञस्यानंतिरेकाय। वर्षवृंद्धम्सीत्यांह। वर्षवृंद्धा वा ओषंधयः। देवंबर्हिरित्यांह। देवंभ्यं एवैनंत्करोति। मा त्वाऽन्वङ्गा तिर्यगित्याहाहि ईसायै। पर्वं ते राध्यासमित्याहध्यैं। आच्छेत्ता ते मा रिषमित्यांह। नास्याऽऽत्मनों मीयते।

कंरिष्यामीति। एवमेव तदंध्वर्युर्देवेभ्यः प्रतिप्रोच्यं बर्हिर्दाति। आत्मनोऽहि रंसायै।

देवंबर्हिः शृतवंल्शृं विरोहेत्यांह। प्रजा वै बुर्हिः। प्रजानां प्रजनंनाय।

सहस्रंवल्शा वि वय १ रिहेमेत्यांह। आशिषंमेवैतामा शाँस्ते। पृथिव्याः सम्पृचंः पाहीत्यांह् प्रतिष्ठित्ये। अयुंङ्गायुङ्गान्मुष्टीं लुंनोति। मिथुन्त्वाय प्रजाँत्ये। सुसम्भृताँ त्वा सम्भेरामीत्यांह। ब्रह्मणैवैनथ्सम्भेरति॥१२॥

अदित्यै रास्नाऽसीत्यांह। इयं वा अदितिः। अस्या एवैन्द्रास्नां करोति। इन्द्राण्यै सन्नहंनुमित्यांह। इन्द्राणी वा अग्ने देवतांना समनहात। साऽऽर्भ्नोत्। ऋष्यै सन्नहाति। प्रजा वै बर्हिः। प्रजानामपंरावापाय। तस्माथ्स्नावंसन्तताः प्रजा जांयन्ते॥१३॥

पूषा तें ग्रन्थिं ग्रंश्नात्वित्यांह। पृष्टिंमेव यजंमाने दधाति। स ते मास्थादित्याहाहि रेसायै। पृश्चात्प्राश्चमुपंगूहित। पृश्चाद्वै प्राचीन् रेतों धीयते। पृश्चादेवास्में प्राचीन् रेतों दधाति। इन्द्रंस्य त्वा बाहुभ्यामुद्यंच्छु इत्यांह। इन्द्रियमेव यजंमाने दधाति। बृहुस्पतेंर्मूर्भा हंग्मीत्यांह। ब्रह्म वै देवानां बृहुस्पतिः॥१४॥

ब्रह्मणैवैनंद्धरति। उर्वन्तिरेक्षमिन्विहीत्यांह् गत्यैं। देवङ्गमम्सीत्यांह। देवानेवैनंद्रमयति। अनंधः सादयति। गर्भाणां धृत्या अप्रंपादाय। तस्माद्गर्भाः प्रजानामप्रंपादुकाः। उपरीव नि दंधाति। उपरीव हि सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य समष्ट्ये॥१५॥

स्योनित्वायं स्व्याकृंताऽसीत्यांह दायाद्वेदं भरित जायन्ते बृह्स्पितः समष्ट्रो॥

[२]

पूर्वेद्युरिध्माब्रहिः कंरोति। युज्ञमेवारभ्यं गृहीत्वोपंवसति। प्रजापंतिर्य्ज्ञमंसृजत।

तदुखे उपंदधात्यप्रंस्नश्साय। शुन्धंध्वं दैव्यांय कर्मणे देवयुज्याया इत्यांह। देवयुज्यायां एवैनांनि शुन्धित। मात्रिश्वंनो घर्मोऽसीत्यांह॥१६॥ अन्तरिक्षं वे मात्रिश्वंनो घर्मः। एषां लोकानां विधृत्ये। द्यौरंसि पृथिव्यंसीत्यांह। दिवश्च ह्यंषा पृथिव्याश्च सम्भृता। यदुखा। तस्मादेवमांह। विश्वधांया असि पर्मण् धाम्नेत्यांह। वृष्टिवे विश्वधांयाः। वृष्टिमेवावंरुन्धे। दश्हंस्व मा ह्वारित्यांह धृत्यैं॥१७॥

तस्योखे अंस्र॰सेताम्। यज्ञो वै प्रजापंतिः। यथ्सांन्नाय्योखे भवंतः। यज्ञस्यैव

तेभ्यं एवैनंत्करोति। शतधार सहस्रंधारमित्यांह। प्राणेष्वेवायुंर्दधाति सर्वत्वायं।

त्रिवृत्पंलाशशाखायां दर्भमयं भवति। त्रिवृद्धे प्राणः। त्रिवृतंमेव प्राणं मध्यतो

वसूनां पुवित्रमुसीत्यांह। प्राणा वै वसंवः। तेषां वा एतद्भागधेयम्। यत्पवित्रम्।

यजंमाने दधाति॥१८॥
सौम्यः पूर्णः संयोनित्वायं। साक्षात्पवित्रं दुर्भाः। प्राख्सायमधिनि दंधाति।
तत्प्राणापानयों रूपम्। तिर्यक्प्रातः। तद्दर्शस्य रूपम्। दार्श्यक् ह्यंतदहंः। अत्रं वै
चन्द्रमाः। अत्रं प्राणाः। उभयंमेवोपैत्यजांमित्वाय॥१९॥

तस्माद्य सर्वतः पवते। हुतः स्तोको हुतो द्रफ्स इत्यांह प्रतिष्ठित्यै। हुविषो-

ऽस्कन्दाय। न हि हुत इस्वाहां कृत इस्कन्दंति। दिवि नाको नामाग्निः। तस्यं

विप्रुषों भाग्धेयम्। अग्नये बृहते नाकायेत्यांह। नाकंमेवाग्निं भाग्धेयेन समर्धयति।

स्वाह्य द्यावापृथिवीभ्यामित्याह। द्यावापृथिव्योरेवैन्त्प्रतिष्ठापयति॥२०॥ प्वित्रंवत्यानंयति। अपां चैवौषंधीनां च रस् सर्मृजति। अथो ओषंधीष्वेव पुशून्प्रतिष्ठापयति। अन्वारभ्य वाचं यच्छति। यज्ञस्य धृत्यैं। धारयंन्नास्ते। धारयंन्त इव हि दुहन्तिं। कामधुक्ष इत्याहातृतीयंस्यै। त्रयं इमे लोकाः। इमानेव लोकान् यजमानो दहे॥२१॥

अमूमिति नामं गृह्णाति। भद्रमेवासां कर्मा विष्कंरोति। सा विश्वायुः सा

विश्वर्यंचाः सा विश्वकर्मेत्याह। इयं वै विश्वायुः। अन्तरिक्षं विश्वर्यंचाः। असौ

विश्वकंमां। इमानेवैताभिंलींकान् यंथापूर्वं दुंहे। अथो यथां प्रदात्रे पुण्यंमाशास्तें। पुवमेवेनां पुतदुपंस्तौति। तस्मात्प्रादादित्युत्रीय वन्दंमाना उपस्तुवन्तः पृशून्दुं-हित्त॥२२॥

बहु दुग्धीन्द्रांय देवेभ्यों ह्विरिति वाचं विसृजते। यथादेवतमेव प्रसौति। दैव्यंस्य च मानुषस्यं च व्यावृंत्यै। त्रिरांह। त्रिषंत्या हि देवाः। अवांचं यमोऽनंन्वार्भ्योत्तराः। अपंरिमितमेवावं रुन्थे। न दांरुपात्रेणं दुद्यात्। अग्निवद्वे दांरुपात्रम्। यद्दांरुपात्रेणं

दुह्यात्॥ २३॥

यातयाँम्ना ह्विषां यजेत। अथो खल्वांहुः। पुरोडाशंमुखानि वै ह्वी॰िषं। नेत इंतः पुरोडाशं ह्विषो यामोऽस्तीतिं। कामंमेव दांरुपात्रेणं दुह्यात्। शूद्र एव न दुंह्यात्। असंतो वा एष सम्भूतः। यच्छूद्रः। अहंविरेव तदित्यांहुः। यच्छूद्रो दोग्धीतिं॥२४॥

अग्निहोत्रमेव न दुंह्याच्छूद्रः। तिष्ठि नोत्पुनितं। यदा खलु वै प्वित्रंमृत्येतिं। अथ तिष्ठविरितिं। सम्पृंच्यध्वमृतावरीरित्यांह। अपां चैवौषंधीनां च रस् सं संजिति। तस्माद्पां चौषंधीनां च रस्मुपंजीवामः। मृन्द्रा धनंस्य सात्य इत्यांह। पृष्टिंमेव यजंमाने दधाति। सोमेन त्वातंनुच्मीन्द्रांय दधीत्यांह॥२५॥

सोमंमेवैनंत्करोति। यो वै सोमं भक्षयित्वा। संवृथ्सर सोमं न पिबंति। पुनुर्भक्ष्यों उस्य सोमपीथो भंवति। सोमः खलु वै साँन्नाय्यम्। य एवं विद्वान्थ्यां न्नाय्यं पिबंति। अपुनुर्भक्ष्यों उस्य सोमपीथो भंवति। न मृन्मयेनापि दथ्यात्। यन्मृन्मयेनापिद्ध्यात्। पितृदेवत्य एक्ष्यात्॥२६॥

अयस्पात्रेणं वा दारुपात्रेण वाऽपिं दधाति। तिद्धे सदेवम्। उदन्बद्भंवति। आपो वै रंक्षोघ्रीः। रक्षंसामपंहत्यै। अदंस्तमसि विष्णंवे त्वेत्यांह। यज्ञो वै विष्णुंः। यज्ञायैवैनददंस्तं करोति। विष्णों हव्य र रक्षस्वेत्यांह गुप्त्यैं। अनंधः सादयति। गर्भाणां धृत्या अप्रेपादाय। तस्माद्गर्भाः प्रजानामप्रेपादुकाः। उपरीव निदंधाति। उपरींव हि सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्रौ॥२७॥ असीत्यांह भृत्यै यर्जमाने दधात्यर्जामित्वाय स्थापयित दुहे दुहन्ति दुह्याद्दोग्धीति दधीत्यांह स्याथ्सादयिति पश्चं च॥——[३]

कर्मणे वां देवेभ्यः शकेयमित्यांह शक्त्यैं। यज्ञस्य वै सन्तंतिमनुं प्रजाः पशवो यजंमानस्य सन्तांयन्ते। यज्ञस्य विच्छिंत्तिमनुं प्रजाः पशवो यजंमानस्य

विच्छिंद्यन्ते। यज्ञस्य सन्तंतिरसि यज्ञस्यं त्वा सन्तंत्ये स्तृणामि सन्तंत्ये त्वा यज्ञस्येत्याहंवनीयाथ्सन्तंनोति। यजंमानस्य प्रजायें पशूनाः सन्तंत्यै। अपः प्रणयति। श्रुद्धा वा आपः। श्रुद्धामेवारभ्यं प्रणीय प्रचरित। अपः प्रणयति। यज्ञो वा आपः॥२८॥

यज्ञमेवारभ्यं प्रणीय प्रचंरति। अपः प्रणंयति। वज्रो वा आपंः। वज्रमेव भातृं व्येभ्यः प्रहृत्यं प्रणीय प्रचंरति। अपः प्रणंयति। आपो वै रंक्षोघ्नीः। रक्षंसामपंहत्यै। अपः प्रणंयति। आपो वै देवानां प्रियं धामं। देवानां प्रियं धामं प्रणीय प्रचंरति॥२९॥

अपः प्रणंयति। आपो वै सर्वां देवताः। देवतां प्रवारभ्यं प्रणीय प्रचंरति। वेषाय त्वेत्यांह। वेषाय ह्येनदादत्ते। प्रत्युष्ट् रक्षः प्रत्युष्टा अरातय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्ये। धूरसीत्यांह। पृष वै धुर्योऽग्निः। तं यदनुंपस्पृश्यातीयात्॥३०॥ अध्वर्यं च यजमानं च प्रदंहेत्। उपस्पृश्यात्येति। अध्वर्योश्च यजमानस्य

अध्वर्यं च यर्जमानं च प्रदेहत्। उपस्पृश्यात्येति। अध्वर्योश्च यर्जमानस्य चाप्रदाहाय। धूर्व तं यौस्मान्धूर्वित् तं धूर्व यं वयं धूर्वाम् इत्याह। द्वौ वाव पुरुषो। यं चैव धूर्वित। यश्चैनं धूर्वित। तावुमौ शुचाऽर्पयित। त्वं देवानामिस् सिस्तिनमं पप्रितमं जुष्टेतमं विह्नितमं देवहूर्तम्मित्याह। यथायजुरेवैतत्॥३१॥ अहुंतमिस हिव्धान्मित्याहानौत्यै। द॰हंस्व मा ह्वारित्यांह धृत्यै।

मित्रस्यं त्वा चक्षुंषा प्रेक्ष इत्याह मित्रत्वायं। मा भेर्मा संविक्था मा त्वां

हिश्सिषमित्याहाहिश्रंसायै। यद्वै किं च वातो नाभि वातिं। तथ्सर्वं वरुणदेवत्यम्।

उरु वातायत्याह। अवारुणमेवैनंत्करोति। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रंस्व इत्याह् प्रसूत्ये। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्याह॥३२॥ अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्याह यत्यै। अग्नये जुष्टं निर्वपामीत्याह। अग्नयं पृवैनां जुष्टं निर्वपति। त्रिर्यज्ञंषा। त्रयं इमे लोकाः। पृषां लोकानामात्यै। तूष्णीं चंतुर्थम्। अपिरिमितमेवावं रुन्थे। स पृवमेवानंपूर्वर हवीरिष निर्वपति॥३३॥

ड्दं देवानांमिदमुं नः सहेत्यांह् व्यावृंत्यै। स्फात्यै त्वा नारांत्या इत्यांह् गुप्त्यैं। तमंसीव वा एषों उन्तश्चंरित। यः पंरीणिहिं। सुवंरिभ वि ख्येषं वैश्वान्रं ज्योतिरित्यांह। सुवंरेवाभि वि पंश्यित वैश्वान्रं ज्योतिः। द्यावांपृथिवी ह्विषं गृहीत उदंवेपेताम्। दःहंन्तान्दुर्या द्यावांपृथिव्योरित्यांह।

गृहाणां द्यावापृथिव्योर्धृत्यै। उर्वन्तिरिक्षमिन्विहीत्यांह् गत्यै। अदित्यास्त्वोपस्थे सादयामीत्यांह। इयं वा अदितिः। अस्या पृवैनंदुपस्थे सादयति। अग्ने ह्व्य र रेक्ष्रस्वेत्यांह् गृत्यै॥३४॥

यज्ञो वा आणे धामं प्रणीय प्रचंरत्यतीयादेतद्वाहुभ्यामित्यांह ह्वीरिष् निर्वपति गत्यै चत्वारि च॥———[४]

इन्द्रों वृत्रमंहन्। सोंऽपः। अभ्यंम्रियत। तासां यन्मेध्यं यज्ञिय सदेवमासींत्।

तदपोदंत्रामत्। ते दुर्भा अंभवन्। यद्दर्भैर्प उंत्पुनातिं। या एव मेध्यां यज्ञियाः सदेवा आपः। ताभिरेवैना उत्पुनाति। द्वाभ्यामुत्पुनाति॥३५॥ द्विपाद्यजंमानः प्रतिष्ठित्ये। देवो वंः सिवतोत्पुनात्वित्यांह। सिवतृप्रंसूत एवैना उत्पुनाति। अच्छिंद्रेण प्वित्रेणेत्यांह। असौ वा आदित्योऽच्छिंद्रं प्वित्रम्ं। तेनैवैना उत्पुनाति। वसोः सूर्यस्य रिष्मिभिरित्यांह। प्राणा वा आपः। प्राणा वस्वः। प्राणा

प्राणैरेव प्राणान्थ्सं पृंणक्ति। सावित्रियर्चा। सवितृप्रंसूतं मे कर्मासदितिं।

रश्मयः॥३६॥

युष्मानिन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्य् इत्याह। वृत्र १ हं हिनिष्यन्निन्द्र आपों वव्रे। आपो हेन्द्रं विवरे। संज्ञामेवासामेतथ्सामानुं व्याचेष्टे। प्रोक्षिताः स्थेत्याह। तेनाऽऽपः प्रोक्षिताः। अग्नये वो जुष्टं प्रोक्षांम्यग्नीषोमांभ्यामित्यांह। यथादेवतमेवैनान्प्रोक्षंति। त्रिः प्रोक्षंति। त्र्यांवृद्धि यज्ञः॥३८॥

देवीरग्रेपुवो अग्रेगुव इत्याह। रूपमेवासामितन्महिमानं व्याचेष्टे। अग्रं इमं यज्ञं

नंयताग्रे यज्ञपंतिमित्यांह। अग्रं एव यज्ञं नंयन्ति। अग्रे यज्ञपंतिम्॥३७॥

अथो रक्षंसामपंहत्यै। शुन्धंध्वं दैव्याय कर्मणे देवयज्याया इत्यांह। देवयज्यायां एवैनानि शुन्धति। त्रिः प्रोक्षंति। त्र्यावृद्धि युज्ञः। अथो मेध्यत्वायं। अवंधूत्र् रक्षोऽवंधूता अरातय इत्याह। रक्षंसामपंहत्यै। अदित्यास्त्वगसीत्यांह। इयं वा अदिंतिः॥३९॥

अस्या पृवैनृत्त्वचं करोति। प्रतिं त्वा पृथिवी वेत्त्वित्यांह् प्रतिष्ठित्यै। पुरस्तांत्प्रतीचीनंग्रीवृमुत्तंरलोमोपंस्तृणाति मेध्यत्वायं। तस्मांत्पुरस्तांत्प्रत्यश्चंः पृशवो मेधुमुपंतिष्ठन्ते। तस्मांत्पुजा मृगं ग्राहुंकाः। यज्ञो देवेभ्यो निलायत। कृष्णो रूपं कृत्वा। यत्कृष्णाजिने ह्विरंध्यवहन्तिं। यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुंङ्के। ह्विषोऽस्कन्दाय॥४०॥

अधिषवंणमसि वानस्पृत्यमित्यांह। अधिषवंणमेवैनंत्करोति। प्रति त्वा-ऽदित्यास्त्वग्वेत्त्वित्यांह सयत्वायं। अग्नेस्तुनूरसीत्यांह। अग्नेर्वा एषा तुनूः। यदोषंधयः। वाचो विसर्जनमित्यांह। यदा हि प्रजा ओषंधीनाम्श्वन्तिं। अथ वाचं विसृंजन्ते। देववीतये त्वा गृह्णामीत्यांह॥४१॥

देवतांभिरेवैन्थ्समंध्यति। अद्विरिस वानस्पृत्य इत्यांह। ग्रावांणमेवैनंत्करोति। स इदं देवेभ्यों ह्व्य स्युशिमं शिम्ष्वेत्यांह् शान्त्यैं। हिवेष्कृदेहीत्यांह। य एव देवाना हे हिवष्कृतंः। तान् ह्वंयति। त्रिर्ह्वंयति। त्रिषंत्या हि देवाः। इषमावदोर्जमावदेत्यांह॥४२॥

इषमेवोर्जं यर्जमाने दधाति। द्युमद्वंदत व्यश् संङ्घातं जेष्मेत्यांह् भातृंव्याभिभूत्ये। मनौः श्रृद्धादंवस्य यर्जमानस्यासुर्घ्री वाक्। यज्ञायुधेषु प्रविष्टाऽऽसीत्। तेऽसुरा यार्वन्तो यज्ञायुधानांमुद्वदंतामुपार्श्वंचन्। ते पर्राभवन्। तस्माथ्स्वानां मध्येऽवसायं यजेत। यार्वन्तोऽस्य भातृंव्या यज्ञायुधानांमुद्वदंतामुप-शृंविन्ति। ते पर्राभवन्ति। उ्चैः समाहंन्त् वा आंह् विजित्ये॥४३॥

वृङ्क एषामिन्द्रियं वीर्यम्। श्रेष्ठं एषां भवति। वर्षवृंद्धमसि प्रतिं त्वा वर्षवृंद्धं वेत्त्वत्यांह। वर्षवृंद्धा वा ओषंधयः। वर्षवृंद्धा इषीकाः समृंद्धौ। यज्ञ र रक्षा इस्यनु प्राविंशन्। तान्यस्रा पृशुभ्यों निरवांदयन्त। तुषैरोषंधीभ्यः। परांपूत रक्षः परांपूता अरांतय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्यै॥४४॥

रक्षंसां भागों ऽसीत्यांह। तुषैरेव रक्षा रेसि निरवंदयते। अप उपस्पृशति मेध्यत्वायं। वायुर्वो विविन्क्तित्यांह। पवित्रं वै वायुः। पुनात्येवैनान्। अन्तरिक्षादिव वा एते प्रस्केन्दन्ति। ये शूर्पांत्। देवो वंः सविता हिरंण्यपाणिः प्रतिंगृह्णात्वित्यांह प्रतिष्ठित्यै। हविषोऽस्केन्दाय। त्रिष्फलीकर्तवा आह। त्र्यांवृद्धि यज्ञः। अथौ

मेध्यत्वायं॥४५॥

द्वाभ्यामुत्पुंनाति रश्मयों नयन्त्यग्रें यज्ञपंतिं यज्ञोऽदिंतिरस्कंन्दाय गृह्णामीत्यांह वदेत्यांह विजित्या अपंहत्या अस्कंन्दाय त्रीणिं

अवंधूत १ रक्षो ऽवंधूता अरांतय इत्यांह। रक्षंसामपंहत्यै। अदित्यास्त्वगसीत्यांह।

इयं वा अदितिः। अस्या एवैनत्त्वचं करोति। प्रतिं त्वा पृथिवी वेत्त्वित्यांह प्रतिं-

ष्ठित्यै। पुरस्तांत्प्रतीचीनंग्रीवमुत्तंरलोमोपंस्तृणाति मेध्यत्वायं। तस्मांत्पुरस्तांत्प्रत्यश्चंः

पशवो मेधमुपंतिष्ठन्ते। तस्मौत्युजा मृगं ग्राहुंकाः। युज्ञो देवेभ्यो निलायत॥४६॥ कृष्णों रूपं कृत्वा। यत्कृष्णाजिने हिवरिधिपिनष्टिं। यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुंङ्के।

हिवषोऽस्केन्दाय। द्यावांपृथिवी सहास्तांम्। ते शंम्यामात्रमेकमहर्व्येता ई शम्यामात्रमेकमहंः। दिवः स्कंम्भनिरंसि प्रति त्वाऽदिंत्यास्त्वग्वेत्वित्यांह। द्यावांपृथिव्योवींत्यैं। धिषणांऽसि पर्वत्या प्रतिं त्वा दिवः स्कंम्भुनिर्वेत्त्वित्यांह। द्यावांपृथिव्योविंधृंत्यै॥४७॥

धिषणांऽसि पार्वतेयी प्रतिं त्वा पर्वतिर्वेत्त्वित्यांह। द्यावांपृथिव्योधृत्यैं। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्व इत्यांह प्रसूत्ये। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्यांह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्य आस्तौम्। पूष्णो हस्तौभ्यामित्यांह यत्त्यें। अधिवपामीत्यांह। यथादेवतमेवैनानिधं वपति। धान्यंमिस धिनुहि देवानित्यांह। एतस्य यजुंषो वीर्यण॥४८॥

यावदेकां देवतां कामयंते यावदेकां। तावदाहुंतिः प्रथते। न हि तदस्तिं। यत्तावदेव स्यात्। यावंज्जुहोतिं। प्राणायं त्वाऽपानाय त्वेत्यांह। प्राणानेव यजमाने दधाति। दीर्घामनु प्रसितिमायुंषे धामित्यांह। आयुंरेवास्मिन्दधाति। अन्तरिक्षादिव वा एतानि प्रस्कन्दन्ति। यानि दृषदंः। देवो वंः सिवता हिरंण्यपाणिः प्रति-गृह्णात्वित्यांह प्रतिष्ठित्यै। हिवषोऽस्कन्दाय। असंवपन्ती पिश्षाणूनि कुरुतादित्यांह

निलांयत विधृंत्यै वीर्येण स्कन्दन्ति चत्वारिं च॥=

मेध्यत्वायं॥४९॥

निर्देग्ध्र रक्षो निर्देग्धा अरांतय इत्यांह। रक्षा ईस्येव निर्देहति। अग्निवत्युपंदधाति। अस्मिन्नेव लोके ज्योतिर्धत्ते। अङ्गांर्मिधं वर्तयति॥५०॥ अन्तरिक्ष एव ज्योतिर्धत्ते। आदित्यमेवामुष्मिं होके ज्योतिर्धत्ते। ज्योतिष्मन्तो-

देवयर्जं वहेत्यांह। य एवामात्क्रव्यात्। तमंपहत्यं। मेध्येऽग्नौ कपालमुपंदधाति।

धृष्टिंरसि ब्रह्मं युच्छेत्यांह धृत्यैं। अपाँग्नेऽग्निमामादं जिह निष्क्रव्यादर् सेधा

जनतिरक्ष पृष उपातियता जाप्त्यम्यामुज्याक उपातियता उपाति मन्ता-ऽस्मा इमे लोका भंवन्ति। य पृवं वेदं। ध्रुवमंसि पृथिवीं हु हेत्यांह। पृथिवीमेवैतेनं ह ह हित। ध्र्यमंस्यन्तिरक्षं हु हेत्यांह। अन्तिरिक्षमेवैतेनं ह हित। ध्रुणंमिस दिवं हु हेत्यांह। दिवंमेवैतेनं ह हित॥ ५१॥ धर्मासि दिशों हु हेत्यांह। दिशं पृवैतेनं ह हित। इमानेवैतैर्लोकान्ह हित। ह ह हेन्तेऽस्मा इमे लोकाः प्रजयां पशुभिः। य एवं वेदं। त्रीण्यग्रे कृपाला-युपंदधाति। त्रयं इमे लोकाः। एषां लोकानामार्स्यै। एकमग्रं कृपालमुपं दधाति। एकं वा अग्रं कृपालं पुरुषस्य सम्भवंति॥५२॥

अथ द्वे। अथ त्रीणि। अर्थ चत्वारि। अथाष्टौ। तस्माद्ष्टाकंपालं पुरुषस्य शिरः। यदेवं कृपालान्युप्दर्धाति। यज्ञो वै प्रजापितः। यज्ञमेव प्रजापितः सङ्स्करोति। आत्मानमेव तथ्सङ्स्करोति। त॰ सङ्स्कृतमात्मानम्॥५३॥

अमुर्ष्मिं श्लोकेऽनु परैति। यद्ष्टावुंप्दधांति। गायत्रिया तथ्सम्मितम्। यन्नवं। त्रिवृता तत्। यद्दशं। विराजा तत्। यदेकांदश। त्रिष्टुभा तत्। यद्वादंश॥५४॥

जगंत्या तत्। छन्दंः सम्मितानि स उपदर्धत्कपालांनि। इमाँ श्लोकानंनुपूर्वं दिशो विधृत्ये द हित। अथाऽऽयुंः प्राणान्यजां पृशून् यजंमाने दधाति। सृजातानंस्मा अभितों बहुलान्कंरोति। चितः स्थेत्याह। यथायजुरेवैतत्। भृगूंणामङ्गिरसां तपंसा तप्यध्वमित्यांह। देवतांनामेवैनांनि तपंसा तपति। तानि ततः सङ्स्थिते। यानि घर्मे कपालांन्युपचिन्वन्तिं वेधस इति चतुंष्पदयर्चा वि मुंश्रति। चतुंष्पादः पशवंः।

पशुष्वेवोपरिष्टात्प्रतिं तिष्ठति॥५५॥

देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्व इत्यांह प्रसूत्यै। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्यांह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्तांम्। पूष्णो हस्तांभ्यामित्यांह यत्यै। सं वंपामीत्यांह। यथादेवतमेवैनांनि संवंपति। समापों अद्भिरंग्मत समोषंधयो रसेनेत्यांह।

वृर्त्यृति दिवंमेवैतेनं दृ हित सुम्भवंति त र सङ्स्कृतमात्मानं द्वादंश सङ्स्थिते त्रीणिं च॥—————[७]

आपो वा ओषंधीर्जिन्वन्ति। ओषंधयोऽपो जिन्वन्ति। अन्या वा एतासामन्या जिन्वन्ति॥५६॥

तस्मदिवमाह। स॰ रेवतीर्जगंतीभिर्मधुंमतीर्मधुंमतीभिः सृज्यध्वमित्यांह। आपो वै रेवतीः। पृशवो जगंतीः। ओषंधयो मधुंमतीः। आपु ओषंधीः पृशून्। तानेवास्मा एक्धा स्॰्सृज्यं। मधुंमतः करोति। अद्भः परि प्रजांताः स्थ समुद्धिः पृंच्यध्वमितिं पूर्याप्नांवयति। यथा सुवृष्ट इमामनुविसृत्यं॥५७॥

आप् ओषंधीर्मृहयंन्ति। तादृगेव तत्। जनंयत्यै त्वा संयौमीत्यांह। प्रजा एवैतेनं

दाधार। अुग्नयें त्वाऽग्नीषोमांभ्यामित्यांह व्यावृत्त्ये। मुखस्य शिरोऽसीत्यांह। युज्ञो वै मखः। तस्यैतच्छिरंः। यत्पुरोडाशंः। तस्मादेवमाह॥५८॥

घुमीं ऽसि विश्वायुरित्यांह। विश्वंमेवायुर्यजंमाने दधाति। उरु प्रंथस्वोरु ते

युज्ञपंतिः प्रथतामित्यांह। यजमानमेव प्रजयां पृशुभिः प्रथयति। त्वचं गृह्णीष्वेत्यांह। सर्वमेवैन सर्तनुं करोति। अथाऽऽप आनीय परिमार्ष्टि। मा स्स एव तत्त्वचं दधाति। तस्मौत्त्वचा मार्सं छुन्नम्। घुर्मो वा पुषोऽशौन्तः॥५९॥ अर्धमासें ऽर्धमासे प्रवृंज्यते। यत्पुंरोडाशंः। स ईंश्वरो यजंमान १ शुचा प्रदहंः।

पर्यम्रि करोति। पशुमेवैनंमकः। शान्त्या अप्रदाहाय। त्रिः पर्यम्रि करोति। त्र्यांवृद्धि यज्ञः। अथो रक्षंसामपंहत्यै। अन्तरित् रक्षोऽन्तरिता अरातय इत्यांह॥६०॥ रक्षंसामुन्तर्हित्यै। पुरोडाशुं वा अधिश्रित् रक्षा ईस्यजिघा रसन्। दिवि नाको नामाग्नी रंक्षोहा। स पुवास्माद्रक्षा इस्यपांहन्। देवस्त्वां सिवता श्रंपयत्वित्यांह।

स्वितृप्रंसूत एवैन ई श्रपयति। वर्षिष्ठे अधि नाक इत्याह। रक्षंसामपंहत्यै।

अग्निस्ते तुनुवं माऽतिधागित्याहाऽनंतिदाहाय। अग्ने ह्व्य॰ रेक्ष्स्वेत्यांह् गुप्त्यै॥६१॥

अविंदहन्तः श्रपयतेति वाचं विसृंजते। यज्ञमेव ह्वी इष्यंभिव्याहृत्य प्रतंनुते। पुरोरुचमविंदाहाय शृत्ये करोति। मस्तिष्को वै पुरोडाशः। तं यन्नाभिं वासयैत्। आविर्मस्तिष्कः स्यात्। अभिवांसयित। तस्माद्गुहां मस्तिष्कः। भस्मनाऽभिवांसयित। तस्मान्मा सेनास्थिं छन्नम्॥६२॥

वेदेनाभिवांसयित। तस्मात्केशैः शिरंश्छुन्नम्। अखंलितभावुको भवित। य एवं वेदे। पृशोर्वे प्रतिमा पुरोडाशः। स नायुजुष्कंमिभवास्यः। वृथेव स्यात्। ईश्वरा यजमानस्य पृशवः प्रमेतोः। सं ब्रह्मणा पृच्युस्वेत्यांह। प्राणा वै ब्रह्मं॥६३॥

प्राणाः प्रावंः। प्राणेरेव प्राच्यामपृणिक्ति। न प्रमायंका भवन्ति। यजंमानो वै पुरोडाशंः। प्रजा प्रावः पुरीषम्। यदेवमंभिवासयंति। यजंमानमेव प्रजयां प्राभिः समर्थयति। देवा वै ह्विर्भृत्वाऽब्रुंवन्। कस्मिन्निदं म्रंक्ष्यामह् इतिं। सौंऽग्निरंब्रवीत्॥६४॥

मियं तनूः सं निर्धप्वम्। अहं वस्तं जनियष्यामि। यस्मिन्मक्ष्यप्व इतिं। ते देवा अग्नौ तन्ः सन्त्रंदधत। तस्मांदाहुः। अग्निः सर्वा देवता इतिं। सोऽङ्गारेणापः। अभ्यंपातयत्। ततं एकतोंऽजायत। स द्वितीयंमभ्यंपातयत्॥६५॥

ततों द्वितों ऽजायत। स तृतीयंमभ्यंपातयत्। ततंस्त्रितों ऽजायत। यदन्यो-ऽजांयन्त। तदाप्यानांमाप्यत्वम्। यदात्मभ्योऽजांयन्त। तदात्म्यानांमात्म्यत्वम्। ते देवा आप्येष्वंमृजत। आप्या अंमृजत सूर्यांभ्युदिते। सूर्यांभ्युदितः सूर्याभिनिमुक्ते॥६६॥

सूर्याभिनिमुक्तः कुनुखिनि। कुनुखी श्यावदंति। श्यावदंत्रग्रदिधिषौ। अग्रदिधिषुः पंरिवित्ते। परिवित्तो वीरहणि। वीरहा ब्रह्महणि। तद्ब्रह्महणं नात्यंच्यवत। अन्तर्वेदि निनंयत्यवंरु छै। उल्मुंकेनाभि गृह्णाति शृतत्वायं। शृतकामा इव हि देवाः॥६७॥

अन्या जिंन्वन्त्यनु विसुत्यैवमाहाशाँन्त आह् गुप्त्यै छुन्नं ब्रह्मांब्रवीद्भितीयंमुभ्यंपातयथ्सूर्यांभिनिम्रुक्ते देवाः॥————[८]

देवस्यं त्वा सिवतुः प्रंस्व इति स्फामादंते प्रसूँत्यै। अश्विनौंर्बाहुभ्यामित्यांह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्तौम्। पूष्णो हस्तौभ्यामित्यांह यत्यै। आदंद इन्द्रंस्य बाहुरंसि दक्षिण इत्यांह। इन्द्रियमेव यजंमाने दधाति। सहस्रंभृष्टिः श्ततेंजा इत्यांह। रूपमेवास्यैतन्मंहिमानं व्याचंष्टे। वायुरंसि तिग्मतेंजा इत्यांह। तेजो वै वायुः॥६८॥

तेर्ज एवास्मिन्दधाति। विषाद्वै नामांसुर आंसीत्। सोंऽबिभेत्। युज्ञेर्न मा देवा अभिभविष्यन्तीतिं। स पृथिवीमभ्यंवमीत्। सा मेध्याऽभंवत्। अथो यदिन्द्रों वृत्रमहर्न्। तस्य लोहितं पृथिवीमनु व्यंधावत्। सा मेध्याऽभंवत्। पृथिवि देवयज्नीत्यांह॥६९॥

मेध्यांमेवैनां देवयर्जनीं करोति। ओषंध्यास्ते मूलं मा हि सिष्मित्यांह। ओषंधीनामहि सायै। व्रजं गंच्छ गोस्थानमित्यांह। छन्दा सिमे वै व्रजो गोस्थानं। छन्दा स्थेवास्मे व्रजं गोस्थानं करोति। वर्षंतु ते द्यौरित्यांह। वृष्टिवै द्यौः।

एव भ्रातृंव्यमपंहन्ति। द्वितीय ई हरति॥७२॥

वृष्टिमेवावं रुन्धे। बधान देव सवितः परमस्यां परावतीत्यांह॥७०॥

श्तेन पाशैं। योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मस्तमतो मा मौगित्याहानिम्रुक्त्ये। अरुरुवें नामांसुर आंसीत्। स पृथिव्यामुपंसुप्तोऽशयत्। तं देवा अपंहतोऽररुंः पृथिव्या इति पृथिव्या अपाप्तन्। भ्रातृंव्यो वा अरुरुंः। अपंहतोऽरुरुंः पृथिव्या इति यदाहं॥७१॥

भ्रातृंव्यमेव पृथिव्या अपंहन्ति। तेऽमन्यन्त। दिवं वा अयमितः पंतिष्यतीति। तम्रुरुंस्ते दिवं माऽस्कानिति दिवः पर्यंबाधन्त। भ्रातृंव्यो वा अरुरुंः। अरुरुंस्ते दिवं मा स्कानिति यदाहं। भ्रातृंव्यमेव दिवः परिंबाधते। स्तम्बयजुर्हंरित। पृथिव्या

द्वौ वाव पुरुषौ। यं चैव द्वेष्टिं। यश्चैनं द्वेष्टिं। तावुभौ बंध्नाति परमस्यां परावितं

अन्तरिक्षादेवैन्मपंहन्ति। तृतीय १ हरति। दिव एवैन्मपंहन्ति। तूष्णीं चंतुर्थ १ हरति। अपंरिमितादेवैन्मपंहन्ति। असुंराणां वा इयमग्रं आसीत्। यावदासीनः

परापश्यंति। तावंद्देवानांम्। ते देवा अंब्रुवन्। अस्त्वेव नोऽस्यामपीतिं॥७३॥

कांन्नो दास्यथेति। यावंथ्स्वयं पंरिगृह्णीथेति। ते वसंवस्त्वेति दक्षिणतः पर्यगृह्णन्। रुद्रास्त्वेति पृश्चात्। आदित्यास्त्वेत्यंत्तर्तः। तैंऽग्निना प्राञ्चोऽजयन्। वसुंभिर्दक्षिणा। रुद्रैः प्रत्यश्चः। आदित्यैरुदंश्चः। यस्यैवं विदुषो वेदिं परिगृह्णन्ति॥७४॥ भवंत्यात्मनां। परांऽस्य भ्रातृंव्यो भवति। देवस्यं सवितुः सुव इत्यांह प्रसूत्यै।

कर्म कृण्वन्ति वेधस् इत्याह। इषित १ हि कर्म क्रियतें। पृथिव्यै मेध्यं चामेध्यं च व्युदंक्रामताम्। प्राचीनंमुदीचीनं मेध्यम्। प्रतीचीनं दक्षिणाऽमेध्यम्। प्राचीमुदीचीं प्रवणां करोति। मेध्यांमेवैनां देवयर्जनीं करोति॥७५॥

प्राश्ची वेद्यन्सावुन्नयिति। आहुवनीयंस्य परिगृहीत्यै। प्रतीची श्रोणीं। गार्हपत्यस्य परिगृहीत्यै। अथों मिथुन्त्वायं। उद्धंन्ति। यदेवास्यां अमेध्यम्। तदपंहन्ति। उद्धंन्ति। तस्मादोषंधयः पराभवन्ति॥७६॥

मूलं छिनत्ति। भ्रातृंव्यस्यैव मूलं छिनत्ति। मूलं वा अंतितिष्टद्रक्षाः स्यन्तिपति। यद्धस्तेन छिन्द्यात्। कुन्खिनीः प्रजाः स्यः। स्फोनं छिनत्ति। वज्रो वै स्फाः। वज्रेणैव यज्ञाद्रक्षाः स्यपंहिन्ति। पितृदेवत्याऽतिंखाता। इयंतीं खनति॥७७॥

प्रजापंतिना यज्ञमुखेन सम्मिताम्। वेदिर्देवेभ्यो निलायत। तां चंतुरङ्गुले-ऽन्वंविन्दन्। तस्मांचतुरङ्गुलं खेयां। चतुरङ्गुलं खंनति। चतुरङ्गुले ह्योषंधयः प्रतितिष्ठंन्ति। आ प्रतिष्ठाये खनति। यजमानमेव प्रतिष्ठां गमयति। दक्षिणतो वर्षीयसीं करोति। देवयर्जनस्यैव रूपमंकः॥७८॥

पुरीषवतीं करोति। प्रजा वै पृशवः पुरीषम्। प्रजयैवैनं पृश्भिः पुरीषवन्तं करोति। उत्तरं परिग्राहं परिगृह्णाति। एतावंती वै पृथिवी। यावंती वेदिः। तस्यां पृतावंत पृव भ्रातृंव्यं निर्भज्यं। आत्मन उत्तरं परिग्राहं परिगृह्णाति। ऋतमंस्यृत्सदंनमस्यृत्श्रीर्सीत्यांह। यथायजुरेवैतत्॥७९॥

क्रूरमिव वा एतत्कंरोति। यद्वेदिं क्रोतिं। धा असि स्वधा असीतिं योयुप्यते

शान्त्यै। उर्वी चासि वस्वीं चासीत्यांह। उर्वीमेवैनां वस्वीं करोति। पुरा क्रूरस्यं विसृपों विरिष्णिन्नित्यांह मेध्यत्वायं। उदादायं पृथिवीं जीरदांनुर्यामैरंयं चन्द्रमंसि स्वधाभिरित्यांह। यदेवास्यां अमेध्यम्। तदंपहत्यं। मेध्यां देवयजंनीं कृत्वा॥८०॥

यद्दश्चन्द्रमंसि मेध्यम्। तद्स्यामेरंयित। तां धीरांसो अनुदृश्यं यजन्त इत्याहानुंख्यात्ये। प्रोक्षंणीरा सांदय। इध्माबर्हिरुपंसादय। स्रुवं च स्रुचंश्च सम्मृंड्डि। पत्नी सन्नंह्य। आज्येनोदेहीत्यांहानुपूर्वतांयै। प्रोक्षंणीरा सांदयित। आपो वै रंक्षोघ्नीः॥८१॥

रक्षंसामपंहत्यै। स्फास्य वर्त्मन्थ्सादयति। यज्ञस्य सन्तंत्यै। उवाच हासितो दैवलः। एतावंतीर्वा अमुर्ज्भिष्ठोक आपं आसन्। यावंतीः प्रोक्षंणीरिति। तस्माद्धह्वीरासाद्याः। स्फामुदस्यन्। यं द्विष्यात्तं ध्यायेत्। शुचैवैनंमपंयति॥८२॥ व वायुर्गह परावतीत्याहाहं द्वितीयर् हर्तीति परिगृह्वन्ति देवयर्जनी करोति भवन्ति खनत्यकरेतत्कृत्वा रंक्षोधीरंपंयति॥-[९]

वज्रो वै स्फाः। यदन्वश्चं धारयेत्। वज्जैऽध्वर्युः क्षंण्वीत। पुरस्तातिर्यश्चं

धारयति। वज्रो वै स्फाः। वज्रेणैव यज्ञस्यं दक्षिणतो रक्षाङ्स्यपंहन्ति। अग्निभ्यां प्राचेश्च प्रतीचेश्च। स्फोनोदींचश्चाध्राचेश्च। स्फोन् वा एष वज्रेणास्यै पाप्मानं भ्रातृंव्यमपहत्यं। उत्क्रेऽधि प्रवृंश्चति॥८३॥

यथोपधार्यं वृश्चन्त्येवम्। हस्ताववं नेनिक्ते। आत्मानंमेव पंवयते। स्फ्यं प्रक्षांलयित मेध्यत्वायं। अथो पाप्मनं एव भ्रातृंव्यस्य न्युङ्गं छिनित्त। इध्माब्र्हिरुपंसादयित् युक्त्यैं। युज्ञस्यं मिथुनत्वायं। अथो पुरोरुचंमेवेतां दंधाति। उत्तरस्य कर्मणोऽनुंख्यात्यै। न पुरस्तौत्यत्यगुपंसादयेत्॥८४॥

यत्पुरस्तौत्प्रत्यगुपसादयैत्। अन्यत्रांऽऽहुतिप्थादि्धमं प्रतिपादयेत्। प्रजा वै ब्र्हिः। अपराध्रयाद्वर्हिषां प्रजानां प्रजनंनम्। पृश्चात्प्रागुपंसादयित। आहुतिप्थेन्धमं प्रतिपादयित। सम्प्रत्येव ब्र्हिषां प्रजानां प्रजनंनम्पैति। दक्षिणमि्ध्मम्। उत्तरं ब्र्हिः। आत्मा वा इध्मः। प्रजा ब्र्हिः। प्रजा ह्यौत्मन् उत्तरतरा ती्र्थे। ततो मेधंमुप्नीयं। यथादेवतमेवैनत्प्रतिष्ठापयित। प्रतिं तिष्ठति

प्रजयां पशुभिर्यजंमानः॥८५॥

वृश्चति सादयेदिध्मः पश्चं च॥= ·[80] तृतीर्यस्यां देवस्यांश्वपर्शुं यो वै पूँवेद्युः कर्मणे वामिन्द्रों वृत्रमंहन्थ्सों ऽपोऽवंधूतं धृष्टिंदेवस्येत्यांह सं वंपामि देवस्य

तृतीयंस्यां युज्ञस्यानंतिरेकाय पुवित्रंवत्यध्वुर्युं चांधिषवंणमस्यन्तरिक्ष एव रक्षंसामन्तर्हित्यै द्वौ वाव पुरुषौ यददश्चन्द्रमंसि

स्फामा दंदे वज्रो वै स्फाो दर्श॥१०॥

मेध्यं पञ्चाशीतिः॥८५॥

तृतीयस्यां यजमानः॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके द्वितीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः॥

प्रत्युष्ट्र रक्षः प्रत्युष्ट्य अरातय इत्याह। रक्षंसामपंहत्यै। अग्नेर्वस्तेजिष्ठेन् तेजंसा निष्टपामीत्याह मेध्यत्वायं। सुचः सम्माष्टिं। सुवमग्रें। पुमार्श्समेवाभ्यः सङ्श्यंति मिथुन्त्वायं। अथं जुहूम्। अथोप्भृतम्। अथं ध्रुवाम्। असौ वै जुहः॥१॥

अन्तरिक्षमुप्भृत्। पृथिवी ध्रुवा। इमे वै लोकाः स्रुचः। वृष्टिः सम्मार्जनानि। वृष्टिर्वा इमाँ श्लोकानं नुपूर्वं केल्पयित। ते ततः क्रुप्ताः समेधन्ते। समेधन्तेऽस्मा इमे लोकाः प्रजयां पृश्भिः। य एवं वेदं। यदिं कामयेत् वर्षुंकः पूर्जन्यः स्यादिति। अग्रतः सम्मृज्यात्॥२॥

वृष्टिंमेव नि यंच्छति। अवाचीनाँग्रा हि वृष्टिः। यदिं कामयेतावंर्षुकः स्यादितिं। मूल्तः सम्मृंज्यात्। वृष्टिंमेवोद्यंच्छति। तदु वा आंहुः। अग्रत एवोपरिष्टाथ्सम्मृं-ज्यात्। मूल्तोंऽधस्ताँत्। तदंनुपूर्वं कंल्पते। वर्षुंको भवतीतिं॥३॥

प्राचीमभ्याकारम्। अग्रैरन्तर्तः। एविमेव ह्यन्नेम्ह्यते। अथो अग्राद्वा ओषंधीनामूर्जं प्रजा उपंजीवन्ति। ऊर्ज एवान्नाद्यस्यावंरुद्धे। अधस्तात्प्रतीचीम्। दण्डम्त्तम्तः। मूलंन मूलं प्रतिष्ठित्ये। तस्मादर् त्रौ प्राञ्च्यपरिष्टा ह्रोमानि। प्रत्यञ्चधस्तात्॥४॥

सुग्धेषा। प्राणो वै सुवः। जुहूर्दक्षिणो हस्तः। उपभृथ्सव्यः। आत्मा ध्रुवा। अन्नर्शं सम्मार्जनानि। मुख्तो वै प्राणोऽपानो भूत्वा। आत्मानमन्नं प्रविश्यं। बाह्यतस्तनुवर्श् शुभयति। तस्माध्स्रुवमेवाग्रे सम्मार्ष्टि। मुख्तो हि प्राणोऽपानो भूत्वा। आत्मानमन्नमाविश्वति। तौ प्राणापानौ। अव्यर्धकः प्राणापानाभ्यां भवति। य पुवं वेदं॥५॥

जुहुर्म् ज्याद्भवतीति प्रत्यश्च्यपस्ताँनमाष्ट्रं पश्चं च॥————[१] दिवः शिल्पमवंततम्। पृथिव्याः कुकुभि श्रितम्। तेनं वय स्हस्रंवल्शेन। स्पत्नं नाशयामिस् स्वाहेतिं स्रुख्सम्मार्जनान्यग्नौ प्र हंरति। आपो वै दर्भाः।

रूपमेवैषांमेतन्मंहिमानं व्याचेष्टे। अनुष्टुभर्चा। आनुष्टुभः प्रजापंतिः। प्राजापत्यो

वेदः। वेदस्याग्रईं सुख्सम्मार्जनानि॥६॥ स्वेनैवैनांनि छन्दंसा। स्वयां देवतंया समर्धयति। अथो ऋग्वाव योषां। दुर्भी वृषां। तन्मिथुनम्। मिथुनमेवास्य तद्यज्ञे करोति प्रजननाय। प्रजायते प्रजयां

पृशुभिर्यजमानः। तान्येके वृथैवापाँस्यन्ति। तत्तथा न कार्यम्। आरंब्यस्य युज्ञियंस्य कर्मणः सर्विदोहः॥७॥

यद्यंनानि प्शवोऽिम् तिष्ठंयुः। न तत्पृशुभ्यः कम्। अद्भिर्मार्जियित्वोत्करे न्यंस्येत्। यद्वै यज्ञियंस्य कर्मणोऽन्यत्राऽऽहुंतीभ्यः सन्तिष्ठंते। उत्करो वाव तस्यं प्रतिष्ठा। पृता हि तस्मै प्रतिष्ठां देवाः समर्भरन्। यद्द्भिर्मार्जयंति। तेनं शान्तम्। यदुंत्करे न्यस्यति। प्रतिष्ठामेवैनांनि तद्गंमयति॥८॥

प्रति तिष्ठति प्रजयां पृशुभिर्यजंमानः। अथौं स्तम्बस्य वा एतद्रूपम्। यथ्सुंख्सम्मार्जनानि। स्तम्बशो वा ओषंधयः। तासां जरत्कक्षे पशवो न रंमन्ते। अप्रियो ह्येषां जरत्कक्षः। यावंदप्रियो हु वै जंरत्कक्षः पंशूनाम्। तावंदप्रियः पशूनां भंवति। यस्यैतान्यन्यत्राग्नेर्दधंति। नुवदाव्यांसु वा ओषंधीषु पृशवों रमन्ते॥९॥

न्वदावो ह्यंषां प्रियः। यावंत्प्रियो ह् वै नंवदावः पंशूनाम्। तावंत्प्रियः पशूनां भंवति। यस्यैतान्युग्नौ प्रहरेन्ति। तस्मादेतान्युग्नावेव प्रहरेत्। यत्रस्मिन्थ्सम्मृज्यात्। पृशूनां धृत्यै। यो भूतानामधिपतिः। रुद्रस्तन्तिचरो वृषां। पृशूनस्माकं मा हिर्साः। एतदंस्तु हुतं तव स्वाहेत्यंग्निस्मार्जनान्युग्नौ प्रहरिते। एषा वा पृतेषां योनिः। एषा प्रतिष्ठा। स्वामेवेनांनि योनिम्। स्वां प्रतिष्ठां गंमयति। प्रतिं तिष्ठति प्रजयां पशुभिर्यजमानः॥१०॥

वेदस्याग्रं सुख्सम्मार्जनानि विदोहो गंमयति पृशवां रमन्ते हिश्सीः षद चं॥———[२] अयंज्ञो वा पृषः। योऽपृक्षीकः। न प्रजाः प्रजायेरन्। पृत्यन्वांस्ते। यज्ञमेवाकः। प्रजानां प्रजननाय। यत्तिष्ठन्ती सुन्नह्येत। प्रियं ज्ञाति १ रुन्थ्यात्। आसीना सन्नह्यते। आसीना ह्येषा वीर्यं करोति॥११॥

देशाँदक्षिणत उदीच्यन्वाँस्ते। आत्मनों गोपीथायं। आशासाना सौमन्समित्यांह।

मेध्यांमेवैनां केवंलीं कृत्वा। आशिषा समर्धयति। अग्नेरनुंव्रता भूत्वा सन्नही

सुकृताय कमित्यांह। एतद्वै पिन्नेये व्रतोपनयंनम्॥१२॥

पश्भिर्यजंमानः॥१४॥

यत्पश्चात्प्राच्यन्वासीत। अनयां समदेन्दधीत। देवानां पत्निया समदेन्दधीत।

तेनैवैनां व्रतमुपंनयित। तस्मादाहुः। यश्चैवं वेद् यश्च न। योक्रंमेव युंते। यमुन्वास्तें। तस्यामुष्मिं ह्योके भंवतीित योक्रंण। यद्योक्रम्ं। स योगंः। यदास्तें। स क्षेमंः॥१३॥

योगक्षेमस्य कृत्यें। युक्तं कियाता आशीः कामें युज्याता इतिं। आशिषः समृद्धे। यृन्थिं ग्रंथाति। आशिषं पुवास्यां परिं गृह्णाति। पुमान् वे य्रन्थिः। स्त्री

पत्नीं। तन्मिथुनम्। मिथुनमेवास्य तद्यज्ञे करोति प्रजननाय। प्र जायते प्रजयां

अथों अर्धो वा एष आत्मनंः। यत्पत्नीं। यज्ञस्य धृत्या अशिथिलम्भावाय।

सुप्रजसंस्त्वा वय सुपत्नीरुपं सेदिमेत्यांह। यज्ञमेव तन्मिंथुनीकंरोति।

ऊनेऽतिरिक्तं धीयाता इति प्रजात्यै। मुहीनां पयोऽस्योषंधीना १ रस् इत्याह।

रूपमेवास्यैतन्मंहिमानं व्याचेष्टे। तस्य तेऽक्षीयमाणस्य निर्वपामि देवयुज्याया इत्याह। आशिषेमेवेतामा शाँस्ते॥१५॥

क्रोति व्रतोपनयंनं क्षेमो यर्जमानः शास्ते॥———[३]

घृतं च व मधुं च प्रजापंतिरासीत्। यतो मध्यांसीत्। ततः प्रजा अंसृजत।

तस्मान्मधुंषि प्रजननमिवास्ति। तस्मान्मधुंषा न प्रचरन्ति। यातयांम् हि।

आज्येन प्रचरन्ति। युज्ञो वा आज्यम्। युज्ञेनैव यज्ञं प्रचरन्त्ययातयामत्वाय।

पत्यवेंक्षते॥१६॥

मिथुन्त्वाय् प्रजांत्यै। यद्वै पत्नीं यज्ञस्यं क्रोतिं। मिथुनं तत्। अथो पत्निया
एवैष यज्ञस्यांन्वारम्भोऽनंवच्छित्त्यै। अमेध्यं वा एतत्करोति। यत्पत्यवेक्षते।
गार्हंपत्येऽधिं श्रयति मेध्यत्वायं। आहुवनीयंम्भ्युद्वंवति। यज्ञस्य सन्तंत्यै।
तेजोंऽसि तेजोऽनु प्रेहीत्यांह॥१७॥

तेजो वा अग्निः। तेज आज्यम्। तेजंसैव तेजः समर्धयति। अग्निस्ते तेजो मा विनैदित्याहाहि ५ सायै। स्फास्य वर्त्मं न्थ्सादयति। यज्ञस्य सन्तंत्यै। अग्नेर्जिह्वाऽसिं

सुभूर्देवानामित्यांह। यथायजुरेवैतत्। धाम्नेधाम्ने देवेभ्यो यज्षेयज्षे भवेत्यांह।

-आशिषंमेवैतामा शाँस्ते॥१८॥ तद्वा अतः पवित्राभ्यामेवोत्प्नाति। यजमानो वा आज्यम्। प्राणापानौ पवित्रे।

यजमान एव प्राणापानौ दंधाति। पुन्राहारम्। एविमव हि प्राणापानौ स्थरंतः।

शुक्रमंसि ज्योतिरसि तेजोऽसीत्याह। रूपमेवास्यैतन्महिमानं व्याचेष्टे। त्रिर्यज्ञाषा। त्रयं इमे लोकाः॥१९॥

एषां लोकानामास्यै। त्रिः। त्र्यांवृद्धि युज्ञः। अथों मेध्यत्वायं। अथाऽऽज्यंवतीभ्यामुप

रूपमेवासांमेतद्वर्णं दधाति। अपि वा उताऽऽहुंः। यथां ह वै योषां सुवर्ण १ हिरंण्यं

पेशलं बिभ्रंती रूपाण्यास्तें। एवमेता एतर्हीतिं। आपो वै सर्वा देवताः॥२०॥

एषा हि विश्वेषां देवानां तनूः। यदाज्यम्। तत्रोभयोमीमा स्सा। जामि स्यात्।

यद्यजुषाऽऽज्यं यजुषाऽप उंत्पुनीयात्। छन्दंसाऽप उत्पुनात्यजांमित्वाय। अथों मिथुनत्वायं। सावित्रियर्चा। सवितृप्रंसूतं मे कर्मासदितिं। सवितृप्रंसूतमेवास्य कर्म भवति। पच्छो गायित्रिया त्रिष्यमृद्धत्वायं। अद्भिरेवौषंधीः सं नयिति। ओषंधीभिः प्रशून्। प्रशुभिर्यजंमानम्। शुक्रं त्वां शुक्रायां ज्योतिंस्त्वा ज्योतिंष्यर्चिस्त्वा-ऽर्चिषीत्यांह सर्वत्वायं। पर्याप्त्या अनंन्तरायाय॥२१॥

ईक्षत् आह् शास्ते लोका देवतां भवति पर चे॥———[४] देवासुराः संयंत्ता आसन्। स एतिमन्द्र आज्यंस्यावकाशमंपश्यत्। तेनावैक्षत। ततो देवा अभवन्। पराऽसुंराः। य एवं विद्वानाज्यंम्वेक्षंते। भवंत्यात्मनाँ। पराँऽस्य भातृंव्यो भवति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यदाज्यंनान्यानिं हवी एर्पंभिघारयंति॥२२॥

अथ केनाऽऽज्यमिति। सत्येनेतिं ब्रूयात्। चक्षुर्वे सत्यम्। सत्येनैवैनंद्भि घारयति। ईश्वरो वा एषौंऽन्धो भवितोः। यश्चक्षुषाऽऽज्यंम्वेक्षंते। निमील्यावैक्षेत। दाधारात्मश्चक्षुंः। अभ्याज्यं घारयति। आज्यं गृह्णाति॥२३॥ छन्दार्शस् वा आज्यम्। छन्दार्शस्येव प्रीणाति। चतुर्जुह्वां गृह्णाति। चतुंष्पादः प्रश्वंः। पृश्न्वेवावं रुन्धे। अष्टावंपभृतिं। अष्टाक्षंरा गायत्री। गायत्रः प्राणः। प्राणमेव पृशुषुं दधाति। चतुर्भुवायाम्॥२४॥

चतुंष्पादः पृशवंः। पृशुष्वेवोपरिष्टात्प्रतिं तिष्ठति। युज्मान्देवत्यां वै जुहूः। भातृव्यदेवत्योपभृत्। चृतुर्जुह्वां गृह्णन्भूयों गृह्णीयात्। अष्टावुंपभृतिं गृह्णन्कनीयः। यजमानायैव भातृंव्यमुपंस्तिं करोति। गौर्वे स्रुचंः। चृतुर्जुह्वां गृह्णाति। तस्माचतुंष्पदी॥२५॥

अष्टावंपभृतिं। तस्मांद्ष्टाशंफा। चृतुर्ध्रुवायांम्। तस्माचतुंः स्तना। गामेव तथ्स इस्केरोति। साऽस्मै स इस्कृतेष्मूर्जं दुहे। यञ्जुह्वां गृह्णातिं। प्रयाजेभ्यस्तत्। यदंपभृतिं। प्रयाजानूयाजेभ्यस्तत्। सर्वस्मै वा एतद्यज्ञायं गृह्यते। यद्भुवायामाज्यम्॥२६॥

इमं यज्ञन्नयताग्रे यज्ञपंतिमित्याह। अग्रं एव यज्ञं नयन्ति। अग्रे यज्ञपंतिम्।

युष्मानिन्द्रोऽवृणीत वृत्रतूर्ये यूयमिन्द्रमवृणीध्वं वृत्रतूर्य इत्यांह। वृत्र हं

आपों देवीरग्रेपुवो अग्रेगुव इत्याह। रूपमेवासांमेतन्मंहिमानं व्याचेष्टे। अग्रं

हिन्ष्यित्रिन्द्र आपों वव्रे। आपों हेन्द्रें विव्रेरे। संज्ञामेवासांमेतथ्सामांनं व्याचेष्टे। प्रोक्षिताः स्थेत्यांह॥२७॥
तेनाऽऽपः प्रोक्षिताः। अग्निर्देवेभ्यो निलायत। कृष्णों रूपं कृत्वा। स वनस्पतीन्प्राविशत्। कृष्णोंऽस्याखरेष्ठोंऽग्नयें त्वा स्वाहेत्यांह। अग्नयं पुवैनं जुष्टं करोति। अथों अग्नेरेव मेधमवं रुन्थे। वेदिरिस ब्रुहिषें त्वा स्वाहेत्यांह। प्रजा वै ब्रुहिः। पृथिवी वेदिः॥२८॥

प्रजा एव पृथिव्यां प्रतिष्ठापयति। ब्रहिरंसि सुग्भ्यस्त्वा स्वाहेत्यांह। प्रजा वै

ब्रहिः। यजमानः सुचंः। यजमानमेव प्रजासु प्रतिष्ठापयति। दिवे त्वाऽन्तरिक्षाय

त्वा पृथियौ त्वेति ब्रहिरासाद्य प्रोक्षंति। पृभ्य पृवैनं होकेभ्यः प्रोक्षंति। अथ ततः

सह स्रुचा पुरस्तांत्प्रत्यश्चं ग्रन्थिं प्रत्युंक्षति। प्रजा वै ब्र्हिः। यथा सूत्यै काल आपः पुरस्ताद्यन्ति॥२९॥

तारगेव तत्। स्वधा पितृभ्य इत्यांह। स्वधाकारो हि पिंतृणाम्। ऊर्ग्भव

बर्हिषद्धं इति दक्षिणायै श्रोणेरोत्तंरस्यै निनयिति सन्तंत्यै। मासा वै पितरों बर्हिषदंः। मासानेव प्रीणाति। मासा वा ओषंधीर्वधंयन्ति। मासाः पचन्ति समृद्धौ। अनंतिस्कन्दन् ह पूर्जन्यो वर्षति। यत्रैतदेवं क्रियते॥३०॥
ऊर्जा पृथिवीं गंच्छुतेत्यांह। पृथिव्यामेवोर्जं दधाति। तस्मांत्पृथिव्या ऊर्जा भृंअते। ग्रन्थं वि स्रर्ंसयित। प्रजनयत्येव तत्। ऊर्ध्वं प्राश्चमुद्गूढं प्रत्यश्चमा

यंच्छति। तस्मौत्प्राचीन १ रेतों धीयते। प्रतीचीः प्रजा जांयन्ते। विष्णोः स्त्रपो-

ऽसीत्यांह। यज्ञो वै विष्णुं:॥३१॥

युज्ञस्य धृत्यैं। पुरस्तौत्प्रस्त्रं गृह्णाति। मुख्यमेवैनं करोति। इयन्तं गृह्णाति। प्रजापंतिना यज्ञमुखेन सम्मितम्। इयन्तं गृह्णाति। युज्ञपुरुषा सम्मितम्। इयन्तं गृह्णाति। एतावद्वै पुरुषे वीर्यम्। वीर्यसम्मितम्॥३२॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अपंरिमितं गृह्णाति। अपंरिमित्स्यावंरुद्धौ। तस्मिन्यवित्रे अपि सृजति। यजमानो वै प्रस्तरः। प्राणापानौ प्वित्रें। यजमान एव प्राणापानौ दंधाति। ऊर्णामदसं त्वा स्तृणामीत्यांह। यथायजुरेवैतत्। स्वास्थ्यं देवेभ्य इत्यांह। देवेभ्यं पुवैनंथ्स्वास्थ्यं कंरोति॥३३॥

ब्र्हिः स्तृंणाति। प्रजा वै ब्र्हिः। पृथिवी वेदिः। प्रजा एव पृथिव्यां प्रतिष्ठापयति। अनंतिदृश्वः स्तृणाति। प्रजयैवैनं पृशुभिरनंतिदृश्वं करोति। धारयंन्प्रस्त्रं पंरिधीन्परिं दधाति। यजमानो वै प्रस्तरः। यजमान एव तथ्स्वयं पंरिधीन्परिं दधाति। वृश्वावंसुरित्यांह॥३४॥

विश्वंमेवायुर्यजंमाने दधाति। इन्द्रंस्य बाहुरंसि दक्षिण इत्यांह। इन्द्रियमेव यजंमाने दधाति। मित्रावरुंणौ त्वोत्तर्तः परिधत्तामित्यांह। प्राणापानौ मित्रावरुंणौ। प्राणापानावेवास्मिन्दधाति। सूर्यस्त्वा पुरस्तांत् पात्वित्यांह। रक्षंसामपंहत्यै। कस्यांश्चिदभिशंस्त्या इत्यांह। अपंरिमितादेवैनं पाति॥३५॥

वीतिहोंत्रं त्वा कव इत्यांह। अग्निमेव होत्रेण समर्धयित। द्युमन्त्रं सिमिधीम्हीत्यांह् सिमेंद्ये। अग्ने बृहन्तंमध्वर इत्यांह् वृद्धौं। विशो यन्ने स्थ इत्यांह। विशां यत्यौं। उदीचीनांग्ने नि दंधाति प्रतिष्ठित्यै। वसूनार रुद्राणांमादित्यानार् सदंसि सीदेत्यांह। देवतांनामेव सदंने प्रस्तुरर सांदयित। जुहूरंसि घृताची नाम्नेत्यांह॥३६॥

असौ वै जुहूः। अन्तिरिक्षमुप्भृत्। पृथिवी ध्रुवा। तासामितदेव प्रियं नामं। यद्घृताचीति। यद्घृताचीत्याहं। प्रियेणैवैना नाम्नां सादयति। एता अंसदन्थ्सुकृतस्यं लोक इत्यांह। सत्यं वै सुंकृतस्यं लोकः। सत्य एवैनाः सुकृतस्यं लोके सादयित। ता विष्णो पाहीत्यांह। यज्ञो वै विष्णुः। यज्ञस्य धृत्यै। पाहि यज्ञं पाहि यज्ञपंतिं पाहि मां यंज्ञनियमित्यांह। यज्ञाय यज्ञंमानायाऽऽत्मनें। तेभ्यं एवाऽऽशिष्माशास्तेऽनांत्ये॥३७॥

स्थेत्यांह पृथिवी वेदिर्यन्ति क्रियते वीर्णुर्वीर्यसम्मितं करोत्याह पाति नाम्नेत्यांह लोके सांदयति षट् चं॥————[६]

अग्निना वै होत्रां। देवा असुंरानभ्यंभवन्। अग्नयं समिध्यमांनायानुंब्रूहीत्यांह भ्रातृंव्याभिभूत्यै। एकंवि शतिमिध्मदारूणिं भवन्ति। एकवि शो वै पुरुषः। पुरुष्याऽऽस्यै। पश्चंदशेध्मदारूण्यभ्या देधाति। पश्चंदश वा अर्धमासस्य रात्रंयः। अर्धमासशः संवथ्सर आँप्यते। त्रीन्पंरिधीन्परिं दधाति॥३८॥

ऊर्ध्वे समिधावा दंधाति। अनूयाजेभ्यः समिधमितं शिनष्टि। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रींणाति। वेदेनोपं वाजयति। प्राजापत्यो वै वेदः। प्राजापत्यः प्राणः। यजमान आहवनीयः। यजमान एव प्राणं दंधाति॥३९॥

त्रिरुपं वाजयति। त्रयो वै प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। वेदेनोपयत्यं सुवेणं प्राजापत्यमांघारमा घारयति। युज्ञो वै प्रजापंतिः। युज्ञमेव प्रजापंतिं मुख्त आरंभते। अथौँ प्रजापंतिः सर्वा देवताः। सर्वा एव देवताः प्रीणाति। अग्निमंग्नीत्रिस्निः सं मृड्ढीत्याह। त्र्यावृद्धि यज्ञः॥४०॥

अथो रक्षंसामपंहत्यै। पुरिधीन्थ्सं माँष्टिं। पुनात्येवैनान्। त्रिस्त्रिः सं माँष्टिं।

त्र्यांवृद्धि युज्ञः। अथों मेध्यत्वायं। अथों एते वै देवाश्वाः। देवाश्वानेव तथ्सं माँष्टिं। सुवर्गस्यं लोकस्य समंध्रो। आसींनोऽन्यमांघारमा घारयति॥४१॥

तिष्ठंत्र्वन्यम्। यथाऽनों वा रथं वा युआत्। एवमेव तदंध्वर्युर्यज्ञं युंनक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्याभ्यूँढ्यै। वहंन्त्येनं ग्राम्याः पृशवंः। य एवं वेदं। भुवंनमिस वि प्रथस्वेत्यांह। युज्ञो वै भुवंनम्। युज्ञ एव यजमानं प्रजयां पृशुभिः प्रथयति। अग्रे यष्टरिदन्नम इत्यांह॥४२॥

अग्निर्वे देवानां यष्टां। य एव देवानां यष्टां। तस्मां एव नमंस्करोति। जुह्वेह्यग्निस्त्वां ह्वयति देवयुज्याया उपभृदेहिं देवस्त्वां सिवृता ह्वयति देवयुज्याया इत्याह। आग्नेयी वै जुहूः। सावित्र्युपभृत्। ताभ्यांमेवैने प्रसूत आदंत्ते। अग्नांविष्णू मा वामवं क्रमिष्मित्यांह। अग्निः पुरस्तांत्। विष्णुर्यज्ञः पृश्चात्॥४३॥

ताभ्यांमेव प्रंतिप्रोच्यात्या क्रांमित। विजिंहाथां मा मा सन्तांप्तमित्याहाहि रेसायै। लोकं में लोककृतौ कृणुत्मित्यांह। आशिषंमेवेतामा शांस्ते। विष्णोः स्थानम्सीत्यांह। युज्ञो वै विष्णुंः। पुतत्खलु वै देवानामपंराजितमायतंनम्। यद्यज्ञः।

देवानांमेवापंराजित आयतंने तिष्ठति। इत इन्द्रों अकृणोद्वीर्याणीत्यांह॥४४॥

आघारमाघार्यमाणमनुं समारभ्यं। एतस्मिन्काले देवाः सुवर्गं लोकमायन्।

इन्द्रियमेव यर्जमाने दधाति। सुमारभ्योर्ध्वो अध्वरो दिविस्पृशमित्याह वृद्धौ।

साक्षादेव यजमानः सुवर्गं लोकमेति। अथो समृद्धेनैव यज्ञेन यजमानः सुवर्गं लोकमेंति। अहुंतो युज्ञो युज्ञपंतेरित्याहानांत्यै। इन्द्रांबान्थ्स्वाहेत्यांह। इन्द्रियमेव यजंमाने दधाति। बृहद्भा इत्यांह॥४५॥ सुवर्गो वै लोको बृहद्भाः। सुवर्गस्यं लोकस्य समेष्ट्री। युजुमानुदेवत्यां वै जुहः।

भातृव्यदेवत्योपभृत्। प्राण आंघारः। यथ्म ईस्पर्शयैत्। भातृंव्येऽस्य प्राणं देध्यात्। असईस्पर्शयन्नत्या क्रांमति। यजंमान एव प्राणं दंधाति। पाहि माँउग्ने दुर्श्वरितादा मा सुचेरिते भजेत्यांह॥४६॥

अग्निर्वाव प्वित्रम्। वृजिनमनृतं दुश्चरितम्। ऋजुक्रमं स्त्य स्चेरितम्।

अग्निरेवैनं वृजिनादनृताद्दश्चरितात्पाति। ऋजुकर्मे सृत्ये सुचरिते भजति। तस्मादेवमा शास्ते। आत्मनों गोपीथायं। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यदांघारः। आत्मा ध्रुवा॥४७॥

आघारमाघार्यं ध्रुवा समंनक्ति। आत्मन्नेव यज्ञस्य शिरः प्रतिं दधाति। द्विः समंनक्ति। द्वौ हि प्राणापानौ। तदांहुः। त्रिरेव समंभ्यात्। त्रिधांतु हि शिर् इतिं। शिरं इवैतद्यज्ञस्यं। अथो त्रयो वै प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। मखस्य शिरोऽसि सभ्योतिंषा ज्योतिरङ्कामित्यांह। ज्योतिरेवास्मां उपरिष्टाद्दधाति। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंख्यात्ये॥४८॥
परिद्याति प्राणं दंधाति हि यज्ञो घांरयित नम इत्यांह पश्चाद्वीर्याणीत्यांह भा इत्यांह भजेत्यांह ध्रुवैवासिनंदधाति त्रीणि

धिष्णिया वा एते न्युंप्यन्ते। यद्धृह्मा। यद्धोताँ। यदंध्वृर्युः। यद्ग्रीत्। यद्यजंमानः। तान् यदंन्तरेयात्। यजंमानस्य प्राणान्थ्सङ्कंर्षेत्। प्रमायुंकः स्यात्। तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

पुरोडाशंमपगृह्य सश्चरत्यध्वर्युः॥४९॥

यर्जमानायैव तल्लोक १ शि १ षति। नास्यं प्राणान्थ्सङ्कर्षित। न प्रमायुंको भवति। पुरस्तांत् प्रत्यङ्कासीनः। इडाया इडामा दंधाति। हस्त्या १ होत्रें। पशवो वा इडां। पशवः पुरुषः। पशुष्वेव पशून्प्रतिष्ठापयति। इडांयै वा एषा प्रजातिः॥५०॥

तां प्रजांतिं यर्जमानोऽनु प्र जांयते। द्विर्ङ्गुलांवनिक्त पर्वणोः। द्विपाद्यर्जमानः प्रतिष्ठित्यै। सकृदुपं स्तृणाति। द्विरा दंधाति। सकृदिभ घारयति। चतुः सम्पंद्यते। चत्वारि वै पृशोः प्रतिष्ठानांनि। यावांनेव पृशुः। तमुपंह्रयते॥५१॥

मुखंमिव प्रत्युपंह्वयेत। सम्मुखानेव पशूनुपं ह्वयते। पशवो वा इडाँ। तस्माथ्सा-उन्वारभ्यां। अध्वर्युणां च यर्जमानेन च। उपहूतः पशुमानंसानीत्यांह। उप ह्यंनौ ह्ययंते होतां। इडांये देवतांनामुपहवे। उपंहृतः पशुमान्भविति। य पुवं वेदं॥५२॥

यां वै हस्त्यामिडामादधाति। वाचः सा भागधेयम्। यामुपह्वयंते। प्राणाना ५ सा। वाचं चैव प्राणा इश्चावं रुन्धे। अथ वा एतर्ह्युपंहृतायामिडांयाम्। पुरोडाशंस्यैव बंहि्षदों मीमा्र्सा। यजंमानं देवा अंब्रुवन्। ह्विर्नो निर्वपिति। नाहमंभागो निर्वपस्यामीत्यंब्रवीत्॥५३॥

पुरोनुवाक्यां। नाहमभागा याज्यां भविष्यामीतिं याज्यां। न मयांऽभागेन

न मयांऽभागयाऽनुंवक्ष्यथेति वागंब्रवीत्। नाहमंभागा पुंरोनुवाक्यां भविष्यामीतिं

वर्षद्वरिष्य्थेति वषद्वारः। यद्यंजमानभागं निधायं पुरोडाशं बर्हिषदं करोति। तानेव तद्वागिनंः करोति। चतुर्धा करोति। चतंस्रो दिशंः। दिक्ष्वंव प्रतिं तिष्ठति। बर्हिषदं करोति॥५४॥ यजमानो व पुरोडाशंः। प्रजा बर्हिः। यजमानमेव प्रजासु प्रतिष्ठापयति। तस्मादस्थ्राऽन्याः प्रजाः प्रतितिष्ठंन्ति। मार्सेनान्याः। अथो खल्वांहुः। दक्षिणा वा एता हंविर्यज्ञस्यांन्तर्वेद्यवं रुध्यन्ते। यत्पुरोडाशं बर्हिषदं करोतीति। चतुर्धा

ब्रह्मा होतां ऽध्वर्युरुग्नीत्। तम्भि मृंशेत्। इदं ब्रह्मणंः। इद होतुंः। इदमध्वर्योः।

कंरोति। चुत्वारो ह्यंते हंविर्यज्ञस्यर्त्विजः॥५५॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३) इदमग्नीध इतिं। यथैवादः सौम्येंऽध्वरे। आदेशंमृत्विग्भ्यो दक्षिंणा नीयन्तें। ताहगेव

तत्। अग्नीधे प्रथमाया दंधाति॥५६॥

अग्निम्ंखा ह्यृद्धिः। अग्निम्ंखामेवर्द्धिं यजमान ऋभ्नोति। स्कृद्ंपस्तीर्य द्विरादर्धत्। उपस्तीर्य द्विरिम घारयति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेव प्रीणाति। वेदेनं ब्रह्मणें ब्रह्मभागं परिंहरति। प्राजापत्यो वै वेदः। प्राजापत्यो ब्रह्मा॥५७॥

सविता यज्ञस्य प्रसूँत्यै। अथ कार्ममन्येनं। ततो होत्रैं। मध्यं वा एतद्यज्ञस्यं। यद्धोतां। मध्यत एव यज्ञं प्रीणाति। अथाध्वर्यवें। प्रतिष्ठा वा एषा यज्ञस्यं। यदेध्वर्युः। तस्मौद्धविर्यज्ञस्यैतामेवाऽऽवृतमन्ं॥५८॥

अन्या दक्षिणा नीयन्ते। यज्ञस्य प्रतिष्ठित्यै। अग्निमंग्नीथ्सकृथ्संकृथ्सं मृड्ढीत्यांह। परांङिव ह्येंतर्हिं युज्ञः। इषिता दैव्या होतांरु इत्यांह। इषित १ हि कर्म क्रियतें। भद्रवाच्यांय प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकायं सूक्ता ब्रूहीत्यांह। आशिषंमेवैतामा शाँस्ते। स्वृगा दैव्या होतृंभ्य इत्याह। यज्ञमेव तथ्स्वृगा कंरोति। स्वस्तिर्मानुंषेभ्य इत्याह। आशिषंमेवैतामा शाँस्ते। शुं योर्ब्रूहीत्याह। शुंयुमेव बांर्हस्पृत्यं भाग्धेयेन समर्धयति॥५९॥

समर्धयति॥५९॥

चुर्त्यृष्वर्युः प्रजांतिर्ह्वयते वेदाँब्रवीद्वर्रहिषदं करोत्यृत्विजों दधाति ब्रह्माऽनुंकरोति चृत्वारि च॥

[८]

अथ स्रचावनुष्टुग्भ्यां वाजंवतीभ्यां व्यूहिति। प्रतिष्ठा वा अनुष्टुक्। अत्रं वाजः प्रतिष्ठित्यै। अन्नाद्यस्यावंरुद्धै। प्राचीं जुहूमूहिति। जातानेव भ्रातृंव्यान्प्रणुंदते। प्रतीचीमुप्भृतम्। जिन्ष्यमाणानेव प्रतिनुदते। सिवषूंच एवापोह्यं सपत्नान् यजंमानः। अस्मिँ होके प्रति तिष्ठति॥६०॥

द्वाभ्यांम्। द्विप्रतिष्ठो हि। वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। स्रुक्षु प्रस्तरमंनक्ति। इमे वै लोकाः स्रुचंः। यजंमानः प्रस्तरः। यजमानमेव तेजंसाऽनक्ति। त्रेधाऽनंक्ति। त्रयं इमे लोकाः॥६१॥

पुभ्य पुवैनं लोकेभ्योऽनक्ति। अभिपूर्वमंनक्ति। अभिपूर्वमेव यर्जमानं तेर्जसा-

ऽनिक्ति। अक्तर रिहाणा इत्याह। तेजो वा आज्यम्। यर्जमानः प्रस्तरः। यर्जमानमेव तेर्जसाऽनिक्ता वियन्तु वय इत्याह। वयं पृवैनं कृत्वा। सुवर्गं लोकं गमयति॥६२॥

प्रजां योनिं मा निर्मृक्षमित्यांह। प्रजायैं गोपीथायं। आप्यांयन्तामाप ओषंधय इत्यांह। आपं एवौषंधीरा प्यांययित। मुरुतां पृषंतयः स्थेत्यांह। मुरुतो वै वृष्ट्यां ईशते। वृष्टिंमेवावं रुन्धे। दिवं गच्छ ततों नो वृष्टिमेर्येत्यांह। वृष्टिंवे द्यौः। वृष्टिंमेवावं रुन्धे॥६३॥

यावृद्धा अध्वर्युः प्रस्तरं प्रहरंति। तावंदस्यायुंमीयते। आयुष्पा अंग्रेऽस्यायुंमें पाहीत्यांह। आयुंरेवाऽऽत्मन्धंत्ते। यावृद्धा अध्वर्युः प्रस्तरं प्रहरंति। तावंदस्य चक्षुंमीयते। चक्षुष्पा अंग्रेऽसि चक्षुंमें पाहीत्यांह। चक्षुंरेवाऽऽत्मन्धंत्ते। ध्रुवाऽसीत्यांह प्रतिष्ठित्यै। यं परिष्ठिं पर्यधंत्था इत्यांह॥६४॥

यथायजुरेवैतत्। अग्ने देव पणिभिर्वीयमाण इत्याह। अग्नयं एवैनं जुष्टं

करोति। तन्तं पुतमनु जोषं भरामीत्यांह। सुजातानेवास्मा अनुंकान्करोति। नेदेष त्वदंपचेतयांता इत्याहानुंख्यात्यै। यज्ञस्य पाथ उप समितमित्यांह। भूमानंमेवोपैति। परिधीन्प्र हंरति। यज्ञस्य समिष्टिं॥६५॥

सुचौ सं प्रस्रावयति। यदेव तत्रं क्रूरम्। तत्तेनं शमयति। जुह्वामुंपुभृतम्।

युजुमानुदेवत्यां वै जुहूः। भ्रातृव्यदेवत्योपभृत्। यजमानायैव भ्रातृव्यमुपंस्ति

करोति। सङ्स्रावभागाः स्थेत्याह। वसंवो वै रुद्रा आंदित्याः सङ्स्रावभागाः। तेषां तद्भागधेयम्॥६६॥ तानेव तेनं प्रीणाति। वैश्वदेव्यर्चा। एते हि विश्वं देवाः। त्रिष्टुग्भंवति। इन्द्रियं वै त्रिष्टुक्। इन्द्रियमेव यर्जमाने दधाति। अग्नेर्वामपंत्रगृहस्य सदंसि सादयामीत्यांह। इयं वा अग्निरपंत्रगृहः। अस्या एवैने सदेने सादयति। सुम्नायं सुम्निनी सुम्ने मां

प्रजा वै पुशवंः सुम्नम्। प्रजामेव पुशूनात्मन्धंत्ते। धुरि धुर्यौ पात्मित्यांह।

धत्तमित्यांह॥६७॥

जायापत्योगींपीथायं। अग्नेंऽदब्धायोऽशीततनो इत्यांह। यथायजुरेवैतत्। पाहि माऽद्य दिवः पाहि प्रसित्यै पाहि दुरिष्ट्यै पाहि दुंरद्मन्यै पाहि दुर्श्वरितादित्यांह। आशिषंमेवैतामा शांस्ते। अविषन्नः पितुं कृणु सुषदा योनि स्वाहेतींध्मसंवृश्चनान्यन्वाहार्यपर्चनेऽभ्याधायं फलीकरणहोमं जुंहोति। अतिंरिक्तानि वा इंध्मसं वृश्चनानि॥६८॥

अतिरिक्ताः फलीकरणाः। अतिरिक्तमाज्योच्छेषणम्। अतिरिक्त पुवातिरिक्तं दधाति। अथो अतिरिक्तेनैवातिरिक्तमास्वाऽवं रुन्धे। वेदिर्देवेभ्यो निलायत। तां वेदेनान्वंविन्दन्। वेदेन वेदिं विविद्ः पृथिवीम्। सा पंप्रथे पृथिवी पार्थिवानि। गर्भं बिभर्ति भुवनेष्वन्तः। ततो यज्ञो जांयते विश्वदानिरिति पुरस्ताध्स्तम्बयजुषो वेदेन वेदि सम्मार्ष्यन्वित्त्यै॥६९॥

अथो यद्वेदश्च वेदिश्च भवंतः। मिथुनत्वाय प्रजांत्यै। प्रजापंतेर्वा एतानि श्मश्रूणि। यद्वेदः। पत्निया उपस्थ आस्यंति। मिथुनमेव कंरोति। विन्दतें प्रजाम्। वेद॰ होताऽऽहंवनीयाँथ्स्तृणन्नेति। यज्ञमेव तथ्सन्तंनोत्योत्तंरस्मादर्धमासात्। त॰ सन्तंतमुत्तंरेऽर्धमास आलंभते॥७०॥

तं कालेकांल आगंते यजते। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। स त्वा अध्वर्युः स्यात्। यो यतो यज्ञं प्रयुक्के। तदेनं प्रतिष्ठापयतीति। वाताद्वा अध्वर्युर्य्ज्ञं प्रयुक्के। देवां गातुविदो गातुं वित्वा गातुमितेत्यांह। यतं एव यज्ञं प्रयुक्के। तदेनं प्रतिष्ठापयति। प्रतिं तिष्ठति प्रजयां पशुभिर्यजमानः॥७१॥

तिष्ठतीमे लोका गंमयति द्यौर्वृष्टिमेवावं रुन्धे पुर्यर्थत्था इत्यांहु समिष्ठि भागुधेयंन्धत्तमित्यांहु वा इंध्मसुं वृश्चंनान्यन्वित्त्यै लभते

यर्जमानः॥

यो वा अयंथादेवतं युज्ञम्पूचरित। आ देवताँभ्यो वृथ्यते। पापीयान्भवति। यो यंथादेवतम्। न देवताँभ्य आवृंथ्यते। वसीयान्भवति। वा्रुणो वै पार्शः।

यो यंथादेवृतम्। न देवताभ्य आवृंश्च्यते। वसीयान्भवति। वा्रुणो वै पार्शः। इमं विष्यांमि वर्रुणस्य पाश्मित्यांह। व्रुणपाशादेवैनां मुश्चति। स्वितृप्रंसूतो यथादेवृतम्॥७२॥ न देवताँभ्य आवृंश्यते। वसीयान्भवति। धातुश्च योनौं सुकृतस्यं लोक इत्यांह।

अग्निर्वे धाता। पुण्यं कर्म सुकृतस्यं लोकः। अग्निरेवैनां धाता। पुण्ये कर्मणि

सुकृतस्यं लोके दंधाति। स्योनं में सह पत्यां करोमीत्यांह। आत्मनंश्च यर्जमानस्य चानांत्ये सन्त्वायं। समायुंषा सं प्रजयेत्यांह॥७३॥ आशिषंमेवैतामा शांस्ते पूर्णपात्रे। अन्ततोंऽनुष्टुभां। चतुंष्पद्वा एतच्छन्दः प्रति-ष्ठितं पत्निये पूर्णपात्रे भंवति। अस्मिँ ह्योके प्रतिं तिष्ठानीति। अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठति। अथो वाग्वा अनुष्टुक्। वाङ्गिंथुनम्। आपो रेतः प्रजनंनम्। एतस्माद्वे मिंथुनाद्विद्योतंमानः स्तनयंन्वर्षित। रेतः सिश्चन्॥७४॥

प्रजाः प्रजनयन्। यद्वे यज्ञस्य ब्रह्मणा युज्यते। ब्रह्मणा वे तस्यं विमोकः। अद्भिः शान्तिः। विमुक्तं वा एतर्हि योक्रं ब्रह्मणा। आदायैन्त्पत्नीं सहाप उपंगृह्णीते शान्त्यै। अञ्जलौ पूर्णपात्रमा नयिति। रेतं एवास्यां प्रजां देधाति। प्रजया हि मेनुष्यः पूर्णः। मुखं वि मृष्टे। अवभृथस्यैव रूपं कृत्वोत्तिष्ठति॥७५॥

परिवेषो वा एष वनस्पतीनाम्। यदुंपवेषः। य एवं वेदं। विन्दतें परिवेष्टारम्।

स्वितृप्रंस्तो यथादेवतं प्रजयेत्यांह सिश्च-मृष्ट् एकं च॥-

कुंरु। उपवेषोपं विद्धि नः॥७६॥ प्रजां पृष्टिमथो धनम्। द्विपदो नृश्चतुंष्पदः। ध्रुवाननंपगान्कुर्वितिं

तमुंत्करे। यं देवा मनुष्येषु। उपवेषमधारयन्। ये अस्मदर्पं चेतसः। तानस्मर्स्यमिहा

पुरस्तौत्प्रत्यश्चमुपं गूहित। तस्मौत्पुरस्तौत्प्रत्यश्चेः शूद्रा अवस्यिन्त। स्थिविमृत उपंगूहित। अप्रतिवादिन एवैनौन्कुरुते। धृष्टिर्वा उपवेषः। शुचर्तो वज्रो ब्रह्मणा स्थितः। योपंवेषे शुक्। साऽमुमृच्छतु यं द्विष्म इति॥७७॥

अथाँस्मै नाम् गृह्य प्रहंरित। निर्मुन्नुंद ओकंसः। सपत्नो यः पृंतन्यितं। निर्बाध्येन हिवणं। इन्द्रं एणं परांशरीत्। इहि तिस्रः परावतः। इहि पश्च जना अति। इहि तिस्रोऽतिं रोचनायावंत्। सूर्यो असंद्विव। पर्मान्त्वां परावतम्॥७८॥

इन्द्रों नयतु वृत्रहा। यतो न पुन्रायंसि। शृश्वतीभ्यः समाभ्य इतिं। त्रिवृद्वा

पृष वज्रो ब्रह्मणा सश्शितः। शुचैवैनं विध्वा। पृभ्यो लोकेभ्यो निर्णुद्यं। वज्रेण ब्रह्मणा स्तृणुते। हृतोऽसाववंधिष्मामुमित्यांहु स्तृत्यै। यं द्विष्यात्तं ध्यायेत्। शुचैवैनंमर्पयति॥७९॥

प्रत्युंष्टं दिवः शिल्पमर्यज्ञो घृतं चं देवासुराः स एतमिन्द्र आपों देवीर्ग्निना धिष्णिया अथ सुचौ यो वा अर्यथादेवतं परिवेषो वा एकांदश॥११॥

प्रत्युष्टमर्यज्ञ एषा हि विश्वेषां देवानामूर्जा पृथिवीमथो रक्षेसान्तां प्रजातिं द्वाभ्यां तं कालेकाले नवंसप्ततिः॥७९॥ प्रत्युष्टमर्पयति॥

हरिंः ओम्॥

तृतीयः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके तृतीयः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥चतुर्थः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयबाह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः॥

ब्रह्मणे ब्राह्मणमालंभते। क्षुत्रायं राज्ञन्यम्। मुरुद्धो वैश्यम्। तपंसे शूद्रम्। तमंसे तस्करम्। नारंकाय वीर्हणम्। पाप्मने क्रीबम्। आक्रयायांयोगूम्। कामांय पुङ्श्चलूम्। अतिंकुष्टाय मागुधम्॥१॥

गीतायं सूतम्। नृत्तायं शैलूषम्। धर्माय सभाचरम्। नुर्मायं रेभम्। निर्रष्ठायै भीमृलम्। हसाय कारिम्। आनुन्दायं स्त्रीष्खम्। प्रमुदं कुमारीपुत्रम्। मेधायै रथकारम्। धैर्याय तक्षाणम्॥२॥

श्रमांय कौलालम्। मायायैं कार्मारम्। रूपायं मणिकारम्। शुभें वपम्। शर्व्याया इषुकारम्। हेत्यै धंन्वकारम्। कर्मणे ज्याकारम्। दिष्टायं रञ्जसर्गम्। मृत्यवे मृग्युम्। अन्तंकाय श्वनितम्॥३॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

सन्धर्यं जारम्। गृहायोपपतिम्। निर्ऋत्ये परिवित्तम्। आर्त्ये परिविविदानम्। अर्गध्ये दिधिषूपतिम्। प्वित्रांय भिषजम्। प्रज्ञानांय नक्षत्रदर्शम्। निष्कृत्ये पेशस्कारीम्। बलांयोपदाम्। वर्णायानूरुधम्॥४॥ नदीभ्यः पौञ्जिष्टम्। ऋक्षीकांभ्यो नैषांदम्। पुरुष्ट्याघ्रायं दुर्मदम्। प्रयुद्ध उन्मंत्तम्। गन्धर्वापसराभ्यो व्रात्यम्। सर्पदेवजनेभ्योऽप्रंतिपदम्। अवेभ्यः कितवम्।

इ्यतांया अकितवम्। पिशाचेभ्यो बिदलकारम्। यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥५॥ उथ्मादेभ्यः कुज्जम्। प्रमुदे वामनम्। द्वाभ्यः स्रामम्। स्वप्नायान्धम्। अधेर्माय बिधरम्। संज्ञानांय स्मरकारीम्। प्रकामोद्यांयोपसदम्। आशिक्षायै प्रश्चिनम्। उपशिक्षायां अभिप्रश्चिनम्। मर्यादाये प्रश्चिववाकम्॥६॥

ऋत्यैं स्तेनहृंदयम्। वैरंहत्याय् पिशुंनम्। विवित्त्यै क्षृत्तारम्ं। औपंद्रष्टाय सङ्गृहीतारम्। बलायानुचरम्। भूम्ने पंरिष्कुन्दम्। प्रियायं प्रियवादिनम्। अरिष्टा अश्वसादम्। मेधाय वासः पल्पूलीम्। प्रकामायं रजयित्रीम्॥७॥ चतुर्थः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

भायै दार्वाहारम्। प्रभायां आग्नेन्थम्। नाकंस्य पृष्ठायांभिषेक्तारम्। ब्रध्नस्यं विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्। देवलोकायं पेशितारम्। मनुष्यलोकायं प्रकरितारम्। सर्वेभ्यो लोकेभ्यं उपसेक्तारम्। अवंत्ये वधायोपमन्थितारम्। सुवर्गायं लोकायं भागदुघम्। वर्षिष्ठाय नार्काय परिवेष्टारम्॥८॥

अर्मेभ्यो हस्तिपम्। जुवायाँश्वपम्। पुष्टौ गोपालम्। तेजंसेऽजपालम्। वीर्यायाविपालम्। इरांयै कीनाशम्। कीलालांय सुराकारम्। भद्रायं गृहपम्। श्रेयंसे वित्तंधम्। अध्यंक्षायानुक्षतारम्॥९॥

मन्यवेऽयस्तापम्। क्रोधांय निसरम्। शोकांयाभिसरम्। उत्कूलविकूलाभ्यां त्रिस्थिनम्। योगांय योक्तारम्। क्षेमांय विमोक्तारम्। वर्षुषे मानस्कृतम्। शीलांयाञ्जनीकारम्। निर्ऋंत्यै कोशकारीम्। युमायासूम्॥१०॥

यम्यै यमसूम्। अथंर्वभ्योऽवंतोकाम्। संवथ्सरायं पर्यारिणीम्। परिवथ्सराया-विजाताम्। इदावथ्सरायांपुस्कद्वंरीम्। इद्वथ्सरायातीत्वंरीम्। वथ्सराय विजंर्जराम्। सूर्वन्थ्सराय् पिलक्षीम्। वनाय वनुपम्। अन्यतोरण्याय दावपम्॥११॥ सरौभ्यो धैवरम्। वेशन्ताभ्यो दाशम्। उपस्थावंरीभ्यो बैन्दम्। नुङ्गलाभ्यः

शौष्कुलम्। पार्याय कैवर्तम्। अवार्याय मार्गारम्। तीर्थेभ्यं आन्दम्। विषंमेभ्यो मैनालम्। स्वनेभ्यः पर्णकम्। गुहाँभ्यः किरातम्। सार्नुभ्यो जम्भंकम्। पर्वतेभ्यः किम्पूरुषम्॥१२॥

प्रतिश्रुत्कांया ऋतुलम्। घोषांय भूषम्। अन्तांय बहुवादिनम्। अनुन्ताय मूकम्। महंसे वीणावादम्। क्रोशांय तूणवध्मम्। आक्रन्दायं दुन्दुभ्याघातम्। अवरस्परायं शङ्ख्रध्मम्। ऋभुभ्योजिनसन्धायम्। साध्येभ्यश्चर्म्मणम्॥१३॥

बीभ्थ्सायै पौल्क्सम्। भूत्यै जागर्णम्। अभूत्यै स्वपनम्। तुलायै वाणिजम्। वर्णाय हिरण्यकारम्। विश्वैभ्यो देवेभ्यः सिध्मलम्। पृश्चाद्दोषायं ग्लावम्। ऋत्यै जनवादिनम्। व्यृद्धा अपगुल्भम्। स्र्श्ररायं प्रच्छिदम्॥१४॥ हसाय पुश्चलूमा लंभते। वीणावादं गणंकं गीतायं। यादंसे शाबुल्याम्। नुर्मायं

भद्रवृतीम्। तूण्वध्मं ग्रांमुण्यं पाणिसङ्घातं नृत्तायं। मोदायानुक्रोशंकम्। आन्नदायं तलवम॥१५॥

तल्वम्॥१५॥ अक्षराजायं कित्वम्। कृतायं सभाविनम्। त्रेतांया आदिनवदुर्शम्। द्वाप्रायं बहिः सदम्। कलंये सभास्थाणुम्। दुष्कृतायं चुरकांचार्यम्। अध्वंने ब्रह्मचारिणम्॥

बिहुः सदम्। कलये सभास्थाणुम्। दुष्कृतायं चरकांचार्यम्। अध्वने ब्रह्मचारिणम्। पिशाचेभ्यः सैलुगम्। पिपासायै गोव्यच्छम्। निर्ऋत्यै गोघातम्। क्षुधे गोविकर्तम्। क्षुत्तृष्णाभ्यान्तम्। यो गां विकृन्तंन्तं मार्सं भिक्षंमाण उपतिष्ठंते॥१६॥

भूम्यै पीठस्पिणमा लेभते। अग्नयेऽर्स्सलम्। वायवे चाण्डालम्। अन्तरिक्षाय वश्शन्तिनम्। दिवे खंलतिम्। सूर्याय हर्यक्षम्। चन्द्रमंसे मिर्मिरम्। नक्षेत्रेभ्यः किलासम्। अहे शुक्लं पिङ्गलम्। रात्रिये कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥१७॥

वाचे पुरुषमा लेभते। प्राणमंपानं व्यानमुंदानः संमानं तान् वायवै। सूर्याय चक्षुरा लेभते। मनश्चन्द्रमंसे। दिग्भ्यः श्रोत्रम्। प्रजापंतये पुरुषम्॥१८॥ अथैतानरूपेभ्य आलेभते। अतिहस्वमतिदीर्घम्। अतिकृशुमत्यः सलम्। अतिंशुक्रुमतिंकृष्णम्। अतिंश्रक्ष्णमितंलोमशम्। अतिंकिरिट्मितिंदन्तुरम्। अतिंमिर्मिर्मितेमेमिषम्। आशायैं जामिम्। प्रतीक्षायैं कुमारीम्॥१९॥

ब्रह्मणे गीताय श्रमांय सन्धर्ये नदीभ्यं उथ्सादेभ्य ऋत्यै भाया अर्मेभ्यो मृन्यवे युम्यै दशंदश् सरौंभ्यो द्वादंश प्रतिश्रुत्कांये बीभ्थ्सायै दशंदश् हसांय सप्ताक्षंराजाय त्रयोंदश् भूम्यै दशं वाचे षडथ् नवैकान्नविर्श्यतिः॥१९॥ ब्रह्मणे यम्यै नवंदश॥१९॥

ब्रह्मणे कुमारीम्॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके चतुर्थः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥पञ्चमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके पञ्चमः प्रपाठकः॥

स्तयं प्रपंद्ये। ऋतं प्रपंद्ये। अमृतं प्रपंद्ये। प्रजापंतेः प्रियां त्नुव्मनाँताँ प्रपंद्ये। इदम्हं पंश्चद्येन् वर्जेण। द्विषन्तं भ्रातृंव्यमवं क्रामामि। योंऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं व्यं द्विष्मः। भूर्भुवः स्वंः। हिम्॥१॥

प्र वो वाजां अभिद्यंवः। ह्विष्मंन्तो घृताच्यां। देवाञ्जिंगाति सुम्रयुः। अग्र आयांहि वीतयें। गृणानो हव्यदांतये। नि होतां सध्सि ब्रहिषिं। तं त्वां सुमिद्धिरङ्गिरः।

घृतेनं वर्धयामिस। बृहच्छोंचा यविष्ठा। स नः पृथुः श्रुवाय्यम्॥२॥

अच्छां देव विवाससि। बृहदंग्ने सुवीर्यम्ं। ईडेन्यों नम्स्यंस्तिरः। तमार्श्स दर्शतः। सम्ग्निरिध्यते वृषां। वृषों अग्निः सिमध्यते। अश्वो न देववाहंनः। तर ह्विष्मंन्त ईडते। वृषेणं त्वा व्यं वृषन्। वृषांणः सिमधीमहि॥३॥

अग्ने दीर्घतं बृहत्। अग्निं दूतं वृंणीमहे। होतांरं विश्ववंदसम्। अस्य यज्ञस्यं सुऋतुम्। समिध्यमानो अध्वरे। अग्निः पांवक ईड्यः। शोचिष्केशस्तमीमहे। समिद्धो अग्न आहुत। देवान् यंक्षि स्वध्वर। त्वर हि हंव्यवाडसिं। आ जुंहोत दुवस्यतं। अग्निं प्रयत्यध्वरे। वृणीध्वर हंव्यवाहंनम्। त्वं वर्रुण उत मित्रो अग्ने। त्वां वर्धन्ति मृतिभिर्वसिष्ठाः। त्वे वसुं सुषण्नानि सन्तु। यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः॥४॥ श्रवाय्यंमिधीमह्यसिं सप्त चं॥____ अग्ने महा अंसि ब्राह्मण भारत। असावसौं। देवेद्धो मन्विंद्धः। ऋषिष्टुतो विप्रांनुमदितः। कुविशस्तो ब्रह्मंस शितो घृताहंवनः। प्रणीर्यज्ञानांम्। रथीरेध्वराणांम्। अतूर्तो होतां। तूर्णिर्हव्यवाट्। आस्पात्रं जुहूर्देवानांम्॥५॥

चमसो देवपानः। अरा॰ इंवाग्ने नेमिर्देवाङ्स्त्वं परिभूरंसि। आ वंह देवान् यर्जमानाय। अग्निमंग्न आवंह। सोममावंह। अग्निमावंह। प्रजापंतिमावंह। अग्नीषोमावावंह। इन्द्राग्नी आवंह। इन्द्रमावंह। महेन्द्रमावंह। देवा॰ आँज्यपा॰ आवंह। अग्नि॰ होत्रायावंह। स्वं मंहिमानुमा वंह। आ चौग्ने देवान् वहं। सुयजां च यज जातवेदः॥६॥

अग्निर्होता वेत्वग्निः। होत्रं वैत्तु प्रावित्रम्। स्मो वयम्। साधु ते यजमान देवता। घृतवंतीमध्वर्यो सुचमास्यंस्व। देवायुवं विश्ववाराम्। ईडांमहै देवा ईडेन्यान्। नमस्यान्। यजांम यज्ञियान्॥७॥

भूभिरहेता नवं स्मिधों अग्न आज्यंस्य वियन्तु। तनूनपांदग्न आज्यंस्य वेतु। इडो अंग्न आज्यंस्य वियन्तु। बर्हिरंग्न आज्यंस्य वेतु। स्वाहाऽग्निम्। स्वाहा सोमम्। स्वाहा-ऽग्निम्। स्वाहां प्रजापंतिम्। स्वाहाऽग्नीषोमौं। स्वाहें न्द्राग्नी। स्वाहेन्द्रम्। स्वाहां महेन्द्रम्। स्वाहां देवा अण्यपान्। स्वाहाऽग्नि होत्राञ्चंषाणाः। अग्न आज्यंस्य वियन्तु॥८॥

इन्द्राग्नी पर्श्व च॥—————[५]

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनत्। द्रविणस्युर्विपन्ययां। सिर्मिद्धः शुक्र आहुंतः। जुषाणो अग्निराज्यंस्य वेतु। त्व॰ सोमासि सत्पंतिः। त्व॰ राजोत वृत्रहा। त्वं भुद्रो असि कर्तुः। जुषाणः सोम् आज्यंस्य ह्विषों वेतु। अग्निः प्रव्लेन् जन्मंना। शुम्भानस्तनुवृङ् स्वाम्। कृविविप्रेण वावृधे। जुषाणो अग्निराज्यंस्य वेतु। सोमं गीर्भिष्ठां व्यम्। वर्धयांमो वचोविदंः। सुमृडीको न् आविंश। जुषाणः सोम् आज्यंस्य ह्विषों वेतु॥९॥

अग्निर्मूर्धा दिवः कुकुत्। पतिः पृथिव्या अयम्। अपार रेतारेसि जिन्वति। भुवो यज्ञस्य रजंसश्च नेता। यत्रां नियुद्धिः सर्चसे शिवाभिः। दिवि मूर्धानं दिधेषे सुवर्षाम्। जिह्वामंग्ने चकृषे हव्यवाहम्। प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यः। विश्वां जातानि

परि ता बंभूव। यत्कांमास्ते जहुमस्तं नो अस्तु॥१०॥ वयः स्यांम् पतंयो रयीणाम्। स वेंद पुत्रः पितर् समातरमै। स सूनुर्भुवथ्स भुंवत्पुनंर्मघः। स द्यामौर्णोद्नतिरिक्ष्यः स सुवंः। स विश्वा भुवो अभव्थस आभंवत्। अग्नीषोमा सर्वेदसा। सहूती वनत्ङ्रिरंः। सन्देवत्रा बभूवथुः। युवमेतानि दिवि रोचनानि। अग्निश्चं सोम् सर्ऋतू अधत्तम्॥११॥

युव सिन्धू रं रिभशंस्तेरवद्यात्। अग्नीषोमावम् अतं गृभीतान्। इन्द्रांग्नी रोचना दिवः। परि वाजेषु भूषथः। तद्वांश्वेति प्रवीर्यम्। श्र्ञथंद्वृत्रमुत संनोति वाजम्। इन्द्रा यो अग्नी सहुंरी सप्यात्। इर्ज्यन्तां वस्व्यंस्य भूरैः। सहंस्तमा सहंसा वाजयन्तां। एन्द्रं सानसि रियम्॥१२॥

स्जित्वान सदासहम्। वर्षिष्ठमूतये भर। प्रसंसाहिषे पुरुहूत शत्रून्। ज्येष्ठंस्ते शुष्मं इह रातिरंस्तु। इन्द्रा भंर दक्षिणेना वसूनि। पितः सिन्धूनामिस रेवतीनाम्। महा इन्द्रो य ओजंसा। पूर्जन्यो वृष्टिमा इंव। स्तोमैंर्व्थ्यस्यं वावृधे। महा इन्द्रो नृवदाचंर्षणिप्राः॥१३॥

उत द्विबर्हां अमिनः सहोंभिः। अस्मृद्रियंग्वावृधे वीर्याय। उरुः पृथुः सुकृतः

कर्तृभिर्भूत्। पिप्रीहि देवा र उंश्तो यंविष्ठ। विद्वा र ऋतू र र्ऋतुपते यजेह। ये दैव्यां ऋत्विज् स्तेभिरग्ने। त्वर होतृंणाम् स्यायंजिष्ठः। अग्नि इ स्विष्टकृतम्। अयां इग्निर्ग्नेः प्रिया धामांनि। अयादथ्सोमस्य प्रिया धामांनि॥१४॥

अयांड्ग्नेः प्रिया धामांनि। अयांद्वजापंतेः प्रिया धामांनि। अयांड्ग्नीषोमंयोः प्रिया धामांनि। अयांडिन्द्राग्नियोः प्रिया धामांनि। अयांडिन्द्रस्य प्रिया धामांनि। अयांड्वानांमाज्यपानां प्रिया धामांनि। यक्षंद्ग्नेरहोतुंः प्रिया धामांनि। यक्ष्यस्वं मंहिमानम्। आयंजतामेज्या इषंः। कृणोतु सो अध्वरा जातवंदाः। जुषता हिवः। अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः। पावंक शोचे वेष्ट्व हि यज्वा। ऋता यंजासि महिना वियद्भः। ह्व्या वंह यविष्ठ या ते अद्या१५॥

अस्तुष्रुत्र र्यं चर्षिण्पाः सोमंस्य प्रिया धामानीषः पर्द॥———[७] उपंहूत १ रथन्त्र १ सह पृथिव्या। उपं मा रथन्त्र १ सह पृथिव्या ह्वंयताम्। उपंहूतं वामदेव्य १ सहान्तरिक्षेण। उपं मा वामदेव्य १ सहान्तरिक्षेण ह्वयताम्।

उपहूतं बृहथ्सह दिवा। उपं मा बृहथ्सह दिवा ह्वंयताम्। उपहूताः सप्त होत्राः। उपं मा सप्त होत्रां ह्वयन्ताम्। उपहूता धेनुः सहर्षंभा। उपं मा धेनुः सहर्षंभा ह्वयताम्॥१६॥

उपंहूतो भृक्षः सर्खां। उपं मा भृक्षः सरखां ह्वयताम्। उपंहूताँ(४)हो। इडोपंहूता। उपंहूतेडां। उपो अस्मा इडां ह्वयताम्। इडोपंहूता। उपंहूतेडां। मानुवी घृतपंदी मैत्रावरुणी। ब्रह्मं देवकृतुमुपंहृतम्॥१७॥

दैव्यां अध्वर्यव उपंहूताः। उपंहूता मनुष्याः। य इमं यज्ञमवान्। ये यज्ञपंतिं वर्धान्। उपंहूते द्यावांपृथिवी। पूर्वजे ऋतावरी। देवी देवपुंत्रे। उपंहूतोऽयं यजमानः। उत्तरस्यान्देवयुज्यायामुपंहूतः। भूयंसि हिव्षष्करंण उपंहूतः। दिव्ये धामृत्रुपंहूतः। इदं में देवा हिवर्जुषन्तामिति तस्मिन्नुपंहूतः। विश्वंमस्य प्रियमुपंहूतम्। विश्वंस्य प्रियस्योपंहूतस्योपंहूतः॥१८॥

देवं बर्हिः। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु। देवो नराशश्संः। वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु। देवो अग्निः स्विष्टकृत्। सुद्रविणा मन्द्रः कविः। सत्यमन्मायजी होताँ। होतुंरहोतुरायंजीयान्। अग्ने यान्देवानयाँट्। याश् अपिंप्रेः। ये ते होत्रे अमंध्सत। ताश् संसनुषीश् होत्रान्देवङ्गमाम्। दिवि देवेषुं यज्ञमेरंयेमम्। स्विष्टकृचाग्ने होता-ऽभूः। वसुवनं वसुधेयंस्य नमोवाके वीहि॥१९॥

इदं द्यांवापृथिवी भुद्रमंभूत्। आर्ध्मं सूक्तवाकम्। उत नंमोवाकम्। ऋध्यास्मं सूक्तोच्यंमग्ने। त्व॰ सूक्तवागंसि। उपंश्रितो दिवः पृथिव्योः। ओमंन्वती तेऽस्मिन् युज्ञे यंजमान् द्यावांपृथिवी स्ताम्। शृङ्गये जीरदांनू। अत्रंसू अप्रवेदे। उरुगंव्यूती अभयं कृतौ॥२०॥

वृष्टिद्यांवा रीत्यांपा। शम्भुवौं मयोभुवौं। ऊर्जस्वती च पर्यस्वती च। सूप्चरणा चं स्वधिचरणा चं। तयोराविदिं। अग्निरिद॰ ह्विरंजुषत। अवींवृधत् महो पश्चमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ज्यायोऽकृत। सोमं इद १ हिवरं जुषत। अवीं वृधत महो ज्यायोऽकृत। अग्निरिद १ हविरंजुषत॥२१॥

अवीवृधत महो ज्यायोऽकृत। प्रजापंतिरिद॰ हविरंजुषत। अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृत। अग्नीषोमांविद॰ हिवरंजुषेताम्। अवीवृधेतां महो ज्यायोंऽक्राताम्। इन्द्राग्नी इद॰ हिवरंजुषेताम्। अवींवृधेतां महो ज्यायों ऽक्राताम्। इन्द्रं इद॰ हिवरंजुषता अवीवृधत महो ज्यायोऽकृता महेन्द्र इद॰ हिवरंजुषत॥२२॥

अवीवृधत् महो ज्यायोऽकृत। देवा आज्यपा आज्यमजुषन्त। अवीवृधन्त महो ज्यायों ऽऋता अग्निर्होत्रेणेद १ हिवरं जुषता अवीवृधत् महो ज्यायों ऽकृता अस्यामृधद्धोत्रायान्देवङ्गमायाम्। आशास्तेऽयं यर्जमानोऽसौ। आयुरा शास्ते। सुप्रजास्त्वमा शास्ते। सजात्वनस्यामा शास्ते॥२३॥

उत्तरान्देवयज्यामा शाँस्ते। भूयों हविष्करंणमा शाँस्ते। दिव्यं धामा शाँस्ते। विश्वं प्रियमा शास्ते। यदनेनं हिवषाऽऽशास्ते। तदंश्यात्तदंध्यात्। तदंस्मै देवा रांसन्ताम्। तद्ग्निर्देवो देवेभ्यो वनंते। वयमुग्नेर्मानुषाः। इष्टं चं वीतं चं। उभे चं नो द्यावांपृथिवी अर्हंसस्पाताम्। इह गतिर्वामस्येदं चं। नमों देवेभ्यः॥२४॥

अभ्यं कृतांवकृतागिरिदर ह्विरंज्ञ्चत महेन्द्र इदर ह्विरंज्ञ्चत सजातवनस्यामा शांस्ते वीतं च त्रीणि च॥——[१०]

तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवीं स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे॥२५॥ तच्छुं योरहो॥———[११]

आप्यायस्व सन्तैं। इह त्वष्टारमग्रियं तन्नंस्तुरीपम्ं। देवानां पत्नीरुशतीरंवन्तु नः। प्रावंन्तु नस्तुजये वाजंसातये। याः पार्थिवासो या अपामिषं व्रते। ता नों देवीः सुहवाः शर्म यच्छत। उत ग्ना वियन्तु देवपंत्नीः। इन्द्राण्यंग्नाय्यश्विनी राट्। आ रोदंसी वरुणानी शृंणोतु। वियन्तुं देवीर्य ऋतुर्जनीनाम्॥२६॥

अग्निर्होतां गृहपंतिः स राजां। विश्वां वेद् जिनेमा जातवेदाः। देवानांमुत यो मर्त्यानाम्। यिजेष्टः स प्र यंजतामृतावां। व्यमुं त्वा गृहपते जनानाम्। अग्ने अर्कर्म स्मिधां बृहन्तम्। अस्थूरि णो गार्हंपत्यानि सन्तु। तिग्मेनं नुस्तेर्जसा सःशिंशाधि॥२७॥

सर्शिंशाधि॥२७॥ जनींनामुष्टौ चं॥ [१२]

उपहूत रथन्तर सह पृथिव्या। उपं मा रथन्तर सह पृथिव्या ह्वयताम्। उपंहूतं वामदेव्य सहान्तिरक्षेण। उपं मा वामदेव्य सहान्तिरक्षेण ह्वयताम्। उपंहूतं बृहथ्सह दिवा। उपं मा बृहथ्सह दिवा ह्वयताम्। उपंहूताः सप्त होत्राः। उपं मा सप्त होत्राः ह्वयन्ताम्। उपहूताः धेनुः सहर्षभा। उपं मा धेनुः सहर्षभा

ह्वयताम्॥२८॥
उपंहूतो भृक्षः सर्खां। उपं मा भृक्षः सर्खां ह्वयताम्। उपंहूताँ(४)हो। इडोपंहूता। उपंहूतेडां। उपो अस्मा १ इडां ह्वयताम्। इडोपंहूता। उपंहूतेडां। मानुवी घृतपंदी मैत्रावरुणी। ब्रह्मं देवकृत्मुपंहूतम्॥२९॥

दैव्यां अध्वर्यव उपंहूताः। उपंहूता मनुष्याः। य इमं युज्ञमवान्। ये युज्ञपंत्रीं

वर्धान्। उपहूत् द्यावापृथिवी। पूर्वजे ऋतावरी। देवी देवपुत्रे। उपहूत्यं यर्जमाना। इन्द्राणीवांऽविध्वा। अदितिरिव सुपुत्रा। उत्तरस्यान्देवयुज्यायामुपहूता। भूयंसि हिव्ष्करंण उपहूता। दिव्ये धामृत्रुपहूता। इदं में देवा ह्विर्जुषन्तामिति तस्मिन्नुपहूता। विश्वंमस्याः प्रियमुपहूतम्। विश्वंस्य प्रियस्योपहूतस्योपहूता॥३०॥ सहर्षमा ह्वयन्तुम्पहूतः सुपुत्र पद्वा—[१३]

सृत्यं प्रवोऽग्नें मृहानृग्निर्होतां सुमिधोऽग्निर्वृत्राण्यग्निर्मूर्धोपंहूतं देवं बुर्हिरिदं द्यावापृथिवी तच्छुं योरा

प्यांयुस्वोपंहूत्त्रयोदश॥१३॥

सत्यं वय स्याम वृष्टिद्यांवा त्रि १ शत्॥ ३०॥

सृत्यमुपंहूता॥

हरिः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके पश्चमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥षष्ठमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके षष्टः प्रपाठकः॥

अञ्जन्ति त्वामध्वरे देवयन्तः। वनस्पते मध्ना दैव्येन। यदूर्ध्वस्तिष्ठाद्भविणेह धंत्तात्। यद्वा क्षयो मातुर्स्या उपस्थै। उच्छ्रंयस्व वनस्पते। वर्ष्मन्पृथिव्या अधि। सुमिती मीयमानः। वर्चोधा यज्ञवाहसे। समिद्धस्य श्रयंमाणः पुरस्तौत्। ब्रह्मं वन्वानो अजर स्वीरम्॥१॥

आरे अस्मदमंतिं बाधंमानः। उच्छ्रंयस्व मह्ते सौभंगाय। ऊर्ध्व ऊषुणं ऊतयैं। तिष्ठां देवो न संविता। ऊर्ध्वा वार्जस्य सनिता यद्श्विभिः। वाघद्विर्विह्वयांमहे। ऊर्ध्वो नः पाह्यश्हंसो नि केतुनां। विश्वश् समृत्रिणंन्दह। कृधी न ऊर्ध्वां च रथांय जीवसें। विदा देवेषुं नो दुवंः॥२॥

जातो जांयते सुदिनत्वे अह्नाम्। समयं आ विदथे वर्धमानः। पुनन्ति धीरां अपसो मनीषा। देवया विप्र उदियर्ति वाचम्। युवां सुवासाः परिवीत् आगांत्। स उ श्रेयाँन्भवित जार्यमानः। तं धीरांसः क्वय उन्नयन्ति। स्वाधियो मनसा देवयन्तः। पृथुपाजा अमर्त्यः। घृतिनिर्णिख्स्वाहुतः। अग्निर्य्ज्ञस्यं हव्यवाट्। तः स्वाधी यतः स्रुंचः। इत्था धिया यज्ञवन्तः। आचंकुर्ग्निमूतयेँ। त्वं वर्रुण उत मित्रो अग्ने। त्वां वर्धन्ति मृतिभिर्वसिष्ठाः। त्वे वस् सुषण्नानि सन्तु। यूयं पात स्वस्तिभिः सदां नः॥३॥

होतां यक्षदिग्निः स्मिधां सुष्मिधा सिमंद्धं नाभां पृथिव्याः संङ्ग्थे वामस्यं। वर्ष्मन्दिव इडस्पदे वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षत्तनूनपात्मिदेतेर्गर्भं भुवंनस्य गोपाम्। मध्वाद्य देवो देवेभ्यों देवयानांन्प्थो अनक्तु वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षत्रत्राशः सं नृशः म्रं गृशेत्रम्। गोभिर्वपावान्थ्रस्याद्वीरैः शक्तींवान्नथैः प्रथम्या वा हिरंण्येश्चन्द्री वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यंजं। होतां यक्षत्रराशः होतां यक्षत्रत्राशः सं नृशः म्रं वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यंजं। होतां यक्षदिग्निम्ड ईडितो देवो देवाः आवंक्षद्द्तो हंव्यवाडमूरः। उपेमं यज्ञमुपेमां

देवो देवहूंतिमवतु वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षद्वर्हिः सुष्टरीमोर्णम्रदा अस्मिन् युज्ञे वि च प्र चं प्रथताः स्वास्थः देवेभ्यः। एमेनद्द्य वसंवो रुद्रा आंदित्याः संदन्त् प्रियमिन्द्रंस्यास्त् वेत्वाऽऽज्यंस्य होतर्यजं॥४॥

आंदित्याः संदन्तु प्रियमिन्द्रंस्यास्तु वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्रर्यजं॥४॥ होतां यक्षद्दुरं ऋष्वाः कंवष्यो कोषधावनीरुदातांभीर्जिहंतां विपक्षोंभिः श्रयन्ताम्। सुप्रायणा अस्मिन् युज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो वियन्त्वाज्यंस्य होतुर्यजं। होतां यक्षदुषासानक्तां बृहती सुपेशंसा नृइः पतिंभ्यो योनिं कृण्वाने। सङ्स्मर्यमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सींदतां वीतामाज्यंस्य होतर्यजी। होतां यक्षद्दैव्या होतारा मन्द्रा पोतारा कवी प्रचेतसा। स्विष्टमुद्यान्यः करिंदुषा स्वंभिगूर्तमृन्य ऊर्जा सतंवसेमं युज्ञं दिवि देवेषुं धत्तां वीतामाज्यस्य होतर्यजं। होतां यक्षत्तिस्रो देवीरपसामपस्तमा अच्छिंद्रमद्येदमपंस्तन्वताम्। देवेभ्यों देवीर्देवमपो वियन्त्वाज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षत्त्वष्टांरमचिष्टुमपांक रतोधां विश्रवसं यशोधाम्। पुरुरूपमकामकर्शन सुपोषः पोषैः स्याध्सुवीरो वीरैर्वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षद्वन्स्पतिमुपावंस्रक्षद्धियो जोष्टार र शृशम्त्ररंः। स्वदाथ्स्विधितिर्ऋतुथाद्य देवो देवेभ्यो ह्व्यावाङ्वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यजं। होतां यक्षद्ग्निः स्वाहाऽऽज्यंस्य स्वाहा मेदंसः स्वाहां स्तोकानाः स्वाहा स्वाहां कृतीनाः स्वाहां ह्व्यसूक्तीनाम्। स्वाहां देवा र आज्यपान्थ्स्वाहा-ऽग्निः होत्राञ्जंषाणा अग्न आज्यंस्य वियन्तु होत्र्यजं॥५॥ प्रियमिन्द्रंस्यास्तु वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यं सुवीरो वीरैर्वेत्वाऽऽज्यंस्य होत्र्यं चत्वारि च (अग्निन्तनूनपांतृत्रग्रार्थरं मृषीर्यो इंडितो ब्रुहिईरं उषासानक्ता देव्यां तिस्रस्त्वष्टां वनस्पतिमृग्निम्। पश्च वेत्वेको वियन्तु द्विवीतामेको वियन्तु द्विवेत्वको वियन्तु

सिमंद्धो अद्य मनुषो दुरोणे। देवो देवान् यंजिस जातवेदः। आ च वहं मित्रमहिश्चिकित्वान्। त्वं दूतः कृविरेसि प्रचेताः। तनूनपात्पथ ऋतस्य यानान्। मध्वां समुञ्जन्थ्यंदया सुजिह्न। मन्मांनि धीभिरुत यज्ञमृन्धन्। देवत्रा चं कृणुह्यध्वरं नंः। नराशर् संस्य महिमानंमेषाम्। उपं स्तोषाम यज्ञतस्यं यज्ञैः॥६॥ ते सुऋतंवः शुचंयो धियन्थाः। स्वदंन्तु देवा उभयांनि हव्या। आजुह्वांन् ईड्यो

वन्द्यंश्च। आयाँह्यभ्रे वसुंभिः स्जोषाँः। त्वं देवानांमिस यह्न् होताँ। स एंनान् यक्षीषितो यजीयान्। प्राचीनं बुर्हिः प्रदिशां पृथिव्याः। वस्तोर्स्या वृंज्यते अभ्रे अहाँम्। व्युं प्रथते वित्रं वरीयः। देवेभ्यो अदितये स्योनम्॥७॥

व्यचंस्वतीरुर्विया विश्रंयन्ताम्। पतिंभ्यो न जनंयः शुम्भंमानाः। देवींर्द्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वाः। देवेभ्यो भवथ सुप्रायणाः। आसुष्वयंन्ती यज्ते उपांके। उषासानक्तां सदतां नि योनौं। दिव्ये योषंणे बृहती सुरुक्मे। अधि श्रियर्थ शुक्रपिशं दर्धाने। दैव्या होतांरा प्रथमा सुवाचौ। मिमाना यृज्ञं मनुषो यज्ञध्ये॥८॥ प्रचोदयंन्ता विदर्थेषु कारू। प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशां दिशन्तौ। आ नो यृज्ञं भारती तूर्यमेतु। इडां मनुष्वदिह चेत्यंन्ती। तिस्रो देवीर्ब्रहरेद स्योनम्।

सरंस्वती स्वपंसः सदन्तु। य इमे द्यावांपृथिवी जिनेत्री। रूपैरिप १ शुद्भवंनािन् विश्वां। तम्द्य होतिरिषितो यजीयान्। देवं त्वष्टांरिम्ह यक्षि विद्वान्॥९॥ उपावंसृजत्मन्यां सम्ञन्। देवानां पार्थं ऋतुथा ह्वी १ षिं। वनस्पितिः शिम्ता देवो अग्निः। स्वदंन्तु ह्व्यं मधुंना घृतेनं। स्द्यो जातो व्यंमिमीत यज्ञम्। अग्निर्देवानांमभवत्पुरोगाः। अस्य होतुंः प्रदिश्यृतस्यं वाचि। स्वाहांकृतः ह्विरंदन्तु देवाः॥१०॥

युज्ञैः स्योनं यर्जध्यै विद्वान्ष्टौ चं॥———[३]
अग्निर्होतां नो अध्वरे। वाजी सन्परिणीयते। देवो देवेषुं यज्ञियः।

परित्रिविष्टांध्वरम्। यात्युग्नी रथीरिव। आ देवेषु प्रयो दर्धत्। परि वार्जपितिः कविः। अग्निर्ह्व्यान्यंक्रमीत्। दध्द्रलांनि दाशुषे॥११॥

अजैंद्गिः। असंनुद्वाज्ञिन्नि। देवो देवेभ्यों हुव्यावाँद्। प्राञ्जोभिर्हिन्वानः। धेनांभिः कर्ल्पमानः। युज्ञस्यायुः प्रतिरन्। उप् प्रेष्यं होतः। हुव्या देवेभ्यः॥१२॥

अजैंदुहो॥——[५] दैव्याः शमितार उत मंनुष्या आरंभध्वम्। उपनयत् मेध्या दुरंः। आशासांना मेधंपतिभ्यां मेधम्। प्रास्मां अभिं भंरत। स्तृणीत बर्हिः। अन्वेनं माता मन्यताम्। अनुं पिता। अनु भ्राता सर्गर्भ्यः। अनु सखा सर्यूथ्यः। उदीचीनार् अस्य पदो निधंत्तात्॥१३॥

सूर्यं चक्षुंर्गमयतात्। वातं प्राणम्नववंसृजतात्। दिशः श्रोत्रम्। अन्तिरिक्षमसुम्। पृथिवी शरीरम्। एक्धाऽस्य त्वचमाच्छातात्। पुरा नाभ्यां अपिशसो वपामुत्खिदतात्। अन्तरेवोष्माणं वारयतात्। श्येनमंस्य वक्षः कृणुतात्। प्रशसां बाह॥१४॥

श्रुला दोषणीं। कृश्यपेवारसां। अच्छिंद्रे श्रोणीं। कृवषोरू स्रेकपंणिष्ठीवन्तां। षड्विरेशतिरस्य वङ्क्षयः। ता अनुष्ठ्योच्यांवयतात्। गात्रं गात्रम्स्यानूनं कृणुतात्। ऊव्ध्यगोहं पार्थिवं खनतात्। अस्रा रक्षः सरसृजतात्। वृनिष्ठमंस्य मा राविष्ट॥१५॥

उर्रूकं मन्यमानाः। नेद्वस्तोके तनये। रवितारवेच्छमितारः। अधिगो शमीध्वम्।

सुशिमं शमीध्वम्। श्मीध्वमंध्रिगो। अधिगुश्चापांपश्च। उभौ देवाना १ शिम्तारौँ। ताविमं पृशू १ श्रंपयतां प्रविद्वा १ सौँ। यथांयथाऽस्य श्रपंण्न्तथांतथा॥१६॥ धताद्वाह् मा रांविष्ट तथांतथा॥ [ह]

जुषस्वं सप्रथंस्तमम्। वचों देवफ्संरस्तमम्। हृव्या जुह्वांन आसिनं। इमं नों यज्ञम्मृतेषु धेहि। इमा हृव्या जातवेदो जुषस्व। स्तोकानांमग्ने मेदंसो घृतस्यं। होतः प्राशांन प्रथमो निषद्यं। घृतवंन्तः पावक ते। स्तोकाः श्लोतन्ति मेदंसः।

स्वधंमं देववीतये॥१७॥

श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम्। तुभ्य इंस्तोका घृतश्चतः। अग्ने विप्रांय सन्त्य। ऋषिः श्रेष्ठः सिर्मध्यसे। यज्ञस्यं प्राविता भंव। तुभ्य इंश्वोतन्त्यिष्ठगो शचीवः। स्तोकासो अग्ने मेदंसो घृतस्य। कविश्वस्तो बृंहता भानुनागाः। ह्व्या जुंषस्व मेधिर। ओजिंष्ठन्ते मध्यतो मेद उद्भृतम्। प्र ते व्यं दंदामहे। श्वोतंन्ति ते वसो स्तोका अधित्वचि। प्रति तान्देवशोविहि॥१८॥

वेववीतय उद्गृंतिकीणि च॥————[७]
आवृंत्रहणा वृत्रहिभः शुष्मैः। इन्द्रं यातन्नमोभिरग्ने अर्वाक्। युवश् राधोभिरकविभिरिन्द्र। अग्ने अस्मे भवतमत्तमेभिः। होतां यक्षदिन्द्राग्नी। छागस्य

राधोभिरकंवेभिरिन्द्र। अग्ने अस्मे भंवतमुत्तमेभिः। होतां यक्षदिन्द्राग्नी। छागस्य वपाया मेदंसः। जुषेतार् ह्विः। होत्र्यजं। विह्यख्यन्मनंसा वस्यं इच्छन्। इन्द्रौग्नी ज्ञास उत वां सजातान्॥१९॥

नान्या युवत्प्रमंतिरस्ति महाम्। स वां धियं वाज्यन्तीमतक्षम्। होतां यक्षदिन्द्राग्नी। पुरोडाशंस्य जुषेता र हिवः। होत्र्यजं। त्वामींडते अजिरं दूत्यांय। हिविष्मंन्तः सदिमन्मानुंषासः। यस्यं देवैरासंदो ब्र्हिरंग्ने। अहाँन्यस्मै सुदिनां भवन्तु। होतां यक्षदिग्नेम्। पुरोडाशंस्य जुषता र हिवः। होत्र्यजं॥२०॥

सजातनित्रिन्दे चं॥

[८]

गीर्भिर्विप्रः प्रमंतिमिच्छमानः। ईट्टे र्यिं यशसं पूर्वभाजम्। इन्द्रौग्नी वृत्रहणा सुवज्रा। प्र णो नव्येभिस्तिरतं देष्णैः। माच्छैंद्म रुश्मी १रिति नार्धमानाः। पितृणा १ शक्तीरनुयच्छीमानाः। इन्द्राग्निभ्यां कं वृषीणो मदन्ति। ताह्यद्री धिषणाया उपस्थै। अग्निश् सुंदीतिश् सुदर्श गृणन्तिः। नुमस्यामुस्त्वेड्यं जातवेदः। त्वां दूतमेर्तिश् हिव्यवाहम्। देवा अंकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्॥२१॥

जातुवेदो द्वे चं॥

त्व इ ह्यंग्ने प्रथमो मनोता। अस्या धियो अभेवो दस्महोता। त्व सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीत्। सहो विश्वंस्मै सहंसे सहंध्ये। अधा होता न्यंसीदो यजीयान्। इडस्पद इषयन्नीड्यः सन्। तं त्वा नर्रः प्रथमं देवयन्तंः। महो राये चितयंन्तो अनुंग्मन्। वृतेव यन्तं बहुभिर्वस्व्यैः। त्वे र्यिं जांगृवा सो अनुंग्मन्॥२२॥ रुशंन्तमृग्निं दंर्शतं बृहन्तम्। वृपावंन्तं विश्वहां दीदिवा सम्। पदं देवस्य

नमंसा वियन्तंः। श्रवस्यवः श्रवं आपन्नमृंक्तम्। नामानि चिद्दिधिरे यज्ञियानि।

भद्रायां ते रणयन्त सन्दंष्टौ। त्वां वंर्धन्ति क्षितयः पृथिव्याम्। त्व र रायं उभयांसो

जनानाम्। त्वं त्राता तरणे चेत्योऽभूः। पिता माता सदिमन्मानुंषाणाम्॥२३॥

दम आ दींदिवा रसम्। उपंजुबाधो नर्मसा सदेम। तं त्वां वय र सुधियो नव्यंमग्ने।

सपर्येण्यः स प्रियो विक्ष्वंग्निः। होतां मन्द्रो निषंसादा यजीयान्। तं त्वां वयं

सुम्रायवं ईमहे देवयन्तंः। त्वं विशो अनयो दीद्यांनः। दिवो अंग्ने बृह्ता रोचनेनं। विशां कृविं विश्पति श्रश्वंतीनाम्। नितोशंनं वृष्मं चंर्षणीनाम्॥२४॥ प्रेतीषणि मिषयंन्तं पावकम्। राजंन्तमृग्निं यंज्ञतः रंयीणाम्। सो अंग्न ईजे शश्मे च मर्तः। यस्त आनंदथ्समिधां हृव्यदांतिम्। य आहुंतिं परि वेदा नमोंभिः। विश्वथ्सवामा दंधते त्वोतः। अस्मा उं ते मिहं मृहे विधेम। नमोंभिरग्ने समिधोत हृव्यैः। वेदीसूनो सहसो गीर्भिरुक्थैः। आ ते भृद्रायाः सुमृतौ यंतेम॥२५॥ आ यस्ततन्थ रोदंसी विभासा। श्रवोंभिश्च श्रवस्यंस्तरुतः। बृहद्भिर्वाजैः

स्थविरेभिर्स्मे। रेवद्भिरग्ने वित्रं वि भांहि। नृवद्वंसो सद्मिद्धेंह्यस्मे। भूरितोकाय तनंयाय पृश्वः। पूर्वीरिषों बृह्तीरारे अंघाः। अस्मे भुद्रा सौंश्रवसानिं सन्तु। पुरूण्यंग्ने पुरुधा त्वाया। वसूनि राजन्वसुतांते अश्याम्। पुरूणि हि त्वे पुरुवार सन्तिं। अग्ने वसुं विधते राजनित्वे॥२६॥

आभेरत शक्षितं वज्रबाहू। अस्मा इंन्द्राग्नी अवत् शर्चीभिः। इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य। येभिः सिपुत्वं पितरों नु आयन्। होतां यक्षदिन्द्राग्नी। छार्गस्य

ह्विष् आत्तांमुद्य। मुध्यतो मेद् उद्भृतम्। पुरा द्वेषौभ्यः। पुरा पौरुषेय्या गृभः।

जागृवारसो अनुंग्मन्मानुंषाणाश्चर्षणीनां यंतेमाश्यान्द्वे चं॥

घस्तांन्नूनम्॥२७॥

घासे अंज्राणां यवंसप्रथमानाम्। सुमत्क्षंराणाः शृतरुद्रियाणाम्। अग्निष्वात्तानां पीवोपवसनानाम्। पार्श्वतः श्रोणितः शितामृत उथ्साद्तः। अङ्गादङ्गादवंत्तानाम्। करंत एवेन्द्राग्नी। जुषेताः हृविः। होत्र्यजं। देवेभ्यो वनस्पते हृवीः षिं। हिरंण्यपणं प्रदिवंस्ते अर्थम्॥२८॥

प्रदक्षिणिद्रशनयां निययं। ऋतस्यं विश्व पृथिभी रिजेष्ठैः। होतां यक्षद्वनस्पितंमिभिहि। पिष्टतंमया रिभेष्ठया रश्नयाधित। यत्रैन्द्राग्नियोश्छागंस्य हिवषं प्रिया धामांनि। यत्र वनस्पतें प्रिया पाथार्से। यत्रं देवानांमाज्यपानां

प्रिया धामांनि। यत्राग्नेर्होतुंः प्रिया धामांनि। तत्रैतं प्रस्तुत्येवोपस्तुत्ये वोपावंस्रक्षत्। रभीया समिव कृत्वी॥ २९॥

करंदेवं देवो वन्स्पतिः। जुषता हिवः। होत्र्यजं। पिप्रीहि देवा उंश्तो यंविष्ठ। विद्वा ऋतू र्ऋतू र्ऋतु पते यजेह। ये दैव्यां ऋत्विज्स्तेभिरग्ने। त्व होतृंणाम्स्यायंजिष्ठः। होतां यक्षद्ग्नि स्विष्टकृतम्। अयांड्ग्निरिन्द्राग्नियोश्छागंस्य हिवषंः प्रिया धामांनि। अयाङ्गन्स्पतैः प्रिया पाथा सि। अयाङ्ग्वानांमाज्यपानां प्रिया धामांनि। यक्षंद्ग्नेर्होतुः प्रिया धामांनि। यक्ष्यस्वं मंहिमानम्। आयंजतामेज्या इषः। कृणोतु सो अध्वरा जातवेदाः। जुषता हिवः। होत्र्यंजं॥३०॥

उपों हु यद्विदर्थं वाजिनो गूः। गीर्भिर्विप्राः प्रमंतिमिच्छमानाः। अर्वन्तो न काष्ठान्नक्षंमाणाः। इन्द्राग्नी जोहुंवतो नर्स्ते। वनस्पते रश्नयांऽभिधायं। पिष्टतंमया

नूनमर्थं कृत्वी पाथा रेसि सप्त चं॥____

वयुनांनि विद्वान्। वहं देवत्रा दिंधिषो ह्वी १ षिं। प्र चंदातारंम्मृतेषु वोचः। अग्नि १ स्विष्टकृतम्। अयांडुग्निरिन्द्राग्नियोश्छागस्य ह्विषंः प्रिया धामांनि॥ ३१॥

अयाङ्गन्स्पतेंः प्रिया पाथारेसि। अयाँड्वानांमाज्यपानां प्रिया धामांनि। यक्षंदग्नेर्होतुंः प्रिया धामांनि। यक्ष्यस्वं महिमानम्। आयंजतामेज्या इषंः। कृणोतु सो अध्वरा जातवेदाः। जुषतारे ह्विः। अग्ने यद्द्य विशो अध्वरस्य होतः। पावंक शोचे वेष्वर हि यज्वां। ऋता यंजासि महिना वियद्भः। ह्व्या वंह यविष्ठ या ते अद्य॥३२॥

्षण्याति भूरेकं चादिवं बर्हिः सुंदेवं देवैः स्याथ्सुवीरं वीरैर्वस्तौर्वृज्येताक्तोः प्रभ्रियेतात्यन्यात्राया बर्हिष्मंतो मदेम वसुवनं वसुधेयंस्य वेतु यजं। देवीर्द्वारं सङ्घाते विङ्वीर्यामंन्छिथिरा ध्रुवा देवहूंतौ वथ्स ईमेनास्तरुण आमिमीयात्कुमारो वा नवंजातो मैना अर्वा रेणुकंकाटः पृणंग्वसुवनं वसुधेयंस्य वियन्तु यजं।

देवी उषासानकाऽद्यास्मिन् यज्ञे प्रयत्यंह्वेतामपि नूनं दैवीर्विशः प्रायांसिष्टा ध सुप्रींते सुधिंते वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवी जोष्ट्री वसुंधिती ययोरन्या-ऽघाद्वेषा ५सि यूयवदान्यावंक्षद्वसु वार्याणि यर्जमानाय वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवी ऊर्जाहंती इषमूर्जमन्यावंक्षथ्सग्धिः सपींतिमन्या नवेन पूर्वन्दयंमानाः स्यामं पुराणेन नवन्तामूर्जमूर्जाहुंती ऊर्जयंमाने अधातां वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यजं। देवा दैव्या होतांरा नेष्टांरा पोतांरा हताघंश श्सावाभ्रद्धंसू वसुवने वसुधेयंस्य वीतां यर्जा। देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीरिडा सर्रस्वती भारती द्यां भारत्यादित्यैरंस्पृक्षथ्सरंस्वतीम र रुद्रैर्यज्ञमांवीदिहैवेडंया वसुंमत्या सधमादं मदेम वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु यर्जा। देवो नराशश्संस्त्रिशीर्षा षंड्क्षः शतमिदंन श्शितिपृष्ठा आदंधति सहस्रंमीं प्रवंहन्ति मित्रावरुणेदंस्य होत्रमर्हतो बृहस्पतिः स्तोत्रमश्विनाऽऽध्वर्यवं वसुवने वसुधेयस्यं वेतु यजं। देवो वनस्पतिंर्वर्षप्रांवा घृतिनिंर्णिग्द्यामग्रेणास्पृक्षदान्तरिक्षं मध्येनाप्राः

पृथिवीमुपंरेणाद १ ही द्वस्वनं वसुधेयंस्य वेतु यर्जा। देवं ब्रहिर्वारितीनां निधेधां ऽसि

प्रच्यंतीनामप्रच्युतन्निकाम्धरंणं पुरुस्पार्हं यशंस्वदेना ब्र्हिषाऽन्या ब्र्ही इष्यभि

ष्यांम वसुवने वसुधेयंस्य वेतु यर्जा। देवो अग्निः स्विष्टकृथ्सुद्रविणा मुन्द्रः कविः

स्त्यमंन्माऽऽयुजी होता होतुंर्होतुरायंजीयानभ्रे यान्देवानयाड्या अपिंप्रेयें ते होत्रे अमंथ्सत् ता स्संसनुषी होतां देवङ्गमान्दिवि देवेषुं युज्ञमेरंयेम स्विष्टकृ चाग्रे होताऽभूवंसुवने वसुधेयंस्य नमोवाके वीहि यजं॥३३॥

प्रेकं च [१३]
देवं बर्हिः। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु। देवीर्द्वारंः। वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु। देवी उषासानक्तां। वसुवने वसुधेयंस्य वीताम्। देवी जोष्ट्रीं। वसुवने वसुधेयंस्य वीताम्। देवी ऊर्जाहुंती। वसुवने वसुधेयंस्य वीताम्॥३४॥

देवा दैव्या होतारा। वसुवने वसुधेयंस्य वीताम्। देवीस्तिस्रस्तिस्रो देवीः।

वसुवने वसुधेयंस्य वियन्तु। देवो नराशश्संः। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु। देवो

वन्स्पतिः। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु। देवं ब्र्हिर्वारितीनाम्। वसुवने वसुधेयंस्य वेतु॥३५॥

देवो अग्निः स्विष्टकृत्। सुद्रविणा मृन्द्रः कृविः। सृत्यमेन्मायुजी होताँ। होतुंर्होतुरायंजीयान्। अग्ने यान्देवानयाँट्। या अपिप्रेः। ये ते होत्रे अमध्सत। ता स्स्नुषी होताँनदेवङ्गमाम्। दिवि देवेषुं युज्ञमेर्रयेमम्। स्विष्टकृचाग्ने

होताऽभूः। वसुवने वसुधेयस्य नमोवाके वीहि॥३६॥

अग्निम् होतांरमवृणीतायं यजंमानः पर्चन्यक्तीः पर्चन्युरोडाशं ब्ध्निन्द्राग्निभ्याञ्छ सूपस्था अद्य देवो वनस्पतिरभवदिन्द्राग्निभ्यां छागेनाघंस्तान्तं मेंद्स्तः प्रति-पचताग्रंभीष्टामवीवृधेतां पुरोडाशेन् त्वामुद्यर्षं आर्षेय ऋषीणान्नपादवृणीतायं

यर्जमानो बहुभ्य आ सङ्गंतेभ्य एष में देवेषु वसु वार्या यंक्ष्यत् इति ता या देवा देवदानान्यदुस्तान्यंस्मा आ च शास्वा चं गुरस्वेषितश्चं होत्रसीं भद्रवाच्यांय

प्रेषितो मानुषः सूक्तवाकायं सूक्ता ब्रूहि॥३७॥

अञ्जिम्चैकम्॥———[१५]
अञ्जन्ति होतां यक्षथ्सिमद्धो अद्याग्निरजैद्दैव्यां जुषस्वा वृंत्रहणा गीर्भिस्त्व इद्यानंरतमुपोह यद्देवं बर्हिः सुंदेवं देवं

बर्हिरग्निमद्य पश्चंदश॥१५॥

अञ्जन्त्यग्निर्होतां नो गीर्मिरुपों हु यद्विदर्थं वाजिनः सप्तत्रिरंशत्॥३७॥

अञ्जन्ति सूक्ताब्रूंहि॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके षष्ठः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ सप्तमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः॥

सर्वान् वा एषों ऽग्नौ कामान्प्रवेशयति। यों ऽग्नीनंन्वाधायं व्रतमुपैतिं। सयदिनिङ्घा प्रयायात्। अकांमप्रीता एनं कामा नानुप्रयायः। अतेजा अवीर्यः स्यात्। स जुंहुयात्। तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम। विश्वाः सुक्षितयः पृथंक्। अग्ने कामाय येमिर् इतिं। कामानेवास्मिन्दधाति॥१॥

कामंप्रीता एनं कामा अनु प्रयान्ति। तेज्ञस्वी वीर्यावान्भवति। सन्तंतिर्वा एषा यज्ञस्यं। योऽग्नीनंन्वाधायं व्रतमुपैतिं। स यदुद्वायंति। विच्छित्तिरेवास्य सा। तं प्राश्चंमुद्धृत्यं। मन्सोपतिष्ठेत। मनो वै प्रजापंतिः। प्राजापत्यो यज्ञः॥२॥

मनंसैव युज्ञ सन्तंनोति। भूरित्यांह। भूतो वै प्रजापंतिः। भूतिमेवोपैति। वि वा एष इंन्द्रियेणं वीर्येणर्ध्यते। यस्याऽऽहिंताग्नेर्ग्निरंपृक्षायंति। यावुच्छम्यंया प्रविध्येत्। यदि तावंदपृक्षायेत्। तस सम्भंरेत्। इदं तु एकं पुर उं तु एकम्॥३॥

परमे जनित्र इति। ब्रह्मणैवेन् सम्भरित। सैव ततः प्रायंश्चित्तः। यदि

तृतीयेन ज्योतिषा संविंशस्व। संवेशंनस्तनुवै चारुरेधि। प्रिये देवानां

परस्तरामेपक्षायेत्। अनुप्रयायावस्येत्। सो एव ततः प्रायंश्चित्तिः। ओषंधीर्वा एतस्यं पृश्न्ययः प्रविश्वति। यस्यं ह्विषं वृथ्सा अपाकृता धयंन्ति॥४॥ तान् यदुद्धात्। यातयामा ह्विषां यजेत। यन्न दुद्धात्। यृज्ञपुरुर्न्तरियात्। वायव्यां यवागून्निवंपेत्। वायुर्वे पर्यसः प्रदापयिता। स एवास्मै पयः प्रदापयित। पयो वा ओषंधयः। पयः पर्यः। पर्यसैवास्मै पयोऽवं रुन्धे॥५॥ अथोत्तंरस्मै ह्विषं वृथ्सान्पाकुर्यात्। सैव ततः प्रायंश्चित्तः। अन्यत्रान् वा एष देवान्भांगधेयेन व्यर्धयति। ये यजमानस्य सायं गृहमा गच्छंन्ति। यस्यं सायं

अथेतंर ऐन्द्रः पुरोडार्शः स्यात्। इन्द्रिये एवास्मै समीची दधाति। पयो

दुग्ध हिवरार्तिमार्च्छति। इन्द्रांय व्रीहीन्निरुप्योपं वसेत्। पयो वा ओषंधयः। पयं

पुवारभ्यं गृहीत्वोपं वसति। यत्प्रातः स्यात्। तच्छृतं कुर्यात्॥६॥

वा ओषंधयः। पयः पयंः। पयंसैवास्मै पयोऽवं रुन्धे। अथोत्तंरस्मै हविषं

वथ्सान्पाकुंर्यात्। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। उभयान् वा एष देवान्भांगुधेयेन्

व्यर्धयति। ये यर्जमानस्य सायं चे प्रातश्चे गृहमा गच्छंन्ति। यस्योभयरे हिवरार्तिमार्च्छति॥७॥

ऐन्द्रं पश्चेशरावमोदनं निर्वपेत्। अग्निं देवतानां प्रथमं यंजेत्। अग्निमुंखा एव देवताः प्रीणाति। अग्निं वा अन्वन्या देवताः। इन्द्रमन्वन्याः। ता एवोभयीः प्रीणाति। पयो वा ओषंधयः। पयः पयः। पयंसैवास्मै पयोऽवं रुन्धे। अथोत्तंरस्मै हिविषं वथ्सान्पाकुंर्यात्॥८॥

सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। अर्धो वा एतस्यं यज्ञस्यं मीयते। यस्य व्रत्ये-ऽह्न्यत्यंनालम्भुका भवंति। तामंपुरुध्यं यजेत। सर्वेणैव यज्ञेनं यजते। तामिष्ट्वोपं ह्वयेत। अमूहमस्मि। सा त्वम्। द्यौर्हम्। पृथिवी त्वम्। सामाहम्। ऋक्तम्। तावेहि सम्भवाव। सह रेतों दधावहै। पुर्से पुत्राय वेत्तंवै। रायस्पोषांय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्यायेति। अर्ध पुवैनामुपं ह्वयते। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः॥९॥

दुधाति यज्ञ उत् एकन्धर्यन्ति रुन्धे कुर्यादार्च्छत्यपार्कुर्यात्पृथिवी त्वमृष्टौ चं (सर्वान् वि वै यदिं परस्तरामोर्षधीरन्यतरानुभर्यानर्धी

वै॥)॥•

यद्विष्यंण्णेन जुहुयात्। अप्रंजा अपृशुर्यजंमानः स्यात्। यदनांयतने निनयेंत्। अनायतुनः स्यौत्। प्राजापत्ययुर्चा वेल्मीकवृपायामवं नयेत्। प्राजापत्यो वै वल्मीर्कः। यज्ञः प्रजापतिः। प्रजापतावेव यज्ञं प्रतिष्ठापयति। भूरित्याह। भूतो वै प्रजापंतिः॥१०॥

भूतिंमेवोपैति। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्धा पुनंर्होत्व्यम्। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। यत्कीटावंपन्नेन जुहुयात्। अप्रंजा अपृशुर्यजंमानः स्यात्। यदनांयतने निनयेंत्। अनायतनः स्यात्। मध्यमेनं पर्णेनं द्यावापृथिव्यंयर्चाऽन्तंः परिधि निनंयेत्। द्यावांपृथिव्योरेवैनत्प्रतिंष्ठापयति॥११॥

तत्कृत्वा। अन्यां दुग्धा पुनंर्होत्व्यम्। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। यदवंवृष्टेन

जुहुयात्। अपंरूपमस्याऽऽत्मञ्जायेत। किलासो वास्यादंरशसो वाँ। यत्प्रत्येयात्। यज्ञं विच्छिन्द्यात्। स जुंहुयात्। मित्रो जनाँन्कल्पयति प्रजानन्॥१२॥

मित्रो दांधार पृथिवीमुत द्याम्। मित्रः कृष्टीरिनंमिषाऽभि चंष्टे। सत्यायं हव्यं

घृतवंज्ञहोतेति। मित्रेणैवैनंत्कल्पयित। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्ध्वा पुनंरहोत्व्यम्। सैव ततः प्रायंश्चित्तः। यत्पूर्वस्यामाहुत्या हुतायामृत्तराऽऽहुतिः स्कन्दैत्। द्विपाद्भिः प्राभिर्यजमानो व्यृध्येत। यदुत्तरयाऽभि जुंहुयात्॥१३॥ चतुंष्पाद्भिः प्राभिर्यजमानो व्यृध्येत। यत्र वेत्थं वनस्पते देवानां गृह्या नामांनि। तत्रं ह्व्यानि गाम्येति वानस्पत्यय्वां समिधंमाधायं। तूष्णीमेव पुनर्जुहुयात्। वनस्पतिनैव यज्ञस्यातां चानौतां चाऽऽहुंती वि दांधार। तत्कृत्वा। अन्यां दुग्ध्वा

पुनंर्होत्व्यम्। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः। यत्पुरा प्रयाजेभ्यः प्राङङ्गांरः स्कन्दैंत्। अध्वर्यवे च यजंमानाय चाक ई स्यात्॥१४॥ यद्देक्षिणा। ब्रह्मणे च यजंमानाय चाक ई स्यात्॥१४॥

च यजंमानाय चाक ई स्यात्। यदुदङ्कं। अग्नीधं च पृशुभ्यंश्च यजंमानाय चाक ई स्यात्। यदंभिजुहुयात्। रुद्रौस्य पृशून्यातुंकः स्यात्। यन्नाभिजुहुयात्। अशौन्तः प्रिह्रियेत॥१५॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

स्रुवस्य बुध्नेनाभिनिदंध्यात्। मा तंमो मा यज्ञस्तंमन्मा यजंमानस्तमत्। नमंस्ते अस्त्वायते। नमो रुद्र परायते। नमो यत्रं निषीदंसि। अमुं मा हिर्ंसीर्मुं मा हिर्ंसीरिति येन स्कन्देंत्। तं प्रहंरेत्। सहस्रंश्वङ्गो वृष्मो जातवंदाः। स्तोमंपृष्ठो घृतवान्थ्सुप्रतींकः। मा नो हासीन्मेत्थितो नेत्त्वा जहांम। गोपोषं नो वीरपोषं चं युच्छेतिं। ब्रह्मंणैवैनं प्र हंरति। सैव ततः प्रायंश्वित्तिः॥१६॥

वत्यूर्वस्यां यत्पुरा प्रयाजिभ्यः प्राङङ्गारो यद्धिणा यत्प्रत्ययदुदङ्गा॥———[२] वि वा एष इन्द्रियेणं वीर्येणर्ध्यते। यस्याहिताग्नेर्ग्निर्मथ्यमानो न जायते। यत्रान्यं पश्यौत्। ततं आहृत्यं होत्व्यम्॥ अग्नावेवास्याग्निहोत्र १ हुतं भवति। यद्यन्यन्न

वै प्रजापंतिः स्थापयति प्रजानन्नभि जुंहुयाथ्स्याँद्धियेत् जहांम् त्रीणिं च (यद्विष्यंण्णेन प्राजापुत्यया् यत्कीटा मध्यमेन् यदवंवृष्टेन्

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३) 509

विन्देत्। अजायार् होत्व्यम्। आग्नेयी वा एषा। यद्जा। अग्नावेवास्याँग्निहोत्रर हुतं भेवति॥१७॥

अजस्य तु नाश्नीयात्। यद्जस्याँश्नीयात्। यामेवाग्नावाहुंतिं जुहुयात्। तामंद्यात्। तस्मांद्जस्य नाश्यम्। यद्यजान्न विन्देत्। ब्राह्मणस्य दक्षिणे हस्ते होतव्यम्॥ एष वा अग्निवैश्वानुरः। यद्ग्राह्मणः। अग्नावेवास्यांग्निहोत्रः हुतं

ब्राह्मणं तु वंस्त्यैं नापं रुन्ध्यात्। यद्ग्राह्मणं वंस्त्या अंपरुन्ध्यात्। यस्मिन्नेवाग्नावाहंतिं जहयात। तं भागधेयेन व्यर्धयेत। तस्माद्वाह्मणो वंसत्यै

भंवति॥१८॥

यस्मिन्नेवाग्नावाहुंतिं जुहुयात्। तं भांगुधेयेन् व्यर्धयेत्। तस्माँद्वाह्मणो वंस्त्यै नापुरुध्यः। यदि ब्राह्मणं न विन्देत्। दुर्भस्तुम्बे होत्व्यम्। अग्निवान् वै देर्भस्तुम्बः। अग्नावेवास्यांग्निहोत्र हुतं भवति। दुर्भाङ्स्तु नाध्यांसीत॥१९॥

यद्दर्भान्ध्यासीत। यामेवाग्नावाहुंतिं जुहुयात्। तामध्यांसीत। तस्माँद्दर्भा नाध्यांसित्व्याः। यदिं दुर्भान्न विन्देत्। अपसु होत्व्यम्। आपो वै सर्वा देवताः। देवतास्वेवास्यामिहोत्र हुतं भेवति। आपुस्तु न परिचक्षीत। यदापः परिचक्षीत॥२०॥

यामेवाफ्स्वाहुंतिं जुहुयात्। तां परिंचक्षीत। तस्मादापो न पंरिचक्ष्याः। मेध्यां

च वा एतस्यांमध्या चे त्नुवौ स॰ सृंज्येते। यस्याहिंताग्नेर्न्येरिग्निर्म्नयंः स॰सृज्यन्तें। अग्नये विविचये पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निर्वपेत्। मध्यां चैवास्यांमध्यां चं त्नुवौ व्यावंतियति। अग्नयें वृतपंतये पुरोडाशंमुष्टाकंपालं निर्वपेत्। अग्निमेव वृतपंतिकुं स्वेनं भाग्धयेनोपं धावति। स एवैनं वृतमा लम्भयति॥२१॥ गर्भकुं स्रवंन्तमग्दमंकः। अग्निरिन्द्रस्त्वष्टा बृह्स्पतिः। पृथिव्यामवं चुश्चोतैतत्। नाभिप्राप्नोति निर्ऋतिं पराचैः। रेतो वा एतद्वाजिंनमाहिताग्नेः। यदंग्निहोत्रम्।

तद्यथ्स्रवैत्। रेतौंऽस्य वाजिनः स्रवेत्। गर्भः स्रवंन्तमग्दमंक्रित्यांहा रेते पुवास्मिन्वाजिनं दधाति॥२२॥ अग्निरित्यांह। अग्निर्वे रेतोधाः। रेतं पुव तद्दधाति। इन्द्र इत्यांह। इन्द्रियमेवास्मिन्दधाति। त्वष्टेत्यांह। त्वष्टा वै पंशूनां मिथुनाना र् रूपकृत्। रूपमेव पृशुषुं दधाति। बृह्स्पतिरित्यांह। ब्रह्म वै देवानां बृह्स्पतिः। ब्रह्मणैवास्मैं प्रजाः प्र जनयति। पृथिव्यामवं चुश्चोतैतदित्यांह। अस्यामेवैन्त्प्रतिष्ठापयति। नाभिप्राप्नोति निर्ऋतिं पराचैरित्यांह। रक्षसामपंहत्यै॥२३॥

अजाऽग्नावेवास्यांग्निहोत्र र हुतं भविति भवत्यासीत परिचक्षीत लम्भयित दधाित देवानां बृह्स्पितः पश्चं च (वि वै यद्यन्यम्जार्यां

ब्राह्मणस्यं दर्भस्तम्बेंऽफ्सु होत्वयम्॥)॥______[3]

याः पुरस्तांत्प्रस्रवंन्ति। उपरिष्टाध्सर्वतंश्च याः। ताभी रिष्टमपंवित्राभिः। श्रद्धां यज्ञमा रंभे। देवां गातुविदः। गातुं यज्ञायं विन्दत। मनंस्स्पतिना देवेनं। वातांद्यज्ञः प्र युंज्यताम्। तृतीयंस्यै दिवः। गायत्रिया सोम् आर्भृतः॥२४॥

सोमपीथाय सन्नियतुम्। वकंलमन्तिरमा देदे। आपी देवीः शुद्धाः स्थे। इमा पात्रोणि शुन्धत। उपातङ्क्ष्याय देवानौम्। पूर्णवल्कमुत शुन्धत। पयी गृहेषु पयी अघ्रियासुं। पयो वृथ्सेषु पय इन्द्रीय ह्विषै प्रियस्व। गायत्री पूर्णवल्केन। पयः सोमं करोत्विमम्॥२५॥

अग्निं गृह्णामि सुरथं यो मयोभूः। य उद्यन्तंमारोहंति सूर्यमहें। आदित्यं ज्योतिषां ज्योतिंरुत्तमम्। श्वो यज्ञायं रमतां देवतांभ्यः। वसूँत्रुद्रानांदित्यान्। इन्द्रेण सह देवतांः। ताः पूर्वः परि गृह्णामि। स्व आयतंने मनीषयां। इमामूर्जं पश्चद्शीं ये प्रविंष्टाः। तान्देवान्परि गृह्णामि पूर्वः॥२६॥

अग्निर्हं व्यवाडिह ताना वंहतु। पौर्णमास हिविरिदमेषां मिये। आमावास्य हिविरिदमेषां मिये। अन्तराऽग्नी पृशवंः। देवस स्मदमा गमन्। तान्पूर्वः पिरं गृह्णामि। स्व आयतंने मनीषयां। इह प्रजा विश्वरूपा रमन्ताम्। अग्निं गृहपंतिम्भि संवसानाः। ताः पूर्वः पिरं गृह्णामि॥२७॥

स्व आयतंने मनीषयाँ। इह पृशवों विश्वरूपा रमन्ताम्। अग्निं गृहपंतिम्भि संवसानाः। तान्पूर्वः परिं गृह्णामि। स्व आयतंने मनीषयाँ। अयं पितृणामृग्निः। अवाङ्कव्या पितृभ्य आ। तं पूर्वः परिं गृह्णामि। अविषन्नः पितुं करत्। अजस्रं सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

त्वा र संभापालाः॥ २८॥

विज्ञयभांगु सिमंन्धताम्। अग्ने दीदांय मे सभ्य। विजित्ये श्रदः श्तम्। अन्नमावस्थीयम्। अभि हंराणि श्ररदः श्तम्। आवस्थे श्रियं मन्नम्। अहिं बुंध्रियो नि यंच्छत्। इदमहम्भिज्येष्ठभ्यः। वस्भयो यज्ञं प्रब्रंवीमि। इदमहमिन्द्रंज्येष्ठभ्यः॥२९॥

रुद्रेभ्यों युज्ञं प्र ब्रंवीमि। इदमहं वर्रणज्येष्ठेभ्यः। आदित्येभ्यों युज्ञं प्र ब्रंवीमि। पर्यस्वतीरोषंधयः। पर्यस्वद्वीरुधां पर्यः। अपां पर्यसो यत्पर्यः। तेन मामिन्द्र सः सृज। अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि। तच्छंकेयं तन्मे राध्यताम्। वायौ व्रतपत् आदित्य व्रतपते॥३०॥

व्रतानां व्रतपते व्रतं चेरिष्यामि। तच्छेकेयं तन्मे राध्यताम्। इमां प्राचीमुदींचीम्। इष्मूर्जम्भि सङ्स्कृताम्। बहुपूर्णामशुष्काग्राम्। हरांमि पशुपामहम्। यत्कृष्णों रूपं कृत्वा। प्राविशस्तवं वनस्पतीन्। ततस्त्वामेकविश्शित्धा। सम्भेरामि

त्रीन्पंरिधी इस्तिम्नः समिर्धः। यज्ञायुरनुसश्चरान्। उपवेषं मेक्षंणं धृष्टिम्। सं

भंरामि सुसम्भृतां। या जाता ओषंधयः। देवेभ्यंस्त्रियुगं पुरा। तासां पर्व राध्यासम्।

सुसम्भृतां॥३१॥

परिस्तरमाहरन्। अपां मेध्यं यज्ञियम्। सदेव शिवमंस्तु मे॥३२॥ आच्छेता वो मा रिषम्। जीवांनि श्ररदं श्तम्। अपेरिमितानां परिमिताः। सन्नेह्ये सुकृताय कम्। एनो मा निगांङ्कत्मचनाहम्। पुनंश्त्थायं बहुला भंवन्तु। स्कृदाच्छिन्नं बर्हिरूणांमृद्। स्योनं पितृभ्यंस्त्वा भराम्यहम्। अस्मिन्थ्सीदन्तु मे पितरं सोम्याः। पितामहाः प्रपितामहाश्चानुगैः सह॥३३॥ त्रिवृत्पंलाशे दर्भः। इयांन्प्रादेशसंम्मितः। यज्ञे पिवत्रं पोतृतमम्। पयों हव्यं

अयं प्राणश्चांपानश्चं। यजंमानुमिपं गच्छताम्। युज्ञे ह्यभूतां पोतांरौ। पवित्रें

करोतु मे। इमौ प्रांणापानौ। यज्ञस्याङ्गांनि सर्वशः। आप्याययंन्तौ सश्चरताम्।

प्वित्रें हव्यशोधंने। प्वित्रें स्थो वैष्ण्वी। वायुर्वां मनंसा पुनातु॥३४॥

हव्यशोधने। त्वया वेदिं विविदः पृथिवीम्। त्वयां यज्ञो जांयते विश्वदानिः। अच्छिदं यज्ञमन्वेषि विद्वान्। त्वया होता सन्तंनोत्यर्धमासान्। त्रयस्त्रिष्शोऽसि तन्तूनाम्। प्वित्रेण सहागंहि॥३५॥

शिवय रज्जुंरिमधानीं। अघ्नियामुपं सेवताम्। अप्रस्न स्साय यज्ञस्यं। उखे उपंदधाम्यहम्। पृशुिमः सन्नीतं बिभृताम्। इन्द्रांय शृतं दिधं। उपवेषोऽसि यज्ञायं। त्वां पंरिवेषमधारयन्। इन्द्रांय हिवः कृण्वन्तः। शिवः शग्मो भवासि नः॥३६॥

अमृन्मयन्देवपात्रम्। यज्ञस्याऽऽयुंषि प्र युंज्यताम्। तिरः प्वित्रमितंनीताः। आपो धारय मातिंगुः। देवेनं सिवत्रोत्पूताः। वसोः सूर्यस्य रिश्मिभिः। गान्दोहपिवत्रे रज्जम्। सर्वा पात्राणि शुन्धत। एता आ चरन्ति मधुंमद्दहानाः। प्रजावंतीर्यशसो विश्वरूपाः॥३७॥

बह्बीर्भवंन्तीरुप्जायंमानाः। इह व इन्द्रो रमयतु गावः। पूषा स्थं। अयक्ष्मा वंः प्रजया स॰ सृंजामि। रायस्पोषेण बहुलाभवंन्तीः। ऊर्जं पयः पिन्वंमाना घृतं चं। जीवो जीवंन्तीरुपंवः सदेयम्। द्यौश्चेमं युज्ञं पृथिवी च सन्दुंहाताम्। धाता सोमेन सह वार्तेन वायुः। यजमानाय द्रविणं दधातु॥३८॥

उथ्सं दुहन्ति कुलश्ं चतुंर्बिलम्। इडां देवीं मधुंमती र सुवर्विदम्ं। तिदेन्द्राग्नी जिन्वत र सूनृतांवत्। तद्यजमानममृत्त्वे देधातु। कामधुक्षः प्र णौं ब्रूहि। इन्द्रांय हिविरिन्द्रियम्। अमूं यस्यां देवानाम्। मनुष्यांणां पयो हितम्। बहु दुग्धीन्द्रांय देवेभ्यः। ह्व्यमा प्यांयतां पुनः॥३९॥

वृथ्सेभ्यों मनुष्येभ्यः। पुनर्दोहायं कल्पताम्। यज्ञस्य सन्तंतिरसि। यज्ञस्यं त्वा सन्तंतिमनु सन्तंनोमि। अदंस्तमसि विष्णंवे त्वा। यज्ञायापि दधाम्यहम्। अद्भिरिक्तेन पात्रेण। याः पूताः परिशेरते। अयं पयः सोमं कृत्वा। स्वां योनिमपि गच्छतु॥४०॥

पूर्णवुल्कः पुवित्रम्। सौम्यः सोमाद्धि निर्मितः। इमौ पूर्णं चं दुर्भं चं। देवाना र हव्यशोधनौ। प्रातुर्वेषायं गोपाय। विष्णों हुव्य र हि रक्षंसि। उभावग्नी उपस्तृणते। देवता उपवसन्तु मे। अहं ग्राम्यानुपं वसामि। मह्यं गोपंतये पुशून्॥४१॥

आर्भृत इमं गृह्णामि पूर्वस्ताः पूर्वः परिंगृह्णामि सभापाला इन्द्रंज्येष्ठेभ्य आदिंत्य व्रतपते सुसम्भृतां मे सह पुंनातु गहि नो

विश्वरूपा दथातु पुनर्गच्छत् पुशून् (याः पुरस्तांदिमामूर्जमिह प्रजा इह पुशवोऽयं पितृणामुग्निः।)॥———[४] देवां देवेषु पराकमध्यम्। प्रथमा द्वितीयेषु। द्वितीयास्तृतीयेषु। त्रिरेकादशा इह

मां उवता द्वयु पराक्रमध्यम्। प्रथमा द्वितायपु । द्वितायपु । त्रिरकादशा इह मां उवता इद॰ शंकेयं यदिदं क्रोमिं। आत्मा करोत्वात्मनें। इदं किरिष्ये भेषजम्। इदं में विश्वभेषजा। अश्विना प्रावंतं युवम्। इदम्ह॰ सेनांया अभीत्वंर्ये॥४२॥

मुख्मपोहामि। सूर्यं ज्योतिर्वि भाहि। मह्त इंन्द्रियायं। आ प्यायतां घृतयोनिः। अग्निरह्व्याऽनुं मन्यताम्। खर्मङ्क्ष त्वचंमङ्क्षा सुरूपं त्वां वसुविदम्। पृशूनां तेजसा। अग्नये जुष्टंमिभ घारयामि। स्योनं ते सदेनं करोमि॥४३॥

घृतस्य धारंया सुशेवं कल्पयामि। तस्मिंन्थ्सीदामृते प्रतिं तिष्ठ। ब्रीहीणां मेध सुमन्स्यमानः। आर्द्रः प्रथस्रुर्भुवंनस्य गोपाः। शृत उथ्स्नांति जनिता मेतीनाम्। यस्तं आत्मा पृशुषु प्रविष्टः। देवानां विष्ठामनु यो वितस्थे। आत्मन्वान्थ्सोम घृतवान् हि भूत्वा। देवान्गंच्छ् सुवंर्विन्द् यजंमानाय मह्यम्ं। इरा भूतिः पृथिव्यै रसो मोत्क्रंमीत्॥४४॥

देवाः पितरः पितरो देवाः। योऽहमंस्मि स सन् यंजे। यस्यांस्मि न तम्न्तरेंमि। स्वं मं इष्टइ स्वं दत्तम्। स्वं पूर्तइ स्वइ श्रान्तम्। स्वर हुतम्। तस्यं मेऽग्निरुपद्रष्टा। वायुरुपश्रोता। आदित्योऽनुख्याता। द्यौः पिता॥४५॥

पृथिवी माता। प्रजापंतिर्बन्धुः। य एवास्मि स सन् यंजे। मा भेर्मा संविक्था मा त्वा हिश्सिषम्। मा ते तेजोऽपं क्रमीत्। भुरतमुद्धेरेमनुंषिश्च। अवदानांनि ते प्रत्यवदास्यामि। नमंस्ते अस्तु मा मां हिश्सीः। यदंवदानांनि तेऽवद्यन्। विलोमाकांर्षमात्मनंः॥४६॥

आज्येन् प्रत्यंनज्म्येनत्। तत्त् आ प्यांयतां पुनेः। अज्यांयो यवमात्रात्। आव्याधात्कृत्यतामिदम्। मा रूरुपाम यज्ञस्यं। शुद्धः स्विष्टमिदः हुविः। मनुना दृष्टां घृतपंदीम्। मित्रावर्रुणसमीरिताम्। दक्षिणार्धादसंम्भिन्दन्। अवंद्याम्येकतोमुंखाम्॥४७॥

ब्राह्मणानांमिद १ हविः॥५०॥

इडें भागं ज्रंषस्व नः। जिन्व गा जिन्वार्वतः। तस्याँस्ते भिक्षवाणः स्याम। सर्वात्मानः सर्वगंणाः। ब्रध्न पिन्वंस्व। ददंतो मे मा क्षायि। कुर्वतो मे मोपंदसत्। दिशां क्रुप्तिरिस। दिशों मे कल्पन्ताम्। कल्पन्तां मे दिशः॥४८॥

दैवींश्च मानुषिश्च। अहोरात्रे में कल्पेताम्। अर्धमासा में कल्पन्ताम्। मासां मे

कल्पन्ताम्। ऋतवों मे कल्पन्ताम्। संवृथ्यरो में कल्पताम्। क्रृप्तिरिस् कल्पतां मे। आशानां त्वाऽऽशापालेभ्यः। चतुभ्यों अमृतैभ्यः। इदं भूतस्याध्यक्षेभ्यः॥४९॥ विधेमं ह्विषां व्यम्। भर्जतां भागी भागम्। मा भागोऽभंक्त। निर्रभागं भंजामः। अपस्पिन्व। ओषंधीर्जिन्व। द्विपात्पाहि। चतुष्पादव। दिवो वृष्टिमेर्रय।

सोम्याना रे सोमपीथिनांम्। निर्भक्तो ब्रांह्मणः। नेहा ब्रांह्मणस्यास्ति। समंङ्कां बुर्हिर्ह्विषां घृतेनं। समांदित्यैर्वसुंभिः सम्मुरुद्धिः। समिन्द्रेण् विश्वेभिर्देविभिरङ्काम्।

दिव्यं नभों गच्छतु यथ्स्वाहाँ। इन्द्राणीवांविधवा भूयासम्। अदितिरिव सुपुत्रा। अस्थूरि त्वां गार्हपत्य॥५१॥

उपनिषंदे सुप्रजास्त्वायं। सं पत्नी पत्यां सुकृतेनं गच्छताम्। यज्ञस्यं युक्तौ

ध्र्यांवभूताम्। सञ्जानानौ विजंहतामरांतीः। दिवि ज्योतिर्जर्मा रंभेताम्। दशंते तन्वो यज्ञ यृज्ञियाः। ताः प्रीणातु यजंमानो घृतेनं। नारिष्ठयाः प्रशिषमीडंमानः। देवानां दैव्येऽपि यजंमानोऽमृतोऽभूत्। यं वां देवा अंकल्पयन्॥५२॥ ऊर्जो भागः शंतऋत्। एतद्वां तेनं प्रीणानि। तेनं तृप्यतमः हहौ। अहं देवानाः सुकृतांमस्मि लोके। ममेदिम्षष्टं न मिथुंर्भवाति। अहं नारिष्ठावनं यजािम विद्वान्।

मृडता नः। मा नों विदद्भिभामो अशंस्तिः॥५३॥
मा नों विदद्धुजना द्वेष्या या। ऋष्भं वाजिनं वयम्। पूर्णमांसं यजामहे। स नों दोहता स्वीर्यम्। रायस्पोष सहस्रिणम्। प्राणायं सुराधंसे। पूर्णमांसाय

यदाभ्यामिन्द्रो अदंधाद्भागधेयम्। अदारसृद्भवत देवसोम। अस्मिन् यज्ञे मंरुतो

स्वाहाँ। अमावास्यां सुभगां सुशेवाँ। धेनुरिंव भूयं आप्यायंमाना। सा नों दोहता स् सुवीर्यम्ँ। रायस्पोष सहस्रिणम्ँ। अपानायं सुराधंसे। अमावास्यांयै स्वाहाँ। अभि स्तृंणीहि परिं धेहि वेदिम्ँ। जामिं मा हि सीरमुया शयाना। होतृषदंना

हरिताः सुवर्णाः। निष्का इमे यर्जमानस्य ब्रुध्ने॥५४॥

स्म चं॥————[५]
परिंस्तृणीत् परिंधत्ताग्निम्। परिंहितोऽग्निर्यजंमानं भुनक्तु। अपा॰ रस्
ओषंधीना॰ सुवर्णः। निष्का इमे यजंमानस्य सन्तु कामृदुर्घाः। अमुत्रामुष्मिं ह्रोके।

अभीत्वंर्ये करोमि क्रमीत्पिताऽऽत्मनं एकतो मुंखां मे दिशोऽध्येक्षेभ्यो हविर्गार्हपत्या कल्पयन्नशंस्तिः सा नों दोहता सुवीर्यर्थ

आषधानार सुवणः । नृष्का इम यजमानस्य सन्तु कामृदुधाः। अमुत्रामाण्यक्षाका भूपंते भुवंनपते। मृह्तो भूतस्यं पते। ब्रह्माणं त्वा वृणीमहे। अहं भूपंतिर्हं भुवंनपतिः। अहं महतो भूतस्य पतिः॥५५॥ देवेनं सवित्रा प्रसंत आर्त्विज्यं करिष्यामि। देवं सवितरेतं त्वां वणते।

देवेनं सिवतो प्रसूत् आर्त्विंज्यं किरष्यामि। देवं सिवतरेतं त्वां वृणते। बृह्स्पितुं दैव्यं ब्रह्माणम्ं। तद्हं मनसे प्र ब्रंवीमि। मनों गायित्रियै। गायुत्री त्रिष्टुभैं। त्रिष्टुज्जगंत्यै। जगंत्यनुष्टुभैं। अनुष्टुक्पुङ्कौ। पुङ्किः प्रजापंतये॥५६॥

प्रजापितिर्विश्वेभ्यो देवेभ्यः। विश्वे देवा बृहस्पतये। बृहस्पतिर्ब्रह्मणे। ब्रह्म भूर्भुवः

सुवंः। बृहस्पतिंर्देवानां ब्रह्मा। अहं मनुष्याणाम्। बृहंस्पते यज्ञं गोपाय। इदं तस्मै

हुम्यं केरोमि। यो वो देवाश्चरंति ब्रह्मचर्यम्। मेधावी दिक्षु मनंसा तप्स्वी॥५७॥ अन्तर्दूतश्चरित मानुंषीषु। चतुंः शिखण्डा युवृतिः सुपेशाः। घृतप्रंतीका भुवंनस्य मध्ये। मुर्मृज्यमाना महृते सौभंगाय। मह्यं धुक्ष्व यजमानाय कामान्। भूमिर्भूत्वा महिमानं पुपोष। ततो देवी वंधयते पया स्ति। यज्ञियां यज्ञं वि च यन्ति शं चं।

ओषधीरापं इह शक्करीश्च। यो मां हृदा मनसा यश्च वाचा॥५८॥

यो ब्रह्मणा कर्मणा द्वेष्टिं देवाः। यः श्रुतेन् हृदयेनेष्णता चं। तस्यैन्द्र वर्ज्रेण् शिरंश्छिनद्मि। ऊर्णामृदु प्रथमानः स्योनम्। देवेभ्यो जुष्टः सदेनाय ब्र्हिः। सुवर्गे लोके यर्जमानः हि धेहि। मां नाकंस्य पृष्ठे पर्मे व्योमन्। चतुः शिखण्डा युवितः सुपेशाः। घृतप्रतीका वयुनानि वस्ते। साऽऽस्तीर्यमाणा मह्ते सौभंगाय॥५९॥

सा में धृक्ष्व यर्जमानाय कामान्। शिवा चं मे शृग्मा चैंधि। स्योना चं मे सुषदां चैधि। ऊर्जस्वती च मे पर्यस्वती चैधि। इष्मूर्जं मे पिन्वस्व। ब्रह्म तेजों मे पिन्वस्व। क्षुत्रमोजों मे पिन्वस्व। विश् पृष्टिं मे पिन्वस्व। आयुंरुन्नाद्यंम्मे पिन्वस्व। प्रजां पश्नमें पिन्वस्व॥६०॥

अस्मिन् यज्ञ उप भूय इन्नु मैं। अविक्षोभाय परिधीं दंधामि। धूर्ता धुरुणो धरीयान्। अग्निर्द्वेषार्रसे निरितो नुंदाते। विच्छिनिद्ये विधृतीभ्यार सपत्नान्। जातान्त्रातृंच्यान् ये चं जिन्ष्यमाणाः। विशो यन्नाभ्यां विधमाम्येनान्। अहर् स्वानांमुत्तमोऽसानि देवाः। विशो यन्ने नुदमांने अरांतिम्। विश्वं पाप्मान्ममंतिं दुर्मरायुम्॥६१॥

सीर्दन्ती देवी सुंकृतस्यं लोके। धृतीं स्थो विधृती स्वधृंती। प्राणान्मयिं धारयतम्। प्रजां मयि धारयतम्। पुशून्मयिं धारयतम्। अयं प्रस्तर उभयस्य धृती। धृती प्रयाजानांमुतानूयाजानांम्। स दांधार सुमिधों विश्वरूपाः। तस्मिन्थ्सुचो अध्या सांदयामि। आ रोह पृथो जुंहु देवयानान्॥६२॥

यत्रर्षयः प्रथम्जा ये पुराणाः। हिरंण्यपक्षाऽजिरा सम्भृंताङ्गा। वहांसि मा सुकृतां यत्रं लोकाः। अवाहं बांध उपभृतां सपत्नान्। जातान्त्रातृंव्यान् ये चं जिन्छ्यमाणाः। दोहें यज्ञ स् सुदुर्घामिव धेनुम्। अहम्त्तंरो भूयासम्। अधेरे मध्सपत्नाः। यो मां वाचा मनसा दुर्मरायुः। हृदाऽरांतीयादंभिदासंदग्ने॥६३॥

इदमस्य चित्तमधेरं ध्रुवायाः। अहमृत्तरो भूयासम्। अधेरे मथ्सपत्नाः। ऋषभोऽसि शाक्करः। घृताचीना स्पूनः। प्रियेण नाम्नां प्रिये सदेसि सीद। स्योनो में सीद सुषदः पृथिव्याम्। प्रथीय प्रजयां पृश्भिः सुवर्गे लोके। दिवि सीद पृथिव्याम्नतिरक्षे। अहमृत्तरो भूयासम्॥६४॥ अधेरे मथ्सपत्नाः। इयः स्थाली घतस्यं पर्णा। अव्हिष्त्रपयाः शतधार उथ्मः।

अधेरे मथ्सपत्नाः। इयः स्थाली घृतस्यं पूर्णा। अच्छिन्नपयाः शृतधार् उथ्सः। मारुतेन शर्मणा दैव्येन। यज्ञोऽसि सर्वतः श्रितः। सर्वतो मां भूतं भविष्यच्छ्रयताम्। शृतं में सन्त्वाशिषः। सहस्रममे सन्तु सूनृताः। इरावतीः पशुमतीः। प्रजापंतिरसि सर्वतः श्रितः॥६५॥

स्वतो मां भूतं भविष्यच्छ्रंयताम्। शृतं में सन्त्वाशिषः। सहस्रं मे सन्तु सूनृताः। इरावतीः पशुमतीः। इदिमेन्द्रियममृतं वीर्यम्। अनेनेन्द्रांय पशवोऽचिकिथ्सन्। तेनं

देवा अवतोप माम्। इहेषुमूर्जं यशुः सह ओर्जः सनेयम्। शृतं मियं श्रयताम्।

यत्पृंथिवीमचंर्त्तत्प्रविष्टम्॥६६॥ येनासिश्चद्वलमिन्द्रैं प्रजापंतिः। इदं तच्छुकं मधुं वाजिनीवत्। येनोपरिष्टादधिनोन्म

दिध मां धिनोतु। अयं वेदः पृथिवीमन्वविन्दत्। गुहां स्तीङ्गहेने गह्वरेषु। स

विन्दतु यर्जमानाय लोकम्। अच्छिद्रं युज्ञं भूरिकर्मा करोतु। अयं युज्ञः

समंसद्ध्विष्मान्। ऋचा साम्ना यजुंषा देवतांभिः॥६७॥ तेनं लोकान्थ्सूर्यंवतो जयेम। इन्द्रंस्य सख्यमंमृतत्वमंश्याम्। यो नः कनीय इह

कामयांतै। अस्मिन् युज्ञे यजमानाय महाम्। अप तिमिन्द्राग्नी भुवनान्नुदेताम्। अहं प्रजां वीरवंतीं विदेय। अग्ने वाजजित्। वाजं त्वा सिरष्यन्तम्। वाजं जेष्यन्तम्। वाजिनं वाजजितम्॥६८॥

सप्तमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

वाज्जित्यायै सं माँजिर्म। अग्निमंन्नादमन्नाद्यांय। उपंहूतो द्यौः पिता। उप मान्द्यौः पिता ह्वंयताम्। अग्निराग्नींध्रात्। आयुंषे वर्चसे। जीवात्वै पुण्यांय। उपंहूता पृथिवी माता। उप मां माता पृथिवी ह्वंयताम्। अग्निराग्नींध्रात्॥६९॥

आयुंषे वर्चसे। जीवात्वे पुण्यांय। मनो ज्योतिंर्जुषतामाज्यम्। विच्छिन्नं युज्ञश् सिम्मिमं देधातु। बृह्स्पितिंस्तनुतािम्ममं नः। विश्वे देवा इह मादयन्ताम्। यन्ते अग्न आवृश्वािमे। अहं वा क्षिपितश्चरन्। प्रजां च तस्य मूलं च। नीचैर्देवा नि वृश्चत॥७०॥

अग्ने यो नोंऽभिदासंति। समानो यश्च निष्ट्यः। इध्मस्येव प्रक्षायंतः। मा तस्योच्छेषि किश्चन। यो मां द्वेष्टिं जातवेदः। यं चाऽऽहं द्वेष्मि यश्च माम्। सर्वाङ्स्तानंग्ने सन्दंह। याङ्श्चाहं द्वेष्मि ये च माम्। अग्ने वाजजित्। वाजं त्वा सस्वा॰सम्॥७१॥ वार्जं जिगिवा सम्मं। वाजिनं वाजितम्। वाजितित्यायै सम्मंजिर्म। अग्निमंत्रादम्त्राद्यांय। वेदिर्बुर्हिः शृत हिवः। इध्मः परिधयः सुर्चः। आज्यं यज्ञ ऋचो यजुंः। याज्याश्च वषद्वाराः। सम्मे सन्नंतयो नमन्ताम्। इध्मस्नहंने हुते॥७२॥

दिवः खीलोऽवंततः। पृथिव्या अध्युत्थितः। तेनां सहस्रंकाण्डेन। द्विषन्तर्रं शोचयामिस। द्विषन्मं बहु शोचतु। ओषंधे मो अहर श्रुंचम्। यज्ञ नमंस्ते यज्ञ। नमो नमश्च ते यज्ञ। शिवेनं मे सन्तिष्ठस्व। स्योनेनं मे सन्तिष्ठस्व॥७३॥

सुभूतेनं मे सन्तिष्ठस्व। ब्रह्मवर्चसेनं मे सन्तिष्ठस्व। यज्ञस्यर्ध्धिमनु सन्तिष्ठस्व। उपं ते यज्ञ नमः। उपं ते नमः। उपं ते नमः। त्रिष्फलीक्रियमाणानाम्। यो न्यङ्गो अवशिष्यते। रक्षंसां भाग्धेयम्। आपस्तत्प्र वहतादितः॥७४॥

उलूखंले मुसंले यच् शूर्पें। आशिश्लेषं दृषिद यत्कपालैं। अवप्रुषों विप्रुषः संयंजामि। विश्वें देवा ह्विरिदं जुंषन्ताम्। यज्ञे या विप्रुषः सन्तिं बह्धाः। अग्नौ

ताः सर्वाः स्विष्टाः सुहुंता जुहोमि। उद्यन्नद्यमित्र महः। स्पर्नांन्मे अनीनशः। दिवैनान् विद्युतां जिह। निम्रोचन्नधंरान्कृधि॥७५॥

उद्यन्नद्य वि नों भज। पिता पुत्रेभ्यो यथाँ। दीर्घायुत्वस्यं हेशिषे। तस्यं नो देहि सूर्य। उद्यन्नद्य मिंत्रमहः। आरोह्नुत्तंरां दिवम्ँ। हृद्रोगं ममं सूर्य। हृरिमाणं च नाशय। शुकेषु मे हरिमाणम्ँ। रोपणाकांसु दध्मसि॥७६॥

अथों हारिद्रवेषुं मे। हृरिमाणं नि दंध्मिस। उदंगाद्यमांदित्यः। विश्वेन सहंसा सह। द्विषन्तं ममं रन्धयन्। मो अहं द्विषतो रंधम्। यो नः शपादशंपतः। यश्चे नः शपंतः शपात। उषाश्च तस्मै निमुक्ने। सर्वं पाप॰ समूहताम्॥७७॥

यो नंः सपत्नो यो रणंः। मर्तोऽभिदासंति देवाः। इध्मस्येव प्रक्षायंतः। मा तस्योच्छेषि किश्चन। अवसृष्टुः परापत। शुरो ब्रह्मंस॰शितः। गच्छाऽमित्रान्प्र विंश। मैषां कश्चनोच्छिंषः॥७८॥

पतिंः प्रजापंतये तपुस्वी वाचा सौभंगाय पुशून्में पिन्वस्व दुर्मरायुं देवयानांनग्रेऽन्तरिंक्षेऽहमुत्तरो भूयासं प्रजापंतिरसि सुर्वतः

श्रितः प्रविष्टं देवतांभिर्वाज्जितं पृथिवी ह्वंयतामुग्निराग्नींप्राद्वश्चत ससृवारसरं हुते स्योनेनं मे सन्तिष्ठस्वेतः कृषि दध्मस्यूहतामृष्टौ

चं॥———[६]

सक्षेदं पंश्य। विधंतीरदं पंश्य। नाकेदं पंश्य। रमतिः पनिष्ठा। ऋतं वर्षिष्ठम्।

अमृतायान्याहुः। सूर्यो वरिष्ठो अक्षमिर्विभाति। अनु द्यावापृथिवी देवपुत्रे। दीक्षाऽसि तपंसो योनिः। तपोऽसि ब्रह्मणो योनिः॥७९॥ ब्रह्मांसि क्षत्रस्य योनिः। क्षत्रमंस्यृतस्य योनिः। ऋतमंसि भूरा रंभे। श्रद्धां

मनसा। दीक्षान्तपंसा। विश्वंस्य भुवंनस्याधिपत्नीम्। सर्वे कामा यजंमानस्य सन्तु। वातं प्राणं मनसाऽन्वा रंभामहे। प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नो मृत्योस्रायतां पात्वश्हंसः॥८०॥

ज्योग्जीवा ज्रामंशीमित। इन्द्रं शाकर गायत्रीं प्र पंद्ये। तान्ते युनज्मि। इन्द्रं शाकर त्रिष्टुम्ं प्र पंद्ये। तान्ते युनज्मि। इन्द्रं शाकर् जर्गतीं प्र पंद्ये। तान्ते युनज्मि। इन्द्रं शाकरानुष्टुम्ं प्र पंद्ये। तान्ते युनज्मि। इन्द्रं शाकर पृङ्किः प्रपंद्ये॥८१॥ ऋत सत्यें ऽधायि। सत्यमृतें ऽधायि। ऋतं चं मे सत्यश्चां भूताम्। ज्योतिंरभूव ।

तान्तें युनज्मि। आऽहन्दीक्षामंरुहमृतस्य पत्नीम्ं। गायत्रेण छन्दंसा ब्रह्मंणा च।

सुवंरगमम्। सुवर्गं लोकं नाकंस्य पृष्ठम्। ब्रध्नस्यं विष्टपंमगमम्। पृथिवी दीक्षा॥८२॥
तयाऽग्निर्दीक्षयां दीक्षितः। ययाऽग्निर्दीक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। अन्तिरिक्षन्दीक्षा। तयां वायुर्दीक्षयां दीक्षितः। ययां वायुर्दीक्षयां दीक्षितः। ययां वायुर्दीक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। द्यौर्दीक्षा। तयांऽऽदित्यो दीक्षयां दीक्षितः। ययांऽऽदित्यो दीक्षयां दीक्षितः॥८३॥

तयाँ त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। दिशों दीक्षा। तयां चन्द्रमां दीक्षयां दीक्षितः। ययां चन्द्रमां दीक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। आपों दीक्षा। तया वरुणो राजां दीक्षयां दीक्षितः। यया वरुणो राजां दीक्षयां दीक्षितः। तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। ओषंधयो दीक्षा॥८४॥ तया सोमो राजां दीक्षयां दीक्षितः। यया सोमो राजां दीक्षयां दीक्षितः।

तयाँ त्वा दीक्षयां दीक्षयामि। वाग्दीक्षा। तयाँ प्राणो दीक्षयां दीक्षितः। ययाँ प्राणो दीक्षयां दीक्षितः। तयाँ त्वा दीक्षयां दीक्षयां दीक्षयामि। पृथिवी त्वा दीक्षंमाणमन् दीक्षताम्। अन्तरिक्षं त्वा दीक्षंमाणमन् दीक्षताम्। दोक्षताम्। दोक्षताम्। दोक्षताम्॥८५॥

ओषंधयस्त्वा दीक्षंमाण्मनं दीक्षन्ताम्। वाक्ता दीक्षंमाण्मनं दीक्षताम्। ऋचंस्त्वा दीक्षंमाण्मनं दीक्षन्ताम्। सामांनि त्वा दीक्षंमाण्मनं दीक्षन्ताम्। यजूरंषि त्वा दीक्षंमाण्मनं दीक्षन्ताम्। अहंश्च रात्रिश्च। कृषिश्च वृष्टिश्च। त्विषिश्चापंचितिश्च॥८६॥

दिशंस्त्वा दीक्षंमाणमनुं दीक्षन्ताम्। आपंस्त्वा दीक्षंमाणमनुं दीक्षन्ताम्।

अपृश्लौषंधयश्च। ऊर्क्व सूनृतां च। तास्त्वा दीक्षंमाणमन् दीक्षन्ताम्। स्वे दक्षे दक्षंपितेह सींद। देवाना ए सुम्नो महते रणांय। स्वासस्थस्तनुवा संविशस्व। पितेवैधि सूनव आ सुशेवंः। शिवो मां शिवमा विश। सृत्यम्मं आत्मा। श्रृद्धा मेऽिक्षंतिः॥८७॥

तपों मे प्रतिष्ठा। सुवितृप्रंसूता मा दिशों दीक्षयन्तु। सुत्यमंस्मि। अहं त्वदंस्मि

मदंसि त्वमेतत्। ममांसि योनिस्तव योनिरस्मि। ममैव सन्वहं ह्व्यान्यंग्ने। पुत्रः पित्रे लोकुकुज्ञांतवेदः। आजुह्वांनः सुप्रतींकः पुरस्तांत्। अग्ने स्वां योनिमा सींद साध्या। अस्मिन्थ्स्थस्थे अध्युत्तंरस्मिन्॥८८॥

विश्वं देवा यजंमानश्च सीदत। एकंमिषे विष्णुस्त्वाऽन्वंतु। द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा-

पृशुभ्यो विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। षड्रायस्पोषांय विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। सप्त सप्तभ्यो होत्राभ्यो विष्णुस्त्वाऽन्वेतु। सर्खायः सप्तपंदा अभूम। सख्यन्ते गमेयम्॥८९॥ सख्यात्ते मा योषम्। सख्यान्मे मा योषाः। साऽसि सुब्रह्मण्ये। तस्यास्ते पृथिवी

उन्वंतु। त्रीणिं व्रताय विष्णुस्त्वाऽन्वंतु। चत्वारि मायोभवाय विष्णुस्त्वाऽन्वंतु। पश्चं

पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्याँस्तेऽन्तिरिक्षं पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्याँस्ते द्यौः पादंः। साऽसिं सुब्रह्मण्ये। तस्याँस्ते दिशः पादंः॥९०॥

पुरोरंजास्ते पश्चमः पादंः। सा न् इष्मूर्जन्धुक्ष्व। तेजं इन्द्रियम्। ब्रह्मवर्चसमुन्नाद्यम्। वि मिमे त्वा पर्यस्वतीम्। देवानां धेनु र सुदुघामनंपस्फुरन्तीम्। इन्द्रः सोमं पिबतु। क्षेमों अस्तु नः। इमान्नराः कृणुत् वेद्मित्यं। वसुंमती र रुद्रवंतीमादित्यवंतीम्॥९१॥

वर्ष्मन्दिवः। नाभां पृथिव्याः। यथाऽयं यजंमानो न रिष्येंत्। देवस्यं सिवतुः सवे। चतुः शिखण्डा युवतिः सुपेशाः। घृतप्रंतीका भुवंनस्य मध्यें। तस्या रं सुपणांविध यो निविष्टो। तयोदिवानामिधं भाग्धेयम्। अप जन्यं भ्यं नुंद। अपं चक्राणि वर्तय। गृह र सोमंस्य गच्छतम्। न वा उ वेतन्प्रियसे न रिष्यसि। देवा र इदेषि पृथिभिः सुगेभिः। यत्र यन्ति सुकृतो नापि दुष्कृतः। तत्र त्वा देवः संविता दंधातु॥९२॥ ब्रह्मणो योन्रिर हंसः पृक्किं प्रपंदे दीक्षा ययंऽऽदित्यो दीक्षयां दीक्षितस्तयां त्वा दीक्षयां दीक्षयाम्योपंधयो दीक्षा द्योरत्वा दीक्षमण्मन् दीक्षत्मन्योपंधयो दिशः पादं आदित्यवंतीं वर्तव् पर्यं च॥————[७]

यदस्य पारे रजंसः। शुक्रं ज्योतिरजायत। तन्नः पर्षदिति द्विषः। अग्ने वैश्वानर् स्वाहाँ। यस्माँद्भीषाऽवांशिष्ठाः। ततो नो अभयं कृधि। प्रजाभ्यः सर्वांभ्यो मृड। नमो रुद्रायं मीदुषें। यस्माँद्भीषा न्यषंदः। ततो नो अभयं कृधि॥९३॥ प्रजाभ्यः सर्वाभ्यो मृह। नमो रुद्रायं मीढुषें। उद्ग्रंस्न तिष्ठ प्रति तिष्ठ मारिषः। मेमं युज्ञं यर्जमानं च रीरिषः। सुवर्गे लोके यर्जमानु हि धेहि। शन्नं एधि द्विपदे शं चतुंष्पदे। यस्मौद्भीषाऽवेंपिष्ठाः पुलायिष्ठाः सुमज्ञौस्थाः। ततो नो अभयं कृधि। प्रजाभ्यः सर्वाभ्यो मृह। नमो रुद्रायं मीढुषे॥९४॥

अनागसंस्त्वा वयम्। इन्द्रेण प्रेषिता उपं। वायुष्टे अस्त्व श्याभूः। मित्रस्ते अस्त्व श्याभूः। वर्रुणस्ते अस्त्व श्याभूः। अपाँक्षया ऋतंस्य गर्भाः। भुवंनस्य गोपाः श्येनां अतिथयः। पर्वतानाङ्ककुभः प्रयुतों नपातारः। वृग्नुनेन्द्रईं ह्वयत। घोषेणामीवाङ्श्चातयत॥९६॥

युक्ताः स्थ वहंत। देवा ग्रावांण् इन्दुरिन्द्र इत्यंवादिषुः। एन्द्रंमचुच्यवुः पर्मस्याः परावतः। आऽस्माथ्स्थस्थांत्। ओरोर्न्तरिक्षात्। आ सुंभूतमंसुषवुः। ब्रह्मवर्चसं म् आसुंषवुः। समरे रक्षाः स्यविषयुः। अपहतं ब्रह्मज्यस्यं। वाक्रं त्वा मनेश्च श्रीणीताम्॥९७॥

प्राणश्चं त्वाऽपानश्चं श्रीणीताम्। चक्षुंश्च त्वा श्रोत्रं च श्रीणीताम्। दक्षंश्चत्वा बर्लं च श्रीणीताम्। ओजंश्च त्वा सहंश्च श्रीणीताम्। आयुंश्च त्वाऽज्ञरा चं श्रीणीताम्। आत्मा चं त्वा तुनूश्चं श्रीणीताम्। शृतोंऽसि शृतं कृंतः। शृतायं त्वा शृतेभ्यंस्त्वा। यिमन्द्रमाहुर्वरुणं यमाहुः। यिम्पत्रमाहुर्यमुं सत्यमाहुः॥९८॥

यो देवानां देवतंमस्तपोजाः। तस्मैं त्वा तेभ्यंस्त्वा। मिय त्यदिन्द्रियम्मह्त्। मिय दक्षो मिय ऋतुंः। मियं धायि सुवीर्यम्। त्रिशुंग्धर्मो वि भातु मे। आकूँत्या मनसा सह। विराजा ज्योतिंषा सह। यज्ञेन पर्यसा सह। तस्य दोहंमशीमहि॥९९॥

तस्यं सुम्नमंशीमिह। तस्यं भृक्षमंशीमिह। वाग्जुंषाणा सोमंस्य तृप्यतु। मित्रो जनान्त्र स मित्र। यस्मान्न जातः परो अन्यो अस्ति। य आंविवेश भृवंनानि विश्वा। प्रजापंतिः प्रजयां संविदानः। त्रीणि ज्योती १षि सचते स षोडशी। एष ब्रह्मा य ऋत्वियः। इन्द्रो नामं श्रुतो गुणे॥१००॥

प्र तें महे विदथें शश्सिष हरीं। य ऋत्वियः प्र तें वन्वे। वनुषों

हर्यतम्मदम्। इन्द्रो नामं घृतन्नयः। हरिंभिश्चार् सेचंते। श्रुतो गण आ त्वां विशन्तु। हरिंवर्पसङ्गिरंः। इन्द्राधिपतेऽधिपतिस्त्वं देवानांमिस। अधिपतिम्माम्। आयुंष्मन्तं वर्चस्वन्तम्मनुष्येषु कुरु॥१०१॥ इन्द्रेश्च सम्माङ्वरुणश्च राजां। तो ते भृक्षं चंक्रतुरग्रं एतम्। तयोरन् भृक्षं भंक्षयामि। वाग्जुंषाणा सोमंस्य तृप्यतु। प्रजापतिर्विश्वकर्मा। तस्य मनो देवं यज्ञेनं राध्यासम्। अर्थेगा अस्य जहितः। अवसानंपतेऽवसानंम्मे विन्द। नमो रुद्रायं वास्तोष्पतंये।

आयंने विद्रवंणे॥१०२॥

उद्याने यत्परायंणे। आवर्तने विवर्तने। यो गोंपायित तर हुंवे। यान्यंपामित्यान्यप्रंतीत्तान्यस्मि। यमस्यं बिलिना चरांमि। इहैव सन्तः प्रति तद्यांतयामः। जीवा जीवेभ्यो नि हंराम एनत्। अनृणा अस्मिन्नंनृणाः परंस्मिन्। तृतीयें लोके अनृणाः स्यांम। ये देवयानां उत पितृयाणाः॥१०३॥

सर्वांन्पथो अंनुणा आक्षीयम। इदमून श्रेयोंऽवसानमा गंन्म। शिवे नो द्यावांपृथिवी उभे इमे। गोम्द्धनंवदश्वंवदूर्जस्वत्। सुवीरां वीरैरनु सश्चरेम। अर्कः पवित्र रजंसो विमानः। पुनाति देवानाम्भुवंनानि विश्वां। द्यावांपृथिवी पर्यसा संविदाने। द्युतं दुहाते अमृतं प्रपीने। पवित्रंमको रजंसो विमानः। पुनाति देवानाम्भुवंनानि विश्वां। सुवर्ज्योतिर्यशो महत्। अशीमिह गाधमुत प्रतिष्ठाम्॥१०४॥

चात्यत् श्रीणीता् सत्यमाहुरंशीमहि गुणे कुंरु विद्रवंणे पितृयाणां अर्को रजंसो विमानुस्रीणि च॥—————[२]

उदंस्ताम्फ्सीथ्सविता मित्रो अंर्यमा। सर्वानिमित्रांनवधीद्युगेनं। बृहन्तम्मामंकरद्वीरव रथन्तरे श्रंयस्व स्वाहां पृथिव्याम्। वामुदेव्ये श्रंयस्व स्वाहाऽन्तरिक्षे। बृहति

श्रंयस्व स्वाहां दिवि। बृह्ता त्वोपंस्तभ्रोमि। आ त्वां ददे यशंसे वीर्याय च।

अस्मास्वंिघ्रया यूयं दंधाथेन्द्रियं पर्यः। यस्ते द्रिफ्सो यस्ते उद्रुषः॥१०५॥ देव्यः केतुर्विश्वम्भुवंनमाविवेशं। स नः पाह्यरिष्ट्रो स्वाहाँ। अनुं मा सर्वो यज्ञोऽयमेतु। विश्वे देवा मरुतः सामार्कः। आप्रियश्छन्दा रेसि निविदो यज्रू रेषि।

अस्यै पृथिव्यै यद्यज्ञियम्। प्रजापंतेर्वर्तिनमन् वर्तस्व। अनुवीरैरन् राध्याम् गोभिः। अन्वश्वैरन् सर्वैरु पुष्टैः। अनुं प्रजयाऽन्विन्द्रियेणं॥१०६॥

देवा नो युज्ञमृंजुधा नंयन्तु। प्रतिक्षित्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे। प्रत्यश्चेषु प्रति तिष्ठामि गोषुं। प्रति प्रजायां प्रति तिष्ठामि भव्यै। विश्वंमन्याऽभि वावृधे। तदन्यस्यामिधिश्रितम्। दिवे च विश्वकर्मणे। पृथिव्यै चांकरं नमः। अस्कान्द्यौः पृथिवीम्। अस्कानृषभो युवागाः॥१०७॥

स्कन्नेमा विश्वा भुवंना। स्कन्नो यज्ञः प्र जंनयतु। अस्कानजंनि प्राजंनि। आ स्कन्नाज्ञांयते वृषां। स्कन्नात्प्र जंनिषीमिह। ये देवा येषांमिदम्भांग्धेयंम्बभूवं। येषां प्रयाजा उतानूयाजाः। इन्द्रंज्येष्ठेभ्यो वर्रुणराजभ्यः। अग्निहोतृभ्यो देवेभ्यः स्वाहां। उत त्या नो दिवां मितिः॥१०८॥

अदितिरूत्या गंमत्। सा शन्तांची मयंस्करत्। अप स्निधंः। उत त्या दैव्यां भिषजां। शन्नंस्करतो अश्विनां। यूयातांम्स्मद्रपंः। अप स्निधंः।

शमुग्निर्ग्निभिंस्करत्। शन्नंस्तपतु सूर्यः। शं वातों वात्वरुपाः॥१०९॥

अप स्निधंः। तदित्पदं न विचिकेत विद्वान्। यन्मृतः पुनंरप्येतिं जीवान्। त्रिवृद्यद्भवंनस्य रथवृत्। जीवो गर्भो न मृतः स जीवात्। प्रत्यंस्मै पिपींषते। विश्वांनि विदुषे भर। अर्ङ्गमाय जग्मवे। अपश्चाद्द्यवने नरैं। इन्दुरिन्दुमवांगात्। इन्दोरिन्द्रो-ऽपात्। तस्यं त इन्द्विन्द्रंपीतस्य मधुंमतः। उपहूत्स्योपहूतो भक्षयामि॥११०॥

उद्रुष इंन्द्रियेण गा मृतिरंरूपा अंगात्रीणिं च॥———[१०]

ब्रह्मं प्रतिष्ठा मनसो ब्रह्मं वाचः। ब्रह्मं युज्ञाना १ हिवषामाज्यंस्य। अतिरिक्तं कर्मणो यचं हीनम्। युज्ञः पर्वाणि प्रतिरन्नेति कुल्पयन्। स्वाहांकृताऽऽहुंतिरेतु देवान्। आश्रांवितमृत्याश्रांवितम्। वषंद्भतमृत्यनूँक्तं च युज्ञे। अतिरिक्तं कर्मणो यर्च हीनम्। यज्ञः पर्वाणि प्रतिरन्नेति कल्पयन्। स्वाहांकृताऽऽहुंतिरेतु देवान्॥१११॥ यद्वो देवा अतिपादयांनि। वाचा चित्प्रयंतन्देवहेर्डनम्। अरायो अस्मार अभिदुंच्छुनायतें। अन्यत्रास्मन्मंरुतस्तन्निर्धतन। ततं म आपस्तदुं तायते पुनः। स्वादिष्ठा धीतिरुचर्याय शस्यते। अय संमुद्र उत विश्वभेषजः। स्वाहांकृतस्य

समृंतृण्णुतर्भुवः। उद्घयं तमस्पिरि। उदुत्यं चित्रम्॥११२॥ इमं में वरुण तत्त्वां यामि। त्वन्नों अग्ने स त्वन्नों अग्ने। त्वमंग्ने अयासि प्रजापते। इमओविभ्यः परिधिं दंधामि। मैषान्नुंगादपंरो अर्धमेतम्। शृतऔवन्तु श्ररदः पुरूचीः।

तिरो मृत्युं दंधतां पर्वतेन। इष्टेभ्यः स्वाहा वषडिनष्टेभ्यः स्वाहाँ। भेषजं दुरिष्ट्रौ स्वाहा निष्कृत्यै स्वाहाँ। दौराँध्यै स्वाहा दैवीँभ्यस्तुनूभ्यः स्वाहाँ॥११३॥ ऋद्धे स्वाहा समृद्धे स्वाहाँ। यतं इन्द्र भयांमहे। ततों नो अभयं कृधि। मधंवञ्छिग्धे तव तन्नं ऊतयें। वि द्विषो वि मृधों जिहि। स्वस्तिदा विशस्पतिः। वृत्रहा वि मृधों वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एंतु नः। स्वस्तिदा अभयङ्करः। आभिर्गीर्भियंदतों न ऊनम्॥११४॥

आप्यायय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो मिहं गोत्रा रुजासि। भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। अनौज्ञातं यदाज्ञांतम्। यज्ञस्यं क्रियते मिथं। अग्रे तदंस्य कल्पय। त्व॰ हि वेत्थं यथात्थम्। पुरुषसम्मितो यज्ञः। यज्ञः पुरुषसम्मितः। अग्रे तदंस्य कल्पय। त्व॰ हि वेत्थं यथात्थम्। यत्पांकृत्रा मनसा दीनदंक्षा न। यज्ञस्यं मन्वते मर्तासः। अग्निष्टद्धोतां ऋतुविद्विजानन्। यजिष्ठो देवा॰ ऋतुशो यंजाति॥११५॥ देवा॰ श्रितः स्वाहोनं पुरुषसम्मितोऽग्रे तदंस्य कल्पय पश्चं च॥————[११]

यद्देवा देव्हेर्डनम्। देवांसश्चकुमा वयम्। आदित्यास्तस्मान्मा मुश्चत। ऋतस्यूर्तेन् मामुत। देवां जीवनकाम्या यत्। वाचाऽनृतमूदिम। अग्निर्मा तस्मादेनसः। गार्हंपत्यः प्रमुंश्चतु। दुरिता यानिं चकृम। क्रोतु मामनेनसम्॥११६॥

ऋतेनं द्यावापृथिवी। ऋतेन् त्वः संरस्वति। ऋतान्मां मुश्चताः हंसः। यद्न्यकृतमारिम। स्जात्शः सादुत वां जामिशः सात्। ज्यायंसः शः सांदुत वां कनीयसः। अनौज्ञातं देवकृतं यदेनंः। तस्मात्त्वम्स्माञ्जातवेदो मुमुग्धि। यद्वाचा यन्मनंसा। बाहुभ्यांमूरुभ्यांमष्ठीवन्द्यांम्॥११७॥

शिश्ञैर्यदर्नृतश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। यद्धस्ताभ्याश्चकर्

किल्बिषाणि। अक्षाणां वुग्रुमुंपुजिघ्नंमानः। दूरेपुश्या चं राष्ट्रभृचं। तान्यंपसुरसावनुंदत्ता

अदींव्यत्रृणं यद्हश्चकारं। यद्वादांस्यन्थ्सञ्चगारा जनेंभ्यः। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। यन्मियं माता गर्भे स्ति॥११८॥ एनंश्वकार यत्पिता। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। यदां पिपेषं मातरं पितरम्ं। पुत्रः

प्रमुंदितो धयन्। अहि रेसितौ पितरौ मया तत्। तदंग्ने अनृणो भंवामि। यद्न्तरिक्षं पृथिवीमुत द्याम्। यन्मातरं पितरं वा जिहिरसिम। अग्निर्मा तस्मादेनंसः। यदाशसां

निशसा यत्पंराशसां॥११९॥

यदेनश्चकृमा नूर्तनं यत्पुराणम्। अग्निर्मा तस्मादेनसः। अति क्रामामि दुरितं यदेनंः। जहांमि रिप्रं पंरमे सधस्थैं। यत्र यन्ति सुकृतो नापि दुष्कृतः। तमा रोहामि सुकृतां नु लोकम्। त्रिते देवा अमृजतैतदेनः। त्रित एतन्मंनुष्येषु मामृजे। ततों मा यदि किश्चिंदानशे। अग्निर्मा तस्मादेनंसः॥१२०॥

गार्हंपत्यः प्रमुंश्चतु। दुरिता यानिं चकृम। करोतु मामनेनसम्। दिवि जाता अफ्सु जाताः। या जाता ओषंधीभ्यः। अथो या अग्निजा आपंः। ता नंः शुन्धन्तु शुन्धंनीः। यदापो नक्तं दुरितश्चराम। यद्वा दिवा नूर्तनं यत्पुंराणम्। हिरंण्यवर्णास्तत उत्पुनीत नः। इमं में वरुण तत्त्वां यामि। त्वन्नों अग्ने स त्वन्नों अग्ने। त्वमंग्ने अयासिं॥१२१॥

अनेनसंमधीवद्यारं सति पंराशसांऽऽनशेंऽग्निर्मा तस्मादेनंसः पुनीत नुस्नीणिं च (यद्देवा देवां ऋतेनं सजातशुर्साद्यद्वाचा यद्धस्ताँभ्यामदीँव्यं यन्मियं माता यदां पिपेषु यदन्तिरक्षं यदाशसाऽतिं क्रामामि त्रिते देवा दिवि जाता अपसु जाता यदापं

हुमं में वरुण तत्त्वां यामि त्वन्नों अग्ने स त्वन्नों अग्ने त्वमंग्ने अयासिं।)॥—————[१२]

यत्ते ग्राव्णां चिच्छिद्ः सोम राजन्। प्रियाण्यङ्गानि स्वधिता परूर्षेष।

तथ्सन्ध्रथ्यवाज्येनोत वर्धयस्व। अनागसो अधिमथ्सङ्क्षयेम। यत्ते ग्रावां बाहुच्युंतो अचुंच्यवुः। नरो यत्ते दुदुहुर्दक्षिणेन। तत्त्त आप्यायतान्तत्ते। निष्ट्यायतान्देव सोम। यत्ते त्वचंम्बिभिदुर्यच्च योनिम्। यदास्थानात्प्रच्युंतो वेनिस् त्मना॥१२२॥ त्वया तथ्सोम गुप्तमंस्तु नः। सा नः स्न्धासंत्पर्मे व्योमन्। अहाच्छरीरं पर्यसा स्मेत्यं। अन्यौन्यो भवति वर्णो अस्य। तस्मिन्वयमुपंहूतास्तवं स्मः। आ नो भज्ञ सदंसि विश्वरूपे। नृचक्षाः सोमं उत शुश्रुगंस्तु। मा नो वि हांसीदिरं आवृणानः। अनांगास्तुनुवो वावृधानः। आ नो रूपं वहतु जायमानः॥१२३॥

उपं क्षरन्ति जुह्नों घृतेनं। प्रियाण्यङ्गानि तवं वर्धयंन्तीः। तस्मैं ते सोम् नम् इद्वषंद्व। उपं मा राजन्थ्सुकृते ह्वंयस्व। सं प्राणापानाभ्या समु चक्षुंषा त्वम्। सः श्रोत्रेण गच्छस्व सोम राजन्। यत्त आस्थित् शम् तत्ते अस्तु। जानीतान्नः सङ्गमेने पथीनाम्। एतञ्जांनीतात्पर्मे व्योमन्। वृकाः सधस्था विद रूपमंस्य॥१२४॥

तेजं इन्द्रियम्॥१२६॥

गच्छतात्परमे व्योमन्। अभूँदेवः संविता वन्द्योनु नंः। इदानीमह्नं उपवाच्यो नृभिः। वि यो रत्ना भर्जाति मानवेभ्यः। श्रेष्ठं नो अत्र द्रविणं यथा दर्धत्। उपं नो मित्रावरुणाविहावंतम्। अन्वादींध्याथामिहं नंः सखाया। आदित्यानां प्रसितिर्हेतिः। उग्रा शतापाष्ठा घविषा परि णो वृणक्तु। आप्यायस्व सन्तै॥१२५॥ त्मना जार्यमानोऽस्य दधत्पश्चं च॥____ यिद्देविक्षे मनंसा यर्च वाचा। यद्वां प्राणैश्वर्क्षुषा यच श्रोत्रेण। यद्रेतंसा मिथुनेनाप्यात्मनां। अन्धो लोका दंधिरे तेर्ज इन्द्रियम्। शुक्रा दीक्षायै तपंसो विमोर्चनीः। आपों विमोक्रीर्मिय तेर्ज इन्द्रियम्। यद्दचा साम्ना यर्जुषा।

पशूनाश्चर्मन् हविषां दिदीक्षे। यच्छन्दोंभिरोषंधीभिर्वनस्पतौं। अन्द्यो लोका दंधिरे

यदागच्छौत्पथिभिर्देवयानैः। इष्टापूर्ते कृणुतादाविरंस्मे। अरिष्टो राजन्नगदः

परेहि। नमंस्ते अस्तु चक्षंसे रघूयते। नाकमारोह सह यर्जमानेन। सूर्यं

शुक्रा दीक्षायै तपंसो विमोर्चनीः। आपो विमोक्रीर्मिय तेजं इन्द्रियम्। येन् ब्रह्म येनं क्षुत्रम्। येनेंन्द्राग्नी प्रजापंतिः सोमो वरुणो येन् राजां। विश्वे देवा ऋषयो येनं प्राणाः। अन्ध्रो लोका दिधरे तेजं इन्द्रियम्। शुक्रा दीक्षायै तपंसो विमोर्चनीः। आपो विमोक्रीर्मिय तेजं इन्द्रियम्। अपा पुष्पंमस्योषंधीनाः रसंः। सोमंस्य प्रियन्धामं॥१२७॥

अग्नेः प्रियतंम १ ह्विः स्वाहाँ। अपां पुष्पंमस्योषंधीना १ रसंः। सोमंस्य प्रियन्धामं। इन्द्रंस्य प्रियतंम १ ह्विः स्वाहाँ। अपां पुष्पंमस्योषंधीना १ रसंः। सोमंस्य प्रियन्धामं। विश्वेषां देवानां प्रियतंम १ ह्विः स्वाहाँ। वय १ सोम व्रते तवं। मनंस्तुनूषु पिप्रंतः। प्रजावंन्तो अशीमिह॥१२८॥

देवेभ्यः पितृभ्यः स्वाहाँ। सोम्येभ्यः पितृभ्यः स्वाहाँ। कृव्येभ्यः पितृभ्यः स्वाहाँ। देवास इह मादयध्वम्। सोम्यांस इह मादयध्वम्। कव्यांस इह मादयध्वम्। अनंन्तरिताः पितरः सोम्याः सोमपीथात्। अपैतु मृत्युर्मृतंत्र आगन्। वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पर्णं वनस्पतेरिव॥१२९॥

अभि नंः शीयता र र्यिः। सर्चतात्रः शचीपतिः। परम्मृत्यो अनु परेहि पन्थाम्। यस्ते स्व इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि। मा नंः प्रजा र रीरिषो मोत वीरान्। इदमूनु श्रेयोवसानमार्गन्म। यद्गोजिद्धनिजिदेश्वजिद्यत्। पूर्णं वनस्पतेरिव। अभि नंः शीयता र र्यिः। सर्चतात्रः शचीपतिः॥१३०॥

वनस्पतांवुद्धो लोका देधिरे तेजं इन्द्रियन्थामांशीमहीवाभिनंः शीयताः र्यिरेकं च॥————[१४]

सर्वान् यद्विष्यंण्णेन् वि वै याः पुरस्ताद्देवां देवेषु परिस्तृणीत् सक्षेदं यद्स्य पारेऽनागस् उदंस्ताम्फ्सीद्वह्नं प्रतिष्ठा यदेवा यत्ते ग्राव्णा यद्दिंदीक्षे चतुंर्दश॥१४॥

सर्वान्भूतिंमेव यामेवापस्वाहुंतिं ब्रतानां पर्णवृत्कः सोम्यानांमस्मिन् युज्ञेऽग्ने यो नो ज्योग्जीवाः पुरोरंजाः प्रतेमहे ब्रह्मं प्रतिष्ठा गार्ह्नंपत्यस्त्रि १ शर्दुत्तरशतम् ॥ १३०॥

NITION INTO A CALLED THIS REAL PROPERTY.

सर्वाञ्छचीपतिः॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके सप्तमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ अष्टमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः॥

साङ्ग्रहण्येष्ट्यां यजते। इमाञ्चनता ५ सङ्गिह्णानीति। द्वादंशारत्नी रशना भवति। द्वादेश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरमेवावं रुन्धे। मौञ्जी भवति। ऊर्ग्वे मुञ्जाः। ऊर्जमेवावं रुन्धे। चित्रा नक्षंत्रम्भवति। चित्रं वा एतत्कर्म॥१॥

यदंश्वमेधः समृद्धौ। पुण्यंनाम देवयजंनमध्यवंस्यति। पुण्यांमेव तेनं कीर्तिमभि जंयति। अपंदातीनृत्विजः समावंहन्त्या सुंब्रह्मण्यायाः। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ष्ये। केश्वरमुश्रु वंपते। नुखानि नि कृन्तते। दतो धांवते। स्नाति। अहंतं वासः परिधत्ते। पाप्मनोऽपंहत्यै। वार्चं यत्वोपं वसति। सुवर्गस्यं लोकस्य गुप्त्यैं। रात्रिं जागुरयंन्त आसते। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ष्रौ॥२॥

कर्म धत्ते पश्च च॥=

चतुंष्टय्य आपों भवन्ति। चतुंः शफो वा अश्वंः प्राजापत्यः समृद्धौ। ता दिग्भ्यः

स्मार्भृता भवन्ति। दिक्षु वा आपंः। अत्रं वा आपंः। अद्भो वा अत्रं जायते। यदेवाद्योऽत्रं जायते। तदवं रुन्धे। तासुं ब्रह्मौद्नं पंचिति। रेतं एव तद्दंधाति॥३॥ चतुंः शरावो भवति। दिक्ष्वंव प्रतिं तिष्ठति। उभयतोरुक्मौ भंवतः। उभयतं

पुवास्मिन्नुचं दधाति। उद्धंरित शृत्त्वायं। सूर्पिष्वाँन्भवति मेध्यत्वायं। चृत्वारं आर्षेयाः प्राश्चंन्ति। दिशामेव ज्योतिषि जुहोति। चृत्वारे हिरण्यानि ददाति। दिशामेव ज्योतीष्ट्रंष्यवं रुन्धे॥४॥

यदाज्यंमुच्छिष्यंते। तस्मित्रश्नान्युंनित्तः। प्रजापंतिर्वा ओद्नः। रेत् आज्यम्। यदाज्यं रश्नान्युनित्तं। प्रजापंतिमेव रेतंसा समर्धयितः। दुर्भमयी रश्ना भवितः। बहु वा एष कुंचरों मेध्यमुपंगच्छति। यदश्वः। प्वित्रं वै दुर्भाः॥५॥

बहु वा एष कुंचरों मेध्यमुपंगच्छति। यदर्श्वः। पिवत्रं वे दर्भाः॥५॥ यद्दर्भमयीं रश्ना भवंति। पुनात्येवैनम्। पूतमेनम्मध्यमा लेभते। अश्वंस्य वा आलंब्यस्य महिमोदंक्रामत्। स महर्त्विजः प्राविंशत्। तन्महर्त्विजाम्महर्त्विक्तम्। यन्महर्त्विजः प्राश्वनिते। महिमानंमेवास्मिन्तद्दंधित। अश्वंस्य वा आलंब्यस्य रेत् उदंक्रामत्। तथ्सुवर्ण् हरंण्यमभवत्। यथ्सुवर्ण् हरंण्यं ददांति। रेतं एव तद्दंधाति। ओद्ने दंदाति। रेतो वा ओद्नः। रेतो हिरंण्यम्। रेतंसैवास्मिन्नेतों दधाति॥६॥

दधाति॥६॥

दधाति रुन्धे दर्भा अंभवथ्यद चं॥

[२]

यो वै ब्रह्मणे देवेभ्यः प्रजापंतयेऽप्रंतिप्रोच्याश्वं मेध्यं बध्नातिं। आ देवतांभ्यो

वृश्चते। पापीयान्भवति। यः प्रतिप्रोच्यं। न देवताँभ्य आवृश्चिते। वसीयान्भवति। यदाहं। ब्रह्मन्नश्चम्भध्यंम्भन्थस्यामि देवेभ्यः प्रजापंतये तेनं राध्यासमिति। ब्रह्म वै ब्रह्मा। ब्रह्मण एव देवेभ्यः प्रजापंतये प्रतिप्रोच्याश्वम्भध्यंम्बप्नाति॥७॥ न देवताँभ्य आ वृश्चिते। वसीयान्भवति। देवस्यं त्वा सवितुः प्रस्व इति रश्नामादंते प्रसूत्ये। अश्विनौंर्बाहुभ्यामित्यांह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्ताँम्। पूष्णो हस्ताँभ्यामित्यांह यत्यैं। व्यृद्धं वा एतद्यज्ञस्यं। यदंयजुष्केण

क्रियतें। इमामंगृभ्णत्रशनामृतस्येत्यिधं वदित यजुंष्कृत्यै। यज्ञस्य समृंद्धौ॥८॥

रंशनायांमुपा दंधाति॥९॥

सप्रंथसमित्यांह॥११॥

तदांहुः। द्वादंशारती रश्ना कंर्त्व्या (३) त्रयोदशार्त्री (३) रितिं। ऋष्भो वा पृष ऋंतूनाम्। यथ्संवथ्सरः। तस्यं त्रयोदशो मासों विष्टपम्। ऋष्भ पृष यज्ञानाम्। यदंश्वमेधः। यथा वा ऋषभस्यं विष्टपम्॥ एवमेतस्यं विष्टपम्॥ त्रयोदशमंरित्रिः

यथंर्षभस्यं विष्टपर् सङ्स्करोतिं। ताहगेव तत्। पूर्व आयुंषि विदथेंषु

क्वेत्याह। आयुरेवास्मिन्दधाति। तयां देवाः सुतमा बंभूवुरित्यांह।
भूतिमेवोपावर्तते। ऋतस्य सामैन्थ्यरमारपन्तीत्यांह। सत्यं वा ऋतम्।
सत्येनैवैनंमृतेनारंभते। अभिधा असीत्यांह॥१०॥
तस्मांदश्वमेधयाजी सर्वाणि भूतान्यभि भंवति। भुवंनम्सीत्यांह।
भूमानंमेवोपैति। यन्ताऽसीत्यांह। यन्तारंमेवैनं करोति। धृर्तासीत्यांह।
धर्तारंमेवैनं करोति। सौंऽग्निं वैश्वानरमित्यांह। अग्नावेवैनं वेश्वानरे जुंहोति।

प्रजयैवेनं पृश्भिः प्रथयित। स्वाहांकृत् इत्यांह। होमं एवास्येषः। पृथिव्यामित्यांह। अस्यामेवेनं प्रतिष्ठापयित। यन्ता राड्यन्ताऽसि यमंनो धर्तासि धरुण इत्यांह। रूपमेवास्यैतन्महिमानं व्याचेष्टे। कृष्ये त्वा क्षेमाय त्वा रय्ये त्वा पोषाय त्वेत्यांह। आशिषंमेवेतामाशांस्ते। स्वगा त्वां देवेभ्य इत्यांह। देवेभ्यं एवेनई स्वगा करोति। स्वाहां त्वा प्रजापंतय इत्यांह। प्राजापत्यो वा अर्थः। यस्यां एव देवतांया आलुभ्यतें। तयैवेन् समर्धयित॥१२॥

व्याति समृद्धा उपादंधात्यसीत्यांह् सप्रथस्मित्यांह देवेभ्य इत्यांह् पश्चं च॥————[३] यः पितुरंनुजायाः पुत्रः। स पुरस्तांत्रयति। यो मातुरंनुजायाः पुत्रः। स पश्चात्रयति। विष्वंश्चमेवास्मांत्पाप्मानं विवृंहतः। यो अर्वन्तं जिघारंसित् तम्भ्यंमीति वरुण इति श्वानं चतुरक्षं प्रसौति। परो मर्तः पुरः श्वेति शुनश्चतुरक्षस्य प्रहंन्ति। श्वेव वै पाप्मा भ्रातृंव्यः। पाप्मानंमेवास्य भ्रातृंव्यः हन्ति। सेषुकम्मुसंलम्भवति॥१३॥

कर्मकर्मेवास्में साधयित। पौड्श्रक्तियो हिन्ति। पुड्श्रक्त्वां वै देवाः शुच्न्रयंदधुः। शुचेवास्य शुचर्रं हिन्ति। पाप्मा वा एतमीपस्तित्यांहुः। योऽश्वमेधेन यजेत् इति। अश्वंस्याधस्पदम्पास्यिति। वृज्ञी वा अश्वंः प्राजापृत्यः। वृज्ञेणैव पाप्मानम्भातृंव्यमवंत्रामित। दक्षिणाऽपं प्लावयित॥१४॥

पाप्मानमेवास्माच्छमंलमपं प्रावयति। ऐषीक उंदूहो भंवति। आयुर्वा

ड्षीकाः। आयुर्वास्मिन्दधित। अमृतं वा ड्षीकाः। अमृतंमेवास्मिन्दधित। वृत्सशाखोपसम्बद्धा भवति। अपसुयोनिर्वा अश्वः। अपसुजो वेत्सः। स्वादेवैनं योनेर्निर्मिते। पुरस्तांत्प्रत्यश्चमभ्युदूहित। पुरस्तांदेवास्मिन्प्रतीच्यमृतं दधाति। अहं च त्वं च वृत्रहिन्निते ब्रह्मा यर्जमानस्य हस्तं गृह्णाति। ब्रह्मक्षत्रे एव सन्दंधाति। अभिक्रत्वेन्द्र भूरध्ज्मन्नित्यंध्वर्य्यर्जमानं वाचयत्यभिजित्ये॥१५॥ भवति प्रवृत्ति प्रवृत्ति

चुत्वारं ऋत्विजः समुक्षन्ति। आभ्य एवैनं चतुसृभ्यों दिग्भ्योंऽभि समीरयन्ति।

श्तेनं राजपुत्रैः सहाध्वर्युः। पुरस्तांत्प्रत्यिङ्गष्टन्प्रोक्षंति। अनेनाश्वेन् मेध्येनेङ्घा। अयर राजां वृत्रं वंध्यादितिं। राज्यं वा अध्वर्युः। क्षत्रर राजपुत्रः। राज्येनैवास्मिन्क्षत्रं दंधाति। श्तेनां राजभिंरुग्रैः सह ब्रह्मा॥१६॥

दक्षिणत उदङ्गिष्ठन्प्रोक्षंति। अनेनाश्वंन मेध्येनेष्ट्वा। अय राजांप्रतिधृष्यों-ऽस्त्विति। बलं वे ब्रह्मा। बलंमराजोग्रः। बलेनेवास्मिन्बलं दधाति। शतेनं सूतग्रामणिभिः सह होतां। पृश्चात्प्राङ्गिष्ठन्प्रोक्षंति। अनेनाश्वंन मेध्येनेष्ट्वा। अय र राजाऽस्यै विशः॥१७॥

बहुग्वै बंहुश्वायें बहुजाविकायें। बहुव्रीहियवायें बहुमाषित्लायें। बहुहिर्ण्यायें बहुहिस्तकांये। बहुदास्पूरुषायें रियमत्ये पृष्टिंमत्ये। बहुरायस्पोषाये राजास्त्विति। भूमा वै होतां। भूमा सूंतग्रामण्यः। भूम्नेवास्मिन्भूमानं दधाति। श्तेनं क्षत्तसङ्ग्रहीतृभिः सहोद्गाता। उत्तर्तो देक्षिणा तिष्ठन्त्रोक्षंति॥१८॥

अनेनाश्वेन मेध्येनेष्ट्वा। अयर राजा सर्वमायुरेत्वितिं। आयुर्वा उद्गाता। आयुः

क्षत्तसङ्ग्रहीतारंः। आयुंषैवास्मिन्नायुंर्दधाति। श्तरशंतम्भवन्ति। श्तायुः पुरुषः श्तेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिं तिष्ठति। चतुः श्ता भवन्ति। चतंस्रो दिशंः। दिक्ष्वेव प्रतिं तिष्ठति॥१९॥

ब्रह्मा विश उंक्षति दिश एकं च॥——[५] यथा वै हविषों गृहीतस्य स्कन्दंति। एवं वा एतदश्वंस्य स्कन्दति।

यथा व हावषा गृहातस्य स्कन्दाता पुव वा पुतदश्वस्य स्कन्दाता यत्रिक्तमनालब्धमुथ्मुजन्ति। यथ्स्तोक्यां अन्वाहं। सूर्वृहुतंमेवेनं करोत्यस्कन्दाय। अस्कंत्र्र्ष्ट् हि तत्। यद्धुतस्य स्कन्दंति। सृहस्रुमन्वांह। सृहस्रंसम्मितः सुवृगों लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्याभिजित्यै॥२०॥

यत्परिमिता अनुब्रूयात्। परिमित्मवं रुन्धीत। अपरिमिता अन्वांह। अपरिमितः सुवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ध्ये। स्तोक्यां जुहोति। या एव वर्ष्या आपंः। ता अवं रुन्धे। अस्यां जुंहोति। इयं वा अग्निवैश्वानरः॥२१॥

अस्यामेवैनाः प्रतिष्ठापयति। उवाचं ह प्रजापंतिः। स्तोक्यांसु वा अहमंश्वमेधः

सङ्स्थापयामि। तेन ततः सङ्स्थितेन चरामीति। अग्रये स्वाहेत्यांह। अग्रयं एवैनं जुहोति। सोमांय स्वाहेत्यांह। सोमांयैवैनं जुहोति। सुवित्रे स्वाहेत्यांह। सुवित्र एवैनं जुहोति॥२२॥

सरंस्वत्यै स्वाहेत्यांह। सरंस्वत्या एवैनंं जुहोति। पूष्णे स्वाहेत्यांह। पूष्ण एवैनं जुहोति। बृहस्पतंये स्वाहेत्यांह। बृहस्पतंय एवैनं जुहोति। अपाम्मोदांय स्वाहेत्यांह। अन्ध्र एवैनं जुहोति। वायवे स्वाहेत्यांह। वायवं एवैनं जुहोति॥२३॥ मित्राय स्वाहेत्यांह। मित्रायैवैनं जुहोति। वर्रुणाय स्वाहेत्यांह। वर्रुणायैवैनं जुहोति। एताभ्यं एवैनं देवताभयो जुहोति। दर्शदश सम्पादं जुहोति। दशाँक्षरा विराट्। अन्नं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवं रुन्धे। प्र वा एषों उस्माल्लोकाच्यंवते। यः परांचीराहुंतीर्जुहोतिं। पुनः पुनरभ्यावर्तं जुहोति। अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठति।

पुता ह वाव सौं ऽश्वमेधस्य सङ्स्थितिमुवाचास्केन्दाय। अस्केन्न हि तत्। यद्यज्ञस्य सङ्स्थितस्य स्कन्दिति॥२४॥

वीर्यावत्तमः। इन्द्राग्निभ्यान्त्वेतिं दक्षिणतः। इन्द्राग्नी वै देवानामोजिंष्ठौ बिलेष्ठौ। ओजं एवास्मिन्बलं दधाति। तस्मादर्श्वः पशूनामोजिंष्ठो बिलेष्ठः। वायवे त्वेतिं पश्चात्। वायुर्वे देवानामाशुः सारसारितंमः॥२५॥

अभिर्जित्यै वैश्वानुरः संवित्र एवैनं जुहोति वायवं एवैनं जुहोति च्यवते पद चं॥______[६]

देवानामन्नादो वीर्यावान्। अन्नाद्यमेवास्मिन्वीर्यं दधाति। तस्मादश्वः पश्नामन्नादो

प्रजापंतये त्वा जुष्टं प्रोक्षामीतिं पुरस्तांत्प्रत्यिङ्गष्टन्प्रोक्षंति। प्रजापंतिर्वे

ज्वमेवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वः पशूनामाशः सारसारितंमः। विश्वैभ्यस्त्वा देवेभ्य इत्युंत्तर्तः। विश्वे व देवा देवानां यशस्वितंमाः। यशं प्रवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वः पशूनां यशस्वितंमः। देवेभ्यस्त्वेत्यधस्तौत्। देवा व देवानामपंचिततमाः। अपंचितिमेवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वः पशूनामपंचिततमः॥२६॥

सर्वैभ्यस्ता देवेभ्य दलापरिष्यत्। सर्वे व देवास्त्विधान्तो दरस्वितं।

सर्वेभ्यस्त्वा देवेभ्य इत्युपरिष्टात्। सर्वे वै देवास्त्विषमन्तो हर्स्विनः। त्विषिमेवास्मिन् हरो दधाति। तस्मादश्वः पशूनां त्विषिमान् हर्स्वितमः। दिवे

त्वाऽन्तरिक्षाय त्वा पृथिव्यै त्वेत्यांह। एभ्य एवैनं लोकेभ्यः प्रोक्षंति। सते त्वाऽसंते त्वाऽज्यस्त्वौषंधीभ्यस्त्वा विश्वैभ्यस्त्वा भूतेभ्य इत्याह। तस्मांदश्वमेधयाजिन ॥ सर्वाणि भूतान्युपंजीवन्ति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। यत्प्रांजापृत्योऽश्वंः। अथु कस्मादिनमन्याभ्यो देवताभ्योऽपि प्रोक्षतीतिं। अश्वे वै सर्वा देवतां अन्वायंत्ताः। तं यद्विश्वैभ्यस्त्वा भूतेभ्य इति प्रोक्षति। देवतां एवास्मिन्नन्वा यांतयति। तस्मादश्वे सर्वा देवतां अन्वायंताः॥२७॥ सारसारितमोऽपंचिततमः प्राजापत्योऽश्वः पश्चं च॥ यथा वै हविषों गृहीतस्य स्कन्दंति। एवं वा एतदश्वंस्य स्कन्दति। यत्प्रोक्षितमनालब्धम् असृजन्ति। यदंश्वचरितानि जुहोति। सर्वहतं मेवैनं करोत्यस्केन्दाय। अस्केन्नु हि तत्। यद्धुतस्य स्कन्दंति। ईङ्काराय स्वाहं कृताय स्वाहेत्यांह। पुतानि वा अश्वचिर्तानिं। चिरितैरेवैन समर्धयित॥२८॥ तदांहुः। अनांहुतयो वा अश्वचरितानिं। नैता होतव्यां इतिं। अथो खल्वांहुः।

होत्व्यां एव। अत्र वावैवं विद्वानंश्वमेध सङ्स्थांपयति। यदंश्वचरितानिं जुहोतिं। तस्माँद्धोत्व्यां इतिं। बहिर्धा वा एनमेतदायतंनाद्दधाति। भ्रातृंव्यमस्मै जनयति॥२९॥

यस्यांनायतने ऽन्यत्राग्नेराहुंतीर्जुहोतिं। सावित्रिया इष्ट्राः पुरस्तां थ्स्वष्टकृतः।

आह्वनीयेंऽश्वचिर्तानि जुहोति। आयतंन प्वास्याहंतीर्ज्ञहोति। नास्मै आतृंव्यं जनयति। तदांहुः। यज्ञमुखेयंज्ञमुखे होत्व्याः। यज्ञस्य कृत्यै। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंख्यात्या इति। अथो खल्वांहुः॥३०॥ यद्यंज्ञमुखेयंज्ञमुखे जुहुयात्। पृशुभिर्यजंमानं व्यर्धयेत्। अवं सुवर्गाक्षोकात्पंद्येत।

यद्यज्ञमुखयज्ञमुख जुहुयात्। पृशुामयजमान् व्यवयत्। अव सुवृगाल्लाकात्पद्यता पापीयान्थ्रस्यादिति। स्कृदेव होत्व्याः। न यजमानं पृशुमिर्व्यर्धयति। अभि सुवृगं लोकं जयित। न पापीयान्भवति। अष्टाचेत्वारिश्शतमश्वरूपाणि जुहोति। अष्टाचेत्वारिश्शदक्षरा जगेती। जाग्तोऽश्वः प्राजापत्यः समृद्धै। पृकमितिरिक्तं जुहोति। तस्मादेकः प्रजास्वर्धकः॥३१॥ अर्थ्यति जन्यति खल्वांहुर्जगंती त्रीणि च॥————[८]
विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रेत्याह। इयं वै माता। असौ पिता। आभ्यामेवैनं

परिंददाति। अश्वोऽसि हयोऽसीत्यांह। शास्त्येवैनंमेतत्। तस्माँच्छिष्टाः प्रजा जांयन्ते। अत्योऽसीत्यांह। तस्मादश्वः सर्वांन्पृशूनत्येति। तस्मादश्वः सर्वेषां पशूनाः श्रेष्ठमं गच्छति॥३२॥

प्रयशः श्रेष्ठमंमाप्नोति। य एवं वेदं। नरोऽस्यवांऽसि सप्तिरिस वाज्यंसीत्यांह। रूपमेवास्यैतन्मंहिमानं व्याचेष्टे। ययुर्नामाऽसीत्यांह। एतद्वा अश्वंस्य प्रियन्नांमधेयम्। प्रियेणैवैनंन्नामधेयंनाभि वंदित। तस्मादप्यांमित्रौ सङ्गत्यं। नाम्ना चेद्ध्वयंते। मित्रमेव भंवतः॥३३॥

आदित्यानां पत्वाऽन्विहीत्यांह। आदित्यानेवैनं गमयति। अग्नये स्वाह्य स्वाहैंन्द्राग्निभ्यामितिं पूर्वहोमां जुंहोति। पूर्वं एव द्विषन्तम्भ्रातृंव्यमितं ऋामित। भूरंसि भुवे त्वा भव्याय त्वा भविष्यते त्वेत्युथ्मृंजित सर्वत्वायं। देवां आशापाला एतं देवेभ्योऽश्वम्मेधाय प्रोक्षितं गोपायतेत्यांह। शृतं वै तल्प्यां राजपुत्रा देवा आंशापालाः। तेभ्यं एवैनं परिं ददाति। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुंक्तः पर्रां परावतङ्गन्तौं। इह धृतिः स्वाहेह विधृतिः स्वाहेह रन्तिः स्वाहेह रमंतिः स्वाहेतिं चतृषु पथ्मु जुंहोति॥३४॥

एता वा अश्वंस्य बन्धंनम्। ताभिंरेवैनंम्बध्नाति। तस्मादश्वः प्रमुंक्तो बन्धंनमा गंच्छति। तस्मादश्वः प्रमुंक्तो बन्धंनं न जहाति। राष्ट्रं वा अश्वमेधः। राष्ट्रे खलु वा एते व्यायंच्छन्ते। येऽश्वम्मेध्यः रक्षंन्ति। तेषां य उद्दचं गच्छंन्ति। राष्ट्रादेव ते राष्ट्रं गेच्छन्ति। अथ य उद्दवं न गच्छन्ति॥३५॥

राष्ट्रादेव ते व्यवंच्छिद्यन्ते। परा वा एष सिंच्यते। योऽबलोंऽश्वमेधेन यजंते। यदिमत्रा अर्श्वं विन्देरन्। हन्येतांस्य युज्ञः। चृतुः शृता रंक्षन्ति। युज्ञस्याघांताय। अथान्यमानीय प्रोक्षेयुः। सैव ततः प्रायंश्चित्तिः॥३६॥

गच्छति भवतः पथ्सु जुंहोति न गच्छंन्ति नवं च॥_____

प्रजापंतिरकामयताश्वमेधेनं यजेयेतिं। स तपोंऽतप्यत। तस्यं तेपानस्यं। स्प्तात्मनों देवता उदंक्रामन्। सा दीक्षाऽभंवत्। स एतानिं वैश्वदेवान्यंपश्यत्। तान्यंजुहोत्। तैर्वे स दीक्षामवांरुन्थ। यद्वैश्वदेवानिं जुहोति। दीक्षामेव तैर्यजंमानोऽवं रुन्थे॥३७॥

सप्त जुंहोति। सप्त हि ता देवतां उदक्रांमन्। अन्वहं जुंहोति। अन्वहमेव दीक्षामवं रुन्थे। त्रीणिं वैश्वदेवानिं जुहोति। चत्वार्यौद्धहुणानिं। सप्त सम्पंद्यन्ते। सप्त वै शीर्षण्याः प्राणाः। प्राणा दीक्षा। प्राणेरेव प्राणान्दीक्षामवं रुन्थे॥३८॥ एकंविश्शतिं वैश्वदेवानिं जुहोति। एकंविश्शतिर्वे देवलोकाः। द्वादेश मासाः

पश्चर्तवंः। त्रयं इमे लोकाः। असावांदित्य एंकविश्वाः। एष सुंवर्गो लोकः। तद्दैव्यं क्षत्रम्। सा श्रीः। तद्व्रप्रस्यं विष्टपम्। तथ्स्वारांज्यमुच्यते॥३९॥
त्रिश्वर्तमौद्वहृणानिं जुहोति। त्रिश्वरक्षरा विराट्। अत्रं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवं रुन्थे। त्रेधा विभज्यं देवतां जुहोति। त्र्यांवृतो वै देवाः। त्र्यांवृत

इमे लोकाः। एषां लोकानामाध्यै। एषां लोकानां कृष्यै। अप वा एतस्मौत्प्राणाः ऋांमन्ति॥४०॥

यो दीक्षामंतिरेचयंति। सप्ताहं प्रचंरन्ति। सप्त वै शीर्षणयाः प्राणाः। प्राणा दीक्षा। प्राणैरेव प्राणान्दीक्षामवं रुन्धे। पूर्णाहुतिमुत्तमां जुहोति। सर्वं वै पूर्णाहुतिः। सर्वमेवाप्नोति। अथों इयं वै पूँर्णाहुतिः। अस्यामेव प्रतिं तिष्ठति॥४१॥

रुन्धे प्राणान्दीक्षामवं रुन्ध उच्यते ऋामन्ति तिष्ठति॥

प्रजापंतिरश्वमेधमंसृजत। तर सृष्टं न किश्चनोदंयच्छत्। तं वैश्वदेवान्येवोदंयच्छन्। यद्वैश्वदेवानि जुहोति। यज्ञस्योद्यत्यै। स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहाँ। स्वाहाऽधीतुं मनसे स्वाहाँ। स्वाहा मनः प्रजापंतये स्वाहाँ। काय स्वाहा कस्मै स्वाहां कत्मस्मै

स्वाहेतिं प्राजापत्ये मुख्यें भवतः। प्रजापंतिमुखाभिरेवैनंं देवतांभिरुद्यंच्छते॥४२॥ अदित्ये स्वाहाऽदित्ये महौं स्वाहाऽदित्ये सुमृडीकाये स्वाहेत्यांह। इयं वा

अदितिः। अस्या एवैनं प्रतिष्ठायोद्यंच्छते। सरंस्वत्ये स्वाहा सरंस्वत्ये बृहत्यैं

स्वाहा सर्रस्वत्ये पावकाये स्वाहेत्यांह। वाग्वे सर्रस्वती। वाचैवेनमुद्यंच्छते। पूष्णे स्वाहां पूष्णे प्रपृथ्यांय स्वाहां पूष्णे न्रन्धिंषाय स्वाहेत्यांह। पुशवो वै पूषा। पशुभिरेवैनमुद्यंच्छते। त्वष्ट्रे स्वाहा त्वष्ट्रं तुरीपाय स्वाहा त्वष्ट्रं पुरुरूपाय स्वाहेत्याह। त्वष्टा वै पंशूनां मिथुनाना ५ रूपकृत्। रूपमेव पशुषुं दधाति। अथों रूपैरेवैनमुद्यंच्छते। विष्णंवे स्वाहा विष्णंवे निखुर्यपाय स्वाहा विष्णंवे निभूयपाय स्वाहेत्यांह। युज्ञो वै विष्णुं। युज्ञायैवैनुमुद्यंच्छते। पूर्णाहुतिमुंत्तमां जुंहोति। प्रत्युत्तंब्ध्ये सयत्वायं॥४३॥ यच्छते पुरुरूपांय स्वाहेत्यांहाष्टौ चं॥=

सावित्रमृष्टाकंपालं प्रातर्निवंपति। अष्टाक्षंरा गायत्री। गायत्रं प्रांतः सवनम्। प्रातः सवनादेवेनं गायत्रियाष्ठ्वन्दसोऽधि निर्मिमीते। अथौ प्रातः सवनमेव तेनाँऽऽप्रोति। गायत्रीं छन्देः। सवित्रे प्रसवित्र एकांदशकपालं मध्यन्दिने। एकांदशाक्षरा त्रिष्टुप्। त्रेष्टुंभं माध्यं दिनः सर्वनम्। माध्यं दिनादेवेनः

सर्वनात्रिष्टुभश्छन्दसोऽधि निर्मिमीते॥४४॥

अथो मार्ध्यं दिनमेव सर्वनं तेनाँऽऽप्रोति। त्रिष्टुमं छन्दंः। सवित्र आंसिवेत्रे द्वादंशकपालमपराह्ने। द्वादंशाक्षरा जगंती। जागंतं तृतीयसवनम्। तृतीयसवनादेवैनं जगंत्याश्छन्दसोऽधि निर्मिमीते। अथों तृतीयसवनमेव तेनाँ ऽऽप्रोति। जर्गतीं छन्दंः। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुक्तः पराँ परावतं गन्तौः। इह धृतिः स्वाहेह विधृतिः स्वाहेह रन्तिः स्वाहेह रमंतिः स्वाहेति चतंस्र आहंतीर्जुहोति॥४५॥

चर्तस्रो दिशंः। दिग्भिरेवैनं परिगृह्णाति। आश्वंत्थो व्रजो भंवति। प्रजापंतिर्देवेभ्यो निलायत। अश्वो रूपं कृत्वा। सौंऽश्वत्थे संवथ्सरमंतिष्ठत्। तदेश्वत्थस्यौश्वत्थत्वम्। यदार्श्वतथो व्रजो भवंति। स्व एवैनं योनौ प्रतिष्ठापयति॥४६॥

त्रिष्टुभश्छन्दसोऽधि निर्मिमीते जुहोति नवं च॥ आ ब्रह्मेन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामित्यांह। ब्राह्मण एव ब्रह्मवर्चसं दंधाति।

तस्मौत्पुरा ब्रौह्मणो ब्रह्मवर्चस्यंजायत। आऽस्मित्राष्ट्रे रांजन्यं इष्व्यः शूरों महार्थो जांयतामित्यांह। राजन्यं एव शौर्यं मंहिमानं दधाति। तस्मौत्पुरा रांजन्यं इष्व्यः शूरों महार्थोऽजायत। दोग्ध्रीं धेनुरित्यांह। धेन्वामेव पयों दधाति। तस्मौत्पुरा दोग्ध्रीं धेनुरंजायत। वोढांऽनुङ्गानित्यांह॥४७॥

अनुडुह्येव वीर्यं दधाति। तस्मौत्पुरा वोढांऽनुङ्गानंजायत। आशुः सिप्तिरत्यांह। अश्वं एव ज्वं दंधाति। तस्मौत्पुराऽऽशुरश्वोऽजायत। पुरंन्धिर्योषेत्यांह। योषित्येव रूपं दंधाति। तस्माथ्स्री युवतिः प्रिया भावंका। जिष्णू रंथेष्ठा इत्यांह। आ ह् वै तत्रं जिष्णू रंथेष्ठा जांयते॥४८॥

यत्रैतेनं यज्ञेन यजंन्ते। सभेयो युवेत्यांह। यो वै पूर्ववयसी। स सभेयो युवाँ। तस्माद्युवा पुर्मान्प्रियो भावुंकः। आऽस्य यजंमानस्य वीरो जांयतामित्यांह। आ हु वै तत्र यजंमानस्य वीरो जांयते। यत्रैतेनं यज्ञेन यजंन्ते। निकामेनिकामे नः पुर्जन्यो वर्षित्वत्यांह। निकामेनिकामे हु वै तत्रं पुर्जन्यो वर्षिति। यत्रैतेनं

यज्ञेन यजंन्ते। फुलिन्यों न ओषंधयः पच्यन्तामित्यांह। फुलिन्यों हु वै तत्रौषंधयः पच्यन्ते। यत्रैतेन यज्ञेन यजंन्ते। योगक्षेमो नंः कल्पतामित्यांह। कल्पंते हु वै तत्रे प्रजाभ्यों योगक्षेमः। यत्रैतेन यज्ञेन यजंन्ते॥४९॥

अनुङ्गानित्यांह जायते वर्षित स्प्त चं॥——[१३] प्रजापंतिर्देवेभ्यों यज्ञान्व्यादिंशत्। स आत्मन्नंश्वमेधमंधत्त। तं देवा अंब्रुवन्।

पुष वाव युज्ञः। यदेश्वमेधः। अप्येव नोत्रास्त्विति। तेभ्यं पुतानंत्रहोमान्प्रायंच्छत्। तानंजुहोत्। तैर्वे स देवानंप्रीणात्। यदंत्रहोमां जुहोतिं॥५०॥

देवानेव तैर्यजंमानः प्रीणाति। आज्यंन जुहोति। अग्नेर्वा एतद्रूपम्। यदाज्यम्। यदाज्यंन जुहोति। अग्निमेव तत्प्रीणाति। मधुंना जुहोति। महत्यै वा एतद्देवतांयै रूपम्। यन्मधुं। यन्मधुंना जुहोति॥५१॥

मृह्तीमेव तद्देवतां प्रीणाति। तृण्डुलैर्जुहोति। वसूनां वा एतद्रूपम्। यत्तंण्डुलाः। यत्तंण्डुलैर्जुहोतिं। वसूनेव तत्प्रीणाति। पृथुंकैर्जुहोति। रुद्राणां वा एतद्रूपम्। यत्पृथुंकाः। यत्पृथुंकैर्जुहोतिं॥५२॥

रुद्रानेव तत्प्रीणाति। लाजैर्जुहोति। आदित्यानां वा पुतद्रूपम्। यल्लाजाः। यल्लाजैर्जुहोतिं। आदित्यानेव तत्प्रीणाति। क्रम्बैर्जुहोति। विश्वेषां वा पुतद्देवानार्र रूपम्। यत्क्रम्बाः। यत्क्रम्बैर्जुहोतिं॥५३॥

विश्वांनेव तद्देवान्प्रींणाति। धानाभिर्जुहोति। नक्षंत्राणां वा एतद्रूपम्। यद्धानाः। यद्धानाभिर्जुहोतिं। नक्षंत्राण्येव तत्प्रींणाति। सक्तुंभिर्जुहोति। प्रजापतेर्वा एतद्रूपम्। यथ्मक्तंवः। यथ्मक्तुंभिर्जुहोतिं॥५४॥

प्रजांपितमेव तत्प्रींणाति। मृसूस्यैंर्जुहोति। सर्वासां वा एतद्देवतांनाः रूपम्। यन्म्सूस्यांनि। यन्म्सूस्यैंर्जुहोतिं। सर्वा एव तद्देवताः प्रीणाति। प्रियङ्गुत्रण्डुलैर्जुहोति। प्रियाङ्गां ह वै नामैते। एतैर्वे देवा अश्वस्याङ्गांनि समंदधुः। यित्रियङ्गृतण्डुलैर्जुहोतिं। अश्वंस्यैवाङ्गांनि सन्दंधाति। दशान्नांनि जुहोति। दशांक्षरा

विराट्। विराद्गृथ्सस्यान्नाद्यस्यावंरुद्धौ॥५५॥

तण्डुलेः पृथ्वेकर्णजेः क्रम्बैर्धानाभिः सक्तंभिर्मसूस्यैः प्रियङ्गुतण्डुलेर्द्शान्नीन् द्वादंशः)॥————[१४] प्रजापंतिरश्वमेधमंसृजत। तश्सृष्टश्रक्षाः स्यजिघाश्सन्। स एतान्प्रजापंतिर्नक्त

होमानपश्यत्। तानजुहोत्। तैर्वे स यज्ञाद्रक्षा इस्यपाहन्। यन्नक इहोमां जुहोतिं।

जुहोति मधुंना जुहोति पृथुंकैर्जुहोतिं कुरम्बैंजुहोति सक्तुंभिर्जुहोतिं प्रियङ्ग्तण्डुलैर्जुहोतिं चुत्वारिं च (अन्नहोमानाऽऽज्येंनाुग्नेर्मधुंना

यज्ञादेव तैर्यजंमानो रक्षाङ्स्यपं हन्ति। आज्येन जुहोति। वज्रो वा आज्यम्। वज्रेणेव यज्ञाद्रक्षाङ्स्यपं हन्ति॥५६॥

आज्यंस्य प्रतिपदं करोति। प्राणो वा आज्यम्। मुख्त एवास्यं प्राणं दंधाति। अन्नहोमाञ्चंहोति। शरीरवदेवावं रुन्धे। व्यत्यासं जुहोति। उभयस्यावंरुद्धै। नक्तं जुहोति। रक्षंसामपहत्यै। आज्यंनान्ततो जुहोति॥५७॥

प्राणो वा आज्यम्। उभयतं एवास्यं प्राणं दंधाति। पुरस्तां चोपरिष्टाच। एकंस्मै स्वाहेत्यांह। अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठति। द्वाभ्याः स्वाहेत्यांह। अमुष्मिन्नेव

एव यज्ञाद्रक्षाङ्स्यपंहन्त्यन्ततो जुंहोति शताय स्वाहेत्यांह सप्त चं॥_____

लोके प्रति तिष्ठति। उभयोरेव लोकयोः प्रति तिष्ठति। अस्मिःश्चामुष्मिःश्चा शताय स्वाहेत्यांह। शतायुर्वै पुरुषः शतवीर्यः। आयुरेव वीर्यमवं रुन्थे। सहस्राय स्वाहेत्यांह। आयुर्वे सहस्रम्॥ आयुरेवावं रुन्थे। सर्वस्मै स्वाहेत्यांह। अपंरिमितमेवावं रुन्थे॥५८॥

प्रजापंतिं वा एष ईंप्स्तीत्यांहुः। योंऽश्वमेधेन् यजंत् इतिं। अथों आहुः। सर्वाणि भूतानीतिं। एकंस्मै स्वाहेत्यांह। प्रजापंतिर्वा एकंः। तमेवाऽऽप्नोति। एकंस्मै स्वाहा द्वाभ्याङ् स्वाहेत्यंभिपूर्वमाहुंतीर्जुहोति। अभिपूर्वमेव सुंवर्गं लोकमेति। एकोत्तरं जुंहोति॥५९॥

एकवदेव सुंवर्गं लोकमेति। सन्तंतं जुहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्तंत्यै। शताय स्वाहेत्याह। शतायुर्वे पुरुषः शतवीर्यः। आयुरेव वीर्यमवंरुन्थे। सहस्राय स्वाहेत्याह। आयुर्वे सहस्रम्॥ आयुरेवावं रुन्थे। अयुताय स्वाहां नियुताय स्वाहां प्रयुतांय स्वाहेत्यांह॥६०॥

त्रयं इमे लोकाः। इमानेव लोकानवं रुन्थे। अर्बुदाय स्वाहेत्यांह। वाग्वा अर्बुदम्। वाचंमेवावं रुन्थे। न्यंर्बुदाय स्वाहेत्यांह। यो वै वाचो भूमा। तन्न्यंर्बुदम्। वाच एव भूमानमवं रुन्थे। समुद्राय स्वाहेत्यांह॥६१॥

समुद्रमेवाऽऽप्नोति। मध्यांय स्वाहेत्यांह। मध्यंमेवाऽऽप्नोति। अन्तांय स्वाहेत्यांह। अन्तंमेवाऽऽप्नोति। पुरार्धाय स्वाहेत्यांह। पुरार्धमेवाऽऽप्नोति। उषसे स्वाहा व्युष्ट्रौ स्वाहेत्यांह। रात्रिर्वा उषाः। अहर्व्युष्टिः। अहोरात्रे एवावंरुन्धे। अथों अहोरात्रयोंरेव प्रतिं तिष्ठति। ता यदुभयीर्दिवां वा नक्तं वा जुहुयात्। अहोरात्रे मोहयेत्। उषसे स्वाहा व्युंष्ट्रौ स्वाहोंदेष्यते स्वाहोंद्यते स्वाहेत्यनुंदिते जुहोति। उदिताय स्वाहां सुवर्गाय स्वाहां लोकाय स्वाहेत्युदिते जुहोति। अहोरात्रयोरव्यंतिमोहाय॥६२॥

एकोत्तरं जुहोति प्रयुताय स्वाहेत्याह समुद्राय स्वाहेत्याहाहूर्व्युष्टिः सप्त चं॥———[१६]

जुहोत्यनंन्तरित्यै॥६४॥

सुवर्गं लोकं गंमयित। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेित पूर्वहोमाञ्जंहोित। पूर्व प्रविष्ट्रां भ्रातृंव्यमित कामित। पृथिव्ये स्वाहाऽन्तिरक्षाय स्वाहेत्यांह। यथायजुरेवेतत्। अग्नये स्वाहा सोमाय स्वाहेित पूर्वदीक्षा जुंहोित। पूर्व एव द्विषन्तं भ्रातृंव्यमित कामित॥६३॥
पृथिव्ये स्वाहाऽन्तिरक्षाय स्वाहेत्यंकिविश्शिनीं दीक्षां जुंहोित। एकंविश्शित्वे देवलोकाः। द्वादंशु मासाः पश्चर्तवंः। त्रयं इमे लोकाः। असावादित्य एकिविश्शः। एष सुवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ध्रे। भुवो देवानां

विभूर्मात्रा प्रभूः पित्रेत्यंश्वनामानि जुहोति। उभयोरवैनं लोकयौर्नामधेयं

गमयति। आयंनाय स्वाहा प्रायंणाय स्वाहेत्युंद्रावाञ्जंहोति। सर्वमेवैनमस्कंन्न ॥

अुर्वाङ्यज्ञः सङ्कांमुत्वित्याप्तींर्जुहोति। सुवुर्गस्यं लोकस्याप्यैं। भूतं

कर्मणेत्यृंतुदीक्षा जुंहोति। ऋतूनेवास्मैं कल्पयति। अग्नये स्वाहां वायवे स्वाहेतिं

में गृहा भंवन्त्वत्याभूर्जुंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्याभूँत्यै। अग्निना तपो-ऽन्वंभवदित्यंनुभूर्जुंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंभूत्यै। स्वाहाऽऽधिमाधीताय स्वाहेति समस्तानि वैश्वदेवानि जुहोति। समस्तमेव द्विषन्तं भ्रातृंव्यमिति क्रामिति॥६५॥

भर्व्यं भविष्यदिति पर्यांप्तीर्जुहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य पर्यांप्ये। आ

दुद्धः स्वाह्य हर्नूभ्या्ड् स्वाहेत्यंङ्गहोमाञ्जहोति। अङ्गेअङ्गे वै पुरुषस्य पाप्मोपंश्लिष्टः। अङ्गांदङ्गादेवेनं पाप्मनस्तेनं मुञ्जति। अञ्चेताय स्वाहां कृष्णाय स्वाहां श्वेताय स्वाहेत्यंश्वरूपाणि जुहोति। रूपैरेवेन्ड् समर्धयति। ओषधीभ्यः स्वाह्य मूर्लेभ्यः स्वाहेत्योषिधहोमाञ्जहोति। द्वय्यो वा ओषंधयः। पुष्पेभ्योऽन्याः फलं गृह्णन्ति। मूर्लेभ्योऽन्याः। ता पुवोभयी्रवं रुन्धे॥६६॥

वनस्पतिंभ्यः स्वाहेतिं वनस्पतिहोमाञ्जुंहोति। आरुण्यस्यान्नाद्यस्यावंरुद्धै। मेषस्त्वां पचतैरवित्यपाँच्यानि जुहोति। प्राणा वै देवा अपाँच्याः। प्राणानेवावं रुन्थे। कूप्याँभ्यः स्वाहाद्धः स्वाहेत्यपा होमाँ आहोति। अपसु वा आपंः। अत्रं वा आपंः। अत्रं वा आपंः। अन्नं वा आपंः। अन्नं वा आपंः। अन्नं वा अन्नं जायते। यदेवान्द्योऽन्नं जायते। तदवं रुन्थे॥६७॥ पूर्वदीक्षा जुहोति पूर्वं पृव द्विपन्तं आतृंत्र्यमितं कामृत्यनंन्तिरत्ये कामित रुन्थे जायत एकं च॥———[१७]

अम्भार्शस जुहोति। अयं वै लोकोऽम्भार्शस। तस्य वस्वोऽधिपतयः। अग्निज्योतिः। यदम्भार्शस जुहोति। इममेव लोकमवं रुन्धे। वसूनार् सायुज्यं गच्छति। अग्निं ज्योतिरवं रुन्धे। नभार्शस जुहोति। अन्तरिक्षं वै नभार्शस॥६८॥ तस्यं रुद्रा अधिपतयः। वायुज्योतिः। यन्नभार्शस जुहोति। अन्तरिक्षमेवावं रुन्धे। रुद्राणार सायुज्यं गच्छति। वायुं ज्योतिरवं रुन्धे। महार्शस जुहोति।

असौ वै लोको महार्सि। तस्यांदित्या अधिपतयः। सूर्यो ज्योतिः॥६९॥ यन्महार्स्सि जुहोति। अमुमेव लोकमवं रुन्थे। आदित्यानार् सायुंज्यं गच्छति। सूर्यं ज्योतिरवं रुन्थे। नमो राज्ञे नमो वर्रुणायेति यव्यानि जुहोति। अन्नाद्यस्यावरुद्धै। मृयोभूर्वातो अभि वांतूस्ना इति गुव्यानि जुहोति। पृशूनामवंरुद्धै। प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहेतिं सन्ततिहोमाञ्जंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्तंत्यै॥७०॥

स्तिय स्वाहाऽसिताय स्वाहेति प्रमुंक्तीर्जुहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य प्रमुंक्तौ। पृथिव्यै स्वाहाऽन्तिरक्षाय स्वाहेत्यांह। यथायज्ञुरेवैतत्। दुत्वते स्वाहांऽदुन्तकांय स्वाहेति शरीरहोमाञ्जंहोति। पितृलोकमेव तैर्यजमानोऽवं रुन्धे। कस्त्वां युनिक्ति स त्वां युनिकिति परिधीन् युनिक्ति। इमे वै लोकाः परिधयः। इमानेवास्मै लोकान् युनिक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ष्र्ये॥७१॥

यः प्राणितो य आत्मदा इति महिमानौ जुहोति। सुवर्गो वै लोको महंः।

सुवर्गमेव ताभ्यां लोकं यजंमानोऽवं रुन्थे। आ ब्रह्मंन्ब्राह्मणो ब्रंह्मवर्च्सी जायतामिति समंस्तानि ब्रह्मवर्च्सानि जुहोति। ब्रह्मवर्चसमेव तैर्यजंमानोऽवं रुन्थे। जिज्ञ बीज्मितिं जुहोत्यनंन्तिरत्यै। अग्नये समनमत्पृथिव्ये समनमदितिं सन्नतिहोमाञ्जंहोति। सुवर्गस्यं लोकस्य सन्नत्ये। भूताय स्वाहां भविष्यते स्वाहेतिं भूताम्व्यौ होमौं जुहोति। अयं वै लोको भूतम्॥७२॥

असौ भंविष्यत्। अनयोरेव लोकयोः प्रतिं तिष्ठति। सर्वस्यास्यैं। सर्वस्यावंरुद्धै। यदर्जन्दः प्रथमं जायमान इत्यंश्वस्तोमीयं जुहोति। सर्वस्यास्यैं। सर्वस्य जित्यैं।

य उं चैनमेवं वेदं। यज्ञ रक्षा ईस्यजिघा रसन्। स एतान्प्रजापंतिर्नक्त रहोमानंपश्य

सर्वमेव तेनाँप्रोति। सर्वं जयति। यौंऽश्वमेधेन यजंते॥७३॥

तैर्यजीमानो रक्षाङ्स्यपहिन्ति। उषसे स्वाहा व्यृष्टि स्वाहेत्येन्त्तो जुंहोति।
सुवर्गस्य लोकस्य सम्ध्रे॥७४॥

व नगरिस सूर्यो ज्योतिः सन्तत्ये सम्ध्रे भूतं यजीव नवं च॥

[१८]

पुक्यूपो वैकाद्शिनी वा। अन्येषां यज्ञानां यूपां भवन्ति। पुक्विट्शिन्यंश्वमेधस्यं।
सुवर्गस्य लोकस्याभिजित्यै। बैल्वो वां खादिरो वां पालाशो वां। अन्येषां

यज्ञकतूनां यूपां भवन्ति। राज्जंदाल एकंवि॰शत्यरिवरश्वम्धस्यं। सुवृर्गस्यं

लोकस्य समेष्ट्रौ। नान्येषां पशूनां तेंजन्या अंवद्यन्ति। अवंद्यन्त्यश्वंस्य॥७५॥

तानंजुहोत्। तैर्वे स यज्ञाद्रक्षा इस्यपाहन्। यन्नंक इहोमां जुहोतिं। यज्ञादेव

पाप्मा वै तेंज्नी। पाप्मनोऽपंहत्यै। प्रुक्षशाखायांम्न्येषां पशूनामंव्द्यन्ति। वृत्सशाखायामश्वंस्य। अपसुयोनिर्वा अश्वंः। अपसुजो वेत्सः। स्व एवास्य योनाववं द्यति। यूपेषु ग्राम्यान्पशून्नियुञ्जन्ति। आरोकेष्वांरण्यान्धांरयन्ति। पृशूनां व्यावृत्त्यै। आ ग्राम्यान्पशूङ्कंभंन्ते। प्रार्ण्यान्ध्सृंजन्ति। पाप्मनोऽपंहत्यै॥७६॥ अश्वंस्य व्यावृत्त्ये त्रिण च॥ [१९]

पुण्यंस्य गुन्धस्यावंरुद्धै। भ्रूण्हृत्यामेवास्मांदप्हत्यं। पुण्यंन गुन्धेनोंभ्यतः परिं गृह्णाति। षड्डेल्वा भंवन्ति। ब्रह्मवर्चसस्यावंरुद्धै। षद्धांदिराः। तेज्ञसोऽवंरुद्धै॥७७॥ षद्धांला्शाः। सोम्पीथस्यावंरुद्धै। एकंवि॰शितः सम्पंद्यन्ते। एकंवि॰शित्वें देवलोकाः। द्वादंश मासाः पश्चर्तवंः। त्रयं इमे लोकाः। असावांदित्य एकंवि॰शः।

राञ्जुंदालमग्निष्ठं मिनोति। भ्रूणहत्याया अपंहत्यै। पौतुंद्रवावृभितों भवतः।

एष सुंवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्य समिष्ठौ। शतं पृशवो भवन्ति॥७८॥ शतायुः पुरुषः शतेन्द्रियः। आयुष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति। सर्वं वा अंश्वमेध्याप्नोति। अपंरिमिता भवन्ति। अपंरिमित्स्यावंरुद्धै। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्माध्यत्यात्। दक्षिणतौंऽन्येषां पशूनामंवद्यन्ति। उत्तर्तोऽश्वस्येतिं। वारुणो वा अर्श्वः॥७९॥

एषा वै वर्रुणस्य दिक्। स्वायांमेवास्यं दिश्यवंद्यति। यदितंरेषां पशूनामंवद्यतिं।

शृत्देव्त्यं तेनावं रुन्धे। चितेंऽग्नाविधं वैत्से कटेऽश्वं चिनोति। अपसुयोनिर्वा अश्वंः। अपसुजो वेत्सः। स्व पृवैनं योनौ प्रतिष्ठापयित। पुरस्तांत्प्रत्यश्चं तूपरं चिनोति। पृश्चात्प्राचीनं गोमृगम्॥८०॥
प्राणापानावेवास्मिन्थ्सम्यश्चौ दधाति। अश्वं तूपरं गोमृगमितिं सर्वहृतं पृताञ्चंहोति। पृषां लोकानांम्भिजित्ये। आत्मनाऽभि जुंहोति। सात्मानमेवेन्ध् सर्तनुं करोति। सात्माऽमुष्मिं लोके भेवित। य एवं वेदं। अथो वसोरेव

धारां तेनावं रुन्धे। इलुवर्दाय स्वाहां बलिवर्दाय स्वाहेत्यांह। संवथ्सरो

वा इंलुवर्दः। परिवथ्सरो बंलिवर्दः। संवथ्सरादेव परिवथ्सरादायुरवं रुन्धे।

आयुरेवास्मिन्दधाति। तस्मादश्वमेधयाजी जुरसां विस्नसामुं लोकमेति॥८१॥

एक्विष्शौंऽग्निर्भवित। एक्विष्शः स्तोमंः। एकंविष्शित्यूपौः। यथा वा अश्वां वर्षमा वा वृषाणः सङ्स्फुरेरन्। एवमेव तथ्स्तोमाः सङ्स्फुरेन्ते। यदैकिविष्शाः। ते यथ्समृच्छेरन्। हुन्येतौस्य यज्ञः। द्वाद्शः एवाग्निः स्यादित्यांहुः। द्वाद्शः स्तोमंः॥८२॥

एकांदश् यूपाः। यद्वांदशौंऽग्निर्भवंति। द्वादंश् मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरेणैवास्मा अन्नमवं रुन्धे। यद्दश् यूपा भवंन्ति। दशौक्षरा विराट्। अन्नं विराट्। विराज्ञैवान्नाद्यमवं रुन्धे। य एंकाद्शः। स्तनं एवास्यै सः॥८३॥

दुह पुवैनां तेनं। तदांहुः। यद्वांदशौंऽग्निः स्यांद्वादशः स्तोम् एकांदश् यूपौः। यथा स्थूरिणा यायात्। तादक्तत्। पुक्विश्वश पुवाग्निः स्यादित्यांहुः। पुक्विश्वशः स्तोमः। एकंविश्वशित्र्यूपौः। यथा प्रष्टिभिर्यातिं। तादगेव तत्॥८४॥ यो वा अश्वमेधे तिस्रः क्कुभो वेदे। क्कुद्ध राज्ञाँ भवति। एक्वि श्शौँऽग्निर्भवति। एक्वि श्शोः एक्वि श्शित्यूपाः। एता वा अश्वमेधे तिस्रः क्कुभंः। य एवं वेदे। क्कुद्ध राज्ञाँ भवति। यो वा अश्वमेधे त्रीणि शीर्षाणि वेदे। शिरो ह राज्ञाँ भवति। एक्वि शौँऽग्निर्भवति। एक्वि श्शोः स्तोमंः। एक्वि शिरो ह राज्ञाँ भवति। एक्वि शौँऽग्निर्भवति। एक्वि श्शोः स्तोमंः। एक्वि शिरो ह राज्ञाँ भवति। एतानि वा अश्वमेधे त्रीणि शीर्षाणि। य एवं वेदे। शिरो ह राज्ञाँ भवति॥८५॥

हाद्यः स्तोमः स एव तिन्छरो ह राज्ञाँ भवति पद चे॥

हिता वा अश्वमेधे एवंमाने। स्वर्गं लोकं न पाज्ञीनन। तम्रशः पाज्ञीनाव।

देवा वा अंश्वमेधे पर्वमाने। सुवृगं लोकं न प्राजांनन्। तमश्वः प्राजांनात्। यदंश्वमेधेऽश्वेंन मेध्येनोदंश्चो बहिष्यवमानः सर्पन्ति। सुवृगंस्यं लोकस्य प्रज्ञांत्यै। न वै मंनुष्यः सुवृगं लोकमञ्जंसा वेद। अश्वो वै सुवृगं लोकमञ्जंसा वेद। यदुंद्गातोद्गायेंत्। यथा क्षेंत्रज्ञोऽन्येनं पृथा प्रंतिपादयेंत्। तादक्तत्॥८६॥

उद्गातारंमपुरुध्यं। अश्वंमुद्गीथायं वृणीते। यथां क्षेत्रज्ञोऽञ्जंसा नयंति। एवमेवैनमर्श्वः सुवृगं लोकमञ्जंसा नयति। पुच्छंमुन्वा रंभन्ते। सुवृगंस्यं लोकस्य सम्ष्रो। हिं करोति। सामैवाकः। हिं करोति। उद्गीथ एवास्य सः॥८७॥

वडंबा उपं रुन्धन्ति। मिथुन्त्वाय प्रजांत्यै। अथो यथोपगातारं उपगायंन्ति। ताहगेव तत्। उदंगासीदश्वो मेध्य इत्याह। प्राजापत्यो वा अश्वः। प्रजापंतिरुद्गीथः। उद्गीथमेवावं रुन्धे। अथो ऋख्सामयोरेव प्रति तिष्ठति। हिरंण्येनोपाकंरोति। ज्योतिर्वे हिरंण्यम्। ज्योतिरेव मुंख्तो दंधाति। यजंमाने च प्रजासुं च। अथो हिरंण्यज्योतिरेव यजंमानः सुवर्गं लोकमेति॥८८॥

पुर्रुषो वै यज्ञः। यज्ञः प्रजापंतिः। यदश्वे पृशून्नियुञ्जन्तिं। यज्ञादेव तद्यज्ञं प्रयुंङ्के। अर्श्वं तूप्रं गोमृगम्। तानिश्रिष्ठ आलंभते। सेनामुखमेव तथ्सङ्श्यंति।

तथ्स उपार्करोति चत्वारिं च॥

त्रयुक्षा अत्व तूप्र गामृगम्। तानाश्चष्ठ आलमता सुनामुखम्व तथ्सङ्ख्याता तस्मौद्राजमुखं भीष्मं भावृंकम्। आग्नेयं कृष्णग्नीवं पुरस्तौक्षलाटै। पूर्वाग्निमेव तं कुंरुते॥८९॥

तस्मौत्पूर्वाग्निं पुरस्तौथ्स्थापयन्ति। पौष्णम्न्वश्चम्। अन्नं वै पूषा।

तस्मौत्पूर्वाग्नावांहार्यमा हंरन्ति। ऐन्द्रापौष्णमुपरिष्टात्। ऐन्द्रो वै रांज्नयोऽन्नं पूषा। अन्नाद्यंनैवेनंमुभयतः परिं गृह्णाति। तस्माद्राजन्यों उन्नादो भावुंकः। आग्नेयौ कृष्णग्रीवौ बाहुवोः। बाहुवोर्व वीर्यं धत्ते॥९०॥

तस्मौद्राजन्यों बाहुब्लीभावुंकः। त्वाष्ट्रौ लोमशसुक्थौ सुक्थ्योः। सुक्थ्योरेव वीर्यं धत्ते। तस्मौद्राज्नन्यं ऊरुबुलीभावुंकः। शितिपृष्ठौ बांर्हस्पृत्यौ पृष्ठे। ब्रह्मवर्चसमेवोपरिष्टाद्धत्ते। अथों कवचें एवैते अभितः पर्यूहते। तस्मौद्राजन्यः सन्नद्धो वीर्यं करोति। धात्रे पृषोदरमधस्तात्। प्रतिष्ठामेवैतां कुरुते। अथों इयं वै धाता। अस्यामेव प्रति तिष्ठति। सौर्यं बलक्षं पुच्छै। उथ्सेधमेव तं कुरुते। तम्मांदुथ्सेधम्भये प्रजा अभिसङ्श्रंयन्ति॥९१॥

कुरुते धुत्ते कुरुते पश्च च॥ [२३]

साङ्गहुण्या चतुष्टय्यो यो वै यः पितुश्चत्वारो यथां निक्तं प्रजापंतये त्वा यथा प्रोक्षितं विभूरांह प्रजापंतिरकामयताश्वमेधेनं

प्रजापंतिर्न किश्चन सांवित्रमा ब्रह्मंन्युजापंतिर्देवैभ्यः प्रजापंती रक्षा ईसि प्रजापंतिमीफ्सति विभूरंश्वनामान्यम्भाईस्येकयूपो

राज्जुंदालमेकवि २शो देवाः पुरुषस्त्रयोवि २शतिः॥२३॥

साङ्ग्रह्ण्या तस्मादश्वमेधयाजी यत्परिमिता यद्यंज्ञमुखे यो दीक्षां देवानेव त्रयं इमे सितायं प्राणापानावेवास्मिन्तस्माँद्राजन्यं

एकंनवतिः॥९१॥

साङ्ग्रहण्या सङ्श्रंयन्ति॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके अष्टमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥ नवमः प्रश्नः॥

॥ तैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके नवमः प्रपाठकः॥

प्रजापंतिरश्वमेधमंसृजत। सौंऽस्माथ्सृष्टोऽपाँकामत्। तमंष्टाद्शिभिरनु प्रायंङ्का। तमाँप्रोत्। तमास्वाऽष्टांद्शिभिरवांरुन्थ। यदंष्टाद्शिनं आलुभ्यन्तें। यज्ञमेव तैरास्वा यजमानोऽवंरुन्थे। संव्थस्रस्य वा एषा प्रंतिमा। यदंष्टाद्शिनंः। द्वादंश् मासाः पश्चर्तवंः॥१॥

संवथ्सरौंऽष्टाद्शः। यदंष्टाद्शिनं आलुभ्यन्तैं। संवथ्सरमेव तैराह्वा यजंमानो-ऽवंरुन्थे। अग्निष्ठैंऽन्यान्पशूनुंपाक्ररोतिं। इतरेषु यूपेष्वष्टाद्शिनोऽजांमित्वाय। नवंनवालंभ्यन्ते सवीर्यत्वायं। यदार्ण्यैः सर्थस्थापर्येत्। व्यवंस्येतां पितापुत्रौ। व्यथ्वानः क्रामेयुः। विदूरं ग्रामयोर्ग्रामान्तौ स्याताम्॥२॥

ऋक्षीकाः पुरुषव्याघाः पंरिमोषिणं आव्याधिनीस्तस्करा अरंण्येष्वाजांयेरन्। तदांहुः। अपंशवो वा एते। यदांरुण्याः। यदांरुण्यैः सर्इस्थापर्येत्। क्षिप्रे _____

नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

तैर्लोकमवं रुन्धे। यदारण्यान्॥५॥

यर्जमान्मरेण्यं मृत १ हेरेयुः। अरेण्यायतना ह्यांर्ण्याः पृशव इतिं। यत्पृशून्नालभेत। अनेवरुद्धा अस्य पशर्वः स्युः। यत्पर्यग्निकृतानुथ्मृजेत्॥३॥

यज्ञवेशसं कुर्यात्। यत्पश्नालभेते। तेनैव पश्नवंरुन्धे। यत्पर्यग्निकृतानुथ्सृजत्ययः

अवंरुद्धा अस्य पशवो भवंन्ति। न यंज्ञवेशसम्भवति। न यजंमानमरंण्यम्मृतः

हंरन्ति। ग्राम्येः सङ् स्थांपयित। एते वै पृशवः क्षेमो नामं। सं पितापुत्राववंस्यतः। समध्वांनः क्रामन्ति। सम्नित्कं ग्रामयोग्रीमान्तौ भंवतः। नर्क्षीकाः पुरुषव्याघ्राः परिमोषिणं आव्याधिनीस्तस्करा अरंण्येष्वाजांयन्ते॥४॥

क्रितवः स्यातामुथ्युजेथ्यंत्कीणि च॥

[१]

प्रजापंतिरकामयतोभौ लोकाववं रुन्धीयेतिं। स एतानुभयांन्पशूनंपश्यत्। ग्राम्याङ्श्चांरण्याङ्श्चं। तानालभत। तैर्वे स उभौ लोकाववांरुन्ध। ग्राम्यरेव

पशुभिरिमं लोकमवारन्ध। आरण्यैरमुम्। यद्ग्राम्यान्पशूनालभंते। इममेव

अमुन्तैः। अनेवरुद्धो वा एतस्यं संवथ्सर इत्यांहुः। य इतर्डतश्चातुर्मास्यानिं संवथ्सरं प्रयुङ्क इतिं। एतावान् वे संवथ्सरः। यचांतुर्मास्यानिं। यदेते चांतुर्मास्याः प्रश्वं आलुभ्यन्तें। प्रत्यक्षंमेव तैः संवथ्सरं यजमानोऽवंरुन्थे। वि वा एष प्रजयां प्रशिन्रस्थते। यः संवथ्सरं प्रयुङ्के। संवथ्सरः सुवर्गो लोकः॥६॥

सुवर्गन्तु लोकन्नापंराभ्नोति। प्रजा वै पृशवं एकाद्शिनीं। यदेत ऐकादशिनाः पृशवं आलुभ्यन्तें। साक्षादेव प्रजां पृशून् यर्जमानोऽवंरुन्थे। प्रजापंतिर्विराजमसृजत। सा सृष्टाऽश्वंमेधं प्राविंशत्। तान्द्शिभिरनु प्रायुंङ्का। तामाप्रोत्। तामास्वा द्शिभिरवांरुन्थ। यद्दशिनं आलुभ्यन्तें॥७॥

विराजमेव तैराह्वा यजमानोऽवंरुन्थे। एकांदश द्रशत् आलंभ्यन्ते। एकांदशाक्षरा त्रिष्ठुप्। त्रेष्टुंभाः पृशवंः। पृशूनेवावंरुन्थे। वैश्वदेवो वा अर्थः। नानादेवत्याः पृशवों भवन्ति। अश्वंस्य सर्वृत्वायं। नानांरूपा भवन्ति। तस्मान्नानांरूपाः पृशवंः। बहुरूपा भवन्ति। तस्माद्वहरूपाः पृशवः समृंद्धौ॥८॥ आरुण्याँ छोको दिशनं आलुभ्यन्ते नानां रूपाः पृशवो द्वे चं॥_______[२]

यद्ग्राम्यान्पशूनालभंते। इममेव तैर्लोकमवंरुन्थे। यदांरुण्यान्। अमुन्तैः। उभयान्पशूनालभते। गाम्या ॥ श्वार्ण्या ॥ अभवेशे अभयोन्पशूनालभते। याम्या ॥ श्वार्ण्या ॥ अभयेशे अभयोन्पशूनालभते। गाम्या ॥ अभयंस्यान्ना ॥ अभयोन्पशूनालभते। अभयोन्पशूनालभते।

अस्मै वै लोकार्य ग्राम्याः पशव आर्लभ्यन्ते। अमुष्मां आरण्याः।

ग्राम्या ॥ श्वां रण्या ॥ अर्थेषां पशूनामवं रुद्धै। त्रयं स्वयो भवन्ति। त्रयं इमे लोकाः। एषां लोकानामाप्त्रैं। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्मां थ्यत्यात्॥१०॥ अस्मिं होके बहवः कामा इति। यथ्संमानीभ्यों देवतां भयोऽन्यें ऽन्ये पृशवं आलभ्यन्तें। अस्मिन्नेव तहोके कामां न्दधाति। तस्मांदिसमां होके बहवः कामाः।

त्रयाणात्र्रयाणा स्मह वपा जुहोति। त्र्यांवृतो वै देवाः। त्र्यांवृत इमे लोकाः। एषां लोकानामार्स्यै। एषां लोकानां क्रूर्स्यै। पर्यम्भिकृतानार्ण्यानुथ्सृंजन्त्यहिर्स्साये॥११॥

अवंरुद्धा उभर्यांन्पुशूनालंभते स्त्यादिहि रंसायै॥______[3]

नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

युअन्तिं ब्रध्नमित्यांह। असौ वा आंदित्यो ब्रध्नः। आदित्यमेवास्मैं युनक्ति। अरुषमित्यांह। अग्निर्वा अंरुषः। अग्निमेवास्मै युनक्ति। चरंन्तमित्यांह। वायुर्वे चरन्। वायुमेवास्मै युनक्ति। परितस्थुष इत्यांह॥१२॥

इमे वै लोकाः परितस्थुषंः। इमानेवास्मैं लोकान् युनिक्ति। रोचन्ते रोचना दिवीत्यांह। नक्षंत्राणि वै रोचना दिवि। नक्षंत्राण्येवास्मै रोचयति। युअन्त्यंस्य काम्येत्यांह। कामांनेवास्मैं युनक्ति। हरी विपंक्षसेत्यांह। इमे वै हरी विपंक्षसा। इमे एवास्मै युनक्ति॥१३॥

शोणां धृष्णू नृवाहसेत्यांह। अहोरात्रे वै नृवाहंसा। अहोरात्रे एवास्मै युनक्ति। पुता पुवास्मै देवतां युनक्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्धि। केतुं कृण्वन्नंकेतव इति ध्वजं प्रतिमुश्रति। यशं एवैन र राज्ञां क्रमयति। जीमूर्तस्येव भवति प्रतींकमित्यांह। यथायजुरेवैतत्। ये ते पन्थांनः सवितः पूर्व्यास् इत्येध्वर्युर्यजीमानं वाचयत्यभिजिंत्यै॥१४॥

परा वा एतस्यं यज्ञ एंति। यस्यं प्रशुरुपार्कृतोऽन्यत्र वेद्या एति। एतः स्तोतरेतनं पथा पुन्रश्वमावंतियासि न इत्यांह। वायुर्वे स्तोतां। वायुमेवास्यं प्रस्तांद्वधात्यावृत्त्ये। यथा वे ह्विषों गृहीतस्य स्कन्दित। एवं वा एतदश्वंस्य स्कन्दित। यदंस्योपाकृतस्य लोमांनि शीयंन्ते। यद्वालेषु काचानावयंन्ति। लोमांन्येवास्य तथ्सम्भरिन्त॥१५॥ भूर्भुवः सुवरितिं प्राजापत्याभिरावंयन्ति। प्राजापत्यो वा अश्वंः। स्वयैवैनं

न्भूषुः सुपारत प्राजापुरवान्ता प्राजापुरवा वा अवः। स्वयवन देवतंया समर्थयन्ति। भूरिति महिषी। भुव इति वावाताः। सुवरितिं परिवृक्ती। एषां लोकानांम्भिजिंत्ये। हिर्ण्ययाः काचा भवन्ति। ज्योतिर्वे हिर्ण्यम्। राष्ट्रमंश्वमेधः॥१६॥

ज्योतिंश्चैवास्मै राष्ट्रं चं समीचीं दधाति। सहस्रम्भवन्ति। सहस्रंसिम्मतः सुवर्गो लोकः। सुवर्गस्यं लोकस्याभिजित्यै। अप वा एतस्मात्तेजं इन्द्रियं प्रावः श्रीः क्रांमन्ति। यौऽश्वमेधेन यजंते। वसंवस्त्वाऽञ्जन्तु गायत्रेण छन्दसेति महिष्यभ्यंनक्ति। तेजो वा आज्यम्। तेजो गायत्री। तेजंसैवास्मै

तेजोऽवंरुन्धे॥१७॥

रुद्रास्त्वां अन्तु त्रेष्टुंभेन् छन्द्रसेतिं वावातां। तेजो वा आज्यम्। इन्द्रियं त्रिष्टुप्। तेजंसैवास्मां इन्द्रियमवंरुन्थे। आदित्यास्त्वां ऽअन्तु जागंतेन् छन्द्रसेतिं परिवृक्ती। तेजो वा आज्यम्। पृशवो जगंती। तेजंसैवास्में पृशूनवंरुन्थे। पत्नयोऽभ्यंअन्ति। श्रिया वा एतद्रूपम्॥१८॥

यत्पत्नयः। श्रियंमेवास्मिन्तद्दंधित। नास्मात्तेजं इन्द्रियं पृशवः श्रीरपं क्रामन्ति। लाजी (३) ञ्छाची (३) न् यशोंमुमाँ(४) इत्यतिंरिक्तमन्नमश्वांयोपाहंरन्ति। प्रजामेवान्नादीं कुर्वते। एतद्देवा अन्नमत्तैतदन्नमिद्ध प्रजापत् इत्यांह। प्रजायांमेवान्नाद्यंन्दधते। यदि नावजिष्ठेत्। अग्निः पृशुरांसीदित्यवंघ्रापयेत्। अवं हैव जिंघ्रति। आक्रान् वाजी क्रमेरत्यंक्रमीद्वाजी द्यौस्ते पृष्ठं पृथिवी स्थस्थमित्यश्वमनुंमन्नयते। एषां लोकानांम्भिजित्यै। समिद्धो अञ्चन्कृदंरं मतीनामित्यश्वस्याप्रियों भवन्ति सरूपत्यायं॥१९॥

परिंतुस्थुष् इत्यांहुमे एवासमैं युनक्त्यभिर्जित्यै भरन्त्यश्वमेधो रुन्धे रूपश्चिंघ्रति त्रीणिं च॥————[४]

तेजंसा वा एष ब्रह्मवर्चसेन् व्यृंद्धते। योंऽश्वमेधेन् यजंते। होतां च ब्रह्मा चं ब्रह्मोद्यं वदतः। तेजंसा चैवैनं ब्रह्मवर्चसेनं च समर्धयतः। दक्षिणतो ब्रह्मा भंवति। दक्षिणतआंयतनो वै ब्रह्मा। बार्ह्स्पत्यो वै ब्रह्मा। ब्रह्मवर्चसमेवास्यं दक्षिणतो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽर्धौ ब्रह्मवर्चसितंरः। उत्तरतो होतां भवति॥२०॥

उत्तर्तआंयतनो वै होतां। आग्नेयो वै होतां। तेजो वा अग्निः। तेजं प्वास्योत्तर्तो दंधाति। तस्मादुत्तरोऽर्धस्तेज्स्वितंरः। यूपंमभितों वदतः। यज्मानदेवत्यों वै यूपंः। यजंमानमेव तेजंसा च ब्रह्मवर्चसेनं च समर्धयतः। किङ स्विदासीत्पूर्वचित्तिरित्यांह। द्यौर्व वृष्टिः पूर्वचित्तिः॥२१॥

दिवंमेव वृष्टिमवंरुन्थे। किश्स्वंदासीद्भृहद्वय इत्यांह। अश्वो वै बृहद्वयंः। अश्वंमेवावंरुन्थे। किश्स्वंदासीत्पिशङ्गिलेत्यांह। रात्रिवे पिशङ्गिला। रात्रिमेवावंरुन्थे। किश्स्वंदासीत्पिलिप्पिलेत्यांह। श्रीवे पिलिप्पिला। अन्नाद्यमेवावंरुन्थे॥२२॥

कः स्विदेकाकी चेर्तीत्यांह। असौ वा आंदित्य एंकाकी चेरित। तेजं एवावंरुन्थे। क उंस्विज्ञायते पुनिरत्यांह। चन्द्रमा वै जांयते पुनेः। आयुरेवावंरुन्थे। किश्र स्विद्धिमस्य भेषजमित्यांह। अग्निर्वे हिमस्यं भेषजम्। ब्रह्मवर्चसमेवावंरुन्थे। किश्र स्विदावपनं महिदत्यांह॥२३॥ अयं वै लोक आवपनं महत्। अस्मिन्नेव लोके प्रतिं तिष्ठति। पृच्छामिं त्वा पर्मन्तं पृथिव्या इत्यांह। वेदिवें परोऽन्तः पृथिव्याः। वेदिमेवावंरुन्थे।

त्वा पर्मन्तं पृथिव्या इत्यांह। वेदिवें परोऽन्तः पृथिव्याः। वेदिमेवावंरुन्थे। पृच्छामि त्वा भुवंनस्य नाभिमित्यांह। यज्ञो वे भुवंनस्य नाभिः। यज्ञमेवावंरुन्थे। पृच्छामि त्वा वृष्णो अश्वंस्य रेत इत्यांह। सोमो वे वृष्णो अश्वंस्य रेतंः। सोमपीथमेवावंरुन्थे। पृच्छामि वाचः पर्मं व्योमत्यांह। ब्रह्म वे वाचः पर्मं व्योम। ब्रह्मवर्चसमेवावंरुन्थे॥२४॥
होतां भवति वे वृष्टिः पूर्वचित्तिर्ज्ञाद्यमेवावंरुन्थे महदित्यांह सोमो वे वृष्णो अश्वंस्य रेतंश्चत्वारि च॥———[५]

अप् वा पुतस्मांत्प्राणाः ऋामिन्ति। योंऽश्वमेधेन् यजेते। प्राणाय् स्वाहां व्यानाय् स्वाहेतिं संज्ञप्यमान् आहुंतीर्जुहोति। प्राणानेवास्मिन्दधाति। नास्माँत्प्राणा अपंक्रामन्ति। अवंन्तीः स्थावंन्तीस्त्वाऽवन्तु। प्रियं त्वाँ प्रियाणाँम्। वर्षिष्ठमाप्यांनाम्। निधीनां त्वां निधिपति हवामहे वसो ममेत्यांह। अपैवास्मै तद्धंवते॥२५॥

अथों धुवन्त्येवैनम्ं। अथो न्येंवास्मैं हुवते। त्रिः परियन्ति। त्रयं इमे लोकाः। पुभ्य पुवैनं लोकभ्यों धुवते। त्रिः पुनः परियन्ति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतुभिरेवैनंन्धुवते। अप वा एतेभ्यः प्राणाः क्रांमन्ति॥२६॥

ये यज्ञे धुवंनन्त्वतें। नृवकृत्वः परियन्ति। नव वै पुरुषे प्राणाः। प्राणानेवाऽऽत्मन्दंधते। नैभ्यः प्राणा अपंक्रामन्ति। अम्बे अम्बाल्यम्बिक इति पत्नीमुदानयित। अह्वतैवैनाम्। सुभगे काम्पीलवासिनीत्याह। तपं पृवैनामुपंनयित। सुवर्गे लोके सम्प्रोण्वांथामित्यांह॥२७॥

सुवर्गमेवैनां लोकं गंमयति। आऽहमंजानि गर्भधमा त्वमंजाऽसि गर्भधमित्यांह। प्रजा वै पृशवो गर्भः। प्रजामेव पृशूनात्मन्धंत्ते। देवा वा अश्वमेधे पर्वमाने। सुवुर्गं लोकं न प्राजानन्। तमश्वः प्राजानात्। यथ्सूचीभिरसिपथान्कल्पयन्ति। सुवुर्गस्यं लोकस्य प्रज्ञात्ये। गायत्री त्रिष्टुज्जगृतीत्यांह॥२८॥ यथायुजुरेवैतत्। त्रय्यः सूच्यों भवन्ति। अयस्मय्यों रजता हरिण्यः। अस्य

वै लोकस्यं रूपमंयस्मय्यंः। अन्तरिक्षस्य रज्ञताः। दिवो हरिण्यः। दिशो वा अयस्मय्यंः। अवान्त्रदिशा रंज्ताः। ऊर्ध्वा हरिण्यः। दिशं एवास्में कल्पयित। कस्त्वां छाति कस्त्वा विशास्तीत्याहाहि रंसायै॥२९॥

हुवते कामन्त्रपूर्ण्यामित्याह जग्तीत्यांह कल्पयुत्येकं च॥——[६]

हुन्ते कामन्त्यूर्ण्यामित्यां जग्तीत्यां कल्पय्त्येकं चा——————[६]
अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रं क्रांमित। यो ऽश्वमेधेन यजंते। ऊर्ध्वामेनामुच्छ्रंयतादित्यांह
श्रीर्वे राष्ट्रमंश्वमेधः। श्रियमेवास्मै राष्ट्रमूर्ध्वमुच्छ्रंयित। वेणुभारङ्गिराविवेत्यांह। राष्ट्रं
वे भारः। राष्ट्रमेवास्मै पर्यूहिति। अथास्या मध्यमेधतामित्यांह। श्रीर्वे राष्ट्रस्य
मध्यम्॥३०॥

श्रियंमेवावंरुन्थे। शीते वातं पुनित्रवेत्यांह। क्षेमो वै राष्ट्रस्यं शीतो वातं। क्षेममेवावंरुन्थे। यद्धरिणी यवमत्तीत्यांह। विङ्वे हंरिणी। राष्ट्रं यवंः। विशं चैवास्में राष्ट्रं चं समीची दधाति। न पुष्टं पृशु मन्यत् इत्यांह। तस्माद्राजां पृशूत्र पृष्यंति॥३१॥

शूद्रा यदर्यं जारा न पोषांय धनायतीत्यांह। तस्माँ द्वैशीपुत्रन्नाभिषिश्चन्ते। इयं यका शंकुन्तिकेत्यांह। विश्वे शंकुन्तिका। राष्ट्रमंश्वमेधः। विश्वं चैवास्में राष्ट्रं चं समीचीं दधाति। आहलुमिति सर्पतीत्यांह। तस्माँ द्वाष्ट्राय विश्वं सर्पन्ति। आहं तङ्गभे पस् इत्यांह। विश्वे गभः॥३२॥
राष्ट्रं पसंः। राष्ट्रमेव विश्याहंन्ति। तस्माँ द्वाष्ट्रं विश्वं घातंकम। माता चं ते पिता

राष्ट्रं पसंः। राष्ट्रमेव विश्याहंन्ति। तस्माँद्राष्ट्रं विशं घातुंकम्। माता चं ते पिता चं तृ इत्यांह। इयं वै माता। असौ पिता। आभ्यामेवैनं परिंददाति। अग्रं वृक्षस्यं रोहत् इत्यांह। श्रीवै वृक्षस्याग्रम्। श्रियमेवावं रुन्धे॥३३॥

प्रसुंलामीतिं ते पिता गुभे मुष्टिमंत १ सयदित्यांह। विड्वै गर्भः। राष्ट्रम्मुष्टिः।

राष्ट्रस्य मध्यं पुर्ष्यात गभों रुन्धे दधते चत्वारिं च॥

राष्ट्रमेव विश्याहंन्ति। तस्माँद्राष्ट्रं विशं घातुंकम्। अप वा एतेभ्यंः प्राणाः क्रांमन्ति। ये यज्ञेऽपूंतं वदंन्ति। दुधिकाव्णां अकारिष्मितिं सुरिभमतीमृचं वदन्ति। प्राणा वै सुर्भयः। प्राणानेवाऽऽत्मन्दंधते। नैभ्यः प्राणा अपंक्रामन्ति। आपो हि ष्ठा मयोभुव इत्यद्भिर्मार्जयन्ते। आपो वै सर्वा देवताः। देवतांभिरेवात्मानं पवयन्ते॥३४॥

प्रजापंतिः प्रजाः सृष्ट्वा प्रेणाऽनु प्राविंशत्। ताभ्यः पुनः सम्भवितुन्नाशंक्रोत्। सौंऽब्रवीत्। ऋध्रवृदिथ्सः। यो मेतः पुनः सम्भरदितिं। तं देवा अश्वमेधेनैव सम्भरन्। ततो वै त आर्ध्रवन्। योऽश्वमेधेन् यजंते। प्रजापंतिमेव सम्भरत्यृध्नोतिं। पुरुष्मालंभते॥३५॥

वैराजो वै पुरुषः। विराजमेवालंभते। अथो अन्नं वै विराट्। अन्नमेवावंरुन्धे। अश्वमालंभते। प्राजापत्यो वा अश्वः। प्रजापंतिमेवालंभते। अथो श्रीर्वा एकंशफम्। श्रियमेवावंरुन्धे। गामालंभते॥३६॥ लभते गामालंभते परमौंऽष्टौ चं॥____

युज्ञो वै गौः। युज्ञमेवार्लभते। अथो अत्रुं वै गौः। अन्नमेवार्वरुधे। अजावी आर्लभते भूमे। अथो पृष्टिवै भूमा। पृष्टिमेवार्वरुखे। पर्यमिकृतं पुरुषश्चार्ण्या इक्षोध्सृंजन्त्यहि समये। उभौ वा एतौ पृशू आर्लभ्येते। यश्चांवमो यश्चं पर्मः। तेंऽस्योभये युज्ञे बुद्धाः। अभीष्टां अभिप्रींताः। अभिजिंता अभिहुंता भवन्ति। नैनंन्दुङ्क्ष्यंः पृश्वो युज्ञे बुद्धाः। अभीष्टां अभिप्रींताः। अभिजिंता अभिहुंता हि सन्ति। योंऽश्वमेधेन् यज्ञते। य उं चैनमेवं वेदं॥३७॥

प्रथमेन वा एष स्तोमेन राध्वा। चतुष्टोमेन कृतेनायांनामुत्तरेहन्ं। एकवि १ श्रेतिष्ठायां प्रति तिष्ठति। एकवि १ शात्प्रंतिष्ठायां ऋतून्न्वारोहित। ऋतवो वै पृष्ठानिं। ऋतवेः संवथ्सरः। ऋतुष्वेव संवथ्सरे प्रंतिष्ठाये। देवतां अभ्यारोहित। शक्करयः पृष्ठम्भवन्त्यन्यदंन्युच्छन्दंः। अन्येंऽन्ये वा एते पृशव आलंभ्यन्ते॥३८॥

उतेवं ग्राम्याः। उतेवांरुण्याः। अहंरेव रूपेण समर्धयति। अथो अहं एवैष

लभ्यन्ते लभते त्वाष्ट्रान्पशूनालंभतेऽष्टौ चं॥

बुलिर्ह्रियते। तदांहुः। अपंशवो वा एते। यदंजावयंश्चार्ण्याश्चं। एते वै सर्वे पृशवंः। यद्गव्या इतिं। गव्यान्पशूनुंत्तमेऽहं नालंभते॥३९॥

तेनैवोभयांन्पशूनवंरुन्धे। प्राजापत्या भंवन्ति। अनंभिजितस्याभिजिंत्यै। सौरीर्नवं श्वेता वशा अनूबन्ध्यां भवन्ति। अन्तत एव ब्रंह्मवर्चसमवंरुन्धे। सोमांय स्वराज्ञें ऽनोवाहावंनङ्गाहावितिं द्वन्द्विनः पुशूनालंभते। अहोरात्राणांमुभिजिंत्यै। पश्भिर्वा एष व्यृंध्यते। योंऽश्वमेधेन यजंते। छगलङ्कल्माषंङ्किकिदीविं विंदीगयमितिं त्वाष्ट्रान्पशूना लंभते। पृशुभिरेवात्मान् समर्पयति। ऋतुभिर्वा एष व्यृध्यते। यो ऽश्वमेधेन यजंते। पिशङ्गास्त्रयो वासन्ता इत्यृंतुपशूनालंभते। ऋतुभिरेवात्मान् समर्थयति। आ वा एष पशुभ्यो वृथ्यते। यौऽश्वमेधेन यजेते। पर्यमिकृता उथ्मृजन्त्यनांवस्काय॥४०॥

प्रजापंतिरकामयत महानंत्रादः स्यामितिं। स एतावंश्वमेधे मंहिमानांवपश्यत्।

तावंगृह्णीत। ततो वै स महानंत्रादों उभवत। यः कामयेत महानंत्रादः स्यामिति। स एतावंश्वमेधे मंहिमानौ गृह्णीत। महानेवात्रादो भंवति। यज्ञमानदेवत्यां वै वपा। राजां महिमा। यद्धपाम्मंहिम्नोभ्यतः पिर्यजंति। यजंमानमेव राज्येनोभ्यतः पिरंगृह्णाति। पुरस्तांथ्स्वाहाकारा वा अन्ये देवाः। उपिरंष्टाथ्स्वाहाकारा अन्ये। ते वा एतेऽश्वं एव मेध्यं उभयेऽवंरुध्यन्ते। यद्धपाम्मंहिम्नोभ्यतः पिर्यजंति। तानेवोभयांन्त्रीणाति॥४१॥

वृश्वदेवो वा अश्वंः। तं यत्प्रांजापृत्यं कुर्यात्। या देवता अपिंभागाः। ता भागधेयेन व्यर्धयेत्। देवतांभ्यः समदेन्दध्यात्। स्तेगान्दङ्ष्ट्रांभ्यां मृण्डूकां जम्भ्येभिरिति। आज्यंमवदानं कृत्वा प्रतिसङ्ख्यायमाहुंतीर्जुहोति। या एव देवता अपिंभागाः। ता भागधेयेन समर्धयित। न देवतांभ्यः समदं दधाति॥४२॥ चतुंदंशैतानंनुवाकाञ्जंहोत्यनंन्तरित्यै। प्रयासाय स्वाहेतिं पञ्चदशम्। पञ्चंदश वा

नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अर्धमासस्य रात्रयः। अर्धमासशः संवथ्सर औप्यते। देवासुराः संयंता आसन्। तें ऽब्रुवन्नग्रयंः स्विष्टकृतंः। अश्वंस्य मेध्यंस्य व्यमुंद्धारमुद्धंरामहै। अथैतानुभि भंवामेति। ते लोहितमुदंहरन्त। ततो देवा अभंवन्॥४३॥

पराऽसुंराः। यथ्स्वंष्टकृद्धो लोहितं जुहोति भ्रातृंव्याभिभूत्यै। भवंत्यात्मनां। पराँऽस्य भ्रातृंव्यो भवति। गोमृगकण्ठेनं प्रथमामाहुंतिं जुहोति। पशवो वै गोंमृगः। रुद्रौंऽग्निः स्विष्टकृत्। रुद्रादेव पुशूनन्तर्दधाति। अथो यत्रैषाऽऽहुंतिर्हूयतैं। न तत्रं रुद्रः पश्ननभिमंन्यते॥४४॥

अश्वशफेनं द्वितीयामाहुंतिं जुहोति। पृशवो वा एकंशफम्। रुद्रौंऽग्निः स्विष्टुकृत्। रुद्रादेव पुशून्-तर्दंधाति। अथो यत्रैषाऽऽहुंतिर्हूयतें। न तत्रं रुद्रः पुशून्भिमंन्यते। अयस्मर्थेन कमण्डलुंना तृतीयाँम्। आहुंतिं जुहोत्यायास्यों वै प्रजाः। रुद्रौंऽग्निः

स्विष्टकृत्। रुद्रादेव प्रजा अन्तर्दधाति। अथो यत्रैषाऽऽहुंतिर्हूयतें। न तत्रं रुद्रः प्रजा अभिमंन्यते॥४५॥

द्यात्यर्भवन्मन्यते प्रजा अन्तर्दधाति हे चं ॥————[११] अश्वस्य वा आलंब्यस्य मेध् उदंक्रामत्। तदंश्वस्तोमीयंमभवत्। यदंश्वस्तोमीयं जहोति। समेधमेवैनमालंभते। आज्येन जहोति। मेधो वा आज्यमं। मेधों-

जुहोति। समेधमेवैनमार्लभते। आज्येन जुहोति। मेधो वा आज्यम्। मेधौ-ऽश्वस्तोमीयम्। मेधेनैवास्मिन्मेधं दधाति। षद्गिर्श्शतं जुहोति। षद्गिर्श्शदक्षरा बृहती॥४६॥

बार्हंताः पृशवंः। सा पंशूनाम्मात्रां। पृशूनेव मात्रया समर्धयित। तायद्भूयंसीर्वा कनीयसीर्वा जुहुयात्। पृशून्मात्रया व्यर्धयेत्। षिद्गर्श्शतं जुहोति। षिद्गर्श्शदक्षरा बृहती। बार्हंताः पृशवंः। सा पंशूनाम्मात्रां। पृशूनेव मात्रया समर्धयित॥४७॥

अश्वस्तोमीय हुत्वा द्विपदां जुहोति। द्विपाद्वै पुरुषो द्विप्रंतिष्ठः। तदेनं प्रतिष्ठया समर्थयित। तदांहुः। अश्वस्तोमीयं पूर्व होत्व्याँ(३)न्द्विपदाँ(३) इतिं। अश्वो वा अश्वस्तोमीयम्। पुरुषो द्विपदाः। अश्वस्तोमीय हुत्वा द्विपदां जुहोति। तस्माँद्विपा चतुंष्पादमत्ति। अथौं द्विपदोव चतुंष्पदः प्रतिष्ठायपति। द्विपदां हुत्वा।

नान्यामुत्तरामाहुंतिं जुहुयात्। यद्न्यामुत्तरामाहुंतिं जुहुयात्। प्र प्रतिष्ठायाँश्चयवेत। द्विपदां अन्ततो जुंहोति प्रतिष्ठित्यै॥४८॥

बृह्त्यंर्धयित स्थापयित पश्चं च॥——[१२]
प्रजापंतिरश्वमेधमंसृजत। सौंऽस्माथ्सृष्टोऽपाँकामत्। तं यंज्ञकृतुभि्रन्वैंच्छत्।
तं यंज्ञकृतिभर्नान्वंविन्दत्। तमिष्टिंभिरन्वैंच्छत्। तमिष्टिंभिरन्वंविन्दत्।

त यज्ञकृतु।म्नान्वावन्दत्। तामाष्टाम्रन्वच्छत्। तामाष्टाम्रन्वावन्दत्। तदिष्टीनामिष्टित्वम्। यथ्संवथ्स्रमिष्टिभियंजंते। अश्वमेव तदन्विच्छति। सावित्रियो भवन्ति॥४९॥

ड्यं वै संविता। यो वा अस्यान्नश्यंति यो निलयंते। अस्यां वाव तं विन्दन्ति। न वा ड्रमाङ्कश्चनेत्यांहुः। तिर्यङ्गोर्ध्वोत्यंतुमर्ह्तीतिं। यथ्मांवित्रियो भवंन्ति। स्वितृप्रंसूत एवैनंमिच्छति। ईश्वरो वा अश्वः प्रमुंक्तः परां परावतङ्गन्तौः। यथ्मायं धृतींर्जुहोतिं। अश्वंस्यैव यत्यै धृत्यै॥५०॥ यत्प्रातिरिष्टिंभिर्यजंते। अश्वंमेव तदन्विच्छति। यथ्मायं धृतींर्जुहोतिं। अश्वंस्यैव यत्यै धृत्यै॥ तस्मांथ्सायं प्रजाः

क्षेम्यां भवन्ति। यत्प्रातिरिष्टिंभिर्यजंते। अश्वंमेव तदन्विंच्छति। तस्माद्दिवां नष्टेष एति। यत्प्रातिरिष्टिंभिर्यजंते सायं धृतींर्जुहोतिं। अहोरात्राभ्यांमेवेनमन्विंच्छति। अथों अहोरात्राभ्यांमेवास्मैं योगक्षेमं केल्पयति॥५१॥

भ्वन्ति धृत्यां एन्मन्विंच्छुत्येके च॥——[१३] अप वा एतस्माच्छ्री राष्ट्रङ्कांमति। यो ऽश्वमेधेन यजंते। ब्राह्मणौ वींणागाथिनौ

अप वा पुतस्माच्छ्रा राष्ट्रङ्कामाता याऽश्वम्यन् यजता ब्राह्मणा वाणागायना गायतः। श्रिया वा पृतद्रूपम्। यद्वीणां। श्रियंमेवास्मिन्तद्धंत्तः। यदा खलु वे पुरुषः श्रियंमश्जुते। वीणांऽस्मै वाद्यते। तदांहुः। यदुभौ ब्राह्मणो गायेताम्॥५२॥

प्रभःशुंकास्माच्छीः स्यात्। न वै ब्राह्मणे श्री रमत् इति। ब्राह्मणौऽन्यो गायत्। राजन्यौऽन्यः। ब्रह्म वै ब्राह्मणः। क्षत्रः राजन्यः। तथां हास्य ब्रह्मणा

गायेत्। राज्नन्योऽन्यः। ब्रह्म वे ब्राह्मणः। क्षत्र राज्नन्यः। तथा हास्य ब्रह्मणा च क्षत्रेणं चोभ्यतः श्रीः परिगृहीता भवति। तदांहुः। यदुभौ दिवा गायेताम्। अपारमाद्राष्ट्रङ्कामेत्॥५३॥

न वे बाह्मणे राष्ट्र रमत दिति। यदा खळ वे राज्यं कामरावे। अर्थ

न वै ब्रांह्मणे राष्ट्र रंमत् इतिं। युदा खलु वै राजां कामयंते। अर्थ

ब्राह्मणि नित्रं। दिवां ब्राह्मणो गांयेत्। नक्तर्रं राज्नन्यः। ब्रह्मणो वै रूपमहंः। क्षत्रस्य रात्रिः। तथां हास्य ब्रह्मणा च क्षत्रेणं चोभ्यतो राष्ट्रं परिगृहीतम्भवति। इत्यंददा इत्यंयजथा इत्यंपच इतिं ब्राह्मणो गायेत्। इष्टापूर्तं वै ब्राह्मणस्यं॥५४॥

इष्टापूर्तेनैवेन् स समर्धयित। इत्यंजिना इत्यंयुध्यथा इत्यमु संङ्गाममंहिन्निति राजन्यः। युद्धं व राजन्यंस्य। युद्धेनैवेन् स समर्धयित। अक्रुंप्ता वा एतस्यर्तव इत्यांहः। योऽश्वमेधेन् यजंत इति। तिस्रोंऽन्यो गायंति तिस्रोंऽन्यः। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतूनेवास्मे कल्पयतः। ताभ्या स् स्इस्थायांम्। अनोयुक्ते च शते च ददाति। शतायुः पुरुषः श्तेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रति तिष्ठति॥५५॥

गायंताङ्गामेद्वाह्मणस्यं कल्पयतश्चलारि च॥——[१४]

सर्वेषु वा एषु लोकेषुं मृत्यवोऽन्वायंत्ताः। तेभ्यो यदाहुंतीर्न जुंहुयात्। लोकेलोक एनं मृत्युर्विन्देत्। मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहेत्यंभिपूर्वमाहुंतीर्जुहोति। लोकाल्लोकादेव मृत्युमवंयजते। नैनं लोकेलोके मृत्युर्विन्दित। यद्मुष्मे स्वाहा- नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

ऽमुष्मे स्वाहेति जुह्वंथ्स्श्रक्षीत। बहुं मृत्युम्मित्रं कुर्वीत। मृत्यवे स्वाहेत्येकंस्मा एवैकां जुहुयात्। एको वा अमुष्मिं ह्योके मृत्युः॥५६॥

अश्नया मृत्युरेव। तमेवामृष्मिं ह्योकेऽवंयजते। भ्रूणहृत्याये स्वाहेत्यंवभृथ आहुंतिं जुहोति। भ्रूणहृत्यामेवावं यजते। तदांहुः। यद्भूणहृत्या पात्र्याऽथं। कस्मां द्यज्ञेऽपि क्रियत् इतिं। अमृत्युर्वा अन्यो भ्रूणहृत्याया इत्यांहुः। भ्रूणहृत्या वाव मृत्युरितिं। यद्भूणहृत्याये स्वाहेत्यंवभृथ आहुंतिं जुहोतिं॥५७॥ मृत्युमेवाहुंत्या तर्पयित्वा परिपाणं कृत्वा। भ्रूणघ्ने भेष्जं करोति। एता १ ह वै मुंण्डिभ औदन्यवः। भ्रूणहत्याये प्रायंश्चित्तं विदां चंकार। यो हास्यापिं

उत्तमामाहंतिं जुहोति। वर्रणो वै जुंम्बकः। अन्तत एव वर्रणमवंयजते। खलतेर्विक्किथस्यं शुक्कस्यं पिङ्गाक्षस्यं मूर्धं जुंहोति। एतद्वै वर्रणस्य रूपम्। रूपेणैव वर्रणमवंयजते॥५८॥

प्रजायां ब्राह्मण हिन्तं। सर्वस्मै तस्मै भेषुजं करोति। जुम्बुकाय स्वाहेत्यंवभृथ

लोके मृत्युर्जुहोति मूर्ध जुंहोति हे चं। [१५] वारुणो वा अर्थः। तं देवतंया व्यर्धयति। यत्प्रांजापृत्यं करोति। नमो राज्ञे

नमो वर्रुणा वा अश्वः। त द्वतया व्यवयाता यत्राजापुत्य क्राता नमा राज्ञ नमो वर्रुणायेत्याह। वारुणो वा अश्वः। स्वयैवैनं देवतया समर्धयति। नमोऽश्वाय नमः प्रजापंतय इत्याह। प्राजापत्यो वा अश्वः। स्वयैवैनं देवतंया समर्धयति। नमोऽधिपतय इत्याह॥५९॥

धर्मो वा अधिपतिः। धर्ममेवावंरुन्थे। अधिपतिर्स्यधिपतिम्मा कुर्वधिपतिर्हं प्रजानां भूयासमित्यांह। अधिपतिमेवेन समानानां करोति। मान्धेहि मिये धेहीत्यांह। आशिषंमेवेतामाशांस्ते। उपाकृताय स्वाहेत्युपाकृते जुहोति। आलंब्याय स्वाहेति नियुंक्ते जुहोति। हुताय स्वाहेतिं हुते जुंहोति। एषां लोकानांमभिजिंत्ये॥६०॥

प्र वा एष एभ्यो लोकेभ्यंश्च्यवते। योंऽश्वमेधेन् यजंते। आग्नेयमैंन्द्राग्नमाश्चिनम्। तान्पुशूलंभते प्रतिष्ठित्यै। यदांग्नेयो भवंति। अग्निः सर्वा देवताः। देवतां एवावंरुन्थे। ब्रह्म वा अग्निः। क्षत्रमिन्द्रः। यदैन्द्राग्नो भवंति॥६१॥

नवमः प्रश्नः (अष्टकम् ३)

अधिपतय इत्यांहाभिजित्या ऐन्द्राग्नो भवंति रुन्धु एकं च॥______

इमे लोकाः। एष्वंव लोकेषु प्रति तिष्ठति। अग्नयेऽ १ होमुचेऽष्टाकंपाल इति

ब्रह्मक्षत्रे एवावंरुन्धे। यदाँश्विनो भवंति। आशिषामवंरुद्धै। त्रयों भवन्ति। त्रयं

अग्नेमंन्वे प्रथमस्य प्रचेतस इति याज्यानुवाक्यां भवन्ति सर्वत्वायं॥६२॥

दर्शहिवषमिष्टिं निर्वपति। दशाँक्षरा विराट्। अर्न्नं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवंरुन्धे।

यद्यर्श्वमुपतपंद्विन्देत्। आग्नेयमष्टाकपालं निर्वपेत्। सौम्यं चरुम्।

सावित्रमष्टाकंपालम्। यदाँग्नेयो भवंति। अग्निः सर्वा देवताः। देवतांभिरेवैनंम्भिषज्यति

ताभिरेवैनंम्भिषज्यति। यथ्सांवित्रो भवंति। स्वितृप्रंसूत एवैनंम्भिषज्यति।

पुताभिरेवैनं देवतांभिर्भिषज्यति। अगदो हैव भंवति। पौष्णं चुरुं निर्वपेत्। यदिं

श्रोणः स्यात्। पूषा वै श्लौण्यंस्य भिषक्। स एवेनंम्भिषज्यति। अश्लोणो हैव

यथ्सौम्यो भवंति। सोमो वा ओषंधीना राजां। याभ्यं एवेनं विन्दतिं॥६३॥

भंवति॥६४॥

रौद्रं चुरुं निर्विपेत्। यदिं मह्ती देवतांऽभिमन्येत। पृत्देवत्यों वा अश्वः। स्वयैवैनं देवत्या भिषज्यति। अगदो हैव भवति। वैश्वान्रं द्वादंशकपालं निर्विपेन्मृगाख्रे यदि नागच्छेंत्। इयं वा अग्निवैश्वान्रः। इयमेवैनंमूर्चिभ्यां परिरोधमानंयति। आहैव सुत्यमहंर्गच्छति। यद्यंधीयात्॥६५॥

अग्नयेऽ रहोमुचेऽष्टाकंपालः। सौर्यं पर्यः। वायव्यं आज्यंभागः। यजंमानो वा अर्थः। अर्श्हसा वा एष गृहीतः। यस्याश्वो मेधाय प्रोक्षितोऽध्येति। यद रहोमुचे निर्वपंति। अर्हस एव तेन मुच्यते। यजंमानो वा अर्थः। रेतंसा वा एष व्यृध्यते॥६६॥

यस्याश्वो मेधांय प्रोक्षितोऽध्येति। सौर्यर रेतः। यथ्सौर्यं पयो भवंति। रेतंसैवैन्र् स समर्धयति। यजमानो वा अश्वः। गर्भैर्वा एष व्यृध्यते। यस्याश्वो मेधांय प्रोक्षितो-ऽध्येतिं। वायव्यां गर्भाः। यद्वांयव्यं आज्यंभागो भवंति। गर्भेरेवैन्र् स समर्धयति। अथो यस्यैषाऽश्वंमेधे प्रायंश्चित्तिः क्रियतें। इष्ट्वा वसीयान्भवति॥६७॥

तदांहुः। द्वादंश ब्रह्मौद्नान्थ्स इस्थिते निर्विपत्। द्वाद्शिभिर्वजेतेति। यदिष्टिभिर्यजेत्। उपनामुंक एनं युज्ञः स्यौत्। पापीया १ स्तु स्यौत्। आप्तानि वा एतस्य छन्दा १ सि। य ईजानः। तानि क एतावंदाशु पुनः प्रयं जीतेति। सर्वा वै सङ्स्थिते यज्ञे वागौप्यते॥६८॥

साप्ता भंवति यातयाँम्नी। ऋरीकृतेव हि भवत्यरुष्कृता। सा न पुनः प्रयुज्येत्यांहुः। द्वादंशैव ब्रंह्मौद्नान्थ्यः स्थिते निर्वपेत्। प्रजापंतिर्वा ओंद्नः। यज्ञः प्रजापंतिः। उपनामुंक एनं यज्ञो भंवति। न पापीयान्भवति। द्वादंश भवन्ति। द्वादंशमासाः संवथ्सरः। सुंवथ्सर एव प्रतिं तिष्ठति॥६९॥

एष वै प्रभूनीमं यज्ञः। सर्वर् ह वै तत्रं प्रभु भंवति। यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वा ऊर्जस्वान्नामं युज्ञः। सर्वर् ह वै तत्रोर्जस्वद्भवति। यत्रैतेनं यज्ञेन यर्जन्ते। एष वै पर्यस्वान्नामं यज्ञः॥७०॥ सर्व १ ह वै तत्र पर्यस्वद्भवति। यत्रैतेनं युज्ञेन यर्जन्ते। एष वै विधृंतो नामं

युज्ञः। सर्वर् हु वै तत्र विधृतम्भवति। यत्रैतेनं युज्ञेन यजन्ते। एष वै व्यावृत्तो नामं यज्ञः। सर्वर् ह वै तत्र व्यावृंत्तम्भवति। यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै प्रतिष्ठितो नामं यज्ञः। सर्वर् ह वै तत्र प्रतिष्ठितम्भवति॥७१॥

यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै तेंजस्वी नामं युज्ञः। सर्वर् ह वै तत्रं तेजस्वि भंवति। यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै ब्रह्मवर्चसी नामं यज्ञः। आ ह तत्रं ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायते। यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वा अतिव्याधी नामं यज्ञः। आ ह वै तर्त्र राज्यन्योंऽतिव्याधी जांयते। यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते। एष वै दीर्घो नामं यज्ञः। दीर्घायुंषो ह वै तत्रं मनुष्यां भवन्ति। यत्रैतेनं यज्ञेन यजन्ते। एष वै क्रुप्तो नामं युज्ञः। कल्पते हु वै तत्रं प्रजाभ्यों योगक्षेमः। यत्रैतेनं युज्ञेन् यर्जन्ते॥७२॥ पर्यस्वान्नामं युज्ञः प्रतिष्ठितम्भवति यत्रैतेनं युज्ञेन् यर्जन्ते षद्वं (एष वै विभूः प्रभूरूर्जस्वान्पर्यस्वान् विधृंतो व्यावृंतः प्रतिष्ठितस्तेज्ञस्वी

ब्रह्मवर्चस्यंतिच्याधी दीर्घः क्रुप्तो द्वादंश॥)॥———[१९]

तार्प्यणाश्वर् संज्ञंपयन्ति। यज्ञो वै तार्प्यम्। यज्ञेनैवैन्र् समंध्यन्ति। यामेन् साम्नां प्रस्तोताऽनूपंतिष्ठते। यम्लोकमेवैनं गमयति। तार्प्ये चं कृत्यधीवासे चाश्वर् संज्ञंपयन्ति। एतद्वै पंशूनार रूपम्। रूपेणैव पृशूनवंरुन्थे। हिर्ण्यकृशिपु भवति। तेजसोऽवंरुद्धे॥७३॥

रुक्नो भंवति। सुवर्गस्यं लोकस्यानुंख्यात्यै। अश्वीं भवति। प्रजापंतेरास्यैं। अस्य वै लोकस्यं रूपन्तार्प्यम्। अन्तरिक्षस्य कृत्यधीवासः। दिवो हिरण्यकशिपु। आदित्यस्यं रुक्नः। प्रजापंतेरश्वः। इममेव लोकन्तार्प्यणाप्तोति॥७४॥

अन्तरिक्षं कृत्यधीवासेनं। दिवर्ं हिरण्यकशिपुनां। आदित्यर रुक्नेणं। अश्वेनैव मेध्येन प्रजापंतेः सायुंज्यर सलोकतांमाप्नोति। पुतासांमेव देवतांनार् सायुंज्यम्। सार्षितारं समानलोकतांमाप्नोति। योंऽश्वमेधेन यजंते। य उ चैनमेवं वेदं॥७५॥ अवंरुध्या आप्नोत्यष्टौ चं॥____

-[२०]

अमुमादित्यमश्वर्धं श्वेतं भूतं दक्षिणामनयन्। तैंऽब्रुवन्। यन्नो नेंष्ट। स वर्यो भूदितिं। तस्मादश्वर् सवर्येत्याह्वंयन्ति। तस्माँ द्यञ्जे वरो दीयते। यत्प्रजापंतिरा-लब्धोऽश्वोऽभंवत्। तस्मादश्वो नामं॥७६॥ यच्छ्वयदरुरासींत्। तस्मादर्वा नामं। यथ्सद्यो वाजांन्थ्समजंयत्। तस्माद्वाजी

नामं। यदसुराणां लोकानादत्ता तस्मादादित्यो नामं। अग्निर्वा अश्वमेधस्य

योनिरायतंनम्। सूर्योऽग्नेर्योनिरायतंनम्। यदंश्वमेधेंऽग्नौ चित्यं उत्तरवेदिम्ंपवपंति।

आदित्याश्चाङ्गिरसश्च सुवर्गे लोकैंऽस्पर्धन्त। तेऽङ्गिरस आदित्येभ्यः।

योनिमन्तमेवेनंमायतंनवन्तं करोति॥७७॥
योनिमानायतंनवान्भवति। य एवं वेदं। प्राणापानौ वा एतौ देवानांम्।
यदंकिश्वमेधौ। प्राणापानावेवावंरुन्धे। ओजो बलं वा एतौ देवानांम्।
यदंकिश्वमेधौ। ओजो बलंमेवावंरुन्धे। अग्निर्वा अश्वमेधस्य योनिरायतंनम्।
सूर्योग्नेयोनिरायतंनम्। यदंश्वमेधैंऽग्नौ चित्यं उत्तरवेदिं चिनोतिं। तावंकिश्वमेधौ।

अर्काश्वमेधावेवावंरुन्धे। अथों अर्काश्वमेधयोरेव प्रतिं तिष्ठति॥७८॥

नामं करोति सूर्योऽग्नेर्योनिरायतंनश्चत्वारिं च॥_______[

प्रजापंतिं वै देवाः पितरम्। पृशुम्भूतम्मेधायालंभन्त। तमालभ्योपांवसन्। प्रातर्यष्टांस्मह् इति। एकं वा एतद्देवानामहः। यथ्संवथ्सरः। तस्मादश्वः पुरस्तांथ्संवथ्सर आलंभ्यते। यत्प्रजापंतिरालुब्धोऽश्वोऽभवत्। तस्मादश्वः। यथ्सद्यो मेधोऽभवत्॥७९॥

तस्मादश्वम्धः। वेदुकोऽश्वमाशुम्भवित। य एवं वेदं। यह्रै तत्प्रजापंतिरालुब्धो-ऽश्वोऽभवत्। तस्मादश्वः प्रजापंतेः पशूनामनुंरूपतमः। आऽस्यं पुत्रः प्रतिरूपो जायते। य एवं वेदं। सर्वाणि भूतानि सम्भृत्यालभते। समेनं देवास्तेजंसे ब्रह्मवर्चुसायं भरन्ति। यौंऽश्वम्धेन् यजंते॥८०॥

य उं चैनमेवं वेदं। एतद्वे तद्देवा एतान्देवताम्। पृशुम्भूतम्मेधायालंभन्त। युज्ञमेव। युज्ञेनं युज्ञमयजन्त देवाः। कामुप्रं युज्ञमंकुर्वत। तेंऽमृतुत्वमंकामयन्त। प्राजापत्येनैव यज्ञेनं यजते कामप्रेणं। अपुनर्मारमेव गंच्छति। एतस्य वै रूपेणं

पुरस्तौत्राजापत्यमृषमं तूपरं बंहुरूपमालंभते। सर्वेभ्यः कामेभ्यः। सर्वस्यास्यै।

तें ऽमृतत्वमंगच्छन्। यों ऽश्वमेधेन यजंते। देवानांमेवायंनेनैति॥८१॥

यद्वंर्शपूर्णमासौ यजंते। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य प्देपंदे जुहोति। एतदंनुकृति ह

जुह्नति। यो वा अश्वंस्य मेध्यंस्य पदे वेदं। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य पदेपंदे जुहोति।

दुर्शुपूर्णमासौ वा अश्वंस्य मेध्यंस्य पदे॥८३॥

स्मु वै पुरा। अश्वंस्य मेध्यंस्य पुदेपंदे जुह्नति। यो वा अश्वंस्य मेध्यंस्य विवर्तनं वेदं। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य विवर्तनेविवर्तने जुहोति। असौ वा आंदित्योऽश्वंः। स आंहवनीयमागंच्छति। तद्विवंतिते। यदंग्निहोत्रं जुहोतिं। अश्वंस्यैव मेध्यंस्य विवर्तनेविवर्तने जुहोति। एतदंनुकृति ह स्मृ वै पुरा। अंश्वस्य मेध्यंस्य विवर्तनेविवर्तने जुह्वति॥८४॥

पदे अंग्निहोत्रं जुहोति त्रीणिं च॥-

प्रजापंतिस्तमंष्टादशिभिः प्रजापंतिरकामयतोभावस्मै युअन्ति तेजसाऽपंप्राणा अपश्रीरूर्धां प्रजापंतिः प्रेणाऽनुं प्रथमेनं प्रजापंतिरकामयत महान्वैं श्वदेवो वा अश्वोऽश्वंस्य प्रजापंतिस्तं यंज्ञकृतुभिरपृश्रीर्ब्रां ह्यणौ सर्वेषु वारुणो यद्यश्वन्तदांहरेष वै

विभूस्तार्प्येणांदित्याः प्रजापंतिं पितरं यो वा अश्वंस्य मेध्यंस्य लोमंनी त्रयोंवि॰शतिः॥२३॥

प्रजापंतिरस्मिँ होक उत्तरतः श्रियंमेव प्रजापंतिरकामयत महान्यत्प्रातः प्र वा एष एभ्यो लोकेभ्यः सर्वर् ह वै तत्र

पर्यः स्वद्य उं चैनमेवं वेदं चत्वार्यशीतिः॥८४॥

प्रजापंतिरश्वमेधं जुंह्वति॥

हरिंः ओम्॥

॥इति श्रीकृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयब्राह्मणे तृतीयाष्टके नवमः प्रपाठकः समाप्तः॥

॥तैत्तिरीय आरण्यकम्॥

॥ प्रथमः प्रश्नः — अरुणप्रश्नः॥

ॐ भद्रं कर्णंभिः शृणुयामं देवाः। भद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरेरङ्गैं स्तुष्टुवा र संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टुवाश् संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु। आपंमापामुपः सर्वौः। अस्मादस्मादितोऽमुतः॥१॥

अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। सह संश्वस्करिर्द्विया। वाय्वश्वां रश्मिपतंयः। मरींच्यात्मानो

अद्रुंहः। देवीर्भुंवन्सूवंरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महामानाः। मृह्सो महस्ः स्वंः। देवीः पंर्जन्यसूवंरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत॥२॥

अपार्श्यंष्णिम्पा रक्षः। अपार्श्यंष्णिम्पारघम्। अपाँघामपं चावर्तिम्। अपदेवीरितो हित। वर्ज्ञं देवीरजीता ॥ भूवंनं देवसूवंरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिंनोर्ध्वमुदीषंत। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥॥॥

स्मृतिः प्रत्यक्षंमैतिह्यम्। अनुमानश्चतुष्ट्यम्। एतैरादित्यमण्डलम्। सर्वेरेव् विधास्यते। सूर्यो मरीचिमादंत्ते। सर्वस्माद्भवनाद्धि। तस्याः पाकविंशेषेण। स्मृतं कालविशेषंणम्। नदीव प्रभवात्काचित्। अक्षय्याध्स्यन्दते यथा॥४॥

तां नद्योऽभि संमायन्ति। सो्रुः सतीं न निवंति। एवं नानासंमुत्थानाः। काृ्लाः संवथ्सरः श्रिताः। अणुशश्च महश्चा। सर्वे समव्यत्रितम्। सतैः सर्वेः समाविष्टः। ऊरुः संन्न निवर्तते। अधिसंवथ्सरं विद्यात्। तदेवं लक्षणे॥५॥

अणुभिश्च महिद्धिश्च। समार्रूढः प्रदृश्यंते। संवथ्सरः प्रत्यक्षेण। नाधिसंत्वः प्रदृश्यंते। पटरो विक्लिधः पिङ्गः। एतद्वरुणलक्षंणम्। यत्रैतंदुपृदृश्यंते। सहस्रं तत्र नीयंते। एक १ हि शिरो नाना मुखे। कृथ्स्रं तंदतुलक्षंणम्॥६॥

उभयतः सप्तैन्द्रियाणि। जिल्पतं त्वेव दिह्यते। शुक्रकृष्णे संवंध्सर्स्य। दक्षिणवामयोः पार्श्वयोः। तस्यैषा भवंति। शुक्रं ते अन्यद्यंज्तं ते अन्यत्। विष्रं अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवंसि स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रह रातिर्स्त्विति। नात्र भुवंनम्। न पूषा। न पृशवंः। नाऽऽदित्यः संवध्सर एव प्रत्यक्षेण प्रियत्नमं विद्यात्। एतद्वे संवध्सरस्य प्रियत्नमः रूपम्। योऽस्य महानर्थ उत्पध्स्यमानो भ्वति। इदं पुण्यं कुरुष्वेति। तमाहर्रणं द्द्यात्॥७॥

साकुञ्जानार्थं सप्तर्थमाहुरेकुजम्। षडुंद्यमा ऋषंयो देवुजा इतिं। तेषांमिष्टानि

विहिंतानि धाम्रशः। स्थात्रे रेंजन्ते विकृंतानि रूप्शः। को नुं मर्या अमिंथितः। सखा सखांयमब्रवीत्। जहांको अस्मदींषते। यस्तित्याजं सखिविद्र सखांयम्। न तस्यं वाच्यपि भागो अस्ति। यदी १ शृणोत्युलक १ शृणोति॥८॥

न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामितिं। ऋतुर्ऋतुना नुद्यमांनः। विनंनादाभिधांवः। षष्टिश्च त्रिश्शंका वृत्गाः। शुक्ककृष्णौ च षष्टिंकौ। साराग्वस्रेर्ज्र्रदेक्षः। वसन्तो वसुंभिः सह। संवथ्सरस्यं सवितुः। प्रैषकृत्प्रंथमः स्मृतः। अमूनादयंतेत्यन्यान्॥९॥

अमू इश्चं परिरक्षंतः। एता वाचः प्रंयुज्यन्ते। यत्रैतंदुपृदृश्यंते। एतदेव विजानीयात्। प्रमाणं कालपंर्यये। विशेषणं तुं वक्ष्यामः। ऋतूनां तिन्नबोधंत। शुक्रवासां रुद्रगणः। ग्रीष्मेणांऽऽवर्तते सह। निजहंन पृथिवी स्वाम्॥१०॥

ज्योतिषाँ ऽप्रतिख्येनं सः। विश्वरूपाणिं वासार्सा। आदित्यानां निबोधंत। संवथ्मरीणं कर्मफलम्। वर्षाभिदेदतार् सह। अदुःखो दुःखर्चक्षुरिव। तद्मांऽऽपीत इव दश्येते। शीतेनाँ व्यथंयन्त्रिव। रुरुदेक्ष इव दश्येते। ह्लादयतें ज्वलंतश्चेव। शाम्यतंश्चास्य चक्षुंषी। या वै प्रजा भ्रं इत्यन्ते। संवथ्सरात्ता भ्रं इत्यर्थः॥११॥
प्रतितिष्ठन्ति। संवथ्सरे ताः प्रतितिष्ठन्ति। वर्षाभ्यं इत्यर्थः॥११॥

अक्षिंदुःखोत्थितस्यैव। विप्रसंत्रे क्नीनिंके। आङ्के चार्द्गणं नास्ति। ऋभूणां तित्रबोधंत। कनकाभानिं वासार्सा। अहतांनि निबोधंत। अन्नमश्रीतं मृज्मीत। अहं वो जीवनप्रदः। एता वाचः प्रयुज्यन्ते। शरद्यंत्रोपदृश्यंते॥१२॥

अभिधृन्वन्तोऽभिघ्नंन्त इव। वातवंन्तो म्रुद्गणाः। अमुतो जेतुमिषुमुंखिम्व। सन्नद्धाः सह दंदशे ह। अपध्वस्तैर्वस्तिवंर्णेरिव। विशिखासंः कपूर्दिनः। अनुद्धस्य योथस्यमानस्य। नुद्धस्येव लोहिनी। हेमतश्चक्षुषी विद्यात्। अक्ष्णयौः क्षिपणोरिव॥१३॥

दुर्भिक्षं देवंलोकेषु। मृनूनांमुद्कं गृंहे। एता वाचः प्रवदन्तीः। वैद्युतों यान्ति शैशिरीः। ता अग्निः पर्वमना अन्वैक्षत। इह जीविकामपंरिपश्यन्। तस्यैषा भवंति। इहेहंवः स्वतुपसः। मर्रुतः सूर्यत्वचः। शर्म सुप्रथा आवृणे॥१४॥

अतितामाणि वासार्सा। अष्टिवंजिशतिष्ठं च। विश्वे देवा विप्रहर्न्ता अग्निजिंह्या असश्चेत। नैव देवों न मृत्यः। न राजा वंरुणो विभुः। नाग्निर्नेन्द्रो न पंवमानः। मातृक्कंचन विद्यंते। दिव्यस्यैका धनुरार्त्निः। पृथिव्यामपंरा श्रिता॥१५॥

तस्येन्द्रो विम्नेरूपेण। धनुज्यांमिछिनथ्स्वंयम्। तिदेन्द्रधनुंरित्यज्यम्। अभ्रवंणिषु चक्षंते। एतदेव शंयोर्बार्हंस्पत्यस्य। एतद्रुंद्रस्य धनुः। रुद्रस्यं त्वेव धनुंरार्बिः। शिर् उत्पिपेष। स प्रव्यांऽभवत्। तस्माद्यः सप्रव्यांणं यज्ञेन यजंते। रुद्रस्य स शिरः प्रतिंदधाति। नैनर्ं रुद्र आर्रुको भवति। य एवं वेदं॥१६॥

अत्यूर्ध्वाक्षोऽतिरश्चात्। शिशिरः प्रदृश्यंते। नैव रूपं नं वासार्सा। न चक्षुः प्रतिदृश्यते। अन्योन्यं तु नं हिङ्स्रातः। सृतस्तंद्देवलक्षंणम्। लोहितोऽक्ष्णि शांरशीर्षिः। सूर्यस्योदयनं प्रंति। त्वं करोषि न्यञ्जलिकाम्। त्वं करोषि निजानुकाम्॥१७॥

निजानुका में न्यञ्जलिका। अमी वाचमुपासंतामिति। तस्मै सर्व ऋतवों नमन्ते। मर्यादाकरत्वात्प्रपुरोधाम्। ब्राह्मणं आप्नोति। य एवं वेद। स खलु संवथ्सर एतैः सेनानींभिः सह। इन्द्राय सर्वान्कामानंभिवहति। स द्रफ्सः। तस्यैषा भवंति॥१८॥ अवंद्रफ्सो अर्श्शुमतींमतिष्ठत्। इयानः कृष्णो दशभिः सहस्रैः। आवर्तमिन्द्रः शच्या धर्मन्तम्। उपस्रुहि तं नृमणामर्थद्रामिति। एतयैवेन्द्रः सलावृंक्या सह। असुरान् पंरिवृश्चति। पृथिव्य १ शुर्मती। तामन्ववंस्थितः संवथ्सरो दिवं चं। नैवं विद्षाऽऽचार्यान्तेवासिनौ। अन्योन्यस्मैं द्रुह्याताम्। यो द्रुह्यति। भ्रश्यते स्वंगिल्लोकात्। इत्यृतुमंण्डलानि। सूर्यमण्डलाँन्याख्यायिकाः। अत ऊर्ध्वर

-संनिर्वचनाः॥१९॥

-[ξ]

आरोगो भ्राजः पटरंः पत्ङ्गः। स्वर्णरो ज्योतिषिमान्ं विभासः। ते अस्मै सर्वे दिवमांतपुन्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। कश्यंपोऽष्ट्रमः। स महामेरुं नं जहाति। तस्यैषा भवंति। यत्ते शिल्पं कश्यप रोचनावंत्। इन्द्रियावंतपुष्कुलं चित्रभान्। यस्मिन्थ्सूर्या अर्पिताः सप्त साकम्॥२०॥

तस्मिन् राजानमधिविश्रयेममिति। ते अस्मै सर्वे कश्यपाज्योतिर्लभन्ते।

तान्थ्सोमः कश्यपादिधिनिर्धमित। अस्ताकर्मकृदिवैवम्। प्राणो जीवानीन्द्रियंजीवानि।

सप्त शीर्षंण्याः प्राणाः। सूर्या इंत्याचार्याः। अपश्यमहमेतान्थ्सप्त सूर्यानिति। पञ्चकर्णो वाथ्य्यायनः। सप्तकर्णश्च प्राक्षिः॥२१॥ आनुश्रविक एव नौ कश्यंप इति। उभौ वेद्यिते। न हि शेकुमिव महामेरं गुन्तुम्। अपश्यमहमेथ्सूर्यमण्डलं परिवर्तमानम्। गार्ग्यः प्राणत्रातः। गच्छन्त महामेरुम्। एकं चाजहतम्। भ्राजपटरपतंङ्गा निहने। तिष्ठन्नांतपन्ति। तस्मांदिह

तित्रितपाः॥२२॥

अमुत्रेतरे। तस्मांदिहातित्रिंतपाः। तेषांमेषा भवंति। सप्त सूर्या दिवमनुप्रविष्टाः। तान्नवेति पृथिभिदिक्षिणावान्। ते अस्मै सर्वे घृतमांतप्न्ति। ऊर्जं दुहाना अनपस्फुरंन्त इति। सप्तर्त्विजः सूर्या इंत्याचार्याः। तेषांमेषा भवंति। सप्त दिशो नानांसूर्याः॥२३॥

स्प्त होतांर ऋत्विजंः। देवा आदित्यां ये स्प्ता। तेभिः सोमाभी रक्षंण इति। तदंप्याम्नायः। दिग्भाज ऋतूँन् करोति। एतंयैवावृता सहस्रसूर्यताया इति वैशम्पायनः। तस्यैषा भवंति। यद्यावं इन्द्र ते शृत शृतं भूमीः। उतस्युः। नत्वां विज्ञन्थ्सहस्र स्याः॥२४॥

अनु न जातमष्ट रोदंसी इति। नानालिङ्गत्वादतूनां नानांसूर्यत्वम्। अष्टौ तु व्यवसिता इति। सूर्यमण्डलान्यष्टांत ऊर्ध्वम्। तेषांमेषा भवंति। चित्रं देवानामुदंगादनींकम्। चक्षुंर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावांपृथिवी अन्तरिक्षम्। सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुंषश्चेति॥२५॥

[し]

क्वेदमभ्रं निविशते। क्वायर् संवथ्सरो मिथः। क्वाहः क्वेयं देव रात्री। क्व मासा ऋतवः श्रिताः। अर्धमासां मुहूर्ताः। निमेषास्तुंटिभिः सह। क्वेमा आपो निविश्नते।

यदीतों यान्ति सम्प्रंति। काला अफ्सु निंविश्वन्ते। आपः सूर्ये सुमाहिंताः॥२६॥

अभ्राण्यपः प्रंपद्यन्ते। विद्युथ्सूर्ये समाहिता। अनवर्णे इंमे भूमी। इयं चांऽसौ च् रोदंसी। किङ्स्विदत्रान्तरा भूतम्। येनेमे विधृते उभे। विष्णुना विधृते भूमी। इति

वंथ्सस्य वेदंना। इरांवती धेनुमती हि भूतम्। सूयवसिनी मनुषे दशस्यै॥२७॥

व्यष्टभ्राद्रोदंसी विष्णंवेते। दाधर्थं पृथिवीम्भितों मृयूखैंः। किं तिद्वष्णोर्बल-माहुः। का दीप्तिः किं प्रायणम्। एको युद्धार्ययद्देवः। रेजतीं रोद्सी उंभे। वाताद्विष्णोर्बलमाहुः। अक्षराद्दीप्तिरुच्यंते। त्रिपदाद्धार्ययद्देवः। यद्विष्णोरेकुमुत्तंमम्॥२८

अग्नयो वायंवश्चैव। एतदंस्य प्रायंणम्। पृच्छामि त्वा पंरं मृत्युम्। अवमं

मध्यमञ्जतम्। लोकं च पुण्यपापानाम्। पुतत्पृच्छामि सम्प्रति। अमुमाहुः परं

मृत्युम्। प्वमनिं तु मध्यमम्। अग्निरेवावमो मृत्युः। चन्द्रमाश्चतुरुच्यते॥२९॥

अनाभोगाः पंरं मृत्युम्। पापाः संयन्ति सर्वदा। आभोगास्त्वेवं संयुन्ति। युत्र

पुण्यकृतो जनाः। ततो मध्यममायन्ति। चतुमंग्निं च सम्प्रति। पृच्छामि त्वां

पापुकृतः। युत्र यातयते यमः। त्वं नस्तद्भह्मंन् प्रब्रूहि। यदि वैत्थाऽसतो गृहान्॥३०॥

वास्रवैः। तेऽशरीराः प्रंपद्यन्ते। यथाऽपुंण्यस्य कर्मणः। अपाँण्यपादंकेशासः। त्त्र तेऽयोनिजा जनाः। मृत्वा पुनर्मृत्युमांपद्यन्ते। अद्यमानाः स्वकर्मभिः॥३१॥ आशातिकाः क्रिमय इव। ततः पूयन्ते वासवैः। अपैतं मृत्युं जयित। य एवं

वेदं। स खल्वैवं विद्वाह्मणः। दीर्घश्रुंत्तमो भवंति। कश्यंपस्यातिंथिः सिद्धगंमनः

सिद्धार्गमनः। तस्यैषा भवंति। आयस्मिन्थ्सप्त वांस्वाः। रोहंन्ति पूर्व्या रुहंः॥३२॥

ऋषिंर्ह दीर्घश्रुत्तंमः। इन्द्रस्य घर्मो अतिंथिरिति। कश्यपः पश्यंको भवति।

कश्यपांदुदिताः सूर्याः। पापान्निप्निन्ति सर्वदा। रोदस्योन्तर्देशेषु। तत्र न्यस्यन्ते

यथ्सर्वं परिपश्यतीति सौक्ष्म्यात्। अथाग्नेरष्टपुंरुषस्य। तस्यैषा भवंति। अग्ने नयं सुपर्था राये अस्मान्। विश्वांनि देव वयुनांनि विद्वान्। युयोध्यंस्मज्जंहुराणमेनः। भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेमेति॥३३॥

अग्निश्च जातंवेदाश्च। सहोजा अंजिराप्रभुः। वैश्वानरो नंर्यापाश्च। पङ्किरांधाश्च सप्तमः। विसर्पेवाऽष्टंमोऽग्नीनाम्। एतेऽष्टौ वसवः, क्षिता इति।

यथर्त्ववाग्नेरर्चिर्वर्णविशेषाः। नीलार्चिश्च पीतकाँचिश्चेति। अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैका दशंस्रीकस्य। प्रभाजमाना व्यंवदाताः॥३४॥

याश्च वासुंकिवैद्युताः। रजताः पर्रुषाः श्यामाः। कपिला अतिलोहिताः। ऊर्ध्वा अवपंतन्ताश्च। वैद्युत इंत्येकादश। नैनं वैद्युतों हिनुस्ति। य एवं वेद। स होवाच व्यासः पाराशर्यः। विद्युद्वधमेवाहं मृत्युमैंच्छिमिति। न त्वकाम हिन्त॥३५॥

य एवं वेद। अथ गेन्थर्वगणाः। स्वानभ्राट्। अङ्घारिर्वम्भारिः। हस्तः सुह्रस्तः।

कृशांनुर्विश्वावंसुः। मूर्धन्वान्थ्सूँर्यवृचीः। कृतिरित्येकादश गंन्धर्वगणाः। देवाश्च महादेवाः। रश्मयश्च देवां गर्गिरः॥३६॥ नैनं गरों हिनस्ति। य एवं वेद। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षंती। एकंपदी द्विपदी

सा चतुंष्पदी। अष्टापंदी नवंपदी बभूवुषीं। सहस्राक्षरा परमे व्योमन्निति। वाचौ विशेषणम्। अथं निगदंव्याख्याताः। ताननुर्क्रमिष्यामः। वराहवंः स्वतपसः॥३७॥ विद्युन्मंहसो धूपंयः। श्वापयो गृहमेधाँश्चेत्येते। ये चेमेऽशिंमिविद्विषः। पर्जन्याः सप्त पृथिवीमभिवंर्षन्ति। वृष्टिंभिरिति। एतयैव विभक्तिविंपरीताः। सप्तभिवां तैरुदीरिताः। अमूँ लोकानभिवंर्षन्ति। तेषांमेषा भवंति। सुमानमेतदुदंकम्॥३८॥ उचैत्यंवचाहंभिः। भूमिं पर्जन्या जिन्वंन्ति। दिवं जिन्वन्त्यग्नंय इति। यदक्षंरं भूतकृंतम्। विश्वं देवा उपासंते। महर्षिमस्य गोप्तारम्। जमदंग्निमकुंर्वत। जमदंग्निराप्यांयते। छन्दोंभिश्चतुरुत्तरैः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासंः॥३९॥

ब्रह्मणा वीर्यावता। शिवा नंः प्रदिशो दिशंः। तच्छं योरावृंणीमहे। गातुं

स्थः॥४१॥

यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। सोमपा (३) असोमपा (३) इति निगदंव्याख्याताः॥४०॥

सहस्रवृदियं भूमिः। प्रं व्योम सहस्रवृत्। अश्विनां भुज्यूंनास्त्या। विश्वस्यं जगतस्पंती। जाया भूमिः पंतिर्व्योम। मिथुनंन्ता अतुर्यथः। पुत्रो बृहस्पंती रुद्रः। स्रमां इतिं स्रीपुमम्। शुक्रं वामन्यद्यंजतं वामन्यत्। विषुरूपे अहंनी द्यौरिव

विश्वा हि माया अवंथः स्वधावन्तौ। भुद्रा वाँ पूषणाविह रातिरंस्तु। वासाँत्यौ चित्रौ जगंतो निधानौँ। द्यावांभूमी च्रथः सूर् सखांयौ। ताविश्वनां रासभाश्वा हवंं मे। शुभस्पती आगतर सूर्ययां सूह। त्युग्रोह भुज्युमंश्विनोदमेघे। र्यिं न कश्चिन्ममृवां (२) अवांहाः। तमूहथुनौभिराँत्मन्वतींभिः।

अन्तरिक्षप्रुङ्गिरपोंदकाभिः॥४२॥

तिस्रः, क्षपस्त्रिरहांतिव्रजिद्धिः। नासंत्या भुज्युमूंहथुः पत्ङ्गेः। समुद्रस्य धन्वंत्रार्द्रस्यं पारे। त्रिभीरथैः शतपद्धिः षडंश्वैः। सवितारं वितन्वन्तम्। अनुंबध्नाति शाम्बरः। आपपूर्षम्बरश्चेव। सवितारेप्सोऽभवत्। त्य सतृप्तं विदित्वैव। बहुसोम गिरं वंशी॥४३॥

अन्वेति तुग्रो वंक्रियान्तम्। आयसूयान्थ्सोमंतृपसुषु। स सङ्गामस्तमों द्योऽत्योतः। वाचो गाः पिपाति तत्। स तद्गोभिः स्तवा ऽत्येत्यन्ये। रक्षसानित्वताश्चं ये। अन्वेति परिवृत्याऽस्तः। प्वमेतौ स्थों अश्विना। ते पृते द्युंः पृथिव्योः। अहंरहुर्गर्भं दधाथे॥४४॥

तयोंरेतौ वृथ्सावंहोरात्रे। पृथिव्या अहंः। दिवो रात्रिः। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भवतः। तयोंरेतौ वृथ्सौ। अग्निश्चांदित्यश्चं। रात्रेर्वथ्सः। श्वेत आंदित्यः। अह्योऽग्निः॥४५॥ ताम्रो अंरुणः। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोरेतौ वृथ्सौ। वृत्रश्चं वैद्युतश्चं। अ्ग्नेर्वृत्रः। वैद्युतं आदित्यस्यं। ता अविंसृष्टौ। दम्पंती एव भंवतः। तयोरेतौ वृथ्सौ॥४६॥

उष्मा चं नीहारश्चं। वृत्रस्योष्मा। वैद्युतस्यं नीहारः। तौ तावेव प्रतिंपद्येते। सेय रात्रीं गुर्भिणीं पुत्रेण संवंसित। तस्या वा एतदुल्बणम्ं। यद्रात्रौं रृष्टमयः। यथा गोर्गिभिण्यां उल्बणम्ं। एवमेतस्यां उल्बणम्ं। प्रजियष्णुः प्रजया च पशुभिश्च भवति। य एवं वेद। एतमुद्यन्तमिपयंन्तं चेति। आदित्यः पुण्यंस्य वृथ्सः। अथ पविंत्राङ्गिरसः॥४७॥

प्वित्रंवन्तः परिवाज्ञमासंते। पितैषां प्रत्नो अभिरंक्षति व्रतम्। महः संमुद्रं वरुणस्तिरोदंधे। धीरां इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्। प्वित्रं ते वितंतं

समुद्र वरुणास्त्रादध। धारा इच्छकुधरुणष्वारभम्। पावत्र त् वितत् ब्रह्मणस्पतें। प्रभुगीत्राणि पर्येषिविश्वतः। अतंप्ततनूर्न तदामो अंश्रुते। शृतास् इद्वहंन्तुस्तथ्समांशत। ब्रुह्मा देवानांम्। असंतः सुद्ये ततंक्षुः॥४८॥

ऋषंयः स्प्तात्रिश्च यत्। सर्वेऽत्रयो अंगस्त्यश्च। नक्षंत्रैः शङ्कृतोऽवसन्। अथं सिवतुः श्यावाश्वस्याऽवर्तिकामस्य। अमी य ऋक्षा निहितास उचा। नक्तं ददृश्चे कुहंचिद्दिवेयुः। अदब्धानि वर्रणस्य व्रतानि। विचाकशंचन्द्रमा नक्षंत्रमेति। तथ्संवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्यं धीमहि॥४९॥

धियो यो नंः प्रचोदयाँत्। तथ्संवितुर्वृणीमहे। वयं देवस्य भोजंनम्। श्रेष्ठ सर्वधातमम्। तुरं भगस्य धीमहि। अपांगूहत सविता तृभीन्। सर्वान्दिवो अन्धंसः। नक्तं तान्यंभवन्द्शे। अस्थ्यस्थ्रा सम्भंविष्यामः। नाम् नामैव नाम मै॥५०॥

नक्त तान्यमवन्द्रशा अस्थ्यस्थ्रा सम्मावध्यामः। नाम् नाम्व नाम मा।५०॥ नपु॰संकं पुमा्ङ्स्त्र्यंस्मि। स्थावंरोऽस्म्यथ् जङ्गंमः। युजेऽयिक्ष् यष्टाहे चं। मयां भूतान्यंयक्षत। पुशवों ममं भूतानि। अनूबन्ध्योऽस्म्यंहं विभुः। स्त्रियंः सतीः। ता उमे पु॰स आंहुः। पश्यंदक्षण्वान्नविचेतद्न्यः। क्विर्यः पुत्रः स इमा चिकेत॥५१॥ यस्ता विजानाथ्संवितुः पितासंत्। अन्थो मणिमंविन्दत्। तमनङ्गिलुरावंयत्। अग्रीवः प्रत्यंमुश्चत्। तमजिह्वा असश्चंत। ऊर्ध्वमूलमंवाक्छाखम्। वृक्षं यो वेद् सम्प्रंति। न स जातु जनेः श्रद्धध्यात्। मृत्युर्मा मार्यादितिः। हसित॰ रुदितं गीतम्॥५२॥

वीर्णापणवलासितम्। मृतं जीवं चे यत्किश्चित्। अङ्गानिं स्नेव विद्धिं तत्। अतृष्युङ्स्तृष्यंध्यायत्। अस्माञ्जाता में मिथू चरत्रं। पुत्रो निर्ऋत्यां वैदेहः। अचेतां यश्च चेतनः। स् तं मणिमंविन्दत्। सोऽनङ्गृलिरावंयत्। सोऽग्रीवः प्रत्यंमुञ्चत्॥५३॥

सोऽजिंह्वो असश्चंत। नैतमृषिं विदित्वा नगरं प्रविशेत्। यंदि प्रविशेत्। मिथौ चिरत्वा प्रविशेत्। तथ्सम्भवंस्य व्रतम्। आतमंग्ने रथं तिष्ठ। एकांश्वमेक्योजनम्। एकचक्रमेक्ध्रम्। वात्रप्रांजिगतिं विभो। न रिष्यतिं न व्यथते॥५४॥

नास्याक्षों यातु सर्ज्ञति। यच्छ्वेतांन् रोहिंताङ्श्चाग्नेः। र्थे युंक्काऽधितिष्ठंति। एकया च दशभिश्चं स्वभूते। द्वाभ्यामिष्टये विर्श्शत्या च। तिसृभिश्च वहसे त्रिर्श्शता च। नियुद्भिर्वायविह तां विमुश्च॥५५॥

मेष वृषणश्वंस्य मेने॥५८॥

आतंनुष्व प्रतंनुष्व। उद्धमाऽऽधंम् सन्धंम। आदित्ये चन्द्रंवर्णानाम्। गर्भमाधेहि यः पुमान्। इतः सिक्त र सूर्यगतम्। चन्द्रमंसे रसं कृधि। वारादं जनयाग्रेऽग्निम्। य एको रुद्र उच्यंते। असङ्ख्याताः संहस्राणि। स्मर्यते न च दृश्यंते॥५६॥ एवमेतं निंबोधत। आमन्द्रैरिन्द्र हरिभिः। याहि मयूरेरोमभिः। मा त्वा

केचिन्नियेमुरिन्न पाशिनः। द्धन्वेव ता इंहि। मा मन्द्रैरिन्द्र हरिभिः। यामि मयूर्ररोमभिः। मा मा केचिन्नियेमुरिन्न पाशिनः। निधन्वेव तां (२) इंमि। अणुभिश्च महद्भिश्च॥५७॥
निघृष्वैरस्मायुंतैः। कालैर्हरित्वंमाप्नैः। इन्द्राऽऽयांहि स्हस्रंयुक्। अग्निर्विभ्राष्टिंवसनः। वायुः श्वेतंसिकद्रुकः। संवथ्सरो विंषूवर्णैः। नित्यास्तेऽनुचंरास्तव सुब्रह्मण्यो स्मुब्रह्मण्यो स्मुब्रह्मण्या स्मुब्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्या स्मुब्या स्मुब्या स्मुब्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्रह्मण्या स्मुब्या स्

गौरावस्कन्दिन्नहल्यांये जार। कौशिकब्राह्मण गौतमंब्रुवाण। अरुणाश्वां

इहागंताः। वसंवः पृथिविक्षितंः। अष्टौदिग्वासंसोऽग्नयंः। अग्निश्च जातवेदाँश्चेत्येते। ताम्नाश्वांस्ताम्ररथाः। ताम्नवर्णांस्तथाऽसिताः। दण्डहस्ताः खाद्ग्दतः। इतो रुद्राः पराङ्गताः॥५९॥ उक्त स्थानं प्रमाणं चं पुर इत। बृह्स्पतिश्च सिवता चं। विश्वरूपेरिहाऽऽगंताम्। रथेनोदक्वर्त्मना। अपसुषां इति तद्दंयोः। उक्तो वेषों वासार्सि च।

रथेनोदक्वर्त्मना। अपसुषां इति तद्वंयोः। उक्तो वेषों वासार्श्स च। कालावयवानामितः प्रतीज्या। वासात्यां इत्यश्विनोः। कोऽन्तिरक्षे शब्दं कंरोतीति। वासिष्टो रौहिणो मीमार्श्सां चुक्रे। तस्यैषा भवंति। वाश्रेवं विद्युदिति। ब्रह्मण उदर्रणमिस। ब्रह्मण उदीरणमिस। ब्रह्मण उपस्तरंणमिस। ब्रह्मण उपस्तरंणमिस॥६०॥

[१२]

[अपंक्रामत गर्भिण्यंः]

अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मां महींम्। अहं वेद् न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोन्युष्टपुंत्रम्। अष्टपंदिदम्नतिरक्षम्। अहं वेद न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। अष्टयोनीम्ष्टपुंत्राम्। अष्टपंत्रीम्मूं दिवम्॥६१॥

अहं वेद न में मृत्युः। न चामृत्युर्घाऽऽहंरत्। सुत्रामाणं महीमू षु।

पश्चजनाः। अदितिर्जातमिदितिर्जनित्वम्। अष्टौ पुत्रासो अदितः। ये जातास्तन्वः पिरं। देवां (२) उपप्रैथ्सप्तिः॥६२॥

पुरा मार्ताण्डमास्यंत्। सप्तिभिः पुत्रेरिदितिः। उपप्रैत्पूर्व्यं युगम्। प्रजायं मृत्यवे तंत्। पुरा मार्ताण्डमाभरदितिं। ताननुक्रंमिष्यामः। मित्रश्च वर्रुणश्च। धाता चार्यमा

अदितिर्द्यौरिदितिर्न्तिरिक्षम्। अदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः

चं। अर्शश्च भगश्च। इन्द्रश्च विवस्वाईश्चेत्येते। हिर्ण्यगर्भो हर्सः शुंचिषत्। ब्रह्मजज्ञानं तदित्पदिमिति। गर्भः प्रांजापत्यः। अथु पुरुषः सप्त पुरुषः॥६३॥ [यथास्थानं गर्भिण्यः]

योऽसौ तुपन्नुदेतिं। स सर्वेषां भूतानां प्राणानादायोदेतिं। मा में प्रजाया मा

पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायोदंगाः। असौ यौंऽस्तमेतिं। स सर्वेषां भूतानां

प्राणानादायाऽस्तमेति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणानादायाऽस्तंङ्गः। असौ य आपूर्यति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरापूर्यति॥६४॥ मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरापूरिष्ठाः। असौ योऽपक्षीयति। स सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंक्षीयति। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंक्षेष्ठाः। अमूनि नक्षंत्राणि। सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंप्रसृपत मोथ्सृपत॥६५॥

इमे मासाँश्चार्थमासाश्चं। सर्वेषां भूतानाँ प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोथ्सृंपत। इम ऋतवंः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पन्ति चोथ्संपन्ति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणैरपंप्रसृपत् मोर्थ्स्पतः। अय र संवथ्सरः। सर्वेषां भूतानां प्राणैरपंप्रसर्पति चोर्थ्सपंति चाहहः॥

मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इदमहंः। सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। इय॰ रात्रिः। सर्वेषां भूतानां प्राणेरपंप्रसर्पति चोथ्संपति च। मा में प्रजाया मा पंशूनाम्। मा ममं प्राणेरपंप्रसृप् मोथ्सृंप। ॐ भूर्भुवः स्वंः। एतद्वो मिथुनं मा नो मिथुन॰ रीढ्वम्॥६७॥

अथाऽऽदित्यस्याष्टपुंरुषस्य। वसूनामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। रुद्राणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। आदित्यानामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। सताः सत्यानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। अभिधून्वतांमभिष्नताम्। वातवंतां मुरुताम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। अभिधून्वतांमभिष्नताम्। वातवंतां मुरुताम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि।

ऋभूणामादित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। विश्वेषां देवानाम्। आदित्यानाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। संवथ्सरंस्य स्वितुः। आदित्यस्य स्थाने स्वतेजंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रश्मयो वो मिथुनं मा नो मिथुनः रीद्वम्॥६८॥

आरोगस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। भ्राजस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। पटरस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। पतङ्गस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। स्वर्णरस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। ज्योतिषीमतस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। विभासस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। कश्यपस्य स्थाने स्वतेर्जंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। आपो वो मिथुनं मा नो मिथुनं रीढ्वम्॥६९॥

अथ वायोरेकादशपुरुषस्यैकादशंस्त्रीक्स्य। प्रभ्राजमानानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। व्यवदातानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। वासुिकवैद्युतानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेजंसा भानि। रजतानाः रुद्राणाः स्थाने

स्वतेर्जमा भानि। परुषाणाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि। श्यामानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि। कपिलानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि। अतिलोहितानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि। ऊर्ध्वानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि। अध्वानाः रुद्राणाः स्थाने स्वतेर्जमा भानि॥७०॥

स्थाने स्वतेजंसा भानि। प्रभ्राजमानीना रहाणीना एस्थाने स्वतेजंसा भानि। व्यवदातीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। वासु किवैद्युतीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। रजताना इर्द्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। परुषाणा र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। श्यामाना र रुद्राणीना इ स्थाने स्वतेजंसा भानि। कपिलाना रुद्राणीना इस्थाने स्वतेजंसा भानि। अतिलोहितीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। ऊर्ध्वाना र रुद्राणीना इ स्थाने स्वतेजंसा भानि। अवपतन्तीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वतेजंसा भानि। वैद्युतीना र रुद्राणीना इस्थाने स्वते जंसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। रूपाणि वो मिथुनं मा नो मिथुन र रीह्वम्॥७१॥

अथाग्नेरष्टपुंरुष्स्य। अग्नेः पूर्विदिश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। जातवेदस उपिदश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। सहोजसो दक्षिणदिश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। अजिराप्रभव उपिदश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। वैश्वानरस्यापरिदश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। नर्यापस उपिदश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। पङ्किराधस उदिग्दश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। विसर्पिण उपिदश्यस्य स्थाने स्वतेर्जसा भानि। ॐ भूर्भुवः स्वंः। दिशो वो मिथुनं मा नो मिथुन रीद्वम्॥७२॥

[१८]

दक्षिणपूर्वस्यां दिशि विसंपीं न्रकः। तस्मान्नः परिपाहि। दक्षिणापरस्यां दिश्यविसंपी न्रकः। तस्मान्नः परिपाहि। उत्तरपूर्वस्यां दिशि विषादी न्रकः। तस्मान्नः परिपाहि। उत्तरापरस्यां दिश्यविषादी न्रकः। तस्मान्नः परिपाहि। आयस्मिन्थ्सप्त वासवा इन्द्रियाणि शतक्रतंवित्येते॥७३॥

इन्द्रघोषा वो वसुंभिः पुरस्तादुपंदधताम्। मनोजवसो वः पितृभिर्दक्षिणत उपंदधताम्। प्रचेता वो रुद्रैः पृश्चादुपंदधताम्। विश्वकंमां व आदित्यैरुंत्तर्त उपंदधताम्। त्वष्टां वो रूपेरुपरिष्टादुपंदधताम्। संज्ञानं वः पंश्चादिति। आदित्यः सर्वोऽग्निः पृथिव्याम्। वायुर्न्तरिक्षे। सूर्यो दिवि। चन्द्रमा दिक्षु। नक्षंत्राणि स्वलोके। पृवा ह्यंव। पृवा ह्यंग्ने। पृवा हि वायो। पृवा हीन्द्र। पृवा हि पूषन्। पृवा हि देवाः॥७४॥

आपंमापाम्पः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽम्तः। अग्निर्वायुश्च सूर्यश्च। स्ह संश्चस्क्ररिद्धंया। वाय्वश्वां रिष्म्पतंयः। मरींच्यात्मानो अद्रुहः। देवीर्भुवन्सूवंरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। महानाम्नीर्महामानाः। मृहुसो महसः स्वः॥७५॥ देवीः पंजन्यसूवंरीः। पुत्रवृत्वायं मे सुत। अपार्श्युष्णिम्पा रक्षः। अपार्श्युष्णि- म्पारघम्। अपाँघ्रामपंचावर्तिम्। अपंदेवीरितो हिंत। वर्ज्नं देवीरजींता ॥ भवंनं देवसूर्वरीः। आदित्यानदितिं देवीम्। योनिनोर्ध्वमुदीषंत॥ ७६॥

भृद्रं कर्णेभिः शृणुयामं देवाः। भृद्रं पंश्येमाक्षभिर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टुवाश् संस्तुनूभिः। व्यशेम देवितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववंदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु। केतवो अर्रुणासश्च। ऋष्यो वातंरशनाः। प्रतिष्ठाश् शृतधां हि। समाहितासो सहस्रधायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप् ओषंधयः। सुमृडीका सर्यस्वति। मा ते व्योम सन्दिशी॥७७॥

योऽपां पुष्पं वेदे। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भविति। चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्ँ। पुष्पंवान् प्रजावाँन् पशुमान् भविति। य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतेनवान् भविति। अग्निर्वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भविति। योँऽग्नेरायतेनं वेदे॥७८॥ आयतंनवान् भवति। आपो वा अग्नेरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। वायुर्वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो वायोरायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति॥७९॥

आपो वै वायोरायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। असौ वै तपंत्रपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। योऽमुष्य तपंत आयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वा अमुष्य तपंत आयतंनम्॥८०॥

आयतंनम्॥८०॥

आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योऽपामायतंनुं वेदं। आयतंनवान् भवति।

जाराम् स्वर्णाः स्वर्णाः अप्रानं स्वरं स्

चन्द्रमा वा अपामायतेनम्। आयतेनवान् भवति। यश्चन्द्रमंस आयतेनुं वेदे। आयतेनवान् भवति। आपो वै चन्द्रमंस आयतेनम्। आयतेनवान् भवति॥८१॥

य एवं वेदे। योऽपामायतेनं वेदे। आयतंनवान् भवति। नक्षंत्राणि वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यो नक्षंत्राणामायतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति। आपो वै नक्षंत्राणामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदे॥८२॥ योऽपामायतेनं वेदे। आयतंनवान् भवति। पूर्जन्यो वा अपामायतेनम्। आयतंनवान् भवति। यः पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनं वेदे। आयतंनवान् भवति। आपो वे पूर्जन्यंस्याऽऽयतंनवान् भवति। य पूर्वं वेदे। योऽपामायतंनं वेदे॥८३॥

आयतंनवान् भवति। संवथ्सरो वा अपामायतंनम्। आयतंनवान् भवति। यः संवथ्सरस्याऽऽयतंनं वेदं। आयतंनवान् भवति। आपो वै संवथ्सरस्याऽऽयतंनम्। आयतंनवान् भवति। य एवं वेदं। योंऽपसु नावं प्रतिष्ठितां वेदं। प्रत्येव तिष्ठति॥८४॥

इमे वै लोका अपसु प्रतिष्ठिताः। तदेषाऽभ्यनूँक्ता। अपार रस्मुदंयरसत्र। सूर्ये शुक्रर समार्भृतम्। अपार रसंस्य यो रसः। तं वो गृह्णाम्युत्तममितिं। इमे वै लोका अपार रसः। तेऽमुष्मिन्नादित्ये समार्भृताः। जानुद्व्रीम्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरियत्वा गुल्फद्व्रम्॥८५॥

कम्भिं चिन्ते। उपानुवाक्यमाशुम्भिं चिन्वानः॥८८॥

अथो आहुः। सर्वेषु यज्ञऋतुष्वितिं। एतर्द्धं स्मृ वा आहुः शण्डिलाः। कमृग्निं चिनुते। सृत्रियमृग्निं चिन्वानः। सृव्यस्पं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। सावित्रमृग्निं चिन्वानः। अमुमादित्यं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते॥८७॥
नाचिकेतमृग्निं चिन्वानः। प्राणान्प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिनुते। चातुर्होत्रियमृग्निं चिन्वानः। ब्रह्मं प्रत्यक्षेण। कमृग्निं चिन्वानः। शरीरं प्रत्यक्षेण।

इमाँ होकान्प्रत्यक्षेण। कमग्निं चिनुते। इममां रुणकेतुकमग्निं चिन्वान इतिं। य

पुवासौ। इतश्चाऽमुतंश्चाऽव्यतीपाती। तमितिं। यौंऽग्नेर्मिथूया वेदं। मिथुनवान्भंवति।

पुष्करपर्णैः पुष्करदण्डैः पुष्करैश्चं सङ्स्तीर्य। तस्मिन्विहायसे। अग्निं

प्रणीयोपसमाधायं। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। कस्मौत्प्रणीतेऽयमग्निश्चीयतें।

साप्रणीतेऽयमप्सु ह्ययंं चीयतें। असौ भुवंनेप्यनांहिताग्निरेताः। तमभितं एता

अबीष्टंका उपद्याति। अग्निहोत्रे देर्शपूर्णमासयौः। पशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं॥८६॥

आपो वा अग्नेर्मिथ्याः। मिथुनवान्भवति। य एवं वेदं॥८९॥

आपो वा इदमांसन्थ्सिललमेव। स प्रजापंतिरेकः पुष्करपूर्णे समंभवत्। तस्यान्तर्मनंसि कामः समंवर्तत। इद॰ सृंजेयमिति। तस्माद्यत्पुरुषो मनसाऽभिगच्छंति। तद्वाचा वंदति। तत्कर्मणा करोति। तदेषाऽभ्यनूँका।

काम्स्तदग्रे समंवर्त्ताधि। मनंसो रेतः प्रथमं यदासींत्॥९०॥ स्तो बन्धुमसंति निरंविन्दन्न्। हृदि प्रतीष्यां क्वयों मनी्षेतिं। उपैनन्तदुपंनमति। यत्कांमो भवंति। य एवं वेदं। स तपोंऽतप्यत। स

तपंस्तृत्वा। शरीरमधूनुत। तस्य यन्मा १ समासीत्। ततो ऽरुणाः केतवो वातंरशना ऋषय उदंतिष्ठन्न॥९१॥

ये नर्खाः। ते वैखानुसाः। ये वालाः। ते वालखिल्याः। यो रसः। सोऽपाम्। अन्तुरुतः कूर्मं भूतः सर्पन्तम्। तमंब्रवीत्। मम् वैत्वङ्गाः समंभूत्॥९२॥ त्विमदं पूर्वः कुरुष्वेतिं। स इत आदायाऽऽपंः॥९३॥

अञ्चलिनां पुरस्तांदुपादंधात्। पृवाह्यवेतिं। ततं आदित्य उदंतिष्ठत्। सा प्राची दिक्। अथांरुणः केतुर्दक्षिणत उपादंधात्। पृवाह्यग्र इतिं। ततो वा अग्निरुदंतिष्ठत्। सा दंक्षिणा दिक्। अथांरुणः केतुः पृश्चादुपादंधात्। पृवा हि वायो इतिं॥९४॥ ततो वायुरुदंतिष्ठत्। सा प्रतीची दिक्। अथांरुणः केतुरुत्तरत उपादंधात्।

पुवाहीन्द्रेति। ततो वा इन्द्र उदंतिष्ठत्। सोदीची दिक्। अथारुणः केतुर्मध्ये

उपादंधात्। पुवा हि पूषन्नितिं। ततो वै पूषोदंतिष्ठत्। सेयं दिक्॥९५॥

नेत्यंब्रवीत्। पूर्वमेवाहमिहासमितिं। तत्पुरुंषस्य पुरुषत्वम्। स सहस्रंशीर्षा

पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। भूत्वोदंतिष्ठत्। तमंब्रवीत्। त्वं वै पूर्वर् समंभूः।

अथांरुणः केतुरुपरिष्टादुपादंधात्। एवा हि देवा इति। ततो देवमनुष्याः पितरः। गन्धर्वापस्रस्श्रोदंतिष्ठत्र। सोर्ध्वा दिक्। या विप्रुषो विपरापतत्र। ताभ्योऽसुरा रक्षार्सि पिशाचाश्रोदंतिष्ठत्र। तस्मात्ते पराभवत्र। विप्रुङ्गो हि ते समेभवत्र। तदेषाऽभ्यनूँक्ता॥९६॥

आपों हु यहृंहुतीर्गर्भमायत्र्ं। दक्ष्वं दर्धाना जनयंन्तीः स्वयम्भुम्। ततं इमेध्यसृंज्यन्त सर्गाः। अद्भो वा इदः समंभूत्। तस्मादिदः सर्वं ब्रह्मं स्वयम्भिवतिं। तस्मादिदः सर्वं श्रिथिलम्वाऽध्रवंमिवाभवत्। प्रजापतिर्वाव तत्। आत्मनाऽऽत्मानं विधायं। तदेवानुप्राविंशत्। तदेषाऽभ्यनूँक्ता॥९७॥

विधायं लोकान् विधायं भूतानि। विधायं सर्वाः प्रदिशो दिशंश्च। प्रजापंतिः प्रथम्जा ऋतस्यं। आत्मनाऽऽत्मानंम्भि संविवेशेतिं। सर्वमेवेदमा्स्वा। सर्वमवुरुद्धां। तदेवानुप्रविशति। य एवं वेदं॥९८॥

चतुंष्टय्य आपों गृह्णाति। चृत्वारि वा अपार रूपाणि। मेघों विद्युत्। स्तुन्यित्नुर्वृष्टिः। तान्येवावंरुन्थे। आतपंति वर्ष्यां गृह्णाति। ताः पुरस्तादुपंदधाति। पृता वे ब्रह्मवर्चस्या आपंः। मुख्त एव ब्रह्मवर्चसमवंरुन्थे। तस्मान्मुख्तो

ब्रह्मवर्चसितंरः॥९९॥

कूप्यां गृह्णाति। ता दंक्षिण्त उपंदधाति। एता वै तेंज्ञस्विनीरापंः। तेजं एवास्यं दक्षिण्तो दंधाति। तस्माद्दक्षिणोऽर्धंस्तेज्ञस्वितंरः। स्थावरा गृंह्णाति। ताः पृश्चादुपंदधाति। प्रतिष्ठिता वै स्थांवराः। पृश्चादेव प्रतितिष्ठति। वहंन्तीर्गृह्णाति॥१००॥

ता उत्तर्त उपंदधाति। ओजंसा वा एता वहंन्तीरिवोद्गंतीरिव आकूजंतीरिव धावंन्तीः। ओजं एवास्यौत्तर्तो दंधाति। तस्मादुत्तरोऽर्ध ओजस्वितंरः। सम्भार्या गृह्णाति। ता मध्य उपंदधाति। इयं वै संम्भार्याः। अस्यामेव प्रतितिष्ठति। पुल्वल्या गृह्णाति। ता उपरिष्टादुपादंधाति॥१०१॥

असौ वै पंल्वयाः। अमुष्यांमेव प्रतितिष्ठति। दिक्षूपंदधाति। दिक्षु वा आपंः। अन्नं वा आपंः। अन्नं वा अन्नं जायते। यदेवान्चोऽन्नं जायते। तदवंरुन्थे। तं वा एतमंरुणाः केतवो वातंरश्ना ऋषंयोऽचिन्वन्। तस्मादारुणकेतुकः॥१०२॥

तदेषाऽभ्यनूँक्ता। केतवो अर्रुणासश्च। ऋष्यो वातंरश्चाः। प्रतिष्ठाः श्वतधां हि। समाहितासो सहस्रधायंसमिति। श्वतशंश्चेव सहस्रंशश्च प्रतितिष्ठति। य एतम्भिं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०३॥

२०। र्णश

जानुद्व्रीम्तरवेदीं खात्वा। अपां पूरयित। अपार संवृत्वायं। पुष्करपूर्णर रुकां पुरुषमित्युपदधाति। तपो वै पुष्करपूर्णम्। सृत्यर रुकाः। अमृतं पुरुषः। पुतावृद्वा वाऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति॥१०४॥

तदवंरुन्थे। कूर्ममुपंदधाति। अपामेव मेधमवंरुन्थे। अथौ स्वर्गस्यं लोकस्य सम्ध्रे। आपंमापाम्पः सर्वाः। अस्माद्स्मादितोऽम्तः। अग्निर्वायश्च सूर्यश्च। सह संश्चस्क्ररिद्धंया इति। वाय्वश्वां रिम्मिपतंयः। लोकं पृणिच्छिद्रं पृण॥१०५॥

यास्तिस्रः पंरम्जाः। इन्द्रघोषा वो वसुंभिरेवाह्येवेतिं। पश्चचित्रंय उपंदधाति। पाङ्गोऽग्निः। यावांनेवाग्निः। तं चिनुते। लोकं पृणया द्वितीयामुपंदधाति। पश्चं पदा वै विराट्। तस्या वा इयं पार्दः। अन्तरिक्षं पार्दः। द्यौः पार्दः। दिशः पार्दः। पुरोरंजाः पार्दः। विराज्येव प्रतितिष्ठति। य एतम्भिं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥१०६॥

अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। तम्भित एता अबीष्टका उपंदधाति। अग्निहोत्रे दंर्शपूर्णमासयौः। पृशुबन्धे चांतुर्मास्येषुं। अथो आहुः। सर्वेषुं यज्ञकृतुष्वितिं। अथं ह स्माहारुणः स्वायम्भुवंः। सावित्रः सर्वोऽग्निरित्यनंनुषङ्गं मन्यामहे। नाना वा

एतेषां वीर्याणि। कमग्निं चिनुते॥१०७॥

स्त्रियम्गिं चिंन्वानः। कम्गिं चिंनुते। सावित्रम्गिं चिंन्वानः। कम्गिं चिंनुते। नाचिकेतम्गिं चिंन्वानः। कम्गिं चिंनुते। चातुर्होत्रियम्गिं चिंन्वानः। कम्गिं चिंनुते। वैश्वसृजम्गिं चिंन्वानः। कम्गिं चिंनुते॥१०८॥

उपानुवाक्यमाशुम्गिः चिन्वानः। कम्गिः चिन्ते। इममारुणकेतुकम्गिः चिन्वान इति। वृषा वा अग्निः। वृषाणौ सङ्स्फालयेत्। ह्न्येतास्य युज्ञः। तस्मान्नानुषज्यः। सोत्तंरवेदिषुं ऋतुषुं चिन्वीत। उत्तरवेद्याङ् ह्यंग्निश्चीयतें। प्रजाकांमश्चिन्वीत॥१०९॥

प्राजापत्यो वा एषों ऽग्निः। प्राजापत्याः प्रजाः। प्रजावांन् भवति। य एवं वेदं।

पशुकांमश्चिन्वीत। संज्ञानं वा एतत् पंशूनाम्। यदापंः। पशूनामेव संज्ञानेऽग्निं चिनुते। पुशुमान् भवति। य एवं वेदं॥११०॥ वृष्टिंकामश्चिन्वीत। आपो वै वृष्टिंः। पर्जन्यो वर्षुंको भवति। य एवं वेदं।

आमयावी चिन्वीत। आपो वै भेषजम्। भेषजमेवास्मै करोति। सर्वमायुरित। अभिचर ईश्चिन्वीत। वज्रो वा आपः॥१११॥ वज्रंमेव भ्रातृं व्येभ्यः प्रहंरति। स्तृणुत एनम्। तेजंस्कामो यशंस्कामः।

ब्रह्मवर्चसकांमः स्वर्गकांमश्चिन्वीत। एतावद्वा वांऽस्ति। यावंदेतत्। यावंदेवास्ति। तदवंरुन्धे। तस्यैतद्वतम्। वर्षंति न धांवेत्॥११२॥ अमृतं वा आपंः। अमृतस्यानंन्तरित्यै। नाफ्सु मूत्रंपुरीषं कुंर्यात्। न

निष्ठींवेत्। न विवसंनः स्नायात्। गुह्यो वा एषौंऽग्निः। एतस्याग्नेरनंतिदाहाय। न

प्षेष्करपर्णानि हिरंण्यं वाऽधितिष्ठेंत्। एतस्याग्नेरनंभ्यारोहाय। न कूर्म्स्याश्रीयात्। नोदकस्याघातुंकान्येनमोदकानिं भवन्ति। अघातुंका आपंः। य एतमुग्निं चिनुते। य उंचैनमेवं वेदं॥११३॥

इमानुंकं भुंवना सीषधेम। इन्द्रेश्च विश्वें च देवाः। यज्ञं चं नस्तन्वं चं प्रजां चं। आदित्यैरिन्द्रः सह सींषधातु। आदित्यैरिन्द्रः सर्गणो मरुद्भिः। अस्मार्कं भूत्वविता तुनूनौम्। आप्नेवस्व प्रप्नेवस्व। आण्डीभेवज् मा मुहुः। सुखादीन्दुःखिन्धनाम्। प्रतिमुश्रस्व स्वां पुरम्॥११४॥

मरीचयः स्वायम्भुवाः। ये शरीराण्यंकल्पयन्न्। ते ते देहं केल्पयन्तु। मा चे ते ख्यारमं तीरिषत्। उत्तिष्ठत मा स्वंप्त। अग्निमिंच्छध्वं भारताः। राज्ञः सोमंस्य तृप्तासंः। सूर्येण सुयुजोषसः। युवां सुवासाः। अष्टाचेऋा नवंद्वारा॥११५॥

देवानां पूर्रयोध्या। तस्या १ हिरण्मयः कोशः। स्वर्गो लोको ज्योतिषाऽऽवृंतः।

विवेशांऽप्राजिता। पराङेत्यंज्याम्यी। पराङेत्यंनाश्की। इह चांमुत्रं चान्वेति। विद्वान्दंवासुरानुंभ्यान्। यत्कुंमारी मन्द्रयंते। यद्योषिद्यत्यंतिव्रतां। अरिष्टं यत्किं चं क्रियतें। अग्निस्तदनुंवेधित। अश्वतांसः श्रृंतास्श्र॥११७॥
यज्वानो येऽप्यंयज्वनः। स्वर्यन्तो नापेंक्षन्ते। इन्द्रंमृग्निं चं ये विदुः। सिकंता इव संयन्ति। रिश्मिभिः समुदीरिताः। अस्माल्लोकादंमुष्माच। ऋषिभिरदात्पृश्लिभिः।

अपेत वीत वि चं सर्पतातः। येऽत्र स्थ पुंराणा ये च नूतंनाः। अहोभिरद्भिरक्तु-

यो वै तां ब्रह्मणो वेद। अमृतेनाऽऽवृतां पुरीम्। तस्मै ब्रह्म चं ब्रह्मा च। आयुः

कीर्तिं प्रजां दंदुः। विभ्राजमाना १ हरिणीम्। यशसां सम्परीवृंताम्। पुर १ हिरण्मेयीं

ब्रह्मा॥११६॥

भिर्व्यक्तम्॥११८॥

यमो दंदात्ववसानंमस्मै। नृ मुंणन्तु नृपात्वर्यः। अकृष्टा ये च कृष्टंजाः। कुमारीषु कुनीनीषु। जारिणीषु च ये हिताः। रेतः पीता आण्डंपीताः। अङ्गरिषु च ये हुताः।

उभयांन पुत्रंपौत्रकान्। युवेऽहं यमराजंगान्। शृतमिन्नु श्ररदंः॥११९॥

अदो यद्वह्मं विल्बम्। पितृणां चं यमस्यं च। वर्रुणस्याश्विनोर्ग्नेः। मुरुतां च विहायंसाम्। कामुप्रयवंणं मे अस्तु। स ह्यंवास्मि सुनातनः। इति नाको ब्रह्मिश्रवो रायो धनम्। पत्रानापो देवीरिहाऽऽहित॥१२०॥

रायो धनम्। पुत्रानापो देवीरिहाऽऽहिंत॥१२०॥
———————[२७]

विशींणीं गृधंशीणीं च। अपेतों निर्ऋति हंथः। परिबाध श्वेंतकुक्षम्। निजङ्घ श्वें शब्लोदंरम्। स् तान् वाच्यायंया सह। अग्ने नाशंय सन्दर्शः। ईर्ष्यासूये बुंभुक्षाम्। मृन्युं कृत्यां चं दीधिरे। रथेन कि श्वाकावंता। अग्ने नाशंय सन्दर्शः॥१२१॥

पूर्जन्यांय प्रगायत। दिवस्पुत्रायं मीदुषें। स नो युवसंमिच्छतु। इदं वर्चः

पूर्जन्याय प्रगायता दिवस्पुत्राय माढुषा स ना यवसामच्छतु। इद वचः पूर्जन्याय स्वराजै। हृदो अस्त्वन्तर्नर्नायोता मयोभूर्वातो विश्वकृष्टयः सन्त्वस्मे।

सुपिप्पला ओषंधीर्देवगोपाः। यो गर्भमोषंधीनाम्। गर्वां कृणोत्यर्वताम्। पूर्जन्यः पुरुषीणाम्॥१२२॥

पुनंमामैत्विन्द्रियम्। पुन्रायुः पुन्भगंः। पुन्द्र्राह्मंणमैतु मा। पुन्द्र्रविणमैतु मा। यन्मेऽद्य रेतः पृथिवीमस्कान्। यदोषंधीरप्यसंर्घदापः। इदं तत्पुन्रादंदे। दीर्घायुत्वाय वर्चसे। यन्मे रेतः प्रसिच्यते। यन्म आजांयते पुनः। तेनं माम्मृतं कुरु। तेनं सुप्रजसं कुरु॥१२३॥

———[३०]
अद्मस्तिरोऽधाऽजांयत। तवं वैश्रवणः संदा। तिरोऽधेहि सप्त्रान्नंः। ये
अपोऽश्नन्तिं केच्न। त्वाष्ट्रीं मायां वैश्रवणः। रथर्ं सहस्रवन्धुंरम्। पुरुश्चऋरं
सहस्राश्वम्। आस्थायायाहि नो बिलिम्। यस्मैं भूतानिं बिलिमावंहन्ति। धनं गावो
हस्ति हिरंण्यमश्वान्॥१२४॥

असाम सुमृतौ यज्ञियंस्य। श्रियं बिश्रृतोऽन्नंमुखीं विराजम्। सुद्र्शने चं क्रौश्रे चं। मैनागे चं महागिरौ। शृतद्वाट्टारंगमृन्ता। स्रहार्यं नगरं तवं। इति मन्नाः। कल्पोऽत ऊर्ध्वम्। यदि बलि्र् हरैत्। हि्र्ण्यनाभये वितुद्ये कौबे्रायायं बंलिः॥१२५॥

सर्वभूताधिपतये नंम इति। अथ बिलि हत्वोपितिष्ठेत। क्षत्रं क्षत्रं वैश्ववणः। ब्राह्मणां वयु स्मः। नमस्ते अस्तु मा मां हि सीः। अस्मात्प्रविश्यान्नमद्धीति। अथ तमग्निमांदधीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्जीत। तिरोऽधा भूः। तिरोऽधा भुवः॥१२६॥

तिरोऽधाः स्वः। तिरोऽधा भूर्भुवः स्वः। सर्वेषां लोकानामाधिपत्यें सीदेति। अथ तमग्निमिन्धीत। यस्मिन्नेतत्कर्म प्रयुश्चीत। तिरोऽधा भूः स्वाहाँ। तिरोऽधा भुवः स्वाहाँ। तिरोऽधाः स्वः स्वाहाँ। तिरोऽधा भूर्भुवः स्वः स्वाहाँ। यस्मिन्नस्य काले सर्वा आहुतीर्हुतां भवेयः॥१२७॥

अपि ब्राह्मणंमुखीनाः। तस्मिन्नहः काले प्रंयुञ्जीत। परंः सुप्तर्जनाद्वेपि। मास्म

प्रमाद्यन्तंमाध्यापयेत्। सर्वार्थाः सिद्धान्ते। य एवं वेद। क्षुध्यन्निदंमजानताम्। सर्वार्था नं सिद्धान्ते। यस्तें विघातुंको भ्राता। ममान्तर्हृंदये श्रितः॥१२८॥

तस्मां इममग्रूपिण्डं जुहोमि। स मैंऽर्थान्मा विवंधीत्। मिय् स्वाहाँ। राजाधिराजायं प्रसह्यसाहिनें। नमां वयं वैश्वणायं कुर्महे। स में कामान्कामकामांय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्वणो दंदातु। कुबेरायं वेश्वणायं। महाराजाय नमः। केतवो अरुणासश्च। ऋष्यो वातंरश्ननाः। प्रतिष्ठा श्वतधां हि। समाहितासो सहस्र्धायंसम्। शिवा नः शन्तंमा भवन्तु। दिव्या आप ओषंधयः। सुमृडीका सरंस्वति। मा ते व्योम सन्दर्शि॥१२९॥

संवथ्सरमेतंद्वतं चरेत्। द्वौ वा मासौ। नियमः संमासेन। तस्मिन्नियमंविशेषाः। त्रिषवणमुदकोपस्पूर्शी। चतुर्थकालपानंभक्तः स्यात्। अहरहर्वा भैक्षंमश्रीयात्। औदुम्बरीभिः समिद्भिरग्निं परिचरेत्। पुनर्मामैत्विन्द्रियमित्येतेनऽनुंवाकेन। उद्धृतपरिपूताभिरद्भिः कार्यं कुर्वीत॥१३०॥

महानाम्नीभिरुदक र सं इस्पृश्य। तमाचाँयों दुद्यात्। शिवा नः शन्तमेत्योषधीरालुभ सुमृडीकेति भूमिम्। एवमंपव्गे। धेनुर्दक्षिणा। करसं वासंश्च क्षौमम्। अन्यद्वा शुक्रम्। यथाशक्ति वा। एव इस्वाध्यायंधर्मेण। अरण्येऽधीयीत। तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति तपस्वी पुण्यो भवति ॥१३२॥

अंसश्चयवान्। अग्नये वायवें सूर्याय। ब्रह्मणे प्रंजापतये। चन्द्रमसे नंक्षत्रेभ्यः।

ऋतुभ्यः संवंध्सराय। वरुणायारुणायेति व्रंतहोमाः। प्रवर्ग्यवंदादेशः। अरुणाः

काँण्डऋषयः। अरण्यें ऽधीयीरत्र्। भद्रं कर्णेभिरिति द्वें जिपत्वा॥१३१॥

भुद्रं कर्णिभिः शृणुयामं देवाः। भुद्रं पंश्येमाक्षिभूर्यजंत्राः। स्थिरैरङ्गैंस्तुष्टुवार संस्तुनूभिः। व्यशेम देविहेतं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रंवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृह्स्पतिर्दधातु॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥द्वितीयः प्रश्नः॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृहते कंरोमि॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥

सह वै देवानां चासुराणां च यज्ञौ प्रतंतावास्तां वय सवर्गं लोकमें प्यामो वयमें प्याम इति तेऽसुंराः सन्नह्य सहंसैवाचंरन् ब्रह्मचर्येण तपंसैव देवास्तेऽसुंरा अमुह्य इस्ते न प्राजान इस्ते परांऽभवन्ते न स्वर्गं लोकमायन् प्रसृतेन वै यज्ञेनं देवाः स्वर्गं लोकमायन्न प्रसृतेनासुरान् पराभावयन् प्रसृतो ह वै यंज्ञोपवीतिनों यज्ञोऽप्रंसृतोऽनुंपवीतिनो यत्किं चं ब्राह्मणो यंज्ञोपवीत्यधींते यजंत एव तत्तरमाँ द्यज्ञोपवीत्येवाधीयीत याजयेद्यजेत वा यज्ञस्य प्रसृत्या अजिनं वासो वा दक्षिणत उपवीय दक्षिणं बाहुमुद्धरतेऽवं धत्ते सव्यमितिं यज्ञोपवीतमेतदेव विपरीतं प्राचीनावीत र संवीतं मानुषम्॥१॥

तानि वरंमवृणीताऽऽदित्यो नो योद्धा इति तान् प्रजापंतिरब्रवीद्योधंयध्वमिति

तस्मादुत्तिष्ठन्तु ह वा तानि रक्षा ईस्यादित्यं योधयन्ति यावदस्तमन्वगातानि

रक्षा रेसि ह वां पुरोऽनुवाके तपोग्रंमतिष्ठन्त तान् प्रजापंतिर्वरेणोपामंत्रयत

ह वा एतानि रक्षा रेसि गायत्रिया ऽभिंमित्रितेनाम्भंसा शाम्यन्ति तदुं ह वा एते ब्रंह्मवादिनंः पूर्वाभिमुखाः सन्ध्यायां गायत्रियाऽभिमन्निता आपं ऊर्धं विक्षिपन्ति ता एता आपों वज्रीभूत्वा तानि रक्षा रेसि मन्देहारुणे द्वीपे प्रक्षिंपन्ति यत्प्रंदक्षिणं प्रक्रमन्ति तेनं पाप्मानुमवंधून्वन्त्युद्यन्तंमस्तं यन्तंम् आदित्यमंभिध्यायन् कुर्वन् ब्राँह्मणो विद्वान्थ्सकलं भद्रमंश्रुतेऽसावांदित्यो ब्रह्मेति ब्रह्मेव सन् ब्रह्माप्येति य एवं वेदं॥२॥ यदेंवा देवहेळेनुं देवांसश्चकृमा वयम्। आदिंत्यास्तस्मांन्मा मुश्चतर्तस्यर्तेन मामित। देवां जीवनकाम्या यद्वाचाऽनृंतमूदिम। तस्मान्न इह मुंश्रत विश्वें देवाः

स्जोषंसः। ऋतेनं द्यावापृथिवी ऋतेन त्व र संरस्वति। कृतान्नः पाह्येनंसो यत्किं

चार्नृतमूदिम। इन्द्राग्नी मित्रावर्रुणो सोमो धाता बृह्स्पतिः। ते नो मुश्चन्त्वेनंसो यदन्यकृतमारिम। सजात्रशृ सादुत जांमिशृ साज्यायंसः श सादुत वा कनीयसः। अनाधृष्टं देवकृतं यदेन्स्तस्मात् त्वम्स्माञ्जातवेदो मुमुग्धि॥३॥ यद्वाचा यन्मनंसा बाहुभ्यांमूरुभ्यांमष्ठीवद्धा श्रिश्चर्यंत्रं चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनंसो गार्हंपत्यः प्रमुश्चतु चकृम यानि दुष्कृता। येन त्रितो अर्णवाचित्रंभव यस सर्वं तम्मो निर्ममोन्। योनेन्द्रो विश्वा अर्जन्वाद्र्यातीस्त्रेनाइं

अग्निर्मा तस्मादेनेसो गार्हंपत्यः प्रमुश्चतु चकुम यानि दुष्कृता। येनं त्रितो अर्णवात्रिर्बभूव येन सूर्यं तमसो निर्मुमोचं। येनेन्द्रो विश्वा अर्जहादरांतीस्तेनाहं ज्योतिषा ज्योतिरानशान आक्षि। यत्कुसीद्मप्रतीत्तं मयेह येनं यमस्यं निधिना चरांमि। एतत्तदंग्ने अनुणो भंवामि जीवंन्नेव प्रति तत्तं दधामि। यन्मियं माता यदां पिपेष यदन्तिरक्षं यदाशसातित्रामामि त्रिते देवा दिवि जाता यदापं इमं में वरुण तत्त्वां यामि त्वं नो अग्ने स त्वं नो अग्ने त्वमंग्ने अयासि॥४॥

[3]

यददीं व्यत्रृणमृहं बुभूवादिंथ्सन्वा सञ्जगर् जनेंभ्यः। अग्निर्मा तस्मादिन्द्रंश्च संविदानौ प्रमुंश्चताम्। यद्धस्तांभ्यां चुकर् किल्बिंषाण्यक्षाणां वृग्नुमुंपुजिन्नंमानः। विकुंसुको निर्ऋथो यश्चं निस्वनः। तेऽ(१)स्मद्यक्ष्ममनांगसो दूरादूरमंचीचतम्। निर्यक्ष्ममचीचते कृत्यां निर्ऋतिं च। तेन् योऽ(१)स्मथ्समृंच्छातै तमंस्मै प्रसुंवामसि। दुःशुरसानुशुरसाभ्यां घणेनांनुघणेनं च। तेनान्योऽ(१)स्मथ्समृंच्छातै तमंस्मै प्रसुंवामिस। सं वर्चसा पर्यसा सन्तनूभिरगंन्मिह मनसा स॰ शिवेनं। त्वष्टां नो अत्र विदंधातु रायोऽनुंमाई तन्वो(१) यद्विलिष्टम्॥५॥ आयुंष्टे विश्वतों दधद्यमुग्निर्वरेंण्यः। पुनंस्ते प्राण आयांति परायक्ष्म र सुवामि ते। आयुर्दा अंग्ने हिवषों जुषाणो घृतप्रंतीको घृतयोनिरेधि। घृतं पीत्वा मधु चारु गर्व्यं पितेवं पुत्रमभिरंक्षतादिमम्। इममंग्न आयुंषे वर्चसे कृधि तिग्ममोजों वरुण

उग्रं पश्या चे राष्ट्रभृच तान्यंपसरसावनुंदत्तामृणानि। उग्रं पश्ये राष्ट्रंभृत्किल्बिंषाणि

यद्क्षवृत्तमनुंदत्तम्तत्। नेन्नं ऋणानृणव इथ्संमानो यमस्यं लोके अधिरञ्जरायं। अवं

ते हेळ उदुंत्तमिमं में वरुण तत्त्वां यामि त्वं नों अग्ने स त्वं नो अग्ने। सङ्कंसुको

स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम्। दर्धद्वयिं मिय पोषम्॥६॥

वय समिधं कृत्वा तुभ्यंमग्नेऽपिं दध्मसि॥७॥

अग्निर्ऋषिः पर्वमानः पार्श्वजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महाग्यम्। अग्ने जातान्प्रणुंदा नः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्चातवेदो नुदस्व। अस्मे दीदिहि सुमना अहेळ्ञ्छर्मन्ते स्याम त्रिवरूथ उद्भौ। सहंसा जातान्प्रणुंदा नः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्चातवेदो नुदस्व। अधि नो ब्रहि सुमन्स्यमानो वय स्याम प्रणुंदा नः सपत्नान्प्रत्यजाताञ्चातवेदो नुदस्व। अधि नो ब्रहि सुमन्स्यमानो वय स्याम प्रणुंदा नः सपत्नान्। अग्ने यो नोऽभितो जनो वृको वारो जिघा सित। ता इस्त्वं

वृंत्रहं जिह वस्वस्मभ्यमाभर। अग्ने यो नोंऽभिदासंति समानो यश्च निष्ट्यः। तं

सःशिंशाधि। मातेवाँस्मा अदिते शर्म यच्छ विश्वे देवा जरंदष्टिर्यथाऽसंत्। अग्न

आयू ५ेषि पवस् आ सुवोर्जिमिषं च नः। आरे बांधस्व दुच्छुनांम्। अग्ने पर्वस्व

यो नः शपादशंपतो यश्चं नः शपंतः शपात्। उषाश्च तस्मैं निम्नुक्क सर्वं पापः समूहताम्। यो नः सपत्नो यो रणो मर्तोऽभिदासंति देवाः। इध्मस्येव प्रक्षायंतो मा तस्योच्छेंषि किं चन। यो मां द्वेष्टिं जातवेदो यं चाहं द्वेष्मि यश्च माम्।

सर्वाङ्क्तानंग्ने सन्देह् याङ्श्चाहं द्वेष्मि ये च माम्। यो अस्मभ्यंमरातीयाद्यश्चं नो द्वेषंते जनः। निन्दाद्यो अस्मान्दिफ्सांच् सर्वाङ्क्तान्मंष्मुषा कुरु। स॰शितं मे ब्रह्म स॰शितं वीर्या(१)म्बलम्। स॰शितं क्षत्रं में जिष्णु यस्याहमस्मिं पुरोहितः।

उदेषां बाहू अंतिरमुद्धर्चो अथो बलम्। क्षिणोमि ब्रह्मणाऽमित्रानुन्नयामि स्वा(१)म् अहम्। पुनर्मनः पुनरायुंर्म् आगात्पुनश्चक्षुः पुनः श्रोत्रं म् आगात्पुनंश्चित्तं पुनराधीतं म् आगात्। वैश्वानरो मेऽदंब्धस्तनूपा अवंबाधतां दुरितानि विश्वा॥८॥

वैश्वान्राय प्रतिवेदयामो यदीनृण स्मिन् रो देवतास्। स एतान्पाशांन प्रमुचन् प्रवेद स नो मुञ्जातु दुरितादवद्यात्। वैश्वान्रः पर्वयान्नः प्वित्रैर्यथ्मंङ्गरम्भिधावांम्याशा

अनोजान्मनंसा याचेमानो यदत्रैनो अव तथ्सुंवामि। अमी ये सुभगें दिवि विचृतौ नाम तारंके। प्रेहामृतंस्य यच्छतामेतद्वंद्धकमोचंनम्। विजिंहीर्ष्व

लोकान्कृषि बन्धान्मुंश्वासि बद्धंकम्। योनेरिव प्रच्युंतो गर्भः सर्वान् पृथो अनुष्व। स प्रजानन्प्रतिंगृभ्णीत विद्वान्प्रजापंतिः प्रथमजा ऋतस्यं। अस्माभिर्दत्तं ज्ररसंः प्रस्तादिष्ठिंत्रं तन्तुंमनुसश्चरेम॥९॥

ततं तन्तुमन्वेके अनु सश्चरित् येषां दत्तं पित्र्यमायंनवत्। अबन्ध्वेके ददंतः प्रयच्छाद्दातुं चेच्छुक्रवार्सः स्वर्ग एषाम्। आरंभेथामनु सर्रंभेथार समानं पन्थांमवथो घृतेनं। यद्वां पूर्तं परिविष्टं यद्ग्रो तस्मै गोत्रायेह जायांपती

सर्रभेथाम्। यदन्तरिक्षं पृथिवीमुत द्यां यन्मातरं पितरं वा जिहिश्सिम। अग्निर्मा तस्मादेनंसो गार्हंपत्य उन्नों नेषद्दुरिता यानिं चकुम। भूमिर्माताऽदिंतिर्नो जनित्रं भ्राताऽन्तरिक्षमभिशंस्त एनः। द्यौर्नः पिता पितृयाच्छं भंवासि जामि मित्वा मा विविध्सि लोकात्। यत्रं सुहार्दः सुकृतो मदंन्ते विहाय रोगं तुन्वा(१) हुं स्वायाम्। अश्लोणाङ्गेरह्वंताः स्वर्गे तत्रं पश्येम पितरं च पुत्रम्। यदन्नमद्यमृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नुत वा करिष्यन्। यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति यदेव किं चं प्रतिजग्राहम्गिर्मा तस्मादनृणं कृणोत्। यदन्नमिद्री बहुधा विरूपं वासो हिरंण्यम्त गाम्जामिवम्। यद्देवानां चक्षुष्यागो अस्ति यदेव किं चं प्रतिजग्राहम्गिर्मा तस्मादनृणं कृणोत्। यन्मयां मनंसा वाचा कृतमेनः कदाचन। सर्वस्मात्तस्मान्मेळितो मोग्धि त्व हि वेत्थं यथात्थम्॥१०॥

सवस्मात्तस्मान्माळता माग्ध त्वर ह वत्य ययात्यम्॥१०॥

वातंरशना ह वा ऋषंयः श्रमणा ऊर्ध्वमंन्धिनो बंभूवुस्तानृषंयोऽर्थमांयुः स्ते निलायंमचर्ः स्तेऽनुंप्रविशुः कूश्माण्डानि ताः स्तेष्वन्वंविन्दञ्छूद्धयां च तपंसा च तानृषंयोऽब्रुवन्कथा निलायं चर्थेति त ऋषींनब्रुवन्नमों वोऽस्तु भगवन्तोऽस्मिन्धांमि केनं वः सपर्यामेति तानृषंयोऽब्रुवन्पविन्नं नो ब्रूत् येनारेपसंः स्यामेति त एतानि सूक्तान्यपश्यन् यद्देवा देवहेळेनं यददींव्यन्नृणमृहं वभवाऽर्यंश्रे विश्वतं द्यादिव्यतेयान्तं ज्वत्व वैश्वान्यय प्रविवेदयाम द्वरापंतिष्व

बभूवाऽऽयुंष्टे विश्वतो दध्दित्येतैराज्यं जुहुत वैश्वान्राय प्रतिवेदयाम् इत्युपंतिष्ठत् यदंर्वाचीन्मेनो भूणहृत्यायास्तस्मान्मोक्ष्यध्व इति त एतैरंजुहवुस्तेऽरेपसो- ऽभवन्कर्मादिष्वेतैर्जुहुयात्पूतो देवलोकान्थ्समंश्रुते॥११॥

कूश्माण्डेर्जुंह्याद्योऽपूंत इव मन्येत यथाँ स्तेनो यथाँ भ्रूणहैवमेष भंवति योऽयोनौ रेतः सिश्चति यदंर्वाचीनमेनौ भ्रूणहत्यायास्तस्मौन्मुच्यते यावदेनों दीक्षामुपैति दीक्षित एतैः संतति जुंहोति संवथ्सरं दीक्षितो भंवति संवथ्सरादेवाऽऽत्मानं पुनीते मासं दीक्षितो भंवति यो मासः स संवथ्सरः संवथ्सरादेवाऽऽत्मानं पुनीते चतुर्विरशतिर रात्रींदीक्षितो भंवति चतुर्वि शितरर्धमासाः संवथ्सरः संवथ्सरादेवाऽऽत्मानं पुनीते द्वादंश रात्रींदीक्षितो भंवति द्वादंश मासाः संवथ्सरः संवथ्सरादेवाऽऽत्मानं पुनीते षड्रात्रींदीक्षितो भंवति षड्वा ऋतवंः संवथ्सरः संवथ्सरादेवाऽऽत्मानं पुनीते तिस्रो रात्रींदीक्षितो भंवति त्रिपदां गायत्री गांयत्रिया पुवाऽऽत्मानं पुनीते न मा॰समंश्रीयात्र स्त्रियमुपेयात्रोपर्यासीत जुगुंफ्सेतानृंतात्पयों ब्राह्मणस्यं मन्येतोपदस्यामीत्योदनं धानाः सक्तूं घृतमित्यनुंव्रतयेदात्मनोऽनुंपदासाय॥१२॥

अजान् हु वै पृश्नी ईस्तप्स्यमानान् ब्रह्मं स्वयम्भवंभ्यानंर्ष्त ऋषंयोऽभवन्तद्धीणाः तां देवतामुपातिष्ठन्त यज्ञकामास्त एतं ब्रह्मयज्ञमपश्यन्तमाहंरन्तेनायजन्त यद्द्योऽध्यगीषत् ताः पर्यआहुतयो देवानामभवन् यद्यजूरंषि घृताहुंतयो

यथ्सामानि सोमाहृतयो यदर्थवाङ्गिरसो मध्वाहुतयो यद्वाँह्यणानीतिहासान्

पुंराणानि कल्पान्गार्था नाराश्र्सीर्मेदाहुतयो देवानांमभवन्ताभिः क्षुधं पाप्मानम-

पाँघ्रत्रपंहतपाप्मानो देवाः स्वर्गं लोकर्मायन् ब्रह्मणः सार्युज्यमृषंयोऽगच्छन्॥१३॥

पश्च वा एते महायुज्ञाः संतृति प्रतायन्ते सतृति सन्तिष्ठन्ते देवयुज्ञः

पितृयज्ञो भूतयज्ञो मनुष्ययज्ञो ब्रह्मयज्ञ इति यद्ग्रौ जुहोत्यपि समिधं तद्देवयज्ञः

सन्तिष्ठते यत्पितृभ्यः स्वधा करोत्यप्यपस्तित्पंतृयज्ञः सन्तिष्ठते यद्भूतेभ्यो बलि॰ हरंति तद्भंतयज्ञः सन्तिष्ठते यद्ग्रौह्मणेभ्योऽन्नं ददांति तन्मंनुष्ययज्ञः सन्तिष्ठते यथ्स्वौध्यायमधीयीतैकांमप्यृचं यजुः सामं वा तद्वेह्मयज्ञः सन्तिष्ठते यदचोऽधीते पर्यसः कूल्यां अस्य पितृन्थ्सवधा अभिवंहन्ति यद्यजू ईषि घृतस्यं कूल्या यथ्सामानि सोमं एभ्यः पवते यदर्थवाङ्गिरसो मधौः कूल्या यद्वाँह्मणानीतिहासान् पुंराणानि कल्पान्गार्था नाराशश्सीर्मेदंसः कूल्यां अस्य पितृन्थ्स्वधा अभिवहिन्ति यद्योऽधीते पर्यआहुतिभिरेव तद्देवा इस्तंपयित यद्यजू ईषि घृताहुंतिभिर्यथ्सामांनि सोमांह्तिभिर्यदर्थवाङ्गिरसो मध्वांहुतिभिर्यद्वांह्मणानीतिहासान् पुंराणानि कल्पान्गार्था नाराशुर्सीर्मेदाहुतिभिरेव तद्देवा इस्तर्पयित त एनं तृप्ता आयुषा तेर्जमा वर्चमा श्रिया यशंमा ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन च तर्पयन्ति॥१४॥

______[१०] ब्रह्मयुज्ञेनं युक्ष्यमाणुः प्राच्यां दिशि ग्रामादछंदिर्द्रश उदींच्यां प्रागुदीच्यां वोदितं आदित्ये दंक्षिणत उंपवीयोंपविश्य हस्तांववनिज्य त्रिराचांमेद्धिः पंरिमृज्यं स्कृद्ंपुस्पृश्य शिरुश्चक्षुंषी नासिंके श्रोत्रे हृदंयमालभ्य यत्रिराचामंति तेन ऋचंः प्रीणाति यद्विः पंरिमृजंति तेन यजू रेषि यथ्सकृदुपस्पृशंति तेन सामानि यथ्सव्यं पाणिं पादौ प्रोक्षति यच्छिरश्चक्षुंषी नासिके श्रोत्रे हृदंयमालभंते तेनाथंर्वाङ्गिरसौं ब्राह्मणानीतिहासान् पुराणानि कल्पान्गार्था नाराश १ सीः प्रीणाति दर्भाणां महदुंपस्तीर्योपस्थं कृत्वा प्राङासीनः स्वाध्यायमधीयीतापां वा एष ओषंधीना । रसो यद्दर्भाः सरंसमेव ब्रह्मं कुरुते दक्षिणोत्तरौ पाणी पादौ कृत्वा सपवित्रावोमिति प्रतिपद्यत एतद्वे यर्जुस्त्रयीं विद्यां प्रत्येषा वागेतत्पर्ममक्षरं तदेतद्वाऽभ्यंक्तमृचो अक्षरें परमे व्योमन् यस्मिन्देवा अधि विश्वें निषेदुर्यस्तन्न वेद किमृचा केरिष्यित् य इत्ति द्विदुस्त इमे समासत् इति त्रीनेव प्रायुङ्क भूर्भुवः स्विरित्यांहैतद्वे वाचः सत्यं यदेव वाचः सत्यं तत्प्रायुङ्कार्थं सावित्रीं गांयत्रीं त्रिरन्वांह पच्छौंऽर्धर्चशोऽनवान ः संविता श्रियंः प्रसविता श्रियंमेवाऽऽप्नोत्यथों प्रज्ञातंयैव प्रंतिपदा छन्दा रेसि प्रतिपद्यते॥१५॥

वर्रुणस्याग्नेः। आऽप्रा द्यावांपृथिवी अन्तरिक्षः सूर्यं आत्मा जगंतस्तस्थुषश्चेति

स वा एष यज्ञः सद्यः प्रतायते सद्यः सन्तिष्ठते तस्य प्राक् सायमंवभृथो नमो

ग्रामे मनंसा स्वाध्यायमधीयीत दिवा नक्तं वेति हं स्माऽऽह शौच आँह्रेय

ब्रह्मण इति परिधानीयां त्रिरन्वांहाप उंपस्पृश्यं गृहानेति ततो यत्किं च ददांति सा दक्षिणा॥१७॥

तस्य वा एतस्यं यज्ञस्य मेघों हिवधानं विद्युद्गिर्वर्ष हिवः स्तनियुत्ववंषद्वारो यदंवस्फूर्जिति सोऽनुंवषद्वारो वायुरात्माऽमावास्यां स्विष्टकृद्य पुवं विद्वान्मेघे वर्षितं विद्योतंमाने स्तनयंत्यवस्फूर्जिति पर्वमाने वायावंमावास्यांया इ स्वाध्यायमधीते तपं एव तत्तंप्यते तपों हि स्वाध्याय इत्युंत्तमं नाक रे रोहत्युत्तमः संमानानां भवति यावन्ति ह वा इमां वित्तस्यं पूर्णां दर्दथ्स्वर्गं लोकं जयिति तावंन्तं लोकं जंयित भूया ५मं चाक्षय्यं चापं पुनर्मृत्युं जंयित ब्रह्मणः सायुंज्यं गच्छति॥१८॥

तस्य वा पुतस्यं यज्ञस्य द्वावंनध्यायौ यदात्माऽशुचिर्यद्देशः समृद्धिर्देवतानि

य एवं विद्वान्मंहारात्र उषस्युदिते व्रजङ्स्तिष्ठन्नासीनः शयानोऽरण्ये ग्रामे वा यावंत्तरसई स्वाध्यायमधीते सर्वां ह्योकाञ्चयित सर्वां ह्योकानंनृणोऽनु-सश्चरित तदेषाभ्यंक्ता। अनुणा अस्मिन्नंनृणाः परस्मि इस्तृतीयें लोके अनृणाः स्याम। ये देवयानां उत पितृयाणाः सर्वांन्यथो अनृणा आक्षीयेमेत्यग्नि वै जातं पाप्मा जंग्राह तं देवा आहूंतीभिः पाप्मानमपाँघन्नाहुंतीनां यज्ञेनं यज्ञस्य दक्षिणाभिर्दक्षिणानां ब्राह्मणेनं ब्राह्मणस्य छन्दोभिश्छन्दंसा इ स्वाध्यायेनापंहतपाप्मा स्वाध्यायों देवपंवित्रं वा एतत्तं योऽनूँ ध्युजत्यभांगो वाचि भंवत्यभांगो नाके तदेषाऽभ्यंक्ता। यस्तित्यार्ज सखिविद॰ सखांयं न तस्यं वाच्यपि भागो अस्ति। यदी १ शृणोत्यलक १ शृणोति न हि प्रवेदं सुकृतस्य पन्थामिति तस्मांथ्स्वाध्यायोऽध्येतव्यो यं यं ऋतुमधीते तेनं तेनास्येष्टं भंवत्युग्नेर्वायोरांदित्यस्य सायुंज्यं गच्छति तदेषाऽभ्युंक्ता। ये अर्वाङुत वां पुराणे वेदं विद्वा र संमुभितों वदन्त्यादित्यमेव ते परिवदन्ति सर्वे अग्निं द्वितीयं तृतीयं च ह् समिति यावंतीर्वे देवतास्ताः सर्वा वेदविदि ब्राह्मणे वंसन्ति तस्माँ द्वाह्मणेभ्यो वेदविद्यो दिवे दिवे नमंस्कुर्यान्नाश्चीलं कीर्तयेदेता एव देवताः प्रीणाति॥१९॥

रिच्यंत इव वा एष प्रेव रिच्यते यो याजयंति प्रतिं वा गृह्णातिं

याजियत्वा प्रतिगृह्य वाऽनंश्वित्रः स्वाध्यायं वेदमधीयीत त्रिरात्रं वां सावित्रीं गायत्रीम्न्वातिरेचयित् वरो दक्षिणा वरेणैव वरई स्पृणोत्यात्मा हि वरः॥२०॥———[१६] दुहे ह् वा एष छन्दाईस् यो याजयंति स येनं यज्ञकृतुनां याजयेथ्सोऽरंण्यं परेत्यं शुचौ देशे स्वाध्यायमेवैनमधीयन्नासीत तस्यानशंनं दीक्षा स्थानमुपसद

आसंन १ सुत्या वाग्जुहूर्मनं उपभृद्धृतिर्ध्रुवा प्राणो ह्विः सामाध्वर्युः स वा एष यज्ञः प्राणदंक्षिणोऽनंन्तदक्षिणः समृद्धतरः॥२१॥

१७]

कतिधावंकीणीं प्रविशतिं चतुर्धेत्यांहुर्ब्रह्मवादिनों मरुतः प्राणैरिन्द्रं बलेन बृहस्पतिं ब्रह्मवर्चसेनाग्निमेवेतंरेण सर्वेण तस्यैतां प्रायेश्चित्तिं विदां चंकार स्देवः काँश्यपो यो ब्रह्मचार्यविकिरेदमावास्याया रात्र्यामिश्ने प्रणीयोपसमाधाय द्विराज्यंस्योपघातंं जुहोति कामावंकीर्णोऽस्म्यवंकीर्णोऽस्मि काम कामांय स्वाहा कामाभिद्रुग्धोऽस्म्यभिद्रुग्धोऽस्मि काम कामाय स्वाहेत्यमृतं आज्यम्मृतंमे्वाऽऽत्मन्धंत्ते हुत्वा प्रयंताञ्चलिः कवांतिर्यङ्काग्निम्भिनेत्रयेत सं मांऽऽसिश्चन्तु मुरुतः समिन्द्रः सं बृहस्पतिः। सं माऽयमुग्निः सिंश्चत्वायुंषा च बलेन चाऽऽयुंष्मन्तं करोत् मेति प्रतिं हास्मै मुरुतः प्राणान्दंधति प्रतीन्द्रो बलं प्रति बृहस्पतिर्ब्रह्मवर्चसं प्रत्यग्निरितरथ्सर्व सर्वतनुर्भूत्वा सर्वमायुरिति त्रिरिभमंत्रयेत त्रिषंत्या हि देवा योऽपूंत इव मन्येंत स इत्थं जुंहुयादित्थम्भिमंत्रयेत पुनीत एवाऽऽत्मानमायुरेवाऽऽत्मन्धंत्ते वरो दक्षिणा वरेणैव वर्ड स्पृणोत्यात्मा हि वर्रः॥२२॥

-[86] भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये स्वंः प्रपंद्ये भूभुवः स्वंः प्रपंद्ये ब्रह्म प्रपंद्ये ब्रह्मकोशं प्रपंदोऽमृतं प्रपंदोऽमृतकोशं प्रपंदो चतुर्जालं ब्रह्मकोशं यं मृत्युर्नावपश्यंति तं प्रपंद्ये देवान् प्रपंद्ये देवपुरं प्रपंद्ये परीवृतो वरीवृतो ब्रह्मणा वर्मणाऽहं तेजंसा कश्यंपस्य यस्मै नमुस्तच्छिरो धर्मो मूर्धानं ब्रह्मोत्तरा हर्नुर्यज्ञोऽधंरा विष्णुर्ह्दय १ संवथ्सरः प्रजनंनमिथनौ पूर्वपादांवित्रर्मध्यं मित्रावरुणावपरपादांविग्नः पुच्छंस्य प्रथमं काण्डं तत इन्द्रस्ततः प्रजापित्रभेयं चतुर्थः स वा एष दिव्यः शांकुरः शिशुंमार्स्त १ ह य पुवं वेदापं पुनर्मृत्युं जंयित जयंति स्वर्गं लोकं नाध्वनि प्रमीयते नाफ्सु प्रमीयते नाग्नौ प्रमीयते नानुपत्यः प्रमीयते लुघ्वान्नो भवति ध्रुवस्त्वमंसि ध्रवस्य क्षितमिस् त्वं भूतानामिधिपतिरिस् त्वं भूताना ॥ श्रेष्ठों ऽसि त्वां भूतान्युपं पर्यावर्तन्ते नमस्ते नमः सर्वं ते नमो नमः शिशुकुमाराय नमः॥२३॥

नमः प्राच्यै दिशे याश्चं देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यश्च नमो नमो दक्षिणायै दिशे याश्चं देवतां एतस्यां प्रतिंवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमः प्रतींच्यै दिशे याश्चं देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नम उदींच्यै दिशे याश्चं देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमं ऊर्ध्वाये दिशे याश्चं देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमोऽधंरायै दिशे याश्चं देवतां एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमोंऽवान्तरायै दिशे याश्चं देवता एतस्यां प्रतिवसन्त्येताभ्यंश्च नमो नमो गङ्गायमुनयोर्मध्ये ये वसन्ति ते मे प्रसन्नात्मानश्चिरं जीवितं वर्धयन्ति नमो गङ्गायम्नयोर्म्निभ्यश्च नमो नमो गङ्गायम्नयोर्म्निभ्यश्च नमः॥२४॥

ॐ नमो ब्रह्मणे नमों अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नम् ओषंधीभ्यः। नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नमो विष्णंवे बृह्ते कंरोमि॥ ॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

ॐ तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं यज्ञायं। गातुं यज्ञपंतये। दैवींः स्वस्तिरंस्तु नः। स्वस्तिर्मानुंषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नो अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

चित्तिः स्रुक्। चित्तमाज्यम्। वाग्वेदिः। आधीतं बुर्हिः। केतीं अग्निः। विज्ञांतमृग्निः। वाक्पंतिर्होतां। मनं उपवृक्ता। प्राणो हृविः। सामाध्वर्युः। वार्चस्पते विधे नामन्। विधेमं ते नामं। विधेस्त्वम्स्माकं नामं। वाचस्पतिः सोमं पिबतु। आऽस्मासुं नृम्णन्थाथ्स्वाहां॥१॥

पृथिवी होता दर्श॥-

685

स्वाहाँ॥३॥ अग्निर्होताऽष्टौ॥ सूर्यं ते चक्षुं। वातं प्राणः। द्यां पृष्ठम्। अन्तरिक्षमात्मा। अङ्गैर्यज्ञम्। पृथिवी ४ शरीरैः। वार्चस्पतेऽच्छिंद्रया वाचा। अच्छिंद्रया जुह्नां। दिवि देवावृधरं होत्रा मेर्यस्व स्वाहाँ॥४॥ सूर्यं ते नवं॥-

अग्निर्होतां। अश्विनांऽध्वर्यू। त्वष्टाऽग्नीत्। मित्र उंपवक्ता। सोमः सोमंस्य

पुरोगाः। शुक्रः शुक्रस्यं पुरोगाः। श्रातास्तं इन्द्र सोमाः। वातांपेर्हवनश्रुतः

महाहंविर्होतां। सत्यहंविरध्वर्युः। अच्युंतपाजा अग्नीत्। अच्युंतमना उपवक्ता। अनाधृष्यश्चौप्रतिधृष्यश्चे यज्ञस्योभिगरौ। अयास्यं उद्गाता। वाचंस्पते हृद्विधे नामन्। विधेमं ते नामं। विधेस्त्वमस्माकं नामं। वाचस्पतिः सोमंमपात्। मा दैव्यस्तन्तुश्छेदि मा मंनुष्यंः। नमों दिवे। नमंः पृथिव्ये स्वाहाँ॥५॥

अपात्रीणिं च॥

वाग्घोता नवं॥=

ब्राह्मण एकंहोता। स यज्ञः। स में ददातु प्रजां पश्न्युष्टिं यशेः। यज्ञश्चं मे भूयात्। अग्निर्द्विहोता। स भूती। स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशः। भर्ता च मे भूयात्। पृथिवी त्रिहोता। स प्रंतिष्ठा॥७॥ स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशंः। प्रतिष्ठा चं मे भूयात्। अन्तरिक्षं चतुरहोता। स विष्ठाः। स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशः। विष्ठाश्चं मे भूयात्। वायुः पश्चंहोता।

वाग्घोतां। दीक्षा पत्नीं। वातोंऽध्वर्युः। आपोंऽभिगरः। मनों हविः। तपंसि

जुहोमि। भूर्भुवः सुवंः। ब्रह्मं स्वयम्भु। ब्रह्मंणे स्वयम्भुवे स्वाहाँ॥६॥

स प्राणः। स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशः। प्राणश्चं मे भूयात्॥८॥

चन्द्रमाः षङ्कोता। स ऋतून्केल्पयाति। स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशः। ऋतवश्च मे कल्पन्ताम्। अन्नर्ं सप्तहोता। स प्राणस्यं प्राणः। स में ददातु प्रजां पशून्पुष्टिं यशंः। प्राणस्यं च मे प्राणो भूयात्। द्यौर्ष्टहोता। सोंऽनाधृष्यः॥९॥

प्रतिष्ठा प्राणर्श्व मे भूयादनाधृष्यः सर्वं च मे भूयात्॥_____

स में ददातु प्रजां प्शून्पुष्टिं यशंः। अनाधृष्यश्चं भूयासम्। आदित्यो नवंहोता। स तेज्स्वी। स में ददातु प्रजां प्शून्पुष्टिं यशंः। तेज्स्वी चं भूयासम्। प्रजापंतिर्दशंहोता। स इद॰ सर्वम्ं। स में ददातु प्रजां प्शून्पुष्टिं यशंः। सर्वं च मे भूयात्॥१०॥

अग्निर्यजुंभिः। स्विता स्तोमैः। इन्द्रं उक्थाम्दैः। मित्रावरुणावाशिषाः। अङ्गिरसो धिष्णियरग्निभिः। मुरुतः सदोहविर्धानाभ्याम्। आपः प्रोक्षणीभिः। ओषंधयो बुर्हिषाः। अदितिर्वेद्याः। सोमो दीक्षयाः॥११॥

त्वष्टेभ्मेनं। विष्णुंर्यज्ञेनं। वसंव आज्येन। आदित्या दक्षिणाभिः। विश्वे देवा ऊर्जा। पूषा स्वंगाकारेणं। बृह्स्पतिः पुरोधयां। प्रजापंतिरुद्गीथेनं। अन्तरिक्षं प्वित्रेण। वायुः पात्रैः। अहङ् श्रृद्धयां॥१२॥

दीक्षया पात्रैरेकं च॥-----[८]

दाता॥१५॥

सेनेन्द्रंस्य। धेना बृह्स्पतेः। पृत्थ्यां पूष्णः। वाग्वायोः। दीक्षा सोमंस्य। पृथिव्यंग्नेः। वसूनां गायत्री। रुद्राणां त्रिष्टुक्। आदित्यानां जगंती। विष्णोरनुष्टुक्॥१३॥

वर्रुणस्य विराट्। यज्ञस्यं पङ्किः। प्रजापंतेरनुंमतिः। मित्रस्यं श्रद्धा। सवितुः

प्रस्तिः। सूर्यस्य मरीचिः। चन्द्रमंसो रोहिणी। ऋषीणामरुन्धती। पूर्जन्यस्य विद्युत्। चतंस्रो दिशः। चतंस्रोऽवान्तरिद्याः। अहंश्च रात्रिश्च। कृषिश्च वृष्टिश्च। त्विषिश्चापंचितिश्च। आपृश्चौषंधयश्च। ऊर्क्च सूनृतां च देवानां पत्नयः॥१४॥ अनुष्टित्वः पदं॥————[९] देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्वे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णाम। राजां त्वा वर्रुणो नयतु देवि दक्षिणेऽग्रये हिर्ण्यम्। तेनांमृतत्वमंश्याम्। वयो

दात्रे। मयो मह्यंमस्तु प्रतिग्रहीत्रे। क इदं कस्मां अदात्। कामः कामाय। कामों

कामः प्रतिग्रहीता। कामः समुद्रमाविंश। कामेन त्वा प्रतिंगृह्णामि। कामैतत्तै। पृषा ते काम दक्षिणा। उत्तानस्त्वौङ्गीर्सः प्रतिंगृह्णातु। सोमांय वासः। रुद्राय गाम्। वरुणायाश्वम्। प्रजापंतये पुरुषम्॥१६॥

मनंवे तल्पम्। त्वष्ट्रेऽजाम्। पूष्णेऽविम्। निर्ऋंत्या अश्वतरगर्द्भौ। हिमवंतो हिस्तनम्। गुन्धर्वापस्पराभ्यः स्नगलं कर्णे। विश्वेभ्यो देवेभ्यो धान्यम्। वाचेऽन्नम्। ब्रह्मण ओदनम्। समुद्रायापः॥१७॥

उत्तानायाँङ्गीर्सायानंः। वैश्वान्राय रथम्ं। वैश्वान्रः प्रत्नथा नाकमार्रुहत्। दिवः पृष्ठं भन्दमानः सुमन्मंभिः। स पूर्ववज्ञनयंज्ञन्तवे धनम्। समानमंज्मा परियाति जागृंविः। राजां त्वा वरुणो नयतु देवि दक्षिणे वैश्वान्राय रथम्। तेनांमृत्त्वमंश्याम्। वयो दात्रे। मयो मह्यंमस्तु प्रतिग्रहीत्रे॥१८॥

क इदं कस्मां अदात्। कामः कामांय। कामों दाता। कामः प्रतिग्रहीता। काम र समुद्रमा विंश। कामेन त्वा प्रतिगृह्णामि। कामैतत्तें। एषा तें काम् दक्षिणा। उत्तानस्त्वौङ्गीर्सः प्रतिगृह्णातु॥१९॥

दाता पुरुषमपंः प्रतिग्रहीत्रे नवं च॥_____

सुवर्णं घुमं परिवेद वेनम्। इन्द्रंस्यात्मानं दश्धा चर्रन्तम्। अन्तः संमुद्रे मनस्मा चर्रन्तम्। ब्रह्मान्वंविन्दुद्दशंहोतार्मर्णं। अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनानाम्। एकः सन्बंहुधा विचारः। श्तर शुक्राणि यत्रैकं भवन्ति। सर्वे वेदा यत्रैकं भवन्ति। सर्वे होतारो यत्रैकं भवन्ति। समानसीन आत्मा जनानाम्॥२०॥

अन्तः प्रविष्टः शास्ता जनांना सर्वांत्मा। सर्वाः प्रजा यत्रैकं भवंन्ति। चतुंर्होतारो यत्रं सम्पदं गच्छंन्ति देवैः। समानंसीन आत्मा जनांनाम्। ब्रह्मेन्द्रं मुग्निं जगंतः प्रतिष्ठाम्। दिव आत्मान सिवतारं बृह्स्पतिम्। चतुंर्होतारं प्रदिशोऽनुं क्रुप्तम्। वाचो वीर्यं तपसाऽन्वंविन्दत्। अन्तः प्रविष्टं कुर्तारंमेतम्। त्वष्टांर स्रूपाणिं विकुर्वन्तं विपश्चिम्॥२१॥

अमृतंस्य प्राणं यज्ञमेतम्। चतुंर्होतृणामात्मानं क्वयो निर्चिक्युः। अन्तः प्रविष्टं कुर्तारमेतम्। देवानां बन्धु निर्हितं गुर्हांसु। अमृतेन क्रुप्तं यज्ञमेतम्। चतुंर्होतृणामात्मानं क्वयो निर्चिक्युः। शृतं नियुतः परिवेद विश्वां विश्ववारः। विश्वमिदं वृणाति। इन्द्रंस्यात्मा निर्हितः पश्चंहोता। अमृतं देवानामायुः प्रजानाम्॥२२॥

इन्द्रश्र् राजांनश् सिवतारंमेतम्। वायोरात्मानं क्वयो निर्चिक्युः। रिश्मश्र रंश्मीनां मध्ये तपंन्तम्। ऋतस्यं पदे क्वयो निर्पान्ति। य आण्डकोशे भुवनं बिभर्ति। अनिर्मिण्णः सन्नर्थं लोकान् विचष्टें। यस्याण्डकोशश्रश्रणमाहुः प्राणमुल्बम्। तेनं क्रुप्तोऽमृतेनाहमंस्मि। सुवर्णं कोश्रश्र रजंसा परीवृतम्। देवानां वसुधानीं विराजम्॥२३॥

अमृतंस्य पूर्णान्तामुं कुलां विचंक्षते। पाद् षड्ढोतुर्न किलांविविथ्से। येनुर्तवंः पश्चधोत क्रुप्ताः। उत वां षड्धा मनुसोत क्रुप्ताः। त॰ षड्ढोतारमृतुभिः कल्पंमानम्। ऋतस्यं पदे क्वयो निपाँन्ति। अन्तः प्रविष्टं कुर्तारंमेतम्। अन्तश्चन्द्रमंसि मनंसा चर्रन्तम्। सहैव सन्तं न विजानन्ति देवाः। इन्द्रंस्यात्मानर् शत्धा चर्रन्तम्॥२४॥

इन्द्रो राजा जगेतो य ईशैं। सप्तहोता सप्तधा विक्रृंप्तः। परेण तन्तुं परिष्टियमानम्। अन्तरादित्ये मनसा चरन्तम्। देवाना ह हदयं ब्रह्मान्वविन्दत्। ब्रह्मतद्वर्ह्मण् उज्जेभार। अर्क श्रीतंन्त सरिरस्य मध्यै। आ यस्मिन्थ्सप्त पेर्रवः। महन्ति बहुला श्रियम्। बहुश्वामिन्द्र गोमंतीम्॥२५॥

अच्युंतां बहुलाइ श्रियम्। स हरिर्वसुवित्तंमः। पे्रिरन्द्रांय पिन्वते। बृह्धश्वामिन्द्र गोमंतीम्। अच्युंतां बहुलाइ श्रियम्। मह्यमिन्द्रो नियंच्छतु। शृतर शृता अस्य युक्ता हरीणाम्। अर्वाङा यांतु वसुंभी रृश्मिरिन्द्रेः। प्रमर्श्हमाणो बहुलाइ श्रियम्। रृश्मिरिन्द्रेः सिवृता मे नियंच्छतु॥२६॥

घृतं तेजो मधुंमदिन्द्रियम्। मय्ययम्ग्निर्दधातु। हरिः पत्ङ्गः पंट्री सुंपूर्णः। दिविक्षयो नर्भसा य एति। स न इन्द्रेः कामव्रं देदातु। पश्चारं च्क्रं परिवर्तते

पृथु। हिरंण्यज्योतिः सरि्रस्य मध्यैं। अजंस्रं ज्योतिर्नर्भसा सर्पदेति। स न इन्द्रंः कामवरं दंदातु। सप्त युंअन्ति रथमेकंचऋम्॥२७॥

एको अश्वो वहित सप्तनामा। त्रिनाभि च्क्रम्जर्मनंर्वम्। येनेमा विश्वा भुवनानि तस्थः। भद्रं पश्यन्त उपसेदुरग्रें। तपो दीक्षामृषयः सुवर्विदंः। ततः क्ष्त्रं बल्मोर्जश्च जातम्। तद्स्मै देवा अभि सन्नमन्तु। श्वेत र रिश्मं बोभुज्यमानम्। अपा नेतारं भुवनस्य गोपाम्। इन्द्रं निर्चिक्युः परमे व्योमन्॥२८॥

रोहिंणीः पिङ्गला एकंरूपाः। क्षरंन्तीः पिङ्गला एकंरूपाः। शृतः सहस्रांणि प्रयुतांनि नाव्यांनाम्। अयं यः श्वेतो रिश्मः। पिर् सर्वमिदं जगंत्। प्रजां पश्न्यनांनि। अस्माकं ददातु। श्वेतो रिश्मः पिर् सर्वं बभूव। सुवन्मह्यं पश्न् विश्वरूपान्। पतङ्गमक्तमसुरस्य माययां॥२९॥

हृदा पंश्यन्ति मनंसा मनीषिणंः। समुद्रे अन्तः क्वयो विचंक्षते। मरीचीनां पदिमंच्छन्ति वेधसंः। पृतङ्गो वाचं मनंसा बिभर्ति। तां गंन्धर्वोऽवदद्गर्भे अन्तः।

तां द्योतंमानाः स्वर्यं मनीषाम्। ऋतस्यं पदे क्वयो निपान्ति। ये ग्राम्याः पृशवी विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तो बहुधैकरूपाः। अग्निस्ताः अग्ने प्रमुमोक्त देवः॥३०॥

प्रजापंतिः प्रजयां संविदानः। वीतः स्तुंकेस्तुके। युवम्स्मासु नियंच्छतम्। प्र प्रं यज्ञपंतिन्तिर। ये ग्राम्याः पृशवों विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तों बहुधैकंरूपाः।

तेषा र् सप्तानामिह रन्तिरस्तु। रायस्पोषांय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्याय। य आंरण्याः प्रावों विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तों बहुधैकंरूपाः। वायुस्ता र अग्रे प्रमुंमोक्त देवः। प्रजापंतिः प्रजयां संविदानः। इडांये सृप्तं घृतवंचराचरम्। देवा अन्वंविन्दन्गुहां हितम्। य आंरण्याः प्रावों विश्वरूपाः। विरूपाः सन्तों बहुधैकंरूपाः। तेषा र सप्तानामिह रन्तिरस्तु। रायस्पोषांय सुप्रजास्त्वायं सुवीर्याय॥३१॥

आत्मा जनांनां विकुर्वन्तं विपश्चिं प्रजानां वसुधानीं विराजुं चर्रन्तुं गोर्मतीं में नियंच्छुत्वेक्षेचक्रुं व्योमन्माययां देव एक्षेरूपा अष्टौ चं॥———[११]

स्हस्रंशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रंपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वा।

अत्यंतिष्ठद्दशाङ्गलम्। पुरुष एवेद १ सर्वम्। यद्भूतं यच् भव्यम्। उतामृतुत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहंति। पुतावांनस्य महिमा। अतो ज्याया ५श्च पूर्रुषः॥३२॥ पादौं उस्य विश्वां भूतानि। त्रिपादंस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुंषः।

पादौं ऽस्येहाभंवात्पुनंः। ततो विष्वङ्कां ऋगमत्। साशनानशने अभि। तस्माँ द्विरार्डजायत विराजो अधि पूर्रुषः। स जातो अत्यंरिच्यत। पृश्चाद्भूमिमथों पुरः॥३३॥ यत्पुरुषेण हिवषां। देवा युज्ञमतंन्वत। वुसुन्तो अस्यासीदाज्यम्। ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः। सप्तास्यांसन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः।

अबंध्रन्पुरुषं पृशुम्। तं युज्ञं बुर्हिषि प्रौक्षन्ं। पुरुषं जातमंग्रतः॥३४॥ तेनं देवा अयंजन्त। साध्या ऋषंयश्च ये। तस्मौद्यज्ञार्थ्सर्वहुतः।

सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशू इस्ता इश्चेत्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च ये। तस्मौद्यज्ञाथ्सर्वेहुतंः। ऋचः सामानि जिज्ञरे। छन्दा ५सि जिज्ञरे तस्मौत्। यजुस्तस्मांदजायत॥३५॥

तस्मादश्वां अजायन्त। ये के चोंभ्यादंतः। गावों ह जिज्ञेरे तस्माँत्। तस्माँजाता अंजावयः। यत्पुरुषं व्यंदधुः। कृतिधा व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरू पादांवुच्येते। ब्राह्मणौंऽस्य मुखंमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः॥३६॥

ऊरू तदंस्य यद्वैश्यंः। पद्मा १ शूद्रो अंजायत। चन्द्रमा मनंसो जातः। चक्षोः

सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रेश्चाग्निश्चं। प्राणाद्वायुरंजायत। नाभ्यां आसीद्न्तिरिक्षम्। शीष्णीं द्यौः समंवर्तत। पुद्धां भूमिर्दिशः श्रोत्रांत्। तथां लोका अकल्पयन्॥३७॥ वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवंणं तमंसुस्तु पारे। सर्वाणि रूपाणि विचित्य धीरंः। नामांनि कृत्वाऽभिवद्न् यदास्तें। धाता पुरस्ताद्यमुंदाजहारं। श्राकः प्रविद्वान्प्रदिश्क्षतंस्रः। तमेवं विद्वान्मृतं इह भंवति। नान्यः पन्था अयंनाय विद्यते।

युज्ञेनं युज्ञमंयजन्त देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यांसन्। ते हु नाकं महिमानंः सचन्ते। यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥३८॥

पूरुंषः पुरोंऽग्रुतोंऽजायत कृतोंऽकल्पयन्नास्ं द्वे चं (ज्यायानिध् पूरुंषः। अन्यत्र पुरुंषः॥)॥————[१२]

आदित्यवंर्णं तमंसः परंस्तात्। तमेवं विद्वानुमृतं इहं भवति। नान्यः पन्थां विद्युतेऽयंनाय। प्रजापंतिश्चरित् गर्भे अन्तः। अजायंमानो बहुधा विजायते॥३९॥ तस्य धीराः परिजानन्ति योनिम्। मरीचीनां पदिमच्छन्ति वेधसंः। यो देवेभ्य आतंपति। यो देवानां पुरोहितः। पूर्वो यो देवेभ्यों जातः। नमों रुचाय ब्राह्मये। रुचं ब्राह्मं जुनयंन्तः। देवा अग्रे तदंबुवन्। यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्। तस्यं देवा असन्वशैं। हीश्चं ते लक्ष्मीश्च पत्यौं। अहोरात्रे पार्श्व। नक्षंत्राणि रूपम्। अश्विनौ व्यात्तम्। इष्टं मीनिषाण। अमुं मीनिषाण। सर्वं मिनिषाण॥४०॥ जायते वशें सप्त चं॥₌

अद्धः सम्भूतः पृथिव्ये रसाँच। विश्वकंर्मणः समंवर्तताधिं। तस्य त्वष्टां

विद्धेद्रूपमेति। तत्पुरुषस्य विश्वमाजानमग्रै। वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्।

भूतां सन्भ्रियमांणो बिभर्ति। एकों देवो बंहुधा निर्विष्टः। यदा भारं तुन्द्रयंते स भर्तुम्। निधायं भारं पुन्रस्तंमेति। तमेव मृत्युम्मृतं तमाहुः। तं भूतारं तमुं गोप्तारंमाहुः। स भृतो भ्रियमांणो बिभर्ति। य एंनं वेदं सत्येन भर्तुम्ँ। सुद्यो जातमुत जीहात्येषः। उतो जर्रन्तं न जीहात्येकम्ँ॥४१॥

उतो बुहूनेकुमहर्जिहार। अतन्द्रो देवः सदमेव प्रार्थः। यस्तद्वेद यतं आबभूवं।

स्म्यां च या स्मन्द्धे ब्रह्मणेषः। रमंते तस्मिन्नुत जीर्णे शयांने। नैनं जहात्यहंः सु पूर्व्येषुं। त्वामापो अनु सर्वा श्वरन्त जान्तीः। वथ्सं पर्यसा पुनानाः। त्वमृग्नि हंय्यवाह् स्मिन्थ्से। त्वं भूर्ता मांत्रिश्वा प्रजानाम्॥४२॥
त्वं यज्ञस्त्वमुंवेवासि सोमः। तवं देवा हव्मायंन्ति सर्वे। त्वमेकोऽसि बहूननुप्रविष्टः। नमस्ते अस्तु सुहवो म एधि। नमो वामस्तु शृणुत हवं मे।

युवाना। प्राणांपानौ संविदानौ जंहितम्। अमुष्यासुनामा सङ्गंसाथाम्॥४३॥ तं में देवा ब्रह्मणा संविदानौ। वधायं दत्तं तमहरू हंनामि। असंज्ञजान सत आबंभूव। यं यं जजान स उं गोपो अस्य। यदा भारं तन्द्रयंते स भर्तुम्॥

प्राणापानावजिर स्थरन्तौ। ह्रयामि वां ब्रह्मणा तूर्तमेतम्। यो मां द्वेष्टि तं जिहितं

पुरास्यं भारं पुनुरस्तंमेति। तद्वै त्वं प्राणो अभवः। महान्भोगः प्रजापंतेः। भुजः करिष्यमाणः। यद्देवान्प्राणयो नवं॥४४॥

-[१४]

एकं प्रजानाङ्गसाथां नवं॥=

सर्रूपमनुमेदमागाँत्। अर्थनं मा विविधीर्विक्रमस्व। मा छिदो मृत्यो मा विधीः। मा मे बलं विवृहो मा प्रमोषीः। प्रजां मा में रीरिष् आर्युरुग्र। नृचक्षेसं त्वा ह्विषां विधेम। सद्यश्चंकमानायं। प्रवेपानायं मृत्यवे॥४५॥

प्रास्मा आशां अशृण्वन्। कामेनाजनयन्युनः। कामेन मे काम आगाँत्।

हरि हर्रन्तमनुंयन्ति देवाः। विश्वस्येशांनं वृषभं मंतीनाम्।

त्रणिर्विश्वदंर्शतो ज्योतिष्कृदंसि सूर्य। विश्वमा भांसि रोचनम्। उपयामगृहीतोऽसि सूर्याय त्वा भ्राजंस्वत एष ते योनिः सूर्याय त्वा भ्राजंस्वते॥४७॥

आ प्यांयस्व मदिन्तम् सोम् विश्वांभिरूतिभिः। भवां नः सप्रथंस्तमः॥४८॥

______[१७] ईयुष्टे ये पूर्वतरामपंश्यन् व्युच्छन्तींमुषसं मर्त्यांसः। अस्माभिंरू नु प्रतिचक्ष्यांऽभूदो ते यंन्ति ये अंपुरीषु पश्यान्॥४९॥

ज्योतिष्मतीं त्वा सादयामि ज्योतिष्कृतं त्वा सादयामि ज्योतिर्विदं त्वा

सादयामि भास्वतीं त्वा सादयामि ज्यात्ष्कृत त्वा सादयामि ज्यातावद त्वा सादयामि भास्वतीं त्वा सादयामि ज्वलन्तीं त्वा सादयामि मल्मलाभवन्तीं त्वा सादयामि दीप्यमानां त्वा सादयामि रोचमानां त्वा सादयामि

बृहञ्चोंतिषं त्वा सादयामि बोधयंन्तीं त्वा सादयामि जाग्रंतीं त्वा सादयामि॥५०॥

प्रयासाय स्वाहां ऽऽयासाय स्वाहां वियासाय स्वाहां संयासाय स्वाहों द्यासाय स्वाहां ऽवयासाय स्वाहां शुचे स्वाहां शोकाय स्वाहां तप्यत्वे स्वाहा तपंते स्वाहां ब्रह्महत्यायै स्वाहा सर्वस्मै स्वाहाँ॥५१॥

चित्तर सन्तानेन भवं युक्रा रुद्रन्तनिम्ना पशुपतिई स्थूलहृद्येनामिर हृदयेन रुद्रं लोहितेन शुर्वं मतस्त्राभ्यां महादेवमुन्तः पार्श्वेनौषिष्ठहनई शिङ्गीनिकोश्याँभ्याम्॥५२॥

तच्छुं योरावृंणीमहे। गातुं युज्ञायं। गातुं युज्ञपंतये। दैवीः स्वस्तिरंस्तु नः।

स्वस्तिर्मानुषेभ्यः। ऊर्ध्वं जिंगातु भेषजम्। शं नों अस्तु द्विपदें। शं चतुंष्पदे। ॐ

शान्तिः शान्तिः॥



॥चतुर्थः प्रश्नः॥

नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमों नमों वाचे नमों वाचस्पतंथे नम ऋषिंभ्यो मन्नकृत्धो मन्नपतिभ्यो मा मामृषंयो मन्नकृतो मन्नपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मत्रुकृतों मत्रुपतीन्परांदां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां ज्ष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों विदिष्ये ब्रह्मं विदिष्ये सत्यं विदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजाये पशूनां भूयादुप्स्तरंणमृहं प्रजाये पशूनां भूयास्ं प्राणांपानौ मृत्योर्मा पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मधुंमतीं देवेभ्यो वाचंमुद्यास । शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभायें पितरोऽनुंमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमों नमों वाचे नमों वाचस्पतंये नम ऋषिंभ्यो मन्नकृद्धो मन्नपितभ्यो मा मामृषयो मन्नकृतो मन्नपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मत्रुकृतों मत्रुपतीन्परांदां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां जुष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों विदिष्ये ब्रह्मं विदिष्ये सत्यं विदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजाये पश्नां भूयादुप्स्तरंणमृहं प्रजाये पश्नां भूयास् प्राणांपानौ मृत्योर्मा पात्ं प्राणापानौ मा मा हासिष्टुं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मध्मतीं देवेभ्यो वाचमुद्यास । शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अंवन्तु शोभायें पितरोऽनुंमदन्तु॥१॥

युअते मनं उत युंअते धियः। विप्रा विप्रंस्य बृह्तो विप्रिश्चतः। वि होत्रां दधे वयुनाविदेक इत्। मही देवस्यं सवितः परिष्ठतिः। देवस्यं त्वा सवितः प्रंस्वे।

अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्यामादंदे। अभ्रिरिस् नारिरिसः। अध्वर्कृद्देवेभ्यः। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते॥२॥

उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते॥२॥ देवयन्तंस्त्वेमहे। उप प्रयंन्तु मुरुतंः सुदानंवः। इन्द्रं प्राशूर्भवा सर्चां। प्रैतु

ब्रह्मणस्पतिः। प्र देव्येतु सूनृतां। अच्छां वीरं नर्यं पङ्किरांधसम्। देवा यज्ञं नयन्तु नः। देवीं द्यावापृथिवी अनुं मे म॰साथाम्। ऋद्यासंमुद्य। मुखस्य शिरंः॥३॥

म्खायं त्वा। म्खस्यं त्वा शीर्ष्णे। इयत्यग्रं आसीः। ऋद्धासंमुद्य। मृखस्य शिरंः। मृखायं त्वा। मृखस्यं त्वा शीर्ष्णे। देवीवभीर्स्य भूतस्यं प्रथमजा ऋतावरीः। ऋद्धासंमुद्य। मृखस्य शिरंः॥४॥

मुखायं त्वा। मुखस्यं त्वा शीर्ष्णे। इन्द्रस्यौजोंऽसि। ऋद्धासंमुद्य। मुखस्य शिरंः। मुखायं त्वा। मुखस्यं त्वा शीर्ष्णे। अग्निजा असि प्रजापंते रेतंः। ऋद्धासंमुद्य। मुखस्य शिरंः॥५॥

मुखायं त्वा। मुखस्यं त्वा शीर्ष्णे। आयुंधेहि प्राणं धेहि। अपानं धेहि व्यानं

धेहि। चक्षुंधेहि श्रोत्रं धेहि। मनों धेहि वाचं धेहि। आत्मानं धेहि प्रतिष्ठां धेहि। मां धेहि मियं धेहि। मधुं त्वा मधुला करोतु। मुखस्य शिरोंऽसि॥६॥ यज्ञस्यं पदे स्थंः। गायत्रेणं त्वा छन्दंसा करोमि। त्रैष्टुंभेन त्वा छन्दंसा करोमि।

जागतेन त्वा छन्दंसा करोमि। मुखस्य रास्नांऽसि। अदितिस्ते बिलं गृह्णातु। पाङ्केन

वृष्णो अश्वंस्य निष्पदंसि। वर्रुणस्त्वा धृतव्रंत आधूपयत्। मित्रावर्रुणयोध्रुवेण धर्मणा। अर्चिषे त्वा। शोचिषे त्वा। ज्योतिषे त्वा। तपंसे त्वा। अभीमं महिना

दिवम्। मित्रो बंभूव सप्रथाः। उत श्रवंसा पृथिवीम्॥८॥ मित्रस्यं चर्षणी्धृतः। श्रवो देवस्यं सानुसिम्। द्युम्नं चित्रश्रवस्तमम्। सिध्यै

मित्रस्यं चर्षणीधृतंः। श्रवो देवस्यं सानिसम्। द्युम्नं चित्रश्रंवस्तमम्। सिध्यैं त्वा। देवस्त्वां सिव्तोद्वंपतु। सुपाणिः स्वंङ्गुरिः। सुबाहुरुत शक्त्याः। अपद्यमानः पृथिव्याम्। आशा दिश् आ पृण। उत्तिष्ठ बृहन्भव॥९॥

पृथिवीं भंव वाख्यद्वं॥

अहंणीयमानो द्वे चं॥____

ऊर्ध्वस्तिष्ठद्भुवस्त्वम्। सूर्यस्य त्वा चक्षुषाऽन्वीक्षे। ऋजवे त्वा। साधवे त्वा। सुक्षित्यै त्वा भूत्यै त्वा। इदमहम्ममांमुष्यायणं विशा पृशुभिर्ष्रह्मवर्चसेन पर्यूहामि। गायत्रेणं त्वा छन्द्साऽऽच्छृंणद्मि। त्रेष्टंभेन त्वा छन्द्साऽऽच्छृंणद्मि। जागंतेन त्वा छन्द्साऽऽच्छृंणद्मि। छृणत्तं त्वा वाक्। छृणत्तु त्वोक्। छृणत्तं त्वा ह्विः। छृन्धि वाचम्। छृन्ध्यूर्जम्। छृन्धि हविः। देवं पुरश्चर सुग्ध्यासं त्वा॥१०॥

ब्रह्मन् प्रवर्ग्येण प्रचेरिष्यामः। होतंर्घर्मम्भिष्टुंहि। अग्नीद्रौहिणौ पुरोडाशाविधिश्रय। प्रतिप्रस्थातुर्विहंर। प्रस्तोतः सामानि गाय। यजुंर्युक्त्रः सामभिराक्तंखन्त्वा। विश्वैदेवैरनुमतं मुरुद्धिः। दक्षिणाभिः प्रतंतं पारियष्णुम्। स्तुभो वहन्तु सुमन्स्यमानम्। स नो रुचं धेह्यहंणीयमानः। भूर्भुवः सुवंः। ओमिन्द्रंवन्तः प्रचंरत॥११॥

ब्रह्मन्प्रचेरिष्यामः। होतंर्घमम्भिष्टुंहि। यमायं त्वा मखायं त्वा। सूर्यस्य हरेसे त्वा। प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहांऽपानाय स्वाहाँ। चक्षुंषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहाँ। मनंसे स्वाहां वाचे सरंस्वत्ये स्वाहाँ। दक्षांय स्वाहा क्रतंवे स्वाहाँ। ओजंसे स्वाहा बलांय स्वाहाँ। देवस्त्वां सविता मध्वांऽनक्तु॥१२॥

पृथिवीं तपंसस्रायस्व। अर्चिरंसि शोचिरंसि ज्योतिरसि तपोंऽसि। सश्सीदस्व महाश् असि। शोचंस्व देववीतंमः। विधूममंग्ने अरुषं मियेध्य। सृज प्रशस्तदर्शतम्। अञ्जन्ति यं प्रथयंन्तो न विप्राः। वपावंन्तं नाग्निना तपंन्तः। पितुर्न पुत्र उपंसि प्रेष्ठः। आ धुर्मो अग्निमृतयंत्रसादीत्॥१३॥

अनाधृष्या पुरस्तांत्। अग्नेराधिपत्ये। आयुंर्मे दाः। पुत्रवंती दक्षिणृतः। इन्द्रस्याधिपत्ये। प्रजां में दाः। सुषदां पृश्चात्। देवस्यं सिवृतुराधिपत्ये। प्राणं में दाः। आश्रुंतिरुत्तर्तः॥१४॥

मित्रावर्रुणयोराधिपत्ये। श्रोत्रं मे दाः। विधृतिरुपरिष्टात्। बृह्स्पतेराधिपत्ये।

ब्रह्मं मे दाः क्षुत्रं में दाः। तेजों मे धा वर्चों मे धाः। यशों मे धास्तपों मे धाः। मनों मे धाः। मनोरश्वांऽसि भूरिपुत्रा। विश्वांभ्यो मा नाष्ट्राभ्यः पाहि॥१५॥

सूपसदां मे भूया मा मां हिश्सीः। तपोष्वंग्ने अन्तंराश अमित्रान्।

तपाशिश्संमर्रुषः परंस्य। तपांवसो चिकितानो अचित्तान्। वि ते तिष्ठन्तामुजरां अयासः। चितः स्थ परिचितः। स्वाहां म्रुद्धः परिश्रयस्व। मा असि। प्रमा असि। प्रतिमा असि॥१६॥
सम्मा असि। विमा असि। उन्मा असि। अन्तरिक्षस्यान्तर्धिरसि। दिवं

स्ममा असि। विमा असि। उन्मा असि। अन्तरिक्षस्यान्तिधैरीसे। दिवं तपंसस्रायस्व। आभिर्गीर्भिर्यदतों न ऊनम्। आप्यायय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो मिहं गोत्रा रुजािस। भूयिष्टभाजो अधं ते स्याम। शुक्रं ते अन्यद्यंजतं ते अन्यत्॥१७॥

विषुंरूपे अहंनी द्यौरिवासि। विश्वा हि माया अवंसि स्वधावः। भुद्रा ते पूषित्रह रातिरंस्तु। अर्हन्बिभर्षि सायंकानि धन्वं। अर्हं निष्कं यंजुतं विश्वरूपम्। अर्हं निदन्दंयसे विश्वमञ्जंबम्। न वा ओजींयो रुद्र त्वदंस्ति। गायुत्रमंसि। त्रैष्टुंभमिस। जागंतमिस। मधु मधुं॥१८॥

जागतमास। मधु मधु मधु॥१८॥ अनुक्कुसादीदुत्तरतः पाहि प्रतिमा असि यज्ञतन्ते अन्यज्ञागंतम्स्येकं च॥————————[५]

दश प्राचीर्दशं भासि दक्षिणा। दशं प्रतीचीर्दशं भास्युदींचीः। दशोर्ध्वा भांसि

सुमनुस्यमानः। स नो रुचं धेह्यहंणीयमानः। अग्निष्ट्वा वसुंभिः पुरस्ताँद्रोचयतु

गायत्रेण छन्दंसा। स मां रुचितो रोंचय। इन्द्रंस्त्वा रुद्रैर्दक्षिणतो रोंचयतु त्रैष्ट्रंभेन् छन्दंसा। स मां रुचितो रोंचय। वर्रणस्त्वादित्यैः पृश्चाद्रोंचयतु जागंतेन छन्दंसा। स मां रुचितो रोंचय॥१९॥

ह्युतानस्त्वां मारुतो म्रुद्धिरुत्तर्तो रोंचयत्वानुष्टुभेन छन्दंसा। स मां रुचितो रोंचय। बृह्स्पतिंस्त्वा विश्वैद्वैरुपरिष्टाद्रोचयतु पाङ्केन छन्दंसा। स मां रुचितो रोंचय। रोचितस्त्वं देव धर्म देवेष्वसिं। रोचिषीयाहं मनुष्येषु। सम्राह्मर्म रुचितस्त्वं

देवेष्वायुंष्मा इस्ते जस्वी ब्रह्मवर्चस्यंसि। रुचितों ऽहं मंनुष्येंष्वायुंष्मा इस्ते जस्वी

ब्रह्मवर्च्सी भूयासम्। रुगंसि। रुचं मियं धेहि॥२०॥

मियं रुक्। दशं पुरस्ताँद्रोचसे। दशं दिक्षणा। दशं प्रत्यङ्कः। दशोदङ्कः। दशोध्वीं भांसि सुमन्स्यमानः। स नेः सम्राडिष्मूर्जं धेहि। वाजी वाजिने पवस्व। रोचितो घुर्मो रुंचीय॥२१॥

ग्वय धृष्टि नवं च॥————[६] अपंश्यं गोपामनिपद्यमानम्। आ च परां च पृथिभिश्चरंन्तम्। स स्प्रीचीः स विषूचीर्वसानः। आ वंरीवर्ति भुवंनेष्वन्तः। अत्रं प्रावीः। मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्याम्। अनुं वां देववीतये। समृग्निर्ग्निनां गत। सं देवनं सिवता। स॰ स्प्रेण रोचते॥२२॥

स्वाह्य समग्निस्तपंसा गत। सं देवेनं सिवता। स॰ सूर्यंणारोचिष्ट। धूर्ता दिवो विभासि रजंसः। पृथिव्या धूर्ता। उरोरन्तरिक्षस्य धूर्ता। धूर्ता देवो देवानाम्। अमर्त्यस्तपोजाः। हृदे त्वा मनसे त्वा। दिवे त्वा सूर्याय त्वा॥२३॥ ऊर्ध्वमिममंध्वरं कृंधि। दिवि देवेषु होत्रां यच्छ। विश्वांसां भुवां पते। विश्वंस्य

भुवनस्पते। विश्वंस्य मनसस्पते। विश्वंस्य वचसस्पते। विश्वंस्य तपसस्पते। विश्वंस्य ब्रह्मणस्पते। देवश्रूस्त्वं देव घर्म देवान्पांहि। तुपोजां वाचंमुस्मे नियंच्छ देवायुवम्॥२४॥
गर्भो देवानाम्। पिता मंतीनाम्। पितः प्रजानाम्। मितः कवीनाम्। सं देवो देवेनं सिवत्रा यंतिष्ट। स॰ सूर्यंणारुक्त। आयुर्दास्त्वमस्मभ्यं घर्म वर्चोदा

असि। पिता नोऽसि पिता नो बोध। आयुर्धास्तंनूधाः पंयोधाः। वर्चोदा वंरिवोदा द्रंविणोदाः॥२५॥
अन्तरिक्षप्र उरोर्वरीयान्। अशीमिह त्वा मा मां हिश्सीः। त्वमंग्रे

गृहपंतिर्विशामंसि। विश्वांसां मानुषीणाम्। शतं पूर्भिर्यंविष्ठ पाह्यश्हंसः। समेद्धारश्रेशतश्रे शतश्र हिमाः। तुन्द्राविणश्रे हार्दिवानम्। इहैव रातयः सन्तु। त्वष्टींमती ते सपेय। सुरेता रेतो दर्धाना। वीरं विंदेय तर्व सन्दिशी। माऽहश्र रायस्पोषेण

वि योषम्॥२६॥

रोचते सूर्याय त्वा देवायुर्व इविणोदा दर्धाना हे चं॥————[७] देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रस्तवे। अश्विनौर्बाहुभ्याम्। पूष्णो हस्ताभ्यामादंदे। अदित्यै रास्नांसि। इड एहिं। अदित् एहिं। सरंस्वृत्येहिं। असावेहिं। असावेहिं। असावेहिं। असावेहिं। असावेहिं। असावेहिं। असावेहिं।

असावेहिं॥२७॥ अदित्या उष्णीषंमिस। वायुरंस्यैडः। पूषा त्वोपावंसृजतु। अश्विभ्यां प्रदापय। यस्ते स्तनंः शश्यो यो मयोभूः। येन विश्वा पुष्यंसि वार्याणि। यो रंत्रधा वंस्विद्यः सुदर्त्रः। सरस्वित तिमह धातवेकः। उस्रं घर्म शिर्षेष। उस्रं घर्मं पाहि॥२८॥ घुर्मायं शि १ ष। बृहस्पित् स्त्वोपंसीदतु। दानंवः स्थ पेरंवः। विष्वग्वृतो लोहितेन। अश्विभ्यां पिन्वस्व। सरंस्वत्ये पिन्वस्व। पूष्णे पिन्वस्व। बृहस्पतंये पिन्वस्व। इन्द्रांय पिन्वस्व। इन्द्रांय पिन्वस्व॥२९॥

गायत्रों ऽसि। त्रैष्टुंभो ऽसि। जागंतमिस। सहोर्जो भागेनोपुमेहिं। इन्द्रांश्विना

मधुंनः सार्घस्यं। घुर्मं पांत वसवो यजंता वट्। स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य र्श्मयें वृष्टिवनंये जुहोमि। मधुं ह्विरंसि। सूर्यंस्य तपंस्तप। द्यावांपृथिवीभ्यां त्वा परिगृह्णामि॥३०॥

अन्तरिक्षेण त्वोपंयच्छामि। देवानां त्वा पितृणामनुंमतो भर्तु शकेयम्। तेजोऽसि। तेजोऽनु प्रेहिं। दिविस्पृङ्गा मां हिश्सीः। अन्तिरिक्षस्पृङ्गा मां हिश्सीः। पृथिविस्पृङ्गा मां हिश्सीः। पृथिविस्पृङ्गा मां हिश्सीः। सुवंरिस् सुवंर्मे यच्छ। दिवं यच्छ दिवो मां पाहि॥३१॥

पहि पाह पिन्वस्व गृहामि नवं चा——[८]
सम्पुद्रायं त्वा वातांय स्वाहाँ। सिल्लायं त्वा वातांय स्वाहाँ। अनाधृष्यायं त्वा वातांय स्वाहाँ। अप्रतिधृष्यायं त्वा वातांय स्वाहाँ। अवस्यवेँ त्वा वातांय स्वाहाँ। दुवंस्वते त्वा वातांय स्वाहाँ। शिमिंद्वते त्वा वातांय स्वाहाँ। अग्नयेँ त्वा वसुंमते स्वाहाँ। सोमांय त्वा रुद्रवंते स्वाहाँ। वरुंणाय त्वाऽऽदित्यवंते स्वाहाँ॥३२॥

बृह्स्पतंये त्वा विश्वदें व्यावते स्वाहां। स्वित्रे त्वर्भुमते विभुमतें प्रभुमते वाजंवते स्वाहां। यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहां। विश्वा आशां दक्षिण्सत्। विश्वां देवानंयाडिह। स्वाहांकृतस्य घूर्मस्य। मधौः पिबतमश्विना। स्वाहाऽग्नयें युज्ञियांय। शं यर्जुर्भिः। अश्विना घुर्मं पांत हार्दिवानम्॥३३॥

अहंर्दिवाभिक्तिभिः। अनुं वां द्यावांपृथिवी मर्साताम्। स्वाहेन्द्रांय। स्वाहेन्द्रावट्। घुर्ममंपातमिश्वना हार्दिवानम्। अहंर्दिवाभिक्तिभिः। अनुं वां द्यावांपृथिवी अमरसाताम्। तं प्राव्यं यथा वट्। नमों दिवे। नमः पृथिव्यै॥३४॥

द्यावापृथिवा अमश्साताम्। त प्राव्य यथा वट्। नमा दिव। नमः पृथिव्य॥३४॥ दिवि धां इमं यज्ञम्। यज्ञमिमं दिवि धांः। दिवं गच्छ। अन्तरिक्षं गच्छ। पृथिवीं गच्छ। पश्चे प्रदिशों गच्छ। देवान्धर्मपान्गंच्छ। पितृन्धर्मपान्गंच्छ॥३५॥ आदित्यवेते स्वाहां हार्दिवानं पृथिव्या अष्टौ चं॥———[२]

ड्वं पींपिहि। कुर्जे पींपिहि। ब्रह्मणे पीपिहि। क्षुत्रायं पीपिहि। अुद्धः पींपिहि। ओषंधीभ्यः पीपिहि। वनुस्पतिंभ्यः पीपिहि। द्यावांपृथिवीभ्यां पीपिहि। सुभूतायं

पीपिहि। ब्रह्मवर्चसायं पीपिहि॥३६॥

इन्द्रियायं त्वा भूत्यैं त्वा। धर्मांऽसि सुधर्मा में न्यस्मे। ब्रह्मांणि धारय। क्ष्त्राणि धारय। विशं धारय। नेत्त्वा वातंः स्कन्दयात्॥३७॥ अमुष्यं त्वा प्राणे सांदयामि। अमुनां सह निर्धं गंच्छ। योंऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वयं द्विष्मः। पूष्णे शर्रसे स्वाहां। ग्रावंभ्यः स्वाहां। प्रतिरेभ्यः स्वाहां। द्यावांपृथिवीभ्याः

यजंमानाय पीपिहि। मह्यं ज्यैष्ठ्यांय पीपिहि। त्विष्यैं त्वा। द्युम्नायं त्वा।

स्वाहाँ। पितृभ्यों घर्मपेभ्यः स्वाहाँ। रुद्रायं रुद्रहोँत्रे स्वाहाँ॥३८॥ अहुर्ज्योतिः केतुनां जुषताम्। सुज्योतिर्ज्योतिंषा्ड् स्वाहाँ। रात्रिर्ज्योतिः केतुनां जुषताम्। सुज्योतिर्ज्योतिंषा्ड् स्वाहाँ। अपींपरो माऽह्रो रात्रिये मा पाहि। एषा तें अग्ने समित्। तया समिध्यस्व। आयुर्मे दाः। वर्चसा माऔः। अपींपरो मा

रात्रिया अहो मा पाहि॥३९॥ पुषा ते अग्ने समित्। तया समिध्यस्व। आयुंर्मे दाः। वर्चसा माऔः। अग्निज्योंतिंज्योंतिंज्गिः स्वाहाँ। सूर्यो ज्योतिज्योंतिः सूर्यः स्वाहाँ। भूः स्वाहाँ। हुत हिवः। मध्रं हिवः। इन्द्रंतमेऽग्नौ॥४०॥

पिता नोंऽसि मा मां हिश्सीः। अश्यामं ते देवघर्म। मधुंमतो वाजंवतः पितुमतंः। अङ्गिरस्वतः स्वधाविनंः। अशीमहिं त्वा मा मां हिश्सीः। स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य रिश्मभ्यः। स्वाहाँ त्वा नक्षेत्रभ्यः॥४१॥

बृह्मवर्च्सायं पीपिहि स्कृन्दयाँद्रुद्रायं रुद्रहोंत्रे स्वाहाऽह्नां मा पाह्यग्रे सुप्त चं॥———[१०] धर्म या ते दिवि शुक्। या गायत्रे छन्देसि। या ब्राह्मणे। या हिविधीनें। तान्त

पृतेनावं यजे स्वाहाँ। घर्म् या तेऽन्तरिक्षे शुक्। या त्रैष्टुंभे छन्दंसि। या रांजन्यें। याऽऽग्रींभ्रे। तान्तं पृतेनावं यजे स्वाहाँ॥४२॥

घर्म् या ते पृथिव्या शुक्। या जागते छन्दंसि। या वैश्यैं। या सदंसि। तान्तं पृतेनावं यजे स्वाहाँ। अनुनोऽद्यानुंमितिः। अन्विदंनुमते त्वम्। दिवस्त्वां पर्स्पायाः। अन्तरिक्षस्य तुनुवंः पाहि। पृथिव्यास्त्वा धर्मणा॥४३॥ विशस्त्वा धर्मणा। वयमनुंक्रामाम सुविताय नव्यंसे। प्राणस्यं त्वा परस्पायैं।

चक्षुंषस्तनुवंः पाहि। श्रोत्रंस्य त्वा धर्मणा। वयमनुंक्रामाम सुविताय नव्यंसे।

वयमनुंक्रामाम सुविताय नव्यंसे। ब्रह्मणस्त्वा परस्पायाः। क्षत्रस्यं तन्वंः पाहि।

वृत्गुरंसि शृं युधांयाः॥४४॥ शिशुर्जनंधायाः। शं च विक्षे पिरं च विक्षे। चतुः स्रिक्तिनीभिर्ऋतस्यं। सदों विश्वायुः शर्म सप्रथाः। अप द्वेषो अप ह्वरंः। अन्यद्वेतस्य सिश्चम।

घर्मैतत्तेऽन्नंमेतत्पुरीषम्। तेन् वर्धस्व चाऽऽ चं प्यायस्व। वृधिषीमिहं च वयम्। आ चं प्यासिषीमिहं॥४५॥
रित्तर्नामांसि दिव्यो गंन्ध्वंः। तस्यं ते पृद्वद्वंविर्धानम्ं। अग्निरध्यंक्षाः। रुद्रोऽधिपितिः। समृहमायुंषा। सं प्राणेनं। सं वर्चसा। सं पर्यसा। सं गौंपृत्येनं। सं रायस्पोषेण॥४६॥

व्यंसौ। यौंऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वयं द्विष्मः। अचिंऋदद्वृषा हरिः। महान्मित्रो

न दंर्शृतः। स॰ सूर्येण रोचते। चिदंसि समुद्रयोनिः। इन्दुर्दक्षः श्येन ऋतावाँ। हिरंण्यपक्षः शकुनो भुंर्ण्युः। महान्थ्स्थस्थैं ध्रुव आनिषंत्तः॥४७॥

नमंस्ते अस्तु मा मां हिश्सीः। विश्वावंसुश् सोम गन्ध्वंम्। आपो दृहशुषीः। तृत्वेनाव्यांयन्। तद्ववैत्। इन्द्रों रारहाण आंसाम्। परि सूर्यंस्य परिधीश्रंपश्यत्। विश्वावंसुर्भि तन्नों गृणातु। दिव्यो गन्ध्वों रजसो विमानः। यद्वां घा सृत्यमुत यन्न विद्या॥४८॥

धियों हिन्वानो धिय इन्नों अव्यात्। सिम्नंमिवन्द्चरंणे नदीनाँम्। अपांवृणोद्द्रो अश्मंत्रजानाम्। प्रासाँन्गन्थवीं अमृतांनि वोचत्। इन्द्रो दक्षं परिजानाद्हीनम्। एतत्त्वं देव धर्म देवो देवानुपांगाः। इदमहं मंनुष्यों मनुष्यान्। सोमंपीथानुमेहिं। सह प्रजयां सह रायस्पोषंण। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु॥४९॥

दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुः। यो उस्मान्द्वेष्टिं। यं चे वयं द्विष्मः। उद्वयं तमेस्स्पिरि। उदुत्यं चित्रम्। इममूषुत्यम्स्मभ्य र्रं स्निम्। गायत्रं नवीया रसम्। अग्ने देवेषु प्रवोचः॥५०॥

याऽऽग्नींध्रे तान्तं एतेनावं यजे स्वाहा धर्मणा शुं युधांयाः प्यासिषीमहि पोषेण निषंत्तो विद्य संन्त्वृष्टौ॥———[११] महीनां पयोऽसि विहितं देवत्रा। ज्योतिर्भा असि वनस्पतीनामोषंधीना १ रसंः। वाजिनं त्वा वाजिनोऽवं नयामः। ऊर्ध्वं मनंः सुवर्गम्॥५१॥

अस्कान्द्यौः पृथिवीम्। अस्कानृष्भो युवागाः। स्कन्नेमा विश्वा भुवना। स्कन्नो यज्ञः प्रजनयतु। अस्कानजंनि प्राजंनि। आ स्कन्नाञ्जांयते वृषां। स्कन्नात् प्रजंनिषीमहि॥५२॥

या पुरस्तां द्विद्युदापंतत्। तान्तं पुतेनावं यजे स्वाहां। या दक्षिणतः। या पश्चात्। योत्तरतः। योपरिष्टाद्विद्युदापंतत्। तान्तं एतेनावं यजे स्वाहां॥५३॥

[88]

प्राणाय स्वाहाँ व्यानाय स्वाहांऽपानाय स्वाहाँ। चक्षुंषे स्वाहा श्रोत्रांय स्वाहाँ। मनेसे स्वाहां वाचे सरस्वत्ये स्वाहां॥५४॥

पूष्णे स्वाहां पूष्णे शरसे स्वाहां। पूष्णे प्रप्तथ्यांय स्वाहां पूष्णे न्रन्धिषाय स्वाहां। पूष्णेऽङ्गृणये स्वाहां पूष्णे न्रुणाय स्वाहां। पूष्णे सांकेताय स्वाहां॥५५॥

उदंस्य शुष्माँद्भानुर्नार्त् बिभंति। भारं पृथिवी न भूमं। प्र शुक्रैतुं देवी मंनीषा। अस्मथ्सुतंष्टो रथो न वाजी। अर्चन्त एके मिह् सामंमन्वत। तेन सूर्यमधारयन्। तेन् सूर्यमरोचयन्। घृर्मः शिरुस्तद्यम्गिः। पुरीषमस् सं प्रियं प्रजयां पृश्भिर्भ्वत्। प्रजापतिंस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥५६॥

-[१७]

यास्ते अग्न आर्द्रा योनयो याः कुलायिनीः। ये ते अग्न इन्देवो या उ नार्भयः। यास्ते अग्ने तुनुव ऊर्जी नाम। ताभिस्त्वमुभयीभिः संविदानः। प्रजाभिरग्ने द्रविणेह सींद। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तया देवतयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥५७॥

अग्निरंसि वैश्वानरोंऽसि। संवथ्सरोंऽसि परिवथ्सरोंऽसि। इदावथ्सरोंऽसीदुवथ्सरों इद्वथ्सरोऽसि वथ्सरोऽसि। तस्यं ते वसन्तः शिरंः। ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः।

वर्षाः पुच्छम्। शरदुत्तंरः पक्षः। हेमन्तो मध्यम्। पूर्वपक्षाश्चितंयः। अपरपक्षाः पुरीषम्। अहोरात्राणीष्टंकाः। तस्यं ते मासांश्चार्धमासाश्चं कल्पन्ताम्। ऋतवंस्ते

कल्पन्ताम्। संवथ्सरस्तें कल्पताम्। अहोरात्राणिं ते कल्पन्ताम्। एति प्रेति वीति समित्युदितिं। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवः सींद॥५८॥

चितंयो नवं च॥🗕

भूर्भुवः सुवंः। ऊर्ध्व ऊ षु णं ऊतयें। ऊर्ध्वा नंः पाह्य १ हंसः। विधुन्दंद्राण १

समने बहूनाम्। युवान् सन्तं पिलतो जंगार। देवस्यं पश्य कार्व्यं मिहत्वाद्या ममारं। सह्यः समान। यद्दते चिंदिभिश्रिषः। पुरा जुर्तृभ्यं आतृदः। सन्धांता सन्धिं मघवां पुरोवसुः॥५९॥

निष्केर्ता विह्नुंतं पुनंः। पुनंरूर्जा सह रय्या। मा नो घर्म व्यथितो विव्यथो नः। मा नः पर्मधंरं मा रजोऽनैः। मोष्वंस्माः स्तमंस्यन्तरा धाः। मा रुद्रियांसो अभिगुंर्वृधानः। मा नः ऋतुंभिर्हीडितेभिर्स्मान्। द्विषांसुनीते मा परां दाः। मा नो रुद्रो निर्ऋतिर्मा नो अस्ताः। मा द्यावांपृथिवी हींडिषाताम्॥६०॥

उपं नो मित्रावरुणाविहावंतम्। अन्वादींध्याथामिह नंः सखाया। आदित्यानां प्रसितिरहेतिः। उग्रा श्तापांष्ठा घविषा परि णो वृणक्तु। इमं में वरुण तत्त्वां यामि। त्वं नों अग्ने स त्वं नों अग्ने। त्वमंग्ने अयासि। उद्वयं तमंस्स्परि। उदुत्यं चित्रम्। वयः सुपूर्णाः॥६१॥

पुरोवस्ंर्हीडिषाता स्पूपर्णाः॥_____[२०]

स्वीर्यम्। त्रिश्ंग्घर्मो विभांतु मे। आकूँत्या मनंसा सह। विराजा ज्योतिंषा सह।

यज्ञेन पर्यसा सह। ब्रह्मणा तेर्जसा सह। क्षेत्रेण यशंसा सह। सत्येन तपंसा सह।

भूर्भुवः सुवंः। मिय त्यदिन्द्रियं महत्। मिय दक्षो मिय ऋतुंः। मियं धायि

तस्य दोहंमशीमिह। तस्यं सुम्नमंशीमिह। तस्यं भृक्षमंशीमिह। तस्यं त इन्द्रेंण पीतस्य मध्मतः। उपहूत्स्योपहूतो भक्षयामि॥६२॥

यशंसा सह पदं॥————[२१]

यास्तं अग्ने घोरास्तनुवंः। क्षुच्च तृष्णां च। अस्रुक्वानांहृतिश्च। अ्शन्या चं पिपासा चं। सेदिश्चामंतिश्च। एतास्तं अग्ने घोरास्तनुवंः। ताभिर्मुं गंच्छ। योंऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वयं द्विष्मः॥६३॥

स्निक् स्नीहिंतिश्च स्निहिंतिश्च। उष्णा चे शीता चे। उग्रा चे भीमा चे। सदाम्नी सेदिरिनरा। पुतास्ते अग्ने घोरास्तुनुवेः। ताभिरमुं गेच्छ। यौऽस्मान्द्वेष्टि। यं चे वयं द्विष्मः॥६४॥

-[२३]

| धुनिश्च ध्वान्तश्चं ध्वनश्चं ध्वनयर्श्वः। निलिम्पश्चं विलिम्पश्चं विक्षिपः॥६५॥ |
|---|
| उग्रश्च धुनिश्च ध्वान्तश्चं ध्वनश्चं ध्वनयईश्च। सहसह्यह्याइश्च सहमानश्च सहस्वाइश्च सहीयाइश्च। एत्य प्रेत्यं विश्चिपः॥६६॥ |
| अहोरात्रे त्वोदीरयताम्। अर्धमासास्त्वोदीं जयन्तु। मासास्त्वा श्रपयन्तु। ऋतवस्त्वा पचन्तु। संव्थ्सरस्त्वां हन्त्वसौ॥६७॥ |
| खट फट जुहि। छिन्धी भिन्धी हुन्धी कट्। इति वार्चः क्रूराणि॥६८॥ |
| विगा इंन्द्र विचरंन्थस्पाशयस्व। स्वपन्तंमिन्द्र पशुमन्तंमिच्छ। वर्ज्रेणामुं बोधय |

दुर्विदत्रम्। स्वपतौंऽस्य प्रहेर् भोजंनेभ्यः। अग्ने अग्निना संवेदस्व। मृत्यो मृत्युना संवेदस्व। नर्मस्ते अस्तु भगवः। स्कृत्ते अग्ने नर्मः। द्विस्ते नर्मः। त्रिस्ते नर्मः। चतुस्ते नर्मः। पश्चकृत्वंस्ते नर्मः। दशकृत्वंस्ते नर्मः। शृतकृत्वंस्ते नर्मः। आसहस्रकृत्वंस्ते

नर्मः। अपरिमित्कृत्वंस्ते नर्मः। नर्मस्ते अस्तु मा मां हि श्सीः॥६९॥

ित्रस्ते नर्मः सप्त चं॥————————————————————[२८]

असृन्मुखो रुधिरेणा्रव्यंक्तः। यमस्यं दूतः श्वपाद्विधांवसि। गृध्रंः सुपूर्णः कुणपुं

निषेवसे। यमस्यं दूतः प्रहितो भ्वस्यं चोभयौः॥७०॥

————[२९] यदेतहृंकुसो भूत्वा। वाग्दैंव्यभिरायंसि। द्विषन्तंं मेऽभिराय। तं मृत्यो मृत्यवें

यद्तद्वृक्सी भूत्वा। वाग्देव्यभिरायसि। द्विषन्त मेऽभिराय। त मृत्यी मृत्यवे नय। स आर्त्यार्तिमार्च्छतु॥७१॥

संविदानौ। शिवामस्मभ्यं कृणुतं गृहेषुं॥७२॥ [38]

दीर्घमुखि दुर्हणु। मा समं दक्षिणतो वंदः। यदि दक्षिणतो वदाँद्विषन्तं मेऽवं बाधासै॥ ७३॥

इत्थादुलूंक् आपंत्रत्। हिर्ण्याक्षो अयोमुखः। रक्षंसां दूत आगंतः। तमितो

नांशयाग्ने॥ ७४॥

यदेतद्भूतान्यंन्वाविश्यं। दैवीं वार्चं वृदसिं। द्विषतों नः परावद। तान्मृत्यो मृत्यवें

नय। त आर्त्याऽऽर्तिमार्च्छन्तु। अग्निनाऽग्निः संवंदताम्॥७५॥

[38]

21 21 2

प्रसार्यं सुक्थ्यौ पतंसि। सुव्यमिक्षं निपेपि च। मेहकंस्य चुनामंमत्॥७६॥

अत्रिणा त्वा क्रिमे हन्मि। कण्वेन ज्ञमदेग्निना। विश्वावंसोर्ब्रह्मणा हृतः। क्रिमीणा् राजां। अप्येषाः स्थपतिर्हृतः। अथो माताऽथो पिता। अथो स्थूरा अथों क्षुद्राः। अथों कृष्णा अथों श्वेताः। अथों आशातिका हताः। श्वेताभिः सह

सर्वे हताः॥७७॥

———। ३६) आहुरावंद्य। शृतस्यं हविषो यथाँ। तथ्मृत्यम्। यदमुं यमस्य जम्भयोः।

आदंधामि तथा हि तत्। खण्फण्म्रसिं॥७८॥

ब्रह्मणा त्वा शपामि। ब्रह्मणस्त्वा शपथेन शपामि। घोरेणं त्वा भृगूंणां चक्षुंषा प्रेक्षें। रौद्रेण त्वाङ्गिरसां मनसा ध्यायामि। अघस्यं त्वा धारया विद्धामि। अधरो मत्पंद्यस्वासौ॥७९॥

उत्तंद शिमिजाविर। तल्पेंजे तल्प उत्तंद। गिरी र रनु प्रवेशय। मरींची्रुप् सन्नंद। यावंदितः पुरस्तांदुदयांति सूर्यः। तावंदितों ऽमुं नांशय। यों ऽस्मान्द्वेष्टिं। यं चं वयं द्विष्मः॥८०॥

भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवो भूर्भुवः सुवंः। भुवौऽद्धायि भुवौऽद्धायि भुवौऽद्धायि। नृम्णायि नृम्णं नृम्णायि नृम्णं नृम्णायि नृम्णम्। निधाय्यो वायि निधाय्यो वायि निधाय्यो वायि। ए असमे असमे। सुवर्न ज्योतीः॥८१॥

______[४०]
पृथिवी समित्। तामुग्निः समिन्धे। साऽग्नि॰ समिन्धे। तामुह॰ समिन्धे। सा
मा समिद्धा। आयुंषा तेजंसा। वर्चसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अन्नाद्येन्

समिन्ता इ स्वाहाँ। अन्तरिक्ष र समित्॥८२॥

तां वायुः सिनंन्धे। सा वायुः सिनंन्धे। ताम्हः सिनंन्धे। सा मा सिनंद्धा। आयुंषा तेजंसा। वर्चंसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्च्सेनं। अन्नाद्यंन सिनंन्ताः स्वाहाँ। द्यौः सिनत्। तामांदित्यः सिनंन्धे॥८३॥

साऽऽदित्य सिमंन्धे। ताम्ह सिमंन्धे। सा मा सिमंद्धा। आयुंषा तेजंसा। वर्चसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अन्नाद्यंन सिमंन्ता स्वाहाँ। प्राजापत्या में सिमदिस सपत्रक्षयंणी। भ्रातृव्यहा में ऽसि स्वाहाँ। अग्नै व्रतपते वृतं चेरिष्यामि॥८४॥

तच्छंकेयं तन्में राध्यताम्। वायों व्रतपत् आदित्य व्रतपते। व्रतानां व्रतपते व्रतं चेरिष्यामि। तच्छंकेयं तन्में राध्यताम्। द्यौः समित्। तामादित्यः समिन्धे। साऽऽदित्यः समिन्धे। तामहः समिन्धे। सा मा समिद्धा। आयुंषा तेर्जसा॥८५॥

साऽऽदित्य श्सिमन्धे। तामृह श्सिमन्धे। सा मा समिद्धा। आयुषा तजसा॥८५॥ वर्चसा श्रिया। यशसा ब्रह्मवर्चसेने। अन्नाद्येन सिनन्ता श्रु स्वाहाँ। अन्तरिक्ष श्

समित्। तां वायुः समिन्थे। सा वायुः समिन्थे। तामहः समिन्थे। सा मा समिद्धा। आयुंषा तेजंसा। वर्चसा श्रिया॥८६॥

यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं। अन्नाद्येन् सिनंन्तार्ड् स्वाहाँ। पृथिवी सिमित्। तामृग्निः सिनंन्थे। साऽग्निरं सिनंन्थे। तामृहरं सिनंन्थे। सा मा सिनंद्धा। आयुंषा तेर्जसा। वर्चसा श्रिया। यशंसा ब्रह्मवर्चसेनं॥८७॥

अन्नाद्येन् सिनंन्ता क्र् स्वाहाँ। प्राजापत्या में सिमदेसि सपत्नक्षयंणी। भ्रातृब्यहा में ऽसि स्वाहाँ। आदित्य व्रतपते व्रतमंचारिषम्। तदेशकुं तन्में ऽराधि। वायौं व्रतपते ऽग्नें व्रतपते। व्रतानांं व्रतपते व्रतमंचारिषम्। तदेशकुं तन्में ऽराधि॥८८॥

स्मिथ्सिमेशे व्रतं चेरिष्याम्यायुंषा तेर्जसा वर्चसा श्रिया यशंसा ब्रह्मवर्चसेना्ष्टौ चे॥———[४१] शं नो वार्तः पवतां मात्रिश्वा शं नेस्तपतु सूर्यः। अहानिशं भेवन्तु नः श र रात्रिः प्रतिधीयताम्। शमुषा नो व्युच्छतु शमादित्य उदेतु नः। शिवा नः शन्तंमा भव सुमृडीका सरंस्वित। मा ते व्योम सुन्दिशिं। इडांये वास्त्वंसि वास्तुमद्वांस्तुमन्तों भूयास्म मा वास्तोंश्छिथ्स्मह्यवास्तुः स भूयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। प्रतिष्ठासिं प्रतिष्ठावंन्तो भूयास्म मा प्रतिष्ठायांश्छिथ्स्मह्यप्रतिष्ठः स भूयाद्योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं वयं द्विष्मः। आ वात वाहि भेषुजं वि वात वाहि यद्रपः। त्व हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयंसे। द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा पंरावतः॥८९॥

दक्षं मे अन्य आवातु परान्यो वांतु यद्रपंः। यद्दो वांतते गृहेऽमृतंस्य निधिरिहृतः। ततों नो देहि जीवसे ततों नो धेहि भेषजम्। ततों नो महु आवंह वात आवांतु भेषजम्। शम्भूर्मयोभूर्नो हृदे प्र ण आयूर्ंषि तारिषत्। इन्द्रंस्य गृहोऽसि तं त्वा प्रपंद्ये सगुः सार्थः। सह यन्मे अस्ति तेनं। भूः प्रपंद्ये भुवः प्रपंद्ये सुवः प्रपंद्ये सूर्यः प्रपंद्ये सूर्यः प्रपंद्ये प्रपद्येऽनीतां देवतां प्रपद्येऽश्मानमाखणं प्रपंद्ये प्रजापंतेर्ब्रह्मकोशं ब्रह्म प्रपंद्य ओं प्रपंद्ये। अन्तरिक्षं म उर्वन्तरं बृहद्ग्रयः

पर्वताश्च यया वार्तः स्वस्त्या स्वंस्तिमान्तयां स्वस्त्या स्वंस्तिमानंसानि। प्राणांपानौ मृत्योमां पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मियं मेधां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेधां मियं प्रजां मयीन्द्रं इन्द्रियं दंधातु मियं मेधां मियं प्रजां मियं सूर्यो भ्राजों दधातु॥९०॥

सखाँ। कया शचिष्ठया वृता। कस्त्वां सत्यो मदानां मश्हिंष्ठो मध्सदन्धंसः। दृढाचिदारुजे वसुं। अभी षु णः सखीनामिवता जीरतृणाम्। शतं भवास्यूतिभिः। वयः सुपूर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अपं ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुंर्मुमुग्ध्यंस्मान्निधयेव बृद्धान्॥९१॥ शं नो देवीर्भिष्टंय आपो भवन्तु पीतयें। शं योर्भिस्नंवन्तु नः। ईशांना वार्याणां क्षयंन्तीश्चर्षणीनाम्। अपो यांचामि भेषजम्। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु

द्युभिरक्तुभिः परिपातम्स्मानरिष्टेभिरिश्वना सौर्भगेभिः। तन्नो मित्रो वर्रुणो

मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः। कयां नश्चित्र आ भुंवदूती सुदावृधः

दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्योऽस्मान्द्वेष्ट्रि यं चं वयं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मंयोभुवस्ता नं ऊर्जे दंधातन। महे रणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उश्तीरिव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ॥९२॥ आपो जनयंथा च नः। पृथिवी शान्ता साऽग्निनां शान्ता सा में शान्ता शुच शमयतु। अन्तरिक्ष शान्तं तद्वायुनां शान्तं तन्में शान्तः शुच शमयतु। द्यौः शान्ता साऽऽदित्येनं शान्ता सा में शान्ता शुच शमयतु। पृथिवी शान्तिंर्न्तरिक्ष शान्तां सा में शान्ता शुच शमयतु। पृथिवी शान्तिंर्न्तरिक्ष शान्तिं शान्तिंरवान्तरिद्देशाः शान्तिंर्गिः शान्तिंवांयुः शान्तिंरादित्यः

शान्तिंश्चन्द्रमाः शान्तिर्नक्षंत्राणि शान्तिरापः शान्तिरोषंधयः शान्तिर्वनस्पतंयः शान्तिगौः शान्तिरजा शान्तिरश्वः शान्तिः पुरुषः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिर्ब्राह्मणः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः शान्तिर्मे अस्तु शान्तिः। तयाहर शान्त्या सर्वशान्त्या मह्यं द्विपदे चतुंष्पदे च शान्तिं करोमि शान्तिंमें अस्तु शान्तिः। एह श्रीश्च हीश्च धृतिश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानि मोत्तिष्ठन्तमनूत्तिष्ठन्तु मा मा ॥ श्रीश्च हीश्च धृतिंश्च तपों मेधा प्रतिष्ठा श्रद्धा सत्यं धर्मश्चेतानिं मा मा हांसिषुः। उदायुंषा स्वायुषोदोषंधीना रसेनोत्पर्जन्यंस्य शुष्मेणोदंस्थाममृता र अनुं। तचक्षुंर्देविहेतं पुरस्तांच्छुऋमुचरंत्। पश्यंम शुरदः शृतं जीवंम शुरदः शतं नन्दाम शुरदेः शतं मोदोम शुरदेः शतं भवाम शुरदेः शुतः शुणवाम शरदेः शतं प्रब्रंवाम शरदेः शतमजीताः स्याम शरदेः शतं ज्योक्र सूर्यं दशे। य उदंगान्महतोऽर्णवाँद्विभ्राजंमानः सरि्रस्य मध्याथ्स मां वृष्भो लोहिताक्षः सूर्यों विपश्चिन्मनंसा पुनातु। ब्रह्मणश्चोतंन्यसि ब्रह्मण आणी स्थो ब्रह्मण आवर्पनमसि धारितेयं पृथिवी ब्रह्मणा मही धारितमेनेन महदन्तरिक्षं दिवंं दाधार पृथिवी सर्वेवां यदहं वेद तदहं धारयाणि मा महेदोऽधिविस्नंसत्। मेधामनीषे माविंशता समीचीं भूतस्य भव्यस्यावंरुध्ये सर्वमायुंरयाणि सर्वमायुंरयाणि। आभिर्गीर्भिर्यदतों न ऊनमाप्यांयय हरिवो वर्धमानः। यदा स्तोतृभ्यो महिं गोत्रा

रुजासिं भूयिष्ठभाजो अधं ते स्याम। ब्रह्म प्रावादिष्म तन्नो मा हांसीत्। ॐ

शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥९३॥

पुरावतों दधातु बृद्धां जिन्वंथ दृशे सप्त चं॥ नमों वाचे या चोंदिता या चानुंदिता तस्यैं वाचे नमों नमों वाचे नमों वाचस्पतंथे नम ऋषिंभ्यो मन्नकृत्धो मन्नपतिभ्यो मा मामृषंयो मन्नकृतों मन्नपतंयः परांदुर्माहमृषींन्मत्रुकृतों मत्रुपतीन्परांदां वैश्वदेवीं वाचंमुद्यास शिवामदंस्तां ज्ष्टां देवेभ्यः शर्म मे द्यौः शर्म पृथिवी शर्म विश्वंमिदं जगंत्। शर्म चन्द्रश्च सूर्यश्च शर्म ब्रह्मप्रजापृती। भूतं वंदिष्ये भुवंनं वदिष्ये तेजों वदिष्ये यशों वदिष्ये तपों विदिष्ये ब्रह्मं विदिष्ये सत्यं विदिष्ये तस्मां अहमिदमुंपस्तरंणमुपंस्तृण उपस्तरंणं मे प्रजायें पशूनां भूयादुप्स्तरंणमृहं प्रजायें पशूनां भूयासं प्राणांपानौ मृत्योर्मा पातं प्राणांपानौ मा मां हासिष्टं मधुं मनिष्ये मधुं जनिष्ये मधुं वक्ष्यामि मधुं विद्यामि मध्मतीं देवेभ्यो वाचमुद्यास । शुश्रूषेण्यां मनुष्येभ्यस्तं मां देवा अवन्तु शोभायें पितरोऽनुमदन्तु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥पञ्चमः प्रश्नः॥

ॐ शं नुस्तन्नो मा हांसीत्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥

देवा वै स्त्रमांसत। ऋद्धिंपरिमितं यशंस्कामाः। तेंंऽब्रुवन्। यन्नः प्रथमं यशं ऋच्छात्। सर्वेषां नुस्तथ्सहास्दितिं। तेषांं कुरुक्षेत्रं वेदिरासीत्। तस्यै खाण्डवो दक्षिणार्ध आंसीत्। तूर्प्रमृत्तरार्धः। परीणञ्जंघनार्धः। मरवं उत्करः॥१॥

तेषां मुखं वैष्णुवं यशं आर्च्छत्। तन्त्र्यंकामयत। तेनापांकामत्। तं देवा अन्वायन्। यशोऽव्रुर्रुथ्समानाः। तस्यान्वागंतस्य। सृव्याद्धनुरजायत। दक्षिणादिषंवः। तस्मादिषुधन्वं पुण्यंजन्म। यज्ञजन्मा हि॥२॥

तमेक्र् सन्तम्। बृहवो नाभ्यंधृष्णुवन्। तस्मादेकंमिषुधन्विनम्। बृहवोऽनिषुधन्वा नाभिधृंष्णुवन्ति। सौंऽस्मयत। एकं मा सन्तं बृहवो नाभ्यंधर्षिषुरिति। तस्यं सिष्मियाणस्य तेजोऽपांकामत्। तद्देवा ओषंधीषु न्यंमृजुः। ते श्यामाकां अभवन्। स्मयाका वै नामैते॥३॥

खनंन्ति। तद्पोंऽभितृंन्दन्ति॥४॥ वारंवृत् इष्टांसाम्। तस्य ज्यामप्यांदन्। तस्य धनुंर्विप्रवंमाण् शिर् उदंवर्तयत्। तद्यावांपृथिवी अनुप्रावंर्तत। यत् प्रावंर्तत। तत्प्रंवृग्यंस्य प्रवर्ग्यत्वम्। यद्धाँ(४)इत्यपंतत्। तद्धमंस्यं धमृत्वम्। मृह्तो वीर्यमपप्तदितिं। तन्मंहावीरस्यं महावीर्त्वम्॥५॥ यदस्याः समभंरन्। तथ्सम्राज्ञः सम्राद्वम्। तः स्तृतं देवतांस्रेधा व्यंगृह्णत।

तथ्स्मयाकांना इस्मयाकत्वम्। तस्माद्दीक्षितेनांपिगृह्यं स्मेतव्यम्। तेजंसो धृत्यै।

स धर्नुः प्रतिष्कभ्यांतिष्ठत्। ता उपदीकां अब्रुवन्वरं वृणामहै। अर्थ व इम ध

रंन्थयाम। यत्र क्वं च खनाम। तदपों ऽभितृंणदामेति। तस्मांदुपदीका यत्र क्वं च

अग्निः प्रांतः सवनम्। इन्द्रो माध्यं दिन् सवनम्। विश्वेदेवास्तृतीयसवनम्। तेनापंशीर्ष्णा युज्ञेन् यजमानाः। नाशिषोऽवारुन्धतः। न सुवर्गं लोकम्भ्यंजयन्। ते देवा अश्विनावब्रुवन्॥६॥ भिषजौ वै स्थंः। इदं यज्ञस्य शिरः प्रतिधत्तमितिं। तावंब्रूतां वरं वृणावहै। ग्रहं एव नावत्रापि गृह्यतामितिं। ताभ्यांमेतमांश्विनमंगृह्णन्। तावेतद्यज्ञस्य शिरः प्रत्यंधत्ताम्। यत्प्रंवर्ग्यः। तेन सशींष्णा यज्ञेन यजंमानाः। अवाशिषोऽरुंन्धत। अभि सुंवर्गं लोकमंजयन्। यत्प्रंवर्ग्यं प्रवृणितिं। यज्ञस्यैव तिच्छरः प्रतिदधाति। तेन सशींष्णा यज्ञेन यजंमानः। अवाशिषो रुन्धे। अभि सुंवर्गं लोकं जयित। तस्मादेष आश्विनप्रंवया इव। यत्प्रंवर्ग्यः॥७॥

सावित्रं जुहोति प्रसूँत्यै। चतुर्गृहीतेनं जुहोति। चतुष्पादः पृशवः। पृशूनेवावंरुन्थे। चतंस्रो दिशः। दिक्ष्वंव प्रतितिष्ठति। छन्दा रेसि देवेभ्योऽपाँकामन्। न वोऽभागानिं हृव्यं वक्ष्याम् इति। तेभ्यं एतचंतुर्गृहीतमंधारयन्। पुरोनुवाक्यांयै याज्यांयै॥८॥

उत्करो ह्येते तृंन्दन्ति महावीरत्वमंब्रुवन्नजयन्थ्सप्त चं॥=

देवतांयै वषद्गारायं। यचंतुर्गृहीतं जुहोतिं। छन्दा ईस्येव तत् प्रीणाति। तान्यंस्य प्रीतानिं देवेभ्यों हुव्यं वंहन्ति। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। होतव्यंं दीक्षितस्यं गृहा(३)इ न होत्व्या(३)मिति। ह्विर्वे दींक्षितः। यञ्जंहुयात्। ह्विष्कृतं यजंमानमुग्नौ प्रदंध्यात्। यन्न जुंहुयात्॥९॥

यज्ञपुरुरुन्तरियात्। यजुरेव वंदेत्। न ह्विष्कृतं यजंमानमुग्नौ प्रदर्धाति। न यज्ञपुरुरुन्तरेति। गायुत्री छन्दाङ्स्यत्यमन्यत। तस्यै वषद्वारौंऽभ्यय्य शिरौंऽच्छिनत्। तस्यै द्वेधा रसः परांपतत्। पृथिवीमर्धः प्राविंशत्। पशूनर्धः। यः

पृथिवीं प्राविशत्॥१०॥ स खंदिरोंऽभवत्। यः पृशून्। सोंऽजाम्। यत्खांदिर्यभ्रिभंवंति। छन्दंसामेव रसेन यज्ञस्य शिरः सम्भंरति। यदौदुंम्बरी। ऊर्ग्वा उंदुम्बरंः। ऊर्जेव यज्ञस्य शिरः

रसन युज्ञस्य शिर्ः सम्भरात। यदादुम्बरा। ऊग्वा उदुम्बरः। ऊजव युज्ञस्य शिर् सम्भरित। यद्वैण्वी। तेजो वै वेणुः॥११॥

तेर्जसैव यज्ञस्य शिरः सम्भंरित। यहैकंङ्कती। भा एवावंरुन्थे। देवस्यं त्वा सिवतुः प्रस्व इत्यभ्रिमादंत्ते प्रसूत्यै। अश्विनौर्बाहुभ्यामित्याह। अश्विनौ हि देवानामध्वर्यू आस्ताम्। पूष्णो हस्ताभ्यामित्याह् यत्यै। वर्ज्र इव वा एषा। यदभ्रिः। अभ्रिरसि नारिरसीत्यांह शान्त्यै॥१२॥

अध्वरकृद्देवेभ्य इत्यांह। यज्ञो वा अध्वरः। यज्ञकृद्देवेभ्य इति वावैतदांह। उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पत् इत्यांह। ब्रह्मणैव यज्ञस्य शिरोऽच्छैति। प्रैतु ब्रह्मणस्पतिरित्यांह। प्रेत्यैव यज्ञस्य शिरोऽच्छैति। प्र देव्येतु सूनृतेत्यांह। यज्ञो वे सूनृतां। अच्छां वीरं नर्यं पङ्किराधसमित्यांह॥१३॥

पाङ्को हि युज्ञः। देवा युज्ञं नंयन्तु न इत्यांह। देवानेव यंज्ञनियः कुरुते। देवीं द्यावापृथिवी अनुं मे म॰साथामित्यांह। आभ्यामेवानुंमतो युज्ञस्य शिरः सम्भंरति। ऋद्यासंमुद्य मुखस्य शिर् इत्यांह। युज्ञो वै मुखः। ऋद्यासंमुद्य युज्ञस्य शिर् इति वावैतदांह। मुखायं त्वा मुखस्यं त्वा शीष्णं इत्यांह। निर्दिश्यैवैनद्धरित॥१४॥

त्रिर्हरित। त्रयं इमे लोकाः। एभ्य एव लोकेभ्यो यज्ञस्य शिरः सम्भरित। तूष्णीं चेतुर्थं १ हंरित। अपेरिमितादेव यज्ञस्य शिरः सम्भरित। मृत्खुनादग्रे हरित। तस्मौन्मृत्खुनः केरुण्यंतरः। इयत्यग्रं आसीरित्योह। अस्यामेवाछंम्बद्गारं यज्ञस्य शिरः सम्भंरति। ऊर्जं वा एत रसं पृथिव्या उंपदीका उद्दिहिन्ति॥१५॥

यद्वल्मीकम्। यद्वल्मीकव्पा संम्भारो भवंति। ऊर्जमेव रसं पृथिव्या अवंरुन्धे। अथो श्रोत्रमेव। श्रोत्र ह्यंतत्पृथिव्याः। यद्वल्मीकः। अबंधिरो भवति। य एवं वेदं। इन्द्रो वृत्राय वज्रमुदंयच्छत्। स यत्रं यत्र प्राक्रंमत॥१६॥

तन्नाद्धियत। स पूर्तीकस्तम्बे पराँकमत। सोँऽद्भियत। सोँऽब्रवीत्। कुतिं वै में धा इतिं। तदूतीकांनामूतीकृत्वम्। यदूतीका भवन्ति। यज्ञायैवोतिं दंधित। अग्निजा असि प्रजापंते रेत इत्यांह। य एव रसंः पृशून्प्राविंशत्॥१७॥

तमेवावंरुन्थे। पश्चैते संम्भारा भंवन्ति। पाङ्कों युज्ञः। यावांनेव युज्ञः। तस्य शिरः सम्भंरति। यद्ग्राम्याणां पश्नूनां चर्मणा सम्भरेत्। ग्राम्यान्पशूञ्छुचाऽपंयेत्। कृष्णाजिनेन सम्भंरति। आर्ण्यानेव पृशूञ्छुचार्पयति। तस्मांथ्समावंत्पशूनां प्रजायंमानानाम्॥१८॥

आरुण्याः पुशवः कनीया स्सः। शुचा ह्यृंताः। लोमृतः सम्भंरति। अतो ह्यंस्य

मेध्यम्। परिगृह्या यंन्ति। रक्षंसामपंहत्ये। बहवां हरन्ति। अपंचितिमेवास्मिन्दधित। उद्धंते सिकंतोपोप्ते परिश्रिते निदंधित शान्त्यै। मदंन्तीभिरुपं सृजित॥१९॥ तेजं पुवास्मिन्दधित। मधुं त्वा मधुला कंरोत्वित्यांह। ब्रह्मणैवास्मिन्तेजो

तज पुवास्मन्दधाता मधु त्वा मधुला कर्गात्वत्याहा ब्रह्मण्वास्मन्तजा दधाति। यद्ग्राम्याणां पात्रांणां कपालैंः स॰सृजेत्। ग्राम्याणि पात्रांणि शुचाऽर्पयेत्। अर्मकपालैः स॰सृजिति। एतानि वा अनुपजीवनीयानि। तान्येव शुचार्पयिति।

शर्कराभिः स॰सृंजिति धृत्यैं। अथो शन्त्वायं। अजलोमैः स॰सृंजिति। एषा वा अग्नेः प्रिया तुन्ः। यद्जा। प्रिययैवैनंं तुनुवा स॰सृंजिति। अथो तेजंसा। कृष्णाजिनस्य लोमंभिः स॰सृंजिति। यज्ञो वै कृष्णाजिनम्। यज्ञेनैव यज्ञ॰ स॰सृंजिति॥२०॥

परिश्रिते करोति। ब्रह्मवर्चसस्य परिगृहीत्यै। न कुर्वन्नभि प्राण्यात्। यत्कुर्वन्नभि

याज्यांयै न जुंहुयादविंशद्वेणुः शान्त्यैं पुङ्किरांधसुमित्यांह हरति दिहन्ति पुराऋंमुताविंशत् प्रुजायंमानाना सुजति शुन्त्वायाष्टौ

पाराश्रत कराति। ब्रह्मव्चसस्य पारगृहात्य। न कुवन्नाम प्राण्यात्। यत्कुवन्नाम प्राण्यात्। प्राणाञ्छुचार्पयेत्। अपहाय प्राणिति। प्राणानां गोपीथायं। न प्रवग्रं

चादित्यं चान्तरेयात्। यदंन्तरेयात्। दुश्चर्मां स्यात्॥२१॥

तस्मान्नान्तराय्यम्। आत्मनो गोपीथायं। वेणुंना करोति। तेजो वै वेणुंः। तेजंः प्रवर्ग्यः। तेजंसैव तेजः समर्धयति। मुखस्य शिरोऽसीत्यांह। युज्ञो वै मुखः। तस्यैतच्छिरंः। यत्प्रवर्ग्यः॥२२॥

तस्मादेवमाह। युज्ञस्यं पुदे स्थ इत्याह। युज्ञस्य ह्यंते पुदे। अथो प्रतिष्ठित्यै। गायुत्रेणं त्वा छन्दंसा करोमीत्याह। छन्दोभिरेवैनं करोति। त्र्यं इमे लोकाः। एषां लोकानामाध्यै। छन्दोभिः करोति॥२३॥

वीर्यं वै छन्दा रेसि। वीर्येणैवेनं करोति। यजुंषा बिलं करोति व्यावृंत्यै। इयं तं करोति। प्रजापंतिना यज्ञमुखेन सम्मितम्। इयं तं करोति। य्ज्ञपुरुषा सम्मितम्। इयं तं करोति। युज्ञपुरुषा सम्मितम्। इयं तं करोति। युतावृद्वै पुरुषे वीर्यम्। वीर्यसम्मितम्॥२४॥

अपंरिमितं करोति। अपंरिमित्स्यावंरुद्धै। पृरिग्रीवं कंरोति धृत्यैं। सूर्यस्य

हर्रसा श्रायेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। अश्वशकेनं धूपयति। प्राजापत्यो वा अर्श्वः सयोनित्वायं। वृष्णो अर्श्वस्य निष्पदसीत्यांह। असौ वा आंदित्यो वृषाऽर्श्वः। तस्य छन्दा ऐसि निष्पत्॥२५॥

छन्दोंभिरेवैनं धूपयति। अर्चिषे त्वा शोचिषे त्वेत्यांह। तेजं एवास्मिन्दधाति। वारुणों ऽभीद्धः। मैत्रियोपैति शान्त्यैं। सिद्धौ त्वेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। देवस्त्वां सवितोद्वंपत्वित्यांह। सवितृप्रंसूत एवैनं ब्रह्मंणा देवतांभिरुद्वंपति। अपंद्यमानः

पृथिव्यामाशा दिश आपृणेत्यांह॥२६॥

तस्मादिग्निः सर्वा दिशोऽनु विभाति। उत्तिष्ठ बृहन्भवोध्वस्तिष्ठ ध्रुवस्त्वमित्यांह प्रतिष्ठित्यै। ईश्वरो वा एषों ऽन्धो भवितोः। यः प्रवर्ग्यमन्वीक्षंते। सूर्यस्य त्वा

चक्षुषाऽन्वींक्ष इत्यांह। चक्षुंषो गोपीथायं। ऋजवें त्वा साधवें त्वा सुक्षित्ये त्वा भूत्यै त्वेत्यांह। इयं वा ऋजुः। अन्तरिक्षः साधु। असौ सुंक्षितिः॥२७॥

दिशो भूतिः। इमानेवास्मैं लोकान्कंल्पयति। अथो प्रतिष्ठित्यै। इदमहममुमांमुष्यार

विशेति राज्न्यंस्य ब्रूयात्। विशेवैनं पर्यूहित। पृशुभिरिति वैश्यंस्य। पृशुभिरेवैनं पर्यूहित। असुर्यं पात्रमनांच्छृण्णम्॥२८॥
आच्छृंणित्ति। देवत्राकंः। अज्ञक्षीरेणाऽऽच्छृंणित्ति। पृर्मं वा एतत्पर्यः। यदंजिक्षीरम्। प्रमेणैवैनं पयसाऽऽच्छृंणित्त। यजुंषा व्यावृंत्ये। छन्दोंभिराच्छृंणित्त। छन्दोंभिर्वा छन्दोंभिर्वा छन्दोंभिर्व छन्दांभिर्व छन्दांभिर्वा छिन्धे वाचिमित्यांह।

वाचंमेवावंरुन्धे। छुन्ध्यूर्जमित्यांह। ऊर्जमेवावंरुन्धे। छुन्धि हविरित्यांह।

हिवरेवाकः। देवं पुरश्चर सुघ्यासन्त्वेत्याह। यथायुजुरेवैतत्॥२९॥

विशा पृशुभिं ब्रह्मवर्च सेन् पर्यू हामीत्यांह। विशैवैनं पृशुभिं ब्रह्मवर्च सेन् पर्यू हित।

स्याद्यत् प्रंवर्ग्यश्चन्द्रोभिः करोति वीर्यसम्मितं छन्दारेसि निष्पत्पृणेत्यांह स्थितिरनां च्छूण्ज्बन्दार्श्याच्छूणत्य्ष्टौ चे॥—[3] ब्रह्मन्प्रचेरिष्यामो होतेर्घमम्भिष्टुहीत्यांह। एष वा एतर्हि बृह्स्पतिः। यद्ब्रह्मा। तस्मा एव प्रतिप्रोच्य प्रचरित। आत्मनोऽनांत्ये। यमायं त्वा मुखाय त्वेत्यांह। एता वा एतस्यं देवताः। ताभिरेवैन् समर्थयित। मदंन्तीभिः प्रोक्षंति। तेर्ज

एवास्मिंन्दधाति॥३०॥

अभिपूर्वं प्रोक्षंति। अभिपूर्वमेवास्मिन्तेजों दधाति। त्रिः प्रोक्षंति। त्र्यांवृद्धि यज्ञः। अथों मेध्यत्वायं। होताऽन्वांह। रक्षंसामपंहत्ये। अनंवानम्। प्राणाना् सन्तंत्ये। त्रिष्टुर्भः सतीर्गायत्रीरिवान्वांह॥३१॥

गायत्रो हि प्राणः। प्राणमेव यजमाने दधाति। सन्तंतुमन्वांह। प्राणानांमुन्नाद्यंस्य सन्तंत्यै। अथो रक्षंसामपंहत्यै। यत्परिंमिता अनुब्रूयात्। परिंमित्मवंरुन्धीत। अपंरिमिता अन्वांह। अपंरिमित्स्यावंरुद्धै। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं॥३२॥

यत्प्रवर्ग्यः। ऊर्ङ्मु औः। यन्मौ ओ वेदो भवंति। ऊर्जैव यज्ञस्य शिरः समर्धयति।

प्राणाहुतीर्जुहोति। प्राणानेव यर्जमाने दधाति। सप्त जुंहोति। सप्त वै शीर्षण्याः

प्राणाः। प्राणानेवास्मिन्दधाति। देवस्त्वां सविता मध्वांऽनिक्कित्यांह॥३३॥ तेजंसैवैनंमनिक्ता पृथिवीं तपंसस्रायस्वेति हिरंण्यमुपाँस्यति। अस्या अनंतिदाहाय। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रंवर्ग्यः। अग्निः सर्वा देवताः।

प्रल्वानादीप्योपाँस्यति। देवताँस्वेव यज्ञस्य शिरः प्रतिंदधाति। अप्रतिशीर्णाग्रं भवति। एतद्वंर्हिर्ह्यंषः॥३४॥

अर्चिरंसि शोचिर्सीत्यांह। तेजं एवास्मिन्ब्रह्मवर्च्सं देधाति। स॰सीदस्व महा॰ असीत्यांह। महान् ह्येषः। ब्रह्मवादिनों वदन्ति। एते वाव त ऋत्विजंः। ये देर्शपूर्णमासयौः। अर्थ कथा होता यजमानायाऽऽशिषो नाशौस्त इति। पुरस्तांदाशीः खलु वा अन्यो युज्ञः। उपरिष्टादाशीर्न्यः॥३५॥

अनाधृष्या पुरस्तादिति यदेतानि यजूङ्ष्याहं। शीर्षत एव यज्ञस्य यजंमान आशिषोऽवंरुन्थे। आयुं: पुरस्तांदाह। प्रजां दक्षिणतः। प्राणं पृश्चात्। श्रोत्रंमुत्तर्तः। विधृतिमुपरिष्टात्। प्राणानेवास्में समीचों दधाति। ईश्वरो वा एष दिशोऽनून्मंदितोः। यं दिशोऽनुं व्यास्थापयंन्ति॥३६॥

मनोरश्वांसि भूरिंपुत्रेतीमाम्भिमृंशति। इयं वै मनोरश्वा भूरिंपुत्रा। अस्यामेव प्रतितिष्ठत्यनुन्मादाय। सूपसदां मे भूया मा मां हिश्सीरित्याहाहिश्सायै। चितः

अर्ह्नं बिभर्षि सार्यकानि धन्वेत्यांह॥३९॥

स्थ परिचित् इत्यांह। अपंचितिमेवास्मिन्दधाति। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रविग्यंः। असौ खलु वा आंदित्यः प्रविग्यः। तस्यं मुरुतो रुश्मयः॥३७॥

स्वाहां मरुद्भिः परिश्रयस्वेत्यांह। अमुमेवाऽऽदित्य रश्मिभिः पर्यूहति।

तस्माद्रसावांदित्यों ऽमुष्मिँ छोके रिष्मिभिः पर्यूढः। तस्माद्राजां विशा पर्यूढः। तस्माद्रामणीः संजातेः पर्यूढः। अग्नेः सृष्टस्यं यतः। विकंङ्कतं भा आँच्छत्। यद्वैकंङ्कताः परिधयो भवन्ति। भा पृवावंरुन्धे। द्वादंश भवन्ति॥३८॥ द्वादंश मासाः संवथ्सरः। संवथ्सरमेवावंरुन्धे। अस्ति त्रयोद्शो मास् इत्याहुः। यत्रयोद्दशः परिधिभविति। तेनैव त्रयोद्दशं मास्मवंरुन्धे। अन्तरिक्षस्यान्तर्धिर्सीत्यांह् व्यावृत्त्यै। दिवं तपंसस्रायस्वत्युपरिष्टाद्धिरंण्यमिध् निदंधाति। अमुष्या अनंतिदाहाय। अथो आभ्यामेवैनंमुभयतः परिगृह्णाति।

स्तौत्येवैनंमेतत्। गायुत्रमंसि त्रैष्टुंभमसि जागंतम्सीतिं ध्वित्राण्यादंत्ते।

छन्दोंभिरेवैनान्यादंत्ते। मधु मध्वितिं धूनोति। प्राणो वै मधुं। प्राणमेव यर्जमाने दधाति। त्रिः परियन्ति। त्रिवृद्धि प्राणः। त्रिः परियन्ति। त्र्यांवृद्धि यज्ञः॥४०॥

अथो रक्षंसामपंहत्यै। त्रिः पुनः परियन्ति। षद्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतुष्वेव प्रतितिष्ठन्ति। यो वै घर्मस्यं प्रियां तनुवंमाक्रामंति। दुश्चर्मा वै स भविति। एष ह् वा अस्य प्रियां तनुवमाक्रामिति। यत् त्रिः प्रीत्यं चतुर्थं पर्येति। एता ह वा अस्योग्रदेवो राजंनिराचंक्राम॥४१॥

ततो वै स दुश्चर्मां ऽभवत्। तस्मान्तिः प्रित्यं न चंतुर्थं परीयात्। आत्मनों गोपीथायं। प्राणा वै ध्वित्रांणि। अव्यंतिषङ्गं धून्वन्ति। प्राणानामव्यंतिषङ्गाय क्रुस्यैं। विनिषद्यं धून्वन्ति। दिक्ष्वेव प्रतितिष्ठन्ति। ऊर्ध्वं धून्वन्ति। सुवर्गस्यं लोकस्य सम्ष्रिः। सुवतो धून्वन्ति। तस्माद्य स्वर्तः पवते॥४२॥

द्धातीवान्वांह युज्ञस्यांहैष उपरिष्ठादाशीर्न्यो व्यांस्थापयंन्ति रुश्मयो भवन्ति धन्वेत्यांह युज्ञश्चंकाम् समंध्ये हे चं॥——[४] अग्निष्ट्वा वसुंभिः पुरस्तादोचयतु गायत्रेण छन्दसेत्याह। अग्निरेवैनं वसुंभिः पुरस्ताँद्रोचयति गायत्रेण छन्दंसा। समारुचितो रोंचयेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। इन्द्रंस्त्वा रुद्रैर्दक्षिणतो रोंचयतु त्रेष्टुंभेन छन्दसेत्यांह। इन्द्रं एवैन १ रुद्रैर्दक्षिणतो रोचयित त्रैष्टुंभेन छन्दंसा। समारुचितो रोचयेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। वरुणस्त्वाऽऽदित्यैः पृश्चाद्रोचयतु जागंतेन् छन्द्सेत्यांह। वर्रण एवैनंमादित्यैः पृश्चाद्रोंचयति जागंतेन छन्दंसा॥४३॥

समारुचितो रोचयेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। द्युतानस्त्वां मारुतो मरुद्धिरुत्तरतो रोचयत्वानुंष्टुभेन छन्दसेत्यांह। द्युतान एवैनं मारुतो मरुद्धिरुत्तरतो रोंचयत्यानुंष्ट्रभेन छन्दंसा। समांरुचितो रोंचयेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। बृहस्पतिंस्त्वा विश्वैर्देवैरुपरिष्टाद्रोचयतु पाङ्केन् छन्द्सेत्यांह। बृहस्पतिंरेवैनं विश्वैर्देवैरुपरिष्टाद्रोचयति पाङ्केन छन्दंसा। समारुचितो रोचयेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशाँस्ते॥४४॥

रोचितस्त्वं देव घर्म देवेष्वसीत्यांह। रोचितो ह्यंष देवेषुं। रोचिषीयाहं

एवैष मंनुष्येष्वायुष्मा इस्तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी भंवति। रुगंसि रुचं मियं धेहि मिय रुगित्यांह। आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। तं यदेतैर्यजुंर्भिररोंचयित्वा। रुचितो घर्म इतिं प्रब्रूयात्। अरोचुकोऽध्वर्युः स्यात्। अरोचुको यजमानः। अथ यदेनमेतैर्यज्भी रोचयित्वा। रुचितो घर्म इति प्राहं। रोचुंकोऽध्वर्युर्भवंति। रोचुंको यजमानः॥४५॥ पृश्चाद्रोचयित् जागंतेन् छन्दंसा पाङ्केन् छन्दंसा समारुचितो रोंचयेत्यांहाशिषंमेवैतामाशांस्ते शास्तेऽष्टौ चं॥_____[५] शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत् प्रवर्ग्यः। ग्रीवा उपसदः। पुरस्तांदुपुसदां प्रवर्ग्यं प्रवृंणक्ति। ग्रीवास्वेव यज्ञस्य शिरः प्रतिंदधाति। त्रिः प्रवृंणक्ति। त्रयं इमे लोकाः। एभ्य एव लोकेभ्यो यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्थे। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः॥४६॥

मंनुष्येष्वित्याह। रोचंत एवैष मंनुष्येषु। सम्राह्मर्म रुचितस्त्वं देवेष्वायुष्मा इस्तेजस्वी

ब्रह्मवर्चस्यंसीत्याह। रुचितो ह्यंष देवेष्वायुंष्मा इस्तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी।

रुचितोंऽहं मंनुष्येंष्वायुष्मा इस्तेजस्वी ब्रह्मवर्चसी भूयासमित्याह। रुचित

संवथ्मरः। संवथ्मरादेव यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्धे। चतुर्वि शितः सम्पंद्यन्ते।

चतुर्वि १ शतिरर्धमासाः। अर्धमासेभ्यं एव यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्धे। अथो खलुं।

सकृदेव प्रवृज्यः। एक १ हि शिरं:॥४७॥

कुरुते। अनिंपद्यमानमित्यांह॥४९॥

ऋतुभ्यं एव यज्ञस्य शिरोऽवंरुन्धे। द्वादंशकृत्वः प्रवृंणक्ति। द्वादंश मासाः

अग्निष्टोमे प्रवृंणिक्ति। पृतावान् वै यज्ञः। यावानिग्निष्टोमः। यावानेव यज्ञः। तस्य शिरः प्रतिद्धाति। नोक्थ्ये प्रवृंश्यात्। प्रजा वै पृशवं उक्थानि। यदुक्थ्ये प्रवृश्यात्। प्रजां पृश्ननंस्य निर्देहेत्। विश्वजिति सर्वपृष्टे प्रवृंणिक्ति॥४८॥ पृष्ठानि वा अर्च्युतं च्यावयन्ति। पृष्ठेरेवास्मा अर्च्युतं च्यावयित्वाऽवंरुन्थे। अपंश्यं गोपामित्यांह। प्राणो वै गोपाः। प्राणमेव प्रजासु वियातयित। अपंश्यं गोपामित्यांह।

असौ वा आंदित्यो गोपाः। स हीमाः प्रजा गोंपायतिं। तमेव प्रजानां गोप्तारं

न ह्यंष निपद्यंते। आ च परां च पथिभिश्चरंन्तमित्यांह। आ च ह्यंष परां च

पथिभिश्चरंति। स सधीचीः स विषूंचीर्वसांन इत्यांह। सधीचींश्च ह्यंष विषूंचीश्च वसानः प्रजा अभि विपश्यति। आवरीवर्ति भुवनेष्वन्तरित्यांह। आ ह्येष वरीवर्ति भुवंनेष्वन्तः। अत्रं प्रावीर्मधु माध्वीभ्यां मधु माधूचीभ्यामित्यांह। वासंन्तिकावेवास्मा ऋतू कंल्पयति। समग्निरिग्ननां गतेत्यांह॥५०॥

ग्रैष्मांवेवास्मां ऋतू कंल्पयति। सम्ग्रिर्ग्निनां गृतेत्यांह। अग्निर्ह्यंवैषों ऽग्निनां सङ्गच्छंते। स्वाहा समग्निस्तपंसा गतेत्यांह। पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणाभिगृणाति। धर्ता दिवो विभासि रजसः पृथिव्या इत्याह। शारदावेवास्मां ऋतू कंल्पयति॥५१॥ दिवि देवेषु होत्रां युच्छेत्यांह। होत्रांभिरेवेमाँ ह्लोकान्थ्सन्दंधाति। विश्वांसां भुवां पत इत्याह। हैमंन्तिकावेवास्मां ऋतू कंल्पयति। देवश्रस्त्वं देव घर्म देवान्पाहीत्यांह। शैशिरावेवास्मां ऋतू कंल्पयति। तुपोजां वार्चमस्मे नियंच्छ देवायुवमित्यांह। या वै मेध्या वाक्। सा तंपोजाः। तामेवावंरुन्धे॥५२॥

गर्भो देवानामित्यांह। गर्भो ह्येष देवानांम्। पिता मंतीनामित्यांह। प्रजा वै

मृतयंः। तासांमेष एव पिता। यत् प्रवर्ग्यः। तस्मादेवमाह। पतिः प्रजानामित्याह। पतिर्ह्येष प्रजानाम्। मतिः कवीनामित्याह॥५३॥

मित् हींष कंवीनाम्। सं देवो देवेनं सिवत्रा यंतिष्ट सं सूर्येणारुक्तेत्यांह। अमुं चैवाऽऽदित्यं प्रवर्गं च संशास्ति। आयुर्वास्त्वमस्मभ्यं घर्म वर्चोदा असीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशास्ते। पिता नोंऽसि पिता नों बोधेत्यांह। बोधयंत्येवैनम्। न वै तेंऽवकाशा भवन्ति। पित्रिये दशमः। नव वै पुरुषे प्राणाः॥५४॥

नाभिर्दश्मी। प्राणानेव यर्जमाने दधाति। अथो दशाँक्षरा विराट्। अन्नं विराट्। विराजैवान्नाद्यमवंरुन्थे। यज्ञस्य शिरौंऽच्छिद्यत। तद्देवा होत्रांभिः प्रत्यंदधः। ऋत्विजोऽवेंक्षन्ते। एता वे होत्राः। होत्रांभिरेव यज्ञस्य शिरः प्रतिंदधाति॥५५॥ रुचितमवेंक्षन्ते। रुचिताद्वे प्रजापंतिः प्रजा अंसृजत। प्रजानाः सृष्ट्यै। रुचितमवेंक्षन्ते। रुचिताद्वे पर्जन्यों वर्षित। वर्षुंकः पर्जन्यों भवति। सं प्रजा एंधन्ते। रुचितमवेंक्षन्ते। रुचितं वे ब्रंह्मवर्चसम्। ब्रह्मवर्चिसनों भवन्ति॥५६॥

अधीयन्तोऽवेंक्षन्ते। सर्वमायुंर्यन्ति। न पत्यवेंक्षेत। यत्पत्यवेक्षेत। प्रजांयेत। प्रजां त्वंस्यै निर्दहेत्। यन्नावेक्षेत। न प्रजांयेत। नास्यैं प्रजां निर्दहेत्। तिर्स्कृत्य यर्जुर्वाचयित। प्रजांयते। नास्यैं प्रजां निर्दहित। त्वष्टींमती ते सप्येत्यांह। सपाद्धि प्रजाः प्रजायंन्ते॥५७॥

ऋतवो हि शिर्ः सर्वपृष्ठे प्रवृंणक्त्वानिपद्यमान्मित्यांह गृतेत्यांह शार्दावेवास्मां ऋतू कंल्पयित रुन्धे कवीनामित्यांह प्राणाः प्रतिदेधाति भवन्ति वाचयित चृत्वारि च॥————[६]

देवस्यं त्वा सिवृतुः प्रंस्व इतिं रश्नामादंत्ते प्रसूत्यै। अश्विनौंर्बाहुभ्यामित्यांह। अश्विनौ हि देवानांमध्वर्यू आस्तांम्। पूष्णो हस्तांभ्यामित्यांह यत्यै। आद्देऽदिंत्यै रास्नाऽसीत्यांह यज्जंष्कृत्यै। इड एह्यदिंत एहि सरंस्वत्येहीत्यांह। एतानि वा अस्यै देवनामानिं। देवनामरेवैनामाह्वंयति। असावेह्यसावेह्यसावेहीत्यांह। एतानि वा अस्यै मनुष्यनामानिं॥५८॥

म्नुष्यनामेरेवैनामाह्वंयति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतुभिरेवैनामाह्वंयति।

अदित्या उष्णीषंमसीत्यांह। यथायजुरेवैतत्। वायुरंस्यैड इत्यांह। वायुदेवत्यों वै वथ्सः। पूषा त्वोपावंसृज्तित्यांह। पौष्णा वै देवतंया पुशवंः॥५९॥

स्वयैवैनं देवतंयोपावंसृजति। अश्विभ्यां प्रदांपयेत्यांह। अश्विनौ वै देवानां भिषजौँ। ताभ्यामेवास्मै भेषजं करोति। यस्ते स्तनः शशय इत्याह। स्तौत्येवैनाम्। उस्रं घर्म शिर्षोस्रं घर्मं पांहि घर्मायं शिर्षेत्यांह। यथां ब्रूयादमुष्में देहीतिं। तारगेव तत्। बृहस्पतिस्त्वोपं सीदत्वित्यांह॥६०॥

ब्रह्म वै देवानां बृहस्पतिः। ब्रह्मणैवैनामुपंसीदति। दानंवः स्थु पेरंवु इत्याह। मेध्यांनेवैनांन्करोति। विष्वुग्वृतो लोहिंतेनेत्यांह व्यावृत्त्ये। अश्विभ्यां पिन्वस्व सरंस्वत्यै पिन्वस्व पूष्णे पिन्वस्व बृहस्पतंये पिन्वस्वेत्यांह। एताभ्यो ह्यंषा देवतांभ्यः पिन्वंते। इन्द्रांय पिन्वस्वेन्द्रांय पिन्वस्वेत्यांह। इन्द्रंमेव भागधेयेंन समर्धयति। द्विरिन्द्रायेत्यांह॥६१॥ तस्मादिन्द्रों देवतानां भूयिष्ठभाक्तमः। गायत्रोंऽसि त्रैष्टुंभोऽसि जागंतमसीतिं

द्यावांपृथिवीभ्यांमेवैनं परिगृह्णाति॥६४॥

पूर्वाभ्यां वर्षद्भियाता इति। इन्द्रांश्विना मधुनः सार्घस्येत्यांह। अश्विभ्यांमेव पूर्वीभ्यां वर्षद्वरोति। अथो अश्विनांवेव भागधेयेन समर्धयति॥६२॥ घुमं पांत वसवो यजंता विडत्यांह। वसूनेव भागधेयेन समर्धयति। यद्वेषद्भर्यात्। यातयांमाऽस्य वषद्वारः स्यात्। यन्न वंषद्भर्यात्। रक्षारंसि युज्ञर हंन्युः। विडित्यांह। परोक्षंमेव वर्षद्वरोति। नास्यं यातयांमा वषद्वारो भवंति। न युज्ञ रक्षा रसि घ्रन्ति॥६३॥ स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य रश्मयें वृष्टिवनंये जुहोमीत्यांह। यो वा अंस्य पुण्यों

र्शिमः। स वृष्टिविनः। तस्मां पुवैनं जुहोति। मधुं हिवर्सीत्यांह। स्वदयंत्येवैनम्।

सूर्यस्य तपंस्तुपेत्यांह। यथायुजुरेवैतत्। द्यावांपृथिवीभ्यां त्वा परिंगृह्णामीत्यांह।

शफोपयमानादंत्ते। छन्दोंभिरेवैनानादंत्ते। सहोर्जो भागेनोपमेहीत्यांह। ऊर्ज एवैनं

भागमंकः। अश्विनौ वा एतद्यज्ञस्य शिरंः प्रतिदर्धतावब्र्ताम्। आवाभ्यामेव

अन्तरिक्षेण त्वोपंयच्छामीत्यांह। अन्तरिक्षेणैवैनमुपंयच्छति। न वा एतं

मंनुष्यों भर्तुमर्हति। देवानां त्वा पितृणामनुमतो भर्तु । देवैरेवैनं पितृभिरनुंमत आदंत्ते। वि वा एनमेतदर्धयन्ति। यत्पश्चात्प्रवृज्यं पुरो जुह्वंति। तेजोऽसि तेजोऽनु प्रेहीत्यांह। तेजं पुवास्मिन्दधाति। दिविस्पृङ्गा मां हिश्सीरन्तरिक्षस्पृङ्गा मां हिश्सीः पृथिविस्पृङ्गा मां हिश्सीरित्याहाहि श्रेसायै॥६५॥ सुवंरिस सुवंर्मे यच्छ दिवं यच्छ दिवो मां पाहीत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रवर्ग्यः। आत्मा वायुः। उद्यत्यं वातनामान्याह। आत्मन्नेव यज्ञस्य शिरः प्रतिंदधाति। अनंवानम्। प्राणाना सन्तंत्यै। पश्चांह॥६६॥

पाङ्को यज्ञः। यावानेव यज्ञः। तस्य शिरः प्रतिदधाति। अग्नये त्वा वसुंमते स्वाहेत्यांह। असौ वा आंदित्यों ऽग्निर्वसुंमान्। तस्मां पृवैनं जुहोति। सोमांय त्वा रुद्रवंते स्वाहेत्यांह। चन्द्रमा वै सोमों रुद्रवान्। तस्मां पृवैनं जुहोति। वरुणाय

त्वाऽऽदित्यवंते स्वाहेत्यांह॥६७॥

त्वंर्भुमते विभुमते प्रभुमते वाजंवते स्वाहेत्यांह। संवृथ्सरो वै संवितर्भुमान् विभुमान्प्रंभुमान् वाजंवान्। तस्मां एवैनं जुहोति। यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहेत्यांह। प्राणो वै यमोऽङ्गिरस्वान्पितृमान्॥६८॥
तस्मां एवैनं जुहोति। एताभ्यं एवैनं देवतांभ्यो जुहोति। दश् सम्पंद्यन्ते। दशांक्षरा विराट्। अन्नं विराट्। विराज्वान्नाद्यमवंरुन्थे। रौहिणाभ्यां वै देवाः सुंवर्गं लोकमांयन्। तद्रौहिणयों रौहिणत्वम्। यद्रौहिणो भवंतः।

अफ्सु वै वर्रुण आदित्यवान्। तस्मां एवैनंं जुहोति। बृहस्पतंये त्वा

विश्वदें व्यावते स्वाहेत्यांह। ब्रह्म वै देवानां बृहस्पतिः। ब्रह्मणैवेनं जुहोति। सवित्रे

सुज्योतिर्ज्योतिषा् स्वाहा रात्रिर्ज्योतिः केतुनां जुषता सुज्योतिर्ज्योतिषा् स्वाहेत्यांह। आदित्यमेव तदमुष्मिं श्लोकेऽह्नां प्रस्तां द्वाधार। रात्रिया अवस्तांत्।

रौहिणाभ्यामेव तद्यजंमानः सुवृगं लोकमेति। अहुर्ज्योतिः केतुनां जुषता १

तस्मादसार्वादित्योऽमुष्मिँ होकेऽहोरात्राभ्यां धृतः॥६९॥

मुनुष्युनामानि पुशवंः सीदुत्वित्याहेन्द्रायेत्यांहार्धयति घ्रन्ति गृह्णात्यहि ५सायै पश्चांऽहादित्यवंते स्वाहेत्यांह पितृमानेति चुत्वारि

विश्वा आशां दक्षिण्सिदत्यांह। विश्वांनेव देवान्प्रीणाति। अथो दुरिष्ट्या एवैनं पाति। विश्वां देवानयाडिहेत्यांह। विश्वांनेव देवान्यांगधेयेन समर्धयित। स्वाहांकृतस्य धर्मस्य मधौः पिबतमिश्वनेत्यांह। अश्विनांवेव भागधेयेन समर्धयित। स्वाहाऽग्नये युज्ञियांय शं यर्जुर्भिरित्यांह। अभ्येवैनं धारयित। अथो हिवरेवाकः॥७०॥

अश्विंना घुमं पांतर हार्दिवानमहंर्दिवाभिक्तिभिरित्यांह। अश्विनांवेव भागधेयेन समर्धयति। अनुं वां द्यावांपृथिवी मर्सातामित्याहानुंमत्यै। स्वाहेन्द्रांय स्वाहेन्द्राविडित्यांह। इन्द्रांय हि पुरो हूयतें। आश्राव्यांह घुर्मस्यं युजेति। वर्षद्वृते जुहोति। रक्षंसामपंहत्यै। अनुंयजित स्वगाकृत्यै। घुर्ममंपातमश्विनेत्यांह॥७१॥ पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणाभिगृंणाति। अनुं वां द्यावांपृथिवी अंम रसातामित्याहानुंमत तं प्राव्यं यथावण्णमों दिवे नमः पृथिव्या इत्यांह। यथायजुरेवैतत्। दिविधां

इमं युज्ञं युज्ञमिमं दिविधा इत्याहा सुवर्गमेवैनं लोकं गमयित। दिवं

गच्छान्तरिक्षं गच्छ पृथिवीं गुच्छेत्याह। पृष्वेवैनं लोकेषु प्रतिष्ठापयति। पश्चे प्रदिशो गुच्छेत्याह॥७२॥

दिक्ष्वेवैनं प्रतिष्ठापयति। देवान्धंर्मपान्गंच्छ पितॄन्धंर्मपान्गच्छेत्यांह। उभयेंष्वेवैनं प्रतिष्ठापयति। यत्पन्वते। वर्षुकः पूर्जन्यो भवति। तस्मात्पन्वंमानः पुण्यः। यत्प्राङ्घिन्वते। तद्देवानांम्। यद्देक्षिणा। तत्पितृणाम्॥७३॥

यत्प्रत्यक्। तन्मंनुष्यांणाम्। यदुदङ्कं। तद्रुद्राणांम्। प्राश्चमुदंश्चं पिन्वयति। देवत्राकंः। अथो खलुं। सर्वा अनु दिशंः पिन्वयति। सर्वा दिशः समेधन्ते। अन्तःपरिधि पिन्वयति॥७४॥

तेजुसोऽस्कन्दाय। इषे पीपिह्यूर्जे पीपिृहीत्याह। इषमेवोर्जुं यजमाने दधाति।

पीपिहीत्यांह। आत्मनं एवैतामाशिषमाशांस्ते। त्विष्यैं त्वा द्युम्नायं त्वेन्द्रियायं त्वा भूत्यै त्वेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। धर्मासि सुधर्मा में न्यस्मे ब्रह्मांणि धारयेत्यांह॥ ७५॥ ब्रह्मेन्नेवैनं प्रतिष्ठापयति। नेत्त्वा वातः स्कन्दयादिति यद्यंभिचरैत्। अमुष्यं त्वा प्राणे सांदयाम्यमुनां सह निर्थं गच्छेतिं ब्रूयाद्यं द्विष्यात्। यमेव द्वेष्टिं। तेनैन १ सह निर्धं गमयति। पूष्णे शरसे स्वाहेत्यांह। या एव देवतां हुतभांगाः। ताभ्यं

पुवैनं जुहोति। ग्रावंभ्यः स्वाहेत्यांह। या एवान्तरिक्षे वार्चः॥७६॥ ताभ्यं एवैनं जुहोति। प्रतिरेभ्यः स्वाहेत्यांह। प्राणा वै देवाः प्रंतिराः। तेभ्यं एवैनं जुहोति। द्यावांपृथिवीभ्या इस्वाहेत्यांह। द्यावांपृथिवीभ्यांमेवैनं जुहोति। पितृभ्यों घर्मपेभ्यः स्वाहेत्यांह। ये वै यज्वांनः। ते पितरों घर्मपाः। तेभ्यं पुवैनं जुहोति॥७७॥ रुद्रायं रुद्रहोंत्रे स्वाहेत्यांह। रुद्रमेव भागधेयेंन समर्धयति। सर्वतः समनिक्ति।

स्वतं एव रुद्रं निरवंदयते। उदंश्चं निरंस्यति। एषा वै रुद्रस्य दिक्। स्वायांमेव दिशि रुद्रं निरवंदयते। अप उपंस्पृशति मेध्यत्वायं। नान्वीक्षेत। यद्न्वीक्षेत॥७८॥ चक्षुंरस्य प्रमायुंक इस्यात्। तस्मान्नान्वीक्ष्यंः। अपींपरो माऽह्नो रात्रियै

मा पाह्येषा तें अग्ने समित्तया समिंध्यस्वायुंमें दा वर्चसा माऽऽश्लीरित्यांह।

आयुरेवास्मिन्वर्चो दधाति। अपीपरो मा रात्रिया अह्रो मा पाह्येषा ते अग्ने समित्तया समिध्यस्वाऽऽयुर्मे दा वर्चसा माऽऽश्चीरित्यांह। आयुरेवास्मिन्वर्चो दधाति। अग्निज्योतिज्योतिरिग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिज्योतिः सूर्यः स्वाहेत्यांह। यथायजुरेवैतत्। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। होत्व्यंमग्निहोत्रा(३)न्न होत्व्या(३)मिति॥७९॥ यद्यज्ञेषा जुहुयात्। अयंथापूर्वमाहुंती जुहुयात्। यन्न जुंहुयात्। अग्निः परांभवेत्। भूः स्वाहेत्येव होत्व्यम्। यथापूर्वमाहुंती जुहोतिं। नाग्निः परांभवति। हृत स्विमधुं

हविरित्याह। स्वदयंत्येवैनम्। इन्द्रंतमेऽग्नावित्यांह॥८०॥

प्राणो वा इन्द्रंतमोऽग्निः। प्राण एवैनमिन्द्रंतमेऽग्नौ जुंहोति। पिता नोंऽसि मा मां हि सीरित्याहाहि रंसायै। अश्यामं ते देव घर्म मधुंमतो वाजंवतः पितुमत् इत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। स्वधाविनोंऽशीमहिं त्वा मा मां हिश्सीरित्याहाहिश्सायै। तेजंसा वा एते व्यृध्यन्ते। ये प्रवर्ग्येण चर्रन्ति। प्राश्जन्ति। तेजं एवात्मन्दंधते॥८१॥ संवथ्सरं न मा १ समेश्जीयात्। न रामामुपेयात्। न मृन्मर्थेन पिबेत्। नास्ये राम उच्छिष्टं पिबेत्। तेज एव तथ्स इथिति। देवासुराः संयंत्ता आसन्। ते देवा विजयमुंपयन्तंः। विभ्राजिं सौर्ये ब्रह्मसन्त्रंदधत। यत्किं चं दिवाकीर्त्यम्। तदेतेनैव व्रतेनांगोपायत्। तस्मांदेतद्वतं चार्यम्। तेजंसो गोपीथायं। तस्मांदेतानि

यजू ५ षि विभ्राजः सौर्यस्येत्यांहुः। स्वाहाँ त्वा सूर्यस्य रश्मिभ्य इति प्रातः

स॰ सांदयति। स्वाहाँ त्वा नक्षंत्रेभ्य इति सायम्। एता वा एतस्यं देवताः।

लोकेभ्यः शुचमवं यजते। इयत्यर्गे जुहोति। अथेयत्यथेयंति। त्रयं इमे

घर्म या तें दिवि शुगितिं तिस्र आहुंतीर्जुहोति। छन्दोंभिरेवास्यैभ्यो

लोकाः। अर्नु नोऽद्यानुंमितिरित्याहानुंमत्यै। दिवस्त्वां पर्स्पाया इत्यांह। दिव एवमाँ लोकान्दांधार। ब्रह्मणस्त्वा पर्स्पाया इत्यांह॥८३॥
 पृष्वंव लोकेषुं प्रजा दांधार। प्राणस्यं त्वा पर्स्पाया इत्यांह। प्रजास्वेव प्राणान्दांधार। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रंवर्ग्यः। असौ खलु वा आंदित्यः प्रंवर्ग्यः। तं यद्दंक्षिणा प्रत्यश्चमुदंश्चमुद्वासयंत्। जिह्मं यज्ञस्य शिरो हरेत्। प्राश्चमुद्वांसयित। पुरस्तांदेव यज्ञस्य शिरः प्रतिदधाति॥८४॥
 प्राश्चमुद्वांसयित। तस्मांदसावांदित्यः पुरस्तादुदंति। श्रफोपयमान्धवित्रांणि धृष्टी

इत्यन्ववंहरन्ति। सात्मानमेवैन् सतंनुं करोति। सात्माऽमुष्मिँ श्लोके भविति। य एवं वेदं। औदुंम्बराणि भवन्ति। ऊर्ग्वा उंदुम्बरंः। ऊर्जमेवावंरुन्धे। वर्त्मना वा अन्वित्यं॥८५॥ यज्ञ रक्षा रेसि जिघा रसन्ति। साम्ना प्रस्तोता उन्ववैति। साम वै रंक्षोहा।

रक्षंसामपंहत्यै। त्रिर्निधन्मुपैति। त्रयं इमे लोकाः। एभ्य एव लोकेभ्यो रक्षाङ्स्यपंहन्ति। पुरुषः पुरुषो निधन्मुपैति। पुरुषः पुरुषो हि रक्षस्वी। रक्षंसामपंहत्यै॥८६॥

यत्पृंथिव्यामुंद्वासर्यंत्। पृथिवी शुचाऽपंयेत्। यद्पस्। अपः शुचार्पयेत्। यदोषंधीषु। ओषंधीः शुचाऽपंयेत्। यद्वनस्पतिषु। वनस्पतीं ञ्छुचापंयेत्। हिरंण्यं

अमृतं एवेनं प्रतिष्ठापयति। वृत्गुरंसि शं युधाया इति त्रिः परिषिश्चन्पर्येति। त्रिवृद्वा अग्निः। यावानेवाग्निः। तस्य श्च १ शमयति। त्रिः पुनः पर्येति। षट्थ्सम्पंद्यन्ते। षड्वा ऋतवंः। ऋतुभिरेवास्य श्च १ शमयति। चतुंः स्रक्तिर्नाभिर्ऋतस्येत्यांह॥८८॥ इयं वा ऋतम्। तस्यां एष एव नाभिः। यत् प्रवृग्यंः। तस्मादेवमांह। सदो

निधायोद्वांसयति। अमृतं वै हिरंण्यम्॥८७॥

विश्वायुरित्यांह। सदो हीयम्। अप द्वेषो अप ह्वर् इत्यांह् भ्रातृंव्यापनुत्त्यै। धर्मृतत्तेऽन्नंमृतत्पुरीष्मितिं द्व्रा मंधुमिश्रेणं पूरयति। ऊर्ग्वा अन्नाद्यं दिधे। ऊर्जीवैनंमृन्नाद्येन् समर्धयति॥८९॥

अनंशनायुको भवति। य एवं वेदं। रन्तिर्नामांसि दिव्यो गंन्ध्रवं इत्यांह। रूपमेवास्यैतन्मंहिमान् रन्तिं बन्धुतां व्याचेष्टे। समहमायुंषा सं प्राणेनेत्यांह। आशिषंमेवैतामाशांस्ते। व्यंसौ योंऽस्मान्द्वेष्टि यं चं व्यं द्विष्म इत्यांह। अभिचार एवास्यैषः। अचिंऋदद्वृषा हरिरित्यांह। वृषा ह्येषः॥९०॥

वृषा हरिः। महान्मित्रो न देर्शत इत्यांह। स्तौत्येवैनंमेतत्। चिदंसि समुद्रयोनिरित्यांह। स्वामेवैनं योनिं गमयति। नमंस्ते अस्तु मा मां हिश्सीरित्याहाहिश्सायै। विश्वावंसुश् सोम गन्ध्वंमित्यांह। यदेवास्यं क्रियमांणस्यान्तर्यन्ति। तदेवास्यैतेना प्यांययति। विश्वावंसुर्भि तन्नों गृणात्वि-त्यांह॥९१॥

पूर्वमेवोदितम्। उत्तरेणाभि गृंणाति। धियो हिन्वानो धिय इन्नो अव्यादित्यांह। ऋतूनेवास्मै कल्पयति। प्राऽऽसां गन्धवी अमृतांनि वोचदित्यांह। प्राणा वा अमृताः। प्राणानेवास्मै कल्पयति। एतत्त्वं देव धर्म देवो देवानुपांगा इत्यांह। देवो ह्येष सं देवानुपैतिं। इदमहं मंनुष्यो मनुष्यांनित्यांह॥९२॥ मनुष्यो हि। एष सन्मनुष्यांनुपैतिं। ईश्वरो व प्रवर्ग्यमुद्वासयन्। प्रजां

पुशून्थ्सोमपीथमंनूद्वासः सोमं पीथानुमेहि। सह प्रजयां सह रायस्पोषेणेत्यांह। प्रजामेव पुशून्थ्सोमपीथमात्मन्धंत्ते। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्त्वत्यांह। आशिषंमेवैतामाशाँस्ते। दुर्मित्रास्तस्मै भूयासुर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं चे वयं द्विष्म इत्याह। अभिचार एवास्यैषः। प्र वा एषो उस्माल्लोकाच्यवते। यः प्रवर्ग्यमुद्वासयति। उदुत्यं चित्रमितिं सौरीभ्यांमृग्भ्यां पुनरेत्य गार्हंपत्ये जुहोति। अयं वै लोको गार्हंपत्यः। अस्मिन्नेव लोके प्रतितिष्ठति। असौ खलु वा आदित्यः सुंवर्गो लोकः। यथ्सौरी भवंतः। तेनैव सुंवर्गाल्लोकान्नैतिं॥९३॥

ब्रह्मणस्त्वा पर्स्पाया इत्यांह दधात्यन्वित्यं रक्षस्वी रक्षंसामपंहत्यै वै हिरंण्यमाहार्धयित ह्यंष गृंणात्वित्यांह मनुष्यांनित्यांहास्यैषौंऽष्टौ

प्रजापंतिं वै देवाः शुक्रं पयोऽदुह्नन्। तदेंभ्यो न व्यंभवत्। तद्ग्निर्व्यंकरोत्। तानि शुक्तियाणि सामान्यभवन्। तेषां यो रसोऽत्यक्षंरत्। तानि शुक्रयजूङ्ष्यंभवन्। शुक्तियाणां वा एतानि शुक्तियाणि। सामप्यसं वा एतयोर्न्यत्। देवानांमन्यत्पयंः। यद्गोः पयंः॥९४॥

तथ्साम्नः पर्यः। यद्जाये पर्यः। तद्देवानां पर्यः। तस्माद्यत्रैतैर्यर्जुर्भिश्चरंन्ति। तत्पर्यसा चरन्ति। प्रजापंतिमेव तत्पर्यसाऽन्नाद्येन समर्धयन्ति। एष ह त्वै साक्षात्प्रंवर्ग्यं भक्षयति। यस्यैवं विदुषंः प्रवर्ग्यः प्रवृज्यतें। उत्तर्वेद्यामुद्वांस-येत्तेजंस्कामस्य। तेजो वा उत्तरवेदिः॥९५॥

तेजः प्रवर्ग्यः। तेजंसैव तेजः समर्धयित। उत्तर्वेद्यामुद्वांसयेदन्नंकामस्य। शिरो वा एतद्यज्ञस्यं। यत्प्रंवर्ग्यः। मुखंमुत्तरवेदिः। शीर्ष्णेव मुख्र सन्दंधात्यन्नाद्यांय।

अन्नाद एव भवति। यत्र खलु वा एतमुद्वांसितं वया रेसि पर्यासंते। परि वै तार समां प्रजा वया ईस्यासते॥ ९६॥

योनौ प्रतिष्ठापयति॥९७॥

तस्मादुत्तरवेद्यामेवोद्वांसयेत्। प्रजानां गोपीथायं। पुरो वां पश्चाद्वोद्वांसयेत्। पुरस्ताद्वा एतज्योतिरुदेति। तत्पश्चान्निम्रोंचित। स्वामेवैनं योनिमनूद्वांसयित। अपां मध्य उद्वांसयेत्। अपां वा एतन्मध्याज्योतिंरजायत। ज्योतिंः प्रवर्ग्यः। स्वयैवैनं

यं द्विष्यात्। यत्र स स्यात्। तस्यां दिश्युद्वांसयेत्। एष वा अग्निर्वेश्वानरः। यत्प्रवर्ग्यः। अग्निनैवैनं वैश्वानरेणाभि प्रवर्तयति। औदुम्बर्या शाखायामुद्वांसयेत्।

ऊर्ग्वा उंदुम्बरंः। अन्नं प्राणः। शुग्धर्मः॥९८॥

इदमहम्मुष्यांमुष्यायणस्यं शुचा प्राणमपिं दहामीत्यांह। शुचैवास्यं

प्राणमपि दहति। ताजगार्तिमार्च्छति। यत्रं दुर्भा उपदीकंसन्तताः स्युः। तदुद्वांसयेद्वृष्टिंकामस्य। पुता वा अपामंनूज्झावंर्यो नामं। यद्दर्भाः। असौ खलु वा आंदित्य इतो वृष्टिमुदींरयति। असावेवास्मां आदित्यो वृष्टिं नियंच्छति। ता आपो नियंता धन्वंना यन्ति॥९९॥

आपा नियता धन्वना यान्त॥९९॥ गोः पर्य उत्तरवेदिरांसते स्थापयित धर्मो यंन्ति॥———————————————[१०]

प्रजापंतिः सिम्भ्यमाणः। सम्राट्थ्सम्भृतः। घृमः प्रवृक्तः। मृहावीर उद्वांसितः। असौ खलु वावैष आदित्यः। यत्प्रवृग्यः। स एतानि नामान्यकुरुत। य एवं वेदं। विदुरेनं नाम्ना। ब्रह्मवादिनों वदन्ति॥१००॥

यो वै वसीया १ सं यथानाम पुंपचरित। पुण्यां तिं वै स तस्में कामयते। पुण्यां तिं मस्मे कामयन्ते। य पृवं वेदं। तस्मांदेवं विद्वान्। घर्म इति दिवाऽऽचंक्षीत। सम्माडिति नक्तम्। एते वा एतस्यं प्रिये तनुवौं। एते अस्य प्रिये नामंनी। प्रिययैवैनं तनुवां॥१०१॥

प्रियेण नाम्ना समर्थयति। कीर्तिरेस्य पूर्वागंच्छति जनतांमायतः। गायत्री देवेभ्योऽपांकामत्। तां देवाः प्रवग्येणैवानु व्यंभवन्। प्रवग्येणाप्रुवन्।

पूर्वांऽस्य जनं यतः कीर्तिर्गच्छति। वैश्वदेवः स॰संन्नः॥१०२॥

वसंवः प्रवृंक्तः। सोमोऽभिकीर्यमाणः। आश्विनः पर्यस्यानीयमाने। मारुतः क्रथन्। पौष्ण उदेन्तः। सार्स्वतो विष्यन्दंमानः। मैत्रः शरो गृहीतः। तेज उद्यंतः। वायुर्ह्वियमाणः। प्रजापंतिर्हूयमानो वाग्युतः॥१०३॥

असौ खलु वावैष आंदित्यः। यत्प्रंवर्ग्यः। स एतानि नामान्यकुरुत। य एवं वेदं। विदुरेनं नाम्नां। ब्रह्मवादिनो वदन्ति। यन्मृन्मयमाहुंतिं नाश्जुतेऽर्थ। कस्मदिषोऽश्जत इतिं। वागेष इतिं ब्रयात। वाच्यंव वार्चं दधाति॥१०४॥

कस्मादेषाँ ऽश्जुत इति। वागेष इति ब्रूयात्। वाच्येव वार्चं दधाति॥१०४॥
तस्मादश्जुते। प्रजापंतिर्वा एष द्वांदश्धा विहितः। यत्प्रंवर्ग्यः। यत्प्रागंवकाशेभ्यः।
तेनं प्रजा अंसृजत। अवकाशैर्देवासुरानंसृजत। यदूर्ध्वमंवकाशेभ्यः। तेनान्नंमसृजत। अन्नं प्रजापंतिः। प्रजापंतिर्वावैषः॥१०५॥

वृद्ग्ति तुन्न सरमंत्रो हूयमांनो वाय्युतो दंधात्येषः॥———[११] सृविता भूत्वा प्रथमेऽहुन्प्रवृज्यते। तेन कामार् एति। यद्वितीयेऽह्रंन्प्रवृज्यते॥

अग्निर्भूत्वा देवानेति। यत्तृतीयेऽहंन्प्रवृज्यते। वायुर्भूत्वा प्राणानेति। यचंतुर्थेऽहंन्प्रवृज्यते आदित्यो भूत्वा रश्मीनेति। यत्पंश्चमेऽहंन्प्रवृज्यते। चन्द्रमां भूत्वा नक्षंत्राण्येति॥१०६॥

यत्षष्ठेऽहंन्प्रवृज्यतें। ऋतुर्भूत्वा संवध्स्रमंति। यथ्संप्रमेऽहंन्प्रवृज्यतें। धाता भूत्वा शक्वंरीमेति। यदंष्टमेऽहंन्प्रवृज्यतें। बृहस्पतिर्भूत्वा गांयत्रीमेति।

यन्नंवमेऽहंन्प्रवृज्यतें। मित्रो भूत्वा त्रिवृतं इमाँ श्लोकानंति। यद्देशमेऽहंन्प्रवृज्यतें। वर्रुणो भूत्वा विराजंमेति॥१०७॥ यदेकाद्शेऽहंन्प्रवृज्यतें। इन्द्रों भूत्वा त्रिष्टुभंमेति। यद्दांद्शेऽहंन्प्रवृज्यतें। सोमो

भूत्वा सुत्यामेति। यत्पुरस्तांदुप्सदां प्रवृज्यते। तस्मांदितः परांङुमूँ श्लोका ॥ स्तपंत्रेति। यदुपरिष्टादुप्सदां प्रवृज्यते। तस्मांदुमुतोऽर्वाङ्मिँ श्लोका ॥ स्तपंत्रेति। यदुपरिष्टादुप्सदां प्रवृज्यते। तस्मांदुमुतोऽर्वाङ्मिँ श्लोका ॥ स्तपंत्रेति। य पृवं वेदं। ऐव तंपति॥ १०८॥

नक्षंत्राण्येति विराजंमेति तपति॥_____

-[१२]

ॐ शं नुस्तन्नो मा हासीत्॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥

॥षष्ठः प्रश्नः॥

ॐ सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥ परेयुवा १ सं प्रवतों महीरनुं बहुभ्यः पन्थांमनपस्पशानम्। वैवस्वत १ सङ्गमंनं

जनानां यम र राजांन र ह्विषां दुवस्यत। इदं त्वा वस्तं प्रथमन्वागृत्रपैतदूह् यदिहाबिभः पुरा। इष्टापूर्तमनु सम्पंश्य दक्षिणां यथां ते दत्तं बेहुधा विबन्धुषु। इमौ युनज्मि ते वही असुनीथाय वोढवें। याभ्यां यमस्य सादंन र सुकृतां चापि गच्छतात्। पूषा त्वेतश्च्यांवयतु प्रविद्वाननेष्टपशुर्भुवंनस्य गोपाः। स त्वैतेभ्यः परिददात्पितृभ्योऽग्निर्देवेभ्यः सुविदत्रेभ्यः। पूषमा आशा अनुवेद सर्वाः सो अस्मार

अभंयतमेन नेषत्। स्वस्तिदा अघृंणिः सर्ववीरोऽप्रंयुच्छन्पुर एंतु प्रविद्वान्॥१॥ आयुंर्विश्वायुः परिपासित त्वा पूषा त्वां पातु प्रपंथे पुरस्तांत्। यत्राऽऽसंते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्रं त्वा देवः संविता दंधातु। भुवंनस्य पत इद॰ ह्विः। अग्नये रियमते स्वाहां। पुरुषस्य सयाव्यंपेद्घानि मृज्महे। यथां नो अत्र

नापंरः पुरा जरस आयंति। पुरुषस्य सयावरि वि ते प्राणमंसि स्रसम्।

शरीरेण महीमिहिं स्वधयेहिं पितृनुपं प्रजयाऽस्मानिहावंह। मैवं मा्ड् स्ता प्रियेऽहं देवी स्ती पितृलोकं यदैषिं। विश्ववारा नर्भसा संव्ययन्त्युभौ नो लोकौ पर्यसाऽभ्यावंवृथ्स्व॥२॥
इयं नारी पतिलोकं वृणाना निपंद्यत उपं त्वा मर्त्य प्रेतम्। विश्वं पुराणमनुं पालयंन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि। उदीर्ष्वं नार्यभ जीवलोकमितासुंमेतमुपंशेष एहिं। हुस्तुग्राभस्यं दिधिषोस्त्वमेतत्पत्युंर्जनित्वम्भि

पुराणमन् पालयन्ता तस्य प्रजा द्रावण चह धाह। उदाष्व नायाभ जीवलोकमितासुंमेतमुपंशेष एहिं। हुस्तुग्राभस्यं दिधिषोस्त्वमेतत्पत्युंर्जनित्वमभि सम्बंभूव। सुवर्ण् हस्तांदाददांना मृतस्यं श्रिये ब्रह्मंणे तेजंसे बलांय। अत्रैव त्विमह वय सुशेवा विश्वाः स्पृधों अभिमांतीर्जयम। धनुर्हस्तांदाददांना मृतस्यं श्रिये क्षुत्रायौजंसे बलांय। अत्रैव त्विमह वय सुशेवा विश्वाः स्पृधों अभिमांतीर्जयम। मणि हस्तांदाददांना मृतस्यं श्रिये विशे पृष्ट्ये बलांय। अत्रैव त्विमह वय सुशेवा विश्वाः स्पृधों त्विमह वय सुशेवा विश्वाः स्पृधों अभिमांतीर्जयम॥३॥

इममंग्ने चमसं मा विजींह्वरः प्रियो देवानांमुत सोम्यानांम्। एष यश्चंमसो देवपानस्तस्मिन्देवा अमृतां मादयन्ताम्। अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्ण्ष्व मेदंसा पीवंसा च। नेत्त्वां धृष्णुर्हरंसा जर्हंषाणो दधंद्विधक्ष्यन्पर्यङ्खयांतै। मैनंमग्ने विदंहो माऽभिशोंचो माऽस्य त्वचंं चिक्षिपो मा शरीरम्। यदा शृतं क्रवों जातवेदोऽथेंमेनं प्रहिंणुतात्पितृभ्यः। शृतं यदा क्रसीं जातवेदोऽथेंमेनं परिंदत्तात्पितृभ्यंः। यदा गच्छात्यसुंनीतिमेतामथां देवानां वशनीर्भवाति। सूर्यं ते चक्षुंर्गच्छत् वार्तमात्मा द्यां च गच्छं पृथिवीं च धर्मणा। अपो वां गच्छ यदि तत्रं ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः। अजो भागस्तपंसा तं तंपस्व तं ते शोचिस्तंपतु तं तें अर्चिः। यास्तें शिवास्तनुवों जातवेदस्ताभिविहेम सुकृतां यत्रं लोकाः। अयं वै त्वमस्मादिध त्वमेतदयं वै तदस्य योनिरसि। वैश्वानरः पुत्रः पित्रे लोकुकुञ्जातवेदो वहेंम र सुकृतां यत्रं लोकाः॥४॥ विद्वानभ्यावंवृथ्स्वाभिमातीर्जयेम शरीरेश्चत्वारिं च॥

य एतस्यं पथो गोप्तारस्तेभ्यः स्वाहा य एतस्यं पथो रंक्षितारस्तेभ्यः स्वाहा य एतस्यं पथोंभिऽरंक्षितारस्तेभ्यः स्वाहाँऽऽख्यात्रे स्वाहांऽपाख्यात्रे स्वाहां ऽभिलालंपते स्वाहां ऽपलालंपते स्वाहा ऽग्नयं कर्मकृते स्वाहा यमत्र नाधीमस्तस्मै स्वाहाँ। यस्तं इध्मं जभरंध्सिष्विदानो मूर्धानं वात तपंते त्वाया। दिवो विश्वंस्माथ्सीमघायत उंरुष्यः। अस्मात्त्वमधि जातोऽसि त्वदयं जायतां पुनंः। अग्नयं वैश्वानरायं सुवर्गायं लोकाय स्वाहाँ॥५॥ य पुतस्य त्वत्पश्चं॥=

प्र केतुनां बृहता भांत्यग्निराविर्विश्वांनि वृषभो रोरवीति। दिवश्चिदन्तादुप मामुदानंडुपामुपस्थें महिषो वंबर्ध। इदं तु एकं पुर ऊत एकं तृतीयेंन ज्योतिंषा संविशस्व। संवेशनस्तनुवै चार्रुरेधि प्रियो देवानां परमे सधस्थै। नाके सुपर्णमुप यत्पतंन्त १ हृदा वेनंन्तो अभ्यचंक्षत त्वा। हिरंण्यपक्षं वरुणस्य दूतं यमस्य योनौ शकुनं भुर्ण्युम्। अतिद्रव सारमेयौ श्वानौ चतुरक्षौ शबलौ साधुनां पथा। अर्था पितृन्थ्सुंविदत्रा अपींहि यमेन ये संधमादं मदंन्ति। यौ ते श्वानौं यमरक्षितारौं चत्रक्षौ पंथिरक्षी नृचक्षंसा। ताभ्यारं राजन्परि देह्येन इस्वस्ति चौस्मा अनमीवं चं धेहि॥६॥

उरुणसावंसुतृपांवुलुम्बलौ यमस्यं दूतौ चंरतो वशा अनुं। तावस्मभ्यं दृशये सूर्याय पुनर्दत्ता वसुमद्येह भद्रम्। सोम एकैंभ्यः पवते घृतमेक उपांसते। येभ्यो मधुं प्रधावंति ता इश्चिंदेवापिं गच्छतात्। ये युध्यन्ते प्रधनेषु शूरांसो ये तंनुत्यजः। ये वा सहस्रेदक्षिणास्ता इश्चिदेवापि गच्छतात्। तपंसा ये अनाधृष्यास्तपंसा ये सुवंर्गताः। तपो ये चंकिरे महत्ता इश्चिंदेवापिं गच्छतात्। अश्मंन्वती रेवतीः सर रंभध्वमुत्तिष्ठत प्रतंरता सखायः। अत्रां जहाम ये असन्नशेवाः शिवान् वयमभि वाजानुत्तरेम॥७॥

यद्वै देवस्यं सवितुः पवित्र र सहस्रंधारं वितंतम्नतिरक्षे। येनापुनादिन्द्रमनौर्तमार्त्यै तेनाहं मार सर्वतेनुं पुनामि। या राष्ट्रात्पन्नादप यन्ति शाखां अभिमृता

नृपतिमिच्छमानाः। धातुस्ताः सर्वाः पर्वनेन पूताः प्रजयास्मात्र्य्या वर्चसा स्थ्मंजाथ। उद्वयं तमस्पिर् पश्यन्तो ज्योतिरुत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्। धाता पुनातु सिवता पुनातु। अग्नेस्तेजंसा सूर्यस्य वर्चसा॥८॥ धृद्धत्तरमाष्टौ चं॥———[३] यन्ते अग्निममंन्थाम वृष्भायेव पत्तंवे। इमन्तर शंमयामिस क्षीरेणं चोद्केनं च। यन्त्वमंग्ने स्मदंहस्त्वमु निर्वापया पुनः। क्याम्बूरत्रं जायतां पाकदूर्वा व्यंत्कशा।

शीतिके शीतिकावति हार्दके हार्दकावति। मण्डूक्यां सुसङ्गमयेम इस्विग्नि शमयं।

शं ते धन्वन्या आपः शम् ते सन्तवनूक्याः। शं ते समुद्रिया आपः शम् ते सन्तु वर्ष्याः। शं ते स्रवंन्तीस्त्नुवे शम् ते सन्तु कृष्याः। शन्ते नीहारो वंर्षतु शम् पृष्वाऽवंशीयताम्॥९॥
अवं सृज् पुनंरग्ने पितृभ्यो यस्त आहुंत्श्चरंति स्वधाभिः। आयुर्वसान् उपं यातु शेषु सङ्गंच्छतां तुनुवां जातवेदः। सङ्गंच्छस्व पितृभिः सङ् स्वधाभिः सिमेष्टापूर्तेन

अवंशीयता १ स्थस्थे पश्चं च॥

परमे व्योमन्। यत्र भूम्यैं वृणसे तत्रं गच्छ तत्रं त्वा देवः संविता दंधातु। यत्तं कृष्णः शंकुन आंतुतोदं पिपीलः सुर्प उत वा श्वापंदः। अग्निष्टद्विश्वांदनृणं कृणोतु सोमश्च यो ब्राह्मणमाविवेशं। उत्तिष्ठातंस्तुनुवर् सम्भेरस्व मेह गात्रमवंहा मा शरीरम्। यत्र भूम्यै वृणसे तत्रं गच्छ तत्रं त्वा देवः संविता दंधातु। इदं त एकं पुर ऊंतु एकं तृतीयेंनु ज्योतिषा संविंशस्व। संवेशनस्तनुवै चार्रुरेधि प्रियो देवानां परमे सधस्थें। उत्तिष्ठ प्रेहि प्रद्रवौकः कृणुष्व परमे व्योमन्। यमेन त्वं यम्यां संविदानोत्तमं नाकमिधं रोहेमम्। अश्मंन्वती रेवतीर्यद्वै देवस्यं सवितुः पवित्रं या राष्ट्रात्पन्नादुद्वयं तर्मसस्परि धाता पुनातु। अस्मात्त्वमधि जातौंऽस्ययं त्वदिधेजायताम्। अग्नये वैश्वानरायं सुवर्गायं लोकाय स्वाहाँ॥१०॥

आयांतु देवः सुमनांभिरूतिभिंर्यमो हंवेह प्रयंताभिरक्ता। आसींदता र सुप्रयतेंह ब्रहिष्यूर्जाय जात्यै ममं शत्रुहत्यैं। युमे इंव यतमाने यदैतं प्रवाम्भर्न्मानुंषा देवयन्तः। आसीदत् स्वम् लोकं विदाने स्वास्स्थे भेवत्मिन्देवे नः। यमाय् सोम स् सुनुत यमायं जुहुता ह्विः। यम हं यज्ञो गंच्छत्यग्निदूंतो अर्रङ्कृतः। यमायं घृतवंद्धविर्जुहोत् प्र चं तिष्ठत। स नो देवेष्वायंमद्दीर्घमायुः प्र जीवसें। यमाय मध्मतम् राज्ञे ह्व्यं जुहोतन। इदं नम् ऋषिभ्यः पूर्वजभ्यः पूर्वभ्यः पिथकृत्र्यः॥११॥

योऽस्य कौष्ठ्य जगंतः पार्थिवस्यैकं इद्वशी। यमं भंज्ञाश्रवो गांय यो राजांनपरोध्यः। यमङ्गायं भङ्गाश्रवो यो राजांनपरोध्यः। येनापो नद्यों धन्वांनि येन द्यौः पृथिवी दृढा। हिरण्यकक्ष्यान् सुधुरान्ं हिरण्याक्षान्यः शपान्। अश्वांननश्यंतो दानं यमो राजाभि तिष्ठति। यमो दांधार पृथिवीं यमो विश्वंमिदं जगंत्। यमाय सर्वमित्रस्थे यत् प्राणद्वायुरंक्षितम्। यथा पश्च यथा षड्यथा पश्चं दृशर्षयः। यमं यो विद्याथ्म ब्रूंयाद्यथैक ऋषिर्विजान्ते॥१२॥

त्रिकंद्रुकेभिः पतंति षडुर्वीरेक्मिद्धृहत्। गायत्री त्रिष्टुप्छन्दा रेसि सर्वा ता

पश्चिमिर्मानंवैर्यमः। वैवस्वते विविच्यन्ते यमे रार्जीन ते जनाः। ये चेह सत्येनेच्छंन्ते य उ चानृतवादिनः। ते राजिन्निह विविच्यन्तेऽथा यन्ति त्वामुपं। देवाङ्श्च ये नमस्यन्ति ब्राह्मणाङ्श्चापचित्यंति। यस्मिन्वृक्षे सुंपलाशे देवैः सम्पिबंते यमः। अत्रां नो विश्पतिः पिता पुराणा अनुवेनति॥१३॥

पश्चिक्त्यों विजानतेऽन् वेनति॥

- [५]

यम आहिता। अहरहर्नयंमानो गामश्वं पुरुषं जगंत्। वैवंस्वतो न तृंप्यति

वैश्वानरे ह्विरिदं जुंहोमि साह्स्रमुथ्स शतधारमेतम्। तस्मिन्नेष पितरं पितामहं प्रिपेतामहं बिभरित्यन्वमाने। द्रप्सश्चंस्कन्द पृथिवीमनु द्यामिमं च्योनिमनु यश्च पूर्वः। तृतीयं योनिमनुं स्थरंन्तं द्रप्सं जुंहोम्यनुं सप्त होत्राः। इम श्यमुद्र शतधारमुथ्संव्यच्यमानं भुवनस्य मध्ये। घृतं दुहानामिदितिं जनायाग्ने मा हिश्सीः परमे व्योमन्। अपेत् वीत् वि चं सर्पतातो येऽत्र स्थ पुंराणा ये च्नूतंनाः। अहोभिरद्भिरक्तुभिर्व्यंक्तं यमो दंदात्ववसानमस्मै। स्वितैतानि शरीराणि

सन्तै॥१६॥

पृथिव्यै मातुरुपस्थ आदंधे। तेभिर्युज्यन्तामघ्रियाः॥१४॥

चंक्रथः पयंः। तेनेमामुपं सिश्चतम्। सीते वन्दांमहे त्वाऽर्वाची सुभगे भव। यथां नः सुभगा संसि यथां नः सुफला संसि। सृवितेतानि शरीराणि पृथिव्ये मातुरुपस्थ आदंधे। तेभिरदिते शं भव। विमुच्यध्वमिष्ट्रिया देवयाना अतारिष्म तमंसस्पारमस्य। ज्योतिरापाम सुवंरगन्म॥१५॥

प्र वाता वान्ति पृतयंन्ति विद्युत् उदोषंधीर्जिहते पिन्वंते सुवंः। इरा विश्वंसम् भुवंनाय जायते यत्पर्जन्यः पृथिवी रत्तार्ज्वति। यथां यमायं हार्म्यमवंपन्पश्चं मानवाः। एवं वंपामि हार्म्यं यथासांम जीवलोके भूरयः। चितः स्थ परिचितं

शुनं वाहाः शुनं नाराः शुनं कृषतु लाङ्गेलम्। शुनं वेरुत्रा बेध्यन्ता ।

शुनमष्ट्रामुदिंङ्गय शुनांसीरा शुनमस्मासुं धत्तम्। शुनांसीराविमां वाचं यद्दिवि

अ्ष्रिया अंगन्म सप्त चं॥______[६]

ऊर्ध्वचितः श्रयध्वं पितरो देवता। प्रजापितिर्वः सादयतु तया देवतया। आप्यायस्व

उत्तें तभ्नोमि पृथिवीं त्वत्परीमं लोकं निदधन्मो अह॰ रिषम्। एताङ् स्थूणां पितरो धारयन्तु तेऽत्रां युमः सादेनात्ते मिनोतु। उपंसर्प मातर् भूमिंमेतामुंरुव्यचंसं पृथिवी स् सुशेवांम्। ऊर्णम्रदा युव्तिर्दक्षिंणावत्येषा त्वां पातु निर्ऋंत्या उपस्थैं। उष्ट्रंश्चस्व पृथिवि मा विबाधियाः सूपायनास्मैं भव सूपवश्चना। माता पुत्रं यथांसिचाभ्येंनं भूमि वृणु। उङ्गर्श्वमाना पृथिवी हि तिष्ठंसि सहस्रं मित् उप हि श्रयंन्ताम्। ते गृहासों मधुश्रुतो विश्वाहाँस्मै शर्णाः सन्त्वत्रं। एणींर्धाना हरिणीरर्जुनीः सन्तु धेनवंः। तिलंबथ्सा ऊर्जमस्मै दुहांना विश्वाहां स्नन्त्वनपंस्फुरन्तीः॥१७॥

पुषा ते यमुसादंने स्वधा निधीयते गृहे। अक्षितिर्नामं ते असौ। इदं पितृभ्यः प्रभेरेम ब्रहिर्देवेभ्यो जीवंन्त उत्तरं भरेम। तत्त्वंमारोहासो मेघ्यो भवं यमेन त्वं यम्यां संविदानः। मा त्वां वृक्षौ सम्बाधिष्टां मा माता पृंथिवि त्वम्। पितृन् हि यत्र गच्छास्येधांसं यम्राज्ये। मा त्वां वृक्षौ सम्बाधिथां मा माता पृंथिवी

मही। वैवस्वत १ हि गच्छांसि यम्राज्ये विराजिसि। नळं प्रवमारोंहैतं नळेनं पृथोऽन्विहि। स त्वं नळप्रंवो भूत्वा सन्तंरु प्रत्रोत्तंर॥१८॥

सवितैतानि शरींराणि पृथिव्यै मातुरुपस्थ आदंधे। तेभ्यंः पृथिवि शं भंव। षड्ढोता सूर्यं ते चक्षुंर्गच्छत् वार्तमात्मा द्यां च गच्छं पृथिवीं च धर्मणा। अपो वां गच्छ यदि तत्रं ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरींरैः। परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थां यस्ते स्व इतंरो देवयानात्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नेः प्रजार रीरिषो मोत वीरान्। शं वातः श १ हि ते घृणिः शम् ते सन्त्वोषधीः। कल्पन्तां मे दिशः शग्माः। पृथिव्यास्त्वां लोके सांदयाम्यमुष्य शर्मासि पितरों देवतां। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु तयां देवतंया। अन्तरिक्षस्य त्वा दिवस्त्वां दिशां त्वा नाकंस्य त्वा पृष्ठे ब्रुध्नस्यं त्वा विष्टपं सादयाम्युमुष्य शर्मासि पितरां देवतां। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु तयां देवतंया॥१९॥

-अपूपवाँन्घृतवा ईश्चरुरेह सींदतूत्तभ्रुवन् पृंथिवीं द्यामुतोपरिं। योनिकृतः पथिकृतंः सपर्यत ये देवानां घृतभागा इह स्थ। एषा ते यमसादेने स्वधा निधीयते गृहेंऽसौ। दशाँक्षरा ता रंक्षस्व तां गोंपायस्व तां ते परिंददामि तस्यां त्वा मा दंभन्पितरों देवतां। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु तयां देवतंया। अपूपवाँञ्छृतवाँन् क्षीरवान्दिधवान्मधुंमा इश्वरुरेह सींदतूत्तभुवन् पृथिवीं द्यामुतोपरिं। योनिकृतः पथिकृतः सपर्यत ये देवाना श्रे शृतभांगाः क्षीरभांगा दिधिभागा मधुंभागा इह स्थ। एषा तें यमुसादंने स्वधा निधीयते गृहेंऽसौ। शताक्षरा सहस्रौक्षरायुतौक्षराऽच्युंताक्षरा ता॰ रक्षस्व तां गोंपायस्व तां ते परिंददामि तस्यां त्वा मा दंभन्यितरों देवतां। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु तयां देवतंया॥२०॥

अनंपस्फ्ररनी्रुक्तंर देवतंया हे चे॥————[७] पुतास्ते स्वधा अमृताः करोमि यास्ते धानाः परिकिराम्यत्रं। तास्ते यमः पितृभिः

संविदानोऽत्रं धेनूः कामदुघाः करोतु। त्वामर्जुनौषंधीनां पयो ब्रह्माण इद्विदुः। तासां

त्वा मध्यादादंदे चुरुभ्यो अपिधातवे। दूर्वाणाई स्तम्बमाहंरैतां प्रियतमां ममं। इमां दिशं मनुष्याणां भूयिष्ठानु वि रोहतु। काशानाः स्तम्बमाहंर रक्षंसामपंहत्यै। य एतस्यै दिशः प्राभंवन्नघायवो यथा तेनाभंवान्पुनः। दर्भाणाई स्तम्बमाहर पितृणामोषंधीं प्रियाम्। अन्वस्यै मूलं जीवादनु काण्डमथो फलम्॥२१॥ लोकं पृण ता अस्य सूदंदोहसः। शं वातः शं हि ते घृणिः शमुं ते सन्त्वोषंधीः। कल्पन्तां ते दिशः सर्वाः। इदमेव मेतोऽपंरामार्तिमाराम काश्चन। तथा तदिश्वभ्यां कृतं मित्रेण वर्रुणेन च। वर्णो वार्यादिदं देवो वनस्पतिः। आर्त्ये निर्ऋत्ये द्वेषांच वनस्पतिः। विधृतिरसि विधारयास्मद्घा द्वेषा ईसा श्राम श्रामयास्मद्घा द्वेषा ईसा यव यवयास्मदघा द्वेषा ५सि। पृथिवीं गंच्छान्तरिक्षं गच्छ दिवं गच्छ दिशों गच्छ स्वंगच्छ स्वंगच्छ दिशों गच्छ दिवं गच्छान्तरिक्षं गच्छ पृथिवीं गंच्छाऽऽपो वां गच्छु यदि तत्रं ते हितमोषंधीषु प्रतितिष्ठा शरीरैः। अश्मंन्वती रेवतीर्यद्वे देवस्यं सवितुः पवित्रं या राष्ट्रात्पन्नादुद्वयं तमंसस्परिं धाता पुंनातु॥२२॥

कर्ल पुनातु॥———[८] आ रोह्ताऽऽयुंर्जुरसं गृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ट। इह त्वष्टां सुजिनमा

सुरत्नों दीर्घमायुंः करतु जीवसे वः। यथाऽहाँन्यनुपूर्वं भवन्ति यथर्तवं ऋतुभियन्तिं कृप्ताः। यथा न पूर्वमपंरो जहाँत्येवा धांतरायू १षि कल्पयेषाम्। न हिं ते अग्ने तुन्वैं ऋरं चकार् मर्त्यः। कृपिर्वभित्ति तेर्जनं पुनर्जरायु गौरिव। अपं नः शोशंचद्घमग्नें शुशुध्या र्यिम्। अपं नः शोशंचद्घं मृत्यवे स्वाहाँ। अनुङ्गाहंमन्वारंभामहे स्वस्तयें। स न इन्द्रं इव देवेभ्यो विह्नंः सम्पारंणो भव॥२३॥

ड्मे जीवा विं मृतैरावंवर्तिन्नभूँद्भद्रा देवहूंतिं नो अद्या प्राञ्जोगामानृतये हसाय द्राघीय आयुंः प्रत्रां दर्धानाः। मृत्योः पदं योपयन्तो यदैम् द्राघीय आयुंः प्रत्रां दर्धानाः। आप्यायमानाः प्रजया धर्नेन शुद्धाः पूता भवथ यज्ञियासः।

ड्मं जीवेभ्यः परिधिं दंधामि मा नोऽनुंगादपंरो अर्धमेतम्। शतं जीवन्तु श्ररदः पुरूचीस्तिरो मृत्युं दंद्महे पर्वतेन। ड्मा नारीरविधवाः सुपत्नीराञ्जनेन सूर्पिषा त्वमुंद्भिनथ्स्योषधे पृथिव्या अधि। पृविमम उद्भिन्दन्तु कीत्या यशंसा ब्रह्मवर्चसेन। अजौऽस्यजास्मद्घा द्वेषा १सि य्वोऽसि य्वयास्मद्घा द्वेषा १सि॥२४॥

भव जम्भ्यम् कि कि च

[९]
अपं नः शोश्चं चद्घमग्ने शृशुध्या र्यिम्। अपं नः शोश्चं चद्घम्। सुक्षेत्रिया स्रात्या वंसूया चं यजामहे। अपं नः शोश्चं चद्घम्। प्रयद्भन्दिष्ठ एषां प्रास्माकां सश्च

सम्मृंशन्ताम्। अनुश्रवी अनमीवाः सुशेवा आरोहन्तु जनयो योनिमग्रै। यदाञ्जनं

त्रैककुदं जातः हिमवंतस्परि। तेनामृतंस्य मूलेनारातीर्जम्भयामसि। यथा

शोशुंचद्घम्। प्रयतें अग्ने सूरयो जायेमिह् प्र तें व्यम्। अपं नः शोशुंचद्घम्॥२५॥ त्वः हि विश्वतोमुख विश्वतः परिभूरसिं। अपं नः शोशुंचद्घम्। द्विषों नो विश्वतोमुखाऽतिं नावेवं पारय। अपं नः शोशुंचद्घम्। स नः

सूरयः। अपं नः शोश्चद्घम्। प्रयद्ग्नेः सहंस्वतो विश्वतो यन्ति सूरयः। अपं नः

सिन्धुंमिव नावयाति पर्षा स्वस्तयै। अपं नः शोशुंचद्घम्। आपंः प्रवृणादिंव यतीरपास्मथ्स्यंन्दताम्घम्। अपं नः शोशुंचद्घम्। उद्वनादुंदकानीवापास्मथ्स्यंन्दताम् अपं नः शोशंचद्घम्। आन्न्दायं प्रमोदाय पुनरागाः स्वान्गृहान्। अपं नः शोशंचद्घम्। न वै तत्र प्रमीयते गौरश्वः पुरुषः पृशुः। यत्रेदं ब्रह्मं क्रियते परिधिर्जीवनायकमपं नः शोशंचद्घम्॥२६॥

अपंश्याम युवतिमाचरंन्तीं मृतायं जीवां पंरिणीयमानाम्। अन्धेन या तमंसा प्रावृंताऽसि प्राचीमवाचीमवयन्नरिष्ठौ। मयैतां माङ्स्तां भ्रियमाणा देवी स्ती पितलोकं यदैषि। विश्ववारा नभंसा संव्ययन्त्यभौ नो लोकौ प्रयसाऽऽवंणीहि।

प्रावृताऽास् प्राचामवाचामव्यन्नारक्षा मयता माङ्स्ता स्थिमाणा द्वा स्ता पितृलोकं यदैषि। विश्ववारा नर्भसा संव्ययन्त्युभौ नो लोकौ पयसाऽऽवृंणीहि। रियेष्ठामृिग्नं मधुंमन्तमूर्मिणमूर्जः सन्तं त्वा पयसोप स॰संदेम। स॰ रय्या समु वर्चसा सचंस्वा नः स्वस्तये। ये जीवा ये चं मृता ये जाता ये च जन्त्याः। तेभ्यो घृतस्यं धारियतुं मधुंधारा व्युन्दती। माता रुद्राणां दुहिता वसूनाङ् स्वसादित्यानांममृतंस्य नाभिः। प्रणुवोचं चिकितुषे जनांय मागामनांगामदितिं विधिष्ट। पिबंतूदकं तृणांन्यत्त्। ओमुथ्युजत॥२७॥

वधिष्ट द्वे चं॥

सन्त्वां सिश्चामि यजुषां प्रजामायुर्धनं च॥ ॐ शान्तिः शान्तिः॥ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा र संमेत पश्यंत। सौभाँग्यमस्यै दत्त्वायाथास्तं वि परेतन। इमां त्वमिन्द्र मीद्वः सुपुत्रा सुभगां कुरु। दशांस्यां पुत्राना धेहि पतिंमेकादुशं

कृषि॥ आवहंन्ती वितन्वाना। कुर्वाणा चीरंमात्मनंः। वासारंसि मम् गावंश्च। अन्नपाने चं सर्वदा। ततों मे श्रियमावंह।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ सप्तमः प्रश्नः — शीक्षावल्ली॥

शं नों मित्रः शं वर्रणः। शं नों भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृह्स्पतिः। शं नो विष्णुंरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मं विद्यामि। ऋतं विद्यामि। सृत्यं विद्यामि। तन्मामंवतु। तह्क्तारंमवतु। अवंतु माम्। अवंतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः॥१॥

म्त्यं वंदिष्यामि पश्चं च॥——[१] शीक्षां व्याख्यास्यामः। वर्णः स्वरः। मात्रा बलम्। सामं सन्तानः। इत्युक्तः

शींक्षाध्यायः॥२॥

शीक्षां पश्ची॥____

सह नौ यशः। सह नौ ब्रंह्मवर्चसम्। अथातः स॰हिताया उपनिषदं व्यांख्यास्यामः। पश्चस्वधिकंरणेषु। अधिलोकमधिज्यौतिषमधिविद्यमधि-प्रजंमध्यात्मम्। ता महास॰हिता इंत्याचक्षते। अथांधिलोकम्। पृथिवी पूर्वरूपम्। द्यौरुत्तंररूपम्। आकांशः सुन्धिः॥३॥

वार्युः सन्धानम्। इत्यंधिलोकम्। अथांधिज्यौतिषम्। अग्निः पूर्वक्पम्। आदित्य उत्तरक्पम्। आपः सन्धिः। वैद्युतः सन्धानम्। इत्यंधिज्यौतिषम्। अथांधिविद्यम्। आचार्यः पूर्वरूपम्॥४॥

अन्तेवास्युत्तंररूपम्। विंद्या सुन्धिः। प्रवचन र् सन्धानम्। इत्यंधिविद्यम्।

अथाधिप्रजम्। माता पूँर्वरूपम्। पितोत्तंररूपम्। प्रंजां सन्धिः। प्रजननर्भे सन्धानम्। इत्यधिप्रजम्॥५॥
अथाध्यात्मम्। अधराहनुः पूँर्वरूपम्। उत्तराहनुरुत्तंररूपम्। वाख्सन्धिः। जिह्नां सन्धानम्। इत्यध्यात्मम्। इतीमा महासर्भहेताः। य एवमेता महासर्भहेताः

अथाध्यात्मम्। अधराहनुः पूँर्वरूपम्। उत्तराहनुरुत्तररूपम्। वाख्सन्धिः। जिह्नां सन्धानम्। इत्यध्यात्मम्। इतीमा महास्हिताः। य एवमेता महास्हिता व्याख्यांता वेद। सन्धीयते प्रजंया पृशुभिः। ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन सुवर्ग्यणं लोकेन॥६॥

सुन्धिराचार्यः पूर्विरूपमित्यधिप्रजं लोंकेन॥______

मधुमत्तमा। कर्णांभ्यां भूरि विश्वंबम्। ब्रह्मंणः कोशोंऽसि मेधयाऽपिंहितः। श्रुतं में गोपाय। आवहंन्ती वितन्वाना॥७॥
कुर्वाणा चीरंमात्मनः। वासार्श्से मम् गावंश्च। अन्नपाने चं सर्वदा। ततों मे श्रियमावंह। लोम्शां प्रशुभिः सह स्वाहाँ। आ मां यन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। वि मांऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। प्र मांऽऽयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। दमांयन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ। शमायन्तु ब्रह्मचारिणः स्वाहाँ॥८॥

यश्छन्दंसामृषभो विश्वरूपः। छन्दोभ्योऽध्यमृताँथ्सम्बभूवं। स मेन्द्रों मेधयाँ

स्पृणोतु। अमृतंस्य देव धारंणो भूयासम्। शरींरं मे विचंर्षणम्। जिह्वा मे

यशो जर्नेऽसानि स्वाहाँ। श्रेयान् वस्यंसोऽसानि स्वाहाँ। तं त्वां भग प्रविंशानि स्वाहाँ। स मां भग प्रविंश स्वाहाँ। तिस्मिन्थ्सहस्रंशाखे। निर्भगाहं त्वियं मृजे स्वाहाँ। यथाऽऽपः प्रवंता यन्ति। यथा मासां अहर्ज्रम्। एवं मां ब्रह्मचारिणः। धात्रायंन्तु सर्वतः स्वाहाँ। प्रतिवेशोऽसि प्र मां भाहि प्र मां पद्यस्व॥९॥

भूर्भुवः सुवरिति वा पृतास्तिस्रो व्याह्रंतयः। तासांमुहस्मै तां चंतुर्थीम्। माहांचमस्यः प्रवेदयते। मह् इतिं। तद्वह्मं। स आत्मा। अङ्गांन्यन्या देवताः। भूरिति वा अयं लोकः। भुव इत्यन्तरिक्षम्। सुवरित्यसौ लोकः॥१०॥ मह इत्यांदित्यः। आदित्येन वाव सर्वे लोका महीयन्ते। भूरिति वा

सर्वाणि ज्योती १ षि महीयन्ते। भूरिति वा ऋचंः। भुव इति सामानि। सुव्रिति यजू १ षि॥११॥

मह् इति ब्रह्मं। ब्रह्मंणा वाव सर्वे वेदा महीयन्ते। भूरिति वै प्राणः। भुव इत्यंपानः। सुव्रिति व्यानः। मह इत्यन्नम्। अन्नेन वाव सर्वे प्राणा महीयन्ते। ता

वा एताश्चंतस्रश्चतुर्धा। चतंस्रश्चतस्रो व्याहृंतयः। ता यो वेदं। स वेंद ब्रह्मं। सर्वेंऽस्मै

अग्निः। भुव इति वायुः। सुवरित्यांदित्यः। मह इति चन्द्रमाः। चन्द्रमसा वाव

देवा बुलिमावंहन्ति॥१२॥

असौ लोको यजूर्षि वेद द्वे चं॥______

अन्तरेण तालुंके। य एष स्तनं इवावलम्बंते। सैंन्द्रयोनिः। यत्रासौ केशान्तो विवर्तते। व्यपोह्यं शीर्षकपाले। भूरित्युग्नौ प्रतितिष्ठति। भुव इतिं वायौ॥१३॥ सुविरित्यांदित्ये। मह् इति ब्रह्मणि। आप्नोति स्वारांज्यम्। आप्नोति मनंस्स्पतिम्। वाक्पंतिश्वक्षुंष्पतिः। श्रोत्रंपतिर्विज्ञानंपतिः। एतत्ततो भवति। आकाशशंरीरं ब्रह्मं। सत्यात्मप्राणारांमं मनं आनन्दम्। शान्तिसमृद्धम्मृतम्। इतिं प्राचीनयोग्योपांस्व॥१४॥

स य एषो उन्तर्हृदय आकाशः। तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः। अमृतो हिरण्मयः।

ण्याव्मृत्मेकं च॥———[६]
पृथिव्यंन्तरिक्षं द्यौर्दिशोऽवान्तरिद्शाः। अग्निर्वायुरादित्यश्चन्द्रमा नक्षंत्राणि।
आप् ओषंधयो वनस्पतंय आकाश आत्मा। इत्यंधिभूतम्। अथाध्यात्मम्। प्राणो

व्यानोऽपान उदानः संमानः। चक्षुः श्रोत्रं मनो वाक्तक्। चर्म मार्सः स्नावास्थिं मुजा। एतदंधि विधायर्षिरवोचत्। पाङ्कः वा इदः सर्वम्। पाङ्केनैव पाङ्कः ई स्पृणोतीतिं॥१५॥

अत्यामा है। अतिथयध्यायप्रवंचने च। सत्यं च स्वाध्यायप्रवंचने च। तपश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। दमश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। शमश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। अग्नयश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। अग्निहोत्रं च स्वाध्यायप्रवंचने च। अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। मानुषं च स्वाध्यायप्रवंचने च। प्रजा च स्वाध्यायप्रवंचने च। प्रजनश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवंचने च। सत्यमिति

सत्यवर्चा राथीतरः। तप इति तपोनित्यः पौरुशिष्टिः। स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपंस्तद्धि तपः॥१७॥

प्रजा च स्वाध्यायप्रवंचने च षद्वं॥————[९]

अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव। ऊर्ध्वपंवित्रो वाजिनीव स्वमृतंमस्मि। द्रविण् सर्वर्चसम्। सुमेधा अमृतोक्षितः। इति त्रिशङ्कोर्वेदानुव्चनम्॥१८॥

वेदमनूच्याऽऽचार्योऽन्तेवासिनमंनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायाँन्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेथ्सीः। सत्यान्न प्रमंदित्व्यम्। धर्मान्न प्रमंदित्व्यम्। कुशलान्न प्रमंदित्व्यम्। भूत्ये न प्रमंदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमंदितव्यम्॥१९॥

देविपतृकार्याभ्यां न प्रमंदितव्यम्। मातृंदेवो भव। पितृंदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिंदेवो भव। यान्यनवद्यानिं कर्माणि। तानि सेविंतव्यानि। नो इंतराणि। यान्यस्माक १ सुचेरितानि। तानि त्वयोपास्यानि॥२०॥

नो इंतराणि। ये के चास्मच्छ्रेया रेसो ब्राह्मणाः। तेषां त्वयाऽऽसनेन प्रश्वंसितव्यम्। श्रद्धंया देयम्। अश्रद्धंयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकिथ्सा वा वृत्तविचिकिथ्सा वा स्यात्॥२१॥

ये तत्र ब्राह्मणौः सम्मर्शिनः। युक्तां आयुक्ताः। अलूक्षां धर्मकामाः स्युः। यथा तें तत्रं वर्तेरन्। तथा तत्रं वर्तेथाः। अथाभ्यांख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मुर्शिनः। युक्तां आयुक्ताः। अलूक्षां धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषुं वर्तेरन्। तथा तेषुं वर्तेथाः। एषं आदेशः। एष उंपदेशः। एषा वंदोपनिषत्। एतदंनुशासनम्। एवमुपांसितव्यम्। एवम् चैतंदुपास्यम्॥२२॥ स्वाध्यायप्रवचनाभ्यात्र प्रमंदितव्यं तानि त्वयोपास्यानि स्यात्तेषुं वर्तेरन्थसप्त चं॥

शं नो मित्रः शं वर्रुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो बृहस्पतिः। शं नो

-[१२]

विष्णुंरुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो। त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मांसि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्। ऋतमंवादिषम्। सत्यमंवादिषम्। तन्मामावीत्। तद्वक्तारंमावीत्। आवीन्माम्। आवीद्वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः॥२३॥

स्त्यमंबादिषुं पश्चं च॥______

॥ अष्टमः प्रश्नः — ब्रह्मानन्दवल्ली॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वी॒र्यं करवावहै। ते॒ज्ञस्वि ना॒वधींतमस्तु मा विंद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ब्रह्मविदाँप्रोति परम्। तदेषाभ्यंक्ता। सत्यं ज्ञानमन्नतं ब्रह्मं। यो वेद् निहितं गुहायां पर्मे व्योमन्। सौंऽश्जृते सर्वान्कामान्थ्यह। ब्रह्मंणा विपश्चितेति। तस्माद्वा एतस्मादात्मनं आकाशः सम्भूतः। आकाशाद्वायः। वायोर्ग्निः। अग्नेरापः। अन्त्र्यः पृथिवी। पृथिव्या ओषंधयः। ओषंधीभ्योऽन्नम्। अन्नात्पुरुषः। स वा एष पुरुषोऽन्नरस्मयः। तस्येदंमेव शिरः। अयं दक्षिणः पृक्षः। अयमुत्तंरः पृक्षः।

अयमात्मां। इदं पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति॥१॥

अन्नाद्वै प्रजाः प्रजायंन्ते। याः काश्चं पृथिवी इश्रिताः। अथो अन्नेनैव जीवन्ति। अथैनदिपं यन्त्यन्तुतः। अन्नु हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्माध्सर्वीष्धमुंच्यते। सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति। येऽन्नं ब्रह्मोपासंते। अनु हि भूतानां ज्येष्ठम्। तस्मांध्सर्वोष्धमुंच्यते। अन्नांद्भूतानि जायंन्ते। जातान्यन्नेन वर्धन्ते। अद्यतेऽत्ति चं भूतानि। तस्मादन्नं तदुच्यंत इति। तस्माद्वा एतस्मादन्नंरसमयात्। अन्योऽन्तर आत्मौ प्राणुमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः। तस्य प्राणं एव शिरः। व्यानो दक्षिणः पक्षः। अपान उत्तरः पृक्षः। आकांश आत्मा। पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोंको भवति॥२॥ प्राणं देवा अनु प्राणंन्ति। मुनुष्याः पृशवंश्च ये। प्राणो हि भूतानामार्यः। तस्माध्सर्वायुषमुंच्यते। सर्वमेव त आयुंर्यन्ति। ये प्राणं ब्रह्मोपासंते। प्राणो हि

भूतानामायुः। तस्माथ्सर्वायुषमुच्यंत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। येः पूर्वस्य।

तस्माद्वा एतस्मौत् प्राण्मयात्। अन्योऽन्तर आत्मां मनो्मयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः। तस्य यजुरेवृ शिरः। ऋग्दक्षिणः पृक्षः। सामोत्तरः पृक्षः। आदेश आत्मा। अथविङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भवति॥३॥

यतो वाचो निवंतन्ते। अप्रांप्य मनंसा सह। आनन्दं ब्रह्मंणो विद्वान्। न बिभेति कदांचनेति। तस्येष एव शारीर आत्मा। यः पूर्वस्य। तस्माद्वा एतस्मांन्मनोमयात्। अन्योऽन्तर आत्मा विज्ञान्मयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव। तस्य पुरुषविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः। तस्य श्रंद्धेव शिरः। ऋतं दक्षिणः पृक्षः। सत्यमुत्तंरः पृक्षः। योग आत्मा। महः पुच्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोंको भ्वति॥४॥

विज्ञानं युज्ञं तेनुते। कर्माणि तनुतेऽपि च। विज्ञानं देवाः सर्वे। ब्रह्म ज्येष्टमुपांसते। विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेदं। तस्माचेन्न प्रमाद्यंति। शरीरे पाप्मंनो हित्वा। सर्वान्कामान्थ्समश्जुत इति। तस्यैष एव शारीर आत्मा। यः पूर्वस्य। तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात्। अन्योऽन्तर आत्मांऽऽनन्दमयः। तेनैष पूर्णः। स वा एष

पुरुषिविध एव। तस्य पुरुषिविधताम्। अन्वयं पुरुषिविधः। तस्य प्रियंमेव शिरः। मोदो दक्षिणः पृक्षः। प्रमोद उत्तरः पृक्षः। आनंन्द आत्मा। ब्रह्म पुर्च्छं प्रतिष्ठा। तदप्येष श्लोको भ्वति॥५॥ असंन्नेव सं भवति। अस्द्ब्रह्मोति वेद चेत्। अस्ति ब्रह्मोति चेद्वेद। सन्तमेनं ततो विद्विति। तस्येष एव शारीर आत्मा। यः पूर्वस्य। अथातोऽनुप्रश्ञाः। उता विद्वानमुं लोकं प्रेत्यं। कश्चन गंच्छुती(३)॥ आहो विद्वानमुँ लोकं प्रेत्यं। कश्चन गंच्छुती(३)॥ आहो विद्वानमुँ लोकं प्रेत्यं। स्वर्थस्य। स्वर्यस्य। स्वर्थस्य। स्वर्यस्याः स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्थस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स्वर्थस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स्वर्थस्य। स्वर्यस्य। स्वर्यस्यस्यः। स्वर्यस्य। स्वर्यस्य। स

विद्वाराता तस्यष एव शारार आत्मा। यः पूवस्य। अथाताऽनुप्रश्नाः। उता विद्वान्मुं लोकं प्रेत्यं। कश्चन गंच्छ्ती(३)॥ आहों विद्वान्मुँ लोकं प्रेत्यं। कश्चिथ्समंश्जुता(३) उ। सोऽकामयत। बहु स्यां प्रजाययेति। स तपोऽतप्यत। स तपंस्तृत्वा। इद श्सर्वमसृजत। यदिदं किं चं। तथ्मृष्ट्वा। तदेवानु प्राविंशत्। तदंनुप्रविश्यं। सच्च त्यचांभवत्। निरुक्तं चानिरुक्तं च। निल्यंनं चानिलयनं च। विज्ञानं चाविंज्ञानं च। सत्यं चानृतं च संत्यम्भवत्। यदिदं किं च। तथ्सत्यमित्याचक्षते। तदप्येष श्लोको भ्वति॥६॥

असुद्वा इदमग्रं आसीत्। ततो वै सदंजायत। तदात्मानः स्वयंमक्रुरुत।

लब्ध्वाऽऽनंन्दी भवति। को ह्येवान्याँत्कः प्राण्यात्। यदेष आकाश आनंन्दो न स्यात्। एष ह्येवानंन्दयाति। यदा ह्यंवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं

ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणांमानन्दाः। स एको देवगन्धर्वाणांमानन्दः। श्रोत्रियस्य

प्रतिष्ठां विन्दते। अथं सोऽभयं गतो भवति। यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुते। अथ तस्य भंयं भवति। तत्त्वेव भयं विदुषोऽमंन्वानस्य। तदप्येष श्लोको

भवति॥७॥

भीषाऽस्माद्वातः पवते। भीषोदंति सूर्यः। भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च। मृत्युर्धावति पश्चम इति। सैषाऽऽनन्दस्य मीमा ५सा भवति। युवा स्याथ्साधु युंवाऽध्यायकः।

आशिष्ठो दिढेष्ठो बलिष्ठः। तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्यं पूर्णा स्यात्। स एको मानुषं आनन्दः। ते ये शतं मानुषां आनन्दाः। स एको मनुष्यगन्धर्वाणांमानन्दः।

श्रोत्रियस्य चाकामंहतस्य।

तस्मात्तथ्सुकृतमुच्यंत इति। यद्वै तथ्सुकृतम्। रंसो वै सः। रस इधेवायं

चाकामंहतस्य।

ते ये शतं देवगन्धर्वाणांमान्नदाः। स एकः पितृणां चिरलोकलोकानांमान्नदः। श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।

ते ये शतं पितृणां चिरलोकलोकार्नामान्दाः। स एक आजानजानां देवार्नामानन्दः। श्रोत्रियस्य चाकार्महतस्य।

ते ये शतमाजानजानां देवानांमानुन्दाः। स एकः कर्मदेवानां देवानांमानुन्दः। ये कर्मणा देवानंपियन्ति। श्रोत्रियस्य चाकामंहत्स्य।

ते ये शतं कर्मदेवानां देवानांमानुन्दाः। स एको देवानांमानुन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहत्स्य।

ते ये शतं देवानांमान्नन्दाः। स एक इन्द्रंस्यान्नन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहत्स्य। ते ये शतिमन्द्रंस्याऽऽन्नन्दाः। स एको बृहस्पतंरान्नन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहत्स्य। ते ये शतं बृहस्पतेरानुन्दाः। स एकः प्रजापतेरानुन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामहत्स्य।

ते ये शतं प्रजापतेंरानुन्दाः। स एको ब्रह्मणं आनुन्दः। श्रोत्रियस्य चाकामंहतुस्य।

स यश्चांयं पुरुषे। यश्चासांवादित्ये। स एकंः। स यं एवंवित्। अस्माल्लोंकात्प्रेत्य। एतमन्नमयमात्मानमुपंसङ्कामित। एतं प्राणमयमात्मानमुपंसङ्कामित। एतं मनोमयमात्मानमुपंसङ्कामित। एतं विज्ञानमयमात्मानमुपंसङ्कामित। एतमानन्द-मयमात्मानमुपंसङ्कामित। तदप्येष श्लोंको भवति॥८॥

यतो वाचो निवर्तन्ते। अप्राप्य मनसा सह। आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान्। न बिभेति कुर्तश्चनेति। एत १ ह वार्वं न तपिति। किमह १ सार्धुं नाक्रवम्। किमहं पापमकर्रविमिति। स य एवं विद्वानेते आत्मान १ स्पृणुते। उभे ह्येवैष एते आत्मान १ स्पृणुते। य एवं वेदं। इत्युंपनिषंत्॥ ९॥

स्ह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीयंं करवावहै। तेज्रस्वि नावधींतमस्तु

मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥ नवमः प्रश्नः — भृगुवल्ली॥

ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वी॒र्यं करवावहै। ते॒ज्ञस्वि ना॒वधींतमस्तु मा विंद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भृगुर्वे वांरुणिः। वर्रुणं पितंरुमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मोतिं। तस्मां एतत्प्रोवाच। अन्नं प्राणं चक्षुः श्रोत्रं मनो वाचमितिं। त होवाच। यतो वा इमानि भूतांनि जायन्ते। येन जातांनि जीवंन्ति। यत्प्रयंन्त्यभि संविंशन्ति। तिद्विजिज्ञासस्व। तद्वह्मोतिं। स तपोंऽतप्यत। स तपंस्तुह्वा॥१॥

अत्रं ब्रह्मेति व्यंजानात्। अत्राद्धेव खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। अत्रेन् जातांनि जीवंन्ति। अत्रं प्रयंन्त्यभि संविश्वन्तीतिं। तिद्वज्ञायं। पुनेरेव वरुणं पितंर्मुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेतिं। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेतिं। स तपोंऽतप्यत। स तपंस्तव्वा॥२॥

प्राणो ब्रह्मेति व्यंजानात्। प्राणाद्धेव खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। प्राणेन् जातांनि जीवंन्ति। प्राणं प्रयंन्त्यभि संविश्वन्तीति। तिद्वज्ञायं। पुनरेव वर्रुणं पितंर्मुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोऽतप्यत। स तपंस्तुह्वा॥३॥

मनो ब्रह्मेति व्यंजानात्। मनंसो ह्यंव खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। मनंसा जातांनि जीवंन्ति। मनः प्रयंन्त्यभि संविशन्तीति। तिद्वज्ञायं। पुनरेव वर्रणं पितर्मुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेति। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेति। स तपोंऽतप्यत। स तपंस्तुस्वा॥४॥

विज्ञानं ब्रह्मेति व्यंजानात्। विज्ञानाद्धेव खिल्वमानि भूतांनि जायंन्ते। विज्ञानेन जातांनि जीवंन्ति। विज्ञानं प्रयंन्त्यभि संविंशन्तीतिं। तिद्वज्ञायं। पुनेरेव वर्रणं पितंरमुपंससार। अधीहि भगवो ब्रह्मेतिं। त॰ होवाच। तपंसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व। तपो ब्रह्मेतिं। स तपोंऽतप्यत। स तपंस्तुः वा॥५॥

भंवति। महान्भंवति प्रजयां प्रशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनं। महान्कीर्त्या॥६॥ अत्रुं न निन्द्यात्। तद्वृतम्। प्राणो वा अन्नम्। शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नंवानन्नादो भवति। महान्भंवति प्रजयां प्रशुभिर्ब्रह्मवर्च्सेनं। महान्कीर्त्या॥७॥

अन्नं न परिचक्षीत। तद्भतम्। आपो वा अन्नम्। ज्योतिरन्नादम्। अफ्सु

ज्योतिः प्रतिष्ठितम्। ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य

एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान्भविति प्रजयां

आनन्दो ब्रह्मेति व्यंजानात्। आनन्दास्येव खल्विमानि भूतांनि जायंन्ते।

आनन्देन जातांनि जीवंन्ति। आनन्दं प्रयंन्त्यभि संविंशन्तीतिं। सैषा भाँगीवी

वारुणी विद्या। परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। य एवं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो

पृश्भिर्ब्रह्मवर्च्सेने। महान्कीत्या॥८॥ अन्नं बहु कुंवीत। तद्वतम्। पृथिवी वा अन्नम्। आकाशौऽन्नादः। पृथिव्यामांकाशः प्रतिष्ठितः। आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतितिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान्भवित प्रजयां प्रशिभिर्न्नह्मवर्चसेने। महान्कीर्त्या॥९॥

न कश्चन वसतौ प्रत्यांचक्षीत। तद्भतम्। तस्माद्यया कया च विधया बह्वंन्नं प्राप्नुयात्। अराध्यस्मा अन्नमित्याचक्षते। एतद्वै मुखतौँ उन्नर राद्धम्। मुखतो उस्मा अंन्नर राध्यते। एतद्वै मध्यतौंऽन्नर राद्धम्। मध्यतोऽस्मा अंन्नर राध्यते। एतद्वा अन्तर्तो उन्नर राद्धम्। अन्तर्तो उस्मा अन्नर राध्यते। य एवं वेद। क्षेम इति वाचि। योगक्षेम इति प्राणापानयोः। कर्मेति हस्तयोः। गतिरिति पादयोः। विमुक्तिरिति पायौ। इति मानुषीः समाज्ञाः। अथ दैवीः। तृप्तिरिति वृष्टौ। बलिमिति विद्युति। यश इंति पशुषु। ज्योतिरिति नंक्षत्रेषु। प्रजातिरमृतमानन्द इंत्युपस्थे। सर्विमंत्याकाशे। तत्प्रतिष्ठेत्युंपासीत। प्रतिष्ठांवान्भवति। तन्मह इत्युंपासीत। मंहान्भवति। तन्मन इत्युंपासीत। मानंवान्भवति। तन्नम इत्युंपासीत। नम्यन्तें उस्मै कामाः। तद्बह्मेत्युंपासीत। ब्रह्मंबा-भवति। तद्बह्मणः परिमर इत्युंपासीत। पर्येणं म्रियन्ते

द्विषन्तंः सपत्नाः। परि येंऽप्रियां भ्रातृव्याः। स यश्चांयं पुरुषे। यश्चासांवादित्ये। स एकंः। स यं एवंवित्। अस्माल्लोकात्प्रेत्य। एतमन्नमयमात्मानमुपंसङ्कम्य। एतं प्राणमयमात्मानमुपंसङ्कम्य। एतं मनोमयमात्मानमुपंसङ्कम्य। एतं

विज्ञानमयमात्मानमुपंसङ्कम्या एतमानन्दमयमात्मानमुपंसङ्कम्य। इमाँ ह्रोकान्कामात्री कामरूप्यंनुस्थरन्। एतथ्साम गांयन्नास्ते। हा(३) वु हा(३) वु हा(३) वुं।

अहमन्नमहमन्नमहमन्नम्। अहमन्नादो(२)ऽहमन्नादो(२)ऽहमन्नादः। अहङ् श्लोककृदह श्लोककृदह श्लोककृत्। अहमस्मि प्रथमजा ऋता(३) स्य। पूर्वं देवेभ्यो अमृतस्य ना(३) भाइ। यो मा ददाति स इदेव मा(३) वाः।

अहमन्नमन्नमदन्तमा(३) द्यि। अहं विश्वं भुवंनमभ्यंभवाम्। सुवर्न ज्योतीः। य एवं वेदं। इत्युंपनिषंत्॥१०॥ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्व नावधीतमस्तु

मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

नवमः प्रश्नः — भृगुवल्ली (तैत्तिरीय आरण्यकम्)



॥दशमः प्रश्नः — महानारायणोपनिषत्॥

ॐ सह नांववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेज्ञस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

॥अम्भस्य पारे॥

अम्भंस्य पारे भुवंनस्य मध्ये नाकंस्य पृष्ठे मंहतो महीयान्। शुक्रेण ज्योती ५िष समनुप्रविष्टः प्रजापंतिश्चरति गर्भे अन्तः॥ यस्मिन्निद॰ सं च विचैति सर्वं यस्मिन्देवा अधि विश्वे निषेदुः। तदेव भूतं तदु भव्यंमा इदं तदक्षरे पर्मे व्योमन्॥ येनांऽऽवृतं खं च दिवं महीं च येनांऽऽदित्यस्तपंति तेजंसा भ्राजंसा च। यमन्तः संमुद्रे क्वयो वयन्ति यदक्षरे पर्मे प्रजाः॥ यतः प्रसूता ज्गतः प्रसूती तोयेन जीवान् व्यसंसर्ज भूम्यांम्। यदोषंधीभिः पुरुषांन्पश्र्ंश्च विवेश भूतानि चराचराणि॥ अतः परं नान्यदणीयस १ हि परौत्परं यन्महंतो महान्तम्। यदेकम्ब्यक्तमनेन्तरूपं विश्वं पुराणं तमसः परस्तात्॥१॥

तदेवर्तं तदुं सत्यमाहुस्तदेव ब्रह्मं पर्मं केवीनाम्। इष्टापूर्तं बहुधा जातं जायमानं विश्वं बिंभर्ति भुवंनस्य नाभिः॥ तदेवाग्निस्तद्वायुस्तथ्सूर्युस्तदुं चुन्द्रमाः। तदेव शुक्रममृतं तद्भक्ष तदापः स प्रजापंतिः॥ सर्वे निमेषा जिज्ञरे विद्युतः पुरुषादिषे। कुला मुंहूर्ताः काष्ठांश्वाहोरात्राश्चं सर्वशः॥ अर्धुमासा मासा ऋतवेः संवथ्सरश्चं कल्पन्ताम्। स आपंः प्रदुघे उभे इमे अन्तरिक्षमथो सुवंः॥ नैनंमूर्धं न तिर्यश्चं न मध्ये परिजायभत्। न तस्येशे कश्चन तस्यं नाम मृहद्यशंः॥२॥ न सन्दर्शे तिष्ठति रूपंमस्य न चक्षुंषा पश्यति कश्चनैनम्। हृदा मंनीषा मनंसाऽभिकृषो य एनं विदुरमृतास्ते भवन्ति॥ अद्भः सम्भूतो हिरण्यगुर्भ इत्यष्टौ॥ पुष हि देवः प्रदिशोऽनु सर्वाः पूर्वो हि जातः स उ गर्भे अन्तः। स विजायमानः

पुष हि द्वः प्रादशाऽनु सर्वाः पूर्वा हि जातः स उ गम अन्तः। स विजायमानः स जिन्छ्यमाणः प्रत्यङ्गुखाँस्तिष्ठति विश्वतोमुखः॥ विश्वतंश्वक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोहस्त उत विश्वतंस्पात्। सं बाहुभ्यां नर्मति सं पतंत्रैद्यावापृथिवी जनयंन्देव एकः॥ वेनस्तत्पश्यन्विश्वा भुवनानि विद्वान् यत्र विश्वं भवत्येकंनीळम्। यस्मिन्निदश

सं च विचैक्र स ओतः प्रोतंश्च विभः प्रजासं। प्र तद्वोंचे अमृतं नु विद्वान्गंन्ध्वों नाम निहितं गुहांसु॥३॥

त्रीणि पदा निहिंता गुहांसु यस्तद्वेदं सवितुः पिताऽसंत्। स नो बन्धुंर्जनिता स विधाता धार्मानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धार्मान्यभ्यैरंयन्त। परि द्यावांपृथिवी यन्ति सद्यः परि लोकान् परि दिशः परि सुवंः। ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य तदंपश्यत्तदंभवत् प्रजासुं। प्रीत्यं लोकान्परीत्यं भूतानिं प्रीत्य सर्वाः प्रदिशो दिशंश्च। प्रजापंतिः प्रथमजा ऋतस्याऽऽत्मनाऽऽत्मानंमभिसम्बंभूव। सदंसस्पतिमद्भंतं प्रियमिन्द्रंस्य काम्यम्। सिनं मेधामयासिषम्। उद्दीप्यस्व जातवेदोऽपघ्नन्निर्ऋतिं ममं॥४॥

पुशू श्रृश्च मह्यमार्वह जीवंनं च दिशों दिश। मा नों हिश्सीज्ञातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्। अबिभ्रदग्न आगंहि श्रिया मा परिपातय।

॥ गायत्रीमन्त्राः॥

पुरुषस्य विद्य सहस्राक्षस्यं महादेवस्यं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्। तत्पुरुषाय विद्यहें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्। तत्पुरुषाय विद्यहें वऋतुण्डायं धीमहि। तन्नों दन्तिः प्रचोदयाँत्। तत्पुरुषाय विद्यहें चऋतुण्डायं धीमहि॥५॥

तन्नो नन्दिः प्रचोदयाँत्। तत्पुरुंषाय विद्महें महासेनायं धीमहि। तन्नेः षण्मुखः प्रचोदयाँत्। तत्पुरुंषाय विद्महें सुवर्णपृक्षायं धीमहि। तन्नो गरुडः प्रचोदयाँत्। वेदात्मनायं विद्महें हिरण्यगुर्भायं धीमहि। तन्नों ब्रह्मं प्रचोदयाँत्। नारायणायं विद्महें वासुदेवायं धीमहि। तन्नों विष्णुः प्रचोदयाँत्। वृज्जन्खायं विद्महें तीक्ष्णद्र्षृष्ट्रायं धीमहि॥६॥

तन्नों नारसि॰हः प्रचोदयाँत्। भास्करायं विद्यहें महद्युतिकरायं धीमहि। तन्नों आदित्यः प्रचोदयाँत्। वैश्वानरायं विद्यहें लालीलायं धीमहि। तन्नों अग्निः प्रचोदयाँत्। कात्यायनायं विद्यहें कन्यकुमारिं धीमहि। तन्नों दुर्गिः प्रचोदयाँत्।

॥ दूर्वासूक्तम्॥

सहस्रपरंमा देवी शतमूला शताङ्करा। सर्वर् हरतुं मे पापं दूर्वा दुःस्वप्ननाशनी। काण्डांत्काण्डात् प्ररोहंन्ती परुषः परुषः परि॥७॥

पुवानों दूर्वे प्रतंनु सहस्रेण शतनं च। या शतनं प्रतनोषिं सहस्रेण विरोहंसि। तस्यांस्ते देवीष्टके विधेमं ह्विषां व्यम्। अश्वंऋान्ते रंथऋान्ते विष्णुऋांन्ते वसुन्धंरा। शिरसां धारियष्यामि रक्षस्व मां पदे पदे।

॥ मृत्तिकासूक्तम्॥

भूमिर्धेनुर्धरणी लोकधारिणी। उद्धृतांऽसि वंराहेण कृष्णेन शंतबाहुना। मृत्तिकें हनं मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। मृत्तिकें ब्रह्मदत्ताऽसि काश्यपेनाभिमित्रिंता। मृत्तिकें देहिं मे पुष्टिं त्विय संवं प्रतिष्ठितम्॥८॥

मृत्तिकै प्रतिष्ठिते सुर्वं तुन्मे निर्णुद् मृत्तिके। तयां हुतेने पापेन गुच्छामि पंरमां गितम्।

॥ रात्रुजयमन्त्राः॥

यतं इन्द्र भयांमहे ततों नो अभयं कृिध। मधंवन्छिग्धि तव तन्नं ऊतये विद्विषो विमधों जिह। स्वस्तिदा विशस्पतिवृत्रहा विमधों वशी। वृषेन्द्रः पुर एत नः स्वस्तिदा अभयङ्करः। स्वस्ति न इन्द्रों वृद्धश्रंवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यों अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृह्स्पतिद्धातु। आपानतमन्युस्तृपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुंमा स्वाधि। सोमो विश्वान्यत्सावनानि नार्वागिन्द्रं प्रतिमानानिदेभुः॥९॥

ब्रह्मंजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचो वेन आंवः। सबुधियां उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसंतश्च विवः। स्योना पृथिवि भवांऽनृक्षरा निवेशनी। यच्छांनः शर्म सप्रथाः। गृन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपृष्टां करीषिणींम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्। श्रीमें भूजतु। अलक्ष्मीमें नृश्यतु। विष्णुमुखा वै देवाश्छन्दोभिरिमाँ ह्योकानंनपज्य्यम्भ्यंजयन्। महा स् इन्द्रो वज्रबाहुः षोड्शी

शर्म यच्छत्॥१०॥

स्वस्ति नो मघवां करोतु हन्तुं पाप्मानं यों उस्मान् द्वेष्टिं। सोमान् स्वरंणं कृणुहि ब्रह्मणस्पते। कक्षीवंन्तं य औशिजम्। शरीरं यज्ञशम्लं कुसीदं तस्मिन्थ्सीदतु यों उस्मान् द्वेष्टिं। चरंणं पवित्रं वितंतं पुराणं येनं पूतस्तरंति दुष्कृतानिं। तेन प्वित्रंण शुद्धेनं पूता अति पाप्मान्मरांतिं तरेम। स्जोषां इन्द्र सगंणो मुरुद्धिः

नः। सुमित्रा न आप ओषंधयः सन्तु दुर्मित्रास्तस्मैं भूयासुर्योऽस्मान् द्वेष्टि यं चे व्यं द्विष्मः। आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दंधातन॥११॥

सोमं पिब वृत्रहञ्छूर विद्वान्। जुहि शत्रू रप मृधों नुद्स्वाथाभंयं कृणुहि विश्वतों

महेरणांय चक्षंसे। यो वंः शिवतंमो रसस्तस्यं भाजयतेह नंः। उश्तीरिंव मातरंः। तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयांय जिन्वंथ। आपो जुनयंथा च नः।

॥ अघमर्षणसूक्तम्॥

हिरंण्यशृङ्गं वरुणं प्रपंद्ये तीर्थं में देहि याचितः। युन्मयां भुक्तम्साधूनां पापेभ्यंश्च

प्रतिग्रंहः। यन्मे मनंसा वाचा कर्मणा वा दुष्कृतं कृतम्। तन्न इन्द्रो वर्रणो बृह्स्पतिः सिवता च पुनन्तु पुनः पुनः। नमोऽग्नये उपसुमते नम् इन्द्राय नमो वर्रणाय नमो वारण्यै नमोऽन्यः॥१२॥

यद्पां ऋूरं यदेमेध्यं यदेशान्तं तदपंगच्छतात्। अत्याशनादेतीपानाद्यच उग्रात् प्रतिग्रहाँत्। तन्नो वरुणो राजा पाणिनाँ ह्यवमर्शत्। सोऽहमंपापो विरजो निर्मुक्तो मुक्तिक्विषः। नाकस्य पृष्ठमारुह्य गच्छेद्वह्यंसलोकताम्। यश्चापस् वरुणः स पुनात्वंघमर्षणः। इमं में गङ्गे यमुने सरस्वति शुतुंद्रि स्तोमर् सचता परुष्णिया। असिक्रिया मंरुद्वधे वितस्त्याऽऽर्जीकीये शृणुह्या सुषोमया। ऋतं चे सत्यं चाभीद्यात्तपसोऽध्यंजायत। ततो रात्रिंरजायत् ततः समुद्रो अर्णवः॥१३॥

स्मुद्रादंर्ण्वादिधं संवथ्सरो अंजायत। अहोरात्राणि विदधिद्वश्वंस्य मिष्तो वृशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यंथापूर्वमंकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो सुवंः। यत्पृथिव्या र रजः स्वमान्तरिक्षे विरोदंसी। इमाङ्स्तदापो वंरुणः पुनात्वंघमर्षणः। पुनन्तु वसंवः पुनातु वर्रणः पुनात्वंघमर्षणः। एष भूतस्यं मध्ये भुवंनस्य गोप्ता। एष पुण्यकृतां लोकानेष मृत्योर्हिर्ण्मयम्। द्यावांपृथिव्योर्हिर्ण्मय् सङ्श्रित्र सुवंः॥१४॥

स नः सुवः स॰शिशाधि। आर्द्रं ज्वलंति ज्योतिरहमंस्मि। ज्योतिर्ज्वलंति ब्रह्माहमंस्मि। योऽहमंस्मि ब्रह्माहमंस्मि। अहमंस्मि ब्रह्महमंस्मि। अहमंबाहं मां जुंहोमि स्वाहाँ। अकार्यकार्यवकीणीं स्तेनो भ्रूणहा गुंरुतल्पगः। वर्रुणोऽपामंघ-मर्षणस्तस्मांत्पापात् प्रमुंच्यते। रजो भूमिस्त्वमा॰ रोदयस्व प्रवंदन्ति धीराः। आक्रांन्थ्समुद्रः प्रथमे विधमां जनयंन्य्रजा भुवनस्य राजाः। वृषां प्वित्रे अधि सानो अव्ये बृहथ्सोमों वावृधे सुवान इन्दुः॥१५॥

॥दुर्गासूक्तम्॥

जातवंदसे सुनवाम् सोमंमरातीयतो निजंहाति वेदः। स नः पर्षदितं दुर्गाणि

विश्वां नावेव सिन्धुं दुरिताऽत्यग्निः। तामग्निवंगां तपंसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं केर्मफुलेषु जुष्टाम्। दुर्गां देवी शरणमहं प्रपेद्ये सुतरंसि तरसे नर्मः। अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान्थस्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा। पूर्श्च पृथ्वी बंहुला नं

उर्वी भवां तोकाय तनयाय शं योः। विश्वांनि नो दुर्गहां जातवेदः सिन्धुं न नावा दुंरिताति पर्षि। अग्ने अत्रिवन्मनंसा गृणानौंऽस्माकं बोध्यविता तनूनौम्। पृत्नाजित् सहंमानमग्निमुग्र ह्वेम परमाथ्सधस्थांत्। स नेः पर्षदितं

दुर्गाणि विश्वा क्षामंद्रेवो अति दुरिताऽत्यग्निः। प्रत्नोषि कमीड्यो अध्वरेषु सनाच होता नव्यंश्च सर्थ्मि। स्वाश्चाँग्ने तनुवं पिप्रयंस्वास्मभ्यं च सौभंगमायंजस्व। गोभिर्जुष्टमयुजो निषिक्तं तवैन्द्र विष्णोरनुसर्श्वरेम। नाकस्य पृष्ठमभि संवसानो

वैष्णंवीं लोक इह मांदयन्ताम्॥१६॥

॥ व्याहृतिहोमन्त्राः॥

भूरत्रंम्ग्रयं पृथिव्ये स्वाह्य भुवोऽत्रं वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाह्य सुवरत्रंमादित्यायं दिवे स्वाह्य भूर्भृवः सुवरत्रं चन्द्रमंसे दिग्भ्यः स्वाह्य नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भृवः सुवरत्रमोम्॥१७॥

भूरग्नयें पृथिव्यै स्वाहा भुवों वायवेऽन्तरिक्षाय स्वाहा सुवंरादित्यायं दिवे स्वाहा भूर्भुवः सुवंश्चन्द्रमंसे दिग्भ्यः स्वाहा नमों देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवः सुव्रग्न ओम्॥१८॥

भूरग्नयं च पृथिव्ये चं मह्ते च स्वाहा भुवों वायवें चान्तरिक्षाय च मह्ते च स्वाहा सुवंरादित्यायं च दिवे चं मह्ते च स्वाहा भूर्भुवः सुवंश्चन्द्रमंसे च नक्षंत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्चं मह्ते च स्वाहा नमों देवेभ्यंः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवः सुवर्मह्रोम्॥१९॥

·[५]

॥ ज्ञानप्राप्त्यर्थहोममन्त्राः॥

पाहि नो अग्न एनंसे स्वाहा। पाहि नो विश्ववेदंसे स्वाहा। यज्ञं पाहि विभावंसो स्वाहा। सर्वं पाहि शतर्ऋतो स्वाहा॥२०॥

पाहि नो अग्न एकंया। पाह्युंत द्वितीयंया। पाह्युर्जं तृतीयंया। पाहि गीर्भिश्चं तसृभिवसो स्वाहाँ॥२१॥

॥ वेदविस्मरणाय जपमन्त्राः॥

यश्छन्दंसामृष्भो विश्वरूपृश्छन्दों भ्यश्छन्दा ईस्याविवेशं। सता शिक्यः पुरोवाचोपिन्षिदिन्द्रों ज्येष्ठ इंन्द्रियाय ऋषिभ्यो नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यो भूर्भुवः सुवृश्छन्द ओम्॥२२॥

पंतिष्यामीत्येवम्नृतांदात्मानं जुगुफ्सैत्॥२५॥

च्यों द्वं ममामुष्य ओम्॥२३॥

-[2]

ऋतं तपंः स्त्यं तपंः श्रुतं तपंः शान्तं तपो दम्स्तपः शम्स्तपो दानं तपो यज्ञं तपो भूर्भवः सुवर्ब्रह्मैतदुपाँस्यैतत्तपंः॥२४॥ ———[१०] ॥विहिताचरणप्रशंसा निषद्धाचरणनिन्दा च॥

यथां वृक्षस्यं सम्पुष्पितस्य दूराद्गन्धो वांत्येवं पुण्यंस्य कुर्मणों दूराद्गन्धो

वांति यथांऽसिधारां कुर्तेऽवंहितामवुक्रामे यद्युवे युवे ह वां विह्नयिष्यामि कर्तं

॥तपः प्रशंसा॥

नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं धारयिता भूयासुं कर्णयोः श्रुतं मा

-[88]

॥ दहरविद्या॥

अणोरणीयान्मह्तो महीयानात्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः। तमंक्रतुं पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादौन्महिमानंमीशम्। सप्त प्राणाः प्रभवन्ति तस्माँथ्सप्तार्चिषंः स्मिधंः सप्त जिह्वाः। सप्त इमे लोका येषु चरन्ति प्राणा गुहाशंयां निहिताः

स्प्रा स्प्रा अर्तः समुद्रा गिरयंश्च सर्वेऽस्माथ्स्यन्दंन्ते सिन्धंवः सर्वरूपाः। अर्तंश्च विश्वा ओष्ट्रायो उसाँच येत्रैष्ठ अवस्तिष्ठान्त्रस्त्रात्माः वद्या देवानां प्रदर्शः

अतंश्च विश्वा ओषंधयो रसाँच येनैष भूतस्तिष्ठत्यन्तरात्मा। ब्रह्मा देवानाँ पद्वीः कंवीनामृषिर्विप्रांणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गृध्रांणाः स्वधितिर्वनांनाः सोमः

प्वित्रमत्येति रेभन्। अजामेकां लोहितशुक्ककृष्णां बह्वीं प्रजां जनयंन्ती क् सर्रूपाम्। अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेते जहाँत्येनां भुक्तभोगामजौँऽन्यः॥२६॥ ह॰सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदितिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वंरसदैतसद्योमसद

हु भः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष्मस्त्राता विदेषदितिथिदुरीणुसत्। नृषद्वरुसहत्सद्यीम्सद् गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्। घृतं मिमिक्षिरे घृतमंस्य योनिर्घृते श्रितो घृतमुंवस्य धामं। अनुष्वधमावंह मादयंस्व स्वाहांकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।

समुद्रादूर्मिर्मध्रमा । उदाँरदुपा । सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति

जिह्ना देवानांमुमृतंस्य नाभिः। वयं नाम् प्रब्नंवामा घृतेनास्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः। उपं ब्रह्मा शृंणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद्गौर एतत्। चत्वारि शृङ्गा त्रयों अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तांसो अस्य। त्रिधां बद्धो वृंषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या ५ आविवेश॥२७॥ त्रिधां हितं पृणिभिंगृह्यमानं गविं देवासों घृतमन्वंविन्दन्। इन्द्र एक् रूप् एकं जजान वेनादेक ई स्वधया निष्टंतक्षुः। यो देवानां प्रथमं पुरस्ताद्विश्वाधियों रुद्रो महर्षिः। हिर्ण्यगर्भं पंश्यत जायंमान् स नो देवः शुभया स्मृत्या संयुनक्तु। यस्मात्परं नापरमस्ति किश्चिद्यस्मान्नाणीयो न ज्यायौऽस्ति कश्चित्।

वृक्ष इंव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्। न कर्मणा न प्रजया

धर्नेन त्यागेंनैके अमृतत्वमानशुः। परेण नाकं निहितं गुहांयां विभ्राजंते यद्यतंयो

विशन्तिं। वेदान्तविज्ञान्सिनिश्चितार्थाः सन्त्यांसयोगाद्यतेयः शुद्धसत्त्वाः। ते ब्रेह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे। दृहुं विपापं परमेशमभूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यस् इस्थम्। तृत्रापि दृहं गृगनें विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपांसितव्यम्। यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः। तस्य प्रकृतिलीन्स्य यः परः समहेश्वरः॥२८॥

॥ नारायणसूक्तम्॥

सहस्रशीर्षं देवं विश्वाक्षं विश्वशंम्भुवम्। विश्वं नारायंणं देवमक्षरं पर्मं पदम्। विश्वतः परमान्नित्यं विश्वं नारायणः हिरम्। विश्वंमेवदं पुरुष्टस्तिद्वश्वमुपंजीवति। पितं विश्वंस्याऽऽत्मेश्वर् शाश्वंतः शिवमंच्युतम्। नारायणं महाज्ञेयं विश्वात्मांनं परायंणम्। नारायणपंरो ज्योतिरात्मा नारायणः परः। नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः। नारायणपरे क्रिश्चंश्वंपर्मुवं

दृश्यते श्रूयते ऽपि वा॥ अन्तर्बहिश्चं तथ्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः॥२९॥

अनेन्तमव्यंयं कवि र संमुद्रेऽन्तं विश्वशंम्भुवम्। पुद्मकोश प्रतीकाशु हृदयं चाप्यधोर्मुखम्। अधौ निष्ट्या वितस्त्यान्ते नाभ्यामुपरि तिष्ठति। ज्वालुमालाकुलं भाती विश्वस्यांऽऽयतनं मंहत्। सन्तंतः शिलाभिस्तुलम्बंत्याकोशुसन्निभम्। तस्यान्ते सुषिर सूक्ष्मं तस्मिन्थ्सर्वं प्रतिष्ठितम्। तस्य मध्ये महानं-मिर्विश्वार्चिर्विश्वतोमुखः। सोऽग्रंभुग्विभंजन्तिष्ठन्नाहारमजुरः कविः। तिर्यगूर्ध्वमंधः शायी रश्मयंस्तस्य सन्तंता। सन्तापयंति स्वं देहमापांदतलमस्तंकः। तस्य मध्ये विह्नंशिखा अणीयौर्ध्वा व्यवस्थितः। नीलतोयदेमध्यस्थाद्विद्युष्ठेखेव भास्वरा। नीवारशूकंवत्तन्वी पीता भाँस्वत्यणूपंमा। तस्याः शिखाया मध्ये परमातमा व्यवस्थितः। स ब्रह्म स शिवः स हरिः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट्॥३०॥ नारायणः स्थितो व्यवस्थितश्चत्वारिं च॥

[88]

॥ आदित्यमण्डले परब्रह्मोपासनम्॥

आदित्यो वा एष एतन्मण्डलं तपंति तत्र ता ऋचस्तदचा मंण्डल स ऋचां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिदीप्यते तानि सामानि स साम्रां मण्डल स साम्नां लोकोऽथ य एष एतस्मिन्मण्डलेऽर्चिषि पुरुषस्तानि यजूर्धेष स यजुंषा मण्डल र स यर्जुषां लोकः सैषा त्रय्येवं विद्या तंपति य एषौं उन्तरांदित्ये हिंरण्मयः पुरुषः॥३१॥

॥ आदित्यपुरुषस्य सर्वात्मकत्वप्रदर्शनम्॥

आदित्यो वै तेज् ओजो बलं यश्रश्वक्षः श्रोत्रंमात्मा मनो मृन्युर्मनुंर्मृत्युः सत्यो मित्रो वायुराकाशः प्राणो लोकपालः कः किं कं तथ्सत्यमन्नममृतों जीवो विश्वः कतमः स्वंयम्भु ब्रह्मैतदमृत एष पुरुष एष भूतानामधिपतिर्ब्रह्मणः सायुंज्य १ सलोकतामाप्रोत्येतासामेव देवताना १ सायुंज्य १ सार्षिता १ समानलोकतामाप्रोति

[१५]

-[१६]

य एवं वेदैंत्युपनिषत्॥३२॥

॥ शिवोपासनमन्त्राः॥

निधंनपतये नमः। निधंनपतान्तिकाय नमः। ऊर्ध्वाय नमः। ऊर्ध्वलिङ्गाय नमः। हिरण्याय नमः। हिरण्यालिङ्गाय नमः। सुवर्णाय नमः। सुवर्णालिङ्गाय नमः। दिव्याय नमः। दिव्यालिङ्गाय नमः। भवाय नमः। भविलङ्गाय नमः। शर्वाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। शर्वालङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। ज्वलिङ्गाय नमः। अत्माय नमः। आत्माय नमः। आत्मालङ्गाय नमः। परमाय नमः। परमालङ्गाय नमः। एतथ्सोमस्यं सूर्यस्य सर्वलिङ्गः स्थाप्यति पाणिमन्नं पिवत्रम्॥३३॥

॥ पश्चिमवऋ-प्रतिपादक-मन्त्रः॥

सुद्योजातं प्रंपद्यामि सुद्योजाताय वै नमो नमंः। भवे भवे नातिं भवे भवस्व

-[१७]

-[१८]

माम्। भवोद्भंवाय नर्मः॥३४॥

॥ उत्तरवऋ-प्रतिपादक-मन्त्रः॥

वामदेवाय नमौ ज्येष्ठाय नमेः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलंबिकरणाय नमो बलंबिकरणाय नमो बलाय नमो बलंप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमों मनोन्मंनाय नमंः॥३५॥

॥ दक्षिणवऋ-प्रतिपादक-मन्त्रः॥

अघोरैंभ्योऽथ घोरैंभ्यो घोरघोरंतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमंस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥३६॥

-[१९]

[२०]

-[२१]

॥ प्राग्वऋ-प्रतिपादक-मन्त्रः॥

तत्पुरुषाय विद्महें महादेवायं धीमहि। तन्नों रुद्रः प्रचोदयाँत्॥३७॥

॥ ऊर्ध्ववऋ-प्रतिपादक-मन्त्रः॥

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मां शिवो

में अस्तु सदाशिवोम्॥३८॥

॥ नमस्कारमन्त्राः॥

नमो हिरण्यबाहवे हिरण्यवर्णाय हिरण्यरूपाय हिरण्यपतयेऽम्बिकापतय उमापतये पशुपतये नमो नमः॥३९॥

ऋत र सत्यं पेरं ब्रह्म पुरुषं कृष्णपिङ्गलम्। ऊर्ध्वरेतं विरूपाक्षं विश्वरूपाय

-[२५]

वै नमो नमः॥४०॥

सर्वो वै रुद्रस्तस्मैं रुद्राय नमों अस्तु। पुरुषो वै रुद्रः सन्महो नमो नमंः। विर्श्वं भूतं भुवंनं चित्रं बंहुधा जातं जायंमानं च यत्। सर्वो ह्येष रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥४१॥

कद्रुद्राय प्रचेतसे मीदुष्टंमाय तव्यंसे। वो चेम शन्तंम हदे। सर्वो ह्यंप

रुद्रस्तस्मै रुद्राय नमो अस्तु॥४२॥

॥ अग्निहोत्रहवण्याः उपयुक्तस्य वृक्षविशेषस्याभिधानम्॥

यस्य वैकंङ्कत्यग्निहोत्रहवंणी भवति प्रत्येवास्याहुंतयस्तिष्ठन्त्यथो प्रतिष्ठित्यै॥४३॥

-[२६]

-[२८]

----[२७]

कृणुष्व पाज् इति पश्चं॥४४॥

II

॥ भूदेवताकमन्त्रः ॥

अदितिर्देवा गंन्ध्रवा मंनुष्याः पितरोऽसुंरास्तेषाः सर्वभूतानां माता मेदिनीं महता मही सांवित्री गांयत्री जगंत्युवीं पृथ्वी बंहुला विश्वां भूता कंतुमा का या सा सत्येत्यमृतेतिं वसिष्ठः॥४५॥

॥सर्वदेवता आपः॥

आपो वा इदः सर्वं विश्वां भूतान्यापः प्राणा वा आपः पृशव आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापः स्वराडापृश्छन्दाः स्यापो ज्योतीः इष्यापो यज्र इष्यापः सत्यमापः सर्वा देवता आपो भूर्भुवः सुवराप

—[२९]

ओम्॥४६॥

॥ सन्ध्यावन्दनमन्त्राः॥

आपंः पुनन्तु पृथिवीं पृथिवी पूता पुनातु माम्। पुनन्तु ब्रह्मण्स्पित् ब्रह्मपूता पुनातु माम्। यदुच्छिष्ट्रमभौज्यं यद्वां दुश्चिरितं ममं। सर्वं पुनन्तु मामापोऽस्तां चे प्रतिग्रह इस्वाहाँ॥४७॥

———[३०]
अग्निश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षन्ताम्।
यदह्रा पापंमकारिषम्। मनसा वाचां हस्ताभ्याम्। पद्मामुदरेण शि्ष्ञा।
अह्स्तदंवलुम्पत्। यत्किं चं दुरि्तं मियं। इदमहं माममृतयो्नौ। सत्ये ज्योतिषि
जुहोंमि स्वाहा॥४८॥

-[३१]

यद्रात्रिया पापंमकारिषम्। मनसा वाचां हस्ताभ्याम्। पद्भामुदरेण शिश्ञा।

रात्रिस्तदंवलुम्पत्। यत्किं चं दुरितं मियं। इदमहं माममृतयोनौ। सूर्ये ज्योतिषि

सूर्यश्च मा मन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युंकृतेभ्यः। पापेभ्यों रक्षन्ताम्।

ज्ञहोंमि स्वाहा॥४९॥

॥प्रणवस्य ऋष्यादिविवरणम्॥

ओमित्येकाक्षेरं ब्रह्म। अग्निर्देवता ब्रह्मं इत्यार्षम्। गायत्रं छन्दं परमात्मं सरूपम्। सायुज्यं विनियोगम्॥५०॥

॥ गायत्र्यावाहनमन्त्राः॥

आयांतु वरंदा देवी अक्षरं ब्रह्मसम्मितम्। गायत्रीं छन्दंसां मातेदं ब्रह्म

जुषस्वं मे। यदहाँत्कुरुते पापुं तदहाँतप्रतिमुच्यते। यद्रात्रियाँत्कुरुते पापुं

तद्रात्रियांत्प्रतिमुच्यंते। सर्वं वर्णे महादेवि सन्ध्याविंद्ये सरस्वंति॥५१॥

विश्वायुः सर्वमिस सर्वायुरभिभूरों गायत्रीमावाहयामि सावित्रीमावाहयामि सरस्वतीमावांहयामि छन्दऋषीनावांहयामि श्रियमावांहयामि गायत्रिया गायत्रीच्छन्दो विश्वामित्र ऋषिः सविता देवताऽग्निर्मुखं ब्रह्मा शिरो विष्णुर्हृदय । रुद्रः शिखा पृथिवी योनिः प्राणापानव्यानोदानसमाना सप्राणा श्वेतवर्णा साङ्ख्यायनसगोत्रा गायत्री चतुर्वि शत्यक्षरा त्रिपदां षद्गुक्षिः पश्चशीर्षोपनयने विनियोग ओं भूः। ओं भुवः। ओ॰ सुवः। ओं महः। ओं जनः। ओं तपः। ओ॰ सत्यम्। ओं तथ्संवितुर्वरेणयं भर्गो देवस्यं धीमहि। धियो यो नंः प्रचोदयाँत्। ओमापो ज्योतीरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुवः सुवरोम्॥५२॥

३५

-[३६]

-[३७]

॥गायत्री उपस्थानमन्त्राः॥

उत्तमें शिखंरे जाते भूम्यां पंवतमूर्धनि। ब्राह्मणैभ्योऽभ्यंनुज्ञाता गुच्छ देवि यथासुंखम्। स्तुतो मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्ती पवने द्विजाता। आयुः पृथिव्यां द्रविणं ब्रह्मवर्चस्ं मह्यं दत्वा प्रजातुं ब्रह्मलोकम्॥५३॥

॥ आदित्यदेवतामन्त्रः ॥

घृणिः सूर्यं आदित्यो न प्रभां वात्यक्षंरम्। मधुं क्षरन्ति तद्रंसम्। सृत्यं वै तद्रसमापो ज्योती्रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भवः सुव्रोम्॥५४॥

॥त्रिसुपर्णमन्त्राः॥

ब्रह्मंमेतु माम्। मधुंमेतु माम्। ब्रह्मंमेव मधुंमेतु माम्। यास्तें सोम प्रजाव्थ्सोभि सो अहम्। दुःस्वंप्रहन्दुंरुष्यह। यास्तें सोम प्राणाङ्स्तां जुंहोमि। त्रिसुंपर्णमयांचितं ब्राह्मणायं दद्यात्। ब्रह्महृत्यां वा एते घ्रंन्ति। ये ब्राह्मणास्त्रिसुंपणुं पठेन्ति। ते सोम्ं प्राप्नुंवन्ति। आसहस्रात्पङ्किं पुनंन्ति। ओम्॥५५॥

ब्रह्मं मेधयाँ। मधुं मेधयाँ। ब्रह्मंमेव मधुं मेधयाँ। अद्या नों देव सवितः प्रजावंथ्सावीः सौभंगम्। परां दुःष्वप्निय स्मुव। विश्वांनि देव सवितर्दुरितानि परां सुव। यद्भद्रं तन्म आ सुव। मधु वातां ऋतायते मधुं क्षरन्ति सिन्धंवः। मधींनिः सन्त्वोषंधीः। मधु नक्तंमुतोषिस् मधुंमृत्पार्थिव रजः। मधु द्यौरंस्तु नः

पिता। मधुमात्रो वनस्पित्मधुमार अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। य इमं त्रिसुंपर्णमयांचितं ब्राह्मणायं दद्यात्। भ्रूणहृत्यां वा एते घ्रंन्ति। ये ब्राह्मणास्त्रिसुंपर्णं पठंन्ति। ते सोमं प्राप्नुवन्ति। आसहस्रात्पङ्किं पुनंन्ति। ओम्॥५६॥

ब्रह्मं मे्धवाँ। मधुं मे्धवाँ। ब्रह्ममे्व मधुं मे्धवाँ। ब्रह्मा देवानां पद्वीः

कंवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणांम्। श्येनो गृध्रांणा ए स्वधितिर्वनांना ए सोर्मः पवित्रमत्येति रेभन्। हश्सः शुंचिषद्वसुंरन्तरिक्षसद्धोतां वेदिषदितिंथिर्दुरोणसत्। नृषद्वंरसदंतसद्योमसद्जा गोजा ऋतजा अंद्रिजा ऋतं बृहत्। ऋचे त्वां रुचे त्वा समिथ्स्रवन्ति सरितो न धेनाः। अन्तर्हदा मनसा पूर्यमानाः। घृतस्य धारां अभिचांकशीमि। हिरण्ययों वेतसो मध्यं आसाम्। तस्मिन्ध्सुपर्णो मंधुकृत्कुंलायी भर्जन्नास्ते मधुदेवताभ्यः। तस्यांसते हरंयः सप्ततीरै स्वधां दुहांना अमृतंस्य धारांम्। य इदं त्रिसुंपर्णमयांचितं ब्राह्मणायं दद्यात्। वीर्हत्यां वा एते घ्रन्ति। ये ब्रांह्मणास्त्रिसुंपर्णं पठन्ति। ते सोमं प्राप्नुंवन्ति। आस्हस्रात्पृङ्किः पुनन्ति। ओम्॥५७॥

॥ मेधासूक्तम्॥

मेधा देवी जुषमांणा न आगाँद्विश्वाचीं भुद्रा सुंमन्स्यमांना। त्वया जुष्टां

जुषमाणा दुरुक्तांन्बृहद्वेदेम विदर्थे सुवीराः॥ त्वया जुष्टं ऋषिर्भविति देवि त्वया ब्रह्मांऽऽगृतश्रीरुत त्वयां। त्वया जुष्टेश्चित्रं विन्दते वसु सा नों जुषस्व द्रविणो न मेधे॥५८॥

मेधां म् इन्द्रों ददातु मेधां देवी सरंस्वती। मेधां में अश्विनांबुभावार्धत्तां पुष्कंरस्रजा। अपस्रासं च या मेधा गन्धर्वेषुं च यन्मनंः। देवीं मेधा सरंस्वती सा मां मेधा सुरभिर्जुषता स्वाहां॥५९॥

———[४२] आ मांं मेधा सुरभिर्विश्वरूपा हिरंण्यवर्णा जगंती जगुम्या। ऊर्जस्वती पर्यसा

पिन्वंमाना सा मां मेधा सुप्रतींका जुषन्ताम्॥६०॥

मियं मेथां मियं प्रजां मय्यग्निस्तेजों दधातु मियं मेथां मियं प्रजां मयीन्द्रं

इन्द्रियं देधातु मियं मेधां मियं प्रजां मिय् सूर्यो भ्राजों दधातु॥६१॥

[: II

·[88]

[88]

॥ मृत्युनिवारणमन्त्राः ॥

अपैतु मृत्युर्मृतंं न आगंन्वैवस्वतो नो अभयं कृणोतु। पूर्णं वनस्पतेरिवाभिनः शीयता १ रियः स चं तान्नः शचीपितः॥६२॥

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्। चक्षुंष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजा॰ रीरिषो मोत वीरान्॥६३॥

वार्तं प्राणं मनसाऽन्वा रंभामहे प्रजापंतिं यो भुवंनस्य गोपाः। स नों मृत्योस्त्रांयतां पात्व १ हंसो ज्योग्जीवा ज्रामंशीमहि॥६४॥

अमुत्र भूयादध यद्यमस्य बृहंस्पते अभिशंस्तेरमुंश्चः। प्रत्यौंहतामिधनां मृत्युमंस्माद्देवानांमग्ने भिषजा शचींभिः॥६५॥

हरिष् हरंन्तुमनुंयन्ति देवा विश्वस्येशांनं वृष्मं मंतीनाम्।

सर्रूपमनुमेदमागादयनं मा विवधीर्विक्रमस्व॥६६॥

शल्कैर्ग्निमिन्धान उभौ लोकौ संनेम्हम्। उभयौर्लोकयोर्-ऋध्वाऽतिं मृत्युं तंराम्यहम्॥६७॥

आयुंरुग्र नृचक्षंसं त्वा हविषां विधेम॥६८॥

-[५१]

मा छिंदो मृत्यो मा वंधीर्मा मे बलं विवृहो मा प्रमोंषीः। प्रजां मा में रीरिष

नों ऽवधीः पितरं मोत मातरं प्रिया मा नंस्तनुवों रुद्र रीरिषः॥६९॥

प्रजांपते न त्वदेतान्यन्यो विश्वां जातानि परिता बंभूव। यत्कांमास्ते जुहुमस्तन्नों

-[५४]

॥ इन्द्रप्रार्थनामन्त्रः ॥

अस्तु वय इस्यांम पतंयो रयीणाम्॥ ७१॥

स्वस्तिदा विशस्पतिंवृत्रहा विमृधों वृशी। वृषेन्द्रंः पुर एंतु नः स्वस्तिदा

—[५५]

अंभयङ्करः॥७२॥

॥ मृत्युञ्जयमन्त्राः ॥

त्र्यम्बकं यजामहे सुगुन्धिं पुंष्टिवर्धनम्। उर्वा्रुकिमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतांत्॥७३॥

ये ते सहस्रम्युतं पाशा मृत्यो मर्त्याय हन्तंवे। तान् युज्ञस्यं मायया सर्वानवं

यजामहे॥७४॥ **–**[५७]

मृत्यवे स्वाहां मृत्यवे स्वाहां॥७५॥

-[५८]

॥ पापनिवारक-मन्त्राः॥

देवकृंत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। मृनुष्यंकृत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। पितृकृंत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। आत्मकृंत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। अस्मत्कृंत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। अस्मत्कृंत्स्यैनंसोऽव्यजनंमिस् स्वाहाँ। यद्दिवा च नक्तं चैनंश्चकृम तस्यांव्यजनमिस् स्वाहाँ। यथ्स्वपन्तंश्च जाग्रंत्श्चेनंश्चकृम तस्यांव्यजनमिस् स्वाहाँ। यथ्सुषुप्तंश्च जाग्रंत्श्चेनंश्चकृम तस्यांव्यजनमिस् स्वाहाँ। यद्दिद्वा स्मश्चविद्वा स्मश्चविद्वा स्मश्चनंश्चकृम तस्यांव्यजनमिस् स्वाहाँ। यद्दिद्वा स्मश्चविद्वा स्मश्चनंश्चकृम तस्यांव्यजनमिस् स्वाहाँ। एनस एनसोऽवयजनमिस स्वाहा॥ ७६॥

॥ वसुप्रार्थनामन्त्रः ॥

यद्वो देवाश्चकृम जिह्नयां गुरुमनंसो वा प्रयंती देव हेर्डनम्। अरांवा यो नों अभि दुंच्छुनायते तस्मिन्तदेनो वसवो निधेतन स्वाहाँ॥७७॥

-[६०]

॥ कामोऽकारुषीत्-मन्युरकारुषीत् मन्त्रः॥

कामोऽकार्षीं त्रमो नमः। कामोऽकार्षीत्कामः करोति नाहं करोमि कामः कर्ता नाहं कर्ता कामः कार्यिता नाहं कार्यिता एष ते काम कामाय स्वाहा॥७८॥

मन्युरकार्षींन्नमो नमः। मन्युरकार्षीन्मन्युः करोति नाहं करोमि मन्युः कर्ता नाहं कर्ता मन्युंः कार्यिता नाहं कार्यिता एष ते मन्यो मन्यंवे स्वाहा॥७९॥

॥ विराजहोममन्त्राः॥

तिलाञ्जहोमि सरसा॰ सिपष्टान् गन्धार मम चित्ते रमंन्तु स्वाहा। गावो हिरण्यं धनमन्नपान॰ सर्वेषाः श्रिये स्वाहा। श्रियं च लक्ष्मीं च पुष्टिं च कीर्तिं चानृण्यताम्। ब्रह्मण्यं बंहुपुत्रताम्। श्रद्धामेधे प्रजाः सन्ददांतु स्वाहा॥८०॥ तिलाः कृष्णास्तिलाः श्वेतास्तिलाः सौम्या वंशानुगाः। तिलाः पुनन्तुं मे पापं यत्किश्चिद्दुरितं मीय स्वाहा। चोर्स्यान्नं नेवश्राद्धं ब्रह्महा गुंरुतृल्पगः। गोस्तेय र सुरापानं भ्रूणहत्या तिला शान्ति शमयन्तु स्वाहा। श्रीश्च लक्ष्मीश्च पृष्टीश्च कीर्तिं चानृण्यताम्। ब्रह्मण्यं बंहुपुत्रताम्। श्रद्धामेधे प्रज्ञा तु जातवेदः सन्ददांतु स्वाहा॥८१॥

प्राणापानव्यानोदानसमाना में शुद्धान्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् इ स्वाहाँ। वाङ्गनश्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणरेतोबुद्धाकूतिःसङ्कल्पा में शुद्धान्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् स्वाहाँ। त्वक्रममा स्रिश्यसे मञ्जास्रायवो-ऽस्थीनि में शुद्धान्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् स्वाहाँ। शिरःपाणिपादपार्श्वपृष्ठोरूदरजङ्खाशिश्ञोपस्थपायवो में शुद्धान्तां ज्योतिरहं

विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहां। उत्तिष्ठ पुरुष हरित पिङ्गल लोहिताक्षि देहि

देहि ददापियता में शुद्ध्यन्तां ज्योतिंर्हं विरजां विपाप्मा भूयास्ड् स्वाहां॥८२॥

पृथिव्यापस्तेजोवायुराकाशा में शुद्धन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहाँ। शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा में शुद्धान्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहाँ। मनोवाक्कायकर्माणि में शुद्धान्तां ज्योतिंरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहां। अव्यक्तभावेरहङ्कारैज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहां। आत्मा में शुद्धान्तां ज्योतिंरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहाँ। अन्तरात्मा में शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास् स्वाहां। परमात्मा में शुद्धान्तां ज्योतिरहं विरजां विपाप्मा भूयास इस्वाहाँ। क्षुधे स्वाहाँ। क्षुत्पिपासाय स्वाहाँ। विविंट्ये स्वाहाँ। ऋग्विंधानाय स्वाहाँ। कषोंत्काय स्वाहाँ। क्षुत्पिपासामेलं ज्येष्ठामलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्। अभूतिमसंमृद्धिं च सर्वान्निर्णुद मे पाप्मान इ स्वाहा। अन्नमय-प्राणमय-मनोमय-विज्ञानमय-मानन्दमय-मात्मा में शुद्धान्तां ज्योतिंरहं विरजां विपाप्मा भूयासङ् स्वाहां॥८३॥

[६६]

॥ वैश्वदेवमन्त्राः॥

अग्नये स्वाहाँ। विश्वेंभ्यो देवेभ्यः स्वाहाँ। ध्रुवायं भूमाय स्वाहाँ। ध्रुवक्षितंये स्वाहाँ। अच्युतक्षितंये स्वाहाँ। अग्नयें स्विष्टकृते स्वाहाँ॥ धर्माय स्वाहाँ। अधर्माय स्वाहाँ। अग्नयः स्वाहाँ। ओषधिवनस्पतिभ्यः स्वाहाँ॥८४॥

रक्षोदेवजनेभ्यः स्वाहाँ। गृह्याँभ्यः स्वाहाँ। अवसानेँभ्यः स्वाहाँ। अवसानंपतिभ्यः स्वाहाँ। सर्वभूतेभ्यः स्वाहाँ। कामाय स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहाँ। यदेजंति जगंति यच्च चेष्टंति नाम्नो भागोऽयं नाम्ने स्वाहाँ। पृथिव्यै स्वाहाँ। अन्तरिक्षाय स्वाहाँ॥८५॥

दिवे स्वाहाँ। सूर्याय स्वाहाँ। चन्द्रमंसे स्वाहाँ। नक्षंत्रेभ्यः स्वाहाँ। इन्द्रांय स्वाहाँ। बृह्स्पतंये स्वाहाँ। प्रजापंतये स्वाहाँ। ब्रह्मणे स्वाहाँ। स्वधा पितृभ्यः स्वाहाँ। नमो रुद्रायं पशुपतंये स्वाहाँ॥८६॥

देवेभ्यः स्वाहाँ। पितृभ्यंः स्वधाऽस्तुं। भूतेभ्यो नर्मः। मुनुष्येभ्यो हन्तां। प्रजापंतये

स्वाहाँ। परमेष्ठिने स्वाहाँ। यथा कूपः शतधारः सहस्रंधारो अक्षितः। पुवा में

बितंदिस्य प्रेष्याः। तेभ्यो बितं पृष्टिकामो हरामि मिय पृष्टिं पृष्टिपतिर्दधातु स्वाहाँ॥८७॥
—————[६७]
औं तद्वहा। औं तद्वायुः। औं तदात्मा। औं तथ्सत्यम्। औं तथ्सर्वम्।

ओं तत्पुरोर्नमः॥ अन्तश्चरतिं भूतेषु गुहायां विश्वमूर्तिषु। त्वं यज्ञस्त्वं वषद्वारस्त्वमिन्द्रस्त्व रुद्रस्त्वं विष्णुस्त्वं ब्रह्म त्वं प्रजापितः। त्वं तंदाप् आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भवस्सुवरोम्॥८८॥——[६८]

॥ प्राणाहुतिमन्त्राः ॥

श्रुद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि। श्रुद्धायांमपाने निविष्टोऽमृतं जुहोमि।

श्रद्धार्यां व्याने निर्विष्टोऽमृतं जुहोमि। श्रद्धार्यामुदाने निर्विष्टोऽमृतं जुहोमि। श्रद्धायार् समाने निर्विष्टोऽमृतं जुहोमि। ब्रह्मणि म आत्माऽमृंतत्वायं॥ अमृतोपुस्तरंणमसि॥ श्रद्धायां प्राणे निविष्टोऽमृतं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। प्राणाय स्वाहाँ॥ श्रद्धायांमपाने निर्विष्टोऽमृतंं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। अपानाय स्वाहाँ॥ श्रद्धायाँ व्याने निर्विष्टोऽमृतं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। व्यानाय स्वाहां॥ श्रद्धायांमुदाने निर्विष्टोऽमृतंं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। उदानाय स्वाहाँ॥ श्रद्धाया ५ समाने निर्विष्टोऽमृतंं जुहोमि। शिवो मां विशाप्रदाहाय। समानाय स्वाहां॥ ब्रह्मणि म आत्माऽमृंतत्वायं। अमृतापिधानमंसि॥८९॥

॥ भुक्तान्नाभिमन्त्रणमन्त्राः ॥

श्रुद्धार्यां प्राणे निविंश्यामृत १ हुतम्। प्राणमन्नेनाप्यायस्व। श्रुद्धार्यामपाने

[६९]

हिश्सीः॥ ९२॥

॥भोजनान्ते आत्मानुसन्धानमन्त्राः॥
अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽङ्गुष्ठं चं समाश्रितः। ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातिं
विश्वभुक्॥॥९१॥
————[७१]
॥अवयवस्वस्थता-प्रार्थनामन्त्रः॥

वाङ्कं आसन्। नुसोः प्राणः। अक्ष्योश्चक्षुंः। कर्णयोः श्रोत्रम्। बाहुवोर्बलम्।

ऊरुवोरोजंः। अरिष्टा विश्वान्यङ्गानि तुनूः। तुनुवां मे सुह नमंस्ते अस्तु मा मां

निविंश्यामृत ५ हुतम्। अपानमन्नेनाप्यायस्व। श्रद्धायां व्याने निविंश्यामृत ५ हुतम्।

व्यानमन्नेनाप्यायस्व। श्रद्धायांमुदाने निविंश्यामृत ई हुतम। उदानमन्नेनाप्यायस्व।

श्रद्धायार् समाने निविषयामृतर् हुतम्। सुमानमन्नेनाप्यायस्व॥९०॥

-[७६]

॥ अग्निस्तुतिमन्त्रः॥

त्वमंग्रे द्युभिस्त्वमांशुश्वशिस्त्वमद्भास्त्वमश्मंनस्परि। त्वं वनैभ्यस्त्वमोषंधीभ्यस्त्वं नृणां नृपते जायसे श्चिं॥९५॥

॥ अभीष्टयाचनामन्त्राः॥

शिवनें मे सन्तिष्ठस्व स्योनेनं मे सन्तिष्ठस्व सुभूतेनं मे सन्तिष्ठस्व ब्रह्मवर्चसेनं मे सन्तिष्ठस्व यज्ञस्यर्धिमनु सन्तिष्ठस्वोपं ते यज्ञ नम उपं ते नम उपं ते नमः॥९६॥

॥ परतत्त्व-निरूपणम्॥

सत्यं परं पर सत्य सत्येन न सुंवर्गा हो का च्यंवन्ते कदा चन सता हि स्तयं तस्मौथ्सत्ये रमन्ते ॰ तप् इति तपो नानशनात्परं यद्धि परं तपस्तद्दर्धर्षं

तद्दराधर्षं तस्मात्तपंसि रमन्ते ॰ दम इति नियंतं ब्रह्मचारिणस्तस्माद्दमे रमन्ते ॰

अग्निहोत्रमित्यांह् तस्मांदग्निहोत्रे रंमन्ते ॰ यज्ञ इति यज्ञो हि देवास्तस्माँ द्युज्ञे रंमन्ते ॰ मान्समिति विद्वारस्तरमाँ द्विद्वारसं एव मान्से रंमन्ते ॰ न्यास इति ब्रह्मा ब्रह्मा हि परः परो हि ब्रह्मा तानि वा एतान्यवर्राणि परार्श्स न्यास एवात्यरेचयद्य एवं वेदैंत्युपनिषत्॥९७॥

॥ ज्ञानसाधन-निरूपणम्॥

प्राजापत्यो हार्रुणिः सुपर्णेयः प्रजापंति पितरमुपंससार् कि भंगवन्तः पर्मं

वंदन्तीति तस्मै प्रोवाच क सत्येनं वायुरावांति सत्येनांऽऽदित्यो रोचते दिवि

शम् इत्यरंण्ये मुनयस्तस्माच्छमं रमन्ते ॰ दानमिति सर्वाणि भूतानि प्रशर्सन्ति

दानान्नाति दुष्करं तस्मौद्दाने रमन्ते ० धर्म इति धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतं

धर्मान्नाति दुष्करं तस्मौद्धर्मे रमन्ते ॰ प्रजन इति भूया रसस्तस्माद्भूयिष्ठाः

प्रजायन्ते तस्माद्भ्यिष्ठाः प्रजनंने रमन्तेऽग्रय 🏻 इत्याह तस्मादग्रय आधातव्या

सत्यं वाचः प्रतिष्ठा सत्ये सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मां ध्यत्यं पेरमं वदेन्ति . तपंसा देवा देवतामग्रं आयन्तपसर्षयः सुवरन्वंविन्दं तपंसा सपत्नान् प्रणुंदामारांतीस्तपंसि सुवं प्रतिष्ठितं तस्मात्तपंः पर्मं वदंन्ति । दमेन दान्ताः किल्बिषंमवधून्वन्ति दमेन ब्रह्मचारिणः सुवेरगच्छन्दमो भूतानां दुराधर्षं दमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माद्दमेः परमं वदंन्ति ॰ शमेन शान्ताः शिवमाचरंन्ति शमेन नाकं मुनयोऽन्वविन्दञ्छमो भूतानां दुराधर्षञ्छमे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माच्छमेः परमं वर्दन्ति ॰ दानं यज्ञानां वरूथं दक्षिणा लोके दातार सर्वभूतान्युंपजीवन्तिं दानेनारातीरपानुदन्त दानेनं द्विषन्तो मित्रा भवन्ति दाने सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मौद्दानं पेरमं वदेन्ति ॰ धर्मो विश्वंस्य जर्गतः प्रतिष्ठा लोके धर्मिष्ठं प्रजा उपसर्पन्तिं धर्मेणं पापमंपनुदंति धर्मे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मौद्धर्मं पेरमं वदन्ति । प्रजनेनं वै प्रतिष्ठा लोके साधु प्रजायाँस्तन्तुं तन्वानः पितृणामनृणो भवति तदेव तस्यानृणं तस्मात् प्रजननं परमं वर्दन्त्यग्नयो वै त्रयीं विद्या ॰ देवयानः पन्थां गार्हपृत्य ऋक्पृंथिवी रंथन्तरमन्वाहार्यपर्चनं यजुरन्तरिक्षं वामदेव्यमाहवनीयः सामं सुवर्गो लोको बृहत्तस्मादुग्नीन्पर्मं वर्दन्त्यग्निहोत्र सायं प्रातर्गृहाणां निष्कृतिः स्विष्ट सुहुतं यंज्ञकतूनां प्रायंण र सुवर्गस्यं लोकस्य ज्योतिस्तस्मादिग्निहोत्रं पंरमं वदिन्ति ॰ यज्ञ इति यज्ञेन हि देवा दिवं गता यज्ञेनासुंरानपांनुदन्त यज्ञेनं द्विषन्तो मित्रा भेवन्ति यज्ञे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्माँ द्यज्ञं पेरमं वदेन्ति । मानुसं वै प्राजापृत्यं पवित्रं मानसेन मनसा साधु पंश्यति मानसा ऋषंयः प्रजा अंसृजन्त मानसे सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मौन्मानसं पेरमं वदेन्ति ॰ न्यास इत्याहुर्मनीषिणौ ब्रह्माणं ब्रह्मा विश्वः कतमः स्वयम्भुः प्रजापंतिः संवथ्सर इति संवथ्सरोऽसावांदित्यो य एष आंदित्ये पुरुषः स पंरमेष्ठी ब्रह्मात्मा व याभिरादित्यस्तपंति रश्मिभिस्ताभिः पर्जन्यों वर्षित पर्जन्यंनौषिधवनस्पतयः प्रजायन्त ओषिधवनस्पतिभिरन्नं भवत्यन्नेन प्राणाः प्राणैर्बलं बलेन तपस्तपंसा श्रद्धा श्रद्धयां मेधा मेधयां मनीषा मंनीषया मनो मनंसा शान्तिः शान्त्यां चित्तं चित्तेन स्मृति एस्या स्मार् ए स्मारेण विज्ञानं विज्ञानंनात्मानं वेदयति तस्मादन्नं ददन्थ्सर्वांण्येतानि ददात्यन्नात्

[७९]

प्राणा भवन्ति ॰ भूतानां प्राणैर्मनो मनसश्च विज्ञानं विज्ञानांदानुन्दो ब्रंह्मयोनिः स वा एष पुरुषः पञ्चधा पंञ्चात्मा येन सर्वमिदं प्रोतं पृथिवी चान्तरिक्षं च द्यौश्च दिशंश्वावान्तरदिशाश्च स वै सर्विमिदं जगथ्स च भूत ५ स भव्यं जिज्ञासक्रुप्त ऋंतजा रियंष्ठा 🌣 श्रद्धा सत्यो महस्वान्तपसो वरिष्ठाद्भात्वा तमेवं मनसा हृदा च भूयों न मृत्युमुपंयाहि विद्वान्तस्मौन्यासमेषां तपंसामतिरिक्तमाहंर्वसुरण्वों विभूरंसि प्राणे त्वमिसं सन्धाता । ब्रह्मंन् त्वमिसं विश्वधृत्तंजोदास्त्वमंस्यग्निरंसि वर्चोदास्त्वमंसि सूर्यस्य द्युम्नोदास्त्वमंसि चन्द्रमंस उपयामगृंहीतोऽसि ब्रह्मणे त्वा ॰ महस ओमित्यात्मानं युञ्जीतैतद्वे मंहोपनिषंदं देवानां गुह्यं य एवं वेदं ब्रह्मणों महिमानंमाप्नोति तस्माँद्वह्मणों महिमानंमित्युपनिषत्॥९८॥

॥ ज्ञानयज्ञः ॥

तस्यैवं विदुषों यज्ञस्याऽऽत्मा यजंमानः श्रद्धा पत्नी शरीरमिध्ममुरो वेदिर्लोमांनि

बर्हिर्वेदः शिखा हृदंयं यूपः काम आज्यं मन्युः पशुस्तपोऽग्निर्दमः शमयिता दक्षिणा वाग्घोता प्राण उद्गाता चक्षुंरध्वर्युर्मनो ब्रह्मा 。 श्रोत्रंमग्रीद्यावद्भियंते सा दीक्षा यदश्र्ञाति तद्धविर्यत्पिबति तदंस्य सोमपानं यद्रमते तदुपसदो यथ्मश्चरंत्युप्विशंत्युत्तिष्ठंते च स प्रवर्गों यन्मुखं तदाहवनीयो व्याह्रंतिराहुतिर्यदंस्य विज्ञानं तज्जहोति यथ्सायं प्रातरंति तथ्समिधं यत्प्रातर्मध्यं दिन ए सायं च तानि सर्वनानि ये अहोरात्रे ते देर्शपूर्णमासौ यें ऽर्धमासाश्च मासाँश्च ते चांतुर्मास्यानि य ऋतवस्ते पंशुबन्धा ये संवथ्सराश्च परिवथ्सराश्च तेऽहंर्गणाः सर्ववेदसं वा ॰ एतथ्सत्रं यन्मरंणं तदंवुभृथं एतद्वे जंरामर्यमग्निहोत्र ॰ स्त्रं य एवं विद्वानुंद्गयंने प्रमीयंते देवानांमेव मंहिमानं गुत्वाऽऽदित्यस्य सायुंज्यं गच्छत्यथ ॰ यो दंक्षिणे प्रमीयंते पितृणामेव मंहिमानं गुत्वा चुन्द्रमंसुः सायुंज्य । सलोकतांमाप्रोत्येतौ वै सूँर्याचन्द्रमसौंमीहिमानौं ब्राह्मणो विद्वानभिजंयति तस्माँद्रह्मणों महिमानंमाप्नोति तस्माँद्रह्मणों महिमानंमित्युपनिषत्॥९९॥

[८०] ॐ सह नांववतु। सह नौं भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधींतमस्तु

मा विद्विषावहैं। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥



॥ कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्॥

॥प्रथमः प्रश्नः॥

स्ंज्ञानं विज्ञानं प्रज्ञानं जानदंभिजानत्। सङ्कल्पंमानं प्रकल्पंमानमुप्कल्पंमानमुपंकृतं क्रुप्तम्। श्रेयो वसीय आयथसम्भूतं भूतम्। चित्रः केतुः
प्रभानाभान्थसम्भान्। ज्योतिष्माङ्स्तेजंस्वानातपृङ्स्तपंत्रभितपन्। रोचनो
रोचंमानः शोभनः शोभंमानः कल्याणंः। दर्शां दृष्टा देर्श्वता विश्वरूपा
सुदर्शना। आप्यायंमाना प्यायंमाना प्यायां सूनृतेरां। आपूर्यमाणा पूर्यमाणा
पूरयंन्ती पूर्णा पौर्णमासी। दाता प्रदाताऽऽन्नदो मोदंः प्रमोदः॥१॥

आवेशयंत्रिवेशयंन्थ्संवेशंनः स॰शांन्तः शान्तः। आभवंन्प्रभवंन्थ्सम्भवन्थ्सम्भूतो भूतः। प्रस्तुतं विष्टुंत्र सङ्स्तुतं कल्याणं विश्वरूपम्। शुक्रम्मृतं तेज्ञस्वि तेजः समिद्धम्। अरुणं भानुमन्मरीचिमदभितप्त्तपंस्वत्। स्विता प्रसविता दीप्तो दीपयन्दीप्यमानः। ज्वलंञ्चलिता तपंन्वितपंन्थ्सन्तपन्। रोचनो रोचमानः शुम्भूः

शुम्भंमानो वामः। सुता सुंन्वती प्रसुंता सूयमांनाऽभिषूयमांणा। पीतीं प्रपा सम्पा तृप्तिंस्तर्पयंन्ती॥२॥

कान्ता काम्या कामजाताऽऽयुंष्मती कामदुघां। अभिशास्ताऽनुंमन्ताऽऽनन्दो मोदं प्रमोदः। आसादयंत्रिषादयंन्थ्स १ सादंनः स १ संन्नः सन्नः। आभूर्विभूः

प्रभः शम्भूर्भुवंः। पवित्रं पवियष्यन्पूतो मेध्यः। यशो यशंस्वानायुर्मृतंः। जीवो जीविष्यन्थ्स्वर्गो लोकः। सहस्वान्थ्सहीयानोजस्वान्थ्सहमानः। जयन्नभिजयन्थ्सु-

द्रविणो द्रविणोदाः। आर्द्रपंवित्रो हरिकेशो मोर्दः प्रमोदः॥३॥

अरुणोऽरुणरंजाः पुण्डरींको विश्वजिदंभिजित्। आर्द्रः पिन्वंमानोऽन्नंवान्नसंवानिरां सर्वोषधः संम्भरो महंस्वान्। एजत्का जोवत्काः। क्षुष्ठकाः शिपिविष्टकाः। स्रिस्रराः सुशेरंवः। अजिरासो गिम्षणवंः। इदानीं तदानीमेतर्हि क्षिप्रमंजिरम्।

आशुर्निमेषः फुणो द्रवन्नितिद्रवन्। त्वर्ङ्स्त्वरंमाण आशुराशीयाञ्चवः। अग्निष्टोम

उक्थ्योऽतिरात्रो द्विरात्रस्त्रिरात्रश्चेतूरात्रः। अग्निर्ऋतुः सूर्य ऋतुश्चन्द्रमां ऋतुः।

प्रजापंतिः संवथ्सरो महान्कः॥४॥

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

भूरिग्नें चे पृथिवीं च मां चे। त्रीइश्चे लोकान्थ्संवथ्सरं चे। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद। भुवों वायुं चान्तरिक्षं च मां चं। त्री इश्चे लोकान्थ्संवथ्सरं चं। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद। स्वरादित्यं च दिवं च मां चं। त्री इश्चं लोकान्थ्यं वथ्यरं चं। प्रजापंतिस्त्वा सादयत्। तया देवतयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद। भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमंसं च दिशश्च मां चं। त्री इश्चे लोकान्थ्संवथ्सरं चं। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥५॥

त्वमेव त्वां वेंत्थ् योंऽसि सोऽसिं। त्वमेव त्वामंचैषीः। चितश्चासि सश्चिंतश्चास्यग्ने। पुतावाङ्श्चासि भूयाङ्श्चास्यग्ने। यत्ते अग्ने न्यूंनं यदु तेऽतिरिक्तम्। आदित्यास्तदिङ्गिरसिश्चन्त्। विश्वे ते देवाश्चितिमापूरयन्त्। चितश्चासि सिश्चेतश्चास्यग्ने। एतावाङ्श्चासि भूयाईश्चास्यग्ने। मा ते अग्ने च येन माऽति च येनाऽऽयुरावृक्षि। सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्यद्दावुदेतिं। तपंसो जातमिनभृष्टमोर्जः। तत्ते ज्योतिरिष्टके। तेन मे तप। तेन मे ज्वल। तेन मे दीदिहि। यावदिवाः। यावदसांति सूर्यः। यावदुतापि ब्रह्मं॥६॥

संवथ्सरोऽसि परिवथ्सरोऽसि। इदावथ्सरोऽसीद्वथ्सरोऽसि। इद्वथ्सरोऽसि वथ्सरोऽसि। तस्यं ते वसन्तः शिरंः। ग्रीष्मो दक्षिणः पृक्षः। वर्षाः पुच्छम्। शरदुत्तरः पृक्षः। हेमन्तो मध्यम्। पूर्वपृक्षाश्चितयः। अपुरुपृक्षाः पुरीषम्॥७॥

अहोरात्राणीष्टंकाः। ऋष्भोऽसि स्वर्गो लोकः। यस्यां दिशि महीयंसे। ततो नो मह् आवंह। वायुर्भूत्वा सर्वा दिश् आवांहि। सर्वा दिशोऽनुविवांहि। सर्वा दिशोऽनुसंवांहि। चित्त्या चितिमापृंण। अचित्त्या चितिमापृंण। चिदंसि समुद्रयोनिः॥८॥

आनिषेत्तः। नर्मस्ते अस्तु मा मां हिश्सीः। एति प्रेति वीति समित्युदितिं। दिवं मे यच्छ। अन्तरिक्षं मे यच्छ। पृथिवीं में यच्छ। पृथिवीं में यच्छ। अन्तरिक्षं मे यच्छ। अह्य प्रसारय। रात्र्या समेच। रात्र्या प्रसारय। अह्य समेच। काम् प्रसारय। काम् समेच॥९॥

————[४]

इन्दुर्दक्षंः श्येन ऋतावां। हिरंण्यपक्षः शकुनो भुंरण्युः। महान्थ्सधस्थें प्रुव

भूर्भुवः स्वः। ओजो बलम्ँ। ब्रह्मं क्षुत्रम्। यशो महत्। सृत्यं तपो नाम। रूपमृतम्। चक्षुः श्रोत्रम्। मन् आयुः। विश्वं यशो मृहः। समं तपो हरो भाः। जातवेदा यदि वा पावकोऽसि। वैश्वानरो यदि वा वैद्युतोऽसि। शं प्रजाभ्यो यजंमानाय लोकम्। ऊर्जं पृष्टिं ददंदभ्यावंवृथ्स्व॥१०॥

राज्ञी विराज्ञी। सम्माज्ञी स्वराज्ञी। अर्चिः शोचिः। तपो हरो भाः। अग्निरिन्द्रो बृह्स्पतिः। विश्वे देवा भुवनस्य गोपाः। ते मा सर्वे यशसा स॰स्जन्तु॥११॥

असंवे स्वाहा वसंवे स्वाहाँ। विभुंवे स्वाहा विवंस्वते स्वाहाँ। अभिभुवे स्वाहाऽधिपतये स्वाहाँ। दिवां पतंये स्वाहाऽ हेहस्पत्याय स्वाहाँ। चाक्षुष्मत्याय स्वाहाँ ज्योतिष्मत्याय स्वाहाँ। राज्ञे स्वाहां विराज्ञे स्वाहाँ। सम्माज्ञे स्वाहाँ स्वराज्ञे स्वाहाँ। शूषांय स्वाहा सूर्याय स्वाहाँ। चन्द्रमंसे स्वाहा ज्योतिषे स्वाहाँ। सूर्भपांय स्वाहां कुल्याणांय स्वाहाँ। अर्जुनाय स्वाहाँ॥१२॥

विपश्चिते पर्वमानाय गायत। मही न धाराऽत्यन्थों अर्षति। अहिंर्ह जीर्णामितंसर्पति त्वचम्। अत्यो न क्रीडंन्नसरद्वृषा हिरः। उपयामगृंहीतोऽसि

जाणामातसपात् त्वचम्। अत्या न ऋडिन्नसर्द्वृषा हारः। उपयामगृहाताऽसि मृत्यवै त्वा जुष्टं गृह्णामि। एष ते योनिर्मृत्यवै त्वा। अपमृत्युमपृक्षुधम्। अपेतः शुपर्थं जिहि। अधां नो अग्नु आवंह। रायस्पोष र सहस्रिणम्॥१३॥

असावेहिं॥१५॥

सर्वानवंयजामहे। भृक्षौंऽस्यमृतभृक्षः। तस्यं ते मृत्युपींतस्यामृतंवतः। स्वगाकृंतस्य मधुंमतः। उपहूत्स्योपहूतो भक्षयामि। मृन्द्राऽभिभूंतिः केतुर्यज्ञानां वाक्। असावेहिं॥१४॥
अन्थो जागृंविः प्राण। असावेहिं। बृधिर औक्रन्दयितरपान। असावेहिं। अहस्तोस्त्वा चक्षुः। असावेहिं। अपादाशो मनः। असावेहिं। कवे विप्रंचित्ते श्रोत्रं।

ये ते सहस्रम्युतं पाशाः। मृत्यो मर्त्याय हन्तवे। तान् यज्ञस्यं माययाः।

सुह्स्तः सुंवासाः। शूषो नामाँस्यमृतो मर्त्येषु। तं त्वाऽहं तथा वेदं। असावेहिं। अग्निमें वाचि श्रितः। वाग्घृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मंणि। वायुर्में प्राणे श्रितः॥१६॥

प्राणो हृदये। हृदयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। सूर्यो मे चक्षुंषि श्रितः।

चक्षुर्ह्रदेये। हृदेयं मिये। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। चन्द्रमां मे मनेसि श्रितः॥१७॥

मनो हृदये। हृदयं मिये। अहममृते। अमृतं ब्रह्मणि। दिशों मे श्रोत्रे श्रिताः। श्रोत्र हदंये। हदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। आपों मे रेतंसि श्रिताः॥१८॥ रेतो हृदंये। हृदंयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। पृथिवी मे शरीरे श्रिता।

शरीर् हदंये। हदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। ओषिवनस्पतयों मे लोमंसु श्रिताः॥१९॥

लोमांनि हृदंये। हृदंयं मियं। अहममृतें। अमृतं ब्रह्मणि। इन्द्रों मे बलें श्रितः।

बल १ हदेये। हदेयं मिया अहममृते। अमृतं ब्रह्मणि। पुर्जन्यों मे मूर्धि श्रितः॥२०॥ मूर्घा हृदये। हृदयं मिया अहमुमृतें। अमृतं ब्रह्मणि। ईशांनो मे मुन्यौ

श्रितः। मन्युर्ह्रदेये। हृदेयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। आत्मा मं आत्मिनं श्रितः॥२१॥

आत्मा हृदये। हृदयं मियं। अहम्मृतें। अमृतं ब्रह्मणि। पुनर्म आत्मा

पुन्रायुरागाँत्। पुनेः प्राणः पुनराकूंतमागाँत्। वैश्वान्रो रिष्मिभिवविधानः। अन्तस्तिष्ठत्वमृतिस्य गोपाः॥२२॥

प्रजापंतिर्देवानंसृजत। ते पाप्मना सन्दिता अजायन्त। तान्व्यंद्यत्। यद्यद्यत्। तस्माद्विद्यत्। तमंवृश्चत्। यदवृश्चत्। तस्माद्वृष्टिः। तस्माद्यत्रैते देवते अभिप्राप्नुंतः। वि चं हैवास्य तत्रं पाप्मानं द्यतः॥२३॥

वृश्चतंश्च। सैषा मीमा साऽग्निहोत्र एव संम्पन्ना। अथों आहुः। सर्वेषु यज्ञकृतुष्वितिं। होष्यंत्रप उपंस्पृशेत्। विद्यंदिस् विद्यं मे पाप्मान्मितिं। अथं हुत्वोपंस्पृशेत्। वृष्टिंरिस् वृश्चं मे पाप्मान्मितिं। यक्ष्यमांणो वृष्टा वां। वि चं हैवास्यैते देवते पाप्मान् द्यतः॥२४॥

वृश्चतंश्च। अत्यु १ हो हा ऽऽर्रुणः। ब्रह्मचारिणे प्रश्नान्प्रोच्य प्रजिघाय। परेहि। प्रुक्षं दय्यौम्पातिं पृच्छ। वेर्त्थं सावित्रा(३)न्न वेत्था(३) इतिं। तमागत्यं पप्रच्छ। आचार्यो मा प्राहैषीत्। वेर्त्थं सावित्रा(३)न्न वेत्था(३) इतिं। स होवाच वेदेतिं॥२५॥

स कस्मिन्प्रतिष्ठित इति। प्रोरंज्सीति। कस्तद्यत्परोरंजा इति। एष वाव स प्रोरंजा इति होवाच। य एष तपित। एषोंऽर्वाग्रंजा इति। स कस्मिन्त्वेष इति। सत्य इति। किं तथ्सत्यमिति। तप इति॥२६॥

कस्मिन्न तप् इतिं। बल् इतिं। किं तद्वल्मितिं। प्राण इतिं। मा स्मं प्राणमितिंपृच्छ् इतिं माऽऽचार्योंऽब्रवीदितिं होवाच ब्रह्मचारी। स होवाच प्रक्षो दय्यांम्पातिः। यद्वे ब्रह्मचारिन्प्राणमत्यंप्रक्ष्यः। मूर्धा ते व्यपंतिष्यत्। अहम्तंत आचार्याच्छ्रेयांन्भविष्यामि। यो मां सावित्रे समवादिष्टेतिं॥२७॥ तस्मांथ्सावित्रे न संवदेत। स यो ह वै सांवित्रं विदुषां सावित्रे संवदेत।

तस्माँथ्सावित्रे न संवंदेत। स यो हु वै सांवित्रं विदुषां सावित्रे संवदंते। सहाँस्मिञ्छ्रियं दधाति। अनुं हु वा अस्मा असौ तप्ञ्छ्रियं मन्यते। अन्वंस्मै श्रीस्तपों मन्यते। अन्वंस्मै तपो बलं मन्यते। अन्वंस्मै बलं प्राणं मन्यते। स यदाहं। संज्ञानं विज्ञानं दर्शां दृष्टेतिं। पृष पृव तत्॥२८॥

अथ् यदाहं। प्रस्तुंतं विष्टुंत स्नुता सुंन्वतीतिं। एष एव तत्। एष ह्यंव तान्यहानि। एष रात्रंयः। अथ् यदाहं। चित्रः केतुर्दाता प्रंदाता संविता प्रंसिवताऽभिंशास्ताऽनुंमन्तेतिं। एष एव तत्। एष ह्यंव तेऽह्नां मुहूर्ताः। एष रात्रैं:॥२९॥

अथ यदाहं। प्वित्रं पवियव्यन्थ्सहंस्वान्थ्सहीयानरुणोऽरुणरंजा इति। एष एव तत्। एष ह्येव तेंऽर्धमासाः। एष मासाः। अथ यदाहं। अग्निष्टोम उक्थ्योंऽग्निर्ऋतुः प्रजापितः संवथ्सर इति। एष एव तत्। एष ह्येव ते यंज्ञऋतवः। एष ऋतवः॥३०॥

पुष संवथ्सरः। अथ् यदाहं। इदानीं तदानीमितिं। एष एव तत्। एष ह्यंव ते मृंहूर्तानां मृहूर्ताः। जनको ह् वैदेहः। अहोरात्रेः समाजंगाम। त होंचुः। यो वा अस्मान् वेदं। विजहंत्पाप्मानंमेति॥३१॥

सर्वमायुरिति। अभि स्वर्गं लोकं जयिति। नास्यामुर्ष्मिं श्लोके ऽन्नं क्षीयत् इतिं। विजहंद्ध वै पाप्मानमिति। सर्वमायुरिति। अभि स्वर्गं लोकं जयिति। नास्यामुष्मिँ ह्योके ऽन्नं क्षीयते। य एवं वेदं। अहींना हाऽऽश्वंथ्यः। सावित्रं विदां चंकार॥३२॥

स हं हु सो हिंरुण्मयों भूत्वा। स्वृगं लोकिमयाय। आदित्यस्य सायुंज्यम्। हु सो हु वै हिंरुण्मयों भूत्वा। स्वृगं लोकमेति। आदित्यस्य सायुंज्यम्। य एवं वेदे। देवभागो हं श्रौतर्षः। सावित्रं विदां चेकार। त रह वागर्दश्यमानाऽभ्युंवाच॥३३॥

सर्वं बत गौतमो वेदं। यः सांवित्रं वेदेतिं। स होवाच। कैषा वागुसीतिं। अयम्ह॰ सांवित्रः। देवानांमुत्तमो लोकः। गृह्यं महो बिभ्रदितिं। एतावंति ह गौतमः। युज्ञोपवीतं कृत्वाऽधो निपंपात। नमो नम् इतिं॥३४॥

स होवाच। मा भैषीर्गीतम। जितो वै ते लोक इति। तस्माद्ये के चे सावित्रं विदुः। सर्वे ते जितलोकाः। स यो ह वै सावित्रस्याष्टाक्षरं पद श्रियाऽभिषिक्तं वेदं। श्रिया हैवाभिषिच्यते। घृणिरिति हे अक्षरें। सूर्य इति त्रीणि। आदित्य इति त्रीणि॥३५॥

हैवाभिषिंच्यते। तदेतदृचाऽभ्यंक्तम्। ऋचो अक्षरं पर्मे व्योमन्। यस्मिन्देवा अधि

विश्वे निषेदुः। यस्तं न वेद किमृचा केरिष्यति। य इत्तद्विदुस्त इमे समासत्

इति। न ह वा पुतस्यूर्चा न यजुंषा न साम्नाऽर्थौऽस्ति। यः सांवित्रं वेदं॥३६॥

एतद्वै सांवित्रस्याष्टाक्षंरं पदङ् श्रियाऽभिषिंक्तम्। य एवं वेदं। श्रिया

तदेतत्पंरि यद्देवच्क्रम्। आर्द्रं पिन्वंमानः स्वर्गे लोक एति। विज्ञहृद्धिश्वां भूतानि सम्पर्श्यत्। आर्द्रो ह् वै पिन्वंमानः। स्वर्गे लोक एति। विज्ञहृन्विश्वां भूतानि सम्पर्श्यन्। य एवं वेदे। शूषो ह् वै वाँर्ष्ण्यः। आदित्येनं समाजंगाम। तः होवाच। एहि सावित्रं विद्धि। अयं वै स्वर्ग्यौऽग्निः पारियृष्णुर्मृताथ्सम्भूत् इति।

एष वाव स सांवित्रः। य एष तपंति। एहि मां विद्धि। इति हैवैनं तदुंवाच॥३७॥

इयं वाव सुरघाँ। तस्यां अग्निरेव सार्घं मधुं। या पुताः पूर्वपक्षापरपक्षयो

प्रथमः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्) रात्रयः। ता मंधुकृतंः। यान्यहांनि। ते मंधुवृषाः। स यो ह वा पुता मंधुकृतंश्च

मधुवृषा इश्च वेदं। कुर्वन्तिं हास्यैता अग्नौ मधुं। नास्ये ष्टापूर्तं धंयन्ति। अथ यो न वेदं॥३८॥

न हाँस्यैता अग्नौ मधुं कुर्वन्ति। धयंन्त्यस्येष्टापूर्तम्। यो ह वा अंहोरात्राणाँ नामधेयांनि वेदं। नाहोरात्रेष्वार्तिमार्च्छति। संज्ञानं विज्ञानं दर्शां दष्टितिं। एतावंनुवाकौ पूर्वपक्षस्यांहोरात्राणां नामधेयांनि। प्रस्तुंतं विष्टुंत १ सुता सुन्वतीतिं। एतावंनुवाकावंपरपक्षस्यांहोरात्राणां नामधेयांनि। नाहोरात्रेष्वार्तिमार्च्छति। य एवं वेदं॥३९॥

यो हु वै मुंहूर्तानां नामधेयांनि वेदं। न मुंहूर्तेष्वार्तिमार्च्छति। चित्रः केतुर्दाता प्रंदाता संविता प्रंसविताऽभिंशास्ताऽनुंमन्तेति। पृतेंऽनुवाका मुंहूर्तानांं नाम्धेयांनि। न मुहूर्तेष्वार्तिमार्च्छति। य एवं वेदं। यो ह वा अर्धमासानौं च मासानां च नाम्धेयांनि वेदं। नार्धमासेषु न मासेष्वार्तिमार्च्छंति। प्रवित्रं पवियष्यन्थ्यहं-स्वान्थ्यहीयानरुणोऽरुणरंजा इति। प्रतेऽनुवाका अर्धमासानां च मासानां च नाम्धेयांनि॥४०॥ नार्धमासेषु न मासेष्वार्तिमार्च्छंति। य पुवं वेदं। यो ह वै यंज्ञकतूनां चंर्तूनां चं संवथ्सरस्यं च नाम्धेयांनि वेदं। न यंज्ञकृतुषु नर्तुषु न संवथ्सर

आर्तिमार्च्छति। अग्निष्टोम उक्थ्यौऽग्निर्ऋतुः प्रजापंतिः संवथ्सर इति। एतेऽनुवाका येज्ञकतूनां चेर्तूनां चे संवथ्सरस्यं च नाम्धेयांनि॥४१॥ न यंज्ञकृतुषु नर्तुषु न संवथ्सर आर्तिमार्च्छति। य एवं वेदं। यो हु वै मुंहूर्तानां मुहूर्तान् वेदं। न मुंहूर्तानां मुहूर्तेष्वार्तिमार्च्छति। इदानीं तुदानीमितिं। एते वै मुंहूर्तानां मुहूर्ताः। न मुंहूर्तानां मुहूर्तेष्वार्तिमार्च्छति। य पुवं वेदं। अथो यथां क्षेत्रज्ञो भूत्वाऽनुंप्रविश्यान्नमत्तिं। पुवमेवैतान्क्षेन्त्रज्ञो भूत्वाऽनुंप्रविश्यान्नमित्ति। स पुतेषांमेव संलोकता १ सायुं ज्यमश्रुते। अपं पुनर्मृत्युं जयिति। य एवं वेदं॥४२॥

.

कश्चिंद्ध वा अस्माल्लोकात्प्रेत्यं। आत्मानं वेद। अयमहम्स्मीतिं। कश्चिथ्स्वं लोकं न प्रतिप्रजानाति। अग्निम्ंग्धो हैव धूमताँन्तः। स्वं लोकं न प्रतिप्रजानाति। अथ् यो हैवैतमृग्नि॰ सांवित्रं वेदं। स एवास्माल्लोकात्प्रेत्यं। आत्मानं वेद। अयमहम्स्मीतिं॥४३॥

स स्वं लोकं प्रतिप्रजानाति। एष उं वेवैनं तथ्सांवित्रः। स्वर्गं लोकम्भिवंहति। अहोरात्रेवां इद॰ स्युग्भिः क्रियते। इतिरात्रायांदीक्षिषत। इतिरात्रायं व्रतम्पांगुरितिं। तानिहानेवं विदुषः। अमुष्मिं लोके शेव्धिं धंयन्ति। धीत॰ हैव स शेव्धिमनु परैति। अथ यो हैवैतमग्नि॰ सांवित्रं वेदं॥४४॥

तस्यं हैवाहोरात्राणि। अमुष्मिं होके शेवधिं न धंयन्ति। अधीत हैव स शेवधिमनु परैति। भरद्वांजो ह त्रिभिरायुंभिर्ब्रह्मचर्यमुवास। त॰ ह जीणिं ॥ स्थविंर् शयांनम्। इन्द्रं उपव्रज्योवाच। भरंद्वाज। यत्तें चतुर्थमायुंर्द्द्याम्। किमेनेन कुर्या इतिं। ब्रह्मचर्यमेवैनेन चरेयमितिं होवाच॥४५॥ त ह त्रीन्गिरिरूपानविंज्ञातानिव दर्शयां चंकार। तेषा १ हैकैकस्मान्मुष्टिनाऽऽदेव

स होवाच। भरंद्वाजेत्यामन्त्र्यं। वेदा वा एते। अनुन्ता वै वेदाः। एतद्वा एतैस्त्रिभिरायुंर्भिरन्वंवोचथाः। अर्थं तु इतंरुदनंनूक्तमेव। एहीमं विद्धि। अयं वै

संविवद्येति॥४६॥ तस्मै हैतमुग्नि सांवित्रमुंवाच। तर स विदित्वा। अमृतों भूत्वा। स्वुर्गं

लोकिमियाय। आदित्यस्य सार्युज्यम्। अमृतों हैव भूत्वा। स्वर्गं लोकमेति। आदित्यस्य सार्युज्यम्। य एवं वेद्री एषो एव त्रयीं विद्या॥४७॥

आदित्यस्य सायुज्यम्। य एव वदा एषा एव त्रया विद्या॥४७॥ यार्वन्तः ह वै त्रय्या विद्ययां लोकं जयिति। तार्वन्तं लोकं जयिति। य एवं

वेदं। अग्नेर्वा एतानि नाम्धेयांनि। अग्नेरेव सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं वेदं। वायोर्वा एतानि नाम्धेयांनि। वायोरेव सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं

वेदं। इन्द्रंस्य वा एतानिं नामधेयांनि॥४८॥

इन्द्रंस्यैव सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं वेदं। बृह्स्पते्वां एतानिं नामधेयांनि। बृह्स्पतेंरे्व सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं वेदं। प्रजापंते्वां एतानिं नामधेयांनि। प्रजापंतेरे्व सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं वेदं। ब्रह्मणो वा एतानिं नामधेयांनि। ब्रह्मण एव सायुंज्य सलोकतांमाप्नोति। य एवं वेदं। स वा एषोंऽग्निरंपक्षपुच्छो वायुरे्व। तस्याग्निर्मुखम्ं। असावांदित्यः शिरंः। स यदेते देवते अन्तरेण। तथ्सर्व सलियति। तस्मांथ्सावित्रः॥४९॥

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयकाठके प्रथमः प्रश्नः समाप्तः॥१॥

॥द्वितीयः प्रश्नः॥

लोकोंऽसि स्वर्गोंऽसि। अनुन्तौंऽस्यपारोंऽसि। अक्षिंतोऽस्यक्षय्योंऽसि। तपंसः प्रतिष्ठा। त्वयीदमुन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वर्थं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतां देवतयांऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥१॥

तपोंऽसि लोके श्रितम्। तेजंसः प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतृं विश्वंस्य जनियृत्। तत्त्वोपंदधे काम्दुघमक्षितम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतयांऽङ्गिरुस्बद्ध्वा सींद॥२॥

तेजोंऽसि तपंसि श्रितम्। समुद्रस्यं प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतृं विश्वंस्य जनियृत्। तत्त्वोपंदधे काम्दुघ्मक्षितम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥३॥

समुद्रोऽसि तेर्जिस श्रितः। अपां प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं स्म्भूतम्। विश्वंस्य भूतां विश्वंस्य जनियता। तं त्वोपंदधे काम्दुघ्मक्षितम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयत्। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सीद॥४॥

आपंः स्थ समुद्रे श्रिताः। पृथिव्याः प्रंतिष्ठा युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं

द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

भूतं विश्वर् सुभूतम्। विश्वस्य भूत्र्यों विश्वस्य जनयित्र्यः। ता व उपंदधे कामुदुघा अक्षिताः। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तया देवतयांऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद॥५॥

पृथिव्यंस्यपस् श्रिता। अग्नेः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भूत्री विश्वस्य जनयित्री। तां त्वोपंदधे काम्दुघामक्षिताम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद॥६॥

अग्निरंसि पृथिव्याः श्रितः। अन्तरिक्षस्य प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामुदुघमक्षितम्। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तयां देवतयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥७॥ अन्तरिक्षमस्यग्रौ श्रितम्। वायोः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्व रं सुभूतम्। विश्वस्य भूर्तृ विश्वस्य जनयितृ। तत्त्वोपंदधे कामदुघमिश्वतम्।

प्रजापंतिस्त्वा सादयत्। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद॥८॥

वायुरंस्यन्तरिक्षे श्रितः। दिवः प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं

विश्व रं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामुदुघमिश्वंतम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद॥९॥ द्यौरंसि वायौ श्रिता। आदित्यस्यं प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्री विश्वंस्य जनयित्री। तां त्वोपंदधे

कामद्घामिक्षिताम्। प्रजापितिस्त्वा सादयतु। तया देवत्याऽङ्गिर्स्वद्भुवा सीद॥१०॥ आदित्योऽसि दिवि श्रितः। चन्द्रमंसः प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भूतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामदुघमक्षितम्। प्रजापितस्त्वा सादयत्। तया देवतयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सीद॥११॥ चन्द्रमां अस्यादित्ये श्रितः। नक्षंत्राणां प्रतिष्ठा। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वस्य भर्ता विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे

काम्दुघमक्षितम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥१२॥

नक्षंत्राणि स्थ चन्द्रमंसि श्रितानिं। संवथ्सरस्यं प्रतिष्ठा युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भृतृणि विश्वंस्य जनयितृणिं। तानिं व उपंदधे काम्दुघान्यक्षितानि। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा

उपदय कामृदुधान्याक्षतााना प्रजापातस्त्वा सादयता तथा द्वतयाऽाङ्गर्स्वधूवा सीद॥१३॥

संवथ्सरोऽसि नक्षेत्रेषु श्रितः। ऋतूनां प्रतिष्ठा। त्वयीदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतां विश्वंस्य जनियता। तं त्वोपंदधे काम्दुघमक्षितम्। प्रजापतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरुस्वद्भवा सीद॥१४॥

ऋतवंः स्थ संवथ्सरे श्रिताः। मासानां प्रतिष्ठा युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वरं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतारो विश्वंस्य जनयितारंः। तान् व उपंदधे

कामृदुघानिक्षितान्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिरस्वद्भुवा सीद॥१५॥

मासौः स्थर्तषुं श्रिताः। अर्धमासानौं प्रतिष्ठा युष्मासुं। इदमन्तः। विश्वं यक्षं

विश्वं भूतं विश्वं स्म्मूतम्। विश्वंस्य भूतारो विश्वंस्य जनयितारंः। तान् व उपंदधे काम्युघानिक्षंतान्। प्रजापंतिस्त्वा सादयत्। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सीद॥१६॥ अर्धमासाः स्थं मासु श्रिताः। अहोरात्रयौंः प्रतिष्ठा युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतारो विश्वंस्य जनयितारंः। तान् व

सीद॥१७॥
अहोरात्रे स्थों ऽर्धमासेषुं श्रिते। भूतस्यं प्रतिष्ठे भव्यंस्य प्रतिष्ठे। युवयोरिदम्नतः।
विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्र्यां विश्वंस्य जनियन्त्रौं। ते
वामुपंदधे कामृदुधे अक्षिते। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा

उपंदधे कामृदुघानिक्षेतान्। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा

पौर्णमास्यष्टंकाऽमावास्याः। अन्नादाः स्थान्नदुघो युष्मासुं। इदम्नतः। विश्वं

सीद॥१८॥

यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्र्यां विश्वंस्य जनयित्र्यः। ता व

द्वितीयः प्रश्नः (कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीय-काठकम्)

सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भवा सींद॥२१॥

उपंदधे कामृदुंघा अक्षिताः। प्रजापंतिस्त्वा सादयतु। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवाः सीद॥१९॥

रार्डसि बृहती श्रीरसीन्द्रंपत्नी धर्मपत्नी। विश्वं भूतमनुप्रभूता। त्वयीदमन्तः।

विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूत्रीं विश्वंस्य जनयित्री। तां त्वोपंदधे कामदुघामिश्वंताम्। प्रजापंतिस्त्वा सादयत्। तयां देवतंयाऽिङ्गर्स्वद्भुवा सींद॥२०॥

ओजोंऽिस् सहोंऽिस। बलंमिस् भ्राजोंऽिस। देवानां धामामृतम्। अमंर्त्यस्तपोजाः। त्वयीदमन्तः। विश्वं यक्षं विश्वं भूतं विश्वं सुभूतम्। विश्वंस्य भूतां विश्वंस्य जनयिता। तं त्वोपंदधे कामदुघमिश्वंतम्। प्रजापंतिस्त्वा

त्वमंग्ने रुद्रो असुरो महो दिवः। त्व शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे। त्वं वातैररुणैर्यास शङ्ग्यः। त्वं पूषा विधृतः पासि न तमनां। देवां देवेषुं श्रयध्वम्। प्रथमा द्वितीयेषु श्रयध्वम्। द्वितीयास्तृतीयेषु श्रयध्वम्। तृतीयाश्चतुर्थेषुं श्रयध्वम्। चृतुर्थाः पश्चमेषुं श्रयध्वम्। पश्चमाः षष्ठेषुं श्रयध्वम्॥२२॥

षष्ठाः संप्तमेषुं श्रयध्वम्। स्प्तमा अष्टमेषुं श्रयध्वम्। अष्टमा नंवमेषुं श्रयध्वम्। न्वमा दंशमेषुं श्रयध्वम्। दृशमा एंकादृशेषुं श्रयध्वम्। एकादृशा द्वांदृशेषुं श्रयध्वम्। द्वादृशास्त्रंयोदृशेषुं श्रयध्वम्। त्रयोदृशाश्चंतुर्दृशेषुं श्रयध्वम्। चृतुर्दृशाः पंश्चदृशेषुं श्रयध्वम्। पश्चदशाः षोडशेषुं श्रयध्वम्॥२३॥

षोड्शाः संप्तद्शेषुं श्रयध्वम्। स्प्तद्शा अष्टाद्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाद्शा एंकान्नविर्शेषुं श्रयध्वम्। एकान्नविर्शा विर्शेषुं श्रयध्वम्। विर्शा एंकविर्शेषुं श्रयध्वम्। एकविर्शा द्वांविर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वाविर्शास्त्रयोविर्शेषु श्रयध्वम्। त्रयोविर्शाश्चंतुर्विर्शेषुं श्रयध्वम्। चतुर्विर्शाः पंश्वविर्शेषुं श्रयध्वम्। पृश्वविर्शाः षंड्वि श्शेषुं श्रयध्वम्॥२४॥

षृद्धिर्शाः संप्तिविर्शेषुं श्रयध्वम्। स्प्तिविर्शा अष्टाविर्शेषुं श्रयध्वम्। अष्टाविर्शेषुं श्रयध्वम्। पृकान्नित्र्शेषुं श्रयध्वम्। त्रिर्शा एंकित्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। पृकित्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शास्त्रंयस्त्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। द्वात्रिर्शास्त्रंयस्त्रिर्शेषुं श्रयध्वम्। देवास्त्रिरेकादशास्त्रिस्त्रंयस्त्रिरशाः। उत्तरे भवत। उत्तरवर्त्मान् उत्तरसत्त्वानः। यत्कांम इदं जुहोिमं। तन्मे समृध्यताम्। वयः स्यांम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भवः स्वंः स्वाहा॥२५॥

अग्नांविष्णू स्जोषंसा। इमा वंधन्तु वां गिरंः। द्युम्नैर्वाजेंभिरागंतम्। राज्ञीं विराज्ञीं। सम्राज्ञीं स्वराज्ञीं। अर्चिः शोचिः। तपो हरो भाः। अग्निः सोमो बृह्स्पतिः। विश्वं देवा भुवंनस्य गोपाः। ते सर्वे सङ्गत्यं। इदं मे प्रावंता वर्चः। वय स्यांम् पतंयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वंः स्वाहां॥२६॥

देवतां॥२९॥

विष्णंवाशानां पते। मित्रं सत्यानां पते। वर्रुण धर्मणां पते॥२७॥

मुरुतों गणानां पतयः। रुद्रं पशूनां पते। इन्द्रौंजसां पते। बृहंस्पते ब्रह्मणस्पते।
आ रुचा रोचेऽहइ स्वयम्। रुचा रुरुचे रोचमानः। अतीत्यादः स्वराभंरेह। तस्मिन्
योनौं प्रजनौ प्रजांयेय। वयइ स्याम् पत्यो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वः स्वाहां॥२८॥

[४]

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः। सप्तर्षयः सप्त धामं प्रियाणि। सप्त होत्रां

अनुविद्वान्। सप्त योनीरापृणस्वा घृतेनं। प्राची दिक्। अग्निर्देवतां। अग्निर स

दिशां देवं देवतानामृच्छतु। यो मैतस्यै दिशोऽभिदासति। दक्षिणा दिक्। इन्द्रो

अन्नपुतेऽन्नस्य नो देहि। अनुमीवस्यं शुष्मिणंः। प्र प्रदातारं तारिषः। ऊर्जं नो

धेहि द्विपदे चतुंष्पदे। अग्ने पृथिवीपते। सोमं वीरुधां पते। त्वष्टः समिधां पते।

इन्द्र स दिशां देवं देवतांनामृच्छत्। यो मैतस्यैं दिशों ऽभिदासंति। प्रतीची दिक्। सोमों देवतां। सोम् स दिशां देवं देवतांनामृच्छत्। यो मैतस्यैं दिशों ऽभिदासंति। उदींची दिक्। मित्रावरुंणौ देवतां। मित्रावरुंणौ स दिशां देवौ देवतांनामृच्छत्। यो मैतस्यैं दिशों ऽभिदासंति॥३०॥

ऊर्ध्वा दिक्। बृहस्पतिंर्देवतां। बृहस्पति स दिशां देवं देवतांनामृच्छतु।

देवीं देवतांनामृच्छत्। यो मैतस्यैं दिशोंऽभिदासंति। पुरुषो दिक्। पुरुषो मे कामान्थ्समंध्यत्॥ ३१॥
अन्थो जागृंविः प्राण। असावेहिं। बधिर आंक्रन्दयितरपान। असावेहिं। उषसंमुषसमशीय। अहमसो ज्योतिंरशीय। अहमसोऽपोंऽशीय। वय स्यांम

पतंयो रयीणाम्। भूर्भुवः स्वंः स्वाहां॥३२॥

यो मैतस्यै दिशों ऽभिदासंति। इयं दिक्। अदितिर्देवतां। अदिति स दिशां

यत्तेऽचितं यदुं चितं तें अग्ने। यत्तं ऊनं यदु तेऽतिंरिक्तम्। आदित्यास्तदङ्गिरसश्चिन्

विश्वं ते देवाश्चितिमापूरयन्तु। चितश्चासि सश्चितश्चास्यग्ने। एतावाङ्श्चासि भूयां इश्चास्यग्ने। लोकं पृण च्छिद्रं पृण। अथों सीद शिवा त्वम्। इन्द्राग्नी त्वा बृह्स्पतिंः। अस्मिन् योनांवसीषदन्॥३३॥
तयां देवत्याऽङ्गिर्स्वद्भुवा सीद। ता अस्य सूदेदोहसः। सोमई श्रीणन्ति पृश्चयः। जन्मं देवानां विशः। त्रिष्वा रोचने दिवः। तयां देवत्याऽङ्गिर्स्वद्भुवा सीद। अग्ने देवा इहाऽऽवंह। ज्ञानो वृक्तबंर्हिषे। असि होतां न ईड्यः।

अर्गन्म मृहा मनंसा यविष्ठम्॥३४॥ यो दीदाय समिद्ध स्वे दुंरोणे। चित्रभांनू रोदंसी अन्तरुर्वी। स्वांहुतं विश्वतंः प्रत्यश्चम्। मेधाकारं विदर्थस्य प्रसाधनम्। अग्निश् होतारं परिभूतंमं मृतिम्। त्वामर्भस्य ह्विषंः समानमित्। त्वां मृहो वृंणते नरो नान्यं त्वत्। मृनुष्वत्त्वा निधीमहि। मृनुष्वथ्समिधीमहि। अग्ने मनुष्वदंङ्गिरः॥३५॥ स्वाभुवम्। स प्रीतो यांति वार्यम्। इष ई स्तोतृभ्य आभेर। पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः

देवान्देवायते यंजा अग्निर्हि वाजिनं विशे। ददांति विश्वचंर्षणिः। अग्नी राये

पृंथिव्याम्। पृष्टो विश्वा ओषंधीराविवेश। वैश्वानरः सहंसा पृष्टो अग्निः। स नो दिवा स रिषः पांतु नक्तम्॥३६॥
———[६]
अयं वाव यः पवंते। सौऽग्निर्नाचिकेतः। स यत्प्राङ् पवंते। तदंस्य शिरंः। अथ् यद्दिक्षणा। स दक्षिणः पृक्षः। अथ् यत्प्रत्यक्। तत्पुच्छम्। यदुदङ्ङ्। स उत्तरः पृक्षः॥३७॥

अथ् यथ्संवाति। तदंस्य समर्श्वनं च प्रसारंणं च। अथो सम्पदेवास्य सा। स॰ हु वा अस्मै स कार्मः पद्यते। यत्कामो यजते। योऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। यो हु वा अग्नेर्नाचिकेतस्याऽऽयत्नं प्रतिष्ठां वेदं। आयत्नवान्भवति। गच्छति प्रतिष्ठाम्॥३८॥

हिरंण्यं वा अग्नेर्नाचिकेतस्याऽऽयतंनं प्रतिष्ठा। य एवं वेदं। आयतंनवान्भवति।

गच्छंति प्रतिष्ठाम्। यो ह वा अग्नेर्नाचिकेतस्य शरींरं वेदं। सर्शरीर एव स्वर्गं

लोकमेति। हिरंण्यं वा अग्नेर्नाचिकेतस्य शरीरम्। य एवं वेदं। सर्शरीर एव स्वर्गं लोकमेति। अथो यथां रुका उत्तंतो भाय्यात्॥३९॥

एवमेव स तेर्जसा यशंसा। अस्मिङ्श्चं लोकेऽमुष्मिङ्श्च भाति। उरवो ह् वे नामैते लोकाः। येऽवरेणाऽऽदित्यम्। अर्थ हैते वरीया स्मो लोकाः। ये परेणाऽऽदित्यम्। अन्तंवन्त ह् वा एष क्ष्ययं लोकं जंयति। योऽवरेणाऽऽदित्यम्। अर्थ हैषोऽनन्तमंपारमंक्ष्ययं लोकं जंयति। यः परेणाऽऽदित्यम्॥४०॥

अनन्त ह वा अपारमंक्षय्यं लोकं जंयति। योऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उ

चैनमेवं वेदं। अथो यथा रथे तिष्ठन्पक्षंसी पर्यावर्तमाने प्रत्यपेंक्षते। एवमंहोरात्रे

प्रत्यपेक्षते। नास्याहोरात्रे लोकमापुतः। योऽग्निं नांचिकतं चिनुते। य उ चैनमेवं

वेदं॥४१॥

उशन् ह् वै वांजश्रव्सः संविवद्सं दंदौ। तस्यं ह् निवंकेता नामं पुत्र आंस। तर् हं कुमार सन्तम्। दक्षिणासु नीयमानासु श्रृद्धाऽऽविवेश। स होवाच। तत् कस्मै मां दास्यसीति। द्वितीयं तृतीयम्। तर ह् परीत उवाच। मृत्यवे त्वा ददामीति। तर ह स्मोत्थितं वागभिवदित॥४२॥

गौतंम कुमा्रमितिं। स होवाच। परेहि मृत्योर्गृहान्। मृत्यवे वै त्वांऽदामितिं। तं वै प्रवसंन्तं गुन्तासीतिं होवाच। तस्यं स्म तिस्रो रात्री्रनांश्वान्गृहे वंसतात्। स यदिं त्वा पृच्छेत्। कुमांर कित् रात्रीरवार्थ्सीरितिं। तिस्र इति प्रतिष्रूतात्। किं प्रंथमा रात्रिमाश्चा इतिं॥४३॥ प्रजां त इतिं। किं द्वितीयामितिं। पुशू इस्त इतिं। किं तृतीयामितिं। साधुकृत्यां

प्रजां त इति। किं द्वितीयामिति। पुशू इस्त इति। किं तृतीयामिति। साधुकृत्यां त इति। तं वै प्रवसन्तं जगाम। तस्यं ह तिस्रो रात्रीरनाश्वान्गृह उवास। तमागत्यं पप्रच्छ। कुर्मार् कित् रात्रीरवाथ्सीरिति। तिस्र इति प्रत्युवाच॥४४॥

इतिं। किं तृतीयामितिं। साधुकृत्यां त इतिं। नमस्ते अस्तु भगव इतिं होवाच। वरं वृणीष्वेतिं। पितरंमेव जीवंन्नयानीतिं। द्वितीयं वृणीष्वेतिं॥४५॥

इष्टापूर्तयोर्मेऽक्षितिं ब्रूहीतिं होवाच। तस्मै हैतमग्निं नांचिकेतमुंवाच। ततो

चैनमेवं वेदं। तृतीयं वृणीष्वेतिं। पुनुर्मृत्योर्मेऽपंचितिं ब्रूहीतिं होवाच। तस्मैं हैतमुग्निं नांचिकेतमुंवाच। ततो वै सोऽपं पुनर्मृत्युमंजयत्॥४६॥ अपं पुनर्मृत्युं जंयति। यों ऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। प्रजापंतिर्वे प्रजाकांमस्तपोंऽतप्यत। स हिंरण्यमुदाँस्यत्। तदग्रौ प्रास्यंत्। तदंस्मै नाच्छंदयत्।

वै तस्यैष्टापूर्ते ना क्षीयेते। नास्यैष्टापूर्ते क्षीयेते। यौऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं

तिद्वितीयं प्रास्यंत्। तदंस्मै नैवाच्छंदयत्। तत्तृतीयं प्रास्यंत्॥४७॥ तदंस्मे नैवाच्छंदयत्। तदात्मन्नेव हृंदुय्येंऽग्नौ वैश्वानुरे प्रास्यंत्। तदंस्मा अच्छदयत्। तस्माद्धिरंण्यं कनिष्ठं धनानाम्। भुञ्जत्प्रियतमम्। हृदुयुज्ञ हि।

स वै तमेव नाविन्दत्। यस्मै तां दक्षिणामनेष्यत्। ताः स्वायैव हस्तांय दक्षिणायानयत्। तां प्रत्यंगृह्णात्॥४८॥

दक्षांय त्वा दक्षिणां प्रतिगृह्यं। य पृवं वेदं। पृतद्धं स्म वै तद्विद्धाः सो वाजश्रवसा गोतंमाः। अप्यंनूदेश्यां दक्षिणां प्रतिगृह्यं। य पृवं वेदं। पृतद्धं स्म वै तद्विद्धाः सो वाजश्रवसा गोतंमाः। अप्यंनूदेश्यां दक्षिणां प्रतिगृह्यंन्ता। उभयंन वयं दक्षिष्यामह पृव दक्षिणां प्रतिगृह्यं। दक्षंते हु वै दक्षिणां प्रतिगृह्यं। य पृवं वेदं। प्र हान्यं द्वीनाति॥४९॥

तः हैतमेके पशुबन्ध एवोत्तंरवेद्यां चिंन्वते। उत्तर्वेदिसंम्मित एषों ऽग्निरिति वदंन्तः। तन्न तथां कुर्यात्। एतमृग्निं कामेन व्यर्धयेत्। स एनं कामेन व्यृद्धः। कामेन व्यर्धयेत्। सौम्ये वावैनंमध्वरे चिंन्वीत। यत्रं वा भूयिष्ठा आहुंतयो हूयेरन्। एतमृग्निं कामेन समर्धयति। स एनं कामेन समृद्धः॥५०॥

कामेन समर्धयति। अथं हैनं पुरर्षयः। उत्तर्वेद्यामेव सन्नियंमचिन्वत। ततो वै तेऽविन्दन्त प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोकमंजयन्। विन्दतं एव प्रजाम्। अभि स्वर्गं लोकं जंयति। यौऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उ चैनमेवं वेदं। अथं हैनं वायुर्ऋद्धिंकामः॥५१॥

यथान्युप्तमेवोपंदधे। ततो वै स एतामृद्धिंमार्भ्रोत्। यामिदं वायुर्ऋद्धः। एतामृद्धिंमृश्नोति। यामिदं वायुर्ऋद्धः। योऽभ्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। अर्थं हैनं गोबलो वार्ष्णः पशुकांमः। पाङ्कांमेव चिक्ये। पश्चं पुरस्तांत्॥५२॥

पश्चं दक्षिणतः। पश्चं पृश्चात्। पश्चौत्तर्तः। एकां मध्यै। ततो वै स सहस्रं पृश्चन्प्राप्नौत्। प्र सहस्रं पृश्चनौप्नोति। यौऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। अथं हैनं प्रजापंतिज्येष्ठांकामो यशंस्कामः प्रजनंनकामः। त्रिवृतंमेव चिंक्ये॥५३॥

सप्त पुरस्तांत्। तिस्रो दंक्षिणतः। सप्त पृश्चात्। तिस्र उत्तरतः। एकां मध्यें। ततो वै स प्र यशो ज्यैष्ठांमाप्नोत्। एतां प्रजातिं प्राजांयत। यामिदं प्रजाः प्रजायंन्ते। त्रिवृद्दे ज्यैष्ठ्यम्। माता पिता पुत्रः॥५४॥

यदीच्छेत्॥५६॥

अर्थ हैन्मिन्द्रो ज्यैष्ठमंकामः। ऊर्ध्वा एवोपंदधे। ततो वै स ज्यैष्ठमंमगच्छत्॥५५॥ ज्यैष्ठमं गच्छति। योंऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। अर्थ हैनम्सावांदित्यः स्वर्गकांमः। प्राचींरेवोपंदधे। ततो वै सोंऽभि स्वर्गं लोकमंजयत्। अभि स्वर्गं लोकं जयति। योंऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। स

त्रिवृत्प्रजनंनम्। उपस्थो योनिर्मध्यमा। प्र यशो ज्यैष्ठांमाप्नोति। एतां प्रजांतिं

प्रजायते। यामिदं प्रजाः प्रजायंन्ते। योंऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं।

तेज्स्वी यंशस्वी ब्रंह्मवर्च्सी स्यामितिं। प्राङाहोतुर्धिष्ण्यादुथ्संर्पेत्। येयं प्रागाद्यशंस्वती। सा मा प्रोणींतु। तेजंसा यशंसा ब्रह्मवर्च्सेनेतिं। तेज्रस्येव यंशस्वी ब्रंह्मवर्च्सी भंवति। अथ यदीच्छेत्। भूयिष्ठं मे श्रद्दंधीरन्। भूयिष्ठा दक्षिणा नयेयुरितिं। दक्षिणासु नीयमानासु प्राच्येहि प्राच्येहीति प्राचीं जुषाणा

903

वेत्वाऽऽज्यंस्य स्वाहेतिं स्रुवेणोंपहत्यांऽऽहवनीयें जुह्यात्॥५७॥

चितिक्कृतिभिरिभेन्मृश्यं। अग्निं प्रणीयोपसमाधायं। चतंस्र एता आहंतीर्जुहोति। त्वमंग्ने रुद्र इतिं शतरुद्रीयंस्य रूपम्। अग्नांविष्णू इतिं वसोधिरांयाः। अन्नपत् इत्यंन्नहोमः। सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वा इतिं विश्वप्रीः॥५८॥————[९] यां प्रथमामिष्टंकामुपद्धांति। इमं तयां लोकम्भिजंयित। अथो या अस्मिँ ह्लोके देवताः। तासा स्सायुंज्य सलोकर्तामाप्नोति। यां द्वितीयांमुपद्धांति।

भूयिष्ठमेवास्मै श्रद्धंघते। भूयिष्ठा दक्षिणा नयन्ति। पुरीषमुपधायं।

देवताः। तासार् सार्युज्यः सलोकतांमाप्नोति। यां द्वितीयांमुप्दधांति। अन्तरिक्षलोकं तयाऽभिजंयित। अथो या अन्तरिक्षलोकं देवताः। तासार् सार्युज्यः सलोकतांमाप्नोति। यां तृतीयांमुप्दधांति। अमुं तयां लोकम्भिजंयित॥५९॥

अथो या अपर्धिलोके देवताः। वासाः सार्याचाः सलोकतांगापित। अथो

अथो या अमुष्मिँ ह्रोके देवताः। तासा ५ सार्यु ज्य ५ सलोकर्तामाप्नोति। अथो

या अमूरितंरा अष्टादंश। य एवामी उरवंश्च वरीया स्मश्च लोकाः। तानेव ताभिर्भि जंयित॥ कामचारों हु वा अंस्योरुषुं च वरीयःसु च लोकेषुं भवति। यौंऽग्निं नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। संवृथ्सरो वा अग्निर्नाचिकेतः। तस्यं वसन्तः शिरंः॥६०॥

ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः। वर्षा उत्तरः। शरत्पुच्छम्। मासाः कर्मकाराः। अहोरात्रे

शंतरुद्रीयम्। पूर्जन्यो वसोर्धारां। यथा वै पूर्जन्यः सुवृष्टं वृष्टा। प्रजाभ्यः सर्वान्कामांन्थ्सम्पूरयंति। एवमेव स तस्य सर्वान्कामान्थ्सम्पूरयंति। योंऽग्निं नांचिकेतं चिनुते॥६१॥

य उं चैनमेवं वेदं। संवथ्सरो वा अग्निर्नाचिकेतः। तस्यं वसन्तः शिरंः। ग्रीष्मो दक्षिणः पृक्षः। वृर्षाः पुच्छम्। श्ररदुत्तरः पृक्षः। हेमन्तो मध्यम्। पूर्वपृक्षाश्चितयः।

अपरपक्षाः पुरीषम्। अहोरात्राणीष्टंकाः। एष वाव सौंऽग्निरंग्निमयः पुनर्णवः।

अग्निमयों ह वै पुंनर्णुवो भूत्वा। स्वर्गं लोकमेति। आदित्यस्य सायुंज्यम्। योँऽग्निं

नांचिकेतं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं॥६२॥

•

-[१०]

"____ ____

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तितरीय काठके द्वितीयः प्रश्नः समाप्तः॥२॥

॥ तृतीयः प्रश्नः॥

तुभ्यं ता अंङ्गिरस्तमाऽश्याम् तं कामंमग्ने। आशांनां त्वा विश्वा आशाः। अनुं नोऽद्यानुंमित्रिरिन्वदंनुमते त्वम्। कामों भूतस्य कामस्तदग्रें। ब्रह्मं जज्ञानं पिता विराजांम्। यज्ञो रायोऽयं यज्ञः। आपों भद्रा आदित्पंश्यामि। तुभ्यं भरन्ति यो देह्यः। पूर्वं देवा अपंरेण प्राणापानौ। ह्व्यवाह् स्विष्टम्॥१॥

देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्तिरोंऽभवत्। ते प्रजापंतिमब्रुवन्। प्रजापते स्वर्गो वै नों लोकस्तिरोंऽभूत्। तमन्विच्छेतिं। तं यंज्ञऋतुभिरन्वैच्छत्। तं यंज्ञऋतुभिर्नान्वंविन्दत्। तमिष्टिंभिरन्वैच्छत्। तमिष्टिंभिरन्वंविन्दत्। तदिष्टींनामिष्टित्वम्। एष्टंयो हु वै नामं। ता इष्टंय इत्याचंक्षते प्रोक्षेण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥२॥

तमाशाँ ऽब्रवीत्। प्रजांपत आशया वै श्राँम्यसि। अहमु वा आशाँ ऽस्मि। मां नु यंजस्व। अथं ते सत्याऽऽशां भविष्यति। अनुं स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स एतमग्रये कार्माय पुरोडाशंमष्टाकंपालं निरंवपत्। आशायै चरुम्। अनुंमत्यै चरुम्। ततो वै तस्यं सत्याऽऽशांऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सूत्या ह वा अस्याऽऽशां भवति। अनुं स्वृगं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामाय स्वाहाऽऽशाये स्वाहाँ। अनुमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥३॥ तं कामों ऽब्रवीत्। प्रजापते कामेन वै श्राम्यसि। अहमु वै कामों ऽस्मि। मां

तं कामोऽब्रवीत्। प्रजापते कामेन् वै श्राम्यसि। अहमु वै कामोऽस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सृत्यः कामो भविष्यति। अनुं स्वृगं लोकं वेथ्स्यसीति। स एतम्ग्रये कामाय पुरोडाशंमृष्टाकंपालं निरंवपत्। कामाय चुरुम्। अनुंमत्यै चरुम्। ततो वै तस्यं सत्यः कामों ऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सत्यो ह वा अस्य कामों भवति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामाय स्वाहा कामाय स्वाहाँ। अनुंमत्यै स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥४॥ तं ब्रह्मां ऽब्रवीत्। प्रजापते ब्रह्मणा वै श्राम्यसि। अहम् वै ब्रह्मां ऽस्मि। मां नु यर्जस्व। अर्थ ते ब्रह्मण्वान् यज्ञो भविष्यति। अर्नु स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीति। स एतमग्नये कामाय पुरोडाशंमष्टाकंपालं निरंवपत्। ब्रह्मणे चुरुम्। अनुंमत्यै चुरुम्। ततो वै तस्यं ब्रह्मण्वान् यज्ञोऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। ब्रह्मण्वान् ह वा अस्य युज्ञो भविति। अनुं स्वुर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हिवषा यजते। य उ चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामाय स्वाहा ब्रह्मणे स्वाहाँ। अनुमत्यै

स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥५॥ तं युज्ञौऽब्रवीत्। प्रजापते युज्ञेन वै श्रौम्यसि। अहमु वै युज्ञौऽस्मि। मां नु यंजस्व। अथं ते सत्यो युज्ञो भविष्यति। अनुं स्वर्गं लोकं वेथस्यसीतिं। स पृतम् अये कामाय पुरोडाशं मृष्टाकंपालं निरंवपत्। यज्ञायं चुरुम्। अनुंमत्ये चुरुम्। ततो वै तस्यं सृत्यो यज्ञों ऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सृत्यो हु वा अस्य यज्ञो भवति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दित। य पृतेनं हिवषा यज्ञते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामाय स्वाहां यज्ञाय स्वाहां। अनुंमत्ये स्वाहां प्रज्ञापंतये स्वाहां। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति॥६॥

तमापौंऽब्रुवन्। प्रजापतेऽफ्स् वै सर्वे कामौः श्रिताः। वयमु वा आपः स्मः। अस्मान्नु यंजस्व। अथ त्विय सर्वे कार्माः श्रयिष्यन्ते। अनुं स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स एतम्ग्रये कामाय पुरोडाशंम्ष्टाकंपालं निरंवपत्। अद्धश्चरुम्। अनुंमत्यै चुरुम्। ततो वै तस्मिन्थ्सर्वे कार्मा अश्रयन्त। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सर्वे ह वा अंस्मिन्कामाः श्रयन्ते। अनुं स्वर्गं लोकं विनदित। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामांय स्वाहाऽन्द्यः स्वाहां। अनुमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥७॥

बिल हिरिष्यन्ति। अनुं स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स एतमग्रये कामांय पुरोडाशंमष्टाकंपालं निरंवपत्। अग्नयं बलिमतं चरुम्। अनुंमत्ये चरुम्। ततो वै तस्मै सर्वाणि भूतानि बिलमहरन्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सर्वाणि ह वा अस्मै भूतानि बुलि॰ हंरन्ति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामांय स्वाहाऽग्नयें बलिमते स्वाहाँ। अर्नुमत्यै स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥८॥ तमनुंवित्तिरब्रवीत्। प्रजांपते स्वर्गं वै लोकमनुंविविथ्ससि। अहमु वा अनुवित्तिरस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सत्याऽनुवित्तिर्भविष्यति। अनुं स्वर्गं

लोकं वेथ्स्यसीति। स एतमग्रये कार्माय पुरोडाशमष्टाकपालं निरंवपत्।

तमुग्निर्बिलिमानंब्रवीत्। प्रजांपतेऽग्नये वै बंलिमते सर्वाणि भूतानि बलि॰

हंरन्ति। अहमु वा अग्निर्बलिमानंस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सर्वाणि भूतानि

अनुंवित्त्यै चरुम्। अनुंमत्यै चरुम्। ततो वै तस्यं सत्याऽनुंवित्तिरभवत्। अनुं

स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सृत्या हु वा अस्यानुंवित्तिर्भवति। अनुं स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हिविषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये कामाय स्वाहाऽनुंवित्त्ये स्वाहाँ। अनुंमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति॥९॥
ता वा एताः सप्त स्वर्गस्यं लोकस्य द्वारंः। दिवःश्येन्योऽनुंवित्तयो नामं। आशाँ प्रथमा रक्षिति। कामो द्वितीयाँम्। ब्रह्मं तृतीयाँम्। यज्ञश्चंतुर्थीम्। आपंः पश्चमीम्।

प्रथमा र रेक्षिति। कामो द्वितीयाँम्। ब्रह्मं तृतीयाँम्। यज्ञश्चंतुर्थीम्। आपंः पश्चमीम्। अग्निर्बिलिमान्थ्वष्ठीम्। अनुंवित्तिः सप्तमीम्। अनुं हु वै स्वर्गं लोकं विन्दित। कामचारौ उस्य स्वर्गे लोकं भविति। य एताभिरिष्टिभिर्यजेते। य उं चैना एवं वेदं। तास्विन्विष्टि। पृष्ठौहीवरां देद्यात्कुर्सं चं। स्त्रियै चाऽऽभार समृद्धौ॥१०॥

सपत्नान्प्रणुंदामारातीः। येनेदं विश्वं परिभूतं यदस्ति। प्रथमजं देव हिवर्षा

विधेम। स्वयम्भु ब्रह्मं पर्मं तपो यत्। स एव पुत्रः स पिता स माता। तपो ह यक्षं प्रथम सम्बंभव। श्रद्धया देवो देवत्वमंश्रुते। श्रद्धा प्रतिष्ठा लोकस्यं देवी॥११॥

सा नो जुषाणोपं यज्ञमागात। कामंवथ्साऽमृतं दुहांना। श्रद्धा देवी प्रथमजा ऋतस्य। विश्वस्य भूत्री जगंतः प्रतिष्ठा। ता श्रद्धा १ ह्विषां यजामहे। सा नो लोकम्मृतं दधातु। ईशांना देवी भुवंनुस्याधिपत्नी। आगांथ्सृत्य ह्विरिदं

जुंषाणम्। यस्माँद्वेवा जंजिरे भुवंनं च विश्वें। तस्मै विधेम ह्विषां घृतेनं॥१२॥ यथां देवैः संधमादं मदेम। यस्यं प्रतिष्ठोवंन्तिरक्षिम्। यस्माँद्वेवा जंजिरे भुवंनं च सर्वें। तथ्सत्यमर्चदुपं यज्ञं न आगाँत्। ब्रह्माऽऽहंतीरुपमोदंमानम्। मनंसो वशे सर्वमिदं बंभूव। नान्यस्य मनो वशमन्वियाय। भीष्मो हि देवः सहंसः सहीयान्। स नो जुषाण उपं यज्ञमागाँत्। आकूंतीनामधिपतिं चेतंसां च॥१३॥

सङ्कल्पर्जूतिं देवं विपश्चिम्। मनो राजानिमह वर्धयेन्तः। उपहवेंऽस्य

सुमतौ स्याम। चरणं पवित्रं वितंतं पुराणम्। येनं पूतस्तरंति दुष्कृतानि। तेनं पुवित्रेण शुद्धेनं पूताः। अति पाप्मानमरातिं तरेम। लोकस्य द्वारंमर्चिमत्पवित्रम्। ज्योतिष्मुद्भाजमानुं महस्वत्। अमृतस्य धारां बहुधा दोहंमानम्। चरणं नो लोके सुधितां दधातु। अग्निर्मूर्धा भुवंः। अनुं नोऽद्यानुंमितरन्विदंनुमते त्वम्। हव्यवाहः स्विष्टम्॥१४॥ देवेभ्यो वै स्वर्गो लोकस्तिरोऽभवत्। ते प्रजापंतिमब्रुवन्। प्रजापते स्वर्गो वै नो लोकस्तिरोऽभूत्। तमन्विच्छेति। तं यंज्ञऋतुभिरन्वैच्छत्।

स्युगा प ना लाकास्त्राजनूत्। तमान्युञ्जाता त प्रज्ञानुत्रान्यञ्जत्। तं यंज्ञकृतुभिनान्वंविन्दत्। तमिष्टिभिरन्वैंच्छत्। तमिष्टिभिरन्वंविन्दत्। तदिष्टीनामिष्टित्वम्। एष्टंयो हु वै नामं। ता इष्टंय इत्याचंक्षते प्रोक्षंण। प्रोक्षंप्रिया इव हि देवाः॥१५॥ तं तपौंऽब्रवीत्। प्रजांपते तपंसा वै श्राम्यसि। अहमु वै तपौंऽस्मि। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सत्यं तपों भविष्यति। अर्नु स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स

पुतमाँग्नेयमुष्टाकपालं निरंवपत्। तपंसे चरुम्। अनुंमत्यै चरुम्। ततो वै तस्यं सत्यं तपोऽभवत्। अनुं स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सत्य १ ह वा अस्य तपो भवति। अर्नु स्वर्गं लोकं विन्दति। य एतेनं हविषा यजेते। य उ चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहा तपंसे स्वाहाँ। अनुंमत्यै स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्रयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥१६॥ तङ् श्रद्धाऽब्रंवीत्। प्रजापते श्रद्धया वै श्राम्यसि। अहमु वै श्रद्धाऽस्मिं। मां नु यंजस्व। अर्थ ते सत्या श्रद्धा भविष्यति। अर्नु स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स एतमाँग्नेयमष्टाकंपालं निरंवपत्। श्रद्धायें चरुम्। अनुंमत्ये चरुम्। ततो वै तस्यं सत्या श्रुद्धाऽभंवत्। अनुं स्वुर्गं लोकमंविन्दत्। सत्या हु वा अस्य श्रुद्धा भंवति।

नु यजस्वा अयं त स्त्या श्रृद्धा मावध्याता अनु स्वृगं लाक वृथ्य्यसाता स एतमाँग्नेयम्ष्टाकंपालं निरंवपत्। श्रृद्धायं चुरुम्। अनुंमत्ये चुरुम्। ततो वै तस्यं सत्या श्रृद्धाऽभंवत्। अनुं स्वृगं लोकमंविन्दत्। सत्या ह् वा अस्य श्रृद्धा भंवति। अनुं स्वृगं लोकं विन्दति। य एतेनं हृविषा यजते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्रये स्वाहाँ श्रृद्धाये स्वाहाँ। अनुंमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वृगीयं लोकाय स्वाहाऽग्रयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥१७॥ त १ सृत्यमंब्रवीत्। प्रजापते सृत्येन् वै श्रांम्यसि। अहमु वै सृत्यमंस्मि। मां न यंजस्व। अर्थं ते सृत्य १ सृत्यं भविष्यति। अनुं स्वृगं लोकं वेथ्स्यसीति। स पृतमांग्नेयमृष्टाकंपालं निरंवपत्। सृत्यायं चुरुम्। अनुंमत्ये चुरुम्। ततो वै तस्य सृत्य सृत्यमंभवत्। अनुं स्वृगं लोकमंविन्दत्। सत्य १ हृ वा अस्य सृत्यं भविति। अनुं स्वृगं लोकं विन्दिति। य पृतेनं हृविषा यज्ञंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहां सृत्याय स्वाहां। अनुंमत्ये स्वाहां प्रजापंतये स्वाहां। स्वृगायं लोकाय स्वाहाऽग्नये स्विष्टकृते स्वाहेति॥१८॥

तं मनोंऽब्रवीत्। प्रजांपते मनंसा वै श्रांम्यसि। अहमु वै मनोंऽस्मि। मां नु यंजस्व। अथं ते सृत्यं मनों भिवष्यति। अनुं स्वृगं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स एतमांग्नेयमृष्टाकंपालं निरंवपत्। मनंसे चुरुम्। अनुंमत्ये चुरुम्। ततो वै तस्यं सत्यं मनोंऽभवत्। अनुं स्वृगं लोकमंविन्दत्। सृत्य ह वा अस्य मनों भवति। अनुं स्वृगं लोकं विन्दति। य एतेनं ह्विषा यजंते। य उं चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहा मनंसे स्वाहां। अनुंमत्ये स्वाहां प्रजापंतये स्वाहां। स्वृगायं

लोकाय स्वाहाऽग्नयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥१९॥

चं। स्त्रियें चाऽऽभार समृं खे॥ २१॥

एतमाँग्नेयमष्टाकंपालं निरंवपत्। चरंणाय चरुम्। अनुमत्ये चरुम्। ततो वै तस्यं सत्यं चरणमभवत्। अर्नु स्वर्गं लोकमंविन्दत्। सत्य १ ह वा अस्य चरणं भवति। अनुं स्वर्गं लोकं विनदित। य पुतेनं हिवषा यजति। य उ चैनदेवं वेदं। सोऽत्रं जुहोति। अग्नये स्वाहा चरंणाय स्वाहाँ। अनुंमत्ये स्वाहाँ प्रजापंतये स्वाहाँ। स्वर्गायं लोकाय स्वाहाऽग्रयें स्विष्टकृते स्वाहेतिं॥२०॥ ता वा एताः पश्चं स्वर्गस्यं लोकस्य द्वारंः। अपांघा अनुंवित्तयो नामं। तपंः प्रथमा रक्षिति। श्रुद्धा द्वितीयाँम्। सत्यं तृतीयाँम्। मनश्चतुर्थीम्। चरणं पश्चमीम्। अनुं ह वै स्वर्गं लोकं विन्दित। कामचारों ऽस्य स्वर्गे लोके भंवति। य एताभिरिष्टिंभिर्यजेते। य उं चैना एवं वेदं। तास्वन्विष्टि। पृष्ठौहीवरां दंद्यात्कु रूसं

तं चरंणमब्रवीत्। प्रजापते चरंणेन वै श्राम्यसि। अहम् वै चरंणमस्मि। मां

नु यंजस्व। अर्थ ते सत्यं चरणं भविष्यति। अनु स्वर्गं लोकं वेथ्स्यसीतिं। स

-[8]

ब्रह्म वै चतुंर्होतारः। चतुंर्होतृभ्योऽधियज्ञो निर्मितः। नैनर् शृप्तम्। नाभिचरित्मागंच्छति। य एवं वेदं। यो हु वै चतुंर्होतृणां चतुर्होतृत्वं वेदं। अथो पश्चहोतृत्वम्। सर्वां हास्मै दिशः कल्पन्ते। वाचस्पतिर्होता दशंहोतॄणाम्। पृथिवी होता चतुंर्होतॄणाम्॥२२॥

अग्निर्होता पश्चेहोतॄणाम्। वाग्घोता षड्ढोतॄणाम्। महाहंविर्होतां सप्तहोतॄणाम्। पृतद्वे चतुंर्होतृणां चतुर्होतृत्वम्। अथो पश्चेहोतृत्वम्। सर्वां हास्मै दिशंः कल्पन्ते। य एवं वेदं। एषा वै संविविद्या। एतद्भेषजम्। एषा पङ्किः स्वर्गस्यं लोकस्यांश्चसाऽयंनिः स्रुतिः॥२३॥

पुतान् योऽध्यैत्यछंदिर्द्र्शे यावंत्त्रसम्। स्वंरेति। अनुपृब्रवः सर्वमायुरिति। विन्दते प्रजाम्। रायस्पोषं गौपत्यम्। ब्रह्मवर्चसी भंवति। पुतान् योऽध्यैतिं। स्पृणोत्यात्मानम्। प्रजां पितृन्। पुतान् वा अंरुण औपवेशिर्विदां चंकार॥२४॥ पुतैरंधिवादमपांजयत्। अथो विश्वं पाप्मानम्। स्वर्ययौ। पुतान्योऽध्यैतिं। अधिवादं जंयति। अथो विश्वं पाप्मानम्। स्वरेति। पुतैर्ग्निं चिन्वीत स्वर्गकांमः। प्रतेरायुंष्कामः। प्रजापशुकांमो वा॥२५॥

पुरस्ताद्दर्शहोतारमुदंश्चमुपंदधाति यावत्पदम्। हृदंयं यजुंषी पत्र्यौं च।

दक्षिणतः प्राश्चं चतुंर्होतारम्। पश्चादुदेश्चं पश्चंहोतारम्। उत्तरतः प्राश्च ।

षड्ढोतारम्। उपरिष्टात्प्राश्चर्यं सप्तहोतारम्। हृदंयं यजूर्षिष् पत्न्यंश्च। यथावकाशं ग्रहान्। यथावकाशं प्रतिग्रहाँक्षोकं पृणाश्चं। सर्वा हास्यैता देवताः प्रीता अभीष्टां भवन्ति॥२६॥

सदेवमृग्निं चिनुते। र्थसंम्मितश्चेत्व्यः। वज्रो वै रथः। वज्रेणैव पाप्मानं भ्रातृंव्यक्ष् स्तृण्ते। पक्षः संम्मितश्चेतव्यः। एतावान् वै रथः। यावंत्पक्षः। रथसंम्मितमेव चिनुते।

अन्तरिक्षमुक्थ्येन। स्वरितरात्रेणं। सर्वां ह्योकानंहीनेनं। अथीं स्त्रेणं। वरो

इममेव लोकं पंशुबन्धेनाभिजंयति। अथों अग्निष्टोमेन ॥२७॥

दक्षिणा। वरेणैव वरई स्पृणोति। आत्मा हि वरः। एकंविश्शतिर्दक्षिणा ददाति। एकविश्शो वा इतः स्वर्गो लोकः। प्र स्वर्गं लोकमाप्रोति॥२८॥

असार्वादित्य एंकविश्वाः। अमुमेवाऽऽदित्यमाँप्रोति। शृतं ददांति। शृतायुः पुरुषः शृतेन्द्रियः। आयुंष्येवेन्द्रिये प्रतिंतिष्ठति। सहस्रं ददाति। सहस्रंसम्मितः

स्वर्गो लोकः। स्वर्गस्यं लोकस्याभिजित्यै। अन्विष्टकं दक्षिणा ददाति। सर्वाणि वयार्श्सा।२९॥

सर्वस्याऽऽस्यै। सर्वस्यावंरुद्धे। यदि न विन्देतं। मृन्थानंतावृतो दंद्यादोदनान् वाँ। अश्रुते तं कामम्। यस्मै कामांयाग्निश्चीयतें। पृष्ठौहीं त्वन्तर्वतीं दद्यात्। सा हि सर्वाणि वया १सि। सर्वस्याऽऽस्यै। सर्वस्यावंरुद्धे॥३०॥

हिरंण्यं ददाति। हिरंण्यज्योतिरेव स्वर्गं लोकमेति। वासो ददाति। तेनाऽऽयुः प्रतिरते। वेदितृतीये यंजेत। त्रिषंत्या हि देवाः। स संत्यमृग्निं चिनुते। तदेतत्पंशुबन्धे ब्राह्मणं ब्रूयात्। नेतंरेषु युज्ञेषुं। यो ह वै चतुंर्होतृननुसवनं तंपीयत्व्यान् वेदं॥३१॥

तृप्यंति प्रजयां पृश्भिः। उपैन सोमपीथो नंमित। पृते वै चतुंरहोतारोऽनुसवृनं तंपियत्व्याः। ये ब्राह्मणा बहुविदः। तेभ्यो यद्दक्षिणा न नयेत्। दुरिष्ट स्यात्। अग्निमंस्य वृक्षीरन्। तेभ्यो यथाश्रद्धं देद्यात्। स्विष्टमेवैतित्क्रियते। नास्याग्निं वृक्षते॥३२॥

हिर्ण्येष्टको भेवति। यावंदुत्तममंङ्गुलिकाण्डं यंज्ञपुरुषा सम्मितम्। तेजो हिर्ण्यम्। यदि हिर्ण्यं न विन्देत्। शर्करा अक्ता उपंदध्यात्। तेजो घृतम्।

सर्तेजसमेवाग्निं चिनुते। अग्निं चित्वा सौँत्रामण्या यंजेत मैत्रावरुण्या वाँ। वीर्येण् वा एष व्यृध्यते। योऽग्निं चिनुते॥३३॥ यावंदेव वीर्यम्। तदंस्मिन्दधाति। ब्रह्मणः सायुज्य सलोकतामाप्नोति। एतासामेव देवताना सायुज्यम्। सार्षिता समानलोकतामाप्नोति। य एतम्ग्निं चिनुते। य उं चैनमेवं वेदं। एतदेव सांवित्रे ब्राह्मणम्। अथो नाचिकेते॥३४॥ कामुदुर्घा दधे। तेनर्षिणा तेन ब्रह्मणा। तया देवतंयाऽङ्गिरस्बद्धवा सींद। सर्वाः

यचामृतं यच मर्त्यम्। यच प्राणिति यच न। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं

स्त्रियः सर्वांन्यु १ सः। सर्वं न स्त्रीपुमं च यत्। सर्वास्ताः। यावंन्तः पा १ सवो भूमैं ॥३५॥
सङ्ख्यांता देवमाययाँ। सर्वास्ताः। यावंन्त ऊषाः पशूनाम्। पृथिव्यां पृष्टिंर्हिताः। सर्वास्ताः। यावंतीः सिकंताः सर्वाः। अपस्वंन्तश्च याः श्रिताः। सर्वास्ताः। यावंतीः

शर्करा धृत्यै। अस्यां पृथिव्यामधि॥३६॥ सर्वास्ताः। यावन्तोऽश्मांनोऽस्यां पृथिव्याम्। प्रतिष्ठासु प्रतिष्ठिताः। सर्वास्ताः। यावंतीवीरुधः सर्वाः। विष्ठिंताः पृथिवीमनुं। सर्वास्ताः। यावंतीरोषंधीः सर्वाः।

विष्ठिताः पृथिवीमन्। सर्वास्ताः॥३७॥

यार्वन्तो वनस्पत्रयः। अस्यां पृथिव्यामधि। सर्वास्ताः। यार्वन्तो ग्राम्याः पृशवः सर्वै। आरुण्याश्च ये। सर्वास्ताः। ये द्विपादश्चतुंष्पादः। अपादं उदरसर्पिणः।

सर्वास्ताः। यावदाञ्जनमुच्यते॥३८॥

देवत्रा यचं मानुषम्। सर्वास्ताः। यावंत्कृष्णायंस् सर्वम्ं। देवत्रा यचं मानुषम्। सर्वास्ताः। यावंश्लोहायंस् सर्वम्ं। देवत्रा यचं मानुषम्। सर्वास्ताः। सर्वर् सीस् सर्वं त्रपुं। देवत्रा यचं मानुषम्॥३९॥

सर्वास्ताः। सर्वे १ हिरंण्य १ रज्तम्। देवत्रा यर्च मानुषम्। सर्वास्ताः। सर्वे १ सुर्वर्ण् १ हिरंतम्। देवत्रा यर्च मानुषम्। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं कामदुर्घा दधे। तेनर्षिणा तेन ब्रह्मणा। तया देवत्याऽङ्गिर्स्वद्भवा सीद॥४०॥

सर्वा दिशों दिक्षु। यचान्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं कामदुघां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मणा। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद। अन्तरिक्षं च केवंलम्। यचास्मिन्नंन्तराहितम्। सर्वास्ताः। आन्तरिक्ष्यंश्च याः प्रजाः॥४१॥

च कवलम्। यच्चास्मन्नन्त्रराहितम्। सर्वास्ताः। आन्तारुक्ष्यश्च याः प्रजाः॥४१॥ गुन्धर्वाप्रसुरसंश्च ये। सर्वास्ताः। सर्वानुदारान्थ्सलिलान्। अन्तरिक्षे प्रतिष्ठितान्। सर्वास्ताः। सर्वानुदारान्थ्संलिलान्। स्थावराः प्रोप्याश्च ये। सर्वास्ताः। सर्वां धुनि र सर्वान्ध्वरसान्। हिमो यर्च शीयते॥४२॥

सर्वास्ताः। सर्वान्मरीचीन् वितंतान्। नीहारो यर्च शीयतें। सर्वास्ताः। सर्वा विद्युतः सर्वान्थ्स्तनियुत्नून्। हादुनीर्यचं शीयतें। सर्वास्ताः। सर्वाः स्रवंन्तीः सरितः।

सर्वमफ्सुचरं च यत्। सर्वास्ताः॥४३॥

याश्च कूप्या याश्चं नाद्याः समुद्रियाः। याश्चं वैशन्तीरुत प्रांसचीर्याः। सर्वास्ताः। ये चोत्तिष्ठन्ति जीमूताः। याश्च वर्षन्ति वृष्टयः। सर्वास्ताः। तप्स्तेजं आकाशम्। यचांऽऽकाशे प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ताः। वायुं वयार्श्ते सर्वाणि॥४४॥

अन्तिरिक्षचरं च यत्। सर्वास्ताः। अग्निः सूर्यं चन्द्रम्। मित्रं वर्रणं भगम्। सर्वास्ताः। सृत्यः श्रुद्धां तपो दमम्। नामं रूपं च भूतानाम्। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं कामृदुर्घां दधे। तेनर्षिणा तेन् ब्रह्मंणा। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा

सींद॥४५॥

सामानि॥४६॥ अथुर्वाङ्गिरसंश्च ये। सर्वास्ताः। इतिहासपुराणं चे। सुर्पदेवजनाश्च ये। सर्वास्ताः। ये चे लोका ये चालोकाः। अन्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ताः। यच् ब्रह्म यचौब्रह्म। अन्तर्ब्रह्मन्प्रतिष्ठितम्॥४७॥ सर्वास्ताः। अहोरात्राणि सर्वाणि। अर्थमासाङ्श्च केवंलान्। सर्वास्ताः।

सर्वानृतून्थ्सर्वान्मासान्। संवथ्यरं च केवलम्। सर्वास्ताः। सर्वं भूत्र सर्वं भव्यम्। यचातोऽधिभविष्यति। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं कामदुघां दधे।

सर्वान्दिव सर्वान्देवान्दिव। यचान्तर्भूतं प्रतिष्ठितम्। सर्वास्ता इष्टंकाः कृत्वा। उपं कामदुर्घा दधे। तेनर्षिणा तेन ब्रह्मणा। तयां देवतंयाऽङ्गिर्स्बद्धवा

सींद। यावंतीस्तारंकाः सर्वाः। वितंता रोचने दिवि। सर्वास्ताः। ऋचो यजूरंषि

तेनर्षिणा तेन ब्रह्मणा। तयां देवतयाऽङ्गिर्स्वद्भुवा सींद॥४८॥

ऋचां प्राचीं मह्ती दिगुंच्यते। दक्षिणामाहुर्यजुंषामपाराम्। अर्थर्वणामिङ्गिरसां प्रतीचीं। साम्रामुदींची मह्ती दिगुंच्यते। ऋग्भिः पूर्विह्ने दिवि देव ईयते। युजुर्वेदे तिष्ठिति मध्ये अहः। साम्बेदेनांऽस्तम्ये महींयते। वेदैरशूंन्यस्त्रिभिरेति सूर्यः। ऋग्भ्यो जाता सर्वेशो मूर्तिमाहुः। सर्वा गतिंर्याजुषी हैव शर्श्वत्॥४९॥

सर्वं तेर्जः सामरूप्य है शश्वत्। सर्व हैदं ब्रह्मणा हैव सृष्टम्। ऋग्भ्यो जातं वैश्यं वर्णमाहुः। युजुर्वेदं क्षेत्रियस्यांऽऽहुर्योनिम्। सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः। पूर्वे पूर्वेभ्यो वर्च एतदूचुः। आदर्शमृग्निं चिन्वानाः। पूर्वे विश्वसृजोऽमृताः। शतं वर्षसहुस्राणि। दीक्षिताः सुत्रमांसत॥५०॥

तपं आसीद्गृहपंतिः। ब्रह्मं ब्रह्माऽभंवथ्स्वयम्। सत्य॰ हु होतैंषामासींत्।

यिद्वेश्वसृज् आसंत। अमृतंमेभ्य उदंगायत्। सहस्रं परिवथ्सरान्। भूतः हं प्रस्तोतैषामासींत्। भविष्यत्प्रतिं चाहरत्। प्राणो अध्वर्युरंभवत्। इदः सर्वः सिषांसताम्॥५१॥

अपानो विद्वानावृतंः। प्रतिप्रातिष्ठदध्वरे। आर्त्वा उपगातारंः। सदस्यां ऋतवोऽभवन्। अर्धमासाश्च मासांश्च। चमसाध्वर्यवोऽभवन्। अशर्रसद्वह्मणस्तेजः। अच्छावाकोऽभवद्यशः। ऋतमेषां प्रशास्ताऽऽसीत्। यद्विश्वसृज् आसंत॥५२॥

ऊर्ग्राजांनमुदंवहत्। ध्रुवगोपः सहोऽभवत्। ओजोऽभ्यंष्टौद्भाव्यणः। यद्विश्वसृज् आसंत्। अपंचितिः पोत्रीयांमयजत्। नेष्ट्रीयांमयज्तिविषः। आग्नींद्धाद्विद्षीं सत्यम्। श्रद्धा हैवायंज्ञथ्स्वयम्। इरा पत्नीं विश्वसृजांम्। आकूंतिरिपनङ्कृविः॥५३॥

इध्म १ ह् क्षुचैंभ्य उग्ने। तृष्णा चाऽऽवंहतामुभे। वागेषा १ सुब्रह्मण्याऽऽसींत्। छुन्दोयोगान् विजान्ती। कुल्पृतुत्राणिं तन्वानाऽहेः। सुङ्स्थाश्चं सर्वशः। अहोरात्रे पंशुपाल्यौ। मुहूर्ताः प्रेष्यां अभवन्। मृत्युस्तदंभवद्धाता। शृमितोग्नो विशां

पतिः॥५४॥

विश्वसृजंः प्रथमाः स्त्रमांसत। सहस्रंसम् प्रस्तेन यन्तंः। ततो ह जज्ञे भुवंनस्य गोपाः। हिर्ण्मयः शुकुनिर्ब्रह्म नामं। येन सूर्यस्तपंति तेजंसेद्धः। पिता पुत्रणं पितृमान् योनियोनौ। नावेदविन्मनुते तं बृहन्तम्। सूर्वानुभुमात्मान सम्पराये। एष नित्यो मंहिमा ब्राह्मणस्यं। न कर्मणा वर्धते नो कनीयान्॥५५॥

तस्यैवाऽऽत्मा पंद्वित्तं विदित्वा। न कर्मणा लिप्यते पापंकेन। पश्चंपश्चाशतंस्त्रिवृतः संवथ्सराः। पश्चंपश्चाशतः पश्चंपश्चाशतः पश्चंपश्चाशतः सप्तद्शाः। पश्चंपश्चाशतं एकविश्शाः। विश्वसृजारं सहस्रंसंवथ्सरम्। एतेन् वै विश्वसृजं इदं विश्वंमसृजन्त। यद्विश्वमसृजन्त। तस्माद्विश्वसृजंः। विश्वंमनाननु प्रजायते। ब्रह्मणः सायुंज्यरं सलोकतां यन्ति। एतासांमेव देवतांनारं सायुंज्यम्। सार्षितारं

ब्रह्मणः सार्युज्यः सलोकतां यन्ति। एतासांमेव देवतांनाः सार्युज्यम्। सार्षिताः समानलोकतां यन्ति। य एतदुंपयन्ति। ये चैन्त्राहुः। येभ्यंश्चेन्त्राहुः॥५६॥ ॐ॥

[3]

॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयकाठके तृतीयः प्रश्नः समाप्तः॥३॥ ॥इति कृष्णयजुर्वेदीयतैत्तिरीयकाठकं समाप्तम्॥ हरिः ॐ॥